रामचन्द्र वर्मा

उर्दू-हिन्दी का आधुनिक प्रमाणिक नवीनतम-कोश
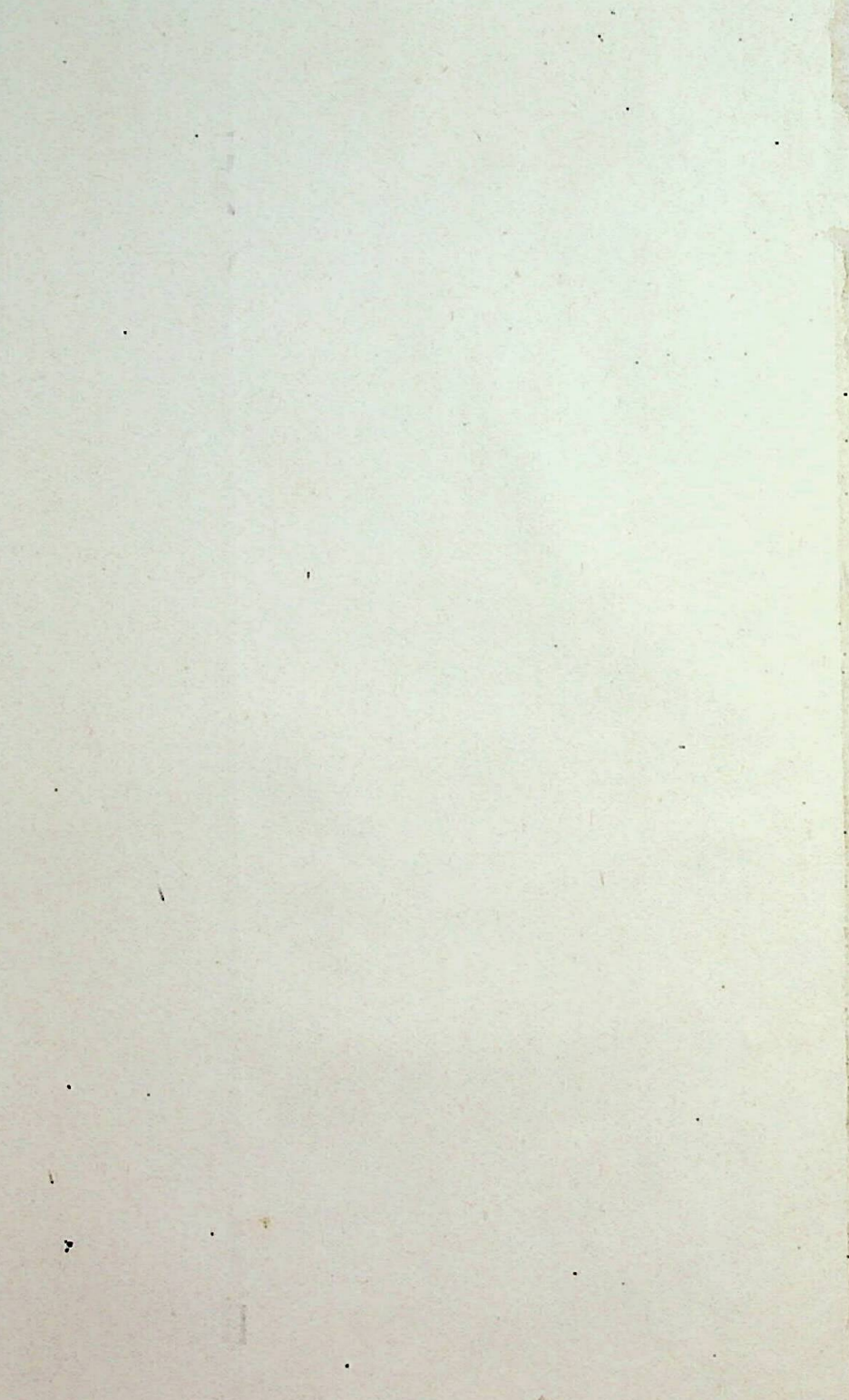
# उर्दू - हिन्दी कोश

रामचन्द्र वर्मा

संजय बुक सेन्टर, वाराणसी

# उर्दू-हिन्दी कोश

( नवसंशोधित पंचम् संस्करण )

( शब्दसंख्या १३,००० )

मूल सम्पादक
**रामचन्द्र वर्मा**
सहायक सम्पादक 'हिन्दी-शब्द-सागर' और सम्पादक 'मानक हिन्दी कोश'
संशोधनकर्त्ता
**बद्रीनाथ कपूर**

प्रकाशक
**संजय बुक सेन्टर, वाराणसी**

# संकेताक्षरोंकी सूची

अ0=अरबी भाषा
अनु0=अनुकरण शब्द
अल्पा0=अल्पार्थक प्रयोग
अव्य0=अव्यय
इब0=इबरानी भाषा
उप0=उपसर्ग
क्रि0=क्रिया
क्रि0 अ0=क्रिया अकर्मक
क्रि0 स0=क्रिया सकर्मक
तु0=तुरकी भाषा
दे0=देखो
देश0=देशज
पुं0=पुल्लिग
पुर्त्त0=पुर्त्तगाली भाषा
प्रत्य0=प्रत्यय
फा0=फारसी भाषा
बहु0=बहुवचन
भाव0=भाववाचक
मि0=मिलाओ
मुहा0=मुहावरा
यू0=यूनानी भाषा
यौ0=यौगिक अर्थात् दो या अधिक शब्दोंके पद
वि0=विशेषण
व्या0=व्याकरण
सं0=संस्कृत
स0=सकर्मक
सर्व0=सर्वनाम
स्त्रि0=स्त्रियोंद्वारा प्रयुत्त
स्त्री0=स्त्री-लिंग
हि0=हिन्दी भापा

%%%%%%%%%%%%%%%%%%%%%%

# प्रस्तावना

कोई डेढ़ वर्ष पूर्व जब मेरे प्रिय मित्र श्रीयुत नाथूरामजी प्रेमी मदरास की ओर भ्रमण करने गये थे, तब वहाँ के अनेक हिन्दी प्रेमियों तथा प्रचारकों ने आप से एक ऐसा कोश प्रकाशित करने के लिए कहा था जिसमें उर्दू भापा में प्रयुक्त होने वाली अरबी, फारसी आदि के सब शब्दों के अर्थ हिन्दी में हो। वहाँ से लौटकर प्रेमीजी ने मुझे एक ऐसा कोश प्रस्तुत करने के लिए लिखा। मैंने इसकी तैयारी में हाथ तो प्रायः उसी समय लगा दिया था, परन्तु बीच में कई और आवश्यक काम आ जाने के कारण इसकी तैयारी में लगभग एक वर्ष का समय लग गया । और तब छः सात मास का समय छपाई में लगा, क्योंकि इसका एक प्रूफ बम्बई से मेरे पास काशी आता था, और इसलिए एक फार्म के छपने में आठ दस दिन लग जाते थे। अन्त में अब जाकर यह कोश प्रस्तुत हुआ है और हिन्दी पाठकों के सामने उपस्थित किया जाता है।

जैसा कि मै ऊपर कह चुका हूँ यह कोश वास्तव में उन मदरासी भाइयों की आवश्यक्ताएँ पूरी करने के लिए बनाने का विचार था जिनमें इधर दस बारह वर्षों से हिन्दी भाषा का प्रचार खूब जोरों से हो रहा है और जिनमें अब लाखों हिन्दी जाननेवाले उत्पन्न हो गये हैं। आन्ध्र, तमिल, तेलगू और मलयालम आदि भाषायें बोलने वाले जब हिन्दी पढ़ते हैं तब स्वभावतः उन्हें फारसी,अरबी आदि के भी बहुत से ऐसे शब्द मिलते हैं। जिनका ठीक ठीक अर्थ जानने में उन्हे बहुत कठिनता होती हैं। अतः आरम्भ में विचार केवल यही था कि उर्दू कवियों की कविताओं में जितने शब्द आते हैं केवल उन्हीं शब्दों का एक छोटा-सा कोश बनाया जाय। पर जब मैंने इस कोश के लिए शब्द संग्रह का काम आरम्भ किया, तब मुझे ऐसा जान पड़ा कि उर्दू पद्य के अतिरिक्त उर्दू गद्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये जाये तो इस कोश से दक्षिण भारत के हिन्दीप्रेमियों की आवश्यकता के साथ साथ उत्तर भारत के भी हिन्दी पाठकों की एक बहुत बड़ी आवश्यकता पूरी हो जायेगी। पहले से कोई हिन्दी- उर्दू कोश वर्तमान नहीं था और इस प्रकार के कोश बार बार नहीं बनते, इसलिए मेरे कई मान्य और विद्वान मित्रों ने भी यही सम्मति दी कि उर्दू में व्यवहत होने वाले सभी प्रकार के शब्द इस कोश में ले लियें जायं और यह कोश सर्वांगपूर्ण कर दिया जाय । इसीलिये इस कोश में उर्दू कवियों की गजलों में मिलने वाले शब्दों के सिवा साहित्यकी के अन्याय अंगों, यथा- व्याकरण, गणित, धर्मशास्त्र और कानून आदि के सब शब्द भी सम्मिलित करने पड़े। इस प्रकार जो कोश छोटे आकारके दो ढाई सौ पृष्ठों में पूरा करने का विचार था,वह अन्त में बड़े आकारके प्रायः सवा चार सौ पृष्ठों में जाकर पूरा हुआ और इसकी तैयारी में पाँच छः महीने के बदले डेढ़ वर्ष लग गया। पर मेरे लिए सन्तोष का विषय यही है कि उर्दू का एक सर्वांगपूर्ण कोश - अनेक प्रकार की त्रुटियों के रहते हुये भी - तैयार हो गया ।

यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं है। वह हिन्दी का ही एक ऐसा रुप है जिसमें बहुधा अरबी, फारसी और तुर्की आदि की ही अधिकांश संज्ञाएं और विशेपण आदि रहते हैं। उर्दू भापा की उत्पत्ति और स्वरुप आदि के सम्बन्ध में हिन्दी में यथेष्ट चर्चा हो चुकी है, अतः यहाँ विस्तारपूर्वक उनका विवेचन करने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती हैं।

प्रविष्ट हुआ, और उसके अर्थों का विकास किस समय और क्या हुआ, इसका पूर्ण विस्तार और उसके प्रमाणों के द्वारा सरलता के साथ विवेचन करने का प्रयत्न किया जाता है जिसमें उस शब्द के स्वरुप का स्पष्टता और विस्तार के साथ परिचय प्राप्त होता है। इस प्रकार इस पद्धति पर प्रस्तुत किये गये कोशों में प्रत्येक शब्द का पूर्ण इतिहास मिल जाता है। इस तरह के कोशों को बनाने में कितना परिश्रम करना पड़ता है, कितना समय और धन इसमें सर्फ होता है इसकी सहज में ही कल्पना की जा सकती है। परन्तु इस प्रकार के कोशों से शब्दों के स्वरुप का पूर्ण शुद्धता और विस्तार के साथ जो सुस्पष्ट और पूरा परिचय प्राप्त होता हैं वह वैज्ञानिक होता है। और उसमें किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश नहीं रहती।

किसी भी कोश में सबसे अधिक आवश्यक्ता शुद्धता और प्रामाणिकता की है। जिस कोश में शुद्धता और प्रामाणिकता न हो वह शब्दों के यर्थाथ स्वरुप को नहीं समझा सकता। पहले शब्दों का शुद्ध, प्रामाणिक और विज्ञानसंगत संग्रह और फिर उनका शुद्ध और प्रामाणिक समझने में आने वाला सरल अर्थ और व्यवहार अन्य समस्त विस्तारों को छोड़कर भी इतने अधिक जरुरी है कि उनकी किसी प्रकार उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसी प्रामाणिकता और शुद्धता के कारण कोशकारका कार्य बड़ा ही उत्तरदायित्वपूर्ण है और यदि वह सतत अध्यवसाय, कठोर परिश्रम, गहन अध्ययन और अनुशीलन के द्वारा इस अपने उत्तरदायित्व को पूर्णतया निभाता हैं तो वह स्वयं एक प्रामाणिक कोशकार हो जाता है जिसका प्रमाण सन्देह के अवसरों पर विश्वास के साथ दिया जा सकता है।

प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी और इससे सम्बद्ध भापाओं के कोशों की तरफ हमारा ध्यान आकर्पित होने लगा है। यह इस बात की पहचान हैं कि हम लोग अपनी भाषा तथा उससे सम्बद्ध भापाओं के स्वरुप को अच्छी तरह जानना चाहते हैं। इसके परिणामस्वरुप पहले जो कोश तैयार हो रहे है उनमें बहुत - सी त्रुटियाँ होनी अनिवार्य हैं परन्तु ज्यों ज्यों प्रामाणिकता और शुद्धता की मांग बढ़ती जायेगी त्यों त्यों इन समस्त कोशों द्वारा ऐसे शुद्ध और प्रामाणिक कोश तैयार होगें जो शब्दों का सही और पूर्ण परिचय दे सकेगें और इस तरह वे हमारी भापा की एक स्थिर सम्पत्ति बनकर हमारे साहित्य की प्रगति और उन्नति में सहायक हो सकेगें।

उर्दू और हिन्दी का सम्बन्ध बहुत पुराना है। हम यहाँ दोनों भापाओं के ऐतिहासिक विस्तार में नहीं जाना चाहते। यद्यपि उर्दू जबान का समस्त ढाँचा हिन्दी का है और पुरानी उर्दू में हिन्दी के शब्दों का बहुत कसरत से प्रयोग किया गया है, तो भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि वर्तमान हिन्दी के आधुनिक रुप के विकास में उर्दू का बड़ा हाथ है। दोनों भाषाओं के रुप में पूरी समानता होते हुए भी उनमें धीमे धीमे इतना फर्क पड़ गया है और पड़ता जा रहा है कि दोनों भाषाओं को बिलकुल एक कर देना आज कल की अवस्थाओं में कुछ असाध्य - सा प्रतीत हो रहा है। जो लोग इन दोनों भापाओं में एकरुपता उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहें हैं उनका यह विश्वास है कि यदि हिन्दी-उर्दू मिलवा जबान लिखी जाय अर्थात् यदि उर्दू वाले हिन्दी के शब्दों और हिन्दी वाले प्रचलित उर्दू के शब्दों का बिना तकल्लुफ इस्तेमाल करें तो सम्भव है कि इन दोनों जबानों में यकसानियत पैदा हो जाय जिससे हिन्दी और उर्दू का झगड़ा हमेशा के लिए मिट जाय। इस उद्देश्य को सामने रखकर कई व्यक्तियों और संस्थाओं ने इस बात को अमल में लाने का प्रयत्न भी आरम्भ कर दिया हैं। परन्तु इसके लिए सबसे ज्यादह जरुरी चीज है दोनों

भाषाओं का प्रामाणिक ज्ञान और इस प्रकार के आयोजन जिनके द्वारा ये दोनों भाषाएँ निकट आ सकें और इस निकटता को लाने के लिए कोश एक बहुत बड़ा साधन है। जबसे इन बातों का आग़ाज़ हुआ है बहुत से हिन्दी से अनभिज्ञ उर्दू जानने वाले लोग इस तरहके हिन्दी शब्दकोश की तलाश में है जो हो तो उर्दू लिपि में परन्तु जिसके द्वारा हिन्दी शब्दों का ज्ञान हो सके और इसी प्रकार उर्दू से अनभिज्ञ हिन्दी जानने वाले इस तरह के उर्दू कोश की खोज में हैं जो हो तो नागरी लिपि में परन्तु जिसके द्वारा उन्हें उर्दू के शब्दों का यथार्थ परिचय प्राप्त हो सके। इस बात में तो कोई सन्देह नही कि इस प्रकार दोनों भाषाओं का पारस्परिक ज्ञान दोनों भाषाओं को जहाँ निकट ला सकेगा वहाँ शायद उपर्युक्त प्रवृत्ति को जाग्रत करने और फैलाने में भी सहायक सिद्ध हो सकेगा शायद रफ्ता रफ्ता दोनों भाषाओं की दूरी और पृथकता मिट सकेगी।

यह उर्दू- हिन्दी- कोश भी एक इसी तरह का साहसपूर्ण प्रयत्न हैं। हो सकता है कि इस कोश में बहुत सी त्रुटियां हो क्योंकि कोश का कार्य सरल और स्वल्प परिश्रमसाध्य नहीं है तो भी इस विषय में दो सम्मतियाँ नहीं हो सकतीं कि इस कोश के द्वारा उर्दू शब्दों के जानने का एक ऐसा आधार प्रस्तुत कर दिया गया है जिसमें आवश्यकतानुसार परिवर्द्धन और संशोधन हो सकते हैं और जिसे एक प्रामाणिक उर्दू-कोश के रुप में परिणत किया जा सकता है। हर एक भाषा की कुछ न कुछ अपनी विशेषताएँ होती है और जब एक भाषा का कोश दूसरी भाषा में लिखा जाता है तो उन विशेषताओं का ज्ञान कराने की भी आवश्यकता होती हैं। उर्दू की बहुत सी विशेषताओं के विषय में सम्पादक महोदय ने अपनी प्रस्तावना में बहुत कुछ लिखा है। हमारी सम्मति में अच्छा होता यदि कोशकार महोदय 'अलिफ' और 'ऐन' का जो हिन्दी में 'अ' के अन्तर्गत हो जाते हैं, भेद बतलाने के लिए कोई ऐसा सांकेतिक चिन्ह दे देते है जिससे यह स्पष्टतया मालूम पड़ जाता कि अमुक शब्द 'अलिफ' से और अमुक 'ऐन' से लिखा जाता है। इसी प्रकार 'सीन','स्वाद', 'तें और ' तोए' आदि के शब्दों में भी भेद रखने के लिए सांकेतिक चिन्हों की आवश्यकता थी। यद्यपि कोशके सिवा अन्यत्र इन शब्दों को सांकेतिक चिन्हों साथ लिखने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं अनुभव होती तो भी इस भाषा के कोश में हर शब्द के साथ इस तरह के भेदों को बतलाना जरुरी हैं। इससे एक तो भाषाके शुद्ध रुप से परिचित हो जाती है, दूसरे भाषाकी बनावट और उसमें जो हमारी भाषा से पृथकता और विशेषता है उसका भी अच्छी तरह ज्ञान हो जाता है। इसके साथ कहीं कहीं शब्दों के उच्चारण को भी लिखनें की आवश्यकता थी। आशा है कि अगले संस्करणों में इन बातों की ओर ध्यान दिया जायेगा।

हिन्दी को समस्त भारत का राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न हो रहा है। इसमें जिस तरह उर्दू में से अरबी फारसी शब्दों का संमिश्रण हो रहा है - क्योंकि इन दोनों भाषाओं में बहुत कुछ समानताएँ हैं- उसी प्रकार ज्यों ज्यों हिन्दी भाषा का भारतीय व्यापक रूप विस्तृत होगा त्यों त्यों इसमें गुजराती, मराठी, बंगाली आदि भाषाओं के शब्द भी मिश्रित होगें। यदि उर्दू हिन्दी के साथ एक तरह की समानता है तो इन भाषाओं की भी हिन्दी के साथ दूसरी तरह की समानता हैं। इसलिये इन भाषाओं के शब्दों का मिलना भी हिन्दी में अनिवार्य है क्योंकि ज्यों ज्यों भिन्न प्रान्तों के लोग हिन्दी अपनायेंगे उसमें कुछ न कुछ उनका प्रान्तीय असर अवश्य मिलेगा। क्या ही अच्छा हो यदि इसी प्रकार इन भाषाओं के प्रामाणिक कोश भी हिन्दी में सुलभ हो जाएँ। इससे वे भाषाएं भी हिन्दी के निकट आ

जायेगीं और, यदि नागरीद्वारा एक लिपिका प्रश्न हल हो गया तो इससे उन भाषाओं के ज्ञान में भी सुभीता हो जायेगा और इन भाषाओं का उत्तम साहित्य भी हिन्दी में आसानी से प्रविष्ट होकर हिन्दी में भारतीयता के अंश की वृद्धि के साथ उसके क्षेत्र को विस्तृत और व्यापक बना सकेगा।

उस्मानिया कॉलेज,
औरंगावाद सिटी
जून २५, १६३६

वंशीधर, विद्यालंकार

# भूमिका

किसी भाषाके शब्द कोश उसकी साहित्यिक सर्वांगीण उन्नति में वही स्थान रखतें हैं जो किसी राज्य की उन्नति और विकास में उसका आर्थिक विभाग रखता हैं। जिस प्रकार किसी राज्य की सुदृढ़ता, उसके प्रत्येक विभाग की स्वास्थ्यपूर्ण प्रगति, शक्ति और आधार बहुत कुछ उसके कोश की अवस्था पर अवलम्बित है उसी प्रकार किसी भाषा का विकास कर निमार्ण, उसके समस्त अंगों की ताज़गी, सुडौलपन, चिरकाल स्थिरता और विस्तार बहुत कुछ उसके शब्द-भण्डारों या शब्द-कोशोंपर ही निर्भर करता हैं। किसी भाषा की वास्तविक स्थिति और उन्नति जितनी पूर्णता से एक शब्द कोश में प्रतिबिम्बित होती है,उतनी भाषा के किसी अन्य क्षेत्र में नहीं। समस्त प्रकाशमय ज्ञान शब्दरूप ही है और किसी भाषा के समस्त शब्दों के रूप का परिचय उसके कोशोंद्वारा ही मिलता है, इसलिये किसी भाषा के स्वरूप का ज्ञान जितनी आसानी से एक कोशद्वारा हो सकता हैं उतना अन्य किसी साधन से नहीं हो सकता।

कोश लिखने की कला किस प्रकार प्रारम्भ हुई,- भिन्न भिन्न भाषाओं में पहले पहल कोश किस प्रकार तैयार किये गये, - इस कला का विस्तार किन रेखाओं पर हुआ और होता जा रहा है, यदि इसका क्रमबद्ध इतिहास लिखा जाय तो जहाँ वह बहुत मनोरंजक होगा वहाँ उसके द्वारा हमें उन सिद्धान्तों और पद्धतियों का भी परिचय प्राप्त हो सकेगा जिनके आधार पर इसका निर्माण और विकास हुआ हैं। हमारे यहाँ संस्कृत के जो प्राचीन कोश मिलते हैं उनमें किसी शब्द का पता लगाने के लिये सबसे पूर्व उसके अन्तिम अक्षर को देखना पड़ता है। इस प्रकार के कोशों के अन्त में शब्दों की कोई अनुक्रमणिका नहीं है और न कोई उसकी विशेष आवश्यकता प्रतीत होती हैं। इन कोशों में वर्णमाला के क्रम से शब्दों को इस प्रकार लिया गया है कि वे जिस शब्द के अन्त में आते हैं उनकों अक्षर क्रम से लिखा गया है। इनमें वर्णक्रम से पहले एक अक्षर के शब्द,फिर दो अक्षर के, फिर तीन अक्षर के और फिर इसी प्रकार शब्दों का उल्लेख किया गया हैं। जहाँ एकाक्षर शब्द समाप्त हो जातें हैं वहाँ उनकी समाप्ति लिखदी जाती हैं और अक्षर-शब्दों के प्रारम्भ की सूचना दे दी जाती है। और आगे भी इसी प्रकार किया जाता हैं। उदाहरणार्थ, यदि आप अमृत शब्द को देखना चाहें तो वह आपकों त के अक्षरों में अ में मिलेगा। मेदिनी कोश, विश्व प्रकाश कोश, अनेकार्थ संग्रह इसी प्रकार के कोश हैं। अमर कोश में इससे भिन्न पद्धति को अख्तियार किया गया हैं। उसमें विषयानुसार शब्दों का विभाग और क्रम रखा गया है और बाद में वर्णमाला के अक्षरक्रम से शब्दों की सूची दे दी गयी हैं जिसमें सुगमता के साथ शब्दों का पता लगाया जा सकता है।

यह तो हुई संस्कृत के प्राचीन कोशों की कथा। इसी तरह अन्य भाषाओं के कोशों की भिन्न भिन्न पद्धतियाँ हैं। इस समय कोश-निर्माण की जिस पद्धतिका अद्भुत विकास हुआ हैं उसका नाम है ऐतिहासिक पद्धति । इसके अनुसार प्रत्येक शब्द का सिलसिलेवार पूरा इतिहास देना पड़ता है। अक्षर- क्रम से पहले शब्द फिर उसका उच्चारण, उसके बाद उसकी व्युत्पत्ति यां वह स्रोत जिसके कारण शब्द का प्रादुर्भाव हुआ, फिर उसके अर्थ पूर्ण उद्धरणों के साथ इस प्रकार दिये जाते हैं कि अमुक सन् में इस शब्द का यह अर्थ था, फिर अमुक सन् में यह हुआ,-इस तरह क्रमशः सामयिक निर्देश देते हुए उसके समस्त अर्थों का प्रामाणिक प्रदर्शन किया जाता हैं। एक शब्द भाषा में किस समय प्रविष्ट हुआ, किस प्रकार

स्वयं उर्दू शब्द तुर्की भाषा का है और उसका मूल अर्थ है –लश्कर या छावनी का बाजार। बाद में इस शब्द का प्रयोग ऐसे बाज़ारों के लिए भी होने लगा था जिसमें सब तरह की चीजें बिकती थीं। भारत की अन्यान्य विशेषताओं और विलणताओं में एक यह उर्दू भापा भी है। भाषाशास्त्र की दृष्टि से इसके जोड़ की भापा शायद सारे संसार में ढूँढें न मिलेगी। भापा का मुख्य लक्षण 'क्रिया' है और उर्दू एक ऐसी भाषा है जो अपनी स्वतन्त्र और निजी क्रियाओं से रहित हैं, और इसी लिए कहना पड़ता है कि उर्दू कोई स्वतन्त्र भापा नहीं हैं। परन्तु फिर भी ـ ड भाषा मानी जाती है और इसके कई कारण हैं। एक तो उसकी एक स्वतन्त्र लिपि है जो अरवी और फारसी लिपियों के योग से बनी है। दूसरे उसमें साहित्य और विशेपतः काव्य-साहित्य है, जो प्रचुर भी है और उत्तम भी। तीसरे उत्तर भारत के कुछ विशिप्ट प्रान्तों के मुसलमान उसे रोज की बोलचाल के काम में लाते हैं। और चौथे वह उत्तर भारत के कुछ प्रान्तों की कचहरी की भाषा है। और इन्हीं सब बातोंसे उर्दू एक स्वतन्त्र भापा गिनी जाती है।

उर्दू का आरम्भ तो लश्करों और बाजारों में बोली जाने वाली मिश्रित भापा से हुआ था, पर आगे चलकर उसे मुसलमान बादशाहों, नवाबों और सरदारों आदिका आश्रय प्राप्त हो गया और उसमें प्रायः फारसी और अरबी कविताओंके अनुकरण पर यथेष्ट कविताएँ होने लगीं और वह राजदरबारों तथा महलों आदि में बोली जाने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि सैकड़ो वर्षों के इस प्रकार के व्यवहार से वह एक बहुत घुटी- मँजी और पालिशदार बढ़िया भापा हो गई। उसमें अनेक ऐसे गुण आ गये जिन गुणो के योग से कोई भापा चलती हुई,सुन्दर और चटकीली हो जाती है। मुसलमानी काल में तो इसे राजाश्रय प्राप्त था ही, उसीके अनुकरणपर अंग्रेजी शासन-काल में भी उत्तर भारत के संयुत्त प्रान्त और पंजाब आदि कुछ प्रदेशों में इसे राजाश्रय मिल गया, जिससे मुसलमानों के सिवा बहुत से हिन्दुओं के लिए भी इसकी शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक और अनिवार्य हो गया। इसलिए उन्नीसवीं शताव्दी के अन्ततक इसकी दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति होती रही और मुसलमानों के सिवा बहुत से हिन्दू कवियों और लेखकोंने भी अपनी रचनाओं द्वारा इस भाषा का साहित्य यथेष्ट अलंकृत और उन्नत किया। पर इधर पन्द्रह-बीस वर्षों से सारे भारत में राष्ट्रीयता की जो नई लहर उठी है, उससे उर्दू को बहुत बड़ा धक्का पहुँच रहा है जिससे इसके पक्षपाती और पोपक वहुत कुछ सशंकित हो रहे हैं। परन्तु इन सब बातों से यहाँ हमारा कोई मतलब नहीं है। हमारा मतलव सिर्फ इस बात से है कि उर्दू एक स्वतन्त्र भापा वन गई है और उसमें बहुत-सा अच्छा साहित्य भी वर्तमान है,और इसलिए उर्दू भापा और साहित्य भी वहुत कुछ अध्ययन करने की चीजें हैं।

हम ऊपर कह चुके हैं कि उर्दू एक वहुत मँजी हुई और चलती भापा है और अव तक कुछ लोगों का यह विचार है, और एक बड़ी सीमातक ठीक ठीक विचार है,- कि शुद्ध बढ़िया और मुहावरेदार हिन्दी लिखने में उर्दू भापा के ज्ञान से बहुत बड़ी सहायता मिलती है। जिस हिन्दी को हम राष्ट्रभापा मानकर अपना अभिमान प्रकट करतें हैं, दुर्भाग्यवश अभी तक उसका ठीक ठीक स्वरूप ही हम लोग निश्चित नहीं कर पाये हैं। सब लोग अपने अपने ढंग से और मनमाने तौरपर जो कुछ जी में आता है, वह सब हिन्दी के नाम से लिख चलते हैं और शुद्ध चलती हुई मुहावरेदार भापा लिखने की आवश्यकताका अनुभव कुछ इने-गिने मान्य लेखकों को ही होता है। और नहीं तो हिन्दी के क्षेत्र में भाषा के विचार से अधिकांश स्थलों मे केवल धाँधली ही मची हुई दिखाई देती है। यह ठीक है कि हिन्दी का प्रचार बहुत तेजी के

साथ और बहुत दूर दूर के प्रान्तों में हो रहा है और अनेक भिन्न भाषा-भाषी लोग भी हिन्दी की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं, और उन सब लोगोंसे हम अभी यह आशा नहीं कर सकते कि वे शुद्ध और बढ़िया हिन्दी लिखेंगे। परन्तु फिर भी हम हिन्दी-भाषियोंका यह कर्तव्य है कि हम अपनी भाषाका स्वरूप स्थिर करें और अन्यान्य भाषा-भाषियों के सामने उसका ऐसा आदर्श स्वरूप उपस्थित करें जो उनके लिए मार्ग-दर्शक का काम दे। अपनी भाषाका स्वरूप स्थिर करने में हम उर्दू भाषा से भी बहुत कुछ शिक्षा और सहायता ले सकते हैं।

पर शायद कुछ विषयान्तर हो गया। खैर, उर्दू साहित्य का पद्य-भाग बहुत बड़ा तथा पुराना और गद्य भाग अपेक्षाकृत छोटा और हलका है। आरम्भ में सैकड़ों वर्षोंतक उर्दू में केवल ग़ज़लें ही कही जाती थीं और उनका ढंग बिल्कुल अरबी-फारसी की कविताओंका-सा होता था। उसके अधिकांश गद्य-साहित्य की रचना बीसवीं शताब्दी के आरम्भ अथवा अधिक से अधिक उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त से होने लगी है और शृंगार-रसकी कविताओं को छोड़कर नये ढंगकी और नये विषयों की कविताएँ तो और भी हालमें होने लगी हैं। विशेषतः जबसे दक्षिण हैद्राबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय में उर्दू भाषा शिक्षाका माध्यम बनी है,तबसे उच्च कोटि के गद्य-साहित्यका निर्माण और भी अच्छे ढंग से और तेजी के साथ होने लगा है।

उर्दू भाषा बहुत ही मँजी और चलती हुई होती है, और इसलिए हम हिन्दीभाषियोंसे अनुरोध करतें हैं कि वे उर्दू का अध्ययन करके उससे अपनी भाषाका स्वरूप स्थिर करने में सहायता लें। इसके सिवा उर्दू काव्यों में सुन्दर और सूक्ष्म विचारों तथा कल्पनाओंकी भी बहुत अधिकता है। उर्दू में बहुत से बड़े बड़े और उच्च कोटिके कवि हो गये है, और चाहे तुलनात्मक दृष्टि से उनके विचार तथा कल्पनाएँ कुछ लोगों को उतनी उच्च कोटिकी न जँचें, जितनी उच्च कोटिके हिन्दी कविताओंके विचार और कल्पानाएँ जँचती हैं, परन्तु फिर भी उर्दू काव्योंमें काव्योचित गुण यथेष्ट मात्रामें मिलतें हैं, उनके पढ़ने में एक विशेष प्रकार का आनन्द आता है, और इस दृष्टि से भी हम हिन्दी पाठकों से उर्दू साहित्यका अनुशीलन करने का अनुरोध करते हैं।

उर्दू भाषा और साहित्यके सम्बन्ध में इस प्रकार संक्षेपमें कुछ बातें बतलाकर अब हम कुछ ऐसी बातें भी बतला देना चाहते हैं जिनका जानना इस कोशका उपयोग करने वालों के लिए आवश्यक है। उर्दू वर्णमालामें ञ, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, भ, और प के लिए कोई वर्ण नहीं हैं और इसी लिए इस कोश में इन अक्षरों से आरम्भ होने वाले शब्द भी नहीं मिलेंगे। इनके सिवा ट और ड के सूचक वर्ण तो उसमें हैं, परन्तु इन वर्णों से आरम्भ होने वाले शब्दोंका ही अभाव है, और वे भी इस कोश में नहीं मिलेंगे। उर्दूवाले अल्प-प्राण वर्णों के साथ 'ह' या 'हे' (0) लगाकर ही उनसे महाप्राण अक्षर बना लेते हैं। महाप्राण अक्षरोंमें से केवल 'ख' के लिए उनके यहाँ 'खे' और 'फ' के लिए 'फे' (.) है।

जिस समय मेरे सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि अरबी-फारसी आदि के शब्द इस कोश में किस प्रकार लिख कर रखे जायँ,तो कई विचारणीय बातें मेरे सामने आई और मुझे बहुत कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मैं चाहता था कि कोई ऐसा सिद्धान्त निकल आवे जो सब जगह समान रूप से काम दे। परन्तु इस प्रकार कोई ऐसा सिद्धान्त मैं स्थिर नहीं कर सका। सबसे बड़ी कठिनता मेरे सामने यह थी कि अक्षरोंके साथ अनुस्वार का प्रयोग किया जाय या पंचम वर्णका। 'अङ्गुश्त' 'अन्सर' और 'हिन्दसा' लिखा जाय या 'अंगुश्त' 'अंसर' या 'हिन्दसा'। बहुत कुछ सोच- विचार करने पर अन्तमें मैंने यही उचित

समझा कि जो शब्द हिन्दी में अधिकतर जिस रूपमें लिखे जाते हों और जिन रूपोंसे शब्दोंके प्रचलित उच्चारणों का ठीक ठीक ज्ञान हो सके, वही रूप रखे जायँ,और इसी लिए मैंने यह स्थिर किया कि 'क' वर्ग और 'च' वर्ग के साथ तो अनुस्वार रखा जाय और शेष वर्णो के साथ आधा 'न' अर्थात् ' ' रखा जाय और अधिकतर इसी सिद्धान्त के अनुसार शब्दोंके रूप रखे गये है। पर इसमें भी कहीं कहीं अपवाद हैं। 'अंक़रीब' 'इंकसार' या 'अंका' लिखने से काम नहीं चल सकता था और इनसे पाठकों कों शब्दो के ठीक ठीक उच्चारणोंका पता नहीं लग सकता। इसी लिए विवश होकर 'अन्करीब' 'इन्कसार' और 'अन्का' आदि रूप भी रखने पड़े है। इसके विपरीत 'शाहन्शाह' न लिखकर 'शाहंशाह' लिखा गया है, क्योकि साधारणतः लोग 'शाहंशाह' ही लिखते हैं, 'शाहन्शाह'के 'शाहंशाह' कोई नहीं लिखता। पंचम वर्ण और अनुस्वार-सम्बन्धी कठिनताके अतिरिक्त शब्दों के रूप स्थिर करने में और भी कठिनाइयाँ थी, और उन सब कठिनाइयों से भी तभी बचत हो सकती थी, जब शब्दोंके वही रूप लिये जाते जो अधिकतर हिन्दी में लिखे जाते है। इसके सिवा इसमें एक और लाभ भी था। अरबी-फारसी के बहुत से शब्द ऐसे भी हैं जिनका हिन्दी में बहुत कम प्रयोग होता है अथवा अभीतक विलकुल नहीं हुआ है। पर फिर भी ऐसे शब्दों को इस कोशमें स्थान देना आवश्यक था। और इस सिद्धान्त का पालन करने से यह लाभ है कि उन शब्दों के सम्वन्ध में हिन्दी पाठक यह जान जायँगे के इन्हें किस रूप में लिखना चाहिए। इसीलिए आरम्भ में तो शब्दों के प्रचलित रूप रखे गये हैं और तब कोष्ठकमें, जहाँ व्युत्पत्ति बतलाई गई हैं, वहाँ, यथा-साध्य शुद्ध रूप देने का प्रयत्न किया गया है। जैसे वज़ारत, वादा, वकूफ, शायर, फसल आदि रूप आरम्भ में रखकर व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें इनके शुद्ध रूप विज़ारत, वअदः, वुकूफ, शाइर और फस्ल आदि दिये गये हैं। अरवी-फारसी में जहाँ शब्दों के अन्तमें 'हे'(ہ) या 'ह' होता है, वहाँ हिन्दी में विसर्ग रखा गया है, और जहाँ अन्तमें 'ऐन' ( ) या 'अ' होता है, वहाँ अथवा जहाँ हम्ज़ा ( ) होती है,वहाँ लुप्ताकार (ऽ) रखा गया है। परन्तु जहाँ प्रचलित रूप दिखलाये गये हैं, वहाँ इन दोनों के स्थान पर केवल आकारकी मात्रा ( ा ) का ही प्रयोग किया गया है। जैसे आरम्भ में 'जमा' रूप दिया है और व्युत्पत्तिके साथ 'जमाऽ' रूप रखा है। अरवी-फारसी के जिन शब्दो के अन्तमें 'मून' ( ) या 'न' होता है, उनमें से कुछ का उच्चारण तो पूरे 'न' के समान होना है और कुछ का आधा अर्थात् अर्ध-चन्द्र वाले उच्चारण के समान होता है। फिर फारसी का एक प्रत्यय 'गीं' है जो शब्दों के अन्तमें लगता हैं। पर इसका उच्चारण कहीं तो 'गीं' होता हैं, जैसे- अन्दोहगीं,और कहीं 'गीन' भी होता हैं, जैसे ग़मगीन।

अरबी-फारसी शब्दोंको हिन्दी में लिखने में एक और कठिनता होती है। हिन्दी में ऐसे बहुतसे शब्द प्रायः अक्षरों के नीचे बिन्दी लगाकर लिखे जाते हैं, जैसे-क़ानून, महफ़ूज़ आदि। पर छापेमें कहीं कहीं और विशेपतः कुछ संयुक्त अक्षरों के नीचे इस प्रकार बिन्दी लगाना कठिन हो जाता है। छापेमें विन्दी लगा हुआ 'ग़' अर्थात् 'ग़' तो होता है, पर आधा 'ग़' अर्थात् 'ग़्' बिन्दी लगा हुआ नहीं होता । और इसी लिए 'इ़लाम' आदि शब्द लिखने में कठिनता होती है और युक्तिसे 'ग़्' के नीचे बिन्दी लगाई जाती है। जहाँ तक हो सका है, ऐसे अक्षरों के नीचे भी विन्दी लगाने का प्रयत्न किया गया है। पर यदि कहीं भूलसे विन्दी छूट गई हो, तो छापेखाने वालों की कठिनता और असमर्थताका ध्यान रखकर पाठकों को स्वयं ही प्रसंग से ऐसे शब्दों के ठीक उच्चारण समझ लेना चाहिए।

एक बात और है। मुख्य शब्द के साथ तो व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें उसका शुद्ध रूप दे दिया गया है, परन्तु यौगिक शब्दों के साथ इसलिए ऐसा नहीं किया गया है कि इससे

विस्तार बहुत कुछ बढ़ जाता। उदाहरण के लिए 'नजारा' शब्दके आगे उसका शुद्ध अरबी रूप 'नज्ज़ारः' तो दे दिया गया है,पर 'नजाराबाजी' में व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें केवल ' अ0+फा0' ही लिख दिया गया है। ऐसे अवसरों पर पाठकोंको यह नहीं समझ लेना चाहिए कि शुद्ध रूप 'नज़ारा' ही है, बल्कि 'नज़ारा' शब्दका शुद्ध रूप जानने के लिए स्वयं उस शब्द का व्युत्पत्तिवाला कोष्ठक देखना चाहिए जहाँ लिखा है- 'अ0 नज्ज़ारः।'

कुछ शब्द ऐसे हैं जो अरबी के है और अरबी में उनका स्वतन्त्र अर्थ होता है। पर वही शब्द फारसी में भी प्रचलित हैं और फारसी में उनका अर्थ बिलकुल अलग और अरबीवाले अर्थ से भिन्न होता है। ऐसे शब्द आरम्भ में तो एक ही स्थान पर लिखे गये हैं, पर जहाँ एक भाषाका अर्थ समाप्त हो जाता हैं, वहाँ फिरसे संज्ञा, विशेषण आदि लिखकर व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें मूल भाषाका संकेत कर दिया गया है। इससे पाठक समझ सकेंगे कि यह शब्द अरबी भाषामें इस अर्थ में और फारसी भाषामें इस अर्थ में प्रयुक्त होता है।

किसी भाषा के जीवित होने के और लक्षणों में से एक लक्षण यह भी है कि वह दूसरी भाषाओं के शब्दों को लेकर उन्हें अपनी भाषाकी प्रकृतिके अनुरूप बना सके- उन्हें हजम कर सके। यह बात अरबी, फारसी और उर्दूमें भी अनेक स्थलोंपर पाई जाती है। अरबीवालों ने तुर्की, यूनानी और इब्रानी आदि भाषाओं के अनेक शब्द ग्रहण कर लिये है और उन्हें अपने साँचे में ढाल लिया है। कीमिया,कैमूस और उस्तुरलाब आदि ऐसे शब्द हैं जो यूनानी से लेकर अरबी बनाये गये हैं। फारसी भाषासे भी कुछ शब्द लेकर अरबी बनाये गये हैं। शब्दों की व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकों में इस प्रकार की बातें, जहाँ तक हो सका है, स्पष्ट कर दी गई हैं। इसी प्रकार फारसीवालों ने भी अरबी के कुछ शब्दोंको लेकर अपने साँचेमें ढाल लिया है। अरबी के कुछ शब्दों में फारसी के प्रत्यय भी लगे हुए दिखाई देते हैं। जैसे अरबी 'ख्वान' से फारसी 'ख्वानचा' और 'खैर' से 'खैरियत'। इसी प्रकार शुद्ध हिन्दी के कुछ शब्दोंको भी उर्दू वालों ने ऐसा रूप दे दिया है कि वे देखने में फारसी-अरबी के जान पड़ते हैं। हिन्दी 'देग' से ' देग' और 'कन्नौज' से 'क़न्नौज'। संस्कृत के ' सम्मुख' शब्दसे उर्दूवालोंने ' सरमुख' बना लिया है और इसका प्रयोग अधिकतर वही करते हैं। कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो फारसी और संस्कृत में समान रूप से लिखें और बोले जाते हैं और उनके अर्थ भी समान ही होते हैं, जैसे 'कमल' और 'क़लम' । और कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके फारसी और संस्कृत रूपोमें बहुत ही थोड़ा अन्तर होता हैं, जैसे 'हफ्ता' और 'सप्ताह', और इसका कारण यही है कि दोंनों का मूल एक ही है। जिस प्रकार हिन्दी में देशज शब्द होते हैं,उसी प्रकार उर्दू में भी कुछ देशज शब्द हैं और उनका व्यवहार अधिकतर उर्दूवाले ही करते है, और प्रायः ऐसे रूप में करते हैं कि साधारणतः वे शब्द देखने में अरबी-फारसी के ही जान पड़ते हैं। इस प्रकार के शब्दों में लाले, हवेली, रकाब और रफ़ी आदि हैं। अरबी- फारसी के कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनसे हिन्दीवालोंने कुछ शब्द बना लिये हैं और जिनका प्रयोग अधिकतर हिन्दीवाले ही करते हैं। जैसे 'नजर' से 'नज़रहाया' और 'नफ़र' से ' नफरी'। इस प्रकार के शब्दों को भी इस कोशमें स्थान दिया गया हैं।

अरबी-फारसी के कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनमें सिर्फ जेर-ज़बर या स्वरसूचक चिन्होंके लगने से ही अर्थ में बहुत कुछ अन्तर हो जाता है। साधारण उर्दू जाननेवाले भी बहुत से ऐसे लोग मिलेंगे जो 'मुमतहन' और 'मुमतहिन' का अन्तर न जानतें हों। पर वास्तव में 'मुमतहन' का अर्थ है - परीक्षा या इम्तहान देने वाला , और 'मुमतहिन' का अर्थ है - परीक्षा या इम्तहान लेनेवाला। इसी प्रकार 'मुअद्दब' का अर्थ है वह जिसका अदब किया

जाय, और 'मुअद्दिब' का अर्थ है वह जो अदब करे। अतः हिन्दीवालों को इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग बहुत सावधानी से करना चाहिए। इसी प्रकार एक और कठिनता लिंग के सम्बन्ध में भी हो सकती है। कई ऐसे शब्द होते हैं जिनका एकवचन में कुछ और रहता है और बहुवचन में कुछ और। अरबीका 'फज़ीलत' शब्द स्त्री-लिंग है, परन्तु उसका बहुवचन फज़ायल पुल्लिग है। इस प्रकार के शब्दोंके प्रयोगोंमें भी बहुत कुछ सावधानताकी आवश्यकता है।

इस कोशमें शब्दोंके अर्थ देते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि अर्थ जहाँ तक हो सके ऐसे हों,जिनके पाठकों को उनके ठीक ठीक आशय के अतिरिक्त यह भी ज्ञात हो जाय कि उनका मूल क्या है अथवा वे किस शब्द से बने हैं। जैसे ' फ़िदाई' का अर्थ दिया है- फिदा होने या जान देने वाला। इससे पाठक सहज में समझ सकते हैं कि 'फ़िदाई' शब्द 'फ़िदा' से बना है। इसी प्रकार 'मतलूब' का अर्थ दिया है- जो तलब किया या माँगा गया हो। 'मतरूक' का अर्थ दिया है- जो तर्क या अलग कर दिया गया हो। 'मुलक्कब' का अर्थ दिया है- जिसको कोई लकब या नाम दिया गया हो। इस प्रकार और शब्दों के सम्बन्ध में भी समझ लेना चाहिए। इसके सिवा प्रायः विशेषणों के साथ उनसे सम्बन्ध रखनेवाली संज्ञाएँ भी उनके आगे इसलिए कोष्ठकमें दे दी गई है कि जिसमें व्यर्थका विस्तार न हो। जैसे 'खबरगीर' के साथ ही उसकी संज्ञा ' खबरगीरी' ' खिदमतगार' के साथ संज्ञा 'खिदमतगारी','गिलकार' के साथ संज्ञा 'गिलकारी' ' दिलचस्प' के साथ संज्ञा 'दिलचस्पी', ' फिक्रमन्द' के साथ संज्ञा ' फिक्रमन्दी' आदि। प्रायः बहुत से शब्द अरबी और फारसी के योग से बनते हैं। ऐसे शब्दों के बीच में एक छोटी लकीर (जिसे हाइफन कहते हैं और जिसका रूपः '-' यह है) दे दी गई है और व्युत्पत्तिवाले कोष्ठक में बतला दिया गया है कि इस शब्द का पहला अंश किस भाषाका और दूसरा किस भाषाका है। जैसे ' कानून' दाँ के आगे लिखा है- अ०+फा०। इसका अभिप्राय यह है कि इसमें का कानून शब्द तो अरबीका है और 'दाँ' शब्द फारसीका है जो प्रत्यय के रूप में उसके साथ लगा है। यह व्यवस्था इसलिए रखी गई है जिसमें पाठकोंको प्रत्येक शब्द के सम्बन्ध में थोड़े से स्थान-व्ययसे ही अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त हो जाय।

अब हम संक्षेप में उर्दू और फारसी के व्याकरणों के सम्बन्ध की कुछ ऐसी मुख्य मुख्य बात भी बतला देना चाहते हैं जो अनेक अवसरों पर पाठकों के लिये बहुत कुछ उपयोगी हो सकती हैं। यह तो सिद्ध ही है कि हिन्दी से उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं हैं और इसी लिये हिन्दी से स्वतन्त्र उसका कोई व्याकरण भी नहीं हो सकता। और आज कल तो अधिकांश भाषाओं के व्याकरण प्रायः अंगेरजी व्याकरण के ही साँचे में ढलने लग गये है, इसलिये एक भाषा के व्याकरण की बहुत- सी बातें दूसरी भाषाओं की उन्ही बातों से बहुत कुछ मिलता- जुलती होती हैं। संज्ञा, विशेषण, क्रिया और क्रिया-विशेषण आदि के प्रकार और उप- प्रकार आदि प्रायः सभी बातों में समान होते हैं। फिर ऐसी अवस्था में जब कि उर्दू वास्तव में हिन्दी का ही एक विशिष्ट प्रकार हो और उसमें केवल हिन्दी की ही समस्त क्रियाओं का ज्यों का त्यों उपयोग होता हो, तब उसका कोई हिन्दी से स्वतन्त्र व्याकरण भी नही हो सकता। परन्तु फिर भी जिस प्रकार हिन्दी में संस्कृत व्याकरण की कुछ बातें थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ आवश्यक और अनिवार्य रुप से लेनी पड़ती हैं। उसी प्रकार उर्दू वालों को भी अपने व्याकरण में अरबी और फारसी के व्याकरणों की कुछ बातें रखनी पड़ती है, और यहाँ हम संक्षेप में उन्हीं में से कुछ मुख्य बातों का उल्लेख कर देना चाहते हैं।

पहली बात एक वचन से बहुवचन बनाने के सम्बन्ध की हैं। फारसी में शब्दों के बहुवचन बनाने के दो नियम हैं। प्राणिवाचक शब्दों के अन्त में 'आन' प्रत्यय बढ़ाने से उसका बहुवचन बनता हैं। जैसे 'मुर्ग़' से -'मुर्ग़ान' 'जन' से 'ज़नान' 'दोस्त' से 'दोस्तान'। निर्जीव या जड़ पदार्थो के अन्त में उनका बहुवचन बनाने के लिए 'हा' प्रत्यय लगाते हैं। जैसे 'बार' से 'बारहा' 'सद' से 'सदहा' आदि। परन्तु उर्दू वाले फारसी के इन प्रत्ययों का प्रयोग कभी-कभी फारसी शब्दों के अतिरिक्त अरबी शब्दों के साथ भी कर देते हैं। जैसे 'साहब' से 'साहबान' और 'अज़ीज़' से 'अजीज़हा' आदि।

उर्दू में अरबी के बहुवचनों का भी बहुधा प्रयोग होता हैं। अरबी में बहुवचन को 'जमा' कहते हैं। और फारसी में भी बहुवचन के लिए इसी शब्द का प्रयोग होता हैं। अरबी में जमा या बहुवचन दो प्रकार के होते है - जमा सालिम और जमा मुकस्सर। जमा सालिम वह है जिसमें मूल शब्द का रुप सालिम या ज्यों का त्यों रहता हैं और उसके अन्त में केवल बहुवचन का सूचक कोई प्रत्यय लगा देते हैं। इसमें प्राणिवाचक पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'ईन' प्रत्यय लगा देते हैं। जैसे - 'मुसलिम' से 'मुसलमीन', 'हाजिर' से 'हाज़रीन','नाज़िर' से 'नाज़रीन' आदि। प्राणिवाचक स्त्री-लिंग शब्दों के अन्त में और अप्राणिवाचक शब्दों के अन्त में 'आत' प्रत्यय लगाने से उनका बहुवचन बनता हैं। जैसे 'मस्तूर' से 'मस्तुरात' 'खयाल' से 'खयालात' 'महकमा' से 'महकमात'।

जमा मुकस्सर वह है जिसमें वाहिद या एकवचन के रुप में कुछ परिवर्तन हो जाता हैं। जैसे -

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| हाकिम | हुक्काम | सफी | असफिया |
| किताब | कुतुब | वली | औलिया |
| मसजिद | मसाजिद | हर्फ | हुरुफ |
| मकतब | मकातिब | शेर | अशआर |
| हुक्म | अहकाम | क़िस्म | अक़साम |
| शरीफ | अशराफ़ | अमीर | उमरा |
| खबर | अखबार | तालिब | तुलबा |
| अमर | उमूर | वजीर | बुजरा |
| मक़बरा | मक़ाबिर | | |

परन्तु यह नहीं समझना चाहिये कि इस प्रकार एकवचन शब्दों से बहुवचन बनाने का अरबी में कोई विशेष नियम नहीं हैं और ये सब बहुवचन मनमाने ढंगपर बना लिए जाते हैं। वास्तव में इनके सम्बन्ध में बँधे हुए नियम है,परन्तु विस्तार भय से वे सब नियम यहाँ नहीं दिये गये हैं। यहाँ संक्षेप में यह बतला देना यथेष्ट होगा कि बहुवचन 'वजन' के आधार पर बनते हैं। अरबी में शब्दों के बहुत से 'वजन' जो हमारे यहाँ के पिंगल के गणों से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं और यह निश्चय कर दिया गया है कि यदि एकवचन शब्द अमुक 'वजन' का हो तो उसका बहुवचन अमुक वजन का होगा । जैसे यदि एक वचन 'फाइल' के वजन का हो तो उसका बहुवचन फुअला के वजन पर होगा। जैसे 'खबर' से 'अखबार' और 'शजर' से 'अशजार' आदि।

इसके सिवा अरबी के कुछ शब्द ऐसे है जो वास्तव में बहुवचन है, पर उर्दू-हिन्दी में जिनका प्रयोग एकवचन के रुप में होता हैं। जैसे कायनात, खैरात, वारदात,

तहक़ीक़ात, औलाद, रिआया, अखबार, उसूल आदि। और कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो वास्तव में एकवचन, पर जिनका प्रयोग बहुवचन के रुप में होता है, जैसे दाम, दस्तखत आदि।

अरबी- फारसी के बहुवचनों के सम्बन्ध में एक विशेषता यह भी है कि उनमें कुछ शब्दों के बहुवचन के भी बहुवचन बना लिये जाते है जिन्हे जमा- उल्जमा कहते हैं। जैसे 'दवा' का बहुवचन 'अदविया' होता है और फिर उसका भी बहुवचन 'अदवियात' बना लिया जाता है। इसी प्रकार 'लाज़िमा' से 'लवाजिमा' और फिर उससे भी 'लवाज़िमात' बना लेते हैं। इसी प्रकार 'जौहर' से 'जवाहिर' और 'जवाहिर' से 'जवाहिरात' तथा 'इस्म' से ' इस्माऽ' और 'इस्मात' से 'आसामी' भी बना लेते हैं। और विलक्षणता यह है कि जो आसामी शब्द जमाकी भी जमा है उसका प्रयोग हिन्दी उर्दू में एकवचन के समान होता हैं।

इसी प्रकार क्रियाओं या क्रियात्मक संज्ञाओं से जो कर्तृवाचक तथा कर्मवाचक शब्द बनते हैं, उनके लिए वज़नोंके आधार पर ही नियम बने हैं। साधारणतः क्रियाओं से जो कर्तृवाचक शब्द बनते हैं, वे 'फाईल' के वजन पर होते हैं और कर्मवाचक शब्द 'मफऊल' के वजन पर होते है जैसे 'तलब' से कर्तृवाचक 'तालिब' और कर्मवाचक 'मतलूब' शब्द बनता हैं। इसी प्रकार 'इश्क' से क्रमशः 'आशिक' और 'माशूक' शब्द बनते है। क्रियात्मक संज्ञाओं से जिन्हे अरबी में 'मसदर' कहते है, इसी प्रकार के नियमों के अनुसार कर्तृवाचक शब्द बनते है, जैसे 'इमतहान' से 'मुमतहिन', 'इन्तज़ाम' से 'मुन्तज़िम', 'इन्तज़ार' से 'मुन्तज़िर' आदि। क्रियात्मक संज्ञाओंसे 'फाईल' के वज़न पर विशेषण भी बनाये जाते है। जैसे 'अदालत' से 'अलील' और 'ज़राफत' से 'ज़रीफ' आदि। परन्तु इन सब नियमों का पूरा पूरा विवेचन करने के लिए एक स्वतन्त्र पुस्तक की आवश्यकता होगी, इसलिये हम इस दिग्दर्शन मात्र से ही संन्तोष करते हैं।

प्रायः व्यंजनांत पुंलिंग शब्दों के अन्त में 'हे' या 'ह' लगाकर उसका स्त्रीलिंग रुप बनाते हैं। हिन्दी में इसका उच्चारण वस्तुतः विसर्गः के समान होना चाहिये, पर हिन्दी वाले उसके स्थान पर प्रायः 'ा' का प्रयोग करते हैं। जैसे 'वालिद' से 'वालिदः' ट 'वालिदा', 'साहब' से 'साहबः' या 'साहबा' आदि। कुछ विशिष्ट शब्दों के अन्त में 'म प्रत्यय लगाने से भी उनका स्त्रीलिंग रुप बन जाता है, जैसे 'खान' से 'खानम' और 'बेग' : 'बेगम' आदि।

अरबी- फारसी के कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके अर्थभेद से लिंग भी भेद जाता हैं। जैसे 'अर्ज़' शब्द 'चौड़ाई' अर्थ में तो पुल्लिग है और 'निवेदन' के अर्थ स्त्रीलिंग है। 'आब' शब्द पानी के अर्थ में पुल्लिग है और 'चमक' के अर्थ में स्त्रीलिंग है

अरबी के जिन मसदरों या क्रियात्मक संज्ञाओं के अन्त में 'त' होता है उ प्रयोग स्त्रीलिंग के रुप में होता हैं। जैसे इनायत, शफकत, कुदरत आदि। इसी प्रकार फ़ा के शकारान्त शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - ख्वाहिश, कोशिश, रंजिश, बख्शिश आ

हिन्दी की भँति अरबी- फारसी में भी बहुत से उपसर्ग होते हैं। प्रत्य 'लाहिक़ा' कहते हैं और इसका बहुवचन 'लवाहिक' होता है। उपसर्ग को 'साबिक़ा' क और इसका बहुवचन 'सवाबिक़' होता हैं। इन सबके सम्बन्ध में अनेक नियम भी हैं प्रत्ययों और उपसर्गों की सूची देने के लिए स्थान नही है और न उनके पूरे नियम ही दिये जा सकते हैं। यह विषय व्याकरण का है और इसके लिये व्याकरणों से स ली जा सकती हैं। पं. कामताप्रसाद गुरुकृत 'हिन्दी व्याकरण' में फारसी अरबी के :

प्रत्ययों और उपसर्गों की एक विस्तृत सूची और उनसे सम्बन्ध रखने वाले सब नियम आदि भी दिये गये हैं। इस कोश में भी यथास्थान बहुत से प्रत्ययों और उपसर्गो के अर्थ तथा प्रयोग आदि दिये गये हैं। यहां केवल यही बतला देना यथेष्ट होगा कि अरबी की अपेक्षा फारसी में उपसर्गों और प्रत्ययों आदि की संख्या बहुत अधिक है और उर्दू में अधिकतर फारसी के ही प्रत्यय और उपसर्ग देखने में आते हैं। अरबी उपसर्गो में अल्, बिल और ला आदि मुख्य है और इनके उदाहरण क्रमशः अलविदा, ग़ैर- क़ानूनी, बिलजब्र, और ला-वारिस आदि हैं। फारसी उपसर्गो में कम,खुश, दर, ना, बर,बा,बे और हम आदि हैं। अरबी प्रत्ययों में अन् और आत मुख्य हैं और इनके उदाहरण हैं - अमूमन्, तक़रीबन्, इर दतन्, तथा खयालात, सवालात, लवाज़िमात आदि। फारसी में प्रत्ययों की संख्या बहुत अधिक है और उनसे अनेक प्रकार के अर्थ और भाव सूचित होते हैं। जैसे आना (जनाना-मालिकाना), आवर (ज़ोरावर), ईन (संगीन), ईना (देरीना-रोज़ीना), नाक (ग़मनाक,खौफनाक), गीर(आलमगीर, जहाँगीर), दार (दूकानदार, मकानदार), बान (दरबान, बाग़बान), नामा (इकरारनामा, सुलहनामा), मन्द (अक्लमन्द,दौलतमन्द), वार (माहवार,तारीखवार), कुन (कारकुन), खोर (हलालखोर,हरामखोर), नुमा (कुतुबनुमा,किबलानुमा), नवीस (अरज़ीनवीस), नशीन (तख्तनशीन, बालानशीन), बन्द,(कमरबन्द, इज़ारबन्द), पोश (ज़ीनपोश, पापोश, सरपोश ),बरदार (हुक्मबरदार, फरमांबरदार), बाज़ (इश्कबाज़, नशेबाज ), बीन (दूरबीन,तमाशबीन), खाना (कारखाना, दौलतखाना), गाह (ईदगाह, चरागाह, बन्दरगाह), ज़ार (गुलज़ार, बाज़ार), आदि आदि।

अन्त में मैं उन कोश कारों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनके रचे हुए कोशों से मुझे इस कोश के संकलन में सहायता मिली हैं। इन कोशों में फरहंग आसफिया (चार भाग, रचयिता स्वर्गीय मौलवी सैयद अहमद साहब देहलवी ), लुगातें किशोरी (रचयिता मौलवी सैयद तसद्दुक हुसेन साहब रिज़वी), न्यू हिन्दुस्तानी इंग्लिश डिक्शनरी (NeW Hindustani English Dictionary )रचयिता डा. एस. डब्ल्यू फैलन, पी- एच.डी. का मैं विशेष रुप से आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त समय समय पर ग़यास उल् लुग़ात और करीम उल् लुग़ात से भी मुझे विशेष सहायता मिलती रही है और उनके रचयिताओ के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना भी मैं कर्तव्य समझता हूँ। स्व-संकलित संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर से भी इस कोश के प्रणयन में बहुत कुछ सहायता ली गयी हैं।

3 सरस्वती फाटक, काशी।

24 मई, 1936

रामचन्द्र वर्मा

## दूसरे संस्करण की प्रस्तावना

उर्दू- हिन्दी कोश का यह दूसरा संस्करण पाठकों के सामने रखा जाता हैं। हर्ष का विषय है कि इसके पहले संस्करण का हिन्दी जगत में यथेष्ट आदर हुआ और चार ही वर्षों बाद उसका यह दूसरा संस्करण प्रकाशित करने की आवश्यकता हुई। हिन्दी में किसी पुस्तक का और विशेषतः इस प्रकार के कोश का पहला संस्करण चार वर्षों में समाप्त हो जाना कुछ कम सन्तोष की बात नहीं हैं। इसी से एक तो इस कोश की उपयोगिता सिद्ध होती है और दूसरे यह सिद्ध होता है कि उर्दू भाषा और उसके शब्दों से परिचित होने की प्रवृत्ति लोगों में दिन पर दिन बढ़ रही हैं। भाषा के क्षेत्र में इसे एक शुभ लक्षण ही समझना चाहिये।

इस दूसरे संस्करण में बहुत कुछ संशोधन और परिवर्द्धन किया गया हैं। पहले संस्करण में समय समय पर जो त्रुटियाँ दिखाई दी थीं अथवा जिनकी सूचनायें मित्रों और पाठकों से मिली थी, उन सबको दूर करने का प्रयत्न किया गया है और इस प्रकार इस कोशकी प्रामाणिकता और शुद्धता का मान बढ़ाया गया है। परिवर्तन के क्षेत्र में भी बहुत कुछ काम किया गया हैं और इस संस्करण में पहले से लगभग एक हजार और अधिक नये शब्द बढ़ाये गये हैं।

यह तो किसी प्रकार कहा ही नहीं जा सकता कि यह कोश सभी दृष्टियों से पूर्ण और निर्दोष हो गया हैं। कोश तो एक ऐसी इमारत है जिसे हमेशा बढ़ाते रहने की जरुरत होती है और जो हमेशा पूर्ण पूर्ण मरम्मत भी माँगती रहती हैं। इसलिये कोश निर्दोष भले ही हो जाये, पर वह कभी पूर्ण नहीं हो सकेगा। नित्य नये नये शब्द बनते और प्रचलित होते रहते हैं। अतः जीवित भाषा के कोश के हर संस्करण में कुछ न कुछ वृद्धि की सदा गुंजाइश बनी रहती हैं। अब रही शुद्धता और प्रामाणिकता । उसका दांवा इसलिये नहीं किया जा सकता है कि एक मनुष्य के काम में और वह भी विशेषतः मेरे जैसे सामान्य मनुष्य के काम में त्रुटियों का रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं । साथ ही कोई दृढ़तापूर्वक अपनी सर्वज्ञता भी प्रतिपादित नहीं कर सकता। भ्रम या अज्ञानवश भूल कर बैठना मनुष्य का धर्म सा ही हैं।

पर साथ ही एक निवेदन और है। कई सज्जनों ने और विशेषतः दक्षिण भारत के कुछ उत्साही हिन्दीप्रेमियों ने गत तीन- चार वर्षों में समय समय पर मेरे पास इस कोश के सम्बन्ध में कई तरह की शिकायतें भेजी थी। उनमें वाजिब शिकायतें तो शायद ही एक दो थीं बाकी अधिकांश शिकायतों का कारण यही था कि वे सज्जन या तो कोश का ठीक तरह से उपयोग करना नही जानते थे और या उन्होने पहले संस्करण की प्रस्तावना ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ी थी, एक सज्जन ने तो कोई दो सौ शब्दों की एक लम्बी चौड़ी सूची बनाकर मेरे पास भेजी थी और लिखा था कि ये सब शब्द आपके कोश में नही हैं। आप इनके अर्थ मुझे लिख भेजिये। परन्तु उनकी उस सूची के मिलान करने पर मुझे पता चला कि उनमें से केवल पांच या छः शब्द कोश में नही हैं। बाकी सबके सब यथास्थान मौजूद निकले केवल। दो- तीन शब्द ऐसे थे जो किसी कारण से अपने स्थान से ऊपर- नीचे हो गये थे। इस बार वे सब शब्द भी और कुछ दूसरे शब्द भी जो आगे-पीछे हो गये थे यथास्थान कर दिये गये हैं।

इस कोश का उपयोग करने वालों के सामने एक बहुत बड़ी कठिनता इस कारण आती हैं कि दुर्भाग्यवश हिन्दी लिखने वाले अपनी भाषा और अपने शब्दों का ठीक ठीक स्वरुप स्थिर नही कर सके हैं। हिन्दी में ऐसे सैकड़ों शब्द है जो दो दो और तीन तीन प्रकार से लिखे जाते हैं। फिर अरबी और फारसी शब्दों का तो पूछना ही क्या हैं। मुझे प्रथम श्रेणी के कई लेखकों के लेखों और ग्रन्थों में एक ही शब्द दो दो तीन तीन रुपों में और कुछ शब्द चार चार रुपों मे भी लिखे हुए मिले हैं। किसी शब्द के इस प्रकार के सभी रुपों का संग्रह न तो सम्भव ही है और न वांछनीय ही। यहाँ आकर मैं अपनी पूरी पूरी असमर्थता प्रकट किये बिना नही रह सकता। निवेदन यही है कि चटपट और बिना समझे- बूझे ही यह निश्चय नही कर लेना चाहियें कि अमुक शब्द इसमें नही हैं। जहाँ तक हो सका है प्रायः प्रयुक्त होनेवाले सभी शब्द इसमें ले लिये गये हैं। और फिर भी यदि कुछ शब्द रह गये होगें तो अगले संस्करण में बढ़ा दिये जायेगें।

हैदराबाद उस्मानिया यूनीवर्सिटी के श्री वंशीधर विद्यालंकार ने इस कोश के पहले संस्करण की भूमिका में यह सूचना उपस्थित की थी कि 'अलिफ' और 'ऐन' तथा 'ते' 'तोए' सरीखे कुछ अक्षरों का पार्थक्य दिखलाने के लिए कुछ नये संकेत निश्चित किये जाने चाहियें। सूचना है तो बहुत उपयोगी, पर इसे कार्यरुप में परिणत करने में बहुत- सी कठिनाइयाँ हैं। देवनागरी में जो उच्चारण 'स' का है, वह या उससे मिलता-जुलता उच्चारण सूचित करने वाले उर्दू में तीन अक्षर हैं से, सीन और साद। और 'ज' क उच्चारण सूचित करने वाले अक्षर है- जाल, ज़े, जाद, और जो। और साधारण 'ज' के लिए जो जीम है, वह तो है ही। यदि ये संकेत नये बनाये जायँ तो इनके लिए टाइप भी नये बनवाने पड़ेंगे। अथवा एक दूसरा उपाय यह हो सकता था कि जहाँ कोष्ठक में उर्दू शब्दों की व्युत्पत्ति दी गई है,वहाँ एक कोष्ठक में उर्दू लिपि में उनके मूल रुप भी दे दिये जाते। यह बात पहले ही संस्करण में मेरे ध्यान में आई थी। परन्तु प्रकाशक महोदय उसके लिए तैयार नहीं हुए और मैंने भी कई कारणों से ऐसा करना बिलकुल निरर्थक समझा। क्योंकि मैं जानता था कि जो सज्जन इन अक्षरों के भेद जानना चाहेंगे, वे अवश्य ही उर्दू लिपि से परिचित होने चाहिये, और वे अरबी- फारसी के कोश देखकर अपना भ्रम दूर कर सकते हैं। और जो लोग उर्दू लिपि से परिचित नही हैं, उनके लिये इस प्रकार का भ्रम-जाल खड़ा करना मुनासिब नहीं ।

अन्त में मैं यह भी निवेदन कर देना चाहता हूँ कि अपनी भूलों का सुधार करने के लिए मैं सदा तैयार हूं और रहूँगा। जिन सज्जनों को इस कोश में कोई त्रुटि या न्यूनता दिखाई दे वे कृपया मुझे सूचित करें। अगले संस्करण में उनका सुधार हो जायेगा। स्वयं मेरी दृष्टि में ही अब भी इसमें कुछ बातों की कमी हैं। अगले संस्करण में वह कमी भी पूरी करने का प्रयत्न किया जायेगा।

२२ अगस्त, १६४० — रामचन्द्र वर्मा

इधर वर्षो से श्रद्धेय वर्मा जी का यह कोश अ प्राप्य रहा। बराबर पाठक इसकी माँग करते रहें। पुनः इस कोश को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुये मुझे हर्ष हो रहा हैं। इस संस्करण में ऐसे चलते हुए तथा उपयोगी हजारों शब्दों को भी सम्मिलित किया गया हैं जो पिछले संस्करणों में आने से छूट गये थे। अनेक स्थलों में अर्थो में भी सुधार किया गया हैं। आशा है कि हिन्दी जगत् वर्मा जी की इस कृति का पूर्ववत् स्वागत करेगा।

विजय दशमी, १८ अक्तूबर, १६६१ — बदरीनाथ कपूर
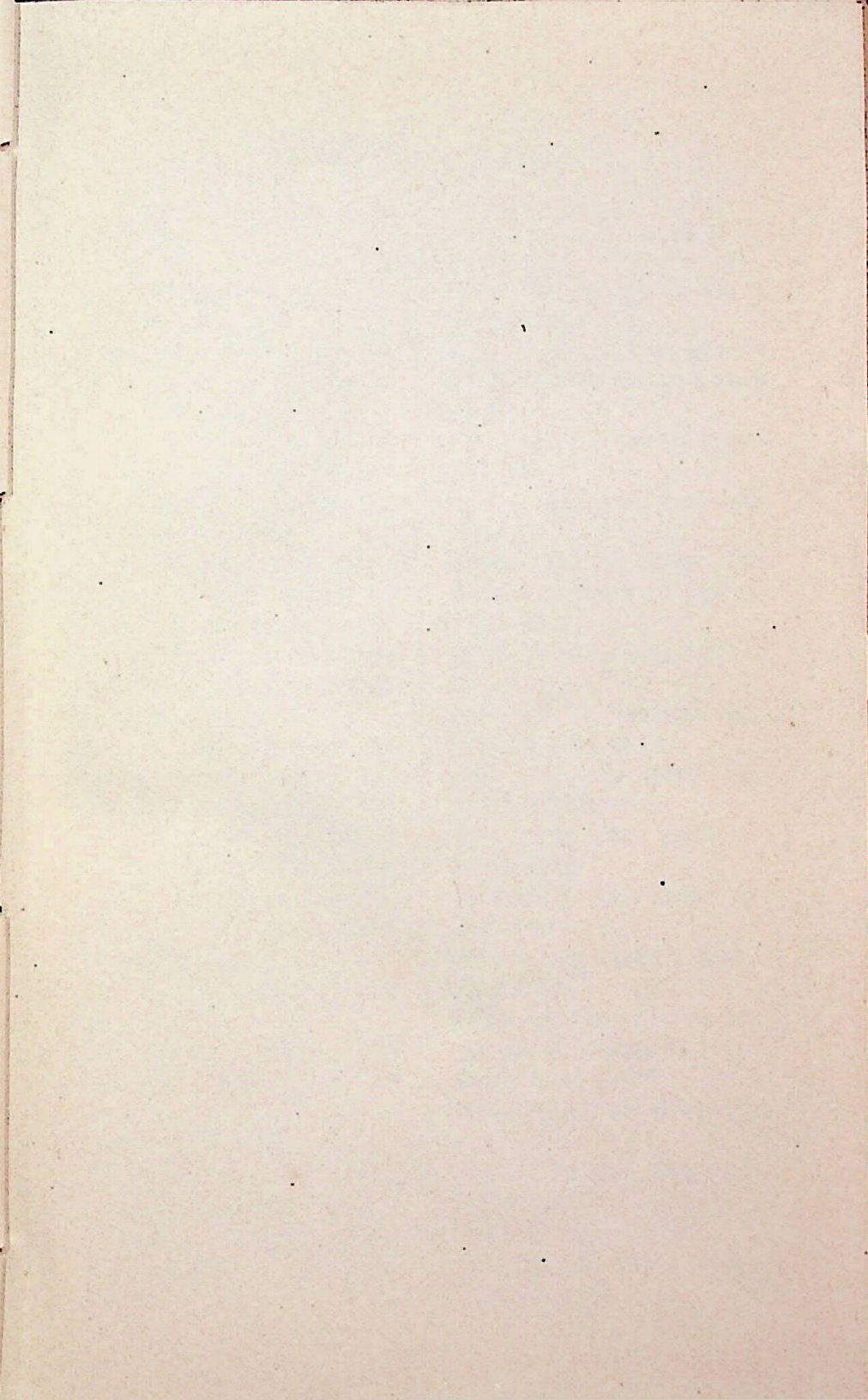
# उर्दू-हिन्दी शब्दकोश



अंगबीं - स्त्री० ( फा० ) शहद, मधु।
अंगुश्त - पुं० ( फ़ा० ) उँगली।
अंगुश्तनुमा - वि० ( फा० ) जिसकी ओर लोगों की उँगलियाँ उठें, किसी काम में, विशेपतः किसी बुरे काम में, प्रसिद्ध।
अंगुश्तनुमाई - स्त्री० ( फा० ) १ किसी की ओर, विशेपतः कोई बुरा काम करने वाले की ओर, लोगों को उँगलियाँ उठना। २ किसी की ओर उँगली उठाना।
अंगुश्तरी - स्त्री० ( फा० ) अँगूठी, मुद्रिका।
अंगुश्ताना - पुं० ( फा० ) १ उँगली पर पहनने की लोहे या पीतल की एक टोपी जिसे दरजी सीते समय एक उँगली में पहन लेते हैं। २ हाथ के अंगूठे की एक प्रकार की मुँदरी, आरसी, अड़सी।
अंगूर - पुं० ( फा० ) १ एक लता और उसके फल का नाम जो बहुत मीठा और रसीला होता है, दाख, द्राक्षा। मुहा०- अंगूर का मड़वा या अंगूर की टट्टी = अंगूर की बेल के चढ़ने और फैलने के लिए बाँस की फट्टियों का बना मंडप। २ एक प्रकार की आतिशवाजी। ३ ज़ख्म के भरने के समय उसमें दिखाई पड़ने वाली लाली।
अंगूरी - वि० ( फा० ) अंगूर से बना हुआ, अंगूर के रंग का।
अंगेज़ - वि० ( फा० ) उत्तेजित करने वाला, भड़काने वाला, ( यौगिक शब्दों के अन्त में।)
अंजवार - पुं० दे० "अंजुबार।"
अंजाम - पुं० ( फा० ) १ अन्त, समाप्ति। २ परिणाम, फल। मुहा०-अंजाम देना= ( काम ) पूरा करना, समाप्ति तक पहुँचाना। यौ०- अंजामकार= अन्त में, आखिर, अन्ततोगत्वा।
अंजीर - पुं० ( फा० ) गूलर की जाति का एक दस्तावर फल।
अंजुबार - पुं० ( फा० ) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ आदि दवा के काम में आती हैं।
अंजुम - पुं० ( अ० ) नजम का बहुवचन। सितारे, तारे।
अंजुमन - पुं० ( फा० ) सभा, संस्था, मजलिस।
अकड़बाज़ - वि० ( हिं० अकड़ना + फा० बाज़ ) ( सं० अकड़बाजी ) १ अभिमानी। घमंडी, २ लड़ाका।
अक़्दस- वि० ( अ० अक्दस ) १ पवित्र। २ श्रेष्ठ।
अक़्ब- पुं० ( अ० ) पिछला भाग, पीछा। मुहा०-अक़्ब में-पीछे, अन्त में।
अकबर- वि० ( फा० अक्बर ) ( बहु० अकाबिर ) बहुत बड़ा, महान्।
अकबरी- स्त्री० ( फा० अक्बरी ) एक प्रकार की मिठाई।
अक़रक़रहा- पुं० ( अ० ) अक़रक़रा नामक प्रसिद्ध ओपधि।
अक़रब-पुं० ( अ० अक़्ब ) १ बिच्छू। २ वृश्चिक राशि।
अक़रिबा- पुं० ( अ० )'अकरब' का बहु०। ( अ० 'क़रीब' से ), रिश्तेदार, सम्बन्धी।
अक़रुबा- पुं० दे० 'अक़रिबा'।
अक्लन्-क्रि० वि० ( अ० अक्लन्।) समझ में।
अक़्लीम- स्त्री० ( अ० ) ( बहु० अक़ालीम ) देश, प्रान्त।
अकल्ल-वि० ( अ० ) थोड़ा, कम।
अकल्लियत- स्त्री० ( अ० ) १ अल्पमत। २ अल्पसंख्यक समाज।

अक़्वाम- स्त्री० (अ० अक्वाम) "कौम" का बहुवचन।

अक़्सर-क्रि० वि० दे० 'अक्सर'।

अक़्साम- पुं० (अ० अक्साम) १ क़िस्म का बहुवचन, प्रकार। २ कसम का बहुवचन, शपथ।

अक़्सीर-वि० दे० 'अक्सीर'।

अक़ायद- पुं० (अ०) अ० 'अक़ीदा' का बहुवचन।

अक़ारिब-वि० (अ० 'करीब' का बहु०) रिश्तेदार, सम्बन्धी।

अक़ालीम- स्त्री० (अ०) 'अक्क़लीम' का बहुवचन।

अक़्रिबा- पुं० दे० 'अक़रिबा'।

अक़ीक़- पुं (अ०) एक प्रकार का लाल पत्थर जिस पर मोहर खोदी जाती है।

अक़ीक़ा- पुं० (अ० अक़ीक) नवजात शिशु का मुंडन जो मुसलमानों में जन्म से छठे दिन होता है।

अक़ीद- वि० (अ०) दृढ़, पुष्ट।

अक़ीदत- स्त्री० (अ०) १ किसी धर्म की वह मूल बात जिसे मान लेने पर मनुष्य उस धर्म में सम्मिलित हो जाता है। २ धार्मिक विश्वास।

अक़ीदा- पुं० (अ० अक़ीदः) (बहु० अक़ायद) १ मन में होने वाला दृढ़ विश्वास। २ धर्म, मजहब।

अक़ीम-वि० (अ०) (स्त्री० अक़ीमा) निःसंतान, बाँझ।

अक़ील- पुं० (अ०) (स्त्री० अक़ीला) अक्लमन्द, बुद्धिमान्।

अक़ूवत- स्त्री० (अ० उकूवत) दंड, सजा।

अक्द- पुं० (अ०) १ सम्बन्ध स्थापित करना, जोड़ना। २ विवाह, शादी। ३ विक्रय, बेचना। ४ इक़रार।

अक्द-नामा- पुं० (अ०+फा०) विवाह का इकरारनामा।

अक्द-बन्दी- स्त्री० (अ०+फा०) १ करार करना, निश्चय करना। २ विवाह सम्बन्ध स्थापित करना।

अक्दस-वि० (अ०) परम पवित्र।

अक्ल- पुं० (अ०) खाना, भोजन। यौ०-अक्ल-व-शुब=खाना-पीना।

अक्ल- स्त्री (अ०) बुद्धि, समझ, प्रज्ञा।

अक्लमन्द-वि० (अ०+फा०) समझदार, बुद्धिमान्।

अक्लमन्दी- स्त्री० (अ०+फा०) समझदारी, बुद्धिमत्ता।

अक्ली- वि० (अ०) १ अक्ल या बुद्धिसम्बन्धी। २ तर्कसिद्ध, उचित। वाजिब।

अक्स- पुं० (अ०) १ प्रतिबिंब, छाया, परछांही। २ चित्र, तस्वीर।

अक्सर-क्रि० वि० (अ०) प्रायः, बहुधा। अधिकतर, (वि०) बहुत, अधिक।

अक्सरियत- स्त्री० (अ०) १ बहुमत। २ बहुसंख्यक समाज।

अक्सी-वि० (अ० अक्स) छाया सम्बन्धी, जैसे-अक्सी तस्वीर=छायाचित्र, फोटो।

अक्सीर- स्त्री० (अ०) १ वह रस या धातु जो किसी धातु को सोना या चाँदी बना दे। रसायन, कीमिया। २ सब रोगों को नष्ट करने वाली दवा, वि० अव्यर्थ, बहुत गुणकारी।

अखगर- पुं० (फा० अखार) आग की चिनगारी।

अखज- पुं० (अ०) १ ले लेना, ग्रहण करना। २ उद्धृत करना।

अखज़र-वि० (अ० अख्जर) हरा, यौ०-बहर-उलू-अखज़र-अरब से भारत तक का समुद्र।

अखनी- स्त्री० (फा० यख्नी) मांस का रसा, शोरबा।

अखबार- पुं० (अ० अख्बार 'खबर' का बहु०) समाचारपत्र, संवादपत्र, खबर का कागज़।

अखबार-नवीस- पुं० (अ० अखबार+फा०) अखबार लिखनेवाला, सम्पादक।

अखलाक़- पुं० (अ० अख्लाक 'खुल्क' का बहु०) १ आचार। २ आदत, ढंग। ३ मुरव्वत, शील। ४ नीति।

अखलाकी- वि० (अ० अख़्लाक़ी) १ अखलाक़ या शीलसंबंधी। २ नीति-सम्बन्धी, नैतिक।
अखवाल- पुं० (अ० अख़्वाल का बहु०) भाई, सहोदर, भ्राता।
अखीर- पुं० वि० दे० 'आखिर'।
अखूर- पुं० दे० 'आखोर'।
अख्तर- पुं० (अ०) तारा, सितारा।
अख्तियार-पुं० = इख्तियार (अधिकार)।
अगर- अव्य० (फा०) यदि, जो।
अगरचे- अव्य० (फा० अगरचेः) यद्यपि, यदि ऐसा है।
अग़राज़- स्त्री० (अ० अग़ाज) 'ग़रज' का बहु०। १ मतलब, अभिप्राय। २ आवश्यकताएँ। ३ उद्देश्य।
अग़लब- क्रि० वि० (अ०) अग्लब) बहुत करके, बहुत सम्भव है कि।
अग़लबग़ल- क्रि० वि० (अ० बग़ल) इधर-उधर, आसपास।
अज़- प्रत्य० (फा०) से, (विभक्ति) जैसे-अज जानिब= की तरफ से, अज तरफ= की तरफ से, अज रूए= के अनुसारः अज रूए क़ानून = विधि के अनुसार।
अज़कार- पुं० (अ०, १ 'जिक्र' का बहुवचन। २ ईश्वर की प्रशंसा। ३ उपासना।
अज़-खुद- क्रि० वि० (फा०) स्वयं। आपसे आप।
अज़ग़ैबी- वि० (फा०) १ छिपा हुआ। २ रहस्यपूर्ण।
अजज़ा- पुं० (अ० अजजाऽ='जुज' का बहु०) १ किसी चीज के टुकड़े या अंग। २ भाग। अंश।
अज़दहा- पुं० (फा० अज्दहा) बहुत बड़ा साँप, अजगर।
अज़दहाम- पुं० (अ० इज़दिहाम) लोगों का झुंड, भीड़।
अजदाद- पुं० (अ० अज्दाद) बाप-दादा, पूर्वज, पुरखे, यौ०- आबा व अजदाद= पूर्वज।
अजनबी- पुं० (अ० अज्नबी) परदेशी। २ दूसरे शहर या देश से आया हुआ आदमी, वि० १ अपरिचित, अज्ञात। २ अनजान, ना-वाक़िफ़।
अजनास- स्त्री० (अ०) १ 'जिन्स' का बहु०। २ अनेक प्रकार की वस्तुएँ। ३ घर-गृहस्थी की सामग्री, असबाब।
अजब- वि० (अ०) विलक्षण, अद्भुत। विचित्र, अनोखा।
अज़बर- क्रि० वि० (फा०) केवल स्मरण-शक्ति से, जबानी। जैसे-अज़बर सारी ग़ज़ल कहे।
अज़बस- अ० (फा०) बहुत अधिक।
अजम- पुं० (अ० अज्म) अरब के आस-पास के ईरान और तूरान आदि देश।
अज़मत- स्त्री० (अ० अज्मत) बड़प्पन। बुजुर्गी, महत्ता।
अज़मी- पुं० (अ०) अजम देश का निवासी, ईरानी।
अज़र- पुं० दे० 'अज्र'।
अंज़रक-वि० अ० (अज़क़) नीला।
अजराम- पुं० (अ० अज्राम जिर्म=शरीर का बहु०) १ शरीर। २ पिंड। यौ०-अजरामे फलकी=आकाश में घूमने वाले पिंड (ग्रह, नक्षत्र आदि)।
अज़रूए-क्रि० वि० (फा०) अनुसार, जैसे-अजरूए ईमान=ईमान से।
अज़ल- स्त्री० (अ०) मृत्यु, मौत, यौ०-अजल रसीदा या अजल गिरिफ्ता= १जिसकी मौत आई हो। २ शामत का मारा।
अजल- स्त्री० (अ०) १ आराम। २ मूल। उद्गम। ३ अनादि काल। यौ०-रोज़े अज़ल= १ सृष्टि की उत्पत्ति का दिन। २ किसी के जन्म का दिन जब कि उसके भाग्य का निश्चय होता है।
अज़ला- पुं० अ० 'जिला' का बहुवचन।
अज़ली- वि० (अ०) सदा से रहने वाला,

शाश्वत।
अज़ल्ल- वि० (अ०) १ बड़ा, बुजुर्ग। २ सुप्रतिष्ठित। ३ बहुत नीच या घृणित।
अज़सरेनौं- क्रि० वि० (फा०) नये सिरे से, बिलकुल आरम्भ से।
अजसाम- पुं० अ० 'जिस्म' का बहु०।
अज़हद- वि (फा०) हद से ज्यादा, बहुत अधिक।
अज़हर- वि० (अ०) ज़ाहिर, प्रकट।
अज़ाँ- क्रि० वि० (फा० अज+आँ) इससे, इसलिए। यौ०-बादअज़ाँ=इसके बाद।
अज़ाज़ील- पुं० (अ०) शैतान, दुष्ट आत्मा।
अज़ान- स्त्री० (अ०) नमाज़ की पुकार जो मस्जिदों में होती है, बाँग, क्रि० अ०-अज़ान देना।
अज़ाब- पुं० (अ०) १ दुःख। कष्ट। २ संकट, विपत्ति। ३ पाप, दुष्कर्म।
अजायब-वि० (अ०) 'अजीब' का बहु०।
अजायबखाना- पुं० (अ०+फा०) अद्‌भुत-पदार्थ-संग्रहालय।
अज़ीज़- वि० (अ०) १ माननीय। प्रतिष्ठित। २ प्रिय। प्यारा। यौ०-अज़ीज़-उल्क़दर=प्रिय। प्यारा। ३ सम्बन्धी। रिश्तेदार। पुं० सम्बन्धी। सुहृद्।
अजीब- वि० (अ०) विलक्षण। अद्‌भुत। यौ०-अजीब व ग़रीब=बहुत अद्‌भुत। परम विलक्षण।
अज़ीम- पुं० (अ०) वृद्ध और पूज्य। वि० बहुत बड़ा। विशाल-काय। महान्।
यौ०-अज़ीम-उश्शान=बहुत शानदार।
अज़ीयत- स्त्री० (अ०) किसी को पहुँचाई जाने वाली पीड़ा। अत्याचार।
अजूक़ा- पुं० (अ० अजूक-मि० सं० आजीविका) १ खाने की सामग्री। भोजन। २ अल्प वेतन।
अजूबा- पुं० (अ० अजूब) १ विलक्षण पदार्थ। २ करामात। वि० विलक्षण। अद्‌भुत।
अज़ो- पुं० (अ० अज्ब) १ शरीर का अंग। अवयव। २ अंश, हिस्सा।
अज्ज़- पुं० (अ०) १ आजिज़ी। नम्रता। लाचारी।
अज्म- पुं० (अ०) ईरान और तूरान आदि देश। अजम।
अज्म- पुं० (अ०) अक्षरों पर नुक़्ते या बिन्दियाँ लगाना।
अज्म- पुं० (अ०) दृढ़ विचार। पक्का निश्चय। यौ०-अज्म-बिलजज्म=दृढ़ निश्चय।
अज्मत- स्त्री० दे० 'अज़मत'।
अज्र- पुं० (अ०) १ पारिश्रमिक। २ पुरस्कार। ३ बदले में दिया जाने वाला धन या किया जाने वाला उपकार। फल। ४ खर्च। व्यय। लागत।
अतका- पुं० (तु० अतकः) दाई या धाय का पति।
अतफाल- पुं० (अ० 'तिफ्ल' का बहु०) १ लड़के। बालक। बाल-बच्चे। सन्तान। यौ०-अयाल व अतफाल=स्त्री-पुत्र आदि।
अतराफ़- पुं० (अ० अत्राफ) 'तरफ' का बहु०।
अतलस- स्त्री० (अ० अत्लस) एक प्रकार का बहुत मुलायम रेशमी कपड़ा।
अतवार- पुं० (अ० अत्वार 'तौर' का बहु०) १ तौर-तरीक़ा। रंग-ढंग। २ चाल-चलन। रहन-सहन।
अता- पुं० (अ०) प्रदान, दान; जैसे- अता करना= प्रदान करना। यौ०-अतानामा= दान-पत्र।
अताई- पुं० (अ० अता) १ वह जो अपने ईश्वरदत्त गुणों के कारण आपसे आप कोई काम सीख ले। बिना किसी शिक्षक की सहायता से स्वयं कोई काम करने वाला।
अताब- पुं० दे० 'इताब'।
अताबक- पुं० (फा०) १ स्वामी। मालिक। २ राजा या प्रधान मंत्री की एक उपाधि।
अतालीक़- पुं० (तु०) १ शिष्टाचार सिखाने वाला। २ उस्ताद। गुरु। शिक्षक।

अतालीक़ी- स्त्री० (तु०) अतालीक या शिक्षक का कार्य या पद।
अतिब्बा- पुं० (अ०) 'तबीब' का बहु०।
अतिया- पुं० (अ० अतियः) (बहु० अतैयात) प्रदान की हुई वस्तु।
अतूफ़त- स्त्री० (अ०) दया। मेहरबानी।
अत्तार- पुं० (अ०) १ इत्र बनाने और बेचनेवाला। २ औषधें आदि बेचनेवाला।
अत्तारी- स्त्री० (अ०) अत्तार का काम या पेशा।
अत्फ़- पुं० (अ०) १ इच्छा। ख्वाहिश। २ कृपा। मेहरबानी। ३ संयोजक अव्यय। जैसे- और।
अदक़्क़-वि० (अ०) बहुत कठिन। मुश्किल।
अदखाल- पुं०='इदखाल'।
अदद- स्त्री० (अ०) १ संख्या। गिनती। २ संख्या का चिह्न या संकेत, अंक।
अदन- पुं० (अ०) स्वर्ग के उपवन।
अदना-वि० (अ०) १ नीचे दरजे का। २ निम्न, तुच्छ। ३ छोटा। ४ बहुत सामान्य। यौ०- अदना व आला=छोटे और बड़े सब।
अदब- पुं० (अ०) शिष्टाचार। कायदा। बड़ों का आदर-सम्मान।
अदम- पुं० (अ०) न होना, अभाव, अनस्तित्वः जैसे- अदम इकरार=करार या अनुबंध का अभाव, अदम तामील=निष्पादन का अभाव, अनिष्पादन। अदम पैरवी=पैरवी का अभाव, अदम मौजूदगी=मौजूदगी का अभाव, अनुपस्थितिः अदम हाजिरी फरीक़ैन=पक्षकारों की अनुपस्थिति में। वि० परलोक का।
अदरक- पुं० (फा० मि० सं० आर्दक) एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती हैं।
अदल- पुं० (अ० अदल) १ न्याय। इन्साफ। २ न्यायशील।
अदवात- स्त्री० (अ० अदात का बहु०) यन्त्र। औज़ार।
अदविया- स्त्री० (अ० अदवियः) 'दवा' का बहु०।
अदवियात- स्त्री० (अ०) 'दवा' का बहु०।
अदा- स्त्री० (अ०) १ हाव-भाव। नखरा। २ ढंग। तर्ज़। वि० (अ०) जो चुका दिया गया हो, चुकता। मुहा०-अदा करना=पालन करना। जैसे-फर्ज़ अदा करना। २ पूरा करना। ३ भुगतान करना।
अदाए- (स्त्री०) (अ०) पूरा करना। संपन्न करना। जैसे-अदाए खिदमत, अदाए शहादत।
अदाबंदी- स्त्री० (अ०+फा०) ऋण आदि चुकाने के लिए समय निश्चित करना।
अदायगी- स्त्री० (अ० अदा) अदा होना या करना, भुगतान। जैसे-कर्ज़ की अदायगी=ऋण का भुगतान।
अदालत- स्त्री० (अ०) १ न्याय। इन्साफ। २ न्यायालय। कचहरी। यौ०- अदालते आलियः= उच्च न्यायालयः अदालते इब्तिदाई= आरम्भिक न्यायालयः अदालते खफीफाः = लघुवाद न्यायालय, अदालते दीवानी= दीवानी न्यायालयः अदालते फौजदारी= फौजदारी न्यायालयः अदालते मातहत= अधीनस्थ न्यायालयः अदालते माल= राजस्व न्यायालय।
अदालती- वि० (अ०) अदालत-संबंधी। अदालत का।
अदावत- स्त्री० (अ०) (वि० अदावती) दुश्मनी, शत्रुता, यौ०- अदावते बिलक़स्द= जानबूझकर लिया हुआ वैर।
अदीब- पुं० (अ०) विद्या और साहित्य का ज्ञाता। साहित्यज्ञ। वि० सुशील। नम्र।
अदीम- वि० (अ०) १ जो न रह गया हो। नष्ट। २ अप्राप्य। ३ रहित। जैसे-अदीम-उल-फुरसत=जिसे बिलकुल फुरसत या अवकाश न हो।
अदू- पुं० (अ०) दुश्मन। वैरी। शत्रु।
अनवर- वि० (अ० अन्वर) १ बहुत चमकीला। चमकदार। २ शोभायमान।
अनवाअ- पुं० (अ० अन्वाऽ) 'नौऽअ' का

बहु०। प्रकार। भेद। किस्में।

अनादिल- स्त्री० (अ० 'अन्दलीब' का बहु०) बुलबुलें।

अनायत- स्त्री० (अ० इनायत) कृपा। दया। मेहरबानी।

अनार- पुं० (फा०) एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम।

अनारदाना- पुं० (फा०) १ खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना। २ रामदाना।

अनास- पुं० (अ०) १ दोस्त। मित्र। २ प्रेम करने या सहानुभूति दिखलानेवाला।

अनासर- पुं० (अ०) 'अन्सर' का बहु०।

अन्क़रीब- क्रि० वि० (अ०) १ क़रीब, क़रीब। प्रायः। २ बहुत थोड़े समय में। निकट भविष्य में।

अन्का- पुं० देखो 'उन्का'।

अन्दर- अव्य० (फा०) भीतर। में।

अन्दरून- वि० (फा०) अन्दर। भीतर। पुं० घर के अन्दर के कमरे।

अन्दरूनी- वि० (फा०) अन्दर का। भीतरी।

अन्दाख्ता- वि० (फा० अन्दाख्तः) १ फेंका हुआ। २ छितराया हुआ। ३ छोड़ा हुआ। त्यक्त।

अन्दाज़- पुं० (फा०) १ अटकल। अनुमान। कूत। तखमीना। मान। नाप-जोख। २ ढब। ढंग। तौर। तर्ज। ३ मटक। भाव। चेष्टा। वि० फेंकनेवाला।

अन्दाज़न्- क्रि० वि० (फा० अन्दाज) अन्दाज या अनुमान से।

अन्दाज़ा- पुं० (फा० अन्दाजः) अटकल। अनुमान। कूत। तखमीना।

अन्दाम- पुं० (अ०) शरीर। बदन। जिस्म।

अन्देश- वि० (फा०) चिन्ता करनेवाला। ध्यान रखनेवाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- आक़िबत-अन्देश, दूर-अन्देश।)

अन्देशा- पुं० (फा० अन्देशः) १ भय, आशंका। २ चिन्ता, सोच, फिक्र। ३ शक, सन्देह, दुविधा।

अन्दोह- पुं० (फा०) दुःख, रंज, ग़म।

अन्दोह-गीं- वि० (फा०) दुःखी, रंज में पड़ा हुआ।

अन्दोहनाक- वि० दे० 'अन्दोह-गीं'।

अन्ना- स्त्री० (तु०) माता। माँ।

अन्वान- पुं० दे० 'उन्वान'।

अन्सब- वि० (अ०) बहुत उचित। बहुत वाजिब।

अन्सर- पुं० (अ० उन्सर)( बहु० अनासिर) मूल तत्व।

अफआल- पुं० (अ० अफलाल 'फेल' का बहु०) विभिन्न या तरह- तरह के कार्य, कार्य-समूह, कार्रवाइयाँ, कृत्य।

अफई- पुं० (अ० अफ़ई) काला नाग, विषधर सर्प।

अफकार- स्त्री० (अ० अफ्कार) 'फिक्र' का बहु०।

अफगन- वि० (फा० अफ्गान) गिराने वाला। जैसे- शेरे-अफगन।

अफगान- पुं० (फा० अफ्गान) अफगानिस्तान का रहनेवाला, काबुली।

अफग़ार- वि० (फा० अफ्गार) घायल, जख्मी।

अफज़ल- वि० (अ० अफ्जल) सबमें अच्छा, सर्वश्रेष्ठ, बहुत उत्तम।

अफज़ा- वि० (फा० अफ्जा) बढ़ाने या वृद्धि करने वाला। (यौगिक शब्दों के अंत में। जैसे-रौनक-अफज़ा।)

अफज़ाइश- स्त्री० (फा० अफ्जाइश) वृद्धि। अधिक्ता। बढ़ोतरी।

अफज़ूँ- वि० (फा० अफ्जूँ) बढ़ा हुआ। यौ०- रोज़ अफज़ूँ= नित्य बढ़ने वाला।

अफज़ूनी- स्त्री० (फा०) बढ़ने की क्रिया या भाव। वृद्धि।

अफयून- स्त्री० (अ० अफ्यून) अफीम नामक प्रसिद्ध मादक वस्तु।

अफराज़- वि० (फा०) शोभा आदि बढ़ानेवाला।

अफराज़ी- स्त्री० (फा० अफ्राजी) बढ़ाने की क्रिया।

अफराद- स्त्री०, पुं० (अ० अफ्राद) फर्द

का बहु०। १ सूची। २ पत्रक, पत्र।

अफरोख्ता- वि० (फा० अफ्रोख्तः) १ उग्र रूप में आया हुआ, भड़का हुआ। २ प्रज्वलित, जलता हुआ।

अफलाक- पुं० (अ० अफ्लाक़) 'फलक' का बहु०।

अफलातून- पुं० (अ० अफ्लातून) १ सुप्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो का अरबी नाम। २ बहुत अधिक अभिमान करने वाला।

अफवाज- स्त्री० (अ० अफ्वाज) 'फौज' का बहु०।

अफवाह- स्त्री० (अ० अफ्वाह) उड़ती खबर, बाज़ारू खबर, किंवदंती।

अफशाँ- पुं० (फा० अफ्शाँ) १ जलकण, पानी की बूँदें। २ बादल के कटे हुए छोटे-छोटे टुकड़े जो स्त्रियों के मुख पर शोभा के लिए छिड़के जाते हैं।

अफशा- वि० दे० 'इफशा'।

अफशानी- स्त्री० (फा० अफ्शानी) छिड़कने की क्रिया या भाव। यौ०- अफसानी काग़ज़= वह कागज़ जिस पर सोने का वरक़ छिड़का होता है।

अफसर- पुं० (फा० अफ्सर) १ टोपी। २ हाकिम, अधिकारी। ३ सरदार, प्रधान।

अफसाना- पुं० (फा० अफ्सानः) कहानी, किस्सा।

अफसुरदा-वि० (फा० अफ्सुर्दः) १ मुरझाया हुआ कुम्हलाया हुआ। २ खिन्न उदास। ३ ठिठुरा हुआ।

अफसूँ- पुं० (फा० अफ्सूँ) १ मंत्र। २ जादू, इंद्रजाल।

अफसोस- पुं० (फा० अफ्सोस) १ शोक, रंज, दुःख। २ पश्चात्ताप, खेद, पछतावा। यौ०- अफसोस-सद-अफसोस= बहुत ही अधिक अफसोस, बहुत दुःख।

अफाक़ा- पुं० (फा० इफाक़ः) रोग आदि में कमी होना।

अफीफ- वि० (अ०) (स्त्री० अफीफा) दुष्कर्मों से बचनेवाला, सदाचारी।

अफ़ू- पुं० (अ० अफ्व) क्षमा करना, माफी।

अफूनत- स्त्री० (अ० उफ्नत) बदबू, सड़ायँध, दुर्गन्ध।

अबखरा- पुं० (अ० अब्ख़रः) पानी की भाप।

अबतर- वि० (अ० अब्तर) १ जिसकी दशा बिगड़ी हुई हो, दुर्दशा-ग्रस्त, खराब, अव्यवस्थित।

अबतरी- स्त्री० (अ० अब्तरी) १ दुर्दशा, खराबी। २ अव्यवस्था।

अबद- स्त्री० (अ०) अनन्त या असीम होने का भाव, अनन्तता।

अबदन- क्रि० वि० (अ०) सदा, हमेशा।

अबदी- वि० (अ०) सदा बना रहनेवाला, अमर या अविनश्वर।

अबयात- स्त्री० (अ० अब्यात, 'बैत' का बहु०) १ शेरों या कविताओं का समूह। २ फारसी कविता का एक छन्द।

अबर- पुं० दे० 'अब्र'।

अबरा- पुं० (फा० अब्रा) पहनने के दोहरे कपड़ों में रहनेवाला कपड़ा, अस्तर का उलटा।

अबराज़- क्रि० स० (अ० अब्राज़) १ प्रकट करना। २ रहस्य खोलना।

अबरी- स्त्री० (फा० अब्री) एक प्रकार का बहुत चिकना और रंगीन कागज़।

अबरेशम- पुं० (फा०) १ कच्चा रेशम। २ रेशम के कीड़े का कोया।

अबलक- वि० (अ० अब्लक़) जिसमें दो रंग हों, चितकबरा, दो-रंगा। पुं० वह घोड़ा जिसका रंग सफेद और काला हो।

अबवाब- पुं० (अ० 'बाब' का बहु०)१ परिच्छेद, अध्याय। २ लगान। ३ शुल्क।

अबस- क्रि० वि० (अ०) व्यर्थ, बेफायदा, नाहक। वि० जिसका कोई फल न हो, व्यर्थ।

अबहार- पुं० (अ०) १ 'बहर' का बहु०। २ समुद्र, नदी आदि।

अबा- स्त्री० (अ०) एक प्रकार का बड़ा

चोगा।

अबादान- वि० (अ०) १ जोता-बोया हुआ। २ बसा हुआ, आबाद।

अबाबील- स्त्री० (अ०) काले रंग की एक चिड़िया, कृष्ण, कन्हैया।

अबियात- स्त्री० (अ०) 'बेत' का बहु०।

अबीर- पुं० (अ०) (वि० अबीरी) एक प्रकार की रंगीन बुकनी या अबरक का चूर्ण जिसे लोग होली में इष्ट-मित्रों पर डालते हैं।

अबू- पुं० (अ०) पिता, बाप।

अब्जद- पुं० (अ०) १ वर्ण-माला। २ अरबी वर्णमाला का एक विशिष्ट क्रम। ३ अरबी में वर्णमाला के अक्षरों द्वारा अंक सूचित करने की प्रणाली।

अब्द- पुं० (अ०) दास, गुलाम, सेवक।

अब्दाल- पुं० (अ० 'बदील' का बहु०) १ धार्मिक व्यक्ति। २ एक प्रकार के मुसलमान वली या महात्मा। ३ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी।

अब्बा- पुं० (फा०) बाबा) पिता के लिए सम्बोधन।

अब्बा-जान- सं० पुं० देखो 'अब्बा'।

अब्बास- पुं० (अ०) १ शेर, सिंह। २ मुहम्मद साहब के चाचा का नाम।

अब्बासी- पुं० (अ०) एक प्रकार का लाल रंग। वि० लाल।

अब्र- पुं० (फा०) बादल, मेघ।

अब्रू- स्त्री० (फा०) आँखों के ऊपर के बाल, भौंह।

अब्रेमुरदा- पुं० (फा०) मुरदा, बादल, स्पंज।

अब्लक़ा- स्त्री० (अ० अब्लकः) मैना की तरह की एक चिड़िया।

अम- पुं० (अ०) पिता का भाई, चाचा।

अमजद- वि० (अ० अम्जद) बड़ा और विशेष पूज्य।

अमदन्- क्रि० वि० दे० 'अम्दन्'।

अमन- पुं० (अ० अम्न) १ शांति, चैन, आराम। २ रक्षा, बचाव। यौ०-अमनो अमान= सुख-शांति।

अमनियत- स्त्री० (फा० अम्नियत) शांति, आराम।

अमर- स्त्री० दे० 'अम्र'।

अमराज़- पुं० (अ० अम्राज) 'मर्ज़' का बहु०।

अमरूद- पुं० (फा० अम्रूद) एक प्रसिद्ध फल, प्यारा, अमरूत।

अमल- पुं० (अ०) १ कार्य। २ आचरण। ३ अधिकार, शासन, हुकूमत। ४ नशा। ५ आदत, बान, लत। ६ प्रभाव, असर। ७ भोग-काल, समय, वक्त। यौ०- अमल दर आमद= १ कारंवाई। २ व्यवहार।

अमलदारी- स्त्री० (अ०+फा०) १ राज्य। २ शासन।

अमलन- क्रि० वि० (अ०) कार्य रूप में।

अमला- पुं० (अ० अम्लः) १ कर्मचारी वर्ग। यौ०-अमला-फैला= कचहरी के कर्मचारी। २ टूटे हुए मकान की ईंटें, पत्थर और लकड़ी आदि।

अमलाक- स्त्री० दे० 'इमलाक'।

अमली- वि० (अ०) १ क्रियात्मक। २ व्यावहारिक। ३ नशा करनेवाला।

अमवात- स्त्री० (अ० अम्वात, मौत का बहु०) मौतें।

अमान- पुं० (अ०) १ आपत्तियों आदि से रक्षा। २ शरण। ३ शान्ति। यौ०- अमन-अमान= शान्ति।

अमानत- स्त्री० (अ०) १ अपनी वस्तु किसी दूसरे के पास कुछ काल के लिए रखना। २ वह वस्तु जो इस प्रकार रक्खी जाए, थाती, धरोहर। मुहा०-अमानत में खयानत करना=किसी की धरोहर बेईमानी से अपने काम में लाना।

अमानत-नामा- पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिस पर लिखा हो कि अमुक वस्तु अमुक व्यक्ति को अमानत के तौर पर दी गई है।

अमानी- स्त्री० (अ०) १ वह भूमि जिसकी जमींदार सरकार हो। खास। २ वह जमीन या कोई कार्य जिसका प्रबन्ध अपने ही हाथ

में हो। ३ लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रिआयत हो। ४ ठेके पर नहीं बल्कि तनख्वाह देकर नौकरों से काम कराना।

अमामा- सं० पुं० दे० 'अम्मामा'

अमारी- स्त्री० दे० 'अम्मारी'।

अमीक़- वि० (अ०) गहरा, गम्भीर।

अमीन- पुं० (अ०) वह अदालती कर्मचारी जिसके सुपुर्द ज़मीन नाप और कुर्की आदि होती है।

अमीनी- पुं० (अ०) अमीन का काम या पद।

अमीर- पुं० (अ०) १ कार्याधिकार रखनेवाला, सरदार। २ धनाढ्य, दौलतमंद। ३ उदार।

अमीर-उल्-उमरा- पुं० (अ०) अमीरों का सरदार।

अमीर- उल्- बहर- पुं० (अ०) जलसेना का सेनापति, नौ-सेनापति।

अमीरज़ादा- पुं० (अ०+फा०) १ बड़े अमीर का लड़का। २ शाहज़ादा, राजकुमार।

अमीराना- वि० (अ० अमीर से फा०) अमीरों का-सा। धनवानोंका-सा।

अमीरी- स्त्री० (अ०) १ धनाढ्यता। दौलत-मंदी। २ उदारता।

अमूद- पुं० (अ०) सीधी खड़ी लकीर।

अमूम-वि० (अ० उमूम) साधारण। आम।

अमूमन- क्रि० वि० (अ० उमूमन्) साधारणतः, आम तौरपर।

अमूर- पुं० अ० 'अम्र' का बहु०।

अम्द- पुं० (अ०) विचार, इरादा।

अम्दन- क्रि० वि० (अ०) जानबूझकर, इच्छापूर्वक, इरादे से।

अम्न- पुं०= अगन।

अम्बर- पुं० (अ०) १ एक प्रसिद्ध सुगंधित वस्तु जो व्हेल मछली की आँतों में मिलती है। २ एक प्रकार का इत्र।

अम्बार- पुं० (फा० अंबार) ढेर, राशि, अटाला।

अम्बारखाना- पुं० (फा०) भंडार, कोश।

अम्बारी- स्त्री० दे० 'अम्मारी'।

अम्बिया- पुं० (अ० 'नबी' का बहु०) नबी और पैगम्बर लोग।

अम्बोह- पुं० (फा०) जनसमूह, भीड़।

अम्म- पुं० (अ०) चाचा।

अम्मज़ादा- पुं० (अ०+फा०) चचेरा भाई।

अम्मामा- पुं० (अ० अम्मामः) पगड़ी।

अम्मारा- वि० (फा० अम्मारः) १ उग्र, कठोर। २ स्वेच्छाचारी।

अम्मारी- स्त्री० (अ०) ऊँट या हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला हौदा।

अम्मू- पुं० (अ०) (स्त्री० अम्मः-पिता की बहन) पिता का भाई, चाचा।

अम्र- पुं० (अ०) १ काम, कार्य। २ विषय। ३ समस्या। ४ विधि, आज्ञा। यौ०- अम्र तनकीह तलब=विचारणीय विषय या बात। अम्रो निही= विधि-निषेध।

अम्साल- स्त्री० (अ०) 'मिसाल' का बहु०।

अयाँ- वि० (अ०) साफ दिखाई पड़नेवाला, स्पष्ट, जाहिर।

अया-पुं० दे० 'आया'।

अयादत- स्त्री० (अ०) किसी रोगी के पास जाकर उसके स्वास्थ्य का हाल पूछना, बीमार-पुरसी।

अयाल- पुं० (अ०) परिवार के लोग, बाल-बच्चे आदि। यौ०- अयाल व इत्फाल= परिवार के लोग और बाल-बच्चे। पुं० (फा०) घोड़े या सिंह की गरदन पर के बाल, केसर।

अयालदार- पुं० (अ०+फा०) बाल-बच्चे वाला आदमी।

अयालदारी- स्त्री० (अ०+फा०) घर-गृहस्थी।

अयूब- पुं० (अ०) 'ऐब' का बहु०।

अय्याम- पुं० (अ० 'यौम' का बहु०) १ दिन। २ काल। समय। ३ स्त्रियों का रज-काल। मुहा०- अय्याम से होना- रजस्वला होना।

अय्यूब- पुं० (अ०) एक पैगम्बर जो बहुत

बड़े सहनशील और ईश्वर-निष्ठ थे। यौ०-सब्रे अय्यूब= हजरत अय्यूब का-सा चरम-सीमा का सब्र या सन्तोष।

अरक़- पुं० (अ०) स्वेद। पसीना। पुं० दे० 'अर्क़'।

अरक़गीर- पुं० (अ०+फा०) १ एक प्रकार की टोपी। २ घोड़े की जीन के नीचे रखा जाने वाला कपड़ा। चारजामा।

अरक़ची- पुं० (अ०+फा०) कुलाह।

अरक़रेज़ी- पुं० (अ०+फा०) ऐसा परिश्रम जिसमें पसीना आ जाय। बहुत परिश्रम।

अरकान- पुं० (अ० अर्कान 'रुक्न' का बहु०) १ स्तंभ। खंभे। २ तत्व। ३ चरण। पद। यौ०- अरकाने दौलत=राज्य के स्तम्भ या प्रमुख व्यक्ति।

अरगजा- पुं० (फा० अर्गजः) एक सुगन्धित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि को मिलाने से बनता है।

अरग़नून- पुं० (फा० अर्ग़नून) एक प्रकार का बाजा जो अँग्रेजी अरगन बाजे की तरह का होता है।

अरग़वान- पुं० (फा० अर्ग़वान) एक पौधा जिसके फूल और फल बैंगनी रंग के होते हैं।

अरग़वानी- वि० (फा० अर्ग़वानी) बैंगनी रंग।

अरग़ून- पुं० दे० 'अरग़नून'।

अरज़- स्त्री० दे० 'अर्ज़'।

अरजल- पुं० (अ० अर्जल) वह घोड़ा जिसके अगले पैर का नीचेवाला भाग सफेद हो। ऐसा घोड़ा ऐबी माना जाता है।

अरज़ाल- पुं० बहु० (अ० अर्जज़ल) अ० 'रज़ील' का बहु०। छोटे दरजे के और खराब आदमी।

अरज़ी- स्त्री० दे० 'अर्ज़ी'।

अरब- पुं० (अ०) १ एशिया खंड का एक प्रसिद्ध मरुदेश। २ इस देश का निवासी।

अरबा- वि० (अ० अरबऽ) चार। तीन और एक। यौ०- हद्द अरबा= चौहद्दी। पुं० घनफल।

अरबाब- पुं० (अ० 'रब्ब' का बहु०) १ स्वामी। मालिक। २ ज्ञाता या कर्ता आदि। जैसे- अरबाबे सुखन= कवि लोग।

अरबाह- स्त्री० (अ० 'रूह' का बहु०) १ आत्माएँ। २ फरिश्ते। देवदूत।

अरबिस्तान- पुं० (अ०) अरब देश।

अरबी- वि० (अ०) अरब देश का। अरबसंबंधी। स्त्री० अरब देश की भाषा।

अरम- पुं० दे० 'इरम'।

अरमग़ान- पुं० (फा० अर्मग़ान) भेंट। उपहार।

अरमान- पुं० (फा०) इच्छा। लालसा। चाह। हौसला।

अरसलान- पुं० (तु० अर्सलान) १ सिंह। २ सेवक। दास। गुलाम।

अरसा- पुं० (अ० अरसः) १ समय, काल। २ विलम्ब, देर। यौ०- अरसे दराज़ से= बहुत समय से।

अरस्तू- पुं० (यू०) यूनान का एक प्रसिद्ध विद्वान और दार्शनिक अरिस्टॉटल।

अराज़ी- स्त्री० (अ० आराज़ी) १ भूमि। २ जोती-बोई जानेवाली ज़मीन, खेत। यौ०- अराज़ीए काश्त= खेती करने की भूमि; अराज़ीए खालिसा= सरकारी भूमि; - अराज़ीए खिराज़ी= लगानी खेत; अराज़ीए चाही= कुएँ से सींची जाने वाली भूमि; - अराज़ीए दर्मावुर्द= जलमग्न भूमि; अराज़ीए मुतनाज़ा= झगड़े की जमीन।

अराबची- पुं० (फा०) गाड़ीवान।

अराबा- पुं० (फा० अराबः) बैलगाड़ी आदि।

अरायज़- स्त्री० (अ० 'अर्ज़' का बहु०) निवेदन-पत्र। अर्ज़ियाँ।

अरीज़- वि० (अ०) ज्यादा अरज वाला, चौड़ा।

अरीज़ा- वि० (अ० अरीज़ः) जो अर्ज किया गया हो, निवेदित। पुं० निवेदन-पत्र, अरजी।

अर्क- पुं० (अ०) १ भभके आदि से खींचा हुआ किसी पदार्थ का रस जो औषध के

काम में आता है। आसव। २ रस। ३ दे० 'अरक' और उसके यौगिक।
अर्ज़- पुं० (फा०) १ सम्मान। प्रतिष्ठा। इज्जत। २ पद। ओहदा। ३ मूल्य। ४ आदर।
अर्ज- पुं० (अ०) १ पृथ्वी। भूमि। ज़मीन। २ चौड़ाई। यौ०-अर्ज़ व तूल= चौड़ाई और लम्बाई। स्त्री०-विनती। निवेदन। प्रार्थना।
अर्ज़- पुं० (फा०) १ मूल्य। दाम। २ सम्मान। प्रतिष्ठा।
अर्ज़क़- वि० (अ०) नीला। नील वर्ण का। यौ०- अर्ज़क-चश्म= वह जिसकी आँखें नीली हों।
अर्ज़दाश्त- स्त्री० (अ०) याचिका।
अर्ज़मन्द- वि० (फा०) सम्पन्न और अच्छे पद पर प्रतिष्ठित।
अर्ज़ल- पुं० दे० 'अरजल'।
अर्ज़ा- वि० (फा०) सस्ता, कम दाम का।
अर्ज़ानी- स्त्री० (फा०) १. सस्ती, सस्तापन। २. मंदी।
अर्ज़ी- स्त्री० (अ०) निवेदनपत्र। प्रार्थनापत्र। वि० (अ०) १ अर्ज़ या पृथ्वी सम्बन्धी। २ लौकिक।
अर्ज़ीदावा- पुं० (अ०) वाद-पत्र।
अर्ज़ीनवीस- पुं० (अ० + फा०) वह जो दूसरों की अर्ज़ियाँ या प्रार्थनापत्र लिखता हो।
अर्ज़ुकुनिन्दा- पुं० (अ०) प्रार्थी, आवेदक।
अर्श- पुं० (अ०) मुसलमानों के अनुसार आठवाँ या सबसे ऊँचा स्वर्ग जहाँ खुदा रहता है। मुहा०- अर्श पर चढ़ाना=बहुत बढ़ाना। बहुत तारीफ करना। अर्श पर दिमाग़ होना=बहुत अभिमान होना।
अर्शमुअल्ला- पुं० (अ०) सबसे ऊँचा और आठवाँ स्वर्ग। अर्श।
अर्सा- पुं० = अरसा।
अल- प्रत्य० (अ० अल्) एक प्रत्यय जो शब्दों के पहले लगकर उस पर जोर देता है। जैसे- अलगरज़।
अलक़ाब- पुं० (अ०) १ उपाधि। २ पदवी। ३ प्रशस्ति- पत्र।
अल-किस्सा- क्रि० वि० (अ० + फा०) १ सारांश यह है कि। २ संक्षेप में।
अलग़रज- क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि।
अलग़ोजा- पुं० (अ० अलग़ोजः) एक प्रकार की बाँसुरी।
अलफाज़- पुं० (अ० अल्फाज 'लफ्ज़' का बहु०) १ शब्द-समूह। २ पारिभाषिक शब्द।
अलबत्ता- अव्य० (अ०) १ निस्सन्देह। बेशक। २ हाँ। बहुत ठीक। ३ लेकिन। परन्तु।
अलम- पुं० (अ०) १ सेना के आगे रहनेवाला सबसे बड़ा झण्डा। २ पहाड़। पर्वत। ३ दुःख, शोक।
अलमर्कूम- वि० (अ०) लिखित।
अलमस्त- वि० (फा० अल्मस्त) नशे में चूर।
अलमास- पुं० (फा०) हीरा।
अलल्खसूस- क्रि० वि० (अ०) खास करके। विशेष रूप में।
अलल-हिसाब- क्रि० वि० (अ०) बिना हिसाब किये। उचिन्त में। यों ही (धन देना)।
अलविदा- स्त्री० (अ०) रमजान मास का अंतिम शुक्रवार।
अलवी- पुं० (अ०) वे सैयद जो अली की सन्तान हों।
अलस्सदाह- पुं० (अ०) बहुत सबेरे। तड़के।
अलहदगी- स्त्री० (अ०) अलहदा या जुदा होने का भाव। पार्थक्य।
अलहदा- वि० (अ०) (भाव० अलहदगी) अलग। जुदा। पृथक्।
अलहम्द-उल्लिल्लाह- (ई०) ईश्वर की प्रार्थना हो।
अलाक़ा- पुं० दे० 'इलाका'।
अलानिया- क्रि० वि० (अ० अलानियः) खुल्लम-खुल्ला। खुले आम। स्पष्ट रूप में।

अलामत- स्त्री० (अ०) १ निशानी, चिह्न। २ पहिचान।

अलालत- स्त्री० (अ०) १ 'अलील' का भाव। २ बीमारी। रोग।

अलावा- क्रि० वि० दे० 'इलावा'।

अलीम- वि० (अ० 'इल्म' से) इल्म या जानकारी रखनेवाला, जानकार। वि० (अ०) कष्टदायक। (अलम से)।

अलील- वि० (अ०) रुग्ण। बीमार। रोगी।

अलू-अब्द- पुं० (अ०) ईश्वर का सेवक (प्रायः पत्रों की समाप्ति पर लोग अपने हस्ताक्षर से पहले लिखते हैं)।

अलू-अमान- (अ०) ईश्वर हमारी रक्षा करे। परमात्मा हमें बचावे।

अल्कत- वि० (अ०) १ काटा हुआ। २ रद्द किया हुआ। ३ समाप्त किया हुआ।

अल्काब- पुं० (अ०) १ 'लक़ब' का बहु०। उपाधियाँ। यौ०- अलक़ाब व आदाब= सम्बोधन की उपाधियाँ।

अल्किक़सा- क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि। संक्षेप में यह कि, अलगरज।

अल्गरज़- क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि, मतलब यह कि।

अल्गरज़ी- वि० दे० 'गरजी'।

अल्तमिश- पुं० (तु०) सेनानायक, फौज का अफसर।

अल्ताफ- पुं० (अ०) 'लुत्फ' का बहु०। मेहरबानी, कृपा, अनुग्रह।

अल्मस्त- वि० (फा०) १ नशे में चूर। २ मस्त, मत्त।

अल्मस्ती- स्त्री० (फा०) मत्तता, मस्ती।

अल्लामा- पुं० (अ० अल्लाम :) बहुत बड़ा बुद्धिमान और विद्वान्।

अल्लाह- पुं० (अ०) ईश्वर, परमात्मा। यौ०- अल्लाह ताला= सर्वश्रेष्ठ ईश्वर।

अल्लाह-बेली- (अ०) ईश्वर सहायक है। (प्रायः बिदाई या अड़चन के समय)

अल्लाहो- अकबर- (अ०) ईश्वर महान् है। (प्रायः प्रार्थना और आश्चर्य के समय इसका उपयोग होता है)।

अल्विदाऽ- पुं० (अ०) रमजान मास का अन्तिम शुक्रवार। अव्य०-अच्छा, अब बिदा। सलाम।

अलू-हक़- क्रि० वि० (अ०) वस्तुतः। सचमुच। अव्य०- हाँ, ठीक है।

अल्हम्दु- स्त्री० (अ०) कुरान का आरम्भिक पद।

अलू-हम्दुलिल्लाह- (अ०) ईश्वर धन्य है। परमात्मा को धन्यवाद है।

अवाखिर- वि० (अ० 'आखिर' का बहु०) अन्तिम, अन्त के।

अवाम- पुं० (अ०) आम लोग। जनसाधारण, सर्वसाधारण।

अवाम उन्नास- पुं० दे० 'अवाम'।

अवायल- वि० (अ०) 'अव्वल' का बहु०। प्राथमिक। आरम्भिक। जैसे- अवायल उम्र= आरम्भिक जीवन।

अवारजा- पुं० (फा० अवारिजः) १ रोज की बातें या जमाखर्च आदि लिखने की बही। रोजनामचा। २ खाता।

अवासत- स्त्री० (अ०) 'औसत' का बहुवचन।

अव्वल- वि० (अ०) १ पहला। २ प्रधान। मुख्य। ३ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

अव्वलन- क्रि वि० (अ०) पहले। आरम्भ में।

अव्वलीन- वि० बहु० (अ०) १ पहलेवाले। २ प्राचीन, पुराने।

अशअश- पुं० (फा०) प्रसन्नतासूचक शब्द।

अशआर- पुं० (अ० अश्आर) 'शअर' या 'शेर' का बहु०। कविताओं के चरण। पद्य-समूह।

अशकाल- स्त्री० (अ० अश्काल) 'शक्ल' का बहु०।

अशखास- पुं० (अ० अश्खास) १ शख्स का बहु० मनुष्यों का समूह, लोग, जनसमूह।

अशजार- पुं० (अ०) 'शजर' का बहु०। वृक्षसमूह। पेड़ों या दरख्तों का झुंड।

अशद- वि० (अ० अशद्द) बहुत तेज या

अधिक। अत्यन्त। सख्त।

अशफ़ाक़- पुं० (अ० अश्फ़ाक़) 'शफ़क़' का बहु०।

अशया- स्त्री० (अ० अशिया) वस्तुएँ, चीजें।

अशर- पुं० (अ०) १ दसवाँ भाग। २ भूमि की आय का दशमांश जो मुसलमान बादशाह राज-कर के रूप में लेते थे। यौ०- अश्रे अशीर= १ सौवाँ भाग। २ बहुत कम। अति अल्प।

अशरफ़- पुं० (फा० अश्रफ़) बहुत बड़ा शरीफ। बहुत सज्जन।

अशरफी- पुं० (फा० अश्रफ़ी) सोने का सिक्का। स्वर्ण-मुद्रा। मोहर।

अशरा- पुं० (अ० अश्र :) दस दिन। जैसे- अशरा मुहर्रम= मुहर्रम के दस दिन।

अशराफ- पुं० (अ० अश्राफ) 'शरीफ' का बहु०। भलेमानस, नेक आदमी, सज्जन लोग।

अशराफत- स्त्री० (अ० अश्राफत) भलमनसाहत। सज्जनता। शराफत।

अशिया- स्त्री० (अ०) 'शै' का बहु० चीजें, वस्तुएँ।

अश्क- पुं० (फा०) आँसू। अश्रु।

अश्ग़ाल- पुं० (अ०) 'शग़ल' का बहु०।

असग़र- वि० (अ० अस्ग़र) बहुत छोटा।

असद- पुं० (अ०) १ सिंह। शेर। २ सिंह राशि।

असना- क्रि० वि० (अ०) बीच में, दौरान में।

असनाद- स्त्री० (अ० अस्नाद) 'सनद' का बहु०। प्रमाणपत्र।

असब- पुं० (अ०) स्नायु, पट्ठा।

असबात- स्त्री० (अ० इस्बात) सिद्ध या प्रमाणित करने की क्रिया या भाव।

असबाब- पुं० (अ० अस्बाब) 'सबब' का बहु०। १ कारण-समूह। बहुत से सबब। २ सामान। सामग्री। जैसे- असबाबे जंग= युद्ध सामग्री; असबाबे खानादारी= गृहस्थी का सामान।

असम- पुं० (अ०) (बहु० आसाम) १ पाप, गुनाह। २ अपराध।

असमत- स्त्री० (अ० इस्मत) सतीत्व।

असमार- पुं० (अ० अस्मार) 'समर' का बहु०। फल।

असर- पुं० (अ० अस्र) प्रभाव।

असराफ- पुं० (अ० इसराफ) खर्च, व्यय।

असरार- पुं० (अ० अस्रार) 'सर' का बहु०। भेद, गुप्त बात, रहस्य।

असल- पुं० (अ० अस्ल) १ जड़, बुनियाद। २ मूलधन। यौ०- असल मय सूद= मूल धन और ब्याज। वि० दे० 'असली'।

असलह- पुं० (अ० अस्लह) हथियार। शस्त्र।

असलहखाना- पुं० (अ० अस्लह + फा०) शस्त्रागार।

असला- क्रि० वि० (अ० अस्ला) १ बिल्कुल। जरा भी। कुछ भी। २ कदापि। हरगिज।

असलियत- स्त्री० (अ० अस्लियत) 'असल' का भाव। वास्तविकता।

असली- वि० (अ० अस्ल) १ सच्चा। खरा। २ मूल। प्रधान ३ बिना मिलावट का। शुद्ध।

असवद- वि० (फा० अस्वद) काला। साँप। यौ०- बहरेअसवद।

असहाब- पुं० (अ० अस्हाब) साहब का बहु०।

असा- पुं० (अ०) १ सोंटा, डंडा। २ चांदी या सोना का मढ़ा हुआ डंडा।

असामी- स्त्री० (अ० आसामी) १ व्यक्ति। प्राणी। २ जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो। ३ वह जिसने लगान पर जोतने के लिए जमींदार से खेत लिया हो, काश्तकार। ४ मुद्दालेह। देनदार। ५ अपराधी, मुलजिम। ६ वह ज़िससे किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो।

असालत- स्त्री० (अ०) 'असल' का भाव। वास्तविकता। असलियत। मुहा०- असालत

में फर्क होना- दोगला होना। वर्णसंकर होना।
असालतन्- क्रि० वि० (अ०) स्वयं, खुद।
असास-उल-बैत- पुं० (अ०) घर-गृहस्थी के सब सामान।
असीम- वि० (अ०) दोपी, अपराधी।
असीर- पुं० (फा०) वह जो क़ैद में हो। बन्दी, कैदी।
असीरी- स्त्री० (फा०) असीर या कैद होने की अवस्था। क़ैद।
असील- वि० (अ०) १ उच्चवंश का, बड़े खानदान का। २ सुशील, शान्त स्वभाव का।
असीलत- स्त्री० (अ०) पैतृक अधिकार, मौरूसी कब्जा।
असूल- पुं० दे० 'उसूल'।
अस्कर- पुं० (अ०) (वि० अस्करी।) १ सेना। फौज। लश्कर। २ रात का अन्धकार।
अस्तग़फिर-उल्लाह- (अ०) मैं ईश्वर से क्षमा माँगता हूँ। ईश्वर मुझे क्षमा करे।
अस्तबल- पुं० (अ०) घोड़ों के रहने की जगह। अश्वशाला।
अस्तर- पुं० (फा०) १ खच्चर। २ नीचे की तह या पल्ला। ३ दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। भितल्ला। ४ चंदन का तेल जिसे आधार बनाकर इत्र बनाए जाते हैं, जमीन। ५ वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं। अँतरौटा। अंतरपट।
अस्तरकारी- स्त्री० (फा०) १ दीवार पर पलस्तर लगाना। २ कपड़े में अस्तर लगाना।
अस्तुरा- पुं० दे० 'उस्तुरा'।
अस्नाय- पुं० (अ०) बीचका समय। दो घटनाओं के मध्य का काल।
अस्प- पुं० (फा० मि० सं० अश्व) घोड़ा।
अस्पग़ोल- पुं० दे० 'इस्पगोल'।
अस्फंज- पुं० (अ० इस्फंज) मुरदा। बादल। स्पंज।
अस्मत- स्त्री० (अ०) (वि० अस्मतवर।) १ सदा सब पापों से अपने आप को बचाना। २ स्त्री का (पातिव्रत।)
अस्माऽ- पुं० 'इस्म' का बहु०।
अस्र- पुं० (अ०) १ काल। समय। जैसे- हम अस्र= समकालीन। २ युग। ३ दिन का चौथा पहर।
अस्ल पुं० दे० 'असल'।
अस्ल.. वि० (अ०) १ बचा हुआ। २ रक्षित। ३ पूरा, पूर्ण।
अस्लियत- स्त्री० (अ०) सच्चाई, वास्तविकता।
अहक़र- वि० (अ०) बहुत तुच्छ। (अत्यन्त विनम्रता दिखलाने के लिए अपने सम्बन्ध में प्रयुक्त)।
अहकाम- पुं० (अ०) हुक्मका बहु०। १ आदेश। २ आज्ञापत्र आदि।
अहद- पुं० (अ० अह्द) १ पक्का निश्चय। करार। प्रतिज्ञा। यौ०- अहद-पैमान= आपस में पक्का निश्चय। क़रार। २ शासन। राज्य। ३ शासन-काल। पुं० (अ० अह्द) १ इकाई। एक। २ संख्या। अदद।
अहदनामा- पुं० (अ० अह्द+फा० नामः) प्रतिज्ञापत्र।
अहदशिकन- पुं० (अ० अह्द + फा०) वह जो कोई करार करके उसके मुताबिक काम न करे। प्रतिज्ञा तोड़ना।
अहदशिकनी- स्त्री० (अ०+फा०) करारके मुताबिक काम न करना। प्रतिज्ञा तोड़ना।
अहदियत- स्त्री० (अ० अहि्दयत) इकाई। एकत्व, एक होना।
अहदी- पुं० (अह्दी) बहुत बड़ा आलसी।
अहबाब- पुं० (अ० अह्बाब) 'हबीब' का बहु०। दोस्त। मित्र। यार लोग।
अहम- वि० (अ०) महत्वपूर्ण।
अहमक़- पुं० (अ० अह्मक) (क्रि० वि० अहमक़ाना) बेवकूफ। मूर्ख।
अहमद- वि० (अ० अह्मद) बहुत प्रशंसनीय। पुं० हजरत मुहम्मदका नाम।
अहमदी- पुं० (अ० अह्मदी) मुसलमान।

अहमियत- स्त्री० (अ०) महत्व।
अंहरन- स्त्री० (फा० अह्रन) निहाई जिसपर रखकर सुनार और लोहार आदि कोई चीज पीटते हैं।
अहरार- वि० (अ० अह्रार) १ उदार। २ दाता, दानी। पुं० आज-कल मुसलमानों का एक राजनीतिक दल जिसके विचार अपेक्षाकृत अधिक उदार है।
अहल- वि० (अ० अह्ल) १. मुख्य। २. योग्य। ३. लायक। पुं० १ व्यक्ति। आदमी। २ लोग। ३ परिवार या साथके लोग। ४ मालिक, स्वामी।
अहल-अल्लाह- पुं० (अ० अह्ल +..) ईश्वरनिष्ठ। धर्मात्मा।
अहलकार- पुं० (अ० अह्ल + फा०) कार्यकर्ता, कारिंदा।
अहलमद- पुं० (अ० अह्लेमद) अदालतके किसी विभागका प्रधान मुन्शी या कर्मचारी।
अहलिया- स्त्री० (अ० अहलियः) पत्नी। जोरु।
अहाता- पुं० (अ० इहातः) १ घेरा हुआ खुला स्थान या मैदान। बाड़ा। २ हलका। मंडल।
अहाली- पुं० (अ०) 'अहल' का बहु०। परिवारके अथवा साथ रहनेवाले लोग। बन्धु, बान्धव। यौ०- अहाली-मवाली= साथ रहनेवाले और नौकर-चाकर आदि।
अह्ले-कलाम- पुं० (अ०+फा०) १ लिखने-पढ़नेवाले लोग। २. साहित्यसेवी।
अह्ले-किताब- पुं० (अ०) १ वह जो किसी धर्म-ग्रन्थमें प्रतिपादित धर्मका अनुयायी हो। २ वह जो किसी ऐसे धर्म का अनुयायी हो जिसका उल्लेख कुरान में हो।
अह्ले-खाना- पुं० (अ०+फा०) घरके लोग। बाल-बच्चे। स्त्री० घरकी मालिक। गृहस्वामिनी।
अहले-ज़बान- पुं० (अ०+फा०) भापा के पण्डित। भापा-विज्ञ।
अह्ले-ज़िम्मा- पुं० (अ०) १ वे काफिर या विधर्मी जो किसी मुसलमान बादशाह के राज्य में रहते हों और अपने धार्मिक कृत्य छिपाकर करते हों। २ प्रजा। रिआया।
अह्ले-रोजगार- पुं० (अ+फा०) १ रोज़गार या व्यवसाय करनेवाले, व्यवसायी। २ नौकरी करने वाले लोग।
अह्लो-अमाल- पुं० (अ०) स्त्री और बच्चे, पूरा परिवार।
अह्वाल- पुं० (अ०) १ 'हाल' का बहु०। २ विवरण।
अह्सन- वि० (अ०) बहुत नेक। बहुत अच्छा।
अह्सास- पुं० दे० 'एहसास'।
आँ- सर्व० (फा०) वह। यौ०- आँकि= वह जो।
आँब- पुं० (फा० मि० सं० आम्र) आम नामक वृक्ष या उसका फल।
आइन्दा- वि० (फा० आइन्दः या आयन्दः) आगामी। पुं० भविष्यकाल। भविष्य। क्रि० वि०। आगे। भविष्य में।
आईन- पुं० (अ०) १ कायदा, नियम। २ कानून। ३ सजावट, श्रृंगार।
आईनबन्दी- स्त्री० (अ० + फा०) किसी राजा आदि के आगमन के समय नगर में होने वाली सजावट।
आईनसाज़- पुं० (अ० + फा०) १ कानून बनाने वाला। २ विधायक।
आईना- पुं० (फा० आईन) १ शीशा, दर्पण। २ शीशे के झाड़-फानूस आदि।
आईनासाज़- पुं० (फा०) वह जो आईना या शीशे बनाता है।
आईनासाज़ी- स्त्री० (फा०) आईने या शीशे बनाने का काम।
आईमा- पुं० (अ०) दानमें मिली हुई भूमि जिसका कर न देना पड़े। यौ०- आईमादार।
आक़- वि० (अ०) माता-पिता का विरोध या द्रोह करने वाला। (पुत्र)। मुहा०- आक़ करना= पुत्र को उत्तराधिकार से वंचित करना।
आक़नामा- पुं० (अ०+फा०) वह लेख

जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने किसी अयोग्य पुत्रको उत्तराधिकार से वंचित करता है।

आक़बत- स्त्री० (अ० आक़िबत) १ मरनेके पीछेकी अवस्था। २ परलोक। ३ भविष्य।

आक़बत-अन्देश- पुं० (अ+फा०) वह जो आक़बत या परिणाम का ध्यान रखता है। परिणामदर्शी। दूर-दर्शी।

आक़बत-अन्देशी- स्त्री० (अ० + फा०) परिणाम-दर्शिता।

आक़ा- पुं० (अ०) १ साहब, मालिक, स्वामी। २ ईश्वर।

आक़िब- वि० (अ०) १ पीछे आने वाला, परवर्ती। २ सहायक।

आक़िबत- स्त्री० दे० 'आक़बत'।

आक़िल- वि० (स्त्री० आक़िलः) अक्लवाला। अक्लमंद। बुद्धिमान्।

आक़िलाना- क्रि० वि० (अ०) बुद्धिमत्तापूर्ण।

आख़िज़- वि० (अ०) १ लेनेवाला। ग्रहण करनेवाला । २ पकड़नेवाला। ३ उद्धृत करनेवाला।

आखिर- वि० (अ०) (बहु० अवाखिर) अन्तिम। पीछेका। क्रि० वि०- अन्त में। अन्त को। पुं० १ अन्त। समाप्ति। २ परिणाम। फल।

आखिरकार- वि० (अ० + फा०) अन्त में, अन्ततोगत्वा।

आखिरत- स्त्री० (अ०) १ मृत्यु का दिन। अन्तका दिन। २ सृष्टि के अन्त का समय। क़यामत। प्रलय। परलोक।

आखिरी- वि० (अ०) अन्तिम। अन्तका। पिछला।

आखिरुल्-अमर- अव्यय। (अ०) अन्तको। अन्तमें। वि० (अ०) अन्तिम। पिछला।

आखिर-उल्-ज़माँ- पुं० (अ०) समयका अन्त।

आखून- पुं० (फा० आखूँद) शिक्षक। उस्ताद।

आखोर- पुं० (फा० आखूर) १ घोड़ों के रहने की जगह। २ कूड़ा-करकट।

आख़्ता- वि० (फा० आख़्तः) जिसके अंडकोश चीरकर निकाल लिये गये हों।

आग़ा- पुं० (तु०) १ बड़ा भाई, अग्रज। २ साहब, महाशय। ३ मालिक, स्वामी। ४ काबुल की तरफ के मुगलों की एक उपाधि।

आग़ाज- पुं० (अ०) शुरू। आरम्भ।

आगाह- वि० (फा०) १ ज्ञात। २ जानकार, वाक़िफ़।

आगाही- स्त्री० (फा०) १ पहले से मिलनेवाली सूचना। २ जानकारी। परिचय। ज्ञान।

आग़ोश- स्त्री० (फा०) गोद। क्रोड़।

आग़ोशकुशा- वि० (फा०) जिसने गोद फैला रखी हो।

आगोशी- स्त्री० (फा०) १ गोद में लेना। २ गले लगाना।

आचार- पुं० (फा०) मसालों के साथ तेल आदि में रखा हुआ फल। अथाना। आचार।

आज- पुं० (फा०) हाथी-दाँत।

आज़म- वि० (अ० अअज़म) बहुत बड़ा। महान्।

आज़माइश- स्त्री० (फा०) १ परीक्षा। जाँच। परख। २ परीक्षारूप में किया जाने वाला प्रयत्न।

आजमाना- क्रि० वि० (फा० आजमाइश) परीक्षा करना, परखना।

आज़मूदा- वि० (फा० आजमूदः) जाँचा या आजमाया हुआ, परीक्षित।

आज़मूदाकार- वि० (फा०) १ अनुभवी। २ चतुर, चालाक।

आज़ा- पुं० (अ० अअज़ा) (वि० आज़ाई) अज़ू या अज़ो का बहु०। शरीर के अंग और जोड़।

आज़ाए-तनासुल- पुं० (अ०) पुरुष की इन्द्रिय। लिंग।

आज़ाए-रईसा- पुं० (अ०) शरीर के मुख्य अंग। जैसे हृदय, मस्तक, यकृत आदि।

आज़ाद- पुं० (फा०) १ जो बद्ध न हो। छूटा हुआ। मुक्त। बरी। २ [illegible]

बेपरवाह। ३ स्वतंत्र। स्वाधीन। ४ निडर। निर्भय। ५ स्पष्टवक्ता। हाजिर-जवाब। ६ सूफी सम्प्रदाय के फक़ीर जो स्वतंत्र विचार के होते हैं।

आज़ादगी- स्त्री० दे० 'आजादी'।

आज़ादान- वि० (फा०) स्वतंत्र, स्वतंत्रतापूर्ण।

आज़ादी- स्त्री० (फा०) १ स्वतंत्रता, स्वाधीनता। २ रिहाई, छुटकारा।

आजादीपसन्द- वि० (फा०) जिसे आजादी पसन्द हो।

आज़ार- पुं० (फा०) १ दुःख। कष्ट। २ बीमारी, रोग।

आजिज़- वि० (अ०) (क्रि० वि० आजिज़ाना) १ दीन। विनीत। २ परेशान। तंग।

आजिज़ी- स्त्री० (अ०) १ प्रार्थना। विनती। २ दीनता।

आज़िम- वि० (अ०) अज्म या इरादा करने वाला। विचार करने वाला।

आज़िर- वि० (अ०) १ उज्र करने वाला। २ क्षमा माँगने वाला।

आजुर- पुं० (फा०) फारसी वर्ष का नवाँ महीना।

आजुर्दगी- स्त्री० (फा०) १ अप्रसन्नता। नाराज़गी। २ मानसिक क्लेश। दुःख।

आजुर्दह- पुं० (फा०) १ सताया हुआ। २ दुःखी। ३ चिन्तित।

आतश- स्त्री० दे० 'आतिश'।

आतिफ- वि० (अ०) कृपा करने वाला, अनुग्रह करने वाला।

आतिफत- स्त्री० (फा०) दया, कृपा, मेहरबानी।

आतिश- स्त्री० (फा०) १ अग्नि। आग। २ प्रकाश। ३ क्रोध। गुस्सा। यौ०- आतिश का परकाला= बहुत चलता हुआ और तेज आदमी।

आतिश-अंगेज़- वि० (फा०) आग लगानेवाला।

आतिश-कदा- पुं० (फा०) वह मन्दिर जिसमें पवित्र अग्नि पूजाके लिये रहती हो। अग्नि-मन्दिर।

आतिशखाना- पुं० (फा०) वह मन्दिर जिसमें अग्नि प्रतिष्ठित हो।

आतिशज़दगी- स्त्री० (फा०) आग लगाना, अग्नि-काण्ड।

आतिश-ज़न- पुं० (फा०) १ कुक्नुस नामक कल्पित पक्षी। २ चकमक पत्थर।

आतिश-दान- पुं० (फा०) अँगीठी, जिसमें आग रखते हैं।

आतिश-परस्त- पुं० (फा०) अग्नि-पूजक।

आतिश-परस्ती- स्त्री० (फा०) अग्नि-पूजा।

आतिशबज़ाँ- वि० (फा०) आग का पुतला।

आतिशबाज़- पुं० (फा०) वह जो आतिशबाजी बनाता हो।

आतिशबाज़ी- स्त्री० (फा०) १ आगसे खेलना। २ बारूदके बने खिलौने जिन्हें जलाने से तरह-तरह की और रंग-विरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं।

आतिशबार- वि० (फा०) (आतिशबारी) आग बरसानेवाला।

आतिशमिज़ाज़- वि० (फा०) गुस्सेवर। क्रोधी।

आतिशलबाज- वि० (फा०+अ०) बहुत तेज। गरम मिजाजवाला। क्रोधी।

आतिशी- वि० (फा०) आतिश या आगसे संबंध रखनेवाला।

आतिशी-शीशा- पुं० (फा०) वह शीशा जिसपर सूर्यकी किरणों के पड़ने से अग्नि उत्पन्न होती है। सूर्यकान्त। सूरजमुखी शीशा।

आतू- स्त्री० (फा०) पढ़ानेवाली। शिक्षिका।

आतून- स्त्री० दे० 'आतू'।

आदत- स्त्री० (अ०) १ स्वभाव, प्रकृति। २ अभ्यास, बान, टेव।

आदतन- क्रि० वि० (अ०) आदत या अभ्यास के कारण।

आदम- पुं० (अ०) १ मुसलमानी धर्म के

पहले पैगम्बर (अवतार) जो मनुष्य-मात्र के आदि पुरुष माने जाते हैं। २ आदमी, मनुष्य।

आदमखोर- पुं० (अ + फा०) वह जो मनुष्यों को खाता है। मनुष्य-भक्षक।

आदमज़ाद- पुं० (अ० + फा०) १ वह जो मनुष्य से उत्पन्न हुआ है। २ मानव जाति।

आदमी- पुं० (अ० आदमी) १ आदम की संतान, मनुष्य। २ मानव जाति। मुहा०- आदमी बनना= १ सभ्यता सीखना, अच्छा व्यवहार सीखना। २ नौकर-चाकर, सेवक।

आदमीयत- स्त्री० (अ+फा० प्रत्य०) मनुष्यता। मनुष्यत्व।

आदा- पुं० (अ० 'उर्दू' का बहु०) शत्रुलोग।

आदाद- स्त्री० (अ० 'अदद' का बहु०) अंक।

आदाब- पुं० (अ० 'अदब' का बहु०) १ अच्छे ढंग, शिष्टाचार। २ नियम। ३ अभिवादन, सलाम, बन्दगी। क्रि० प्र०-बजा लाना। मुहा०- आदाब अर्ज करना= नम्रतापूर्वक अभिवादन करना। यौ०- आदाब अलक़ाब= पद और मर्यादा आदि के सूचक शब्द।

आदिल- वि० (अ०) अदल या न्याय करने वाला। न्यायशील।

आदी- वि० (अ०) जिसे किसी बात की आदत हो। अभ्यस्त।

आन- स्त्री० (अ० मि० सं० आणि) १ समय। २ क्षण, पल। ३ ढंग, तर्ज। ४ अकड़, ऐंठ, ठसका, अदा (विशेषतः प्रेमिका की)। यौ०- आन-बान= १ शोभा। २ ठसक, अदा।

आनन्-फानन्- क्रि० वि० (अ०) १ तत्काल। २ एकाएक।

आफत- स्त्री० (अ०) १ विपत्ति। आपत्ति। २ कष्ट। दुःख। ३ मुसीबत के दिन। मुहा०- आफत उठाना= १ दुःख सहना, विपत्ति भोगना। २ हलचल मचाना। यौ०- आफत का परकाला= १ किसी काम को बड़ी तेजी से करने वाला। कुशल। २ हलचल मचाने वाला। मुहा०- आफत खड़ी करना= विपद् उपस्थित करना। आफत मचाना= हलचल करना, ऊधम करना, दंगा करना। आफत लाना= १ विपद् उपस्थित करना। २ बखेड़ा खड़ा करना।

आफताब- पुं० (फा० आफ्ताब) १ सूरज, सूर्य। २ धूप।

आफताबा- पुं० (फा० आफ्ताबः) पानी रखने का टोटीदार लोटा। आबताबा।

आफताबी- स्त्री० (फा० आफ्ताबी) १ एक प्रकार का छत्र। सूरजमुखी। २ एक प्रकार की आतिशबाजी।

आफरी- विस्मय० (फा०) शाबाश !

आफरीदगार- पुं० (फा० आफ्रीदगार) सृष्टिकर्ता, ईश्वर।

आफरीदा- वि० (आफरीदः) उत्पन्न, जात।

आफरीन- वि० अव्य० (फा० आफ्रीन) शाबाश, वाह वाह, धन्य हो।

आफरीनश- स्त्री० (फा० आफ्रीनिश) सृष्टि करना। उत्पन्न करना।

आफाक़- पुं० (अ०) 'उफ्क' का बहु०। १ अस्मान के किनारे। २ संसार। दुनिया।

आफात- स्त्री० (अ० 'आफत' का बहु०) आफतें। मुसीबतें। विपत्तियाँ।

आफियत- स्त्री० (अ०) आराम, सुख-चैन। यौ०- खैरआफियत= कुशल-मंगल।

आब- पुं० (फा० मि० सं० अप्) पानी। जल। स्त्री० १ चमक, तड़क-भड़क, कान्ति, पानी। २ शोभा, रौनक, छवि। ३ तलवारका पानी। ४ इज्जत, प्रतिष्ठा।

आबकार- पुं० (फा०) वह जो शराब बनाता या बेचता हो। कलाल।

आबकारी- स्त्री० (फा०) १ वह स्थान जहाँ शराब बनाई या बेची जाती हो। शराब-खाना। कलवरिया। २ मादक वस्तुओं से सम्बन्ध रखनेवाला सरकारी मुहकमा। मद्यविभाग।

आबखाना- पुं० (फा०) शौच त्याग करने

का स्थान। पाखाना।

आबखोर- पुं० (फा०) घाट। किनारा। तट।

आबखोरद- पुं० (फा०) १ अन्न-जल। २ खाने-पीने की चीजें।

आबखोरा- पुं० (फा० आबखोरः) पानी पीने का कटोरा।

आबगीना- पुं० (फा०) १ दर्पण। शीशा। २ हीरा। ३ पानी पीने का गिलास या कटोरा।

आबगीर- पुं० (फा०) १ पानी का गड्ढा। २ तालाब।

आबजोश- पुं० (फा०) १ मांस आदि का शोरबा, रसा। २ एक प्रकार का मुनक्का।

आबताब- स्त्री० (फा०) १ चमक-दमक, तड़क-भड़क, रौनक। २ शोभा, वैभव।

आबदस्त- पुं० (फा०) १ पानी से हाथ-पैर धोना। २ मलत्याग के उपरान्त जल से गुदा धोना। पानी छूना।

आबदान- पुं० (फा०) १ पानी रखने का बर्तन। २ तालाब।

आबदाना- पुं० (फा०) १ अन्न-पानी। दाना-पानी। अन्न-जल। २ जीविका। रोजी। ३ रहने का संयोग।

आबदार- पुं० (फा०) पानी रखनेवाला नौकर। वि० चमकदार। जिसमें आब हो।

आबदारी- स्त्री० (फा०) १ चमक-दमक। शोभा। २ आबदार का पद या काम।

आबदीदा- वि० (फा० आबदीदः) जिसकी आँखों में आँसू भरे हों। अश्रुपूर्ण।

आबनाए- स्त्री० (फा०) जल-डमरू-मध्य।

आबनूस- पुं० (फा०) (वि० आबनूसी) एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी काली, बहुत मजबूत और भारी होती है।

आबपाशी- स्त्री० (फा०) १ खेत में पानी देना। सिंचाई। २ पानी का छिड़काव करना।

आब-रवाँ- पुं० (फा०) बहता हुआ पानी। स्त्री०- एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।

आबरू- स्त्री० (फा०) इज्ज़त। प्रतिष्ठा। बड़प्पन। मान।

आबला- पुं० (फा० आब्लः) फफोला। छाला।

आब-शार- पुं० (फा०) १ पानी का झरना। सोता। २ जल-प्रपात।

आब-हवा- स्त्री० (फा०) सरदी-गरमी या स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति। जलवायु।

आबाद-वि० (फा०) १ बसा हुआ। २ सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न।

आबादकार- पुं० (फा०) पड़ती जमीन को आबाद करनेवाला।

आबादानी- स्त्री० (फा० आबाद) १ बसा हुआ और सुख-सम्पन्न स्थान। २ सभ्यता। संस्कृति। ३ सम्पन्नता और वैभव।

आबादी- स्त्री० (फा०) १ बस्ती। २ जनसंख्या। मर्दुम-शुमारी। ३ वह भूमि जिसपर खेती होती हो।

आबान- पुं० (फा०) फारसी वर्ष का आठवाँ महीना।

आबा-व-इज़दाद- पुं० (अ०) १ बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा। २ कुल। वंश।

आबिद- पुं० (अ०) इबादत या पूजा करनेवाला। पूजक। भक्त।

आबिस्तगी- स्त्री० (फा०) गर्भवती होना।

आबिस्तनी- स्त्री० दे० 'आबिस्तगी'।

आबी- वि० (फा०) आब या जल सम्बन्धी। जल का। स्त्री० एक प्रकार की रोटी।

आबे-अंगूरी- पुं० (फा०) अंगूर की बनी शराब।

आबे-इशरत- पुं० (फा०+अ०) शराब। मद्य।

आबे-क़ौसर- पुं० (फा०) बहिश्त या स्वर्ग की कौसर नामक नदी का जल जो सबसे अच्छा और स्वादिष्ट माना जाता है।

आबे-खिज्र- पुं० (फा०) अमृत।

आबे-नुक़रा- पुं० (फा०) पारा, पारद।

आबे-बक़ा- पुं० (फा०) अमृता।

आबे-बाराँ- पुं० (फा०) वर्षा का जल।

आबेशोर- पुं० (फा०) १ खारा पानी। २ समुद्र का पानी।
आबे-हयात- पुं० (फा०) अमृत।
आबे-हराम- पुं० (फा०+अ०) १ अपवित्र और अपेय जल। २ शराब। मद्य।
आम- वि० (अ०) साधारण। मामूली। पुं० जनसाधारण, जनता।
आमद- स्त्री० (फा०) १ आगमन, आना। २ आमदनी। यौ०- आमदो-रफ्त= १ आवागमन। आना और जाना। २ मेल-जोल। ३ आमदनी। आय। यौ०- आमदो-खर्च= आय-व्यय।
आमदनी- स्त्री० (फा०) १ आय। प्राप्ति। आनेवाला धन। २ व्यापार की वस्तुएँ जो और देशों से अपने देश में आवें। रफ्तनी का उल्टा। आयात।
आमदोखर्च- पुं० (फा०) आमदनी और खर्च।
आमदोरफ्त- स्त्री० (फा०) आना और जाना।
आम-फहम- वि० (अ०+फा०) जनसाधारण के समझने योग्य। सरल।
आमादगी- स्त्री० (फा०) आमादा या तैयार होना। तत्परता। सन्नद्धता।
आमादा- वि० (फा० आमादः) (सं० आमादगी) तैयार, उद्यत, तत्पर, सन्नद्ध।
आमाल- पुं० (अ० अमल का बहु०) १ कार्य, कार्यकलाप। २ आचरण, चरित्र।
आमालनामा- पुं० (अ०+फा० नामः) चरित्र, पंजी।
आमास- पुं० (फा०) शरीर का कोई अंग सूजना। सूजन। वरम।
आमिल- पुं० (अ०) १ अमल या पालन करनेवाला। २ हाकिम। अधिकारी। ३ कारीगर। दक्ष। ४ जादू-टोना करनेवाला।
आमीन- अव्य० (अ०) १ ईश्वर करे ऐसा ही हो। तथास्तु। २ ईश्वर हमारी रक्षा करे।
आमेज़िश- स्त्री० (फा०) मिलाने की क्रिया। मिलाना। मिलावट।
आमोख्ता- पुं० (फा० आमोख्तः) पढ़ा हुआ पाठ। मुहा०- आमोख्ता करना या पढ़ना= पढ़ा हुआ पाठ फिर से दोहराना।
आम्मः - वि० (अ०) १ आम, सार्वजनिक। २ प्रसिद्ध, मशहूर।
आयत- स्त्री० (अ०) १ निशान। चिह्न। संकेत। २ कुरान का कोई वाक्य।
आयद- वि० (फा०) १ प्रवृत्त। २ प्रयुक्त होने योग्य।
आयन्दा- वि० (फा०) दे० 'आइन्दा'।
आया- अव्य० (फा०) क्या। क्या या नहीं। जैसे- आप बतलावें कि आया आप जायँगे या नहीं। स्त्री० (पुर्त०) बच्चों की देख-रेख करनेवाली स्त्री। दाई। धाय।
आर- पुं० (अ०) १ शरम, लज्जा। २ प्रतिष्ठा। ३ बदनामी।
आरज़ा- पुं० (अ० आरिज़ः) (बहु० अवारिज़) बीमारी। रोग।
आरजी- वि० (अ०) अस्थायी, अल्पकालिक।
आरजू- स्त्री० (फा० आर्ज़ू) १ इच्छा। वांछा। २ अनुनय। विनय। विनती।
आरजूमन्द- वि० (फा० आर्ज़ूमन्द) (सं० आरजूमन्दी) आरजू या कामना रखने वाला। इच्छुक।
आरद- पुं० (फा०) आरा।
आरा- प्रत्य० (फा०) सजानेवाला। शोभा बढ़ाने वाला (यौगिक शब्दों के अन्तमें, जैसे- जहान-आरा)।
आराइश- स्त्री० (फा०) सजावट, सजाना।
आराई- स्त्री० (फा०) सजाने की क्रिया।
आराज़ियात- स्त्री० (अ० अराजीका बहु०) १ जमीनें। २ खेती-बारी।
आराज़ी- स्त्री० (अ० अर्जका बहु०) १ जमीन, भूमि। २ वह जमीन जिसमें खेती-बारी होती है।
आराबा- पुं० (फा० आराबः) बैलगाड़ी। छकड़ा।
आराम- पुं० (फा०) १ चैन। सुख। २

चंगापन, सेहत। ३ स्वास्थ्य, विश्राम, थकावट मिटाना, दम लेना। मुहा०-आराम करना= सोना। आराम में होना= सोना। आराम लेना= विश्राम करना। आराम से= फुरसत में, धीरे-धीरे।

आरामगाह- स्त्री० (फा०) १ आराम करनेकी जगह, विश्राम करनेका स्थान। २ सोने की जगह, शयनागार, विश्रान्ति-गृह।

आरामतलब- पुं० (फा०) १ वह जो हर तरह का आराम चाहता हो। २ विलास-प्रिय। ३ सुस्त, निकम्मा।

आरामतलबी- स्त्री० (फा०) हर तरह का आराम चाहना।

आरामपसंद- वि० (फा०) आराम चाहने वाला।

आरामी- पुं० दे० 'आराम-तलब'।

आरास्तगी- स्त्री० (फा०) सजावट, सज्जा।

आरास्ता- वि० (फा० आरास्तः) सजाया हुआ, सुसज्जित।

आरिज़- पुं० (अ०) गाल। वि० १ घटित होने वाला। होनेवाला। जैसे- मर्ज आरिज हुआ। २ बाधक, रोकनेवाला।

आरिन्दा- वि० (फा० आरिन्दः) लानेवाला। पुं० भारवाहक। मजदूर।

आरिफ- वि० (अ०) (स्त्री० आरिफा) (बहु० उरफा) १ जानने या पहिचानने वाला। २ सब्र या सन्तोष करनेवाला। पुं० साधु। महात्मा।

आरियत- स्त्री० (अ०) कोई चीज कुछ समयके लिये मँगनी माँगना।

आरियतन्- क्रि० वि० (अ०) मँगनी के तौरपर। माँगकर।

आरियती- वि० (अ०) १ नंगा। नग्न। २ खाली। रिक्त। ३ थका हुआ। शिथिल। ४ निस्सहाय। दीन। पुं० वह गद्य जिसमें न अनुप्रास हो और न शब्द एक वजन के हों।

आरे-बले- पुं० (फा०) 'हाँ हाँ' कहना, पर काम न करना, टाल-मटोल।

आर्ज़ू- स्त्री० (फा०) मनोकामना, इच्छा।

आल- स्त्री० (अ०) १ लड़की की संतान, नाती आदि। २ सन्तान, वंशज। ३ वंश, कुल। (फा०) १ लाल रंग। २ खेमा। ३ एक प्रकार की शराब।

आलऔलाद- स्त्री० (अ०) बालबच्चे, संतति।

आलत- स्त्री० (अ०) १ औजार आदि उपकरण। २ पुरुष की इन्द्रिय।

आलम- पुं० (अ०) १ दुनिया। संसार। २ अवस्था। दशा। ३ जन-समूह।

आलम-गीर- वि० (अ०+फा०) १ संसार-विजयी, जगत्-विजयी। २ संसार-व्यापी। पुं० औरंगजेब बादशाह की पदवी।

आलमे-ख्वाब- पुं० (अ०+फा०) सोने की हालत, निद्रित अवस्था।

आलमे-गैब- पुं० (अ०) परलोक।

आलमे-फानी- पुं० (अ०) यह लोक जो नश्वर है।

आलमे-बाला- पुं० (अ०) स्वर्ग। बहिश्त।

आलमे-बेदारी- पुं० (अ०+फा०) जाग्रत अवस्था। जागने की हालत।

आलमे-सिफली- पुं० (अ०) पृथ्वी। संसार।

आला- पुं० (अ० आलः) १ औजार। २ उपकरण। वि० (अ० अअला) सबसे बढ़िया, श्रेष्ठ।

आलाइश- स्त्री० (फा०) शरीर में रहने वाला मल और कोई दूषित पदार्थ।

आलात- पुं० (अ०) 'आलत' का बहु०। औज़ार वगैरह। उपकरण।

आलाम- पुं० (अ०) 'अलम' का बहु०। दुःख। रंज।

आलिम- वि० (अ०) इल्मवाला। विद्वान्। पंडित।

आलिमाना- वि० (अ० आलिमानः) आलिमों या विद्वानों का-सा।

आली- वि० (अ०) बड़ा। उच्च। श्रेष्ठ।

आलीजनाब- वि० (अ०) उच्च पद पर होने वाला। बहुत श्रेष्ठ (व्यक्ति के लिए)।

आलीशान- वि० (फा०) भव्य, महान।

आली हज़रत- वि० (अ०) उच्च पद पर होने वाला। परम श्रेष्ठ (व्यक्ति के लिए)।
आलुफ्ता- पुं० (फा० आलुफ्तः) १ स्वतंत्र प्रकृतिका व्यक्ति। २ बाहरी। पराया। ग़ैर।
आलूचा- पुं० (फा० आलूचः) १ एक पेड़ जिसका फल पंजाब इत्यादि में ज्यादा खाया जाता है। २ इस पेड़ का फल। मोटिया बादाम। गर्दालू।
आलूदगी- स्त्री० (फा०) १ अपवित्रता। मलिनता। गंदगी। २ लिथड़ा या लतपथ होना।
आलूदा- वि० (फा० आलूदः) लतपथ। लिथड़ा हुआ। जैसे-खून आलूदा=खून में लिथड़ा हुआ।
आलूबुखारा- पुं० (फा०) आलूचा नामक वृक्षका सुखाया हुआ फल।
आवाज़- स्त्री० (फा०) १ शब्द। नाद। ध्वनि। २ बोली। वाणी। स्वर। मुहा०- आवाज़ उठाना- विरुद्ध कहना। आवाज़ देना= जोरसे पुकारना। आवाज़ बैठना= कफके कारण स्वरका साफ न निकलना। गला बैठना। आवाज़ भारी होना= कफ के कारण कंठ का स्वर विकृत होना।
आवाज़ा- पुं० (फा० आवाज़) १ नामवरी। प्रसिद्धि। २ ताना। व्यंग्य। ३ जनश्रुति। अफवाह। मुहा०= आवाज़ा कसना= व्यंग्य करना।
आवारगी- स्त्री० (फा०) आवारा-पन, शोहदा-पन।
आवारा- पुं० (फा० आवारः) १ व्यर्थ इधर-उधर फिरने वाला, निकम्मा। २ बे-ठौर-ठिकाने का, उठल्लू। ३ दुश्चरित्र, बदमाश, लुच्चा।
आवुर्द- वि० (फा०) जो प्राकृतिक नहीं, बल्कि यों ही किसी प्रकार आया या लाया गया हो, आगन्तुक, कृत्रिम।
आवुर्दा- वि० (फा० आवुर्दः) १ लाया हुआ। २ कृपापात्र।
आवेज़- वि० (फा०) लटकता हुआ (यौगिक शब्दों के अन्त में)।
आवेज़ाँ- वि० (फा०) लटकता या झूलता हुआ।
आवेज़ा- पुं० (फा० आवेजः) कानों में पहनने का एक प्रकार का लटकन।
आश- स्त्री० (फा०) १ मांस। २ भोजन।
आशना- पुं० (फा० आश्ना) १ मित्र। दोस्त। यार। ज़ार। २ प्रेमी या प्रेमिका। वि० परिचित। ज्ञात।
आशनाई- स्त्री० (फा० आश्नाई) १ मित्रता। दोस्ती। २ परिचय। जान-पहचान। ३ स्त्री और पुरुष में होने वाला अवैध संबंध।
आशिक़- पुं० (अ०) इश्क या प्रेम करने वाला। प्रेमी। अनुरक्त।
आशिक़-मिज़ाज- वि० (अ०) (भाव० आशिक-मिज़ाजी) जिसके मिज़ाज या स्वभाव में ही आशिकी हो। सदा इश्क या प्रेम करने वाला, विलासी।
आशिक़ाना- वि० (अ०) 'आशिक़' से। (फा०) आशिकों का-सा, प्रेमपूर्ण।
आशिक़ी- स्त्री० (अ०) आशिक होने की क्रिया या भाव, प्रेम, आसक्ति।
आशियाँ- पुं० दे० 'आशियाना'।
आशियाना- पुं० (फा० आशियानः) पक्षी का घोंसला।
आशुफ्तगी- स्त्री० (फा०) १ दुर्दशा। २ घबराहट। विकलता। बेचैनी।
आशुफ्ता- वि० (फा० आशुफ्तः) (आशुफ्तगी) १ दुर्दशाग्रस्त। २ घबराया हुआ, विकल (प्रेमी)। यौ०-आशुफ्ता हाल, आशुफ्ता मिज़ाज।
आशोब- पुं० (फा०) १ घबराहट, विकलता। २ सूजन।
आश्कार- वि० (फा०) प्रत्यक्ष। खुला हुआ। स्पष्ट। प्रकाशित।
आश्कारा- क्रि० वि० (फा०) खुले आम, सबके सामने, विशेष दे० 'आश्कार'।
आसमान- पुं० दे० 'आस्मान'।
आसाइश- स्त्री० (फा०) आराम। सुख। आनन्द।

आसान- वि० (फा०) सहज। सरल। मुश्किल या कठिनका उलटा।
आसानियत- स्त्री० दे० 'आसानी'।
आसानी- स्त्री० (फा०) सरलता। सुगमता।
आसाम- पुं० (अ० 'असम' का बहु०) १ पाप, गुनाह। २ अपराध।
आसामी- पुं० (अ०) असामी, काश्तकार।
आसार- पुं० (अ०) 'असर' का बहु०, १ निशान, चिह्न। २ लक्षण। ३ इमारत की नींव। ४ दीवार की चौड़ाई।
आसिम- वि० (अ०) (स्त्री० आसिमा) सद्गुणी, सदाचारी, सुशील।
आसिया- स्त्री० (फा०) आटा पीसने की चक्की।
आसी- वि० (अ०) १ गुनहगार, पापी। २ अपराधी, मुजरिम।
आसीमा- वि० (फा० आसीमः) चकित। भौचक्का। यौ०- सरासीमा= भौचक्का।
आसूदगी- स्त्री० (फा०) १ सुख और शान्ति। २ सम्पन्नता। ३ तुष्टि।
आसूदा- वि० (फा० आसूदः)। १ सुखी और सम्पन्न। २ बेफिक्र। निश्चिन्त।
आसेब- पुं० (फा०) १ भूत, प्रेत। २ विपत्ति, कष्ट। ३ हानि, क्षति।
आस्तान- पुं० (फा० मि० सं० स्थान) १ ड्योढ़ी। दहलीज। २ प्रवेशद्वार। ३ फकीरों के रहने का स्थान।
आस्ताना- पुं० दे० 'अस्तान'।
आस्तीन- स्त्री० (फा०) पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढँकता है। बाँह। मुहा०- आस्तीन का साँप= वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे।
आस्मान- पुं० (फा० आस्माँ) १ आकाश। गगन। २ स्वर्ग। देवलोक। मुहा०- आस्मान के तारे तोड़ना= कोई कठिन या असम्भव कार्य करना। आस्मान टूट पड़ना= किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। वज्रपात होना। आस्मान पर चढ़ना= ग़रूर करना। घमंड दिखाना। आस्मान सिर पर उठाना= ऊधम मचाना। दिमाग़ आस्मान पर होना= बहुत अभिमान होना।
आस्मानी- वि० (फा०) १ आस्मानका। आकाशीय। जैसे-आस्मानी ग़ज़ब। यौ०- आस्मानी किताब= आस्मान से आई हुई किताब। जैसे-बाइबिल, कुरान आदि। २ आकस्मिक। ३ आस्मान के रंग का, नीला। पुं० आस्मान का-सा रंग, नील। स्त्री० ताड़ी।
आहंग- पुं० (फा०) १ विचार, इरादा। २ उद्देश्य। ३ ढंग, तरीका। ४ संगीत।
आह- स्त्री० (अ०) कष्टसूचक निःश्वास। ठंढी या गहरी साँस। मुहा०= किसी की आह पड़ना= किसी की ठंढी साँस का दुःखद प्रभाव पड़ना। अव्यय अफ़सोस। दुःख है।
आहन- पुं० (फा०) लोहा।
आहन-गर- पुं० (फा०) लोहे का काम करने वाला। लोहार।
आहनी- वि० (फा०) लोहे का।
आहिस्तगी- स्त्री० (फा०) १ 'आहिस्ता' का भाव। २ धीमापन। ३ मुलायमियत, कोमलता।
आहिस्ता- क्रि० वि० (फा० आहिस्तः) १ धीरे-धीरे। २ कोमलता से। मुलायमियत से। ३ क्रम-क्रम से। वि० १ धीमा, मद्धिम। २ कोमल, मुलायम।
आहू- पुं० (फा०) हिरन।
इंक़िज़ा- स्त्री० (अ०) समाप्ति। यौ०- इंक़िज़ाए मीआद= अवधि की समाप्ति।
इंजील- स्त्री० (यू०) ईसाइयों की धर्म पुस्तक।
इंतकाल, इंतिकाल- पुं० (अ० इंतिक़ाल) मृत्यु, निधन।
इंतज़ाम, इंतिज़ाम- पुं० (अ०) प्रबंध।
इंतज़ार, इंतिज़ार- स्त्री० (अ०) प्रतीक्षा।
इंसान- पुं० (अ०) मनुष्य, मानव।
इंसानियत- स्त्री० (अ०) मनुष्यता, मानवता।
इंसाफ- पुं० (अ०) न्याय।

इंसाफपसंद- वि० (अ०) न्यायशील।

इआदत- स्त्री० (अ०) १ दोहराना। २ रोगी को देखने और उसका हाल पूछने के लिए उसके पास जाना।

इआनत- स्त्री० (अ०) १ मदद। सहायता। २ दया। कृपा। अनुग्रह।

इक़्तदार- पुं० (अ० इक्तिदार) १ अधिकार। इख्तियार। २ सामर्थ्य। शक्ति।

इक़्तबास- पुं० (अ० इक्तिबास) १ प्रज्वलित करना। जलाना। २ किसी से ज्ञान प्राप्त करना। ३ किसी का लेख या वचन बिना उसके नाम के उल्लेख के उद्धृत करना।

इक़्ताम- पुं० (अ०) प्रयत्न, चेष्टा।

इक़्तिसाम- पुं० (अ०) विभाजन, बँटवारा।

इकबारगी- क्रि० वि० (फा०) एक साथ। एकाएक। एकदम से। अचानक। सहसा।

इक़्बाल- पुं० (अ० इक्बाल) १ किस्मत। भाग्य। २ प्रताप। ३ धन। सम्पत्ति। दौलत। ४ कबूल करना। मानना। स्वीकार।

इक़्बालमन्द- वि० (अ० इक्बाल+फा०) (इक़्बालमन्दी) इक़्बाल वाला। प्रतापशाली।

इकराम- पुं० (अ०) प्रदान, बख्शिश, पुरस्कार, इनाम। यौ०- इनाम व इकराम= पारितोषिक और पुरस्कार।

इक़्रार- पुं० (अ० इक्रार) १ प्रतिज्ञा, वचन, वादा। २ कोई काम करने की स्वीकृति।

इक़्रारनामा- पुं० (अ० इक़्रार+फा० नामः) वह पत्र जिसपर किसी प्रकार का इकरार और उसकी शर्तें लिखी हों। प्रतिज्ञापत्र।

इक़्रारी- वि० (अ० इक्रारी) १ इक़्रार सम्बन्धी। २ इकरार करनेवाला। ३ अपना अपराध आदि मान लेनेवाला।

इक्तफा- पुं० (अ०) १ काफी समझना, यथेष्ट समझना। २ सन्तुष्ट रहना।

इक्साम- पुं० (अ० इक्साम) विभाजन, अनुभाजन, हिस्से लगाना।

इक्सीर- स्त्री० (अ०) रसायन, कीमिया। वि० अमोघ, अचूक।

इखतताम- पुं० (अ० इख्तिताम) खातमा, अन्त।

इखफा- पुं० (अ० इख्तिफा) छिपाना।

इखराज- पुं० (अ० इख्राजात) खर्च का बहु०। खर्च, व्यय।

इखलाक- पुं० दे० 'अखलाक'।

इखलाकी- वि० 'अखलाकी' (नैतिक)।

इखलास- पुं० (अ० इख्लास) १ दोस्ती। मित्रता। २ सच्चा प्रेम।

इखलासमन्द- वि० (अ०+फा०) १ शुद्ध-हृदय। २ प्रेम करनेवाला। मिलनसार।

इख्तराअ- पुं० (अ० इख्तिराऽ) १ कोई नई बात निकालना या पैदा करना। नई बात निकालना। २ ईजाद। आविष्कार।

इख्तलात- पुं० (अ० इख्तिलात) १ मेल-जोल, घनिष्ठता। २ प्रेम, अनुराग।

इख्तलाफ- पुं० (अ० इख्तिलाफ) १ खिलाफ होने की क्रिया या भाव। २ विरोध। ३ बिगाड़, अनबन।

इख्तसार- पुं० (अ० इख्तिसार) संक्षेप, खुलासा।

इख्तिमाम- पुं० (अ०) समाप्ति।

इख्तियार- पुं० (अ०) १ अधिकार। २ अधिकार-क्षेत्र। ३ सामर्थ्य, काबू। ४ प्रभुत्व, स्वत्व।

इख्तियारी- वि० (अ०) १ जो अपने इख्तियार में हो, ऐच्छिक।

इख्तिसार- पुं० (अ०) संक्षेप।

इख्राजात- पुं० बहु० (अ०) खर्चे।

इग़माज़- पुं० (अ० इग़माज) (वि० इग़माजी) ध्यान न देना, उपेक्षा।

इग़लाम- पुं० (अ० इग़लाम) अप्राकृतिक रीति से लड़कों के साथ व्यभिचार करना, लौंड़ेबाजी।

इग़लामी- वि० (अ० इग़लाम) इग़लाम या लौंड़ेबाजी करनेवाला।

इग़वा- पुं० (अ० इग़वा) बहकाना, भ्रम में

डालना।

इज़तनाब- पुं० (अ० इज्तिनाव) १ परहेज करना, बचना, दूर रहना। २ संयम।

इजतमाअ- पुं० (अ० इज्तिमाअ) इकट्ठा होना, जमा होना।

इज़तराब- पुं० (अ० इज्तिराब) १ घबराहट। २ विकलता, बेचैनी।

इज़तहाद- पुं० (अ० इज्तिहाद) १ अ० 'जहद' का बहुवचन। २ कोई नई बात निकालना। ३ दे० 'जहाद'।

इज़दिवाज- पुं० (अ० इज्दिवाज) विवाह, शादी।

इज़दिहाम- पुं० (फा० इज्दिहाम) बहुत बड़ी भीड़, जनसमूह।

इजमाअ- पुं० (अ० इज्माअ) १ इकट्ठा होना। २ एकमत होना।

इजमाल- पुं० (अ० इज्माल) १ बिखरी हुई चीजों को मिलाकर इकट्ठा और ठीक करना। २ संक्षेप करना। ३ संक्षिप्त रूप। ४ किसी जमीन आदि पर होनेवाला बहुत से लोगों का सम्मिलित अधिकार।

इजमाली- वि० (अ० इज्माली) बहुत से लोगों का मिला-जुला। सम्मिलित।

इजरा- स्त्री० (अ० इज्रा) १ जारी करना। प्रचलित करना। २ कार्य का निष्पादन। यौ०- इजराए डिग्री= डिगरी का निष्पादन।

इज़राईल- पुं० (अ० इज्राईल) प्राण लेनेवाले फरिश्ते का नाम, मृत्यु के देवदूत।

इजलाल- पुं० (अ० इज्लाल) १ बुजुर्गी, बड़प्पन। २ प्रतिष्ठा, सम्मान। ३ शान।

इजलास- पुं० (अ० इज्लास) १ बैठना। २ कचहरी का काम करने के लिए बैठना। ३ न्यायालय। कचहरी। ४ सभा। अधिवेशन।

इज़हार- पुं० (अ० इज्हार) १ जाहिर या प्रकट करना। २ वर्णन करना ३ वक्तव्य। बयान।

इजाज़त- स्त्री० (अ०) १ अनुमति। २ परवानगी।

इजाबत- स्त्री० (अ०) १ स्वीकृति। मानना। मंजूरी। स्वीकार। २ मल-त्याग करना।

इज़ाफत- (अ०) १ एक वस्तुका दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। २ अपना काम ईश्वर पर छोड़ना। ३ शरण देना। ४ ऊपर से या बाद में बढ़ाया हुआ अंश।

इज़ाफा- पुं० (अ० इज़ाफः) अधिकता। वृद्धि।

इज़ाफी- वि० (अ०) ऊपर से बढ़ाया हुआ।

इज़ार- स्त्री० (फा०) पाजामा।

इज़ारबन्द- पुं० (फा०) नाड़ा जो पाजामें के नेफे में डाला जाता है और जिससे उसे कमर में बाँध लेते हैं। मुहा०- इज़ारबन्दका ढीला= हर स्त्री से संभोग करने के लिये तैयार रहने वाला। ऐयाश।

इजारा- पुं० (अ० इजारः) १ किसी पदार्थ को उजरत या किराये पर देना। २ ठेका। ३ अधिकार। इख्तियार। स्वत्व।

इजारा-दार- पुं० (अ०+फा०) १ वह जिसने कोई जमीन आदि इजारे या ठेकेपर ली हो, काश्तकार। २ ठेकेदार। ३ पट्टेदार।

इजारानामा- पुं० (अ०+फा०) वह काग़ज जिसपर इजारे की शर्तें आदि लिखी हों।

इज़ाला- पुं० (अ०) १ नष्ट करना। २ न रहने देना। दूर करना। जैसे- इज़ाले बिक्र करना= कुमारी का कौमार्य नष्ट करना। इज़ाले हैसियते उरफी= हतक इज्जत। मान-भंग।

इज्ज़- स्त्री० (अ०) मान। यौ०- इज्ज़ व आह= प्रतिष्ठा और वैभव।

इज्ज़त- स्त्री (अ०) मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। सम्मान।

इज्ज़तदार- पुं० (अ०+फा०) प्रतिष्ठित, सम्मानित।

इज्न- पुं० (अ०) १ मालिक का अपने गुलाम को कोई व्यापार करने की आज्ञा देना। २ विवाह के सम्बन्ध में वर और

कन्या की स्वीकृति। यौ०- इज्न-आम= मुरदे की नमाज पढ़ने के बाद लोगों को अपने-अपने घर जाने की परवानगी! इज्न-नामा= वसीयतनामा।

इतमीनान- पुं० (अ० इत्मीनान) १ विश्वास। २ संतोष।

इतराफ- स्त्री० (अ०) 'तरफ' का बहु०। १ ओर। तरफ। दिशा। २ आसपास की दिशाएँ।

इतलाक़- पुं० (अ० इत्लाक़) १ तोड़ना। मुक्त करना। २ प्रयुक्त करना, लगाना। ३ तलाक़ देना।

इताअत- स्त्री० (अ०) ताबेदारी करना, हुक्म मानना, आज्ञा-पालन।

इताब- पुं० (अ०) १ कोप, अप्रसन्नता। २ डाँट-फटकार।

इत्तफाक़- पुं० (अ० इत्तिफाक, बहु० इत्तफाक़ात) १ आपस में मिलना। २ एकता, संयोग। यौ०- इत्तफाक से= संयोग से।

इत्तफाकन्- क्रि० वि० (अ०) इत्तफाक़ से, संयोग से।

इत्तफाकिया- क्रि० वि० (फा० इत्तफाकियः) इत्तफाक़ से, संयोग से, आकस्मिक।

इत्तफाक़ी- वि० (अ०) इत्तफाक़ या संयोग से होनेवाला।

इत्तलाअन्- क्रि० वि० (अ०) इत्तलाके तौरपर।

इत्तलानामा- पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसके द्वारा कोई इत्तिला या सूचना दी जाय। सूचना-पत्र।

इत्तसाल- पुं० (अ० इत्तिसाल) १ संयुक्त या संलग्न होना। मिलना। २ किसी कामका लगातार होना। ३ सम्बन्ध। लगाव।

इत्तहाद- पुं० (अ०) १ एका। एकता। २ मित्रता। दोस्ती।

इत्तहाम- पुं० (अ० इत्तिहाम) १ तोहमत लगाना। दोष लगाना। व्यर्थ बदनाम करना। २ भ्रम में डालना।

इत्तिला- स्त्री० (इत्तिलाअ) खबर। सूचना। विज्ञप्ति।

इत्तिलाकुनिन्द- वि० (अ०) सूचना देने वाला।

इत्तिहाद- पुं० (अ०) एकता, संघटन।

इत्र- पुं० (अ०) फूलोंकी सुगंधिका सार, पुष्पसार।

इत्रदान- पुं० (अ०+फा०) इत्र रखने का पात्र।

इत्रयात- स्त्री० (अ०) सुगंधित वस्तुएँ, खुश्बूदार चीजें।

इदखाल- पुं० (अ० इद्ख़ाल) १ दाखिल होने या करने की क्रिया का भाव। २ जमा करने की क्रिया या भाव। ३ प्रस्तुतिकरण।

इदबार- पुं० (अ०) १ नहूसत। २ बद-किस्मती। ३ दुर्भाग्य। ४ अभाग्य।

इदराक- स्त्री० (अ० इद्राक) समझ, अक्ल, बुद्धि।

इद्दत- स्त्री० (अ०) १ गिनती, गणना। २ विधवाओं और परित्यक्ता स्त्रियों के लिये वह निश्चित काल जिसके पहले वे दूसरा विवाह न कर सकें।

इनकार- पुं० (अ० इन्कार) अस्वीकार।

इनसान- पुं० दे० 'इन्सान'।

इनसाफ- पुं० (अ० इन्साफ) न्याय।

इनसिदाद- पुं० (अ० इन्सिदाद) रोकथाम, निवारण।

इनहदाम- पुं० (अ० इन्हिदाम) १ गिरना। ढहना, मटियामेट होना। २ नष्ट होना।

इनहराफ- पुं० (अ० इन्हिराफ) १ टेढ़ा होना। २ दूर या अलग होना। ३ विरोधी होना, बग़ावत, विद्रोह।

इनहसार - पुं० (अ० इन्हिसार) १ चारों ओर से घेरा जाना। २ बन्धन। ३ निर्भरता।

इनाद - पुं० (अ०) वैर, शत्रुता, दुश्मनी।

इनान - स्त्री० (अ०) लगाम, बाग।

इनाबत - स्त्री० (अ०) पश्चात्तापपूर्वक ईश्वर की ओर प्रवृत्त होना।

इनाम - पुं० (अ० इनआम) पुरस्कार,

उपहार, बख्शिश। यौ०- इनाम इकराम= इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय।

इनामदार - पुं० (अ०+फा०) वह जिसे माफी जमीन मिली हो।

इनायत- स्त्री० (अ०) दूसरे के कार्य के लिए स्वयं कष्ट भोगना। स्त्री० (अ० अनायत) कृपा। दया। मेहरबानी।

इन्क़ज़ा- पुं० (अ० इन्क़िज़ाऽ) समाप्ति। जैसे:- इन्कज़ाए मीयाद= मीयाद या अवधि का बीत जाना।

इन्क़लाब - पुं० (अ० इन्किलाब) जमाने का उलट-फेर, समय का फेर, बहुत बड़ा परिवर्तन, क्रांति।

इन्क़लाबी- वि० (अ० इन्किलाब) क्रान्तिकारी।

इन्कशाफ़ - पुं० (अ० इन्किशाफ) रहस्य आदि खुलना, उद्‌घाटन।

इन्कसार - पुं० (अ०) नम्रता, दीनता, आजिजी।

इन्क़ार- पुं० (अ०) अस्वीकार, नामंजूरी। "इकरार" का उलटा।

इन्क़िसाम- पुं० (अ०) बँटवारा, विभाजन।

इन्ज़मद - पुं० (अ० इन्ज़िमद) जमने की क्रिया, जमना। (जल आदिका)

इन्ज़ाल - पुं० (अ०) १ स्खलन। २ वीर्य-पात।

इन्तक़ाम - पुं० (अ० इन्तिक़ाम) १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना, स्थान-परिवर्तन। २ इस लोक से दूसरे लोक में जाना, मरण, मृत्यु।

इन्तखाब - पुं० (अ० इन्तिखाब) १ चुनाव, निर्वाचन। २ अच्छे अंश छाँट कर अलग करना। ३ पसन्द। ४ पटवारी के खाते की नकल जिसमें खेत के मालिक और जोतने वाले का विवरण रहता है।

इन्तज़ाम- पुं० (अ० इन्तिज़ाम) प्रबन्ध, बन्दोबस्त, व्यवस्था।

इन्तज़ामकार - पुं० (अ०+फा०) इन्तज़ाम या प्रबंध करनेवाला, व्यवस्थापक, प्रबंधकर्ता।

इन्तज़ारी - स्त्री० दे० 'इन्तज़ार'।

इन्तशार - पुं० (अ० इन्तिशार) १ मुन्तशिर होना, इधर-उधर फैलना, बिखरना। २ परेशानी। ३ दुर्दशा।

इन्तहा- स्त्री० (अ० इन्तिहा) १ चरम सीमा। २ समाप्ति, अंत। ३ परिणाम, फल।

इन्दमाल- पुं० (अ० इन्दिमाल) १ घाव का भरना। २ अच्छा होना। ३ सुधार।

इन्दराज- पुं० (अ० इन्दिराज) प्रविष्टि।

इन्दिया- पुं० (अ० इन्दियः) १ विचार। २ अभिप्राय।

इन्दोख्ता- वि० (फा०) मिला हुआ, प्राप्त। पुं० प्राप्ति, लाभ।

इन्फाज़- पुं० (अ०) १ जारी करना, प्रचलित करना। २ रवाना करना, भेजना।

इन्फिकाक - पुं० (अ०) मुक्ति, विमुक्ति।

इन्फिसाल- पुं० (अ०) मुकदमे का फैसला, निर्णय।

इन्शा- स्त्री० (अ०) १ लेख आदि लिखना, लेखन-क्रिया, लेखनशैली।

इन्शा-अल्लाह-तआला- क्रि० वि० (अ०) यदि ईश्वरने चाहा तो, यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो।

इन्शा-परदाज़- पुं० (अ०+फा०) लेखक।

इन्शा-परदाज़ी - स्त्री० (अ० + फा०) लेख आदि लिखने की क्रिया अथवा कला।

इन्सदाद - पुं० (इन्सिदाद) रोकने के लिए किया जानेवाला काम, रोकथाम,निवारण।

इन्सराम - पुं० (अ० इन्सिराम) १ कटना। अलग होना। २ पूर्णता या समाप्ति को पहुँचना। ३ व्यवस्था, प्रबंध।

इन्सान - पुं० (अ०) मनुष्य।

इन्सानियत- स्त्री० (अ०) मनुष्यता, मनुष्यत्व, भलमनसाहत।

इन्सानी- वि० (अ० इन्सान) मनुष्यसंबंधी, मनुष्यका।

इन्साफ- पुं० (अ० इफ्तिताह) १ न्याय, अदल। २ फैसला, निर्णय।

इन्सिदाद- पुं० (अ०) रोकथाम, निवारण। यौ०- इन्सिदादे जरायम= अपराधों की

रोकथाम।

इफ़तताह- पुं० (अ० इफ़्तिताह) शुरू या जारी करना, खोलना।

इफतिराक- पुं० (अ० इफ़्तिराक) १. फूट, विग्रह। २. पृथकता।

इफ़रात- स्त्री० (अ० इफ़ात) बहुत अधिकता, विपुलता। वि० बहुत अधिक।

इफ़लास- पुं० (अ० इफ़्लास) दरिद्रता, गरीबी।

इफ़लाह - पुं० (अ०) भलाई। उपकार।

इफ़शा- वि० (फा० इफ़शा) प्रकट, जाहिर। यौ०- इफ़शाए राज= रहस्य का उद्घाटन।

इफ़ाक़त- स्त्री० दे० 'इफ़ाक़ा'।

इफ़ाक़ा - पुं० (अ० इफ़ाक़ः) रोग आदि में कमी होना।

इफ़्तख़ार- पुं० (अ० इफ़्तिख़ार) १ फख़ का अभिमान करना। २ प्रतिष्ठा, इज्जत।

इफ़्तरा- (अ० इफ़्तिरा) झूठा कलंक, तोहमत।

इफ़्तराक़ - पुं० (अ०) अलग होना, पृथक् होना।

इफ़्तार- पुं० (अ०) दिन-भर रोजा रखने या उपवास करनेके उपरान्त सन्ध्या को जल-पान करना।

इफ़्तारी - स्त्री० (अ०) रोजा खोलने या इफ़्तार करनेके समय खाई जानेवाली चीजें।

इफ़्तिराक़ - पुं० (अ०) १ फूट, विग्रह। २ पृथकता।

इफ़्फ़त - स्त्री० (अ०) १ बुरे कामों से बचना। सदाचार। पर-स्त्री-गमन या पर-पुरुष-गमन से बचना।

इबरत - स्त्री० (अ० इब्रत) १ बुरे काम से मिलने वाली शिक्षा। २ नसीहत।

इबरत-अंगेज़ - वि० (अ० इब्रत + फा०) जिससे कुछ इबरत या शिक्षा मिले।

इबरा - पुं० (अ० इब्रा) छोड़ना। बरी करना।

इबरानामा- पुं० (अ० इब्रा + फा० नामः) वह पत्र जिसके अनुसार कोई छोड़ा या बरी किया जाय।

इबलाग़- क्रि० स० (अ० इब्लाग़) १ पहुँचाना। २ भेजना।

इबलीस - पुं० (अ० इब्लीस) शैतान।

इबहाम- पुं० (अ०) भ्रम, संदेह।

इबा - स्त्री० (अ०) १ कमली, क़म्बल। २ एक प्रकारका बड़ा चोग़ा या पहनावा।

इबादत- स्त्री० (अ०) ईश्वर की उपासना, पूजा।

इबादतख़ाना- पुं० (अ०+फा०) इबादतगाह, मन्दिर।

इबादतगाह- स्त्री० (अ०+फा०) इबादत या उपासना करने की जगह, मंदिर।

इबारत- स्त्री० (अ०) १ लेख, मजमून। २ लेखशैली। स्त्री० (अ०) उर्वरता, उपजाऊपन।

इबारत-आराई- स्त्री० (अ०) शब्द-चित्रण।

इब्तिदा - स्त्री० (अ०) १ आरम्भ, प्रारम्भ, शुरू। २ उद्गम, विकास। यौ०- अपीले इब्तिदा= आरंभिक अपील।

इब्तिदाई- वि० (फा०) इब्तिदा या आरम्भिक, प्रारंभिक।

इब्तिसाम- पुं० (अ०) १ हँसना, मुसकराना। २ फूल का खिलना।

इब्न- पुं० (अ०) बेटा, पुत्र।

इब्नत - स्त्री० (अ०) बेटी, पुत्री, कन्या।

इमकान- पुं० (अ० इम्कान) १ हो सकने की अवस्था या भाव, सम्भावना। २ शक्ति, सामर्थ्य। यौ०- हत्तुल इमकान= यथासाध्य, यथासंभव।

इमरोज़- क्रि० वि० (फा० इम्रोज) आज के दिन, आज।

इमला - पुं० (अ० इम्ला) शब्दों को उनके ठीक रूप में और शुद्ध लिखना, वर्ण-विचार।

इमलाक- पुं० (अ० इम्लाक) १ सम्पत्ति। जायदाद। २ भू-संम्पत्ति। यौ०- इमलाक गैरमनकूला= अचल सम्पत्ति। इमलाक मनकूला= चल सम्पत्ति।

इम्शब - क्रि० वि० (अ० इम्शब) आज की रात।

इम्साक - पुं० (अ० इम्साक) १ बन्द करना, रोकना। २ वीर्यको स्खलित न होने देना, स्तम्भन।

इम्साल- अव्यय (अ० इम्साल) इस वर्ष।

इमाद - पुं० (अ०) १ स्तम्भ, खम्भा। २ पूरा भरोसा।

इमाम - पुं० (अ०) १ पथ-प्रदर्शक नेता। २ मुसलमानी धर्मशास्त्र का ज्ञाता और विद्वान, धार्मिक नेता।

इमाम-ज़ामिन- पुं० (अ०) संरक्षक, इमाम। यौ०- इमाम ज़ामिन का रुपैया= वह रुपया या सिक्का जो इमाम जामिनके नामपर किसी विदेश जानेवाले के हाथमें इसलिए बाँधा जाता है कि वह सब विपत्तियों से बचा रहे।

इमाम-बाड़ा - पुं० (अ० + हिं०) वह स्थान जहाँ मुसलमान ताज़िये दफ़्न करते या मुहर्रमका उत्सव मनाते हैं।

इमामा - पुं० देo 'अम्मामा'।

इमारत - स्त्री० (अ०) बड़ा और पक्का मकान, भवन। स्त्री० (अ०) १ वह प्रदेश जो किसी अमीर के शासन में हो। २ शासन, राज्य। ३ अमीरी, संपन्नता। ४ वैभव, शान-शौकत।

इम्तनाअ- पुं (अ० इम्तिनाऽ) मना करना, मनाही।

इम्तनाई- वि० (अ० इम्तिनाई) मनाहीसे सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे- हुक्म इम्तनाई = मनाही की आज्ञा।

इम्तहान - पुं० (अ० इम्तिहान) परीक्षा।

इम्तियाज़ - पुं० (अ०) १ तमीज़ करना। २ गुण-दोष के विचार, विवेक, विशिष्टता।

इम्दाद- स्त्री० (अ०) १ मदद या सहायता करना। २ सहायता, मदद। ३ वह धन जो सहायतारूप में दिया जाय।

इम्बिसात- पुं० (अ०) १ प्रसन्नता, आनन्द। २ फूल आदि का खिलना।

इरक़ाम- पुं० (अ० इर्क़ाम) लेखन, लेखन-कार्य।

इरफान- पुं० (अ० इर्फान) १ बुद्धि, विवेक। २ ज्ञान। ३ विज्ञान।

इरम - पुं० (अ०) १ वह स्वर्ग जो शद्दादने इस लोकमें बनाया था। २ स्वर्ग, बहिश्त।

इरशाद - पुं० (अ० इर्शाद) १ हिदायत करना। रास्ता बतलाना। २ आदेश। हुक्म। जैसे- इरशाद करना या फरमाना= हुक्म देना, कहना। यौ०- हस्बे इरशाद= आदेशानुसार।

इरसाल - पुं० (अ० इर्साल) प्रेषण, भेजने की क्रिया, रवाना करना।

इराक़ - पुं० (अ०) (वि० इराक़ी) अरब का एक प्रदेश।

इरादत - स्त्री० दे० 'इरादा'।

इरादतन्- क्रि० वि० (अ०) जान-बूझकर।

इरादा - पुं० (अ० इरादः) विचार। संकल्प।

इर्तकाब - पुं० (अ० इर्तिकाब) १ ग्रहण करना। पसन्द करके लेना। २ करना।

इर्तबात- पुं० (अ० इर्तिबात) रब्त या मेल-जोल। दोस्ती।

इर्दगिर्द - क्रि० वि० (अ०) आस-पास। चारों ओर। इधर-उधर।

इलज़ाम- पुं० (अ० इल्जाम) १ दोष। अपराध। २ अभियोग। दोषारोपण।

इलतजा- स्त्री० (अ० इल्तिजा) प्रार्थना। विनय। निवेदन।

इलतफात- स्त्री० (अ० इल्तिफात) १ दया, कृपा। २ प्रवृत्ति। ३ अनुराग।

इलमास - पुं० (फा० इल्मास) हीरा।

इलहाक़ - पुं० (अ० इल्हाक़) सम्मिलित करना। मिलाना।

इलहान - पुं० (अ० 'लहन' का बहु०) १ उत्तम स्वर । २ संगीत।

इलहाम - पुं० (अ० इल्हाम) १ मन में ईश्वर की ओर से कोई बात प्रकट होना। २ दैववाणी। आकाशवाणी।

इलाक़ा - पुं० (अ० अलाक़ः) १ मनका

किसी वस्तु से सम्बन्ध। लगाव। २ हार्दिक प्रेम। ३ कई मौजों की जमीन्दारी। ४ अधिकार-क्षेत्र। यौ०- इलाकाए अदालत= न्यायालय का अधिक्षेत्र।

इलाज - पुं० (अ०) १ चिकित्सा। २ औषध। ३ उपाय, तरकीब।

इलावा - क्रि० वि० (अ० अलावः) सिवा, अतिरिक्त।

इलाह- पुं० (अ०) ईश्वर।

इलाही- पुं० (अ०) ईश्वर, परमात्मा। यौ०- इलाही-तौबा= हे ईश्वर, तू पापों से हमारी रक्षा करे।

इलाही-गज- पुं० (अ० + फा०) अकबर बादशाहका चलाया हुआ एक प्रकार का गज़ जो ३३$^{3}/_{4}$ इंच लम्बा होता है और इमारत के काम में आता है।

इलाहीयात- स्त्री० (अ०) १ ईश्वरीय वस्तुएँ या बातें। २ अध्यात्म।

इलाही सन्- पुं० (अ०) अकबर बादशाह का चलाया सन् या संवत्।

इलियस - पुं० (अ०) एक पैगम्बर जो हजरत खिज़ के भाई थे।

इल्ज़ाम - पुं० (अ०) दोषारोप, अभियोग।

इल्तजा - स्त्री० (अ० इल्तिजा) प्रार्थना, विनय, निवेदन।

इल्तबास- पुं० (अ० इल्तिबास) १ जटिलता, पेचीलापन। २ दो शब्दोंके उच्चारण तो एक होना परन्तु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होना।

इल्तमास - पुं० (अ० इल्तिमास) निवेदन, प्रार्थना।

इल्तबा- पुं० (अ० इल्तिवा) मुलतबी होना, स्थगित होना।

इल्तिमास - पुं० (अ०) निवेदन, प्रार्थना।

इल्तिवाह - पुं० (अ०) स्थगन।

इल्म - पुं० (अ०) १ ज्ञान, जानकारी। २ विद्या। ३ विज्ञान।

इल्म-दाँ - पुं० (अ० + फा०) १ इल्म या विद्या जाननेवाला, विद्वान्। २ विज्ञानवेत्ता।

इल्मियत- स्त्री० (अ०) विद्वत्ता, पाण्डित्य।

इल्मी- वि० (अ०) इल्म या विद्या सम्बन्धी।

इल्मे-अखलाक़ - पुं० (अ०) सभ्यता का विज्ञान, नीतिशास्त्र, नीति।

इल्मे-अदब- पुं० (अ०) साहित्य।

इल्मे-इलाही- पुं० (अ०) ब्रह्मविद्या, अध्यात्म।

इल्मे-उरूज़ - पुं० (अ०) छन्द शास्त्र।

इल्मे-कयाफा- पुं०(अ०) सामुद्रिक शास्त्र।

इल्मेकीमीया- पुं० (अ०) रसायन शास्त्र।

इल्मे-ग़ैब - पुं० (अ०) १ गैब या परोक्ष की विद्या। २ अध्यात्म। ३ ज्योतिष।

इल्मे-जमादात - पुं० (अ०) धातु- विद्या। खनिज-विज्ञान।

इल्मे-तबई - पुं० (अ०) पदार्थ-विज्ञान।

इल्मे-तवारीख - पुं० (अ०) इतिहास - विद्या।

इल्मे-दीन- पुं० (अ०) धर्मशास्त्र।

इल्मे-नबातात - पुं० (अ०) वनस्पति-विद्या।

इल्मे-नुजूम- पुं० (अ०) ज्योतिष-शास्त्र।

इल्मे-फिक्क़ा- पुं० (अ०) मुसलमानी धर्मशास्त्र।

इल्मे-बहस - पुं० (अ०) तर्क-शास्त्र।

इल्मे-मजलिस - पुं० (अ०) समाज में व्यवहार करने की विद्या। सभा-चातुरी।

इल्मे-मन्तक - पुं० (अ०) न्याय-शास्त्र।

इल्मे-मादनियात - पुं० (अ०) खनिज-विद्या।

इल्मे-मूसीकी - पुं० (अ०) संगीत-शास्त्र।

इल्मे-हिन्दसा- पुं० (अ०) गणित-विद्या।

इल्मे-हैयत- पुं० (अ०) खगोल विद्या।

इल्लत - स्त्री० (अ०) १ कारण, सबब। २ अभियोग। ३ बुरी आदत। ४ दोष, अपराध। ५ त्रुटि, कमी। ६ रद्दी और वाहियात चीज।

इल्लती-वि० (अ० इल्लत) जिसे कोई बुरी आदत या लत लग गई हो।

इल्ला-अव्य० (अ०) १ परन्तु, लेकिन। २ नहीं तो। ३ अतिरिक्त, सिवा।

इल्लिल्लाह-(अ०) हे ईश्वर, सहायता कर।

इवज- वि० (अ० एवज़) स्थानापन्न। यौ०- बहवज= के स्थान पर।

इशरत- स्त्री० (अ० इश्रत) आनन्द-मंगल, सुख-भोग। यौ०- ऐश व इशरत= भोग और आनन्द।

इशवा-पुं० (फा० इश्वः) नाज-नखरा, चोचला, अदा।

इशा-स्त्री० (अ०) १ रात का पहला पहर। मुहा०- इशाकी नमाज= १ वह नमाज जो रात के पहले प्रहर में पढ़ी जाती है। २ रात का अन्धकार।

इशाअत- स्त्री० (अ०) १ प्रचार। २ प्रकाशन।

इशारत-स्त्री० (अ०) इशारा या संकेत करना।

इशारतन्- क्रि० वि० (अ०) इशारे या संकेत से।

इशारा- पुं० (अ० इशारः) १ सैन, संकेत। २ संक्षिप्त कथन। ३ बारीक सहारा, सूक्ष्म आधार। ४ गुप्त प्रेरणा।

इश्क़- पुं० (अ०) मुहब्बत, प्रेम; चाह।

इश्क-पेचाँ- पुं० (अ०) लाल फूल की एक लता।

इश्क़-बाज़- पुं० (अ०+फा०) इश्क करने वाला, आशिक, प्रेमी।

इश्कबाज़ी- स्त्री० (अ०) १ प्रेम करना। २ व्यभिचार करना।

इश्तबाह- पुं० (अ० इश्तिबाह) शुबहा, शक, संदेह।

इश्तबाही- वि० (अ०) सन्दिग्ध, जिस पर शक हो।

इश्तराक- पुं० (अ० इश्तिराक) १ हिस्सा, साझा, शिरकत। २ संग-साथ।

इश्तहा- स्त्री० (अ० इश्तिहा) १ क्षुधा, भूख। २ ख्वाहिश, इच्छा।

इश्तहार- पुं० (अ० इश्तिहार) १ विज्ञापन। २ सूचना, नोटिस।

इश्तिआल- पुं० (अ०) १ प्रज्वलित होना, भड़कना। २ उग्र रूप धारण करना।

इश्तिआलक़- स्त्री० दे० 'इश्तिआल'।

इश्तियाक़- पुं० (अ०) १ शौक। २ विशेष अभिलाषा। ३ अनुराग।

इसपंद-पुं० दे० 'इसबंद'।

इसबंद-पुं० (फा० इस्बंद) काला दाना नामक बीज जो प्रायः भूत प्रेत आदि को भगाने के लिये जलाते हैं।

इसबात-पुं० (अ० इस्बात) प्रमाणित या सिद्ध करने की क्रिया।

इसराईल-पुं० (अ० इस्राईल) याकूब पैगम्बर का एक नाम।

इसराफ- पुं० (अ० इस्राफ) धन क़ा अपव्यय, फजूल-खर्ची।

इसराफील-पुं० (अ० इस्राफील) वह फरिश्ता जो कयामत के दिन तूर या नरसिंहा बजावेगा।

इसरार-पुं० (अ० इस्रार) हठ, आग्रह।

इसलाह-स्त्री० दे० 'इस्लाह'।

इसहाल-पुं० (अ० इस्हाल) बार-बार पाखाना होना, दस्त आना।

इसियाँ-पुं० (अ०) गुनाह, अपराध, पाप।

इस्क़ात-पुं० (अ०) गिराना, पतन करना। जैसे-इस्क़ाते हमल=गर्भ-पात, पेट गिराना।

इस्तआनत- स्त्री० (अ०) सहायता, मदद।

इस्तआरा- पुं० (अ० इस्ताआरः) रूपक नाम का अर्थालंकार, उपमेय में उपमान के साधर्म्य का आरोप करके उपमान के रूप में उसका वर्णन करना।

इस्तक़बाल- पुं० (अ० इस्तिक़बाल) १ स्वागत, अगवानी। २ (व्याकरणमें) भविष्यत्काल।

इस्तक़रार- पुं० (अ० इस्तिक़ार) १ स्थिर होना, ठहरना। २ शान्तिपूर्वक या सुख से रहना। ३ निश्चित करना, पक्का करना।

इस्तक़लाल- पुं० (अ० इस्तिक़लाल) १ दृढ़ता, मजबूती, पुष्टि। २ धैर्य। ३ दृढ़ निश्चय, अध्यवसाय।

इस्तक़ामत- स्त्री० (अ० इस्तिकामत) १ दृढ़ता, मजबूती। २ स्थिरता, ठहराव।

इस्तखारा- पुं० (अ० इस्तिखारः) १ ईश्वरसे मंगल-कामना करना और किसी विषय में मार्ग दिखलाने के लिए कहना। २ शकुन-विचार।

इस्तग़फार- पुं० (अ० इस्तिग़फार) दया या क्षमा के लिए प्रार्थना करना, त्राण चाहना।

इस्तग़ासा- पुं० (अ० इस्तिग़ासः) १ फरियाद, न्याय की प्रार्थना। २ अभियोग, दावा।

इस्तदलाल- पुं० (अ० इस्तिदलाल) दलील, तर्क।

इस्तदुआ- स्त्री० (अ० इस्तिदुआ) विनती, निवेदन, प्रार्थना।

इस्तफसार- पुं० (अ० इस्तिफ़सार) १ हाल पूछना, अवस्था आदि के सम्बन्ध में प्रश्न करना। २ पूछना, प्रश्न करना।

इस्तफहाम- पुं० (अ० इस्तिफ़हाम) पूछना, दरियाफ्त करना।

इस्तफ़हामिया- वि० (अ० इस्तफ़हामियः) प्रश्नसम्बन्धी। पुं० प्रश्नचिह्न- जो इस प्रकार लिखा जाता है ?

इस्तमरार- पुं० (अ० इस्तिमरार) १ स्थायी होने का भाव, स्थायित्व। २ निरन्तर रहनेवाला अधिकार। ३ वह निश्चित लगान जिसमें कमीवेशी न हो सके।

इस्तमरारी- वि० (अ० इस्तिमरारी) १ सदा एक-सा रहने वाला, स्थायी। २ जिसमें कमी-बेशी न हो सके। जैसे- इस्तमरारी बन्दोवस्त= भूमि के लगान की वह व्यवस्था जिसमें कमी-बेशी न हो सके।

इस्तराहत- स्त्री० (अ० इस्तिराहत) आराम। सुख।

इस्तवा- पुं० दे० 'उस्तवा'।

इस्तस्ना- स्त्री० (इस्तिस्ना) १ वह जो किसी प्रकार अलग हो। २ अपवाद। ३ अस्वीकार, न मानना।

इस्तहक़ाक-पुं० (अ० इस्तिहक़ाक) हक़, अधिकार, स्वत्व।

इस्तहकाम-पुं० (अ० इस्तिहकाम) १ मजबूती, पुष्टता, दृढ़ता। २ समर्थन।

इस्तादगी- स्त्री० (फा०) खड़े होने की क्रिया या भाव।

इस्तादा- वि० (फा० इस्तादः) खड़ा हुआ।

इस्तिंजा- पुं० (अ०) १ पानी से धोकर अपवित्रता दूर करना, धोकर शुद्ध करना। २ मूत्र-त्याग करना। ३ मूत्र-त्याग के उपरांत इन्द्रिय को जल से धोना या मिट्टी के ढेले से पोंछना।

इस्तिरदाद- पुं० (अ०) रद्द करने की क्रिया, निरसन।

इस्तिलाह- स्त्री० (अ०) बहु० इस्तिलाहत। किसी शब्द का साधारण अर्थ से भिन्न और विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होना, परिभाषा।

इस्तिलाही- वि० (अ०) इस्तिलाह या परिभाषा-सम्बन्धी, पारिभाषिक।

इस्तिस्ना- स्त्री० दे० 'इस्तस्ना'।

इस्तीफा- पुं० (अ० इस्तिफा) १ नौकरी छोड़ना, पदत्याग। २ त्यागपत्र।

इस्तीसाल- पुं० (अ०) जड़से उखाड़ना, नष्ट करना।

इस्तेदाद- (अ० इस्तिअदाद) १ सामर्थ्य, शक्ति। २ विद्या-सम्बन्धी योग्यता, ज्ञान। ३ दक्षता, निपुणता।

इस्तेमाल- पुं० (अ० इस्तअमाल) प्रयोग, उपयोग।

इस्तेमाली- वि० (अ० इस्तअमाल) १ इस्तेमाल किया हुआ, पुराना। २ काम में लाया जाने वाला। ३ प्रचलित।

इस्तेहकाक़- पुं० (अ०) १ हक, अधिकार। २ दावा।

इस्तेहकाम- पुं० (अ०) पुष्टिकरण, पुष्टि।

इस्पगोल- पुं० (फा०) एक पौधे के गोल बीज जो दवा के काम में आते है, इसबगोल।

इस्म- पुं० (अ०) १ नाम, संज्ञा। २ (व्याकरणमें) संज्ञा। यौ०-इस्म-बा-मुसम्मा = यथा नाम, तथा गुण।

इस्मत- स्त्री० (अ०) पातिव्रत्य, सतीत्व।

इस्मतदर- वि० (अ०+फा०) सतीत्व हरण करनेवाला, बलात्कारी।
इसमतदरी- स्त्री० (अ०+फा०) सतीत्व हरण, बलात्कार।
इस्मतफरोश- वि० (अ०+फा०) इस्मत बेचने वाली (वेश्या)।
इस्मनवीसी- स्त्री० (अ०+फा०) १ लोगों के नाम लिखना। २ अदालत में अपने गवाहों की सूची उपस्थित करना।
इस्मवार- वि० (अ०+फा०) एक-एक नाम के साथ (दिया हुआ विवरण आदि)।
इस्मा- पुं० अ० 'इस्म' का बहु०।
इस्मेअदद-पुं० (अ०) संख्यावाचक विशेषण।
इस्मे आज़म-पुं० (अ०) ईश्वर का नाम जिसके उच्चारण से शैतान और भूत-प्रेत दूर रहते हैं।
इस्मे-ज़मीर- पुं० (अ०) व्याकरण में सर्वनाम।
इस्में जलाली- पुं० (अ०) ईश्वर का नाम।
इस्में-फरज़ी-पुं० (अ०) फरजी या कल्पित नाम।
इस्मे-फायल-पुं० (अ०) व्याकरण में कर्त्ता।
इस्मे सिफत- पुं० (अ०) व्याकरण में विशेषण।
इस्लाम- पुं० (अ० वि० इस्लामी) १ ईश्वर के मार्ग में प्राण देने को प्रस्तुत होना। २ मुसलमानों का मत या धर्म। ३ मुसलमान होना।
इस्लाह- स्त्री० (अ०) १ किसी लेख, काव्य या इसी प्रकार के दूसरे कामों में किया जानेवाल सुधार, संशोधन। २ गाल और ठोड़ी पर के बाल। मुहा०- इस्लाह बनाना= हजामत बनाना।
ई- सर्व० (फा०) यह।
ईज़द- पुं० (फा०) ईश्वर।
ईजदी- वि० (फा० ईजिदी) ईश्वरीय, परमात्मा का।
ईज़ा- स्त्री० (अ०) दुःख, कष्ट, पीड़ा, तकलीफ।
ईजाद- स्त्री० (अ०) नई बात पैदा करना या पता लगाकर निकालना, आविष्कार।
ईजाब- पुं० (अ०) १ प्रस्ताव। २ प्रार्थना। यौ०- ईजाब व क़बूल= प्रार्थना और उसकी स्वीकृति।
ईज़िद- पुं० (फा०) ईश्वर।
इज़िदी- वि० (फा०) ईश्वरीय।
ईद- स्त्री० (अ०) १ मुसलमानों का एक प्रसिद्ध त्योहार। २ प्रसन्नता और आनन्द का दिन, शुभ दिन, त्योहार। मुहा०= ईद का चाँद होना= बहुत कम दिखाई पड़ना या भेंट करना।
ईद-उल-जुहा- स्त्री० (अ०) मुसलमानों का बकरीद नामक त्योहार।
ईद-उल-फितर- स्त्री० (अ०) मुसलमानों का ईद नामक त्योहार।
ईदगाह- स्त्री० (अ०+फा०) वह विशिष्ट स्थान जहाँ ईद के दिन सब मुसलमान एकत्र होकर नमाज़ पढ़ते हैं।
ईदी- स्त्री० (अ०) ईद के दिन दिया जाने वाला उपहार या पुरस्कार।
ईफा- पुं० (अ०) १ वचन का पालन। २ भुगतान, देना, चुकाना। यौ०- ईफ़ाए क़ौल= वचन का पालन।
ईमा- पुं० (अ०) इशारा, संकेत।
ईमान- पुं० (अ०) १ धर्मसम्बन्धी विश्वास, आस्तिक्य बुद्धि। २ चित्त की उत्तम वृत्ति, अच्छी नीयत। ३ धर्म। ४ सत्य।
ईमानदार - पुं० (अ०+फा०) १ धर्म पर विश्वास रखने वाला। २ विश्वासपात्र, दयानतदार । ३ लेन-देन या व्यवहार में सच्चा। ४ सत्य और न्यायका पक्षपाती।
ईमानदारी - स्त्री० (अ०+फा०) ईमानदार होने की क्रिया या भाव।
ईरान - पुं० (फा०) फारस देश।
ईरानी - पुं० (फा०) १ ईरानका निवासी स्त्री० ईरान की भाषा। वि० ईरान का।
ईसवी- वि० (अ०) ईसा सम्बन्धी, ईसाका। जैसे- सन् १९३६ ईसवी।

ईसा - पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध महात्मा जो ईसाई धर्म के प्रवर्तक थे, क्राइस्ट।

ईसाई- पुं० (अ०) ईसा के चलाये हुए धर्म को मानने वाला, क्रिस्तान।

ईसार - पुं० (अ०) १ ग्रहण करना। २ बुजुर्गी, बड़प्पन। ३ त्याग और तपस्या।

उक़बा - पुं० (अ० उकबा) १ सृष्टिका अन्तिम काल। २ परलोक।

उक़ला - पुं० (अ० उक्लः अक़ील का बहु०) बुद्धिमान लोग।

उकाब- पुं० (अ०) गिद्ध पक्षी।

उक्दा - पुं० (अ० उक्दः) १ गिरह, गाँठ। २ गूढ़ विषय, मुश्किल बात जो जल्दी समझमें न आवे, कठिन समस्या।

उक्दा-कुशा- वि० (अ०+फा०) (सं० उक्दा-कुशाई) १ कठिन समस्याओंकी मीमांसा करने वाला। २ ईश्वरका एक विशेषण।

उज़बक - पुं० (तु० उज्बक) तातारियों की एक जाति। वि० मूर्ख, उजड्ड, गँवार।

उजरत - स्त्री० (अ० उज्रत) १ बदला, एवज। २ मजदूरी, पारिश्रमिक। यौ०- उजरते नक़ल= नकल (प्रतिलिपि) का पारिश्रमिक।

उजलत- स्त्री० (अ० उज्लत) शीघ्रता, जल्दी।

उज्म- पुं० (अ०) बड़प्पन। बुजुर्गी, बड़ापन।

उज्मा- पुं० (अ० 'अजीम' का बहु०) बुजुर्ग या बड़े लोग।

उज्र- पुं० (अ० बहु० उज्रात) १ आपत्ति, विरोध। २ किसी बातके विरुद्ध विनयपूर्वक कुछ कहना। ३ बहाना। ४ क्षमा-याचना। यौ०- उज्र माज़रत = क्षमा-प्रार्थना।

उज्रदार- वि० (अ० + फा०) (सं० उज्रदारी) उज्र करने वाला, आपत्तिकर्ता।

उज्रदारान- पुं० (अ० उज्रदार का बहु०) आपत्ति करने वाले लोग।

उज्रदारी- स्त्री० (अ०+फा०) १ आपत्ति। २ आपत्ति-पत्र।

उज़बेगी - पुं० (अ०) वह अधिकारी जो बादशाहों के सामने लोगोंके प्रार्थना-पत्र उपस्थित करता हो।

उतारिद- पुं० (अ०) बुध ग्रह।

उदूल - पुं० (अ०) १ मार्गच्युत होना। २ विमुख होना। ३ न मानना। जैसे- उदूल-हुक्मी= आज्ञा न मानना, आज्ञा का उल्लंघन।

उनवान- पुं० (अ० उन्वान) शीर्षक।

उन्क़ा- पुं० (अ०) एक कल्पित पक्षी। वि० १ अप्राप्य। २ दुष्प्राप्य।

उन्नाब- पुं० (अ०) एक प्रकार का बेर जो औषधों के काम में आता है।

उन्नाबी- पुं० (अ०) एक प्रकार का गहरा लाल रंग। वि० गहरे लाल रंग का।

उन्वान- पुं० (अ०) शीर्षक।

उन्स- पुं० (अ०) प्यार। प्रेम।

उन्सर- पुं० (अ०) मूल-तत्व।

उन्सरी- वि०(अ०) मूल-तत्व-सम्बन्धी।

उफ- अव्य० (अ०) १ दुःख या कष्टसूचक अव्यय। मुहा०- उफ तक न करना = बहुत कष्ट पहुँचने पर भी चूँ तक न करना। २ आश्चर्यसूचक अव्यय।

उफक़- पुं० दे० 'उफुक़'।

उफनूत- स्त्री० (अ०) दुर्गंध।

उफुक़- पुं० (अ०) आस्मान का किनारा, क्षितिज।

उफ्ताँ व खेज़ाँ- क्रि० वि० (फा०) बहुत कठिनता से उठते-बैठते हुए, गिरते-पड़ते।

उफ्ताद- स्त्री० (फा०) विपत्ति, मुसीबत।

उफ्तादा- वि० (अ० उफ्तादः)(सं० उफ्तादगी) १ खाली पड़ा हुआ। २ बिना जोता-बोया (खेत आदि)। ३ गिरा पड़ा। ४ विपत्तिग्रस्त, मुसीबत का मारा।

उबूर-पुं० (अ०) १ किसी रास्ते से होकर जाना। २ नदी या समुद्र आदि को पार करना। यौ०- उबूर दरियाए शोर= द्वीपान्तर, कालापानी। ३ पारदर्शिता, पारंगतता।

उमक़ - पुं० (अ० उमुक़) गहराई,

गम्भीरता।
उमरा- पुं० (अ०) 'अमीर' का बहु०।
उमीद- स्त्री० = उम्मीद।
उमूमन- क्रि० वि० दे० 'अमूमन्'।
उमूमियत- स्त्री० (अ०) साधारणता, सामान्यता।
उमूर- पुं० (अ० अम्र का बहु० रूप) विषय। यौ०- उमूरे अहम= आवश्यक विषय।
उमूरात- पुं० दे० 'उमूर'।
उम्दगी- स्त्री० (अ०) उम्दा होने का भाव, अच्छाई, बढ़ियापन।
उम्दा- वि० (अ० उम्दः) अच्छा, बढ़िया, उच्च कोटि का।
उम्म- स्त्री० (अ०) माता, माँ।
उम्म-उल्-सिबियाँ- स्त्री० (अ०) १ बच्चों की माता। २ शैतान की पत्नी। ३ एक प्रकार की मिरगी (रोग)।
उम्मत- स्त्री० (अ०) किसी धर्म विशेषतः पैगम्बरी धर्म के समस्त अनुयायी। जैसे- मुसलमान, यहूदी आदि।मुहा०- छोटी उम्मत= १ वर्णसंकर जाति। २ नीच जाति।
उम्मती- पुं० (अ०) किसी उम्मत या पैगम्बरी धर्म का अनुयायी व्यक्ति। यौ०- लाउम्मती= वह जो किसी धर्म को न मानता हो। नास्तिक।
उम्मी- पुं० (अ०) १ वह जिसका पिता बचपन में मर गया हो और जिसका पालन-पोषण केवल माता या दाई ने किया हो। २ अशिक्षित। ३ मुहम्मद साहब जिन्होंने किसी से शिक्षा नहीं पाई थी। ४ वह जो किसी उम्मत में हो, किसी धर्म विशेषतः पैगम्बरी धर्म का अनुयायी।
उम्मीद- स्त्री० (फा०) आशा, भरोसा, आसरा।
उम्मीदवार- पुं० (फा०) १ आसा या आसरा रखनेवाला। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ्तर में बिना तनख्वाह काम करनेवाला ३ किसी पद पर चुने जाने के लिए खड़ा होनेवाला आदमी, प्रत्याशी।
उम्मीदवारी- स्त्री० (फा०) १ आशा, आसरा। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना तनख्वाह काम करना। ३ स्त्री के प्रसव होने की आशा।
उम्र- स्त्री० (अ०) १ अवस्था, वयस। २ जीवनकाल, आयु।
उम्रक़ैद- पुं० (अ०) आजीवन कारावास।
उम्रतवई- स्त्री० (अ०) मनुष्य का स्वाभाविक जीवन- काल जो अरबों में १२० वर्ष माना जाता था।
उरदाबेगनी- स्त्री० (तु० उर्दबिग) वह स्त्री जो राजमहलों में सशस्त्र होकर पहरा दे।
उरियाँ- वि० (अ०) नंगा, नग्न।
उरियानी- स्त्री० (फा०) नंगापन, नग्नता, विवस्त्रता।
उरूज- पुं० (अ०) १ ऊपर की ओर चढ़ना,उत्थान। २ उन्नति। ३ शीर्षबिन्दु। ४ विकास।
उरूस- पुं० (अ०) दूल्हा। स्त्री० दुलहिन, वधू (अधिकतर वधू के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है।)
उरूसी- स्त्री० (अ०) निकाह की पद्धति से होने वाला विवाह।
उरेब- वि० (फा०) १ टेढ़ा । २ तिरछा। धूर्त्तता-पूर्ण, चालाकी का।
उर्दी-स्त्री० (फा०) फारसी वर्ष का दूसरा महीना।
उर्दू- स्त्री० (तु०) १ लश्कर या छावनी का बाजार। २ वह बाजार जहाँ सब तरह की चीजें बिकती हों। ३ हिंदी भाषा का वह रूप जिसमें अरबी, फारसी और तुर्की आदि के शब्द अधिक हों और जो फारसी लिपि में लिखी जाय।
उर्दू-ए-मुअल्ला- स्त्री० (तु०+अ०) १ लश्कर की छावनी। २ कचहरी या राज दरबार की भाषा। ३ उच्च कोटि की और परिष्कृत उर्दू भाषा।
उर्फ़- पुं० (अ०) उपनाम।
उर्फ़ी- वि० (अ०) प्रसिद्ध, मशहूर।
उर्स- पु० (अ०) १ विवाह आदि अवसरों

पर होने वाला भोजन। २ वह भोजन जो किसी की मरण-तिथि पर लोगों को दिया जाय। ३ मरण-तिथि पर होने वाला उत्सव

उलफत- स्त्री० (अ० उल्फत) (वि० उलफती) १ प्रेम, प्यार, मुहब्बत। २ दोस्ती, मित्रता।

उलबी- वि० (अ०) स्वर्ग या आकाश से सम्बन्ध रखने वाला।

उलमा- पुं० (अ० उल्मा) 'आलिम' का बहु० विद्वान् लोग।

उलुग्र- पुं० (अ०) महापुरुष, बड़ा बुजुर्ग।

उलूम- पुं० (अ०) 'इल्म' का बहु०।

उल्-उल्-अज्म- वि० (अ०) हौसलेमन्द, साहसी।

उल्-उल्-अज्मी- स्त्री० (अ०) ऊँचा हौसला, बड़ा साहस।

उल्फत- स्त्री० (अ०) प्रेम, प्यार, मुहब्बत।

उशबा- पुं० (फा० उशबः) खून साफ करने की एक प्रसिद्ध दवा।

उश्तुर- पुं० (फा० मि० सं० उष्ट्र) ऊँट।

उश्शाक़- पुं० (अ०) 'आशिक़' का बहु०।

उसलूब- पुं० (अ० उस्लूब) तरीक़ा, ढंग। यौ०- खुश-उसलूब= जिसके तौर या ढंग अच्छे हों।

उसूल- पुं० (अ०) सिद्धान्त।

उस्तख्वाँ (न)- पुं० (फा०) हड्डी, हाड़, अस्थि।

उस्तरा- पुं० (फा० उस्तुरः) बाल मूँड़ने का औजार, छुरा, अस्तुरा।

उस्तवा- पुं० (अ० इस्तिवा) समतल होने का भाव, हमवारी, बराबरी। यौ०- खते उस्तवा (इस्तवा)= भूमध्य-रेखा, विषुवत्-रेखा।

उस्तवार- वि० (फा० उस्तुवार) १ पक्का, दृढ़, मजबूत। २ समतल, हमवार। ३ सीधा, सरल।

उस्तवारी- स्त्री० (फा० उस्तुवारी) १ दृढ़ता, मजबूती। २ समतल होने का भाव, हमवारी। ३ सरलता, सिधाई।

उस्ताद- पुं० (फा०) गुरु, शिक्षक, अध्यापक।

उस्तादी- स्त्री० (फा०) १ शिक्षक की वृत्ति, गुरुआई। २ चतुराई। ३ विज्ञता। ४ चालाकी, धूर्तता।

उस्तुरलाब- स्त्री० (यू०) नक्षत्रयंत्र।

उस्तुवार- वि० (फा०) स्थायी।

उस्तुवारी- स्त्री० (फा०) स्थायित्व।

उस्तून- पुं० (अ०) खंभा।

ऊद- पुं० (अ०) अगर नामक सुगंधित लकड़ी।

ऊदा- वि० (अ०) ऊद या अगर-सम्बन्धी, अगर का।

ऊदा-सोज़- पुं० (अ०+फा०) वह पात्र जिसमें रखकर सुगन्धि के लिये ऊद या अगर जलाते हैं।

ऊर- वि० (फा०) नंगा।

ऊरी- स्त्री० (फा०) नंगापन।

एआनत- स्त्री० (अ०) सहायता, मदद।

एजाज़- पुं० दे० 'ऐजाज़'।

एतक़ाद- पुं० (अ० एतिक़ाद) पक्का विश्वास, पूरा एतबार।

एतक़ाफ- पुं० (अ० एतिकाफ) संसार से सम्बन्ध छोड़कर मसजिद में एकान्तवास करना।

एतदाल- पुं० (अ० एतिदाल) १ मध्यम मार्ग। २ संयम, परहेज।

एतनाई- स्त्री० (अ० एअतिनाऽ) १ सहानुभूति दिखलाना। २ दया करना। यौ०- बे-एतनाई= सहानुभूति का अभाव, उदासीनता, लापरवाही।

एतबार- पुं० (अ० एतिबार) विश्वास, प्रतीति।

एतबारी- वि० (अ०) जिस पर एतबार किया जाय, विश्वसनीय।

एतमाद- पुं० (अ० एतिमाद) (वि० एतिमादी) १ विश्वास। २ भरोसा, निर्भरता।

एतराज़- पुं० (अ० एतिराज) (बहु० एतराजात) १ सन्देह, शंका, शक। २ आपत्ति, उज्र।

एतराफ़- पुं० (अ० एतिराफ) इकरार करना, मानना।
एलची- पुं० (तु०) राजदूत।
एलचीगीरी- स्त्री० (तु०+फा०) एलची का कान या पद, राजदूत।
एलान- पुं० (अ०) घोषणा, उद्घोष।
एवज़- (अ०) जो किसी के बदलें में या स्थानपर हो, स्थानापन्न। पुं० प्रतिफल। यौ०- एवज़-मुआवज़ा= १ अदला-बदली। २ बदला, प्रतिकार।
एवज़ी- वि० (अ०) किसी के एवज में या स्थान पर काम करने वाला, स्थानापन्न।
एहतमाम- पुं० (अ० एहतिमाम) १ प्रयत्न, कोशिश। २ प्रबन्ध, व्यवस्था, इन्तजाम। ३ निरीक्षण, देखरेख। ४ अधिकार-क्षेत्र।
एहतमाल- पुं० (अ० एहतिमाल) (वि० एहतमाली) १ बरदाश्त करना। २ बोझ उठाना। ३ गुमान, आशंका, भय।
एहतराज़- पुं० (अ० एहतिराज) अलग या दूर रहना, बचना।
एहतराम- पुं० (अ० एहतिराम) आदर, सम्मान।
एहतशाम- पुं० (अ० एहतिशाम) १ प्रतिष्ठा। २ वैभव। ३ शान-शौकत।
एहतसाब- पुं० (अ० एहतिसाब) १ हिसाब लगाना, गणना करना। २ प्रजा की रक्षा की व्यवस्था। ३ परीक्षा, आजमाइश करना।
एहतियाज- पुं० (अ० इहतियाज) हाजत या आवश्यकता होना।
एहतियात- स्त्री० (अ० इहतियात) १ गुनाह या पाप से बचाना, बुरे या अनुचित काम से बचाना, परहेज करना। २ रक्षा, बचाव। ३ सचेत रहने की क्रिया, सतर्कता, चौकसी।
एहतियातन- क्रि० वि० (अ०) एहतियात के खयाल से, सतर्कता के विचार से।
एहमाल- पुं० (अ०) ध्यान न देना, उपेक्षा करना।
एहमाली- वि० (अ०) १ ध्यान न देनेवाला। २ निकम्मा, सुस्त।
एहसान- पुं० (अ०) १ किसी के साथ की हुई नेकी, उपकार। २ कृतज्ञता, निहोरा।
एहसानफरामोश- पुं० (अ०+फा०) एहसान या उपकार को भुला देनेवाला, कृतघ्न।
एहसान-फरामोशी- स्त्री० (अ०+फा०) कृतघ्नता।
एहसानमन्द- वि० (अ०+फा०) एहसान या उपकार माननेवाला, कृतज्ञ।
एहसास- पुं० (अ०) १ अनुभव। २ अनुभूति। ३ ज्ञान।
ऐज़न- वि० (अ०) जैसा ऊपर है, वैसा ही, वही, उक्त।
ऐजाज़- पुं० (अ० इअजाज) १ आजिज करना, परेशान करना। २ किसी महात्मा का वह अद्भुत कार्य जिसे देखकर सब लोग दंग रह जायँ, करामात, मोअजिज़ा।
ऐजाज़- पुं० (अ० इअजाज) इज्जत, सम्मान, आदर।
ऐदाद- स्त्री० (अ० अअदाद) 'अदद' का बहु०, संख्याएँ।
ऐन- स्त्री० (अ० मि० सं० अयन) आँख, नेत्र। वि० (अ०) १ ठीक, उपयुक्त, सटीक। २ बिलकुल, पूरापूरा।
ऐनउल्माल- पुं० (अ०) १ मूलधन, पूँजी। २ खर्च आदि बाद देकर होनेवाला लाभ। ३ भूमिकर, मालगुजारी।
ऐनक- स्त्री० (अ०) आँखोंपर लगाने का चश्मा, उप-चक्षु।
ऐनवक्त- क्रि० वि० (अ०) ठीक समय पर।
ऐब- पुं० (अ०) (बहु० अयूब) १ दोष, अवगुण। २ बुराई, खराबी।
ऐबक- पुं० (फा०) १ प्रिय, प्यारा। २ दास, सेवक। ३ दूत, हरकारा।
ऐबगो- वि० (अ०+फा०) दूसरों की निन्दा करनेवाला।
ऐबगोई- स्त्री० (अ०+फा०) दूसरों की निन्दा करना।
ऐबजो- वि० (अ०+फा०) दूसरों के ऐब ढूँढनेवाला।
ऐबजोई- स्त्री० (अ०+फा०) दूसरों के ऐब

ढूँढना।
ऐबदार- वि० दे० 'ऐबी'।
ऐबपोश- पुं० (अ०+फा०) किसी के दोषों को छिपाने वाला।
ऐबपोशी- स्त्री० (अ०+फा०) दूसरों के दोषों को छिपाना।
ऐबी- वि० (अ० ऐब) जिसमें कोई ऐब या दोष हो।
ऐमाल- पु० (अ०) "अमल" का बहु०। कार्य-समूह। कृत्य। कार्रवाइयाँ।
ऐमालनामा- पुं० (अ०+फा०) वह बही जिसमें लोगों के भले और बुरे कार्य लिखे जाएँ।
ऐयाम- पुं० (अ० यौमका बहु०) १ दिन। २ फसल। ऋतु।
ऐयार- पुं० (अ०) १ बहुत बड़ा धूर्त्त और चालाक। २ वह जो भेस बदलकर चालाकी से काम निकाले।
ऐयारी- स्त्री० (अ०) १ ऐयार का काम या पेशा। २ धूर्त्तता।
ऐयाश- पुं० (अ०) १ वह जो बहुत ऐश करे। २ कामुक, लंपट।
ऐयाशी- स्त्री० (अ०) भोग-विलास, कामुकता, लंपटता।
ऐराफ- पुं० (अ०) एक दीवार जो मुसलमान स्वर्ग और नरक के बीचमें मानते हैं।
ऐराब- पुं० (अ० इअराब) अरबी लिपि में अ, इ, उ के सूचक चिह्न या मात्राएँ जो अक्षरों के ऊपर-नीचे लगती हैं, लग-मात।
ऐलान- पुं० (अ० इअलान) १ राजाज्ञा। २ घोषणा। ३ मुनादी।
ऐलाम- पु० (अ० अअलाम) घोषणा। यौ०- ऐलामनामा= घोषणापत्र।
ऐवान- पुं० (फा०) राजप्रासाद, महल।
ऐश- पुं० (अ०) १ आराम, चैन। २ भोग-विलास। यौ०- ऐश व इशरत= भोग-विलास।
ऐसाब- पुं० (अ० अअसाब) शरीरके रंग, पट्ठे।
ऐसार- पुं० (अ०) धनवान् या सम्पन्न होना।
ओहदा- पुं० (अ० ओहदः) पद।
ओहदेदार- पुं० (अ०+फा०) किसी अच्छे पदपर काम करने वाला।
औक़ात- स्त्री० (अ० "वक्त" का बहु०)। १ वक्त। २ समय। ३ सामर्थ्य। ४ मर्यादा। मुहा०- औक़ात बसर करना= १ समय व्यतीत करना। २ निर्वाह करना, जीविका चलाना।
औक़ातबसरी- स्त्री० (अ०+फा०) १ समय व्यतीत करना। २ जीविका का साधन।
औज- पुं० (अ०) १ शीर्ष बिन्दु। २ सबसे ऊँचा पद। ३ ऊँचाई।
औज़ान- पुं० (अ० वजन का बहु०) १ तौल। २ बाट।
औज़ार- पुं० (अ०) वे यंत्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं, उपकरण, हथियार।
औबाश- पुं० (अ०) कमीना, लुच्चा, बदमाश, आवारा।
ओबाशी- स्त्री० (अ०) लुच्चापन, आवारगी।
औरंग- पुं० (फा०) १ राजसिंहासन। २ बुद्धि, समझ। ३ छल, कपट। ४ दीपक।
औरंगजेब- पुं० (फा०) १ वह जिससे राजसिंहासन की शोभा हो। २ एक प्रसिद्ध मुगलसम्राट्।
औरत- स्त्री० (अ०) १ स्त्री, महिला। २ पत्नी, । जोरू।
औराक़- पुं० (अ०) 'वर्क़' का बहु०।
औरात- स्त्री० (अ० औरत का बहु०) औरतें।
औला- वि० (अ०) सबसे बढ़कर। श्रेष्ठ।
औलाद- स्त्री० (अ०) १ संतान, संतति। २ वंश-परम्परा, नस्ल।
औलिया- पुं० (अ० 'वली' का बहु०) संत और महात्मा लोग।
औवल- वि० दे० 'अव्वल'।
औसत- स्त्री० (अ०) बराबर का परता

समष्टि का समविभाग।
औसान- पुं० (अ०) १ शान्ति। २ समझ। ३ होश-हवास। मुहा०- औसान खता होना= होश-हवास ठिकाने न रह जाना।
औसाफ- पुं० (अ० 'वस्फ' का बहु०) गुण, खासियत, खूबी।
(क)
कंगुरा-पुं० (फा० कंगूरः) १ शिखर। चोटी। २ किलेकी दीवार में थोड़ी थोड़ी दूरपर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँसे सिपाही खड़े होकर लड़ते हैं। बुर्ज। २ कँगूरेके आकार का छोटा रवा (गहनों में)।
कंदील- स्त्री० (फा०) दिया, दीपक।
कअब- पुं० (अ०) १ किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से आने वाला गुणन-फल। घन। २ लम्बाई, चौड़ाई और गहराई या मुटाई का विस्तार। ३ जुआ खेलने का पाँसा।
क़अर- पुं० (अ०) १ गहराई। गम्भीरता। २ खाड़ी। ३ गड्ढा।
कचकोल- स्त्री० दे० 'कजकोल'
कज- पुं० (फा०) टेढ़ापन। वक्रता। वि० टेढ़ा। वक्र।
कजक-पुं० (फा०) हाथी चलानेका अंकुश।
कजकोल- स्त्री० (फा०) १ भिक्षापात्र। २ वह पुस्तक जिसमें दूसरोंकी अच्छी उक्तियोंका संग्रह हो।
कजखुल्क़- वि० (फा०) (सं० कजखुल्क़ी) कठोर स्वभाववाला। खराब मिजाज का।
कजनिहाद- वि० (फा०) (सं० कज-निहादी) दुष्ट स्वभाव वाला।
कजफहम- वि० (फा०) (सं० कजफहमी) हर बात का उल्टा अर्थ लगाने वाला।
कजबहस- स्त्री० (फा०+अ०) व्यर्थ हुज्जत या बहस करनेवाला। कठहुज्जती। सं० स्त्री० व्यर्थकी बहस। हुज्जत।
कजबीं- वि० (फा०) (सं० कजबीनी) हर बात को टेढ़ी या बुरी दृष्टि से देखने वाला।
कजमिज़ाज- वि० (फा०+अ०) टेढ़े स्वभाव वाला।
कजरफ्तार- वि० (फा०) टेढ़ा-मेढ़ा चलनेवाला। वक्र-गति वाला।
कज-रफ्तारी- स्त्री० (फा०) टेढ़ी-मेढ़ी चाल। वक्र-गति।
कजरवी- स्त्री० दे० "कजरफ्तारी"।
कजरौ- वि० दे० "कज-रफ्तार"।
कज़लवाश-पुं० (तु०) १ सैनिक। योद्धा। २ मुग़लों की एक जाति।
क़ज़ा- स्त्री० (अ०) १ मृत्यु। मौत। २ भाग्य। किस्मत। यौ०- क़ज़ा व क़द्र= भाग्य। किस्मत। ३ सम्पन्न अथवा पालन करना। ४ उचित समय पर होने से छूट जाना। रह जाना। नागा।
क़ज़ा-ए-इलाही- स्त्री० (अ०) स्वाभाविक रूप में होने वाली मृत्यु।
क़ज़ाए-नागहानी- स्त्री० (अ०+फा०) आकस्मिक मृत्यु।
क़ज़ा-ए-हाजत- स्त्री० (अ०) मल-मूत्र आदि का परित्याग।
क़ज़ाकार- क्रि० वि० (अ०+फा०)१ संयोग से। इत्तिफाक से। २ अचानक।
क़ज़ात- स्त्री० (अ०) १ काजीका कार्य या पद। २ झगड़ा। टंटा।
क़ज़ारा- क्रि० वि० (फा०) १ अचानक। सहसा। २ संयोग से। इत्तिफाकसे।
क़ज़ा-व-क़द्र- स्त्री० (अ०) १ भाग्य। किस्मत। २ भाग्य और सामर्थ्यके देवदूत।
कजावा- पुं० (फा० कजावः) ऊँटकी काठी।
क़ज़िया- पुं० (अ० क़ज़ियः) १ विवादास्पद विषय। झगड़ा। २ मुकदमा। व्यवहार। मुहा०- क़ज़िया पाक होना= विवादका अन्त होना।
कजी- स्त्री० (फा० कज) टेढ़ापन। वक्रता।
क़ज़ीब-सभा- पुं० (अ०) १ वृक्षकी शाखा। २ तलवार। ३ कोड़ा। ४ पुरुषकी इन्द्रिय। लिंग।
क़ज़्ज़ाक- पुं० (तु०) डाकू। लूटेरा।
क़ज़्ज़ाकी- स्त्री० (अ०) लुटेरापन। वि०

लुटेरोंका-सा।

क़त्- पुं० (अ०) कोई चीज़ विशेषतः कलम की नोक तिरछी करना। २ कलम का अगला भाग। ३ कागज़का मोड़। स्त्री० (अ० क़तऽ) १ खण्ड। भाग। २ काटना। यौ०- क़ता-बुरीद= काँट-छाँट। ३ बनावट। तराश।

क़तअन्- अव्य० (अ० क़त्अन) हरगिज़। कदापि।

क़तई- वि० (अ०) अन्तिम। आखिरी। जैसे-क़तई फैसला, क़तई हुकुम।

क़तईग़ज़- क्रि० वि० (अ०) बिल्कुल। पुं० (अ०+फा०) दरजियों का गज।

कतखुदा- पुं० (फा०) घरका मालिक। गृहस्वामी। वि० विवाहित।

कतखुदाई- स्त्री० (फा०) विवाह। शादी। ब्याह।

क़तग़ीर- पुं० दे० "क़तज़न"।

क़तज़न- पुं० (अ०+फा०) हड्डी या लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर कलम का क़त काटते हैं।

क़तब- पुं० (अ० क़तबः) लेख।

क़तरा- पुं० (अ० क़त्रः) (बहु० क़तरात) १ पानी आदि की बूँद। यौ०- क़तरा अश्क= आँसू की बूँद। २ टुकड़ा। खंड।

क़तरात- पुं० (अ० क़त्रात) "क़तरा" का बहु०।

क़तल- पुं० दे० "क़त्ल"।

क़तला- पुं० (अ० क़तलः) १ टुकड़ा। खंड। २ फाँक।

क़ता- वि० (अ० क़तऽ) १ कटा या काटा हुआ। स्त्री० (अ० क़तऽ) १ विभाग। खंड। २ बनावट। ३ शैली। ढंग। यौ०- क़तादार= अच्छी बनावट का। स्त्री० दे० "क़िता"।

क़ता-कलाम- पु० (अ० क़तऽ+कलाम) बात काटना। किसीको बोलने से रोककर स्वयं कुछ कहने लगना।

क़तानज़र- क्रि० वि० (अ०) अलावा। सिवा। अतिरिक्त।

क़तादार- वि० (अ०+फा०) जिसकी क़ता या बनावट अच्छी हो।

क़तान- पुं० (फा०) १ अलसी नामक पौधा। २ एक प्रकार की बहुत महीन मलमल। कहते हैं कि यह चन्द्रमा की चाँदनी में रखने पर टुकड़े-टुकड़े हो जाती है। ३ एक प्रकारका बढ़िया रेशमी कपड़ा।

क़तार- स्त्री० (अ० क़ितार) पंक्ति। श्रेणी।

क़तारा- पुं० (फा० कतारः) कटारी।

क़तील- वि० (अ०) जो कत्ल किया या मार डाला गया हो। निहत।

क़त्तमा- स्त्री० (अ० कत्तामः) १ बहुत अधिक विलासिनी स्त्री। २ दुश्चरित्रा। पुंश्चली। छिनाल। कुलटा।

क़त्ताल- वि० (अ०) बहुतसे लोगों को कत्ल करने या मार डालने वाला।

क़त्ल- पुं० (अ०) हत्या। वध। यौ०- क़त्ल की रात= वह रात जिसके सबेरे हसन और हुसैन मारे गये थे। मुहर्रम की नवीं तारीख़।

कत्ले अम्द= सोच विचार कर किया हुआ वध।

क़त्ल-गाह- स्त्री० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ लोग क़त्ल किये या फाँसी पर चढ़ाये जाते हों।

क़त्लेआम- पुं० (अ०) सर्वसाधारण का वध। सर्वसंहार।

कद- स्त्री० (अ०) १ परिश्रम। २ आग्रह। ३ वैर। दुश्मनी। यौ०- कद्दो जद्द= बहुत अधिक परिश्रम। पुं० (फा०) मकान। घर।

क़द- पुं० (अ०) ऊंचाई। डील। यौ०- क़दे आदम= आदमीके बराबर ऊँचा। कद व क़ामत= डील-डौल। पस्ता क़द= नाटा। ठिंगना।

क़द-आवर- वि० (अ०+फा०) लंबे क़दवाला। लंबा।

क़दखुदा- पुं० (फा० कतखुदा) घरका मालिक। गृहस्वामी।

क़दखुदाई- स्त्री० (फा०) विवाह। शादी।

क़दम- पुं० (अ०) १ पैर। पांव। मुहा०- क़दम उठाना= १ तेज चलना। २ उन्नति करना। क़दम चूमना= अत्यंत आदर करना। क़दम छूना= १ प्रणाम करना। २ शपथ खाना। क़दम बढाना या क़दम आगे बढ़ाना= तेज चलना। क़दम-ब-क़दम चलना= १ अनुकरण करना। २ उन्नति करना। क़दम रंजा फरमाना= पदार्पण करना। जाना। क़दम रखना= प्रवेश करना। आना। यौ०- सब्ज क़दम= वह जिसके कहीं जाने पर खराबी ही खराबी हो। जिसका पौरा अच्छा न हो।

क़दमचा- पुं० (अ० क़दम+फा० प्रत्यय चः) पाखाने आदि में बना हुआ पैर रखने का स्थान।

क़दम-बाज़- वि० (अ०+फा० )वह घोड़ा जो कदम चले।

क़दम-बोस- वि० (अ०) बड़ों के पैर चूमने वाला।

क़दम-बोसी- स्त्री० (अ०) १ बड़ों के पैर चूमना। बड़ों की सेवा में उपस्थित होना।

क़दम-रसूल- पुं० (अ०) रसूल या मुहम्मद साहब के पद-चिह्न।

क़दम-शरीफ- पुं० (अ०) १क़दम-रसूल। २ शुभ चरण। ३ अशुभ चरण (व्यंग्य)।

क़दर- स्त्री० (अ० कद्र) १ मान। मात्रा। मिक़्दार। २ मान। प्रतिष्ठा। बड़ाई। यौ०- क़दर मंजिलत= प्रतिष्ठा और उत्तम स्थिति।

क़दरदाँ- वि० (अ० क़द्र+फा० दाँ) क़दर जानने या करने वाला। गुणग्राहक।

क़दरदानी- स्त्री० (अ० कद्र+फा० दानी) क़दर जानना या करना। गुण-ग्राहकता।

क़दर-शनास- वि० (अ० कद्र-शिनास) (सं० क़द्र-शनासी) क़दर समझने वाला। गुण-ग्राहक।

क़दरे- वि० (अ० क़द्रे) किसी क़दर। थोड़ासा। अल्प।

क़दरे-क़लील- वि० (अ० क़द्रेक़लील) थोडा-सा। अल्प।

क़दह- पुं० (अ० )१ प्याला। २ भिक्षा पात्र। ३ जिरह। ४ खंडन। यौ०- रद व क़दह= १ तर्क-वितर्क। कहा-सुनी। तकरार।

क़दा- पुं० (फा० कदः) मकान। घर। शाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में; जैसे- बुत-क़दाच, मै-क़दा।)

क़दामत- स्त्री० (अ०) क़दीम या पुराना होने का भाव। प्राचीनता।

क़दावर- वि० (फा०) ऊँचे कद वाला।

क़दीम- वि० (अ० बहु० कुद्मा) पुराना, पुरातन।

क़दीमी- वि० (अ० क़दीम) पुराना।

क़दीर- वि० (अ०) बलवान। शक्तिशाली।

कदू- पुं० (फा०) कद्दू या घीया नाम की तरकारी।

कदूरत- स्त्री० (अ०) १ गंदापन। मैलापन। २ मन-मुटाव। वैमनस्य।

क़दूस- पुं० (अ०) वह जो तलवार लेकर किसी का सामना करे।

क़दे-आदम- वि० (अ०) आदमी के बराबर ऊँचा। पुरसा-भर।

क़द्दावर- वि० (फा०) लंबा-तड़ंगा।

कद्दूकश- पुं० (फा० कदूकश) लोहे, पीतल आदि की छेददार चौकी जिसपर कद्दूको रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं।

क़द्र- पुं० (अ०) दे० 'क़दर'। (विशेप-'कद्र'के यौगिक शब्दों के लिये दे० 'क़दर'के यौगिक शब्द)।

कन- वि० (फा०) खोदने वाला। (प्राय:यौगिक शब्दों के अन्त में आता है। जैसे-गोर-कन, कान-कन।)

कनआन- पुं० (अ०) १ हजरत नूह के पुत्र का नाम जो काफिर था। एक प्राचीन नगर का नाम जहाँ हजरत याकूब रहते थे।

क़नाअत- स्त्री० (अ०) संतोष। सब्र।

कनात- स्त्री० (अ०) मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेर कर आड़ करते हैं।

कनाया -पुं० दे० "किनाया"।

कनीज़- स्त्री० (फा०) दासी। सेविका। लौंडी।
क़न्द- पुं० (फा०) १ चीनी। शक्कर। २ जमाई हुई चीनी। मिस्री। स्त्री० (अ०) चीनी। शर्करा। वि० बहुत मीठा।
कन्दन- पुं० (फा०) १ खोदना। २ खोदकर बेल-बूटे बनाना।
कन्दा- वि० (फा० कन्दः) १ खोदा हुआ। २ खोदकर बेल-बूटोंके रूप में बनाया हुआ। ३ छीला हुआ। जैसे- पोस्ते-कन्दा= जिसका छिलका उतारा गया हो।
कन्दाकार- वि० (फा०कन्दःकार) खोदकर बेलबूटे बनाने वाला।
क़न्दील- स्त्री० (अ०) मिट्टी,अबरक या काग़ज आदि की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।
कफ- पुं० (फा०) १ झाग। फेन। २ श्लेष्मा। स्त्री (फा० कफ्फ) हाथ की हथेली। ३ पैर का तलवा। मुहा०- कफे अफसोस मलना= पछता कर हाथ मलना।
कफगीर- पुं० (फा०) कलछी।
कफचा- पुं० (फा० कफचः) १ साँप का फन। २ कलछी।
कफन- पुं० (अ०) वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है। मुहा०- कफन को कौडी न होना या न रहना= अत्यन्त दरिद्र होना। कफन को कौडी न रखना= जो कमाना, वह सब खा लेना। कफन सरसे बाँधना= मरनेके लिये तैयार होना। क़फन फाड़कर बोलना= बहुत ज़ोर से चिल्ला कर बोलना।
कफनी- स्त्री० (फा०) १ वह कपडा जो मुर्दे के गले में डालते हैं। २ साधुओं के पहनने का कपड़ा।
क़फस- पुं० (अ०) १ पिंजडा जिसमें पक्षी रखे जाते हैं। २ शरीर का पिंजर। ३ शरीर।
कफारा- पुं० दे० "कफ्फारा"।
कफालत- स्त्री० (अ०) जमानत। यौ०- कफालत बिन नफ्स= वैयकति जमानत। कफालत बिन माल= जायदाद की ज़मानत।
क़फालतनामा- पुं० (अ०+फा० नामः) ज़मानतनामा।
कफील- (अ०) जमानत करने वाला। ज़ामिन।
कफे-पाई- स्त्री० (फा०) जूता।
कफ्फारा- पुं० (अ० कफ्फारः) पापों का प्रायश्चित्त।
कफ्श- पुं० (फा०) जूता। उपानह। पादत्राण।
कफ्शखाना- पु० दे० "ग़रीब-खाना।"
कफ्शे-पा- स्त्री० (फा०) जूता।
कबक- पुं० दे० "कब्क"।
क़बक- स्त्री दे० "क़ब्र"।
कबरिस्तान- पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं।
क़िबल- वि० (अ० क़ब्ल) पहले का पूर्वका। क्रि० वि०- पहले। पूर्व।
क़बा- पुं० (अ०) एक प्रकार का लम्बा ढीला पहनावा।
कबाब- पुं० (फा०) सीखो पर भूना हुआ मांस।
कबाब- स्त्री० (फा०) १ मिर्च की जाति की एक लिपटने वाली झाडी जिसके गोल फल खाने में कडुए और ठंडे मालूम होते हैं। २ इस लता का गोल फल या दाना।
कबाबी- पुं० (फा०) १ वह ज़ो कबाब बनाता या बेचता हो। २ मांसाहारी। जैसे- शराबीकबाबी। वि० कबाब संबंधी।
कबायल- पुं० (अ०) १ "कबीला" का बहुवचन। २ परिवार के लोग। बाल-बच्चे।
क़बाला- पुं० (अ० क़बालः) वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय, विक्रयपत्र, विपत्र।
कबाहत- स्त्री० (अ०) १ बुराई। खराबी। २ दिक्क़त। तरद्दुद।
कबीर- वि० (अ०) बड़ा। श्रेष्ठ।
कबीरा- पुं० (अ० कबीरः) बहुत बड़ा पाप।
क़बील- वि० (अ०) जाति। वर्ग।

क़बीला- पुं० (अ० क़बील: ) १ समूह। गिरोह। २ एक पूर्वज के सब वंशजों का समूह। एक खानदान के सब लोगों का वर्ग। ३ जोरू। पत्नी।

कबीसा- वि० (अ०कबीस: ) बीच में पड़ने वाला। यौ०- सालेकबीसा- वह वर्ष जिसमें अधिक मास हो। लौंद का साल।

क़बीह- वि० (अ०) बुरा। खराब।

कबूतर- पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध पक्षी। कपोत।

कबूतरखाना- पुं० (फा०) कबूतरों के रहने की जगह।

कबूतरबाज़- वि० (फा० )वह जो कबूतर पालता और उड़ाता हो।

कबूल- वि० (अ० कुबूल) स्वीकार। अंगीकार। मंजूर।

क़बूलना- क्रि० (अ० कुबूल) स्वीकार करना।

क़बूलसूरत- वि० (अ० कुबूलसूरत) सुन्दर आकृतिवाला।

क़बूलियत- स्त्री० (अ० कुबूलियत) वह दस्तावेज जो पट्टे की स्वीकृति में ठेका लेने वाले या पट्टा लिखने वाले को लिख दे।

कबूली- स्त्री० (अ० क़बूल) १ कबूल करने की क्रिया या भाव। २ चने की दाल और चावल की एक प्रकार खिचड़ी।

कब्क- पुं० (फा०) चकोर पक्षी।

कब्केदरी- पुं० दे० "कब्क।"

कब्करफ्तार- वि० (फा०) चकोर की तरह सुन्दर चाल से चलने वाला।

क़ब्ज़- पुं० (अ०) १ मलका रुकना। मलरोध। २ अधिकार।

क़ब्ज़-उल-वसूल- स्त्री० (अ०) प्राप्तिका सूचक पत्र। रसीद।

क़ब्ज़ा- पुं० (अ० कब्ज: ) १ मूठ। दस्ता। मुहा०- कब्जे पर हाथ डालना= तलवार खींचने के लिये मूठ पर हाथ ले जाना। २ किवाड़ या सन्दूक में जड़े जाने वाले लोहे या पीतल की चद्दर के बने हुए दो चौखूँटे टुकडे । ३ अधिकार। ४ भोग। यौ०- कब्ज़ए-बिल-जब्र= बलपूर्वक किया हुआ कब्ज़ा।

कब्ज़ादारी- स्त्री० (अ०+फा०) कब्ज़ा होने की अवस्था।

क़ब्ज़ियत- स्त्री (अ०) मल का पेट में रुकना। मलरोध। कोष्ठबद्धता।

क़ब्र- स्त्री (अ०) १ वह गढ्ढा जिसमें मुसलमानों और ईसाइयों आदिके मुर्दे गाड़े जाते हैं। २ वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है। मुहा०= क़ब्र में पैर लटकाना= मरने के करीब होना।

क़ब्रिस्तान- पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ शव गाड़े जाते हैं।

क़ब्ल- वि० (अ०) पहले, पूर्व।

कमंगर- पुं० (फा० कमानगर )कमान या धनुप बनाने वाला।

कमंगरी- स्त्री० (फा० कमान-गरी) १ कमान बनाने का पेशा या हुनर । २ हड्डी बैठाने का काम। ३ मुसीवरी।

कम- वि० (फा०) १ थोडा। अल्प। मुहा०- कम से कम= अधिक नहीं तो इतना अवश्य।

कमअक्ल- वि० (फा०) अल्प बुद्धि। मूर्ख।

कमअस्ल- वि० दे० "कमज़ात "।

कमउम्र- वि० दे० "कमसिन"।

कमक़ीमत- वि० (फा०) थोड़े मूल्य का। सस्ता।

कमखर्च- वि० (फा०) थोड़ा खर्च करने वाला। मितव्ययी।

कमखाब- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का रेशमी कपडा जिस पर कलाबत्तू के बेल-बूटे बने होते हैं।

कमख्वाब- स्त्री० दे० 'कमखाब'।

कमगो- वि० दे० "कमसखुन"।

क़मची- स्त्री० (तु०) १ वृक्ष की टहनी। शाखा। २ छड़ी।

कमज़र्फ- वि० (फा०) १ ओछा। २ कमीना।

कमज़ात- वि० (फा०) नीच। कमीना।

कमज़ोर- वि० (फा०) दुर्बल।

कमज़ोरी- स्त्री० ( फा० )निर्बलता। दुर्बलता ना-ताकती।

कमतर- वि० ( फा० ) कम की अपेक्षा कुछ और कम। अल्पतर।

कमतरीन- पुं० (फा०) बहुत ही तुच्छ सेवक। (प्रायः प्रार्थनापत्र के नीचे प्रार्थी अपने नाम के साथ लिखता है। ) वि० बहुत ही कम।

कमनसीब- वि० ( फा० ) वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर जंगली पशु आदि फँसाये जाते हैं। फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कमफहम- वि० दे० "कम अक्ल"।

कमबख्त- वि० ( फा० )अभागा।

कमबख्ती- स्त्री० (फा०) अभाग्य। दुर्भाग्य।

कमयाब- वि० ( फा० ) जो कम मिलता हो। दुष्प्राप्य।

कमर- स्त्री० (फा०) १ शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचें और पेडू तथा चूतड़ के ऊपर होता है। मुहा०- कमर कसना या बाँधना= १ तैयार होना। उद्यत होना। २ चलने की तैयारी करना। कमर टूटना= निराश होना। ३ किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग, जैसे कोल्हू की कमर। ४ अँगरखे या सलूके आदि का वह भाग जो कमर पर पड़ता है। लपेट।

क़मर- पुं० ( फा० ) चन्द्रमा। चाँद।

कमरबन्द- पुं० (फा०) १ लंबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं। पटुका। २ पेटी। ३ इज़ारबन्द। नाड़ा।

कमरबस्ता- वि० (फा० कमरबस्तः ) जो किसी काम के लिये कमर बाँधे हो। तैयारी।

कमरी- स्त्री० (फा०) १ एक प्रकार की कुरती। २ कम्बल।

क़मरी- वि० (अ०) क़मर या चन्द्रमा सम्बन्धी। चन्द्रमा का। जैसे-क़मरी महीना।

कम-व-कास्त- वि० (फा०) किसी बातमें कुछ कम और किसी बातमें कुछ ज्यादा।

कमसखुन- वि० (फा०) (सं० कम-सखुनी) कम बोलने वाला। अल्पवयस्क।

कमाँ- पुं० ( फा० ) कमान।

कमांगर- पुं० (फा०) तीर चलानेवाला, धनुर्धर।

कमांदार- पुं० (फा०) तीर चलाने वाला। धनुर्धर।

कमात- पुं० ( अ० ) कुकुरमत्ता।

कमान- स्त्री० (फा०) १ धनुष। मुहा०- कमान चढ़ना= १ दौर दौरा होना। २ त्योरी चढ़ना। क्रोध में होना। ३ इन्द्र-धनुष। ४ मेहराब। ५ तोप। ६ बन्दूक।

कमानगर -दे० "कमंगर"

कमानचा- पुं० (फा० कमानचः )१ छोटी कमान का धनुष। २ एक प्रकार का बाजा। ३ मेहराबदार छत। ४ बड़ी इमारत के साथ का छोटा कमरा या मकान।

कमानदार- पुं० (फा०) कमान चलानेवाला। धनुर्धर। वि० धनुषाकार।

कमानी- स्त्री० (फा० कमान) १ धातु का लचीला तार या पत्तर जो दाब पड़ने पर दब जाय और फिर अपनी जगह पर आ जाय। २ एक प्रकार की चमड़े की पेटी जो आँत उतरने पर कमर में बाँधी जाती है। ३ कमान के आकार की वस्तु।

कमाल- पुं० ( अ० ) १ परिपूर्णता। पूरापन। २ निपुणता। कुशलता। ३ अद्भुत कर्म। अनोखा कार्य, चमत्कार। ४ कारीगरी।

कमालात- पुं० 'कमाल' का बहु०।

कमालियत- स्त्री० (अ०) १ कमालका भाव। २ पूर्णता। दक्षता।

कम हक्कहू कमा हक्का- क्रि० वि० ( अ० ) जैसा कि वास्तवमें है। उचित रूप में।

कमी- स्त्री० (फा०) १ न्यूनता। कोताही। अल्पता। २ हानि।

क़मीज़- स्त्री० ( अ० कमीस) एक प्रकार का कुरता।

कमीन- स्त्री० ( अ० १ शिकार की ताक में किसी जगह छिपकर बैठना। २ इस प्रकार

छिपकर बैठने का स्थान।
कमीनगाह- स्त्री० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ शिकारी शिकार की ताक में छिपकर बैठता है।
कमीना- वि० (फा० कमीनः) ओछा। नीच। क्षुद्र।
कमीनापन- पुं० (फा०+हिं०) नीचता। ओछापन। क्षुद्रता।
कमोबेशी- स्त्री० (फा०) कम होना अथवा अधिक होना। घटती-बढ़ती।
कमीस- स्त्री० (अ०) एक प्रकार का कुरता। कमीज।
कमोकास्त- वि० दे० "कम व कास्त"।
कमोबेश- वि० (फा०) थोड़ा बहुत, कम या ज्यादा।
कमबख्त- वि० (फा०) अभागा। बदकिस्मत।
कम्मून- पुं० (अ०) जीरा।
कम्मूनी- वि० (अ०) दवा आदि जिसमें जीरा भी मिला हो। जैसे-जवारिश कम्मूनी।
क़्याफा- पुं० (अ० क़्याफः) आकृति। सूरत। शक्ल।
क़्याफाशिनास- वि० (अ०+फा०) आकृति देखकर मनका भाव समझनेवाला।
क़्याफा शिनासी- स्त्री० (अ०+फा०) किसी की आकृति देखकर ही उसके मन का भाव समझ लेना।
क़्याम- पुं० (अ०) १ ठहराव। ठिकाना। २ ठहरने की जगह। विश्राम स्थान। ३ ठौर-ठिकाना। ४ निश्चय। स्थिरता।
क़्यामत- स्त्री० (अ०) १ मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रखा जायगा। २ प्रलय। ३ हलचल। खलबली।
क़्यास- पुं० (अ०) १ अनुमान। अटकल। २ सोचविचार। ध्यान।
क़्यासी- वि० (अ०) अनुमान किया हुआ। अनुमित, आनुमानिक।
क़्यूम- वि० (अ० क़य्यूम) १ स्थायी, दृढ़। २ ईश्वर का एक विशेषण।
कर- पुं० (फा०) १ शक्ति। बल। २ वैभव। यौ०-कर व फर= शान-शौकत।
करख्त- वि० (फा०) (करख्तगी) कड़ा। कठोर। पुं० वह अंग जो सुन्न हो जाय।
करगस- पुं० (फा०) गिद्ध। उक़ाब।
करगह- पुं० (फा०) कपड़ा बुनने का यंत्र। करघा।
क़रज़-क़रज़ा- पुं० (अ० कर्ज़) ऋण। उधार। कर्ज़।
करदा- वि० (फा० कर्द) किया हुआ। कृत। जिसने किया हो (यौगिक शब्दों के अन्त में)।
करनफल- पुं० (अ०) लौंग। लवंग।
क़रनबीक़- पुं० (अ० करंबीक) अर्क खींचने का छोटा भबका।
करबला- पुं० (अ०) १ अरब में वह स्थान जहाँ अली के छोटे लड़के हुसैन मारे और गाड़े गये थे। २ वह स्थान जहाँ मुसलमान मुहर्रम में ताजिए दफन करते हैं।
करम- पुं० (अ०) १ कृपा। अनुग्रह। २ उदारता।
करमकल्ला- पुं० (फा० करमकल्लः) एक प्रकार की गोभी। बन्दगोभी। पत्ता-गोभी।
क़रम्बीक़- पुं० दे० "क़रनबीक़"
करश्मा- पुं० (फा० करश्मः) १ अद्भुत कार्य। २ मंत्र। ताबीज़। ३ नाज़-नखरा। ४ आँखों और भौहों का संकेत।
क़रहा- पुं० (अ० कर्हः) घाव। ज़ख्म।
क़राबत- स्त्री० (अ०) १ करीब या समीप होने का भाव। सामीप्य, निकटता। २ निकट, का सम्बन्ध। रिश्तेदारी।
क़राबतदार- पुं० (अ० फा०) रिश्तेदार। सम्बन्धी।
क़राबतदार- पुं० (अ० फा०) रिश्तेदार। सम्बन्धी।
क़राबतदारी- स्त्री० (अ+फा०) रिश्तेदारी। सम्बन्ध।

क़राबती- वि० (अ०) जिसके साथ निकट का समबन्ध हो।
क़राबा- पुं० (अ० क़राबः) शीशे का वह बड़ा बर्तन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।
क़राबीन- स्त्री० (तु०) १ चौड़े मुँह की पुरानी बन्दूक। २ कमर में बाँधने की एक प्रकार की छोटी बन्दूक।
करामत- स्त्री० (अ०) १ बड़प्पन। महत्ता। बुजुर्गी। २ अद्भुत कार्य।
करामात- स्त्री० (अ० करामत का बहु०) चमत्कार। अद्भुत व्यापार। करिश्मा।
करामाती- वि० (अ० करामात) जो करामात दिखलावे। अद्भुत कार्य करनेवाला।
क़रायन- पुं० (अ०) करीनाका बहु०। यौ०- शहादते क़रायनी= परिस्थिति साक्ष्य। अवस्थाएँ। परिस्थितियाँ।
क़रार- पुं० (अ०) १ स्थिरता। ठहराव। २ धैर्य। धीरज। तसल्ली। संतोष। ३ आराम। चैन। ४ वादा। प्रतिज्ञा।
क़रारदाद- पुं० (अ०+फा) लेने देने के सम्बन्ध में होने वाला निश्चय।
क़ररवाक़ई- क्रि० वि० (अ०) वास्तविक या निश्चित रूपमें। वस्तुतः।
क़रारी- वि० (अ०) निश्चित किया हुआ। ठहराया हुआ।
क़रावल- पुं० (तु०) १ घुड़सवार, पहरेदार या सन्तरी। २ वह जो बन्दूक से शिकार करता हो। ३ सेना के आगे चलने वाले वे सिपाही जो शत्रु का समाचार संग्रह करते हैं।
कराहियत- स्त्री० (अ०) १ अप्रसन्नता। २ नापसन्द होना। अरुचि। ३ अनुचित या गंदा काम। घृणित और निन्दनीय। कार्य। ४ घृणा। नफ़रत।
क़रिया- पुं० (अक़रियः) गाँव।
करिश्मा- पुं० दे० "करश्मा"।
क़रीन- वि० (अ०) १ पास। निकट। २ संगत। जैसे- क़रीन-इन्साफ= न्यायसंगत। करीन मसलहत= युक्तिसंगत।
क़रीना- पुं० (अ० करीनः) (बहु० करायन) १ ढंग। तर्ज़। तरीका। चाल। २ क्रम। तरतीब। ३ शऊर। सलीका।
क़रीब- क्रि० वि० (अ०) १ समीप। पास। निकट। २ लगभग।
करीम-वि० (अ०) (बहु० किराम) १ करम करनेवाला। २ दयालु। कृपालु। ३ उदार। दाता। पुं० ईश्वर का एक विशेषण।
करीह- वि० (अ०) जिसे देखकर घृणा हो। घृणित। यौ०- करीह मंज़र= भद्दा। कुरूप।
करोली- स्त्री० (तु०) १ शिकार का पीछा करना। २ एक प्रकार का छुरा जिससे जानवरों का शिकार करते या शत्रु को मारते हैं।
कर्ज़- पुं० (फा०) गैंडा।
क़र्ज़- पुं० (अ०) ऋण। उधार।
क़र्ज़दार- पुं० (अ०+फा०)वह जो किसी से क़र्ज़ ले। ऋणी।
क़र्ज़दारी- स्त्री० (अ०+फा०) वह जो किसी से क़र्ज़ ले। ऋणी।
क़र्ज़ा- पुं० दे० "क़र्ज़"।
क़र्ज़ी- वि० (अ०) क़र्ज़के रूप में लिया हुआ। पुं० दे० "क़र्ज़दार"।
कर्द- पुं० (फा०) काम, कार्य।
कर्दगार- पुं० (फा०) करने वाला अर्थात् ईश्वर।
कर्दा- वि० (फा०) किया हुआ।
क़र्न- पुं० (अ०) १० से १२० वर्षों तक का समय। युग।
क़र्ना- स्त्री० (अ० मि० सं० करनाल) एक प्रकार की बड़ी तुरही या भोंपू।
कर्र-पुं० (अ०) १ शत्रुओं को पीछे हटाना। २ वैभव। शान। यौ०- कर्र-फर्र= शान-शौकत वैभव और शोभा।
कर्रार- वि० (अ०) शत्रुओं को परास्त करनेवाला। विजयी। पुं० मुहम्मद साहब की एक उपाधि।
क़र्हा- पुं० दे० "क़रहा"।

क़लई- स्त्री० (अ०) १ राँगा। २ राँगे का पतला लेप जो बर्तनों इत्यादि पर लगाते हैं। मुलम्मा। ३ वह लेप जो रंग चढ़ाने या चमकाने के लिये किसी वस्तुपर लगाया जाता है। ४ बाहरी चमक दमक। तड़क भड़क। मुहा०- क़लई खुलना= वास्तविक रूपका प्रकट होना। कलई न लगना= युक्ति न चलना।

क़लईगर- पुं० (अ०+फा०) जो कलई या रांगे का लेप चढ़ाता हो।

क़लक़- पुं० (अ० क़ल्क़) १ बेचैनी। घबराहट। २ रंज। दुःख। खेद।

कल्ग़ी- स्त्री० (तु०) १ शुतुरमुर्ग आदि चिड़ियों के सुन्दर पंख जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं। २ मोती या सोने का एक गहना। सिरपर पहनने का एक गहना। ३ चिड़ियों के सिरपर की चोटी। ४ इमारत का शिखर। ५ लावनी का एक ढंग।

कलन्दर- पुं० (फा०) १ एक प्रकार के मुसलमान साधु और त्यागी। २ रीछ और बन्दर आदि नचानेवाला मदारी।

कलफ़- पुं० (अ० मि० सं० कल्प) १ वह पतली लेई जो कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाई जाती है। माँड़ी। २ चेहरे परका काला धब्बा। झाँई।

क़लम- स्त्री० (अ० मि० सं० कलम) १ लेखनी। मुहा०- क़लम चलना= लिखाई होना। कलम चलाना= लिखना। कलम तोड़ना= लिखने की हद कर दी। अनूठी उक्ति कहना। २ किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठने या दूसरे पेड़ में पैबंद लगाने के लिए काटी जाय। ३ काटने की क्रिया।४ रवा। दाना। ५ सिरके वे बाल जो कानों के पास होते हैं।

क़लम-अन्दाज़- वि० (अ०+फा०) जो लिखने में छूट गया हो।

क़लमकश- वि० (अ०+फा०) कलम से लिखनेवाला, मसिजीवी।

क़लमकार- पुं० (अ०+फा०) क़लम से नक्काशी आदि करनेवाला।

क़लमकारी- स्त्री० (अ०+फा०) क़लम से नक्काशी करना। बेल-बूटे बनाना।

क़लमज़द- वि० (अ०+फा०) कलम से काटा हुआ, रद्द, निरस्त।

क़लम तराश- पुं० (अ० फा०) कलम बनाने का चाकू।

क़लमदस्त- वि० (अ०+फा०) कलम से लिखनेवाला। पुं० १ लेखक। २ चित्रकार।

क़लमदान- पुं० (अ०+फा०) कलम, दावात आदि रखने का डिब्बा या छोटा संदूक।

क़लमबन्द- वि० (अ०+फा०) १ लिखा हुआ। लिखित। २ ठीक। पूरा।

क़लमरौ- स्त्री० (अ०+फा०) राज्य, सल्तनत।

कलमा- पुं० (अ० कल्मः) १ वाक्य, बात। २ वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूल मंत्र है। यथा-ला इला लिल्लिल्लाह मुहम्मद उर्रसूलिल्लाह।

कलमात- पुं० (अ० कल्मात) 'कलमा' का बहु०।

क़लमी- वि० (अ०) १ कलमसे लिखा हुआ। लिखित। २ कलम काटकर लगाया हुआ (पौधा या वृक्ष आदि)।

कलां- वि० (फा०) बड़ा।

क़लाबाज़ी- स्त्री० (फा०) सिर नीचे करके उलट जाना। कलैया।

कलाम- पुं० (अ०) १ वाक्य। वचन। २ बातचीत। कथन। ३ वादा। प्रतिज्ञा। ४ उज्र। एतराज।

कलामुल्लाह- पुं० (अ०) ईश्वर की वाणी।

कलारा- पुं० (फा०) कौवा। क़ाक।

कलाल- पुं० (अ०) ग्लानि।

कलावा- पुं० (फा० कलावः मि० सं० कलापक) १ सूत का लच्छा जो तकले पर लिपटा रहता है। २ हाथी की गरदन।

क़लिया- पुं० (अ० कलियः) भूनकर रसेदार पकाया हुआ मांस।

क़लियान- पुं० (फा०) एक प्रकार का हुक्का।

क़लीच- पुं० (फा०) तलवार। खड्ग।

कलीद- स्त्री0 (फा0) कुंजी।
कलीम- वि0 (अ0) कहनेवाला। वक्ता। यौ0- कलीमउल्लाह= १ वह जो ईश्वर की बातें करता हो। २ हजरत मूसा।
कलील- वि0 (अ0) १ सुस्त, शिथिल। २ मांदा। ३ भोथरा।
क़लील- वि0 (अ0) थोड़ा। अल्प।
कलीसा- पुं0 (यू0 फा0 कलीसः) यहूदियों और ईसाईयों का प्रार्थना मन्दिर। गिरजा आदि।
क़ल्क-पुं0 दे0 'क़लक़'।
कलूख- पुं0 दे0 'कुलूख'।
क़ल्ब- पुं0 (अ0) १ हृदय। दिल। यौ0- कल्बे मुज़तर= दुःखी और विकलहृदय। २ सेनाका मध्य भाग। ३ किसी वस्तु का मध्य भाग। ४ बुद्धि। प्रज्ञा। ५ खोटी चाँदी या सोना।
क़ल्बसाज़- पुं0 (अ0+फा0) खोटे या जाली सिक्के बनाना।
क़ल्बसाज़ी- (अ0+फा0) नकली या जाली सिक्के बनाना।
क़ल्बी- वि0 (अ0 क़ल्ब) १ हृदयसम्बन्धी। हार्दिकन। २ नकली। झूठा।
कल्ला- पुं0 (फा0 कल्लः) १ गाल के अन्दर का अंश। जबड़ा। २ जबड़े के नीचे गले तक का स्थान। गला। ३ स्वर। आवाज। ४ सिर। (भेड़ों आदि का)।
क़ल्लाँच- पुं0 (तु0 कल्लाश) निर्धन। गरीब। दरिद्र।
कल्लातोड़- वि0 (फा0+हिं0) कल्ले तोड़ने वाला। जबरदस्त। बलवान्।
कल्लादराज़- वि0 (फा0) १ बहुत चिल्लाने वाला। २ बहुत बढ़-बढकर बोलने वाला।
क़ल्लाश- पुं0 (तु0) गरीब।
कल्लेदराज़- वि0 दे0 'कल्लादराज'।
क़वानीन- पुं0 (अ0) 'कानून' का बहु0।
क़वायद- पुं0 (अ0) 'क़ायदा' का बहु0। कायदे। नियम। । नियम। व्यवस्था। २ व्याकरण। ३ सेना के युद्ध नियमों के अभ्यास की क्रिया।
क़वी- वि0 (अ0) बलवान्। शक्तिशाली।
क़व्वाल- पुं0 (अ0) कौवाली या क़व्वाली गानेवाला।
क़व्वाली- स्त्री0 (अ0) १ एक प्रकार का भगवत्प्रेम सम्बंधी गीत जो सूफियों की मजलिसोमें होता है। २ इस धुन में गाई जाने वाली कोई ग़ज़ल। ३ कौवालों का पेशा।
कश- वि0 (फा0) खींचने वाला। आकर्षक। जैसे- दिलकश। १ खिंचाव। यौ0- क़शमकश। २ हुक्के या चिलम का दम। फूँक।
क़शक- स्त्री0 (फा0) रेखा।
कशक़ा- स्त्री0 (फा0 कश्कः)माथे पर लगाया जाने वाला टीका। तिलक।
कशकोल- स्त्री0 दे0 'कज्कोल'।
कशनीज- पुं0 (फा0) धनिया।
कशमकश- स्त्री0 (फा0)१ खींचा-तानी। २ धक्कम-धक्का। ३ आगा-पीछा। सोचविचार। असमंजस। दुबिधा।
कशाकश- स्त्री0 दे0 'कशमकश'।
कशरियरध्-स्त्री0 (फा0) १ आकर्षण। खिंचाव। २ मनमुटाव। वैमनस्य।
कशीदगी- स्त्री0 (फा0) मनमुटाव, वैमनस्य।
कशीदा- पुं0 (फा0 कशीदः) कपड़े पर सूई और तागे से बनाये हुए बेल-बूटे। वि0 खिंचा या खींचा हुआ। आकृष्ट। यौ0- कशीदाखातिर= अप्रसन्न। असन्तुष्ट।
कश्ती- स्त्री0 (फा0) १ नाव। नौका। किश्ती। २ एक प्रकार की बड़ी चौड़ी थाली।
कश्तीबान- स्त्री (फा0) महाद्वीप।
कश्नीज़- पुं0 (फा0) धनिया।
कश्फ- पुं0 (फा0) १ सामने या ऊपर से परदा हटाना। खोलना। २ ईश्वरीय प्रेरणा।
कश्फी- वि0 (फा0) १ खुला हुआ। २ स्पष्ट।
कश्वर- स्त्री0 (फा0) नाव चलाने वाला,

मल्लाह।

कस- पुं० (फा०) १ व्यक्ति। मनुष्य। यौ०- कस-व-नाकस= छोटे बड़े, सभी। २ साथी। सहायक। मित्र यौ०- बेकस= जिसका कोई सहायक न हो। बेचारा।

क़सब- पुं० दे० 'कस्ब'।

क़सब- पुं० (अ०) १ एक प्रकार की बढ़िया मलमल। २ नली। ३ हड्डी।

क़सबा- पुं० (अ० क़सबः) छोटा शहर।

क़सम- स्त्री० (अ०) १ शपथ। सौगंध। मुहा०- क़सम उतारना= शपथका प्रभाव दूर करना। २ किसी काम को नाम मात्र के लिये करना। क़सम देना, दिलाना या रखना= किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। क़सम खाने को= नाम मात्र को।

कसर- स्त्री० (अ० कस्र) १ कमी। न्यूनता। २ टोटा। घाटा। हानि। ३ नुक्स। दोष। विकार। ४ किसी वस्तु के सूखने या उसमें से कूड़ा-करकट निकालने से होने वाली कमी। ५ द्वेष। वैर। मनमुटाव। मुहा०- कसर निकालना= बदला लेना।

कसरत- स्त्री० (अ० कस्रत) अधिकता। ज्यादती। यौ०- कसरते राय= बहुमत। शरीर को पुष्ट और बलवान् बनाने के लिए दंड बैठक आदि परिश्रम के काम। व्यायाम। मेहनत।

कसरती- वि० (अ० कस्रात) कसरत या व्यायाम करने वाला।

कसरा- पुं० (अ० कसह) जेर या इकार का चिह्न।

कसल- पुं० (अ०) १ रोगी होने की अवस्था। बीमारी। २ थकावट। शिथिलता।

कसलमन्द- वि० (अ०+फा०) १ बीमार। रोगी। २ थका हुआ। क्लान्त। शिथिल।

क़साई- पुं० (अ० कस्साब) बधिक। घातक। बूचड़। वि० निर्दय। बेरहम।

कसाफत- स्त्री० (अ०) १ मोटाई। २ भद्दापन। ३ गन्दगी।

कसाब- पुं० दे० 'क़स्सशब'।

कसाबा- पुं० (अ० क़साबः) स्त्रियों का सिर पर बाँधने का रूमाल।

क़सामत- स्त्री० (फा०) क़सम खिलाने का काम।

क़सीदा- वि० (फा०) १ खिंचा हुआ। २ अप्रसन्न। पुं० बेल-बूटे काढ़ने का काम।

क़सीदा- पुं० (अ० क़सीदाः) वह कविता या ग़ज़ल जिसमें पन्द्रह से अधिक चरण हों और जिसमें किसी की प्रशंसा अथवा निन्दा, उपदेश या ऋतु वर्णन आदि हो।

कसीदाकारी- स्त्री० (फा०) बेल-बूटे काढ़ने का काम।

क़सीदाख्वाँ- वि० (अ०+फा०) १ कसीदा पढ़ने वाला। २ खुशामदी, चापलूस।

कसीफ- वि० (अ०) १ मोटा। स्थूल। २ भद्दा। बेढंगा। ३ मैला। गन्दा।

कसीर- वि० (अ०) बहुत अधिक।

कसीर-उल्-औलाद- वि० (अ०) जिसके बहुत से बाल-बच्चे हों।

क़सूर- पुं० (अ० क़सूर) अपराध। दोष।

कसूरमन्द- वि० (अ०+फा०) क़सूरवार। दोषी। अपराधी।

क़सूरवार- वि० (अ०+फा०) कसूर या अपराध करने वाला। दोषी।

कसे- वि० (फा०) कोई (व्यक्ति)। यौ०- कसे बाशद= चाहे कोई हो।

क़स्द- पुं० (अ०) इरादा,सकल्प।

क़स्दन- क्रि० वि० (अ०) जान-बूझकर। विचारपूर्वक।

कस्ब- पुं० (अ०) १ पैदा करना। उपार्जन। २ हुनर। कला। ३ पेशा। व्यवसाय। ४ वेश्यावृत्ति।

क़स्बा- पुं० (अ० क़स्बाः) (बहु० क़स्बात) साधारण गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। बड़ा गाँव।

क़स्बात- पुं० 'कस्बा' का बहु०।

क़स्बाती- वि० (अ० क़स्बा) क़स्बे या छोटे शहर में रहने वाला।

कस्बी- वि० (अ०) कस्ब करने वाली। स्त्री० वेश्या। रंडी।

क़स्मिया- क्रि० वि० (अ० कस्मियः) क़सम

खाकर। शपथ-पूर्वक।

कस्त्र- पुं० (अ०) १ न्यूनता। कमी। २ प्रासाद। महल।

क़स्साम- वि० (अ०) १ क़सम या शपथ खाने वाला। २ विभाजक।

कस्साब- पुं० (अ०) पशुओं को जुबह करने या मारने वाला। क़साई।

क़स्साबा- पुं० दे० 'कस्साबा'।

क़स्साबी- स्त्री० (अ०) क़स्साबका काम या पेशा।

कह- स्त्री० (फा० 'काह' का संक्षि० रुप) सूखी घास।

कहकशाँ- स्त्री० (फा० ) आकाश- गंगा।

क़हक़हा- पुं० (फा० क़हक़हः) जोर की हँसी। ठहाका। अट्टहास।

कहगिल- स्त्री० (फा०) दीवार में लगाने का मिट्टी का गारा।

क़हत- पुं० (अ० क़हत) १ दुर्भिक्ष। अकाल। २ किसी वस्तु का बहुत अधिक अभाव।

क़हतज़दा- पुं० (अ० क़हत+फा०) १ कहत या अकाल का मारा। भूखों मरने वाला। २ बहुत अधिक भूखा।

क़हतसाली- स्त्री० (अ०) क़हत। अकाल। दुष्काल।

क़हबा- स्त्री० (अ० क़हबः) १ दुश्चरित्रा स्त्री। पुंश्चली। २ वेश्या।

क़ह- पुं० दे० 'क़हर'।

क़हर- पुं० (अ० क़ह) विपत्ति। आफत। क्रि० स०-ढाना।

क़हरन्- क्रि० वि० (अ०) बलपूर्वक। जबरदस्ती।

कहरुबा- पुं० (फा०) एक प्रकार की गोंद जिसे कपड़े आदि पर रगड़कर यदि घास या तिनके के पास रखें तो उसे चुम्बक की तरह पकड़ लेता है।

क़हवा- पुं० (अ० कहवः) एक पेड़ का बीज जिसके चूरे को चाय की तरह पीते हैं। काफी।

कहालत- स्त्री० (फा०) काहिली। सुस्ती।

काक- पुं० (फा०) एक प्रकार की रोटी।

क़ाक़- वि० (फा०) १ सूखा। २ दुर्बल। कमजोर।

काकरेज़ी- वि० (फा०) गहरा नीला या काला (रंग)।

काकुल- स्त्री० (फा०) कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल। कुल्ले। जुल्फें।

कराज़- पुं० (फा०) १ सन, रुई, पटुए आदि को सडाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं। यौ०- क़ागजपत्र= १ लिखे हुए काग़ज। २ प्रामाणिक लेख। दस्तावेज। मुहा०- कागज़ काला करना= व्यर्थ का कुछ लिखना। क़ागज की नाव= क्षणभंगुर वस्तु। न टिकने वाली चीज। काग़जी घोड़े दौड़ाना= लिखा पढ़ी करना। ३ समाचार पत्र। अखबार। ४ प्रामिसरी नोट।

काग़ज़ात- पुं० (अ० काग़ज का बहु०) काग़ज-पत्र।

काग़ज़ी- वि० (फा०) १ क़ाग़ज़ का बना हुआ। २ जिसका छिलका काग़ज की तरह पतला हो। जैसे- कागजीबदाम। काग़ज़ी नीबू। ३ काग़ज़ पर लिखा हुआ, लिखित।

काग़द- पुं० कागज।

क़ाज़- स्त्री० (तु०) बत्तख की जाति का एक पक्षी। कूँज। सोना।

क़ाज़ा- स्त्री० (फा० क़ाजः) वह गड्ढा जिसमें शिकारी शिकार की ताक़ में छिप कर बैठते हैं।

क़ाज़िब- पुं० (अ०) झूठ बोलने वाला। मिथ्याभाषी। वि० झूठा।

क़ाज़ी- पुं० (अ०) मुसलमानों के धर्म और रीति-नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करने वाला अधिकारी।

क़ातअ (क़ातिअ)- वि० (अ० क़ातS) किता करने या काटने वाला। कर्त्तक।

कातिब- पुं० (अ०) लिखने वाला। लेखक। मुंशी। मुहर्रिर।

क़ातिल- वि० (अ०) १ क़त्ल या हत्या करने वाला। हत्यारा। २ प्राणनाशक।

घातक। ३ प्रेमिका के लिए प्रयुक्त होने वाला एक विशेषण।
क़ातेय- वि० दे० 'क़ातअ'।
क़ादिर- वि० (अ०) कद्र या शक्ति रखने वाला। समर्थ। बलवान।
क़ादिर मुतलक- पुं० (अ०) परमात्मा का एक नाम। सर्व शक्तिमान्।
कान- स्त्री० (फा०) खान जिससे धातुएँ निकलती हैं। खानि। खदान।
क़ानअ- वि० (अ० क़ानS )क़नायत या सन्तोष करने वाला। सन्तोषी।
कान-कन- पुं० (फा०) कान या खान सम्बन्धी। खनिज।
क़ानून- पुं० (अ०) (बहु० क़वानीन) १ राज्यों में शांति रखने का नियम। राज़नियम। आईन। विधि। २ किसी प्रकार का नियम।
क़ानूनगो- पुं० (अ०+फा०) माल विभाग का एक कर्मचारी जो पटवारियों के काग़जो की जाँच करता है।
क़ानून-दाँ- वि० (अ०+फा०) कानून जानने वाला, विधिवेत्ता।
क़ानून-दानी- स्त्री० (अ०+फा०) कानून का ज्ञान।
क़ानूनन्- क्रि० वि० (अ०) क़ानून के अनुसार, विधानता।
क़ानूनी- वि० (अ०) कानून सम्बन्धी। कानून का।
क़ाने- वि० दे० 'क़ानिअ'।
क़ाफ- पुं० (अ०) १ एक कल्पित पर्वत जो संसार के चारों ओर माना जाता है। कहते हैं कि परियाँ इसी पर्वत पर रहती हैं। २ कृष्ण सागर के पास का एक बहुत बड़ा पर्वत।
क़ाफिया- पु० (अ० क़ाफियः) अन्त्यानुप्रास। तुक। सज।
काफिर- पुं० (अ०) १ मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २ ईश्वर को न मानने वाला। ३ निर्दय। निष्ठुर। बेदर्द। ४ दुष्ट। बुरा। ५ एक देश का नाम जो अफ्रीकामें है। ६ उस देश के निवासी।
काफिराना- वि० (फा०) काफिरों का-सा।
काफिरे नेमत- पुं० (अ०) कृतघ्न।
क़ाफिला- पु० (अ० क़ाफिलः) कहीं जाने वाले यात्रियों का समूह।
काफी- वि० (अ०) जितना आवश्यक हो, उतना। पर्याप्त। पूरा।
काफूर- पु० (अ० मि० सं० कर्पूर) १ कपूर। कर्पूर।
काफूरी- वि० (अ०) १ काफूर का। कपूर सम्बन्धी। २ कपूर के रंग का। कपूरी। ३ स्वच्छ और पारदर्शी।
काफूरी शमा- स्त्री० (अ०) कपूर की बत्ती जो जलाई जाती है।
काब- पुं० दे० 'कअंब'।
क़ाब- स्त्री० (तु०) १ बड़ी तश्तरी या थाली। थाल।
काबक- पुं० दे० "काबुक"।
काबतैन- पुं० (अ० कअबS का बहु०) १ मक्के और जेरूसलम के दोनों पवित्र मंदिर या काबे। २ दो पाँसो से खेला जाने वाला एक प्रकार का जूआ।
क़ाबलीयत- स्त्री० (अ० काबिलीयत) १ क़ाबिल या योग्य होने का भाव। योग्यता। २ विद्वत्ता। पाण्डित्य।
काबा- पुं० (अ० कबअः) अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं।
क़ाबिज़- वि० (अ०) १ क़ब्ज़ा या अधिकार रखने वाला। जिसका क़ब्ज़ा हो। २ क़ब्जियत पैदा करने वाला। मलरोधक।
क़ाबिल- वि० (अ०) क़ाबिलीयत या योग्यता रखने वाला। योग्य। यौ०- काबिले अमल= व्यवहार। काबिले इनाम= इनाम के काबिल। काबिले एतबार= एतबार के काबिल,विश्वसनीय। काबिले एतराज= एतराज के काबिल, आपत्तिजनक। काबिले बरदाश्त= बरदाश्त के योग्य,सह्य। काबिले सज़ा= सजा के योग्य, दंडनीय। काबिले

समाअत= सुनवाई के योग्य।

क़ाबिलियत- स्त्री० (अ०) योग्यता।

काबीन- पुं० (फा०) वह धन जो पति विवाह के समय पत्नी को देना मंजूर करता है।

काबूक- पुं० (फा०) वह दरबा या खाना जिसमें पक्षी और विशेषतः कबूतर रखे जाते हैं।

क़ाबू- पुं० (तु०) वश, अधिकार, इख्तियार।

क़ाबूची- पुं० (तु०) १ द्वारपाल। दरबान। २ तुच्छ व्यक्ति।

काबूस- पुं० (अ०) भीषण स्वप्न। डरावना ख्वाब।

काम- पुं० (फा०) १ उद्देश्य। अभिप्राय। २ कामना। इच्छा।

कामगार- वि० (फा०) १ जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। सफल। २ भाग्यवान।

कामत- स्त्री० (अ०) कद। आकार। यौ०- क़द व क़ामत= आकार-प्रकार (व्यक्तिके सम्बन्ध में।)

कामदार- पुं० (हिं० काम+फा० दार) १ व्यवस्थापक। प्रबन्धकर्त्ता। २ कर्मचारी। वि० जिस पर किसी तरह का विशेषतः कारचोबी का काम किया हो।

काम-ना-काम- क्रि० वि० (फा०) लाचारी की हालत में। विवश होकर।

कामयाब- वि० (फा०) १ जिसका अभिप्राय सिद्ध हो गया हो। २ सफल।

कामयाबी- स्त्री० (फा०) १ उद्देश्य की सिद्धि। सफलता।

कामरान- वि० (फा०)१ जिसका उद्देश्य सिद्ध हो गया हो। सफल।

कामरानी- स्त्री० (फा०) १ उद्देश्य की सिद्धि। २ सफलता।

कामिल- वि० (अ०) (बहु० कुमला) १ पूरा। पूर्ण। कुल। समूचा। २ योग्य। दक्ष। यौ०- कामिले फन= किसी फन या कला में निपुण।

क़ामूस- पुं० (अ०) समुद्र।

क़ायज़ा- पुं० (अ० क़ायज़ः) घोड़े की लगाम की डोरी जिसे दुम तक ले जाकर बाँधते हैं।

क़ायदा- पुं० (अ० क़ाइदः) १ नहयत। २ चाल। दस्तूर। रीति। ढंग। ३ विधि। विधान। ४ क्रम। व्यवस्था।

क़ायदा-दाँ- वि० (अ०+फा०) क़ायदा या नियम जाननेवाला।

कायनात- स्त्री० (अ०) १ सृष्टि। जगत्।२ विश्व। ३ पूँजी। ४ मूल्य। महत्व।

क़ायम- वि० (अ० क़ाइम) १ ठहरा हुआ। स्थिर। २ स्थापित। निर्धारित। ३ निश्चित। मुकर्रर।

क़ायम मिजाज- वि० (अ०) जिसका मिजाज ठहरा हुआ हो। शान्त स्वभाव वाला।

क़ायम मुक़ाम- वि० (अ०) किसी के स्थान पर काम करने वाला। स्थानापन्न। पुं० प्रतिनिधि।

क़ायमा- पुं० (अ० क़ायमः) खड़ा या पूरा कांड।

क़ायल- वि० (अ०) १ जो तर्क-वितर्क से सिद्ध बात को मान ले। कबूल करने वाला। २ किसी बात या सिद्धान्त को मानने वाला।

कार- पुं० (फा० मि० सं० कार्य) काम। कार्य। प्रत्य० करने वाला। कर्त्ता। जैसे- जफाकार, पेशकार, काश्तकार।

कार-आजमूदा- वि० (फा०) अनुभवी।

कारआमद- वि० (फा०) काम में आने वाला। उपयोगी।

कारकरदा- वि० (फा० कारकर्दः) जिसने अच्छी तरह काम किया हो। अनुभवी।

कारकुन- पुं० (फा०) १ इंतजाम करने वाला। प्रबन्धकर्त्ता। करिंदा।

कारखाना- पुं० (फा० कारखानः)१ वह स्थान जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाती हो। २ कारबार। व्यवसाय। ३ घटना। दृश्य। मामला। ४ क्रिया।

कारखानादार- पुं० (फा०) किसी कारखाने का मालिक।

कारखास- पुं० (फा०) खास काम। विशेष कार्य।
कारखैर- पुं० (फा०) शुभ कार्य। पुण्य का काम।
कारगर- वि० (फा०)अपना काम या प्रभाव दिखालाने वाला, प्रभावशाली। जैसे- दवा कारगर हो गई।
कारगाह- स्त्री० (फा०) कोई काम करने, विशेषतः कपड़े बुननेका स्थान।
कारगुज़ार- वि० (फा०)अपने कर्तव्य का भलीभाँति पालन करने वाला।
कारगुज़ारी- स्त्री० (फा०) १ आज्ञापर ध्यान रखकर ठीक तरह से काम करना। कर्तव्यपालन। २ कार्यपटुता। होशियारी। कर्मण्यता।
कारचोब- पुं० (फा०) १ लकड़ी का वह चौखटा जिस पर कपड़ा तान कर जरदोजी का काम बनाया जाता है। अड्डा। २ जरदोजी या कसीदे का काम करने वाला। जरदोज।
कारचोबी- वि० (फा०) ज़रदोजी का। स्त्री० गुलकारी। ज़रदोजी।
कारज़ार- पुं० (फा०) युद्ध। समर। लड़ाई।
कारद- स्त्री० (फा०कार्द) चाकू। छुरी।
कारदाँ- वि० (फा०) किसी काम को अच्छी तरह जाननेवाला। दक्ष। कुशल।
कारदानी- स्त्री० (फा०) १ काम करनें की कुशलता। २ अनुभव
कारनामा- पुं० (फा० कारनामः) १ किसी के किये हुए कार्यों, विशेषतः युद्ध सम्बन्धी कार्यों का विवरण।
कार-पर्दाज़- पुं० (फा०) १ काम करने वाला। कारकुन। २ प्रबंधकर्ता। कारिंदा।
कार-पर्दाज़ी- स्त्री० (फा०) १ अच्छा काम करके दिखलाना। २ कारपरदाज का काम या पद।
कार फरमाई- स्त्री० (फा०) आज्ञानुसार काम करना।
कारबन्द- वि० (फा०) १ काम करने वाला। २ आज्ञाकारी।
कारबरारी- स्त्री० (फा०) काम का पूरा होना।
कारबार- पुं० (फा०) १ काम काज। २ व्यापार। पेशा। व्यवसाय।
कारबारी- पुं० (फा०) काम धंधा करने वाला। जो कुछ काम करता हो।
कारमंद- पुं० (फा०) नौकर, सेवक।
कारवाँ- पुं० (फा०) यात्रियों का दल या समूह। काफिला।
कारवाँ सराय- स्त्री० (फा०) कारवाँ या यात्रियों के ठहरने का स्थान। सराय।
कारसाज़- वि० (फा०) कार्य बनाने या सँवारने वाला। जैसे- अल्लाह बड़ा कारसाज है।
कारसाज़ी- स्त्री० (फा०) १ काम बनाना या सँवारना। २ भीतर या छिपी हुई कार्रवाई। चालाकी।
कारस्तानी- स्त्री० दे० 'कारिस्तानी'।
क़ारिज़- पुं० (अ०) ऋण देने वाला, ऋणदाता।
कारिन्दा- पुं० (फा० कारिन्दः) दूसरे की ओर से काम करने वाला कर्मचारी, गुमाश्ता।
कारिस्तानी- स्त्री० (फा० कारस्तानी) १ कृत्य। कार्रवाई। २ चालबाज़ी।
कारी- वि० (फा०) १ जो अपना काम ठीक तरह से कर दिखलावे। प्रभावशाली। २ घातक। जैसे- कारी तीर, कारी ज़ख्म।
क़ारी- पुं० (अ०) पढ़नेवाला। विशेषतः कुरान पढ़ने वाला।
कारीगर- पुं० (फा०) धातु, लकड़ी, पत्थर इत्यादि से सुन्दर वस्तुओ की रचना करने वाला आदमी। शिल्पकार।
कारीगरी- स्त्री० (फा०) १ अच्छे-अच्छे काम बनाने की कला। निर्माण कला। २ सुन्दर बना हुआ काम। मनोहर रचना।
कारूँ- पुं० (अ०) एक बहुत अधिक धनवान् जो हजरत मूसा का चचेरा भाई और बहुत बड़ा कंजूस माना जाता है। मुहा०- क़ारूँ का

क़ारूँरा- पुं० (अ० क़ारुरः) १ मसाने के आकार की शीशी जिसमें पेशाब रखकर हकीम को दिखलाते है २ पेशाव। मूत्र। मुहा०- क़ारूँरा मिलना= बहुत अधिक मेल-जोल होना।

क़ार्रवाई- स्त्री० (फा०) १ काम। कृत्य। करतूत। २ कार्यतत्परता। कर्मण्यता। ३ गुप्त प्रयत्न। चाल।

क़ाल- पुं० (अ०) १ उक्ति। कथन। २ डींग। शेखी। यौ०- क़ाल-मक़ाल।

कालबुद- पुं० (फा०) १ शरीरन। तन। बदन। २ वह ढाँचा जिस पर रख कर मोची जूता सीते है। क्लबूत।

क़ालमकाल- स्त्री० (अ०) १ बहुत बड़ी चालाकी या लम्बी चौड़ी बातचीत। २ कहा सुनी। तकरार।

क़ालिब- पुं० (अ०) १ लकड़ी आदि कावह ढाँचा जिस पर रखकर टोपी या पगड़ीतैयार की जाती है। क्लबूत। २ शरीर। देह। ३ साँचा।

क़ालीन- स्त्री० (तु०) मोटे तागों का बुना हुआ बहुत मोटा और भरी विछावन जिसमें बेल बूटे रहते हैं। ग़ालीचा।

काबा- पुं० (फा० कअबः) अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं।

काविश- स्त्री० (फा०)१ अनुसन्धान। तलाश। खोज। २ दुश्मनी। बैर। शत्रुता।

काश- अव्य० (फा०) ईश्वर करें, ऐसाहो जाय। (प्रार्थना और आकांक्ष सूचक)

काश- स्त्री० (तु०) फल आदि का कटा हुआ लंवा टुकड़ा। फाँक।

काशाना- पुं० (फा० काशानः) १ झोपडा। कुटी। २ घर। मकान (नम्रता सूचक)

काशिफ- वि० (अ०) प्रकट या स्पप्ट करने वाला।

काश्त- स्त्री० (फा०) १ खेती। कृपि। २ जमींदार को कुछ वार्पिक लगान देकरउसकी ज़ुमीदारी पर खेती करने का स्वत्य। यौ०- खुदकाश्त= निजी जोत, सीट।

काश्तकार- पुं० (फा०) १ किसान, कृपक, खेतहर। २ वह जिसने जमींदार को लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्य प्राप्त किया हो।

काश्तकारी- स्त्री० (फा०) १ खेती-बारी, किसानी। २ काश्तकार का हक़।

कासनी- स्त्री० (फा०) १ एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं। २ कासनी का बीज। ३ एक प्रकारका नीला रंग जो कासनी के फूल के रंग के समान होता है।

कासा- पुं० (फा० कासः) प्याला, कटोरा। यौ०- कासए सर= खोपड़ी। कासए गदाई= भिक्षा-पात्र।

क़ासिद- पुं० (अ०) १ क़सद या इरादा करने वाला। २ पत्रवाहक, हरकारा।

क़ासिम- वि० (अ०) तक़सीम करने या बाँटने वाला, विभाजक।

क़ासिर- वि० (अ०)१ जिसमें कोई कमी या त्रुटि हो। २ असमर्थ।

काह- स्त्री० (फा०) १ सूखी हुई घास। २ तिनका।

क़ाहिर- वि० (अ०) कहर ढानेवाला, बहुत वड़ा अत्याचारी। पुं० विजेता।

क़ाहिल- वि० (अ०) सुस्त, आलसी।

क़ाहिली- स्त्री० (अ०) सुस्ती, आलस्य।

क़ाहिश- स्त्री० (फा०) ह्रास, कमी।

काही- वि० (अ०+फा०) घास के रंग का, कालापन लिए हुए हरा।

काहू- पुं० (अ०) गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम में आते हैं।

कि- अव्य० (फा० मि० सं० किम्) एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओं के बाद उनके विपय-वर्णन के पहले आता है। २ तत्क्षण, इतने में। ३ या, अथवा। ४ क्योंकि, जैसा कि।

किज्ब- पुं० (अ०) झूठ, मिथ्या बात।

क़िता- पुं० (अ० कित्अः) १ खंड, टुकड़ा। २ जमीन का टुकड़ा। ३ ऐसी जमीनपर बना हुआ मकान। ४ एक प्रकार की कविता

जिसमें दो चरणों से कम न हों, मतला न हो और सम चरणों में अनुप्रास हो। स्त्री० दे० 'क़्ता'।

किताब- स्त्री० (अ०) ग्रंथ, पुस्तक। यौ०- किताबें क़वाइद= नियमावली।

किताबत- स्त्री० (अ०) लिखना। यौ०- खत-किताबत= पत्रव्यवहार।

किताबा- पुं० (अ० किताबः) लेख।

किताबी- वि० (अ०) किताब या पुस्तक सम्बन्धी। पुं० मुसलमानों के अनुसार यहूदी और ईसाई लोग।

किताबुल्लाह- स्त्री० (अ०) कुरान शरीफ।

किताबे आसमानी- स्त्री० दे० 'किताबे इलाही'।

किताबे इलाही- स्त्री० (अ०) मुसलमानों की धर्म पुस्तक, कुरान।

क़ितार- स्त्री० (अ०) १ पंक्ति। २ श्रेणी।

क़िताल- स्त्री० (अ०) मारकाट, हत्या।

किनायतन- क्रि० वि० (अ०) इशारे से, संकेत द्वारा।

किनाया- पुं० (अ० किनायः) इशारा, संकेत।

किनार- स्त्री० (फा०) १ बगल। २ चूमना और गले लगाना। पुं० (फा० किनारः) किनारा, पार्श्व। मुहा०- दर किनार= अलग रहे, छोड़ दो। जैसे- खाना-पीना दर किनार एक पान भी न दिया।

किनारा- पुं० (फा० किनारः) १ अधिक लम्बाई और कम चौड़ाई वाली वस्तु के वे दोनों भाग जहाँ चौड़ाई समाप्त होती है, लम्बाई के बल की कोर। २ नदी या जलाशय का तट, तीर। मुहा०- किनारे लगना= समाप्ति पर पहुँचना, समाप्त होना। ३ लम्बाई-चौड़ाई वाली वस्तु के चारों ओर का वह भाग जहाँ से उसके विस्तार का अन्त होता हो, प्रान्त, भाग, हाशिया, गोट। ४ किसी ऐसी वस्तु का सिरा या छोर जिसमें चौड़ाई न हो, पार्श्व, बगल। मुहा०- किनारा खींचना= दूर होना। किनारे न जाना= अलग रहना। किनारे बैठना= अलग होना, छोड़कर दूर हटना।

किनारा-कश- वि० (फा०) (सं० किनारा-कशी) अलग या दूर रहने वाला। कुछ संबंध न रखनेवाला।

किनारी- स्त्री० (फा० किनारः) सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है।

किन्न- पुं० (अ०) पहनने के वस्त्र, पोशाक।

किफायत- स्त्री० (अ०) १ काफी या अलम् होने का भाव। २ कमखर्ची, थोड़े में काम चलाना। ३ बचत।

किफायती- वि० (अ०) कम खर्च करनेवाला, सँभालकर खर्च करनेवाला।

क़िबला- पुं० (अ० क़िबलः) १ पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज़ पढ़ते हैं। २ मक्का। ३ पूज्य व्यक्ति। ४ पिता, बाप। यौ०- क़िबला कौनेन= पिता। क़िबला हाजात= दूसरों की आवश्यकताएँ पूरी करनेवाला।

क़िबला-आलम- पुं० (अ० किबलः-ए-आलम) १ ध्रुव तारा। २ मुसलमान बादशाहों के प्रति संबोधन का शब्द। ३ पूज्य या बड़े के लिए सम्बोधन।

क़िबला-गाह- पुं० (अ०+फा०) बड़ों और विशेपतः पिता के लिए संबोधन।

क़िबला-नुमा- पुं० (अ०+फा०) पश्चिम दिशा को बताने वाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाजों पर अरब मल्लाह करते थे, दिग्दर्शक यंत्र।

किब्र- पुं० (अ०) १ बड़प्पन बुजुर्गी, बड़ाई। २ वृद्धावस्था।

किब्रिया- स्त्री० (अ०) बड़प्पन, बुजुर्गी, महत्ता।

किब्रियाई- स्त्री० (अ०) महत्ता, बड़प्पन, बुजुर्गी।

क़िमार- पुं० (अ०) वह बाजी या खेल जिसमें धन की हार-जीत हो, जूआ, द्यूत।

क़िमार-खाना- पुं० (अ०+फा०) जूआ खेलने की जगह।

क़िमार-बाज़- पुं० (अ०+फा०) जूआ खेलनेवाला, जुआरी।
क़िमारबाज़ी- स्त्री० (अ०+फा०) द्यूत क्रीड़ा, जूआ।
क़िमाश- स्त्री० (तु०) १ भाँति, प्रकार। २ ताश की गड्डी।
क़ियाम- पुं० (अ०) अस्थायी निवास।
क़ियामत- स्त्री० (अ०) महाप्रलय। यौ०- क़ियामत का= अत्यंत सुंदर।
कियास- पुं० (अ०) १ विचार। २ अनुमान।
क़िरअत- स्त्री० (अ०) अच्छी तरह पढ़ना, विशेपतः कुरान पढ़ना।
क़िरतास- पुं० (अ० किर्तास) कागज।
किरदार- स्त्री० (किर्दार) १ कार्य, काम। २ ढंग, शैली।
क़िरमिज़- पुं० (अ०) एक प्रकार का लाल रंग।
क़िरमिज़ी- पुं० (अ०) एक प्रकार का लाल रंग, वि० उक्त रंगका।
किराएदार- पुं० (अ०+फा०) दे० 'किरायादार'।
क़िरात- स्त्री० (अ०) पठन, पढ़ना।
क़िरान- पुं० (अ०) १ किसी ग्रहका किसी राशि में पहुँचना। संक्रमण। २ कोई शुभ संयोग या अवसर। यौ०- साहब-ए-क़िरान= १ वह जिसका जन्म किसी शुभ अवसर या साइत में हुआ हो। २ भाग्यवान, सौभाग्यशाली।
क़िराम- वि० (अ०) 'करीम' का बहु०।
किराया- पुं० (अ० किरायः) वह दाम जो दूसरे की कोई वस्तु काम में लाने के बदलें में उसके मालिक को दिया जाय, भाड़ा।
किरायादार- पुं० (अ०+फा०) किराएदार।
किरायानामा- पुं० (अ० किरायः+फा० नामः) किराएदार और मालिक मकान के बीच में लिखा हुआ पत्र।
किरिश्मा- पुं० (फा० किरिश्मः) चमत्कार।
किर्दगार- पुं० (फा०) सृष्टि का कर्त्ता, विधाता, परमात्मा।
किर्म- पुं० (फा०) कीड़ा, कीट। यौ०- किर्म-खुर्दा= जिसे कीड़े चाट गये हों, कीड़ों का खाया हुआ।
किलक- स्त्री० (फा० किल्क) १ अन्दर से पोली लकड़ी। २ एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।
क़िला- पुं० (अ० क़ल्अः) दुर्ग, गढ़।
क़िलेदार- पुं० (अ०+फा०) दुर्गपति, गढ़पति।
क़िल्लत- स्त्री० (अ०) १ कम होने का भाव, अभाव, कमी, न्यूनता। २ कठिनता, दिक्कत।
क़िवाम- पुं० (अ०) शहद के समान गाढ़ा किया हुआ अवलेह।
किशमिश- स्त्री० (फा०) सुखाई हुई छोटी दाख, अंगूर।
किशमिशी- वि० (फा०) १ जिसमें किशमिश हो। २ किशमिश के रंग का। पुं० एक प्रकार का अमौआ रंग।
किश्त- स्त्री० (अ०) १ खेत। २ सतरंज में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना, शह।
किश्तज़ार- पुं० (फा०) खेत।
किश्ती- पुं० (फा० कश्ती) १ नाव, नौका। २ एक प्रकार की थाली।
किश्तीवान- स्त्री० पुं० (फा० कश्तीवान) मल्लाह।
किश्न- पुं० (अ०) १ छाल। २ छिलका। ३ भूसी।
किश्वर- पुं० (फा०) देश। यौ०- किश्वर सतानी= देश जीतना।
किसबत- स्त्री० दे० 'किस्बत'।
किसरा- पुं० (फा० खुसरोका अरबी रूप) १ नौशेरवाँ की एक उपाधि। २ फारस के बादशाहों की उपाधि।
क़िसास- पुं० (अ०) हत्याका बदला चुकाने के लिए किसी की हत्या करना।
किस्त- स्त्री० (अ०) (बहु० अक़्सात) १ कई बार करके ऋण या देना चुकाने का ढंग। २ किसी ऋण या देने का वह भाग जो

किसी निश्चित समय पर दिया जाय।
क़िस्त-बंदी- स्त्री० (अ०+फा०) थोड़ा-थोड़ा करके कई बारमें रूपया अदा करने का ढंग।
क़िस्तवार- क्रि० वि० (अ०+फा०) १ किस्त के ढंग से, किस्त करके। २ हर किस्त पर।
किस्बत- स्त्री० (अ०) १ पहनने के कपड़े। २ वह थैली जिसमें हज्जाम उस्तरे और कैंची आदि रखता है।
क़िस्म- स्त्री० (अ०) १ प्रकार। भेद, भाँति, तरह। २ ढंग, तर्ज़, चाल।
क़िस्मत- स्त्री० (अ०) १ प्रारब्ध, भाग्य, नसीब, करम, तक़दीर। मुहा०- क़िस्मत आज़माना= किसी कार्य को हाथ में लेकर देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। क़िस्मत चमकना या जागना= भाग्य प्रबल होना, बहुत भाग्यवान् होना। क़िस्मत फूटना= भाग्य बहुत मन्द हो जाना। २ किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई ज़िले हों, कमिश्नरी।
क़िस्मत आज़माई- स्त्री० (अ०+फा०) भाग्य की परीक्षा।
क़िस्मत-वर- वि० (अ०+फा०) भाग्यवान्, सौभाग्यशाली।
क़िस्सा- पुं० (अ० किस्सः) १ कहानी, कथा, आख्यान। २ वृत्तान्त, समाचार, हाल। ३ कांड, झगड़ा, तकरार।
क़िस्सा-कोताह- क्रि० वि० (अ०+फा०) संक्षेप में यह कि, तात्पर्य यह कि।
क़िस्सा-ख्वाँ- पुं० (अ०+फा०) वह जो लोगों को किस्से-कहानियाँ सुनाता हो।
क़िस्सा-ख्वानी- स्त्री० (अ०+फा०) दूसरों को किस्से या कहानियाँ सुनाने का काम।
कीना- पुं० (फा० कीनः) द्वेष, शत्रुता, वैर, दुश्मनी।
कीना-वर- वि० (फा०)मन में कीना या शत्रुता रखनेवाला।
क़ीफ़- स्त्री० (अ०) वह चोंगी जिसके द्वारा तंग मुँह के बर्तन में तेल आदि डालते हैं, छुच्छी।
क़ीमत- स्त्री० (अ०) दाम, मूल्य।
क़ीमती- वि० (अ०) अधिक दामों का, बहुमूल्य।
क़ीमा- पुं० (अ० कीमः) बहुत छोटे-छोटे टुकड़े में कटा हुआ गोश्त।
कीमिआ- स्त्री० (अ०) रासायनिक क्रिया, रसायन।
कीमियागर- पुं० (अ०+फा०) रसायन बनानेवाला, रासायनिक परिवर्तन में प्रवीण।
कीमुख्त- पुं० (फा०) (वि० कीमुख्ती) घोड़े या गधे का चमड़ा।
क़ीरात- पुं० (अ०) चार जौ की तौल।
क़ील- पुं० (अ०) वचन, वार्ता।
कील व क़ाल- स्त्री० (अ०) १ बातचीत। २ विवाद, बहस।
कीसा-पुं० (अ० कीसः) १ थैली। २ जेब।
कुंज- पुं० (फा० मि० सं० कुंज) किनारा, कोना।
कुंजद- पुं० (फा०) तिल (अन्न)।
कुजा- क्रि० वि० (फा०) कहाँ। किस जगह।
कुंजिश्क- स्त्री० (फा०) चिड़ा नामक पक्षी, गौरेया।
कुंद- वि० (फा०) १ भोथरा। २ मन्द।
कुंदा- पुं० (फा० कुंदः) लकड़ी का टुकड़ा, जैसे- बंदूक का कुंदा।
कुक़नुस- पुं० (अ० कुक्नस) एक कल्पित पक्षी जो बड़ा भारी गानेवाला माना जाता है, आतिशज़न।
कुतका- पुं० (तु० कुतकः) १ मोटा और बड़ा डंडा, पुरुष की इन्द्रिय।
कुतबा- पुं० (अ० कुत्बः) लेख।
कुतुब- पुं० (अ०) 'किताब' का बहुवचन। पुस्तकें।
कुतुबखाना- पुं० (अ०+फा०) किताबों की दुकान, पुस्तकालय।
कुतुबनुमा- पुं० दे० 'कुत्बनुमा'।
कुतुब-फरोश- पुं० (अ०+फा०) पुस्तक-विक्रेता।

कुतुर- पुं० दे० 'कुंज'।
कुत्न- स्त्री० (अ०) रुई।
कुत्ब- पुं० (अ०) १ ध्रुव तारा। २ वह कीली जिसपर कोई चीज घूमती हो। ३ नायक, नेता, सरदार।
कुत्ब-नुमा- पुं० (अ०+फा०) दिग्दर्शक यंत्र।
कुत्बी- वि० (अ०) कुत्ब या ध्रुवसंबंधी।
कुत्र- पुं० (अ०) वृत्तका व्यास या मध्य रेखा, अध-कट।
कुदरत- स्त्री० (अ० क़ुद्रत) १ शक्ति, प्रभुत्व, इख्तियार। २ प्रकृति, माया, ईश्वरीय शक्ति। ३ कारीगरी, रचना।
कुदरती- वि० (अ० क़ुद्रती) १ प्राकृतिक, स्वाभाविक। २ दैवी, ईश्वरीय।
कुदसिया- वि० स्त्री० (अ० कुदसियः) पवित्र, पाक।
कुदसी- वि० (अ० कुद्सी) पवित्र, पाक।
कुदूस- वि० (अ०) पवित्र, पाक।
कुद्दूस- वि० (अ०) १ पवित्र। २ शुद्ध।
कुदमा- वि० (अ०) 'क़दीम' का बहु०।
कुन- वि० (फा०) करनेवाला। (प्रायः यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे-कारकुन।)
कुनह- स्त्री० (फा० ) १ तत्व, तथ्य। २ बारीकी, सूक्ष्मता। जैसे-बात-बात में कुनह निकालना। स्त्री० (फा० कीनः )( वि० कुनही ) १ द्वेष, मनोमालिन्य। २ पुराना वैर।
कुन्द- वि० (फा०) १ कुंठित, गुठला। २ स्तब्ध, मन्द। जैसे-कुन्द जेहन=कुंठित बुद्धिवाला।
कुन्दा- पुं० (फा० कुन्दः मि० सं० स्कंध) १ लकड़ी का बड़ा, मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा। यौ०- कुन्दए नातराश= निरा मूर्ख, पूरा बेवकूफ। २ बंदूक का चौड़ा पिछला भाग। ३ वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। ४ लकड़ी की बड़ी मोंगरी जिससे कपड़ों की कुन्दी की जाती है।
कुन्नि[illegible]- स्त्री० (अ०) १ कुल या वंश का नाम, कुल-नाम। २ नाम का वह रूप जिससे नामी का वंश भी सूचित होता है। जैसे-अब्बुल हसन=हसन का पुत्र।
कुफ्फार- पुं० (अ०) 'काफिर' का बहु०।
कुफ्र- पुं० (अ०) १ एक ईश्वरको न मानकर बहुत से देवी-देवताओं की उपासना करना। २ इस्लाम की आज्ञाओं के विरुद्ध आचरण। मुहा०- किसी का कुफ्र तोड़ना= १ किसी को इस्लाम में दीक्षित करना। २ किसी को अपने अनुकूल करना। कुफ्र का फतवा देना= किसी को कुफ्र का दोषी ठहराना, किसी के अधर्मी होने की व्यवस्था देना।
कुफ्ल- पुं० (अ०) ताला।
कुबूल- वि० दे० 'कबूल'।
कुब्बा- पुं० (अ० कुब्वः ) १ गुंबद, कलश।
कुमक- स्त्री० (तु० कुमुक) १ सहायता, मदद। २ पक्षपात, तरफदारी।
कुमकुमा- पुं० (अ० कुम्क़मा) १ लाख का बना हुआ एक प्रकार का पोला गोला जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होली में एक दूसरे पर मारते हैं। २ एक प्रकारका तंग मुँह का छोटा लोटा। ३ काँच के बने हुए पोले छोटे गोले।
कुमरी- स्त्री० (अ० कुम्री) पंडुक की जाति की एक चिड़िया।
कुमुक- स्त्री० (तु०) सहायता, मदद।
कुम्मैत- पुं० (अ०) १ घोड़े का एक रंग जो स्याही लिये लाल होता है, लाखी। २ इस रंग का घोड़ा।
कुरआ- पुं० (अ० कुरअऽ )१ जूआ खेलने या रमल आदि फेंकने का पाँसा। २ किसी बात का निर्णय करने के लिए उठाई जाने वाली गोली।
कुरक़- वि० (तु० क़ुर्क़) १ रोका हुआ। २ जब्त।
कुरकी- स्त्री० (तु० कुर्क़ी) कर्जदार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने की वसूली के लिये सरकार द्वारा जब्त किया जाना।
कुरता- पुं० (तु० कुर्तः ) ( स्त्री० अल्पा०

कुरती) एक प्रसिद्ध पहनावा जो सिर में डालकर पहना जाता है।
कुरतास- पुं० (अ० किर्तास) कागज।
कुरबत- पुं० (अ० कुर्बत) पास होना, सामीप्य, नजदीकी।
कुरबान- पुं० (अ० क़ुर्बान) जो निछावर या बलिदान किया गया हो। मुहा०- कुरबान जाना= निछावर होना, बलि जाना।
कुरबानगाह- स्त्री० (अ० कुर्बान+फा०) कुरबानी करने का स्थान, वेदी।
कुरबानी- स्त्री० (अ० कुर्बानी) बलिदान।
कुरसी- स्त्री० (अ० कुर्सी) १ एक प्रकारकी ऊँची चौकी जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिये पटरी लगी रहती है। यौ०- आराम कुरसी= एक प्रकार की बड़ी कुरसी जिसपर आदमी लेट सकता है। २ वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है। ३ पीढ़ी। पुश्त। यौ०- कुरसीनामा।
कुरसी-नामा- पुं० (अ० कुर्सी+फा० नामः) लिखी हुई वंश परंपरा, वंश-वृक्ष, शजरा।
कुरहा- पुं० (अ० कुर्हः) वह जखम जिसमें पीब पड़ गयी हो।
कुरान- पुं० (अ० क़ुअनि) अरबी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तक जो मुसलमानों का धर्म-ग्रन्थ है।
कुरीज़- स्त्री० (फा०) पक्षियों का पुराने पर झाड़ना और नए पर निकालना।
कुरैश- पुं० (अ०) अरब का एक क़बीला या वर्ग, मुहम्मद साहब इसी कबीले या वर्ग के थे।
कुरैशी- वि० (अ०) कुरैश कबीले का।
कुर्क- वि० (अ०) जब्त।
कुर्क़-अमीन- पुं० (अ०) वह सरकारी कर्मचारी जो अदालत के आज्ञानुसार जायदाद की कुर्की करता है।
कुर्क़ी- स्त्री० दे० 'कुरकी'।
कुर्नास- पुं० (अ०) राक्षस, पिशाच।
कुर्ब- पुं० (अ०) नजदीकी, सामीप्य, निकट या पास होना। यौ०- कुर्ब व जवार= आस-पास के स्थान या प्रदेश।
कुर्बत- स्त्री० (अ०) १ निकट संबंध। २ निकटता। ३ सहवास।
कुर्बान- पुं० दे० 'कुरबान'।
कुर्बानी- स्त्री० दे० 'कुरबानी'।
कुर्र-ए-अर्ज़- पुं० (अ०) पृथ्वी का गोला, पृथ्वी।
कुर्रत- स्त्री० (फा०) प्रसन्नता, खुशी। यौ०- कुर्रत-उल-ऐन= १ आँखों का ठंडा होना। २ प्रसन्नता।
कुर्रम- पुं० (तु०) १ अपनी पत्नी से व्यभिचार करानेवाला २ वेश्याओं का दलाल, भडुआ।
कुर्रा- पुं० (अ० कुर्रः) १ गेंद की तरह गोल चीज। २ गेंद। ३ क्षेत्र। जैसे-कुर्रए आब, कुर्रए हवा।
कुर्स- पुं० (अ०) १ सूर्यबिम्ब। २ टिकिया, बटी, बटिका। ३ चाँदी का एक छोटा सिक्का।
कुर्सी- स्त्री० (अ०) बैठने का आसन।
कुर्सीनशीं- वि० (अ०+फा०) पदस्थ, पदासीन।
कुर्सीनामा- पुं० (अ०+फा० नामः) वंशवृक्ष।
कुलंग- पुं० (फा०) एक प्रकार का सारस, क्रौंच पक्षी।
कुल- पुं० (अ०) १ समस्त, सब, सारा। यौ०- कुल जमा= सब मिलाकर। २ केवल, मात्र।
कुल- पुं० (अ०) १ कुरान का वह सूरा पढ़ना जो 'कुल हो अल्लाह' से आरम्भ होता है। यह भोज के अन्त में फलों आदि पर पढ़ा जाता है। मुहा०- कुल होना= समाप्त होना।
कुलचा- पुं० (फा० कुलीचः) १ एक प्रकार की छोटी रोटी। २ एक प्रकार की मिठाई।
कुलज़म- पुं० (अ० कुल्जुम) लाल सागर या अरब की खाड़ी।
कुलफत- स्त्री० (अ० कुल्फ्त) १ कष्ट, विपत्ति। २ चिन्ता, फिक्र।
कुलफा- पुं० (अ० कुल्फः) एक प्रकार का साग, बड़ी अमलोनी।

कुलफी- स्त्री० दे० 'कुल्फी'।

कुलबुल- स्त्री० (अ०) कुलबुल शब्द जो जल आदि को उड़ेलने के समय होता है।

कुल-मुख़्तार- पुं० (फा०) वह जिसे सब बातों का पूरा अधिकार दिया गया हो।

कुलह- स्त्री० दे० 'कुलाह'।

कुलाँच- स्त्री० (तु० कुल्लाच) कूदने की क्रिया, कुदान।

कुलावा- पुं० (अ० कुल्लाबः) १ लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है, पायजा। २ मोरी।

कुलाल- पुं० (फा०+सं०) कुम्हार।

कुलाह- स्त्री० (फा०) १ टोपी। २ राजमुकुट।

क़ुली- पुं० (तु०) बोझ ढोने वाला। मज़दूर।

कुलूख- पुं० (फा०) मिट्टी का ढेला।

कुल्फ़ी- स्त्री० (अ०) १ पेंच। २ टीन आदि का चोंगा जिसमें दूध आदि भर कर बर्फ जमाते हैं। ३ उपर्युक्त प्रकार से जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शरबत।

कुल्बा- पुं० (अ० कुल्बः) हल। यौ०- कुल्बाराना= हल जोतना।

कुल्लहुम- क्रि० वि० (अ०) कुल, बिल्कुल।

कुल्लियात- पुं० (कुल्लियत का बहु०) किसी ग्रन्थकार या कवि की समस्त कृतियों का संग्रह।

कुल्ली- (अ०) कुल, सब, पूरा। स्त्री० समष्टि।

कुव्वत- स्त्री० (अ०) शक्ति, बल।

कुशा- वि० (फा०) १ खेलने या फैलाने वाला। जैसे-दिलकुशा= दिल को फैलाने (प्रसन्न करने) वाला। २ सुलझाने वाला। जैसे- मुश्किलकुशा= कठिनाई दूर करने वाला।

कुशादगी- स्त्री० (फा०) १ कुशादा का भाव। २ खुला और लम्बा-चौड़ा होना। ३ विस्तार।

कुशादा- वि० (फा० कुशादः) लम्बा-चौड़ा और खुला हुआ। जैसे- कुशादा मैदान,कुशादा दिल। क्रि० वि०-अलग। दूर।

कुश्त- स्त्री० (फा०) मार डालना, हत्या। यौ०- कुश्त व खून= हत्या।

कुश्ता- वि० (फा० कुश्तः) जो मार डाला गया हो, निहत। पुं० १ धातु आदि की भस्म, रस। २ आशिक, प्रेमी।

कुश्ती- स्त्री० (फा०) दो आदमियों का परस्पर एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिये लड़ना, मल्लयुद्ध, पकड़। मुहा०- कुश्ती मारना= कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना। कुश्ती खाना= कुश्ती में हार जाना।

कुश्तीबाज़- पुं० (फा०) कुश्ती लड़ने वाला।

कुस- स्त्री० (फा०) भग, योनि।

कुसूफ़- पुं० (अ०) १ दुर्दशाग्रस्त होना। २ ग्रहण, उपराग। ३ सूर्यग्रहण।

कुसूर- स्त्री० 'कसर' का बहु०। पुं० दे० 'कसूर'।

कुहन- वि० दे० 'कोहन'।

कुहना- वि० दे० 'कोहना'।

कुहराम- पुं० दे० 'कोहराम'।

कुहल- पुं० (अ० कुहूल) १ अकाल का वर्ष। २ सुरमा।

कू- पुं० (फा०) गली, कूचा। यौ०- कू-बकू= गली-गली, दर-दर। इधर-उधर।

कूए- पुं० (फा०) गली, कूचा।

कूच- पुं० (फा०) प्रस्थान, रवानगी। मुहा०- कूच कर जाना= मर जाना। देवता कूच कर जाना= होश-हवास जाता रहना। भय या किसी और कारण से ठक हो जाना। कूच बोलना= प्रस्थान करना।

कूचक- वि० दे० 'कोचक'।

कूचा- पुं० (फा० कूचः) कुछ छोटा रास्ता। गली। यौ०- कूचा-गर्द= गलियों में मारा-मारा फिरने वाला, आवारा।

कूज़- वि० (फा०) टेढ़ा, वक्र। यौ०-

कूज़-पुश्त या कूज़ा पुश्त= कुबड़ा, कुब्ज़।
कूज़ा,कूज़ा- पुं० (फा० कूज़) १ मिट्टी का मटका, कुल्हड़। २ मिट्टी के मटके में जमाई हुई अर्ध गोलाकार मिश्री।
कूदक- पुं० (फा०) (बहु० कूदकीन।) लड़का, बच्चा।
कून- स्त्री० (फा०) गुदा।
कूनी- वि० (फा०) गुदा-मैथुन कराने वाला।
कूरची- पुं० (तु०) हथियारबन्द सिपाही, सशस्त्र सैनिक।
कूलिंज- पुं० (यू०) एक प्रकार का उदरशूल।
कूवत- स्त्री० (अ० कुव्वत) ताक़त, बल, शक्ति, सामर्थ्य। जैसे-कूवत हाज़मा।
केर- पुं० (फा०) पुरुष की इंद्रिय। लिंग।
क़ैंची- स्त्री० (तु०) १ बाल, कपड़े आदि कतरने का एक औज़ार, कतरनी। २ दो सीधी तीलियाँ या लकड़ियाँ जो कैंची की तरह एक दूसरी के ऊपर तिरछी रखी या जड़ी हों।
क़ै- स्त्री० (अ०) वमन, उल्टी।
क़ैतून- स्त्री० (अ०)एक प्रकार की सुनहली या रुपहली डोरी जो कपड़ों पर टाँकी जाती है।
क़ैद- स्त्री० (अ०) १ बन्धन, अवरोध। २ पहरे में बन्द स्थान में रखना, कारावास।
क़ैदखाना- पुं० (अ०+फा०) कारागार, जेलखाना।
क़ैदतनहाई- स्त्री० (अ०) वह कैद जिसमें क़ैदी एक कोठरी में अकेला रखा जाता है, कालकोठरी की सज़ा।
क़ैद-बा-मशक्क़त- स्त्री० (अ०) सपरिश्रम कारागार, कड़ी सज़ा।
क़ैद-बे-मशक्क़त- स्त्री० (अ०) बिना परिश्रम का कारागार, सादी सज़ा।
क़ैद महज- स्त्री० (अ०) बिना परिश्रम का कारागार, सादी सज़ा।
क़ैद-सख्त- स्त्री० (अ०) सपरिश्रम कारागार, कड़ी सज़ा।
क़ैदी- (अ०) वह जिसे कैद की सजा दी गई हो, बन्दी, बँधुवा।
क़ैफ- पुं० (अ०) एक प्रकार का मादक द्रव्य, अव्य० क्यों-कर।
कैफर- पुं० (फा०) बुराई का बदला।
कैफियत- स्त्री० (अ० कैफीयत) १ समाचार, हाल, वर्णन। २ विवरण, ब्यौरा। मुहा०- कैफियत तलब क़रना= नियमानुसार विवरण माँगना, कारण पूछना। ३ आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना।
कैफी- वि० (अ०) मदोन्मत्त।
क़ैमूस- पुं० (अ०) भोजन आदि के कारण शरीर में उत्पन्न होने वाला रस।
क़ैरात- पुं० दे 'क़ीरात'।
क़ैरुती- स्त्री० (अ०) मोम से बनाई हुई एक प्रकार की मालिश करने की दवा।
कैवान- पुं० (अ०) १ शनि ग्रह। २ सातवाँ आस्मान जिसमें शनि ग्रह का निवास माना जाता है।
क़ैसर- पुं० (अ०) सम्राट, बादशाह।
कोकलताश- पुं० (तु०) दूध-भाई। (एक ही दाई का दूध पीने वाले दो बच्चे एक दूसरे के कोकलताश कहलाते हैं।)
कोका- पुं० (फा० कौकः) दूध-भाई। वि० दे० 'कोकलताश'।
कोचक- वि० (फा०) छोटा।
कोतल- पुं० (अ०) १ सजासजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो, जलूसी घोड़ा। २ स्वयं राजा का घोड़ा, वह घोड़ा जो जरूरत के वक्त के लिये साथ रखा जाता है।
कोताह- वि० (फा०) १ छोटा। २ कम।
कोताह-अन्देश- वि० (फा०) अदूरदर्शी।
कोताह-गरदन- वि० (फा०) १ जिसकी गरदन छोटी हो। २ धोखेबाज, धूर्त।
कोताही- स्त्री० (फा०) १ छोटाई। २ कमी, त्रुटि।
कोफ्त- स्त्री० (फा०) १ कष्ट। पीड़ा। २ दुःख।
कोफ्ता- वि० (फा० कोफ्तः) कूटा हुआ।

पुं० १ कूटा हुआ मांस, कीमा। २ कूटे हुए मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

कोब- पुं० (फ़ा०) मारना-पीटना। यौ०- ज़दो कोब= मार-पीट।

कोबा- पुं० (फा० कोबः) काठ की मोंगरी जिससे कोई चीज कूटते या पीटते हैं। यौ०- कोबाकारी= मोंगरी से कूटने की क्रिया।

कोर- वि० (फा०) १ अन्धा। २ न देखने वाला या ध्यान न रखने वाला। जैसे- कोरनमक= कृतघ्न, नमकहराम।

क़ोर- स्त्री० (अ०) हथियार। अस्त्र।

क़ोरची- पुं० (फा०) अस्त्रागार का अधिकारी।

कोरनिश- स्त्री० (तु० कुरनुश से फा०) झुक कर सलाम या बन्दगी करना। क्रि० प्र० बजा लाना।

कोरनिशात- स्त्री० 'कोरनिश' का बहु०।

कोरबख्त- वि० (फा०) अभागा, बदकिस्मत।

कोरमग्ज़- वि० (फा०) मंद बुद्धि।

कोरमा- पुं० (तु० कोरमः) भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा बिल्कुल नहीं होता।

कोराना- क्रि० वि० (फा० कोर) अन्धों की तरह। वि० अन्धो का-सा।

कोरी- स्त्री० (फा०) अंधापन।

कोरोकर- वि० (फा०) अंधा और बहरा।

कोशिश- स्त्री० (फा०) प्रयत्न, उद्योग, चेष्टा।

कोस- पुं० (फा० कूस) बड़ा नगाड़ा।

कोह- पुं० (फा०) पहाड़, पर्वत।

कोहकन- पुं० (फा०) १ पहाड़ खोदने वाला। २ फरहाद का उपनाम जिसने शीरीं के प्रेम में बे-सतून नामक पहाड़ खोदकर एक नहर बनाई थी।

कोहकनी- स्त्री० (फा०) १ पहाड़ खोदना। २ बहुत अधिक परिश्रम का काम।

कोहन- वि० (फा० कुहन) पुराना। (यौगिक शब्दों के आरम्भ में। जैसे- कोहन साल=वृद्ध।)

क़ोहना- वि० (फा० कुह्नः) पुराना, प्राचीन।

कोहनूर- पुं० (फा० कोहे-नूर) १ प्रकाश का पर्वत। २ एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा हीरा।

कोहराम- पुं० (अ० कुह्राम) १ हाहाकार, रोना-पीटना, विलाप। २ शोरगुल।

कोहसार- पुं० (फा० कुहसार) पहाड़ी देश, पार्वत्य प्रदेश।

कोहान- पुं० (फा०) ऊँट की पीठ पर का डिल्ला या कूबड़।

कोहिस्तान- पुं० (फा०) पहाड़ी देश, पार्वत्य प्रदेश।

कोहिस्तानी- वि० (फा०) पहाड़ी, पार्वत्य।

कोही- वि० (फा०) पहाड़ी, पार्वत्य, पर्वत का।

कोहे-क़ाफ- पुं० (अ०) काकेशिया का एक पहाड़।

कोहेतूर- पुं० (अ०) वह पहाड़ जिस पर हजरत मूसा को अल्लाह के दर्शन हुए थे।

कोहेनूर- पुं० (अ०) १ प्रकाश का पर्वत। २ एक प्रसिद्ध हीरा।

कौकब- पुं० (अ०) बड़ा और चमकता हुआ तारा।

कौदन- पुं० (अ०) १ दुबला-पतला और मरियल घोड़ा। २ मूर्ख, बेवकूफ।

कौन- पुं० (अ०) १ सत्य, अस्तित्व। २ प्रकृति। ३ विश्व। यौ०- कौन व मकान= संसार, सृष्टि।

कौनैन- पुं० (अ० 'कौन' का बहु०) इहलोक और परलोक।

क़ौम- स्त्री० (अ० बहु० अक़्वाम) १ वर्ण, जाति। २ राष्ट्र।

क़ौमियत- स्त्री० (अ०) क़ौम, जाति।

क़ौमी- वि० (अ०) १ जातीय। २ राष्ट्रीय।

क़ौल- पुं० (अ०) (बहु० अक़्वाल) १ कथन, उक्ति, वाक्य। २ प्रतिज्ञा, वचन, वादा।

क़ौवाल- पुं० दे० 'कव्वाल'।

कौवाली- स्त्री० दे० 'कव्वाली'।

कौस- स्त्री० (अ०) १ धनुष, कमान। २ धन-राशि।
क़ौस एकज़ह- स्त्री० (अ०) इंद्रधनुष।
कौसर- पुं० (अ०) १ बहुत बड़ा दाता। २ जन्नत या स्वर्ग की एक नहर का नाम।
खंजर- पुं० (अ०) कटार।
खज़ानची- पुं० (फा०) खजाने का अफसर, कोषाध्यक्ष।
खज़ाना- पुं० (अ० खजानः) १ वह स्थान जहाँ धन या और कोई चीज संग्रह करके रखी जाये, धनागार। २ राजस्व, कर।
खत- पुं० (अ०) (बहु० खुतूत) १ पत्र, चिट्ठी। यौ०- खत-किताबत= पत्रव्यवहार। २ लिखावट। ३ रेखा, लकीर। ४ दाढ़ी के बाल। ५ हजामत। (यौगिक में इसका रूप खत भी रहता है और खत्त भी। जैसे- खते मुतवाजी, खत्ते मुतवाज़ी)
खतना- पुं० (अ० खतनः) लिंग के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म, सुन्नत, मुसलमानी।
खतम- वि० (अ० खत्म) पूर्ण, समाप्त। मुहा०- खतम करना= मार डालना।
खतमी- स्त्री० (अ० खत्मी) गुलखैरू की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियाँ आदि दवा के काम में आती हैं।
खतर- पुं० (अ०) भय, डर।
खतरनाक- वि० (अ०) भीषण, भयानक।
खतरा- पुं० (अ० खतरः) १ डर, भय, खौफ। २ आशंका।
खता- स्त्री० (अ० खिता) १ कसूर, अपराध। २ भूल, गलती। ३ धोखा। पुं० तुर्किस्तान और तूरान के बीच का एक नगर।
खताई- वि० (अ०) खता नगर का, खता नगर सम्बन्धी। जैसे- नान-खताई।
खतावार- पुं० (अ०+फा०) अपराधकर्ता, अपराधी, दोषी।
खतीब- पुं० (अ०) १ खुतबा पढ़नेवाला। २ लोगोंको सम्बोधन करके कुछ कहनेवाला।
खतीर- वि० (अ०) महान, श्रेष्ठ।
खते इस्तिवा- पुं० (अ०) भूमध्य रेखा।
खतेजदी- पुं० (अ०) मकर रेखा।
खते-नक्शा- पुं० (अ०) अरबी लेखन शैली।
खते-नस्तालीक़- पुं० (अ०) फारसी के साफ,गोल और सुन्दर अक्षर।
खतेमुतवाज़ी- पुं० (अ०) समानान्तर रेखा।
खतेमुमास- पुं० (अ०) संपात रेखा।
खते-मुस्तक़ीम- पुं० (अ०) सरल रेखा।
खते-मुस्तदीर- पुं० (अ०) गोल रेखा।
खते-शिकस्ता- पुं० (अ० + फा०) फारसीकी बहुत घसीट और खराब लिखावट।
खते-सरतान- पुं० (अ०) कर्क रेखा।
खतो-किताबत- स्त्री० (अ०) पत्राचार।
खत्म- वि० दे० 'खतम'।
खदंग- पुं० (फा०) तीर।
खदशा- पुं० (अ० खदशः) अन्देशा। डर।
खदीव- पुं० (फा०) १ खुदाबन्द। मालिक। २ बहुत बड़ा बादशाह। ३ मिस्र के बादशाहों की उपाधि।
खनाज़ीर- पुं० (अ० खिन्जीरका बहु०) कंठमाला नामक रोग।
खन्दक- स्त्री० (अ०) १ शहर या किलेके चारों ओरकी खाईं।
खन्दा- पुं० (फा० खन्दः) हँसी, हास्य।
खन्दा-पेशानी- वि० (फा०) हँसमुख।
खन्दा-रू- वि० दे० 'खन्दा-पेशानी'।
खन्दी- स्त्री० (फा० खन्दः) दुश्चरित्रा स्त्री, कुलटा।
खन्नास- पुं० (अ०) भूत-प्रेत, शैतान।
खफक़ान- पुं० (अ० खफ्क़ान) (वि० खफक़ानी) १ दिल की धड़कनका रोग जिसमें बहुत बेचैनी होती है। २ पागलपन।
खफगी- स्त्री० (फा०) अप्रसन्नता, नाराज़गी।
खफा- वि० (अ०) १ अप्रसन्न, नाराज, क्रुद्ध, रुष्ट। स्त्री० (अ० खिफा) छिपाने की क्रिया या भाव, दुराव।
खफी- वि० (अ०) गुप्त।

खफीफ- वि० (अ०) १ थोड़ा, कम। २ हलका, तुच्छ, ३ छोटा। ४ लज्जित। शरमिन्दा।

खफीफ- वि० (अ०) १ थोड़ा, कम। २ हलका, तुच्छ। ३ छोटा। ४ लज्जित। शरमिन्दा।

खफीफा- स्त्री० (अ० खफीफः) एक प्रकार की छोटी दीवानी अदालत।

खबर- स्त्री० (अ०) १ समाचार। वृत्तान्त, हाल। २ सूचना, ज्ञान। जानकारी। ३. भेजा हुआ समाचार। संदेसा। ४ चेत, सुधि। ५ पता, खोज। मुहा०- खबर उड़ना = चर्चा फैलना, अफवाह होना। खबर लेना= १ सहायता करना, सहानुभूति दिखलाना। २ सजा देना।

खबर गीर- वि० (अ०+फा०) ( सं० खबरगीरी) १ जासूस, भेदिया। २ पालन-पोषण करनेवाला, संरक्षक।

खबरदार- वि० (अ०+फा०) होशीयार, सजग, सतर्क।

खबरदारी- वि० (अ० + फा०) सावधानी, होशियारी।

खबर रसाँ- पुं० (अ० + फा०) खबर पहुँचानेवाला, हरकारा, दूत।

खबीस- वि० (अ०) १ दुष्ट। २ कृपण। कंजूस।

खब्त- पुं० (अ०) पागलपन, सनक, झक्क।

खब्ती- पुं० (अ०) सनकी, पागल।

खब्तुल हवास- वि० (अ०) खब्ती।

खम- पुं० (अ०) वक्रता, टेढ़ापन, झुकाव। दवना। २ हारना, पराजित होना, खम ठोंकना= १ लड़नेके लिये ताल ठोंकना। २ दृढ़ता दिखलाना। खम ठोंककर = जोर देकर। खम व चम = १ चमकदमक। २ नाज-नखरा।

खमदार- वि० (अ० + फा०) झुका हुआ। टेढ़ा।

खमसा- पुं० दे० "खम्सा"।

खमियाज़ा- पुं० (फा० खामियाजः) १ शिथिलताके समय अंग तोड़ना, अँगड़ाई। २ जँभाई। ३ बुरे कामका परिणाम, फलभोग। क्रि० प्र०- उठाना, भुगतना।

खमीदा- वि० (फा० खमीदः) (खमीदगी) १ झुका हुआ, नत। २ टेढ़ा, वक्र।

खमीर- पुं० (अ०) गूँधे हुए आटेका सड़ाव। २ गूँधकर उठाया हुआ आटा। माया। ३ कटहल, अनन्नास आदिका सड़ाव जो तम्बाकूमें डाला जाता है। ४ स्वभाव। प्रकृति।

खमीरा- पुं० (अ० खमीरः) १ औषधों आदिका गाढ़ा शरबत। २ एक प्रकारका पीनेका तम्बाकू।

खमीरी- वि० (अ० खमीर) जिसमें खमीर मिला हो। स्त्री० एक प्रकार की रोटी जो खमीर उठाए हुए आटे से बनती है।

खमोश- वि० दे० "ख़मोश"।

खम्याज़ा- पुं० (फा० खम्याजः) १ परिणाम, फल। २ अँगड़ाई।

खम्र- पुं० (अ०) शराब, मद्य।

खम्सा- वि० (अ० खम्सः) पाँच, चार और एक। पुं० पाँच चरणोंकी एक प्रकारकी कविता।

खयानत- स्त्री० (अ०) दूसरेकी धरोहरको अनुचित रूपसे अपने काम में लाना। विश्वासघात।

खयारैन- पुं० (अ०) ककड़ी और खरबूजे के बीज जो दवा के काम आते हैं।

खयाल- पुं० (अ०) १ ध्यान, मनोवृत्ति। मुहा०- खयाल रखना= ध्यान रखना, देखते-भालते रहना। २ स्मरण, स्मृति, याद। ख्यालसे उतरना= भूल जाना। ३ विचार, भाव, सम्मति। ४ आदर। ५ एक प्रकारका गाना।

खयालात- पुं० (अ०) 'खयाल' का बहु०।

खयाली- वि० (अ०) १ खयाल-सम्बन्धी। २ कल्पित।

खय्यात- पुं० (अ०) दरजी।

खय्याम- पुं० (अ०) वह जो खेमे बनाता हो।

खर- पुं० (फा० मि० सं० खर) गधा। गर्दभ।
खरखशा- पुं० (फा० खरखशः) १ झगड़ा। बखेड़ा, झंझट, लड़ाई। २ आशंका, डर।
खरगाह- स्त्री० (फा०) खेमा।
खरगोश- पुं० (फा०) खरहा।
खरचना- सं० (फा० खर्च) खर्च करना, व्यय करना।
खरचा- स्रं० पुं० दे० "खर्च"।
खरची- स्त्री० (फा० खर्च) व्यभिचार करने पर कुलटा या वेश्या को मिलने वाला धन।
खरतूम- पुं० (अ०) हाथी का सूँड़।
खरदल- पुं० (अ०) राई।
खरदिमाग- वि० (फा०) गधों की-सी बुद्धि रखने वाला, मूर्ख।
खरनफ्स- वि० (फा०) १ जिसकी इंद्रिय बहुत बड़ी हो। २ लम्पट, दुराचारी। कामुक।
खरबूजा- पुं० (फा० खरबुजः) ककड़ी की जाति का एक प्रसिद्ध गोल फल।
खरमस्ती- स्त्री० (फा०) दुष्टता। पाजीपन, शरारत।
खरमोहरा- पुं० (फा० खरमुहरः) कौड़ी, कपर्दिका।
खरसंग- पुं० (फा०) १ भारी पत्थर। २ प्रतिद्वन्द्वी।
खराह- पुं० दे० "खरगोश"।
खराज- पुं० (अ०) १ लगान। २ राजस्व।
खराद- पुं० (फा०) एक औजार जिस पर चढ़ाकर लकड़ी या धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है।
खराब- वि० (अ०) १ बुरा, निकृष्ट। २ दुर्दशाग्रस्त। यौ०-खराब व खस्ता= निकृष्ट और दुर्दशाग्रस्त। ३ पतित, मर्यादाभ्रष्ट।
खरावा- पुं० (अ० खराबः) १ विनाश, बरवादी। २ खराबी।
खरावात- स्त्री० (अ०) १ मदिरालय। २ कुलटा स्त्रियों का अड्डा।
खरावी- स्त्री० (अ०) १ बुराई, दोष, अवगुण। २ दुर्दशा, दुरवस्था।
खराश- स्त्री० (फा०) खरोंच, रगड़।
खरास- स्त्री० (फा० खरीस) आटा पीसने की चक्की।
खरीता- पुं० (अ० खरीतः) १ थैली, खीसा। २ जेब। ३ वह बड़ा लिफाफा जिसमें आज्ञापत्र आदि भेजे जायें।
खरीद- स्त्री० (फा०)१ मोल लेने की क्रिया। क्रय। यौ- खरीद-फरोख्त= क्रय-विक्रय, खरीदी हुई चीज। यौ०- जर = वह चीज जो धन देकर खरीदी गई हो और जिस पर स्वामित्व का पूरा अधिकार हो।
खरीददार- पुं० (फा०) खरीदने या मोल लेने वाला, ग्राहक।
खरीददारी- स्त्री० (फा०) खरीदने की क्रिया या भाव।
खरीदना- क्रि० सं० (फा० खरीद) मोल लेना, क्रय करना।
खरीदो-फरोख्त- पुं० (फा०) क्रय-विक्रय,
खरीफ- स्त्री० (अ०) वह फसल जो आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय।
खरीफी- वि० (अ०) खरीफ-सम्बन्धी, सावनी।
खरोश- पुं० (फा०) कोलाहल, शोर, यौ०=जोश व खरोश= बहुत आवेश और उत्साह।
खर्च- पुं० (फा०) १ किसी काम में किसी वस्तु का लगना, व्यय, सरफा, खपत। २ वह धन जो किसी काम में लगाया जाय।
खर्चा- पुं० दे० "खर्च"।
खर्राच- वि० (फा०) १ खूब खर्च करने वाला, उदार.। २ अपव्ययी, फजूल-खर्च।
खर्राद- पुं० (फा०) खराद का काम करने वाला।
खर्रादी- स्त्री० (फा०) खराद का काम।
खलजान- पुं० (अ०) १ चिन्ता, फिक्र। २ विकलता, बेचैनी।
खलफ- पुं० (अ० खल्फ) कपूत। यौ०=ना खलफ=अयोग्य और दुष्ट। (प्रायः पुत्र के लिये)।

**खलल**- पुं० (अ०) १ रोक, बाधा, यौ०-खलले दिमाग़= दिमाग़ खराब होना। पागलपन, हस्तक्षेप।

**खलल अन्दाज**- वि० (अ०+फा०)खलल या बाधा डालने वाला, बाधक।

**खलवत**- स्त्री० (अ० खल्वत) शून्य या निर्जन स्थान, एकान्त।

**खलवत खाना**- पुं० (अ० खल्वत+फा० खानः) १ वह शून्य और निर्जन स्थान जहाँ परामर्श आदि हों। २ स्त्रियों के रहने या सोने आदि का स्थान।

**खलवती**- पुं० (अ० खल्वती) १ वह जो एकांतवास करता हो। २ घनिष्ठ मित्र या संबंधी जो खलवतखाने में आ सकता हो।

**खला**- पुं० (अ०) १ खाली स्थान। २ आकाश। ३ पाखाना, शौचागार। (फा० खलः) १ नाव खेंचने का डाँडा, पतवार।

**खलायक़**- स्त्री० (अ०) (खल्क़ का बहु०) सृष्टि के समस्त प्राणी।

**खलास**- पुं० (अ०) १ छुटकारा, मोक्ष, मुक्ति। २ वीर्यपात। वि० १ छूटा हुआ। मुक्त। २ समाप्त। ३ गिरा हुआ, च्युत।

**खलासी**- स्त्री० (अ० खलास) छुटकारा। मुक्ति। पुं० १ तोप चलाने वाला, तोपची, २ जहाज पर काम करने वाला मजदूर।

**खलीक़**- वि० (अ०) १ सुशील, सज्जन, २ मिलनसार।

**खलीज**- स्त्री० (अ०) समुद्र का वह टुकड़ा जो तीन ओर स्थल से घिरा हो, खाड़ी।

**खलीता**- पुं० (फा०) १ थैली। २ जेब।

**खलीफ़ा**- पुं० (अ० खलीफः) (बहु० खुल्फ़ा) १ उत्तराधिकारी, वारिस। २ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी जो समस्त मुसलमानों के सर्वप्रधान नेता माने जाते हैं। ३ दरजियों और हज्जामों आदि की उपाधि, वि० बहुत चतुर और धूर्त।

**खलील**- पुं० (अ०) सच्चा मित्र।

**खलीलुल्लाह**- पुं० (अ०) ईश्वर का मित्र।

**खलीश**- स्त्री० (अ०) १ कसक, पीड़ा। २ चिन्ता, आशंका। ३ चुभना, गड़ना।

**खलेरा**- वि० (अ० खालू या खलः) खाला या खालू के सम्बन्धवाला। जैसे-खलेरा भाई= मौसेरा भाई।

**खल्क़**- स्त्री० (अ०) १ सृष्टि। २ मानव जाति, सब मनुष्य। यौ०- खल्के-खुदा= ईश्वर की रची हुई सृष्टि और सब जीव।

**खल्त**- पुं० (अ०) मिलना-जुलना। मिश्रण।

**खल्तमल्त**- वि० (तु०) मिला-जुला।

**खल्लाक़**- पुं० (अ०) ईश्वर।

**खवातीन**- स्त्री० (अ० खातून का बहु०) महिलाएँ।

**खवास**- पुं० (अ०) राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार।

**खवासी**- स्त्री० (अ०) १ खवास का काम या पद। २ हाथी के हौदे में पीछे का स्थान जहाँ खवास बैठता है।

**खशखाश**- स्त्री० (फा०) पोस्ते का दाना।

**खश्म**- पुं० (फा०) क्रोध, गुस्सा।

**खशमगीं**- वि० (फा०) गुस्से में भरा हुआ। क्रुद्ध।

**खशमनाक**- वि० (फा०) गुस्से में भरा हुआ, क्रुद्ध।

**खस**- स्त्री० (फा०) गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध जड़ जो सुगंधित होती है।यौ०-खस व खाशाक= कूड़ा-करकट।

**खसम**- पुं० (अ० खस्म) १ शत्रु, दुश्मन, २ स्वामी, मालिक। ३ पति। शौहर।

**खसरा**- पुं० (अ० खसरः) १ पटवारी का एक काग़ज जिसमें प्रत्येक खेत का नंबर और रक़्बा आदि लिखा रहता है। २ हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा। पुं० एक प्रकार की खुजली।

**खसलत**- स्त्री० (अ० खस्लत) १ प्रकृति। स्वभाव। २ आदत, बान, टेव।

**खसाँदा**- पुं० (फा० खसाँदः) औषधियों का काढ़ा, क्वाथ।

**खसायल**- पुं० (अ०) "खसलत" का बहु०।

**खसारत**- स्त्री० (अ०) १ हानि। २

पथभ्रष्टता।

खसारा- पुं० (अ० खसारः) घाटा, हानि। नुकसान।

खसासत- स्त्री० (अ०) १ खसीस का भाव। २ दुष्टता। ३ अयोग्यता। ४ कृपणता। कंजूसी।

खसी- स्त्री० (अ०) १ वे पशु जिनके अण्डकोप निकाल लिये गये हों, बधिया। २ हिजड़ा, नपुंसक। ३ बकरी का नर बच्चा। ४ वह स्त्री जिसकी छातियाँ छोटी हों।

खसीस- वि० (अ०) १ दुष्ट, बुरा। २ अयोग्य। ३ कृपण, कंजूस।

खसूफ- पुं० दे० "खुसूफ"।

खसूर- वि० (अ०) दिवालिया।

खसूस- पुं० (अ० खुसूस) विशेपता।

खसूसियत- स्त्री० दे० "खुसूसियत"।

खस्तगी- स्त्री० (फा०) खस्ता होने का भाव, खस्तापन।

खस्ता- वि० (फा० खस्तः) १ टूटा हुआ। भग्न। २ दबाने से जल्दी टूट जाने वाला। चुरमुरा। ३ घायल। ४ दुःखी, खिन्न। यौ०- खराब व खस्ता= दुर्दशग्रस्त। खस्ता व ख्वार-दुर्दशाग्रस्त।

खस्ताहाल- वि० (फा०) दुर्दशाग्रस्थ।

खस्म- पुं०(अ०) १ स्वामी, मालिक, पति। २ शत्रु।

खाँ- पुं० (फा०) खान।

खाक- स्त्री० (फा०) १ धूल, मिट्टी। मुहा०- कहीं पर खाक उड़ना= बरबादी होना, उजाड़ होना, खाक उड़ाना या छानना= मारा-मारा फिरना। खाक में मिलना=बिगड़ना, बरबाद होना। २ तुच्छ। ३ कुछ नहीं।

खाकनाए- स्त्री० (फा०) स्थल-डमरूमध्य।

खाकरोब- पुं० (फा०) झाड़ू देने वाला। भंगी, चमार।

खाकरोबी- स्त्री० (फा०) झाड़ू लगाने का काम।

खाकसार- वि० (फा०) अति दीन, तुच्छ। (प्रायः नम्रता दिखलाने के लिये अपने संबन्धमें बोलते हैं। जैसे-यह खाकसार भी वहाँ मौजूद था।)

खाकसारी- स्त्री० (फा०) बहुत अधिक दीनता या नम्रता।

खाकसीर- स्त्री० (फा० खाकसीरः) खूबकला नामक औपध।

खाक़ा- पुं० (फा० खाकः) १ चित्र आदि का डौल, ढाँचा, नक़्शा। मुहा०-खाका उड़ाना= उपहास करना। २ वह कागज जिसमें किसी काम के खर्च का अनुमान लिखा जाय, चिट्ठा। ३ तखमीना। तकदमा। ४ मसौदा।

खाकान- पुं० (तु०) १ चीन और चीनी तुर्किस्तान के बादशाहों की पुरानी उपाधि। २ बादशाह।

खाकी- वि० (फा०) १ मिट्टी के रंग का। भूरा। २ बिना सींचा हुआ खेत।

खागीना- पुं० (फा० खगीनः) १ सूखा अंडा। २ अंडों की बनी रोटी या तरकारी।

खाज़ना - स्त्री० (फा०) पत्नी की बहन, साली।

खातमा- पुं० (अ० खातिमः) खतम होना। अन्त। समाप्ति। यौ०- खातमा बिल खैर= सकुशल समाप्ति।

खातिम- वि० (अ०) खत्म करने वाला।

खातिर- स्त्री० (अ०) १ आदर। सम्मान २ सत्कार। यौ०- किसी की खातिर= किसी के लिए। किसी के वास्ते। किस खातिर= किस लिए।

खातिरखताह- वि० (अ०) जैसा चाहिए वैसा। मनोवांछित।

खातिरजमा- स्त्री० (अ० खातिर जमऽ) संतोप। इतमीनान। तसल्ली।

खातिर-तवाज़ा- स्त्री० (अ० खातिर तवाजऽ) आदर-सत्कार। आव-भगत।

खातिरदार- पुं० (अ०+फा०) खातिर करने वाला, सम्मान-सत्कार करने वाला।

खातिरदारी- स्त्री० (अ०+फा०) सम्मान। आदर। आव-भगत।

खातिरन्- क्रि० वि० (अ०) खातिर या

लिहाज से।

खातून- स्त्री० (तु०) भले घर की स्त्री। भद्र महिला। यौ०- खातूने खाना=गृहिणी, गृहस्वामिनी।

खादिम- पुं० अ० (बहु० खदम) १ खिदमत करने वाला। सेवक। २ किसी मुसलमानी धर्म-स्थान का पुजारी या अधिकारी।

खादिमा- स्त्री० (अ० खादिमः) सेविका। दासी। मजदूरनी।

खादिमुलखुद्दाम- पुं० (अ०) दासानुदास।

खान- पुं० (फ़ा०) १ फारस के और पठान सरदारों की उपाधि। २ कई गाँवों का मुखिया या सरदार।

खानए-खुदा- पुं० (फा०) मसजिद।

खानक़ाह- स्त्री० (अ०) मुसलमान साधुओं के रहने का स्थान या मठ।

खानखानाँ- पुं० (अ०) सरदारों का सरदार। बहुत बड़ा सरदार।

खानगी- वि० (फा०) निज का। आपस का। घरेलू। घरू। स्त्री० बहुत थोड़ा सा धन लेकर व्यभिचार करने वाली वेश्या।

खानदान- पुं० (फा०) १ कुल, वंश। २ परिवार।

खानदानी- वि० (फा०) १ खानदान-संबन्धी। २ ऊचें खानदान का। ३ पुश्तैनी, पैतृक।

खानम- स्त्री० (फा०) १ खान की स्त्री। २ भले घर की स्त्री। भद्र महिला।

खानमाँ- पुं० (फा०) घर-गृहस्थी का असबाब।

खानवादा- पुं० दे० 'खान्दान।'

खानसामाँ- पुं० (फा०) वह जो खाना बनाता हो। मुसलमान रसोइया। बावर्ची।

खाना- पुं० (फा० खानः) १ घर। मकान। जैसे डाक-खाना, दवाखाना। २ किसी चीज के रखने का घर। केस। ३ विभाग। कोठा। घर। ४ सारिणी या चक्र का विभाग। कोष्ठक।

खानारा- पुं० (फा०) ईश्वर का घर।

खानाखराव- वि० (फा० खानःखराव) १ जिसका घर उजड़ गया हो। २ आवारा। लफंगा।

खानाखराबी- स्त्री० दे० "खाना-बरबादी।"

खानाजंगी- स्त्री० (फा० खानःजंगी) आपस या घर की लड़ाई। गृहयुद्ध।

खानाज़ाद- पुं० (फा० खानःज़ाद) १ वह जो किसी दूसरे के घर में उत्पन्न हुआ या पला हो।

खानातलाशी- स्त्री० (फा० खानःतलाशी) किसी खोई या चुराई हुई चीज के लिए मकान के अन्दर छानबीन करना।

खानादामाद- पुं० (फा०) सुसराल में रहने वाला दामाद, घरजँवाई।

खानादारी- स्त्री० (फा० खानः दारी) गृहस्थी का प्रबन्ध या कार्य।

खानानशीन- वि० (फा० खानःनशीं) जो सब काम छोड़ कर चुपचाप घर में बैठा रहे।

खानापुरी- वि० (फा० खानःपुरी) किसी चक्र या सारिणी के कोठों में यथास्थान संख्या या शब्द आदि लिखना। नक़शा भरना।

खानाबदोश- वि० (फा० खानःबदोश) अपनी गृहस्थी का सब सामान कन्धे या सिर पर रख कर इधर-उधर घूमने वाला। जिसका घर-बार न हो।

खाना बरबादी- स्त्री० (फा० खानःबरबादी) घर या परिवार का विनाश।

खानाशुमारी- स्त्री० (फा०) किसी बस्ती के घरों या मकानों की गणना।

खानासाज़- वि० (फा०) घर में बना हुआ। पुं० खाना बनानेवाला।

खानासोज़- वि० (फा० खानः सोज) घर को बरबाद करने वाला।

खाम- वि० (फा०) १ बिना पका हुआ। कच्चा। २ बुरा। खराब।

खाम-अक्ली- स्त्री० (अ०+फा०) नासमझी। अनुभवहीनता।

खामखयाली- स्त्री० (फा०) व्यर्थ के विचार।

खामखा- क्रि० वि० ( फा० ख्वामहख्वाहः ) व्यर्थ।
खामपारा- वि० स्त्री० ( फा० खामपारः ) १ वह स्त्री जो छोटी अवस्था से ही पुरुष से समागम करने लगी हो। २ दुश्चरित्रा। पुंश्चली।
खामा- पुं० (फा० खाम) कलम। यौ०-खामादान=कलमदान।
खामी- स्त्री० (फा०) १ कच्चापन, कच्चाई। २ त्रुटि। खराबी।
खामुशी- स्त्री० ( फा० )= खामोशी।
खामोश- वि० ( फा० ) चुप, मौन, शांत।
खामोशी- स्त्री० ( फा० ) मौन, चुप्पी, शांति।
खायन- वि० (अ०) खयानत करने वाला, किसी की धरोहर को अपने काम में लाने वाला।
खायफ- वि० ( अ० ) कायर। डरपोक।
खाया- पुं० (फा० खायः ) १ मुरगी का अंडा। २ अंडकोश।
खाया बरदार- वि० ( फा० ) बहुत अधिक चापलूसी और तुच्छ सेवाएँ करने वाला।
खार- पुं० (फा०) १ कंटक, काँटा। २ दाढ़ी मूछ आदि। ३ मनो-मालिन्य। ४ डाह। ईर्ष्या। मुहा०=खार-खाना= मन में द्वेष रखना। ५ खाँग।
खारदार- वि० (फा०) काँटोवाला। कँटीला। पुं० एक प्रकार का सलमा।
खारपुश्त- पुं० ( फा० ) साही नामक जन्तु जिसके शरीर पर बड़े-बड़े काँटे होते हैं।
खार व खस- पुं० ( फा० ) कूड़ा-करकट।
खारा- पुं० ( फा० खारः ) १ कड़ा पत्थर। २ एक प्रकार का कपड़ा। कहते हैं कि यह धूप में रखने पर उसी प्रकार टुकड़े-टुकड़े हो जाता है जिस प्रकार चाँदनी में रखने पर कतान।
खारिज- वि० ( अ० ) १ बाहर किया हुआ, निकाला हुआ, अस्वीकृत। बहिष्कृत। २ भिन्न। अलग। ३ जिस (अभियोग) की सुनाई न हो।
खारिजन्- क्रि० वि० ( अ० ) १ ऊपर से। बाहर से। २ किंवदन्ती के अनुसार।
खारिजा- वि० (अ० खारिजः ) बाहर निकाला या अलग किया हुआ।
खारिजी- पुं० (अ०) १ वह जो किसी समाज या सम्प्रदाय से अलग हो जाये। २ वे मुसलमान जो अली को खलीफा नहीं मानते। ३ सुन्नी मुसलमानों के लिये शीया मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त होने वाला उपेक्षा या घृणासूचक शब्द।
खारिश,खारिश्त- स्त्री० (फा०) खुजली (रोग)।
खारिश्ती- वि० ( फा० ) खारिश से पीड़ित।
खाल- पुं० ( अ० ) मुख आदि पर का काला गोल चिह्न। तिल।
खालसा- पुं० (अ० खालिसः ) १ वह जमीन जिस पर राज्य का अधिकार हो। २ सिक्ख।
खाला- स्त्री० ( अ० खालः ) माँ की बहन। मौसी।
खालाज़ाद- वि० (अ० खालःजाद) मौसेरा।
खालिक़- पुं० ( अ० ) सृष्टिकर्ता। ईश्वर।
खालिस- वि० (अ०) जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो। शुद्ध। विशुद्ध।
खाली- वि० ( अ० ) १ जिसके अन्दर का स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २ जिसपर कुछ न हो। ३ जिसमें कोई एक विशेष वस्तु न हो। मुहा०=हाथ खाली होना=हाथ में रूपया पैसा न होना। निर्धन। खाली-पेट=बिना कुछ अन्न खाये हुए। रहित। विहीन। ४ जिसे कुछ काम न हो। ५ जो व्यवहार में न हो। जिसमा काम न हो (वस्तु) ६ व्यर्थ। निष्फल। मुहा०-निशान या तार खाली जाना=वार निष्फल होना।
खालू- पुं० ( अ० ) माँ का बहनोई। मौसा।
खावर- पुं० ( फा० ) पूर्व दिशा।
खावन्द- पुं० खाविन्द।
खाविन्द- (फा०) १ पति। स्वामी। २ मालिक।

खाविन्दी- स्त्री० (फा०) १ स्वामी का भाव या गुण। २ पतित्व। ३ कृपा। अनुग्रह।
खाशाक- पुं० (फा०) कूड़ा-करकट।
खास- वि० (अ०) विशेप। मुख्य। प्रधान। "आम" का उलटा।
मुहा०-खासकर=विशेपतः। २ निजका। आत्मीय। ४ स्वयं। खुद। ४ ठीक। ठेठ। विशुद्ध।
खासकर- क्रि० वि० (अ०+हिं०) विशेपतः। विशेप रूपसे।
खासदान- पुं० (अ०+फा०) पानदान। पन-डब्बा।
खास-नवीस- पुं० (अ०+फा०) बड़े आदमी या राजा का व्यक्तिगत लेखक। प्राइवेट सेक्रेटरी।
खास-बरदार- पुं० (अ०+फा०) वह जो किसी राजा या बड़े सरदार के अस्त्र-शस्त्र आदि लेकर चलता हो।
खास-महल- पुं० (अ०) १ वह महल जिसमें केवल विवाहिता स्त्रियाँ रहती हो। २ विवाहित स्त्री या रानी।
खास-महाल- पुं० (अ०) वह जमींदारी जिसका प्रबन्ध सरकार स्वयं करती हो।
खास व.आम- पुं० (अ०) बड़े और छोटे सब लोग।
खासा- पुं० (अ० खासः) १ बड़े आदमियों का भोजन। २ एक प्रकार की बढ़िया मलमल। ३ वह अस्तबल जिसमें स्वयं बादशाह की सवारी और पसन्द के हाथी-घोड़े आदि रहते हों। ४ प्रकृति। स्वभाव। वि० १ अच्छा। बढ़िया। २ स्वस्थ। नीरोग। ३ मध्यम श्रेणी का। ४ सुडौल। सुन्दर। ५ भरपूर। पूरा।
खासियत- स्त्री० (अ०) १ प्राकृतिक गुण। प्रकृति। २ विशेपता।
खासगी- स्त्री० (अ० खास+फा० गी) राजा की वह बाँदी जो रखैल हो।
खास्सा- पुं० (अ० खास्सः) किसी व्यक्ति या वस्तु का विशेप गुण।
खाहमखाह- क्रि० वि० दे० 'ख्वाहमख्वाह।'
खिजर- पुं० दे० 'खिज्र।'
खिज़ाँ- स्त्री० (फा०) १ हेमन्त ऋतु जब कि वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं। २ पतझड़। ३ ह्रास या पतन के दिन।
खिजाब- पुं० (अ०) सफेद बालों को काला करने की औपधि। केश-कल्प।
खिजालत- स्त्री० (अ०) शरमिन्दगी।
खिजीना- पुं० दे० 'खजाना'।
खिज्र- पुं० (अ०) १ एक प्रसिद्ध पैगम्बर जो वनों और जल के स्वामी तथा भूले-भटकों के मार्गदर्शक माने जाते हैं। २ मार्ग-दर्शक।
खिताब- पुं० (अ०) १ पदवी। उपाधि। २ किसी से कुछ कहना। सम्बोधना।
खित्ता- पुं० (अ० खित्तः) १ जमीन का टुकड़ा। २ प्रदेश।
खित्वत- स्त्री० (अ० सगाई, मँगनी।
खिदमत- स्त्री० (अ० खिद्मत) सेवा। यौ०- बखिदमत=सेवा में।
खिदमतगार- पुं० (अ०+फा०) ( खिदमतगारी) खिदमत करनेवाला सेवाक। टहलुआ।
खिदमत गुजार- वि० (अ० खिद्मत+फा०) ( खिदमत-गुजारी) स्वामिनिप्ठ सेवक।
खिदमती- पुं० (अ०) खिदमतगार, सेवक।
खिदमात- स्त्री० (अ०) 'खिदमत' का बहु०।
खिफ्फत- स्त्री० (अ०) १ लाज, शर्म। २ अप्रतिप्ठा। हेठी। अपमान।
खिरका- स्त्री० (अ० खिरक़ः) फकीरों के ओढ़ने की गुदड़ी। यौ०- खिरकापोश=भिखमंगा। २ साधु और त्यागी।
खिरद- स्त्री० (फा०) बुद्धि।
खिरदमन्द- वि० (फा०) बुद्धिमान। अक्लमन्द।
खिरमन- वि० (फा०) १ काटी हुई फसल का ढेर। २ खलिहान।
खिराज- (अ०) राज-कर। राजस्व।
खिराजी- वि० (अ० 'खिराज'से फा०) १

खिराजसम्बन्धी। २ जिसपर खिराज लगता या उसे खिराज देता हो।
खिराम- स्त्री० (फा०) १ चलना। गति। चाल। २ धीरे-धीरे और नखरे से चलना। मस्तानी चाल।
खिरामाँ- वि० (फा०) मस्तानी चाल से चलनेवाला। मुहा०-खिरामाँ-खिरामाँ=मस्ती की चाल से धीरे धीरे (चलना)।
खिर्मन- पुं० (अ०) खलिहान।
खिर्स- पुं० (फा०) भालू। रीछ।
खिलअत- स्त्री० (अ०) वह वस्त्र जो राजा की ओर से सम्मानार्थ मिलता है। (अ० में यह पुं० है।)
खिलवत- स्त्री० (अ०) शून्य या निर्जन स्थान। एकान्त।
खिलाफ- वि० (अ०) विरुद्ध। उलटा। विपरीत। यौ०-खिलाफ दस्तूर या खिलाफ मामूल=प्रचलित प्रणाली या नियमों के विपरीत।
खिलाफ गोई- स्त्री० (अ०+फा०) झूठ बोलना। मिथ्यावादिता।
खिलाफत- स्त्री० (अ० १ खलीफाका पद या भाव। २ उत्तराधिकार। ३ समस्त मुसलमान बादशाहों पर होनेवाला खलीफा का अधिकार।
खिलाफ-वर्ज़ी- स्त्री० (अ०+फा०) १ आज्ञा आदि की अवहेला। अवज्ञा। २ अनुचित आचरण।
खिलाल- स्त्री० (अ०) १ खेल आदि में होनेवाली हार। २ धातु का वह टुकड़ा जिससे दाँत खोदते हैं। ३ अन्तर। दूरी।
खिल्कत- स्त्री० (अ०) १ उत्पन्न या सृजन करना। २ प्राकृतिक संघटन। ३ जन-समूह।
खिल्की- वि० (अ०) १ प्राकृतिक । २ जन्म-जात। पैदाइशी।
खिल्त- पुं० (अ०) १ शरीर में का कफ। २ प्रकृति।
खिश्त- स्त्री० (अ०) ईंट।
खिश्तक- स्त्री० (फा०) १ कपड़े का वह टुकड़ा जो पायजामे के दोनों पायचों के ऊपर उन्हें जोड़ने के लिये लगाया जाता है। मियानी। २ पायजामा।
खिश्ती- वि० (अ०) ईंटों का बना हुआ (मकान आदि)।
खिसाँदा- पुं० (फा० खिसाँदः) दवाओं का काढ़ा, क्वाथ।
खिसारा- पुं० (अ० खसारः) हानि, क्षति।
खिसाल- पुं० (अ०) 'खसलत' का बहु०।
खिस्सत- स्त्री० (अ०) कृपणता, कंजूसी।
खीमा- पुं० दे० 'खेमा'।
खीरा- वि० (फा० खीरः) (सं० खीरमी) १ अंधेरा, तारीक। २ दुष्ट, पाजी।
खुतका- पुं० (फा० खुतकः) १ मोटी लकड़ी, डंडा। २ पुरुष की इंद्रिय।
खुतबा- पुं० (अ० खुत्बः) १ तारीफ, प्रशंसा। २ सामयिक राज की प्रशंसा या घोषणा। मुहा०- किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना= सर्वसाधारण को सूचना देने के लिये किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना।
खुतूत- पुं० (अ० 'खत' का बहु०।
खुत्तामा- स्त्री० (अ० खुत्तामः) दुश्चरित्रा स्त्री, पुंश्चली, कुलटा।
खुद- वि० (फा०) स्वयं, आप।
खुद-आराई- स्त्री० (फा०) अपनी शोभा या मान आदि स्वयं बनाने का प्रयत्न करना।
खुद-करदा- वि० (फा० खुद-कर्दः) अपना किया हुआ।
खुदकुशी - स्त्री० खुदकुशी।
खुद-काम- वि० (फा०) स्वार्थी, मतलबी।
खुदकाश्त- वि० (फा०) जमीन जिसे उसका मालिक स्वयं जोते-बोये।
खुदकुशी- स्त्री० (फा०) अपनी जान आप देना, आत्म-हत्या।
खुदग़रज- वि० (फा०) (सं० खुदग़रजी) स्वार्थी, मतलबी।
खुदनुमा- वि० (फा०) (सं० खुदनुमाई) १ लोगों को अपना बड़प्पन दिखलाने वाला। २

अभिमानी, घमंडी।
खुदपरस्त- वि० (फा०) (सं० खुदपरस्ती) स्वार्थी, मतलबी।
खुदपसन्द- वि० (फा०) (सं० खुद-पसन्दी) अपने आपको बहुत अच्छा समझने वाला।
खुदबखुद- क्रि० वि० (फा०) स्वतः, आपसे आप।
खुदबीं (न)- वि० (फा०) (सं० खुद-बीनी) जो अपने समान और किसी को न समझे। जिसे अपने सिवा और कोई दिखाई न पड़े। अभिमानी, घमंडी।
खुदमुख्तार- वि० (फा०) (सं० खुदमुख्तारी) स्वतंत्र, आज़ाद।
खुदराय- वि० (फा०) (सं० खुदराई) स्वेच्छाचारी।
खुदरौ- वि० (फा०) आपसे आप उगने वाला, जंगली। (पौधा या वृक्ष)
खुदसर- वि० (फा० खुदसरी) १ जो किसी के अधीन न हो, स्वतन्त्र। २ मनमानी करनेवाला, स्वेच्छाचारी।
खुद-सिताई- स्त्री० (फा०) अपनी प्रशंसा आप करना।
खुदा- पुं० (फा०) ईश्वर, परमात्मा। यौ०- खुदा न ख्वास्ता= खुदा न करे। खुदा लगती= बिलकुल सच (बात)।
खुदाई- स्त्री० (फा०) १ ईश्वरता। २ सृष्टि, संसार, वि० ईश्वरीय।
खुदाई-रात- स्त्री० (फा०+हिं०) एक प्रकार का उत्सव जिसमें मुसलमान स्त्रियाँ रात भर जागकर खुदा को याद करती हैं।
खुदा का घर- पुं० (फा०+हिं०) मसजिद।
खुदा तर्स- वि० (फा०) (सं० खुदातर्सी) १ मन में ईश्वर का भय रखनेवाला। २ दयालु, कृपालु।
खुदाताला- पुं० (फा०) ईश्वर।
खुदादाद- वि० (फा०) ईश्वर का दिया हुआ, ईश्वरदत्त।
खुदापरस्त- वि० (फा०) (सं० खुदापरस्ती) १ ईश्वर की उपासना करने वाला, आस्तिक। २ दयालु।
खुदापरस्ती- स्त्री० (फा०) १ धर्मनिष्ठता, आस्तिकता। २ दयालुता।
खुदाया- सम्बोधन (फा०) हे ईश्वर!
खुदावन्द- पुं० (फा०) १ मालिक, स्वामी। २ बहुत बड़े लोगों के लिए सम्बोधन।
खुदावन्दी- स्त्री० (फा०) ईश्वरता, ईश्वरत्व, खुदाई।
खुदाहाफिज़- पद (फा०) ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। (प्रायः विदा होने के समय कहते हैं)।
खुदी- स्त्री० (फा०) १ 'खुद' का भाव, आपा। २ अहंभाव अहंमन्यता। ३ स्वार्थपरता।
खुनक- वि० (फा० खुनुक) बहुत ठंढा।
खुनकी- स्त्री० (फा० खुनुकी) शीतलता, ठंढक।
खुन्सा- पुं० (खुन्सः) १ वह कल्पित व्यक्ति जिसके विपय में कहते हैं कि वह छः महीने पुरुप और छः महीने स्त्री रहता है। २ हिजड़ा, नपुंसक। ३ व्याकरण में नपुंसक लिंग।
खुफिया- वि० (अ० खुफियः) छिपा हुआ, गुप्त। क्रि० वि० गुप्त रूप से।
खुफिया-नवीस- वि० (अ०+फा०) (सं० खुफियानवीसी) गुप्त रूप से समाचार लिखकर भेजने वाला।
खुफ्तः - वि० (फा०) सोया हुआ, सुप्त।
खुबासब- स्त्री० (अ०) खबीसपन, नीचता, दुप्टता।
खुम- पुं० (फा०) १ घड़ा, मटका। २ मद्य रखने का पात्र।
खुम-कदा- पुं० (अ०+फा०) मधुशाला, कलवरिया।
खुम-खाना- पुं० (अ०+फा०) मधुशाला। कलवरिया।
खुमरा- पुं० (अ० कंबर) (स्त्री० खुमरी) एक प्रकार के मुसलमान फकीर। स्त्री० (अ०) खज़ूर के पत्तों की छोटी चटाई जिसपर नमाज पढ़ते हैं।

खुमार- पुं० (फा०) १ मद, नशा। २ नशा उतरने के समय की हलकी थकावट। ३ रात-भर जागने के कारण होनेवाली थकावट।

खुमार-आलूदा- वि० (अ०+फा०) खुमार से भरा हुआ।

खुमारी- स्त्री० दे० 'खुमार'।

खुम्र- स्त्री० (अ०) शराब।

खुरज़ी- स्त्री० (फा० खुर्जी) १ घोड़े, बैल आदि पर सामान रखने का झोला। २ बड़ा थैला।

खुरदा- पुं० (फा० खुर्दः) १ छोटी-मोटी चीज। २ छोटा सिक्का। रेज़गी। वि० खुदरा, चुट-फुट।

खुरदा-फरोश- पुं० (फा० खुर्दाफरोश) (सं० खुरदाफरोशी) छोटी-मोटी और फुटकर चीजें बेचने वाला।

खुरफा- पुं० (अ० खुर्फः) कुलफा नामक साग।

खुरमा- पुं० (फा० खुर्मः) १ छुहारा। २ एक प्रकार का पकवान या मिठाई।

खुरशीद- पुं० (फा०) सूर्य।

खुरशैद- पुं० खुर्शीद।

खुराक- स्त्री० (फा०) १ भोजन। २ पौष्टिक भोजन।

खुराकी- स्त्री० (फा० खुराक) भोजन-व्यय।

खुराफत- दे० स्त्री० 'खुराफात'।

खुराफात- स्त्री० (अ०) १ बेहूदा और रद्दी बात। २ गाली-गलौज। ३ झगड़ा-बखेड़ा।

खुरासान- पुं० (फा०) (वि० खुरासानी) फारस का एक सूबा जो अफगानिस्तान के पश्चिम में है।

खुरूस- पुं० (फा०) मुरगा। कुक्कुट।

खुर्द- वि० (फा०) छोटा। 'कलाँ' का उलटा। यौ०- खुर्द व कलाँ= छोटे और बड़े सब।

खुर्द-बीन- स्त्री० (फा० खुर्दबीं) सूक्ष्मदर्शक यंत्र।

खुर्द-बुर्द- पुं० (फा०) १ अनुचित रूप से प्राप्त किया हुआ धन। २ अपव्यय, धन का नाश। वि० १ नष्ट। २ अपहृत।

खुर्दमहल- पुं० (अ०+फा०) १ वह महल जिसमें रखेली स्त्रियाँ रहती हों। १ रखी हुई स्त्री। रखनी।

खुर्दसाल- वि० (फा०) (स्त्री० खुर्दसाली, अल्पवयस्क, छोटी उमर का।

खुर्दा- वि० (फा०) खुदरा, फुटकर। वि० (फा० खुर्दः) खाया हुआ। जैसे- किर्मखुर्दा= कीड़ों का खाया हुआ।

खुर्दी- स्त्री० (फा०) छोटापन।

खुर्रम- वि० (फा०) १ ताजा सींचा हुआ। २ प्रसन्न, बहुत खुश।

खुर्रमी- स्त्री० (फा०) प्रसन्नता, खुशी।

खुर्सन्द- वि० (फा०) प्रसन्न, खुश।

खुलफा- पुं० 'खलीफा' का बहुवचन।

खुलासा- वि० (अ० खुलासः) १ खुला हुआ। २ अवरोध-रहित। ३ साफ-साफ। स्पष्ट। पुं० संक्षिप्त विवरण, सारांश।

खुलूस- पुं० (अ०) १ सरलता और निष्कपटता। २ सच्चाई। ३ निष्ठा।

खुल्क़- पुं० (अ०) सुशीलता, सज्जनता।

खुल्द- पुं० (अ०) बहिश्त। स्वर्ग। यौ०- खुल्दे दरीं= ऊपर का स्वर्ग।

खुश- वि० (फा०) १ प्रसन्न, मगन, आनन्दित। यौ०- खुश व खुर्रम= प्रसन्न और आनन्दित। २ अच्छा। जैसे- खुशहाल।

खुशअतवार- वि० (फा०) जिसका तौर-तरीक़ा बहुत अच्छा हो।

खुश-अमल- वि० (फा०+अ०) उत्तम आचरण वाला, सदाचारी।

खुशअसलूब- वि० (फा०) (सं० खुश-असलूबी) १ सुडौल। २ सब तरह ठीक।

खुश-इलहान- वि० (फा०) (सं० खुशइलहानी) १ ज़िसका स्वर बहुत मनोहर हो। २ अच्छा गानेवाला।

खुशकदम- वि० (फा०+अ०) जिसके घर में

आने पर खुशहाली आए, जिसका घर में पदार्पण शुभ हो।

खुशकिस्मत- वि० (फा०+अ०) सौभाग्यशाली।

खुशकिस्मती- स्त्री० (फा०+अ०) सौभाग्य।

खुश-खत- वि० (फा०) सुन्दर अक्षर लिखने वाला। पुं० सुंदर लिखावट।

खुश-खबर- वि० (फा०) शुभ समाचार सुनाने वाला।

खुशखबरी- स्त्री० (फा०) शुभ समाचार।

खुश-खल्क़- वि० (फा०) (सं० खुशखुल्की) उत्तम स्वभाव वाला।

खुशगवार- वि० (फा०) अच्छा लगने वाला, प्रिय, मनोहर, रुचिकर।

खुशगुलू- वि० (फा०) जिसका स्वर बहुत सुन्दर हो।

खुश-ज़ायक़ा- वि० (फा०) स्वादिष्ट।

खुशतबा- वि० (फा० खुश+अ० तब्अ) खुशमिज़ाज।

खुशदामन- स्त्री० (फा०) सास, पत्नी की माता।

खुशनवीस- वि० (फा०) (सं० खुशनवीसी) सुंदर अक्षर लिखने वाला।

खुशनसीब- वि० (फा०) (सं० खुशनसीबी) भाग्यवान्, किस्मतवर।

खुशनुमा- वि० (फा०) (सं० खुशनुमाई) जो देखने में भला लगे, सुन्दर, खूबसूरत।

खुशनूद- वि० (फा०) प्रसन्न, संतुष्ट।

खुशनूदी- स्त्री० (फा०) प्रसन्नता। यौ०- खुशनूदी मिज़ाज= मिजाज या तबीयत की प्रसन्नता।

खुश-बयान- वि० (फा०) (सं० खुशबयानी) सुंदर वर्णन करने वाला, सुवक्ता।

खुश-बू- स्त्री० (फा०) सुगन्धि।

खुशबूदार- वि० (फा०) उत्तम गंधवाला, सुगन्धित।

खुशमिज़ाज- वि० (फा०) (सं० खुशमिज़ाजी) १ जिसका मिज़ाज या स्वभाव बहुत अच्छा हो, प्रसन्नचित।

खुशमिज़ाजी- स्त्री० (फा०+अ०) सदा खुश रहने का स्वभाव, प्रसन्नचित्तता।

खुशरंग- वि० (फा०) जिसका रंग बहुत सुन्दर हो।

खुशवक्त- वि० (फा०) (सं० खुशवक्ति) प्रसन्न, सुखी।

खुशहाल- वि० (फ़ा०) (सं० खुशहाली) १ सुखी। २ सम्पन्न।

खुशामद- स्त्री० (फा०) प्रसन्न करने के लिए झूठी प्रशंसा, चापलूसी।

खुशामद-पसंद- वि० (फा०) चापलूस, खुशामदी।

खुशामदी- वि० (फा०) खुशामद करने वाला, चापलूस।

खुशी- स्त्री० (फा०) १ आनन्द, प्रसन्नता। २ इच्छा। जैसे- जैसी आपकी खुशी।

खुश्क- वि० (फा०) १ जो तर न हो, शुष्क, सूखा। २ जिसमें रसिकता न हो, रूखे स्वभावका, नीरस। ३ बिना किसी और आमदनी के। ४ केवल, मात्र।

खुश्क-साली- स्त्री० (फा०) वह वर्ष जिसमें वर्षा न हो और अकाल पड़े।

खुश्का- स्त्री (फा० खुश्कः) पकाया हुआ चावल, भात।

खुश्की- स्त्री० (फा०) १ सूखापन, शुष्कता। २ नीरसता। ३ स्थल या भूमि।

खुसर- पुं० (फा०) श्वसुर, ससुर।

खुसरवाना- वि० (फा० खुसरवानः) बादशाहोंका, शाही, राजकीय।

खुसरू- पुं० (फा० खुस्रो) बादशाह, सम्राट्।

खुसिया- पुं० (अ० खुसियः) अंडकोश।

खुसिया-बरदार- वि० (अ० + फा०) (सं० खुसिया-बरदारी) बहुत अधिक खुशामद और तुच्छ सेवाएँ करने वाला।

खुसुर- पुं० (फा०) श्वसुर।

खुसूफ- पुं० (अ०) १ जमीन में धँसना। २ चन्द्र-ग्रहण।

खुसूमत- स्त्री० (अ०) शत्रुता, दुश्मनी।

खुसूसन- क्रि० वि० (अ०) खास तौर पर, विशेप रूप से, विशेपतः।

खुसूसियत- स्त्री० (अ० खुसूसीयत) विशेषता, विशिष्टता।
खूँ- पुं० (फा०) खून।
खूँख्वार- वि० (फा०) (सं० खूँख्वारी) १ खून पीने वाला। २ पशुओं को खाने वाला। (पशु)।
खूँबहा- पुं० (फा०) वह धन जो किसी की हत्या होने पर व्यक्ति के संबंधियों को दिया जाय।
खूँ-रेज- पुं० (फा०) खून बहाने वाला, रक्तपात करने वाला।
खूँ-रेजी- स्त्री० (फा०) खून बहाना, रक्तपात।
खू- स्त्री० (फा०) आदत, खसलत, बान। यौ०- खू-बू= रंग-ढंग, तौर-तरीका।
खूक- पुं० (फा०) शूकर, सूअर।
खूगर- वि० (फा०) जिसे किसी बात की खू या आदत पड़ गई हो, अभ्यस्त।
खूगीर- पुं० दे० 'खोगीर'।
खूजादी- स्त्री (फा०) १ रोटी। २ भोजन।
खून- पुं० (फा०) (यौ०- में 'खूँ' रूप होता है।) १ रक्त, रुधिर। मुहा०- खून उबलना या खौलना= क्रोध से शरीर लाल होना, गुस्सा चढ़ना। खून का प्यासा= वध का इच्छुक। खून सफेद होना= सौजन्य या मुरव्वत का बिलकुल न रह जाना। खून सिर पर चढ़ना या सवार होना= किसी को मार डालने या इसी प्रकार का और अनिष्ट करने पर उद्यत होना। खून पीना= मार डालना। २ वध। हत्या। यौ०- खूने नाहक= बेवजा किया हुआ खून।
खून-आलूदा- वि० (फा० खून+आलूदः) खून में भरा या भीगा हुआ।
खूनी- वि० (फा०) १ मार डालने वाला, हत्यारा, घातक। २ अत्याचारी।
खूब- वि० (फा०) अच्छा, भला, उमदा, उत्तम।
खूबकलाँ- स्त्री० (फा०) फारसकी एक घास के बीज, खाकसीर।
खूबतर- वि० (फा०) बहुत अच्छा।
खूबतरीन- वि० (फा०) सबसे अच्छा, उत्तम, सर्वोत्तम।
खूबसूरत- वि० (फा०) (सं० खूबसूरती) सुन्दर, रूपवान।
खूबरू- वि० (फा०) सुन्दर, खूबसूरत। स्त्री० प्रियतमा।
खूब-रुई- स्त्री० (फा०) सुन्दरता, खूबसूरती।
खूबाँ- पुं० (फा०) सुन्दरी स्त्रियाँ, सुन्दरियाँ, नायिकाएँ।
खूबानी- स्त्री० (अ०) जरदालू नामक फल।
खूबी- स्त्री० (फा०) १ भलाई, अच्छाई, अच्छापन। २ गुण, विशेषता।
खूर- वि० (फा०) खाने-पीनेवाला। स्त्री० भोजन। यौ०- खूर व पोश= खाना-कपड़ा। खूर व नाश= खाना-पीना।
खूरा - पुं० (फा० खूरः) कुष्ठ, कोढ़ रोग।
खूराक- स्त्री० (फा० खुराक) भोजन, खाना।
खूरिश- स्त्री० (फा०) खाने-पीने की सामग्री, भोजन।
खूलंजान- पुं० (अ०) पान की जड़, कुलंजन।
खेमा- पुं० (अ० खेमः) तंबू, डेरा।
खेमा-गाह- पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ बहुत से खेमे लगे हों।
खेमा-दोज़- पुं० (अ०+फा०) खेमा बनाने वाला।
खेश- वि० (फा० ख्वेश) अपना। पुं० १ सम्बन्धी, रिश्तेदार। यौ०- खेश-व-अकारिब= रिश्ते-नाते के लोग। २ दामाद, जामाता।
खैयाम- पुं० खय्याम।
खैर- स्त्री० (फा०) कुशल-क्षेम। यौ०- खैर-आफियत= कुशल। अव्य० १ कुछ चिन्ता नहीं, कुछ परवा नहीं। २ अस्तु, अच्छा।
खैर-अन्देश- वि० (अ०+फा०) (सं० खैर-अन्देशी) शुभ-चिन्तक।

खैर-ख्वाह- वि० (अ०+फा०) (सं० खैरख्वाही) शुभ-चिन्तक, हितैषी।
खैरबाद- पुं० (फा०) कुशल हो, कुशल रहे। (प्रायः बिदाई के समय कहते हैं।)
खैर-मक़्दम- पुं० (अ०) शुभागमन, स्वागत। (प्रायः किसी के आने पर कहते हैं।)
खैरात- स्त्री० (अ०) दान-पुण्य।
खैराती- वि० (अ०) खैरात-सम्बन्धी, खैरात या दान का।
खैराद - पुं० (फा०) वह औजार जिस पर चढ़ाकर लकड़ी या धातु की चीजें चिकनी और सुडौल की जाती हैं, खराद।
खैरियत- स्त्री० (फा०) १ कुशल-क्षेम, राजी-खुशी। २ भलाई, कल्याण।
खैल - पुं० (अ०) झुण्ड, गिरोह, समूह।
खैला- स्त्री० (फा०) फूहड़ स्त्री।
खैला-पन- पुं० (फा० + हिं०) फूहड़पन।
खो- स्त्री० दे० 'खू'।
खोगीर- पुं० (फा०) वह मोटा कपड़ा जिसके ऊपर रखकर घोड़े पर जीन कसते हैं। मुहा०- खोगीर की भर्ती= व्यर्थ की और रद्दी चीजें।
खोजा- पुं० (फा० ख्वाजः) वह जो महलों में सेवा करने के लिए हिजड़ा बनाया गया हो, ख्वाजसरा।
खोद- पुं० (फा०) युद्ध में पहनने का लोहे का टोप, कूँड़, शिरस्त्राण।
खोनचा- पुं० दे० 'ख्वानचा'।
खोर- वि० (फा० खूर) खानेवाला। यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे- नशाखोर।
खोलंजन- पुं० (फा०) पानकी जड़, कुलंजन।
खोशा- (पुं०) (फा० खोशः) १ अनाज की बाल। २ छोटे-छोटे फलों आदि का गुच्छा।
खोशा-चीं- वि० (फा०) (सं० खोशाचीनी।) अनाज की बालें या फलोंके गुच्छे आदि चुनने वाला, सिला बीनने वाला।
खौज़- पुं० (अ०) गहन विचार। यौ०- गौर व खौज= चिन्तन और गम्भीर विचार।
खौफ- पुं० (अ०) डर, भय।
खौफनाक- वि० (फा०) भयंकर, भयानक।
ख्वाँ- वि० (फा०) १ पढ़ने वाला। २ कहने या गाने वाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- किस्साख्वाँ।)
ख्वादगी- स्त्री० (फा०) शिक्षा।
ख्वादाँ- वि० (फा० ख्वाँदः) १ पढ़ा हुआ। शिक्षित। यौ०- नाख्वाँदा= अशक्षित, अनपढ़।
ख्वाजा- पुं० (फा० ख्वाजः) १ घर का मालिक, गृह-स्वामी। २ सरदार, नेता। ३ सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति। ४ वह व्यक्ति जो हिजड़ा बनाकर महलों में सेवा आदि के लिए रखा जाव।
ख्वाजाखिज्र- पुं० दे० 'खिज्र'।
ख्वाजा-सरा- पुं० (फा०) वह जो महलों में सेवा करने के लिए हिजड़ा बनाया गया हो, खोजा।
ख्वातीन- स्त्री० 'खातून' का बहु०।
ख्वान- पुं० (फा०) बड़ी थाली या तश्तरी जिसमें भोजन करते हैं।
ख्वानचा- पुं० (फा० ख्वान्चः) १ छोटा ख्वान। २ वह थाल जिसमें रखकर मिठाई आदि खाने-पीने की चीजें बेचते हैं, खोनचा।
ख्वान-पोश- पुं० (फा०) ख्वान के ऊपर ढँकने का कपड़ा।
ख्वानी- स्त्री० (फा०) पढ़ने की क्रिया या भाव। जैसे- कुरानख्वानी।
ख्वाब- पुं० (फा०) १ सोना, निद्रा लेना। २ स्वप्न, सपना।
ख्वाब-आलूदा- वि० (फा०) जिसमें नींद भरी हो (आँख)।
ख्वाबगाह- स्त्री० (फा०) सोनेका स्थान, शयनागार।
ख्वाबीदा- वि० (फा० ख्वाबीदः) सोया हुआ, सुप्त।
ख्वार- वि० (फा०) १ खानेवाला। जैसे- नमक-ख्वार, शराब-ख्वार। २ दुर्दशाग्रस्त,

खराब। ३ अनादृत, तिरस्कृत।

ख्वारी- स्त्री० (फा०) १ दुर्दशा, खराबी। २ अप्रतिप्ठा, अनादर।

ख्वास्त- स्त्री० (फा०) इच्छा, कामना, ख्वाहिश।

ख्वास्तगार- वि० (फा०) (सं० ख्वास्तगारी) किसी बात की इच्छा या आकांक्षा रखने वाला, इच्छुक।

ख्वाह- वि० (फा०) चाहने वाला, इच्छुक। जैसे- तरक्की-ख्वाह = तरक्की चाहने वाला। स्त्री० कामना, इच्छा। जैसे- हसब-ख्वाह= इच्छानुसार। खातिर-ख्वाह= संतोपजनक। अव्य० या अथवा, या तो।

ख्वाहमख्वाह- क्रि० वि० (फा०) १ चाहे इच्छा हो और चाहे न हो, जबरदस्ती। २ अवश्य।

ख्वाहाँ- वि० (फा०) चाहनेवाला इच्छुक, अभिलापी।

ख्वाहिश- सं० स्त्री० (फा०) इच्छा, चाह, अभिलापा, आकांक्षा।

ख्वाहिश-मन्द- वि० (फा०) इच्छुक, अभिलापी।

(ग)

गंग- स्त्री० (फा०) गंगा नदी।

गंगोजमन- स्त्री० (फा०) गंगा और यमुना

गंज- पुं० (फा०) १ खजाना, कोश। २ ढेर, राशि, अटाला। ३ समूह, झुण्ड। ४ गल्ले की मंडी, गौला, हाट। ५ वह चीज जिसके अन्दर बहुत-सी काम की चीजें हों।

गंजफा- पुं० दे० 'गंजीफा'।

गंजीना- पुं० (फा० गंजीनः) खजाना, कोश।

गंजीफा- पुं० (फा० गंजी फः) एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गंजूर- पुं० (फा०) खजाना, कोश।

गंदा- वि० गन्दा।

गज़- पुं० (फा०) १ लम्बाई नापने की एक नाप जो सोलह गिरह या तीन फुट की होती है, इसके सिवा इलाही और देशी आदि कई प्रकार के गज़ होते हैं। २ लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बन्दूक भरी जाती है। ३ एक प्रकार का तीर।

ग़ज़क- स्त्री० (फा०) १ वह चीज जो शराब पीने के बाद मुँहका स्वाद बदलने के लिये खाई जाती है, चाट। २ तिल-पपड़ी, तिल-शकरी। ३ नाश्ता, जल-पान।

ग़ज़नवी- वि० (फा० गज्नवी) गज्नी नगर का निवासी।

ग़ज़नफर- पुं० (अ०) सिंह, शेर।

ग़ज़न्द- पुं० (फा०) १ कप्ट तकलीफ। २ हानि, नुकसान।

गजन्फर- पुं० (अ०) शेर, बाघ।

ग़ज़ब- पुं० (अ०) १ कोप, रोप, गुस्सा। २ आपत्ति, आफत, विपत्ति, अंधेर, अन्याय, जुल्म। ४ विलक्षण बात। वि० १ बहुत अधिक, बहुत । २ विलक्षण। मुहा०- गजब का= विलक्षण, अपूर्व। ३ बहुत खराब, बहुत बुरा।

ग़ज़ब-नाक- वि० (अ० ग़ज़ब) बहुत गुस्से में भरा हुआ, बहुत क्रुद्ध।

ग़ज़बी- वि० (अ० ग़ज़ब) क्रोधी और दुप्ट।

ग़ज़ल- स्त्री० (अ०) (बहु० ग़ज़लियात) फारसी और उर्दू में एक प्रकार की कविता, जिसमें एक ही वजन और क़ाफिये के अनेक शेर होते हैं और प्रत्येक शेर का विपय प्रायः एक दूसरे से स्वतन्त्र होता है।

ग़ज़ाला- पुं० (अ०) हिरन का बच्चा।

ग़ज़ी- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा, गाढ़ा, सल्लम, खादी।

ग़दर- पुं० (अ० ग़द्र) १ हलचल, खलबली, उपद्रव। २ बलवा, बग़ावत, विद्रोह।

गदा- पुं० (फा०) भिक्षुक, भिखमंगा।

गदाई- स्त्री० (फा०) भिखमंगी, भिक्षा-वृत्ति। वि० १ नीच, क्षुद्र। २ वाहियात, रद्दी।

ग़दीर- वि० (अ०) धोखेबाज।

ग़द्दार- वि० (अ०) १ बहुत बड़ा गदर करने वाला, भारी विद्रोही। २ बहुत बड़ा बेवफा।

ग़नी- पुं० (अ०) बहुत बड़ा धनवान्, परम स्वतंत्र।

ग़नीम- पुं० (अ०) १ शत्रु, दुश्मन। २ लुटेरा, डाकू। ३ प्रतिद्वंद्वी।

गनीमत- स्त्री० (बहु० ग़नायम) १ लूटका माल। २ वह माल जो बिना परिश्रम मिले, मुफ्त का माल। ३ सन्तोष की बात।

ग़नूदगी- स्त्री० (फा०) १ ऊँघने की क्रिया या भाव, ऊँघ।

गन्द- स्त्री० (फा०) दुर्गंध, बदबू।

गन्दगी- स्त्री० (फा०) १ बदबू। २ मैलापन, मलीनता। ३ अपवित्रता, अशुद्धता, नापाकी। ४ मैला, ग़लीज़, मल।

गन्दा- वि० (फा० गन्दः) १ मैला, मलिन। २ नापाक, अशुद्ध। ३ घिनौना, घृणित।

गन्दीदा- वि० (फा० गन्दीदः) दुर्गंधयुक्त, बदबूदार।

गन्दुम- पुं० (फा० मि० सं० गोधूम) गेहूँ। मुहा०- गन्दुमनुमा जौफरोश= १ पहले गेहूँ दिखलाकर फिर उसके बदले में जौ तौलने वाला। २ बहुत बड़ा धूर्त।

गन्दुमी- वि० (फा०) गेहूँ के रंग का, गेहुँआँ।

ग़प- स्त्री० (फा०) १ व्यर्थ की बात-चीत, बकवाद। २ अफवाह, किंवदंती।

ग़पबाज़- वि० (फा०) गप्पें हाँकने वाला, गप्पी।

ग़पबाज़ी- स्त्री० (फा०) गप्पें हाँकने का काम।

ग़फ- वि० (फा०) घना, ठस, गाढ़ा, घनी बुनावट का।

ग़फलत- स्त्री० (अ० गफ्लत) १ असावधानी, बेपरवाही। २ बेखबरी, चेत या सुधका अभाव। ३ भूल, चूक।

ग़फलती- वि० (अ० गफ्लती) गफलत या लापरवाही करने वाला।

ग़फीर- पुं० (अ०) १ वह जो छिपावे। २ लोहेका बड़ा खोद। यौ०- जम्मे ग़फीर= बहुत बड़ा जनसमूह, बहुत भारी भीड़।

ग़फूर- वि० (अ०) क्षमा करने वाला। (ईश्वर का एक विशेषण)

ग़फ्फार- वि० (अ०) बहुत बड़ा दयालु। (ईश्वर का एक विशेषण।)

ग़फ्स- वि० (अ०) १ मोटे दल का, दलदार। २ मोटा, गफ। (कपड़ा आदि)

ग़बन- पुं० (अ०) किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा लेना, खयानत।

गब्र- पुं० (फा०) वह जो अग्नि की उपासना करता हो, अग्निपूजक।

ग़म- पुं० (अ०) १ दुःख। २ शोक।

ग़म-कदा- पुं० (अ० + फा०) वह घर जहाँ गम छाया हो, संसार।

ग़मखोर- वि० (अ० + फा०) (सं० गमखोरी) ग़म खानेवाला, सहिष्णु, सहनशील।

ग़मख्वार- वि० (अ+फा०) (सं० गमख्वारी) १ गम खाने वाला, क्रोध को रोकने वाला। २ सहिष्णु, सहानुभूति रखने वाला।

ग़मग़लत- पुं० (अ०) १ दुःखी मन को बहलाने वाला काम। २ खेल-तमाशा। ३ शराब, मद्य।

ग़मगीं-वि० (अ०+फा०) १ दुःखी, रंजीदा। २ उदास।

ग़मगुसार- वि० (अ०+फा०) (सं० ग़मगुसारी) दूसरों का दुःख दूर करने वाला।

ग़मज़दा- वि० (अ०+फा०) दुःखी, रंजीदा।

ग़मज़ा- पुं० (अ० ग़मजः) प्रेमिका का नखरा और हाव भाव।

ग़मरसीदा- वि० दे० 'ग़मज़दा'।

ग़मी- स्त्री० (अ०) १ शोक की अवस्था या काल। २ वह शोक जो किसी मनुष्य के मरने पर उसके संबंधी करते हैं, सोग। ३ मृत्यु, मरनी।

ग़मेदिल- पुं० (अ०+फा०) दिल का गम, मनस्ताप।

ग़म्माज़- पुं० (अ०) चुग़लखोर, निन्दक।
ग़म्माज़ी- स्त्री० (अ०) चुग़ली।
ग़यास- स्त्री० (अ०) १ सहायता। २ मुक्ति, छुटकारा।
ग़य्यूर- वि० (अ०) १ ईर्ष्या करने वाला। २ आन रखने वाला।
ग़र- प्रत्य० (फ़ा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर करने या बनानेवालेका अर्थ देता है। जैसे-शीशा-गर, कलई-गर। अव्य० यदि। जो। अगर।
ग़रक़- वि० दे० 'ग़र्क़'।
ग़रक़ाब- वि० (अ०) डूबा हुआ। पुं० १ गहरा पानी। २ पानी का भँवर।
ग़रक़ी- स्त्री० (अ० ग़र्क़) बाढ़, जल-प्लावन।
ग़र-चे- योजक (फ़ा०) अगर-चे, यद्यपि।
ग़रज़- स्त्री० (अ०) बहु० अग़राज। १ आशय, प्रयोजन, मतलब। २ आवश्यकता, जरूरत। ३ चाह, इच्छा। ४ उद्देश्य। अव्य० १ निदान, आखिरकार। २ मतलब यह किं, सारांश यह कि। यौ०- अल्-ग़रज़= तात्पर्य यह है कि, संक्षेप में यह कि।
ग़रज़-आश्ना- वि० (अ०+फ़ा०) मतलब का यार।
ग़रज़-मन्द- वि० (अ० + फ़ा०) (सं० गरज-मन्दी) जिसे किसी बात की ग़रज़ हो, आवश्यकता रखने वाला।
ग़रज़ी- वि० (अ०) अपनी ग़रज या मतलब से काम रखने वाला, स्वार्थी।
ग़रज़े कि- योजक (अ०+फ़ा०) सारांश यह कि।'
गरदन- स्त्री० (फ़ा० गर्दन) १ धड़ और सिर को जोड़ने वाला अंग, ग्रीवा। मुहा०- गरदन उठाना= विरोध करना। गरदन काटना= मार डालना। गरदन मारना= सिर काटना। मार डालना। गरदन में हाथ देना= गरदन पकड़ कर बाहर कर देना।
गरदनी- स्त्री० (फ़ा० गर्दन) १ घोड़े को ओढ़ाने का कपड़ा। २ कुश्ती का एक पेंच। ३ गले में पहनने की हँसली।
गरदान- स्त्री० (फ़ा०) १ घूमना, मुड़ना, लौटना। २ शब्दों का रूप साधन। पुं० वह कबूतर जो घूम-फिर कर फिर अपने ही स्थान पर आता हो। वि० घूम-फिर कर एक ही स्थान पर आने वाला।
गरदानना- क्रि० स० (फ़ा० गरदान) १ लपेटना। २ दोहराना। ३ शब्दके रूपों की पुनरावृत्ति करना। ४ किसीके अन्तर्गत समझना। ४ कुछ समझना।
गरदिश- स्त्री० दे० 'गर्दिश'।
गरदी- स्त्री० (फ़ा० गर्दी) १ घूमना-फिरना। २ भारी परिवर्त्तन, क्रान्ति। ३ दुर्भाग्य।
गरदूँ- पुं० (फ़ा० गर्दूं) १ आकाश; आसमान। २ छकड़ा, गाड़ी।
ग़रब- पुं० (अ०) १ पश्चिम। २ सूर्य का अस्त होना।
ग़रबी- वि० (अ०) पश्चिमी।
गरम- वि० (फ़ा० गर्म) जलता हुआ, तत्ता, तप्त, उष्ण।
ग़रम-जोशी- पुं० (फ़ा० गर्म-जोशी) प्रेम या अनुराग का आधिक्य।
गरमा- पुं० (फ़ा० गर्मा) ग्रीष्म ऋतु।
गरमाई- स्त्री० (फ़ा० गर्म) १ शरीर को गरम करने वाली या पौष्टिक वस्तु। २ गरमी।
गरमा-गरम- वि० (फ़ा० गर्म) तत्ता, उष्ण।
गरमाना- क्रि० अ० (फ़ा० गर्म) १ गरम होना। २ गुस्सा होना। ३ पशु का मस्त होना।
गरमाबा- पुं० (फ़ा० गर्माबः) गरम जल से स्नान।
गरमी- स्त्री० (फ़ा० गर्मी) १ उष्णता, ताप, जलन। २ तेजी, उग्रता, प्रचंडता। मुहा०- गरमी निकालना= गर्व दूर करना। ३ आवेश, क्रोध, गुस्सा। ४ उमंग, जोश। ५ ग्रीष्म ऋतु की कड़ी धूप के दिन। ६ एक रोग जो प्रायः दुष्ट मैथुन से उत्पन्न होता है, आतशक, फिरंग रोग।

गराँ- वि० (फा०) १ भारी। २ महँगा, अधिक मूल्य का, कीमती।
ग़राँ-खातिर- वि० (फा०) अप्रिय, ना-गवार।
ग़राँ-बहा- वि० (फा०) बहुमूल्य, बेशकीमत।
गराँमाया- वि० (फा० गराँ-मायः) १ बहुमूल्य, अधिक दामों का । २ श्रेष्ठ।
गराँ-सर- वि० (फा०) (सं० गराँ-सरी) अभिमानी, घमंडी।
गराँ-जान- वि० (फा०) १ जो जल्दी न मरे, सख्त जान। २ सुस्त, आलसी। निकम्मा।
ग़रायब- वि० (अ० 'ग़रीब' (अद्‌भुत) का बहु०) विलक्षण। जैसे-अजायब न ग़रायब= अद्‌भुत और विलक्षण वस्तुएँ।
गरानी- स्त्री० (फा०) १ भाव का बहुत चढ़ जाना, महँगी, महर्घता। २ उदासी। ३ भारीपन। जैसे-पेट की गरानी।
ग़रारा- पुं० (फा० ग़रारः) कुल्ला, कुल्ली। यौ०- ग़रारे-दार= बहुत ढीली मोहरी का (पायजामा)।
ग़रीक़- वि० (अ०) डूबा हुआ, मग्न। यौ०- ग़रीक़-रहमत= ईश्वर की कृपा में निमग्न।
ग़रीज़- स्त्री० (अ०) १ प्रकृति, स्वभाव। २ सहनशीलता।
ग़रीज़ी- वि० (अ०) १ प्राकृतिक, स्वाभाविक।
ग़रीब- वि० (अ०) १ निर्धन, कंगाल, दरिद्र। २ दीन-हीन। ३ जो घर-बार छोड़ कर विदेश में पड़ा हो। ४ विलक्षण। अद्‌भुत। जैसे-अजीब व ग़रीब।
ग़रीब-उल्-वतन- वि० (अ०) (सं० गरीब-उल्-वतनी) जो घर-बार छोड़कर विदेश में पड़ा हो।
ग़रीब-खाना- पुं० (अ०+फा०) इस गरीब या दीन का मकान, मेरा मकान। (नम्रता सूचित करने के लिये अपने घरके सम्बन्ध में बोलते हैं)।
ग़रीब-नवाज़- वि० दे० 'गरीब-परवर।'
ग़रीब-परवर- वि० (अ०+फा०) (सं० ग़रीब-परवरी) गरीबों की परवरिश या पालन पोषण करने वाला, दीन-पालक।
ग़रीबाना- वि० (फा० गरीबानः) गरीबों का-सा।
ग़रीबी- स्त्री० (अ० गरीब) १ दीनता, अधीनता, नम्रता। २ दरिद्रता, कंगाली, मुहताजी।
ग़रूब- पुं० दे० 'गुरूब'।
ग़रूर- पुं० (अ० गुरूर) अभिमान, घमंड।
गरेवाँ- पुं० दे० 'गरेबान'।
गरेबान- पुं० (फा०) अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग।
ग़रेब- पुं० (फा०) कोलाहल।
गरोह- पुं० (फा०) झुंड, जत्था।
ग़र्क़- वि० (अ०) १ डूबा हुआ, मग्न। २ तल्लीन, विचार-मग्न।
गर्द- स्त्री० (फा०) धूल, खाक, राख। यौ०- गर्द-गुबार= धूल-मिट्टी। मुहा०- किसी की गर्द को न पाना= १ किसी के मुकाबले में कुछ भी न होना। पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
गर्द-खोर- वि० (फा०) जो गर्द या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराब न हो।
गर्दन- स्त्री० दे० 'गरदन'।
गर्दवाद- पुं० दे० 'गिर्दवाद'।
गर्दिश- स्त्री० (फा०) १ घुमाव, चक्कर। २ विपत्ति। मुहा०= गर्दिश में आना= विपत्ति में पड़ना।
ग़र्ब- पुं० (अ०) १ पश्चिम। २ सूर्य का अस्त होना।
गर्म- (फा०) तप्त, उष्ण।
गर्ममिज़ाज- वि० (फा०) क्रोधी।
गर्मा- पुं० (फा०) गर्मी का मौसम।
गर्मागर्मी- स्त्री० (फा०) बातचीत में होने वाली तेज़ी या उग्रता।
गर्मी- स्त्री० (फा०) १ गर्म होने की अवस्था या भाव। २ ताप। ३ उपदंश नामक रोग।
ग़र्रा- पुं० (अ० गर्रः) अकड़, घमण्ड,

शेखी।
ग़लत- वि० (अ०) १ अशुद्ध, भ्रममूलक। २ असत्य, झूठ।
गलतकार- वि० (अ०+फा०) गलतियाँ करने वाला।
गलतगो- वि० (अ०+फा०) झूठ बोलने वाला।
ग़लत-नामा- पुं० (अ०+फा०) ग़लतियों या अशुद्धियों की सूची, अशुद्धि-पत्र।
ग़लत-फहमी- स्त्री० (अ०+फा०) भ्रम में कुछ का कुछ समझना।
ग़लतबीं- फा० (अ०+फा०) जो दूसरों की गलतियाँ ही देखता रहता हो, छिद्रान्वेषी।
ग़लता- पुं० (फा० ग़ल्ताँ) एक प्रकार का कपड़ा। वि० घूमा हुआ, गोल। यौ०- गलताँ व पेचाँ= विचार में मग्न।
ग़लता- पुं० (फा० ग़ल्तः) १ एक प्रकार का मोटा रेशमी कपड़ा। २ तलवार की चमड़े की म्यान।
ग़लती- स्त्री० (अ०) १ भ्रम। २ चूक, धोखा। ३ अशुद्धि, भूल।
ग़लबा- पुं० (अ० ग़लबः) १ प्रभुत्व, प्रधानता। २ अधिकता। ३ प्रभाव का आधिक्य।
ग़लाज़त- स्त्री० दे० 'गिलाजत'।
ग़लीज़- वि० (अ०) १ मोटा, दलदार, दबीज़। २ गन्दा, मलिन। पुं० मल, विष्ठा।
गल्ला- पुं० (फा० गल्लः) पशुओं का समूह, झुण्ड।
ग़ल्ला- पुं० (अ० गल्लः) १ फल-फूल आदि की उपज, अनाज। २ वह धन जो दूकान पर नित्य की बिक्री से मिलता है, गोलक।
गल्लेबान- पुं० (फा०) गड़ेरिया, भेड़ें चराने वाला।
गल्लेबाजी- पुं० (फा०) पशुओं का पालना और चराना।
गवार- प्रत्य० (फा० गुवार) अच्छा लगनेवाला, प्रिय। जैसे- खुशगवार।
गवारा- (फा० गुवारः) १ सह्य। २ अंगीकार करने योग्य।
गवाह- पुं० (फ़ा० गुवाह) १ वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। २ वह जो किसी मामले के विषय में जानकारी रखता हो, साक्षी।
गवाही- स्त्री० (फा० गुवाही) किसी घटना के विषय में ऐसे मनुष्य का कथन जिसने वह घटना देखी हो या जो उसके विषय में जानता हो। साक्षी का प्रमाण, साक्ष्य।
ग़श- पुं० (अ० ग़शीसे फा०) मूर्च्छा, बेहोशी।
ग़शी- स्त्री० दे० 'ग़श'।
ग़श्त- पुं० (फा०) १ टहलना, घूमना, फिरना, भ्रमण, दौरा, चक्कर। २ पहरे के लिए किसी स्थान के चारों ओर या गली-कूचों आदि में घूमना, रौंद, गिरदावरी, दौरा।
गश्ता- वि० (फा० गश्तः) फिरा या घूमा हुआ।
गश्ती- वि० (फा०) घूमनेवाला, फिरने वाला, चलता। पुं० गश्त लगाने वाला, पहरेदार।
ग़सब- पुं० (अ०) १ बलपूर्वक किसी की वस्तु ले लेना, अपहरण। २ बेईमानी से किसी का धन खा जाना।
ग़स्साल- पुं० (अ०) वह जो गुस्ल या स्नान कराता हो।
गह- स्त्री० दे० 'गाह'।
गहवारा- पुं० (फा० गहवारः) १ पालना। २ झूला। हिंडोला।
ग़ाज़ा- पुं० (फा० ग़ाजः) मुँह पर मलने का एक प्रकारका सुगंधित चूर्ण या रोगन।
ग़ाज़ी- पुं० (अ०) १ वह जो काफिरों या विधर्मियों पर विजय प्राप्त करे, धर्मवीर। २ वीर, योद्धा। पुं० (फा०) नट।
ग़ाज़ी मर्द- पुं० (अ०) १ ग़ाजी । २ घोड़ा।
ग़ाज़ी मियाँ- पुं० (अ०) सुलतान महमूद के भतीजे सैयद सालार जो मुसलमानों में बहुत बड़े वीरों के समान पूजे जाते हैं।

गान- प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो फारसी के संख्यावाचक शब्दों के अन्त में लगकर 'गुणित' या 'बार' का अर्थ देता है। जैसे- दोगान= दूना।

गाना- प्रत्य० दे० 'गान'।

ग़ाफ़िल- वि० (अ०) १ बेसुध, बेखबर। २ असावधान।

ग़ाबा- पुं० (अ० ग़ाबः) १ शेर की माँद। २ जंगल।

ग़ाम- पुं० (फा०) कदम, पग।

गाम- प्रत्य० (फा०) चलने वाला, तेजगाम= तेज चलने वाला।

ग़ायत- वि० (अं०) १ बहुत अधिक, अत्यन्त। २ चरम सीमा का, हद दरजेका। ३ असाधारण। स्त्री० चरम सीमा। यौ०- लग़ायत= तक।

ग़ायब- वि० (अ०) १ लुप्त, अन्तर्धान, अदृश्य। २ खोया हुआ। पुं० १ भविष्य। २ व्याकरण में अन्य पुरुष या वह व्यक्ति जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाय। जैसे- यह, वह।

ग़ायबाना- क्रि० वि० (ग़ायबांनः) पीठ पीछे, अनुपस्थिति में।

ग़ार- प्रत्य० (फा०) करने वाला, कर्त्ता। (यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- खिदमतग़ार, सितमगार; गुनहगार)।

ग़ार- पुं० (अ०) १ गहरा गड्ढा। २ गुफा, कंदरा।

ग़ारत- वि० (अ०) नष्ट, बरबाद। पुं० १ लूट-पाट। २ विनाश।

ग़ारतगर-वि० (अ०+फा०)( सं०ग़ारतगरी) १ लूट-पाट करने वाला, लुटेरा। २ विनाश करने वाला।

ग़ालिब- वि० (अ०) १ जबरदस्त, बलवान्। २ दूसरों को दबाने या दमन करनेवाला। ३ विजयी। ४ जिसकी सम्भावना हो, संभावित।

ग़ालिबन- क्रि० वि० (अ०) बहुत सम्भव है कि, सम्भवतः।

ग़ालिबाना- वि० (फा०+अ०) शक्तिशालियों के जैसा।

ग़ालीचा- पुं० (फा० गालीचः) एक प्रकार का बहुत मोटा बुना हुआ बिछौना जिसपर रंग-बिरंगे बेलबूटे बने रहते हैं, कालीन।

गाव- स्त्री० (फा० मि० सं० गो) १ गौ, गाय। २ साँड़। ३ बैल।

गाव-कुशी- स्त्री० (फा०) गोवध, गो-हत्या।

गावखुर्द- वि० (फा०) नष्ट-भ्रष्ट, विनष्ट।

गाव-ज़बान- स्त्री० (फा०) एक बूटी जो फारस देश में होती है।

गावतकिया- पुं० (फा० गावतक्यः) बड़ा तकिया जिससे कमर लगाकर लोग फर्श पर बैठते हैं। मसनद।

गावदी- वि० (फा० गाव) मूर्ख, बेवकूफ।

गाव-दुम- वि० (फा०) १ जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। २ चढ़ाव-उतारवाला, ढालुवाँ।

गावमेश- स्त्री० (फा०) भैंस, महिष।

गाव-शीर- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का गोंद।

ग़ाशिया- पुं० (अ० ग़ाशियः) घोड़े का जीनपोश।

गाह- स्त्री० (फा०) १ जगह, स्थान। (यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- इबादत-गाह= प्रार्थना का स्थान)। २ वक्त। समय।

गाह-गाह- क्रि० वि० (फा०) दे० 'कभी-कभी'।

गाह-ब-गाह- क्रि० वि० दे० 'गाहे गाहे'।

गाहे-गाहे- क्रि० वि० (फा०) कभी-कभी।

गाहे-ब-गाहे- क्रि० वि० देखो 'गाहे गाहे'।

ग़िज़ा- स्त्री० (अ०) भोजन, खाद्य पदार्थ।

ग़िज़ाफ- पुं० (फा०) १ झूठ बात। २ व्यर्थ की बात। ३ डींग, शेखी। यौ०- लाफ व ग़िज़ाफ= व्यर्थ की डींग। झूठमूठ की और निरर्थक बातें।

ग़िज़ाल- पुं० दे० 'ग़ज़ाल'।

गियाह- स्त्री० (फा०) हरी घास।

गिरदा- पुं० (फा० गिर्दः) १ गोल टिकिया।

२ चक्र। ३ एक प्रकार का पकवान। ४ गोल थाली या तश्तरी। ५ हुक्के के नीचे रखा जानेवाला दरी का गोल टुकड़ा। ६ गोल तकिया, गेंदुआ।

गिरदाब- पुं० (फा० गिरदाब) पानी का भँवर।

गिरदावर- पुं० (फा०) १ घूमने वाला, घूम-घूम कर काम की जाँच करनेवाला।

गिरदावरी- स्त्री० (फा०) गिरदावर का कार्य या पद।

गिरफ्त- स्त्री० (फा० गिरिफ्त) १ पकड़ने की क्रिया या भाव, पकड़। २ आपत्तिजनक बात।

गिरफ्ता- वि० (फा० गिरफ्तः) १ पकड़ा हुआ। २ पंजे में फँसा हुआ। जैसे- अजल-गिरफ्ता = मौत के पंजे में फँसा हुआ।

गिरफ्तार- वि० (फा० गिरिफ्तार) १ जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो। २ ग्रसा हुआ, ग्रस्त।

गिरफ्तारी- स्त्री० (फा० गिरिफ्तारी) १ गिरफ्तार होने का भाव। २ गिरफ्तार होने की क्रिया।

गिरवी- वि० (फा०) गिरों रखा हुआ, बंधक, रेहन।

गिरवीदा- वि० (फा० गिरवीदः) मोहित, लुभाया हुआ, आसक्त।

गिरह- स्त्री० (फा०) १ गाँठ, ग्रंथि। २ जेब, खीसा, खरीता। ३ दो पोरों के जोड़ का स्थान। ४ एक गज का सोलहवाँ भाग। ५ कलैया, उल्टी, कलाबाजी।

गिरह-कट- पुं० (फा०+हिं०) जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला, चाईं।

गिरह-दार- वि० (फा०) जिसमें गिरह या गाँठें हों, गँठीला।

गिरह-बाज़- पुं० (फा०) एक जाति का कबूतर जो उड़ते-उड़ते उलटकर कलैया खा जाता है।

गिराँ- वि० (फा०) १ कीमती, बहुमूल्य। २ महँगा। ३ भारी।

गिरानी- स्त्री० (फा०) १ महँगी। २ भारीपन।

गिरामी- वि० (फा०) पूज्य, बुजुर्ग। यौ०- नामी-गिरामी= १ बहुत प्रसिद्ध। २ प्रसिद्ध और पूज्य। ३ महान।

गिरिफ्त- स्त्री० दे० 'गिरफ्त'।

गिरिया- पुं० (फा० गिरियः) रोना-धोना, रुलाई। यौ०- गिरिया-व-ज़ारी= रोना-धोना, रोना-कलपना।

गिरियाँ- वि० (फा०)जो रोता हो, रोनेवाला।

गिरेबान- पुं० दे० 'गरेबान'।

गिरो- पुं० (फा० गिरौ) १ शर्त। २ गिरवी, रेहन।

गिर्द- अव्य (फा०) आस पास, चारों ओर। यौ०- इर्दगिर्द= चारों ओर।

गिर्द-व-नवाह- आस-पास के स्थान।

गिर्दवर- पुं० दे० 'गिरदावर'।

गिर्दवाद- पुं० (फा०) हवा का बगूला, बवंडर, वायु-चक्र।

गिर्दवालिश- पुं० (फा०) लंबा गोल तकिया, (गाव-तकिया)।

गिर्दावर- वि० (फा०) चारो तरफ गश्त लगाने वाला।

गिल- स्त्री० (फा०) मृत्तिका, मिट्टी।

गिलकार- वि० (फा०) (सं० गिलकारी) गारा या पलस्तर करने वाला (व्यक्ति)।

गिलमाँ- पुं० (अ० गिल्माँ, 'गुलाम' का बहु०) वे सुंदर बालक जो बहिश्त में धर्मात्माओं की सेवा और भोग के लिए रहते हैं। (मुसल०)

गिलहिक्मत- स्त्री० (फा०) शीशी आदि को आग पर चढ़ाने से पहले उस पर गीली मिट्टी लगाना या गीली मिट्टी से उसका मुँह बंद करना।

गिला- पुं० (फा० गिलः) १ उलहना, उपालंभ। २ शिकायत, निंदा।

गिलागुज़ार- वि० (फा०) उलाहना देने वाला, गिला करने वाला।

गिलाज़त- स्त्री०(अ०) १ गन्दगी, गन्दापन,

२ मल, विष्ठा।

ग़िलाफ- पुं० (अ०) १ कपड़े की बड़ी थैली जो तकिये या लिहाफ आदि के ऊपर चढ़ा दी जाती है, खोल, बड़ी रजाई, लिहाफ। ३ म्यान।

गिलावा- पुं० (फा० गिल+आबः) इमारत के काम में आने वाला गारा या गीली मिट्टी।

गिलावा- पुं० दे० 'गिलाबा'।

गिली- वि० (फा०) मिट्टी का।

गिलीम- पुं० (फा०) १ एक प्रकार का ऊनी पहनावा। २ कम्बल।

ग़िल्लीम- वि० (अ०) कामातुर, कामुक।

गीं- प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लग कर प्रभावित या पूर्ण आदि का अर्थ देता है। जैसे- ग़म-गीं= दुःखी, सुरम-गीं= जिसमें सुरमा लगा हो, शर्म-गीं= लज्जाशील।

ग़ीज- पुं० (अ०) १ कली। २ गुच्छा।

गीती- स्त्री०(फा०) दुनिया, संसार।

गीदी- वि० (फा०) १ कायर, डरपोक। २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ निर्लज्ज। ४ नपुंसक।

गीन- प्रत्य० दे० 'गीं'।

गीर- वि० (फा०) पकड़ने, लेने या रखने वाला। जैसे- जहाँगीर, आलमगीर।

गुंग- पुं० (फा०) गूँगापन, मूकता। २ गूँगा, मूक।

गुंजाइश- स्त्री० (फा०) अँटने या समाने की जगह, अवकाश, २ समाई, सुभीता।

गुंजान- वि० (फा०) घना, सघन।

गुंवद- पुं० (फा०) गुम्बद।

गुज़र- पुं० (फा०) १ निकास, गति। २ पैठ, पहुँच, प्रवेश। ३ निर्वाह, कालक्षेप।

गुज़रना- क्रि० अ० (फा० गुज़र) १ बीतना, कटना, व्यतीत होना। २ पहुँचना, पेश होना।

गुज़र-वसर- पुं० (फा०) कालक्षेप, निर्वाह।

गुजरानी- स्त्री० (फा०) वर्तमान कार्य, प्रस्तुत करना।

गुज़री- स्त्री० (फा० गुज़र) वह बाजार जो प्रायः तीसरे पहर सड़कों के किनारे लगता है।

गुज़श्ता- वि० (फा० गुज़श्तः) बीता हुआ, गत, व्यतीत, भूत।

गुज़ाफ- स्त्री० (फा०) भद्दी और वाहियात बात। यौ०- लाफ-व-गुज़ाफ= डींग की बातें।

गुज़ार- वि० (फा०) १ देना वाला, जैसे- मालगुजार। २ करने वाला। जैसे- खिदमत गुजार। (यौगिक शब्दों के अन्त में प्रयुक्त होता है)। पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ से होकर लोग आते-जाते हों, जैसे- घाट, रास्ता आदि।

गुज़ारना- क्रि० स० (फा० गुज़र) १ बिताना, काटना। २ पहुँचाना, पेश करना।

गुज़ारा- पुं० (फा० गुज़ारः) १ गुज़र, निर्वाह। २ वह वृत्ति जो जीवन निर्वाह के लिये दी जाय। ३ महसूल लेने का स्थान।

गुज़ारिश- स्त्री० (फा०) निवेदन, प्रार्थना।

गुज़ाश्त- स्त्री० (फा०) १ घटाने या निकालने की क्रिया। २ दान की हुई या माफी जमीन।

गुज़ीं- वि० (फा०) पसन्द किया हुआ, चुना हुआ।

गुज़ीर- पुं० (फा०) १ बचाव, छुटकारा। २ उपाय, साधन। ३ चारा, वश। यौ०- ना-गुज़ीर= जिसका कोई उपाय न हो।

गुदड़ी- स्त्री० दे० 'गुज़री'।

गुदाज़- वि० (फा०) १ मोटा, दबीज़। २ कोमल,। दयायुक्त (हृदय)। ३ पिघलाने या द्रवित करने वाला। जैसे- दिलगुदाज़ = हृदय द्रावक।

गुदूद- पुं० (अ०) गिलटी।

गुनचगी- स्त्री० (फा०) खिलने की क्रिया या भाव।

गुनचा- पुं० (फा० गुन्चः) कली, कलिका।

गुनचा-दहन- वि० (फा० गुन्चःदहन) जिसका मुख गुलाब की कली के समान सुन्दर हो।

गुनह- पुं० दे० 'गुनाह'।

गुनहगार- वि० दे० 'गुनाहगार'।

गुनाह- पुं० (फा०) १ पाप, दोष, कसूर, अपराध। मुहा०- गुनाह-बे-लज्ज़त= ऐसा दुष्कर्म जिसमें कोई आनन्द या सिद्धि न हो।

गुनाहगार- वि० (फा०) गुनाह करने वाला, अपराधी।

गुन्ना- पुं० (अ० गुन्नः) अनुस्वार, यौ०- नून गुन्ना= वह नून या न जिसका उच्चारण यों हो। जैसे- जहाँ के अन्त का नून (न) गुन्ना है।

गुफ्त- वि० (फा०) कहा हुआ। यौ०- गुफ्त व शुनीद= बातचीत।

गुफ्तगू- स्त्री० (फा०) बातचीत, वार्तालाप।

गुफ्तार- स्त्री० (फा०) बातचीत, बोलचाल।

गुबार- पुं० (अ०) १ गर्द, धूल। २ मन में दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष आदि।

गुबारा- पुं० (अ० गुब्बारा) १ वह थैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भर कर आकाश में उड़ाते हैं।

गुम- वि० (फा०) १ गुप्त, छिपा हुआ। २ अप्रसिद्ध। ३ खोया हुआ।

गुमज़दा- वि० (फा०) १ भूला या खोया हुआ। २ गुमराह।

गुमनाम- वि० (फा०) १ जिसका नाम कोई न जानता हो, अज्ञात। २ जिसमें किसी का नाम न हो।

गुमराह- वि० (फा०) (सं० गुमराही) १ जो रास्ता भूल गया हो, २ नीति पथ से हटा हुआ।

गुमशुदा- वि० (फा० गुम+शुदः) जो गुम हो गया हो, खोया हुआ।

गुमान- पुं० (फा०) १ अनुमान, क्यास। २ घमंड, अहंकार, गर्व। ३ लोगों की बुरी धारणा, बदगुमानी।

गुमानी- वि० (फा०) अभिमानी।

गुमाश्ता- पुं० (फा० गुमाश्तः) बड़े व्यापारी की ओर से खरीदने और बेचने पर नियुक्त मनुष्य।

गुमाश्तागरी- पुं० (फा०) गुमाश्ते का काम।

गुम्बद- पुं० (फा०) गोल और ऊँची छत, गुम्बज।

गुरजी- पुं० (फा० गुर्जी) १ गुर्ज या जार्जिया नामक देश का निवासी। २ सेवक, नौकर। ३ कुत्ता।

गुरदा- पुं० (फा० गर्दः मि० स० गोर्द) १ शरीर के अन्दर कलेजे के पास का एक अंग। २ साहस, हिम्मत।

गुरफा- पुं० (अ० गुर्फः) १ छत के ऊपर का कमरा, बंगला। २ खिड़की, झरोखा।

गुरफानशीं- वि० स्त्री० (अ० गुर्फः+फा० नशीं) झरोखे में बैठने वाली।

गुरफिश- स्त्री० (अनु०) डराना-धमकाना।

गुरबत- (अ० गुर्बत) १ विदेश का निवास, २ मुसाफिरी, ३ अधीनता, नम्रता। ४ दरिद्रता।

गुरबा- स्त्री० (फा० गुर्बः) बिल्ली, विडाल।

गुरबा- पुं० (अ०) 'ग़रीब' का बहु०।

गुरसंगी- स्त्री० (फा०) भूख।

गुराब- पुं० (अ०) १ कौवा। २ एक प्रकार की नाव।

गुरूब- पुं० (अ०) किसी तारे और विशेषतः सूर्य का अस्त होना।

गुरूर- पुं० दे० 'ग़रूर'।

गुरेज़- स्त्री० (फा०) १ भागना। २ बचना, दूर रहना। ३ कविता में एक विषय को छोड़ कर दूसरे विषय का वर्णन करने लगना।

गुर्ग- पुं० (फा०) भेड़िया, शृगाल।

गुर्ज़- पुं० (फा०) गदा, सोंटा।

गुर्बत- स्त्री० (अ०) १ परदेश। २ दरिद्रता, कंगाली।

गुर्बतज़दा- वि० (अ०+फा०) निर्धन, कंगाल।

गुर्रा- पुं० (अ० गुर्रः) १ घोड़े के माथे पर का सफेद दाग। २ लाख के रंग का घोड़ा। ३ श्रेष्ठ वस्तु। ४ चांद्र मास की पहली तिथि। ५ उपवास। मुहा०- गुर्रा बताना= बिना कुछ दिये टाल देना।

गुल- पुं० (फा०) १ फूल, पुष्प। २ गुलाब। मुहा०- गुल खिलना= १ विचित्र घटना होना। २ बखेड़ा खड़ा होना। ३ पशुओं के शरीर का रंगीन दाग़। ४ वह गड्ढ़ा जो हँसने के समय गालों में पड़ता है। ५ दीपक की बत्ती के ऊपर का जला हुआ अंश। मुहा०- (चिराग़) गुल करना= (चिराग़) बुझाना या ठंडा करना। ६ तमाकू का जला हुआ अंश, जट्ठा। ७ जलता हुआ कोयला।

गुल- पुं० (अ० गुलगुल = पक्षियों का कलरव) शोर, हल्ला।

गुलअफ्शाँ- वि० (फा०) फूलों की वर्षा करने वाला।

गुलअब्बास- पुं० (फा०+अ०) एक पौधा जिसमें लाल या पीले रंग के फूल लगते हैं। गुलाबबाँस।

गुलक़न्द- पुं० (फा०) मिस्री या चीनी में मिला कर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पँखड़ियाँ जिसका व्यवहार प्रायः दस्त साफ लाने के लिये होता है।

गुलकारी- स्त्री० (फा०) बेल-बूटे का काम।

गुलखन- पुं० (अ०) १ आग जलाने की भट्ठी। २ पत्थर।

गुलगश्त- पुं० (फा०) बाग में घूम कर सैर करना।

गुलगीर- पुं० (फा०) चिराग़ की बत्ती या गुल काटने की क़ैंची।

गुलगूँ- वि० (फा०) गुलाब के रंग का। गुलाबी।

गुलगूना- पुं० (गुलगूनः) वह चूर्ण जो स्त्रियाँ मुख पर उसकी सुन्दरता बढ़ाने के लिये मलती हैं, ग़ाज़ा।

गुलचहर- वि० (फा०) जिसका मुख गुलाब के समान सुन्दर हो।

गुलचीं- वि० (फा०) १ फूल चुनने वाला, माली। २ तमाशा देखने वाला।

गुलज़ार- पुं० (फा०) बाग। वाटिका। वि० हरा-भरा। आनन्द और शोभायुक्त।

गुलदस्ता- पुं० (फा० गुलदस्तः) सुन्दर फूलों या पत्तियों का एक में बँधा समूह, गुच्छा।

गुलदान- पुं० (फा०) गुलदस्ता रखने का पात्र।

गुलदार- पुं० (फा०) १ एक प्रकार का सफेद कबूतर। २ एक प्रकार का कशीदा।

गुलदुम- पुं० (फा०) बुलबुल पक्षी।

गुलनार- पुं० (फा०) १ अनार का फूल। २ अनार के फूल का-सा गहरा लाल रंग।

गुलपाशी- स्त्री० (फा०) फूलों की वर्षा।

गुलफाम- वि० (फा०) १ जिसका रंग गुलाब के फूल का-सा हो। २ बहुत सुन्दर। ३ सुकुमार।

गुलबकावली- स्त्री० (फा०+सं०) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसमें सुन्दर, सफेद, सुगन्धित फूल लगते हैं।

गुलबदन- पुं० (फा०) एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा। वि० जिसका शरीर गुलाब के फूलों के समान सुन्दर और कोमल हो, परम सुन्दर।

गुलबर्ग- पुं० (फा०) गुलाब की पत्ती।

गुलबाज़ी- स्त्री० (फा०) एक दूसरे पर फूल फेंकने की क्रिया या क्रीड़ा।

गुलमेख- स्त्री० (फा०) वह कील जिसका सिरा गोल होता है, फुलिया।

गुलरुख- वि० दे० 'गुलरू'।

गुलरू- वि० (फा०) जिसका चेहरा गुलाब की तरह हो, बहुत सुन्दर।

गुलरोज़- पुं० (फा०) फुलझड़ी नाम की आतिशबाजी।

गुललाला- पुं० (फा०) १ एक प्रकार का पौधा। २ इस पौधे का फूल। Tulip

गुलशकरी- स्त्री० दे० 'गुलक़न्द'।

गुलशन- पुं० (फा०) वाटिका, बाग।

गुलशब्बो- स्त्री० (फा०) लहसुन से मिलता-जुलता एक छोटा पौधा, रजनीगंधा, सुगंधरा, सुगंधिराज।

गुलाब- पुं० (फा०) १ एक कँटीला झाड़ या पौधा जिसमें बहुत सुन्दर सुगंधित फूल लगते हैं। २ गुलाबजल।

गुलाबपाश- पुं० (फा०) झारी के आकार का एक लम्बा पात्र जिसमें गुलाबजल भरकर छिड़कते हैं।

गुलाबपाशी- स्त्री० (फा०) गुलाबजल छिड़कना।

गुलाबी- वि० (फा०) १ गुलाब के रंग का। २ गुलाब सम्बन्धी। ३ गुलाबजल से बसाया हुआ। ४ थोड़ा या कम, हलका।

गुलाम- पुं० (अ०) १ मोल लिया हुआ दास, खरीदा हुआ नौकर। २ साधारण सेवक।

गुलामगरदिश- पुं० (अ०+फा०) १ खेमे के आस पास का वह स्थान जिसमें नौकर रहते हैं। २ महल आदिके सदर फाटक में अन्दर की ओर बनी हुई छोटी दीवार जिसके कारण बाहर के आदमी फाटक खुला रहने पर भी अन्दर के लोगों को नहीं देख सकते।

गुलामज़ादः - पुं० (अ०+फा०) दासीपुत्र।

गुलाममाल- पुं० (अ०+फा०) १ कम्बल। २ बढ़िया और सस्ती चीज।

गुलामी- स्त्री० (अ०) १ गुलाम का भाव, दासता। २ सेवा, नौकरी। ३ पराधीनता, परतंत्रता।

गुलिस्ताँ- पुं० (फा०) बाग़, वाटिका।

गुलू- पुं० (फा०) १ गला। २ स्वर।

गुलूबन्द- पुं० (फा०) १ वह लम्बी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटते हैं। २ गले का एक गहना।

गुलेचश्म- पुं० (फा०) आँख की फुली।

गुलेरअना- पुं० (फा०) १ एक प्रकार का बढ़िया गुलाब। २ प्रेमिका का वाचक शब्द या विशेषण। ३ वह फूल जो अंदर से लाल और बाहर से पीला हो।

गुलेल- स्त्री० (अ० गुलूलः) वह कमान या धनुष जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेला- पुं० (अ० गुलूलः) १ मिट्टी की गोली जिसको गुलेल से फेंक कर चिड़ियों का शिकार किया जाता है। २ गुलेल।

गुल्ला- पुं० (फा०) १ मिट्टी की बनी हुई गोली जो गुलेल से फेंकते हैं। २ शोर, हल्ला।

गुसल- पुं० (अ० गुसुल या गुस्ल) स्नान, नहाना।

गुसार- वि० (फा०) १ खाने वाला। २ सहन करने वाला। जैसे- ग़मगुसारं। ३ दूर करने वाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में।)

गुस्तर- वि० (फा०) १ फैलाने वाला। २ देने या व्यवस्था करने वाला।

गुस्ताख- वि० (फा०) बड़ों का संकोच न रखने वाला, धृष्ट, अशालीन, अशिष्ट।

गुस्ताखाना- क्रि० वि० (फा० गुस्ताखानः) गुस्ताखी से।

गुस्ताखी- स्त्री० (फा०) धृष्टता, ढिठाई, अशिष्टता, बेअदबी।

गुस्ल- पुं० (अ०) स्नान।

गुस्लखाना- पुं० (अ०+फा०) स्नानागार, नहाने का घर।

गुस्लेमैयत- पुं० (अ०) मृत पुरुष के शव को कराया जाने वाला स्नान।

गुस्लेसेहत- पुं० (अ०) रोगमुक्त होने पर किया जाने वाला स्नान, आरोग्य-स्नान।

गुस्सा- पुं० (अ० गुस्सः) क्रोध, कोप, रिस। मुहा०- गुस्सा उतरना या निकलना= क्रोध शांत होना। गुस्सा उतारना= क्रोध में जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना। अपने कोप का फल चखाना। गुस्सा चढ़ना= क्रोध का आवेश होना।

गुस्सावर- वि० (अ०+फा०) क्रोधी।

गुहर- पुं० (फा०) मोती।

गूँ- पुं० (फा०) १ रंग। जैसे- गुलगूँ= गुलाब के रंग का। २ प्रकार। ३ वर्ग।

गून- पुं० (फा० गूनः) १ वर्ण। यौ०- गूनागूँ= १ अनेक रंगों के। २ तरह-तरह के।

गूना- पुं० (फा० गूनः) १ वर्ण। रंग। २ प्रकार। भाँति। तरह। ३ तौर-तरीका। रंग-ढंग।

गूल- पुं० (अ०) जंगल में रहने वाले एक प्रकार के देव।
गूले वियाबानी- पुं० दे० 'गूल'।
गेती- स्त्री० (फा०) दुनिया, संसार। यौ०- गेती आरा= संसार की शोभा बढ़ाने वाला।
गेसू- पुं० (फ़ा०) जुल्फ, बालों की लट।
ग़ैब- वि० (अ०) १ परोक्ष, अनुपस्थित। २ अदृश्य।
ग़ैबत- स्त्री० (अ०) किसी के पीठ के पीछे की जाने वाली निन्दा, चुगली।
ग़ैब-दाँ- वि० (अ०+फा०) परोक्ष या अदृश्य जगत की बात जानने वाला।
ग़ैबानी- स्त्री० (अ० ग़ैब) १ निर्लज्ज या दुश्चरित्रा स्त्री। २ भारी बला, बड़ी आपत्ति।
ग़ैबी- वि० (अ०) परोक्ष सम्बन्धी।
ग़ैर- वि० (अ०) १ अन्य, दूसरा। २ अजनबी, बाहरी, पराया। ३ विरुद्ध, अर्थवाची या निषेधवाचक शब्द, जैसे- ग़ैरवाजिब, ग़ैरमामूली, ग़ैर-मनकूला, ग़ैरमुमकिन।
ग़ैरआबाद- वि० (अ०+फा०) १ जो बसा न हो (स्थान), २ जो जोता-बोया न हो (खेत)।
ग़ैरज़िम्मेदार- वि० (अ०) अनुत्तरदायी, दायित्वहीन।
ग़ैरत- स्त्री० (अ०) लज्जा।
ग़ैरतमन्द- वि० (अ०+फा०) १ जिसे ग़ैरत हो, लज्जाशील। २ स्वाभिमानी।
ग़ैर-मनकूला- वि० (अ०) जिसे एक स्थान से उठकर दूसरे स्थान पर न ले जा सकें। स्थिर, अचल, स्थावर।
ग़ैरमनकूह- वि० (अ०) अविवाहित (पुरुष)।
ग़ैरमनकूहा- वि० स्त्री० (अ०) १ अविवाहिता (स्त्री)। २ रखनी, सुरेतिन, उपपत्नी।
ग़ैरमशरूत- वि० (अ०) बिना शर्त का।
ग़ैरमहदूद- वि० (अ०) असीमित।
ग़ैरमामूल- वि० (अ०) असाधारण।
ग़ैरमामूली- वि० (अ०) असाधारण।
ग़ैरमुतनाज़ा- वि० (अ०) निर्विवाद।
ग़ैरमुनासिब- वि० (अ०) अनुचित।
ग़ैरमुमकिन- वि० (अ०) असंभव, नामुमकिन।
ग़ैरमुल्की- वि० (अ०) विदेशीय, वैदेशिक।
ग़ैर-वाजिब- वि० (अ०) अनुचित।
ग़ैरहाजिर- वि० (अ०) अनुपस्थित।
ग़ैरहाज़िरी- स्त्री० (अ०) अनुपस्थिति।
गैहान- पुं० (फा०) संसार।
गो- अव्यय (फा०) यद्यपि। यौ०- गो कि= यद्यपि, गो। प्रत्य० (फा०) कहने वाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में) जैसे- बदगों= बुराई करने वाला। कमगों= कम बोलने वाला।
गोइन्दा- पुं० (फा० गोइन्दः) १ बोलने वाला, वक्ता। २ गुप्तचर, भेदिया, जासूस।
गोई- स्त्री० (फा०) कहने की क्रिया, कथन। (यौगिक शब्दों के अन्त में।) जैसे- बदगोई। यौ०- चेमेगोइयाँ= चोज की बातें। व्यंग्यपूर्ण विनोद।
गोज़- पुं० (फा० गूज) पाद, अपानवायु। पुं० (फा०) १ अखरोट। २ चिलगोज़ा।
ग़ोता- पुं० (अ० ग़ोतः) डूबने की क्रिया, डुब्बी। मुहा०- ग़ोता खाना= धोखे में आना। ग़ोता मारना= १ डुबकी लगाना। डूबना। २ बीच में अनुपस्थित रहना।
ग़ोताखोर- वि० (अ०+फा०) (सं० गोताखोरी) १ पानी में डुबकी लगाने वाला, पनडुब्बा। पुं० एक प्रकार की आतिशबाज़ी।
गो-म-गो- वि० (फा०) १ जिसका अर्थ स्पष्ट न हो। गोल (बात)। २ जिसका न कहना ही अच्छा हो।
गोयन्दा- पुं० दे० 'गोइन्दा'।
गोया- क्रि० वि० (फा०) मानो, याने। वि० बोलने वाला, बोलता हुआ।
गोयाई- क्रि० वि० (फा०) बोलने की शक्ति। वाक्-शक्ति। यौ०- चेमे-गोइयाँ= १ चोज की बातें। २ व्यंग्यपूर्ण विनोद।

गोर- स्त्री० (फा०) कब्र। समाधि। यौ०- गोरेग़रीबाँ= वह स्थान जहाँ विदेशी या गरीब लोगों के मुर्दे गाड़े जाते हों। गोर व कफन= मृतक की अंत्येष्टि क्रिया। दरगोर= जहन्नुम में जाय। जिन्दा-दर-गोर= जीवित अवस्था में ही मृतक के समान।

ग़ोर- पुं० (फा०) कन्धार के पास के एक देश का नाम।

ग़ोरकन- पुं० (फा०) क़ब्र खोदने वाला।

गोरखर- पुं० (फा०) गधे की जाति का एक जंगली पशु।

गोरिस्तान- पुं० (फा०) कब्रिस्तान।

ग़ोरी- वि० (फा०) ग़ोर देश का निवासी। स्त्री० तश्तरी, रिकाबी, थाली।

ग़ोल- स्त्री०(अ०) समूह, झुण्ड, गिरोह।

ग़ोलक- स्त्री० (फा० मि०, स० गोलक) १ वह सन्दूक या थैली जिसमें धन संग्रह किया जाय। २ गुल्लक।

गोला- पुं० (फा०) १ गोलाकार पिंड। २ तोप का गोला।

गोलाबारी- स्त्री० (फा० गोलःबारी) गोलों का बरसना, गोलों की वृष्टि।

गोश- पुं० (फा०) कान, कर्ण।

गोशगुज़ार- वि० (फा०) (सं० गोश-गुज़ारी) कानों तक पहुँचा हुआ, सुना हुआ। मुहा०- गोश गुज़ार करना= निवेदन करना, सुनना।

गोशज़द- वि० (फा०) कानों तक पहुँचा हुआ, सुना हुआ।

गोशमाली- स्त्री० (फा०) १ कान उमेठना। २ ताड़ना, कड़ी चेतावनी।

गोशवारा- पुं० (फा०) १ खंजन नामक पेड़ का गोंद। २ कान का बाला, कुण्डल। ३ बड़ा मोती जो सीप में होता है। ४ पगड़ी का आँचल। ५ तुर्रा, कलगी, सिरपेंच। ६ जोड़, मीज़ान। ७ वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मद का आय-व्यय अलग-अलग दिखलाया गया हो।

गोशा- पुं० (फा० गोशः) १ कोना, अन्तराल। २ एकान्त स्थान। ३ तरफ, दिशा। ओर ४ कमान की दोनों नोकें। धनुषकोटि।

गोशानशीन- वि० (फा०) (सं० गोशा-नशीनी) एकान्त में रहने वाला, परदेश में रहने वाली (स्त्री०)।

गोश्त- पुं० (फा०) मांस।

गोश्तख्वार- पुं० (फा०) गोश्त खाने वाला, मांसभक्षी।

गोस्फन्द- स्त्री० (फा०) बकरी।

ग़ौग़ा- पुं० (फा०) शोरगुल, कोलाहल।

ग़ौग़ाई- वि० (फा०) १ शोर या कोलाहल मचाने वाला। २ व्यर्थ का, झूठ मूठ का। जैसे- ग़ौगाई खबर।

ग़ौज़- स्त्री० (अ०) गप्प, बातचीत।

ग़ौर- पुं० (अ०) १ सोचविचार, चिंतन, २ खयाल, ध्यान। यौ०- ग़ौर परदाश्त= १ देखरेख। २ पालन-पोषण।

ग़ौरतलब- वि० (अ०) विचार करने योग्य, विचारणीय।

ग़ौवास- पुं० (अ०) गोताखोर, पनडुब्बा।

ग़ौवासी- स्त्री० (अ०) गोताखोरी।

ग़ौस- पुं० (अ०) फरियाद, नालिश। २ मुसलमान महात्माओं की एक उपाधि।

ग़ौहर- पुं० (फा०) १ किसी वस्तु की प्रकृति। २ मोती। ३ जवाहिरात, रत्न। ४ बुद्धिमत्ता।

गौहरसंज- पुं० (फा०) १ जौहरी। २ आलोचना या समीक्षा करने वाला।

गौहरी- पुं० दे० 'जौहरी'।

(च)

घंग- स्त्री० (फा०) १ डफ के आकार का एक बाजा। २ हाथी का अंकुश। ३ बड़ी गुड्डी, पतंगा। मुहा०- घंग चढ़ना= खूब जोर होना। घंग पर चढ़ाना= १ इधर-उधर की बातें करके अपने अनुकूल करना। २ मिजाज बढ़ा देना।

घंगुल- पुं० (फा० चुंगल) १ चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा। २ हाथ के पंजों की वह स्थिति जो उँगलियों से किसी वस्तु को उठाने या लेने के समय होती है, बकोटा।

मुहा०- चंगुल में फँसना= काबू में होना।
चक़मक़- पुं० (फा० चक्माक़) एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है।
चक़माक़- पुं० (फा० चक्माक़) चक़मक पत्थर।
चख- स्त्री० (फा०) १ लड़ाई, झगड़ा। २ शोर, कोलाहल। वि० १ खराब, बुरा, दुष्ट।
चखचख- स्त्री० (फा०) कहा-सुनी, लड़ाई-झगड़ा।
चतर- पुं० (फा० मि० सं० छत्र) १ छत्र। २ छाता, छतरी।
चनार- पुं० (फा०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियों की उपमा मेंहदी लगे हाथों से दी जाती है।
चन्द- वि० (फा०) थोड़े से, कुछ।
चन्दरोज़ा- वि० (फा० चन्दरोजः) थोड़े दिनों का, अस्थायी।
चन्दाँ- क्रि० वि० (फा०) १ इतना, इस मात्रा में। २ इतनी देर में।
चन्दा- पुं० (फा० चन्दः) १ वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदमियों से किसी कार्य के लिये लिया जाय, बेहरी, उगाही। २ किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदि का वार्षिक मूल्य।
चन्दावल- पुं० (फा०) वे सैनिक जो सेना के पीछे रक्षा के लिए चलते हैं। हरावल का उलटा।
चन्दे- अव्य० (फा०) १ थोड़ा सा। २ थोड़ी देर में।
चप- वि० (फा०) १ बायाँ, वाम। यौ०- चप व रास्त= बाएँ और दाहिने। २ अभाग्य का सूचक।
चपक़लश- स्त्री० (तु०) १ तलवार की लड़ाई। २ शोर-गुल, कोलाहल, भीड़। ३ जनसमूह। ४ कठिनता, असमंजस।
चपकुलिश- स्त्री० दे० 'चपक़लश'।
चपरास- स्त्री० (फा० चप व रास्त) दफ्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी या परतले में लगा कर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं। बल्ला, बैज।
चपरासी- पुं० (हिं० चपरास) वह नौकर जो चपरास पहने हो, प्यादा, अरदली।
चपाती- स्त्री० (फा० मि० सं० चर्पटी) छोटी पतली रोटी, फुलका।
चमचा- पुं० (तु० चमचः) १ एक प्रकार की छोटी कलछी, चम्मच, डोई। २ चिमटा।
चमन- पुं० (फा०) १ हरी, क्यारी। २ फुलवारी, छोटा बगीचा। ३ रौनक की और गुलजार जगह।
चम्बर- पुं० (फा० चम्बर) चिलम के ऊपर का ढकना, चिलमपोश।
चरख- पुं० दे० 'चर्ख़'।
चरखा- पुं० (फा० चर्ख़) १ घूमने वाला गोल चक्कर, चरख। २ लकड़ी का एक यंत्र जिसकी सहायता से ऊन, कपास या रेशम आदि को कात कर सूत बनाते हैं, रहँट। ३ कूएँ से पानी निकालने का रहँट। ४ सूत लपेटने की गराड़ी, चरखी, रील। ५ गराड़ी, घिरनी। ६ बड़ा या बेडोल पहिया। ७ गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोत कर नया घोड़ा निकालते हैं, खड़खड़िया। ८ झगड़े-बखेड़े या झंझट का काम।
चरखी- स्त्री० (फा० चर्ख़) १ पहिये की तरह घूमने वाली कोई वस्तु। २ छोटा चरखा। ३ कपास ओटने की चरखी, बेलनी, ओटनी। ४ सूत लपेटने की फिरकी। ५ कूएँ से पानी खींचने आदि की गराड़ी, घिरनी। ६ एक प्रकार की आतिशबाजी।
चरपूज़- वि० (फा० चर्पूज़) १ बहुत निम्न कोटि का, हलका। २ मूर्ख, मूढ़।
चरब- वि० दे० 'चर्ब'।
चरबा- पुं० (फा० चर्बः) प्रतिमूर्ति, नक़ल, खाका।
चरबी- स्त्री० (फा० चर्बी) एक पीला चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में और बहुत से पौधों और वृक्षों में भी पाया जाता है। मेद, वसा, पीब। मुहा०- चरबी चढ़ना= मोटा होना। चरबी छाना= १ बहुत

मोटा हो जाना। २ मदान्ध होना।
चरागाह- स्त्री० (फा०) वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों, चरनी, चरी।
चरिन्द- पुं० दे० 'चरिन्दा'।
चरिन्दा- पुं० (फा० चरिन्दः) चरने वाला जानवर, पशु।
चर्ख- पुं० (फा०) १ आकाश, आसमान। २ घूमने वाला गोल चक्कर, चाक। ३ सूत कातने का चरखा। ४ खराद। ५ कुम्हार का चाक। ६ वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है। ७ गोफन, ढेलवाँस। ८ एक शिकारी चिड़िया।
चर्ग़- पुं० (फा०) एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।
चर्ब- वि० (फा०) १ चिकना। २ मोटा, स्थूल। ३ चपल।
चर्बज़बान- वि० (फा०) (सं० चर्ब-जबानी) चिकनी-चुपड़ी बातें बनाने वाला, चापलूस, खुशामदी।
चर्बी- स्त्री० दे० 'चरबी'।
चश- प्रत्य० (फा०) चखने वाला।
चशीदा- वि० (फा० चशीदः) चखा हुआ।
चश्म- स्त्री० (फा०) नेत्र, आँख, मुहा०- चश्म-बद-दूर= ईश्वर बुरी नजर से बचावे।
चश्मक- स्त्री० (फा०) १ चश्मा, ऐनक। २ आँख से इशारा करना। ३ लड़ाई-झगड़ा, कहा-सुनी। ४ चाकसू नामक औपधि।
चश्मदीद- वि० (फा०) १ आँखों-देखा। २ प्रत्यक्षदर्शी।
चश्मदीद गवाह- पुं० (फा०) प्रत्यक्षदर्शी गवाह।
चश्मनुमाई- स्त्री० (फा०) १ डराना-धमकाना। २ आँखें दिखाना।
चश्मपोशी- स्त्री० (फा०) दोपों की ओर ध्यान न देना, किसी के दुष्कर्मों के प्रति उपेक्षा करना।
चश्मा- पुं० (फा० चश्मः) १ कमानी में जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थर के तालों का जोड़ा, जो आँखों पर दृष्टि बढ़ाने या ठंडक रखने के लिए पहना जाता है, ऐनक। २ पानी का सोता।
चस्पाँ- वि० (फा०) चिपका हुआ।
चस्पीदगी- स्त्री० (फा०) चिपकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
चस्पीदा- वि० (फा० चस्पीदः) चिपका या चिपकाया हुआ।
चह- स्त्री० (फा०) 'चाह'। (कूआँ) का संक्षिप्त रूप।
चहबच्चा- पुं० (फा० चाह+बच्चा) १ पानी भर कर रखने का छोटा गड्ढा या हौज। २ धन गाड़ने या छिपा रखने का छोटा तहखाना।
चहलक़दमी- स्त्री० (फा० चेहल-क़दमी) धीरे-धीरे टहलना या घूमना।
चहलुम- पुं० दे० 'चेहलुम'।
चहार- वि० (फा०) चार, तीन और एक।
चहारदाँग- स्त्री० (फा०) चारो दिशायें।
चहारशम्बा- पुं० (फा०) बुधवार।
चहारुम- वि० (फा०) १ चौथाई। २ चौथा।
चहारुमी- वि० (फा०) चौथा।
चाक- पुं० (फा०) कटा या फटा हुआ स्थान। वि० फटा हुआ।
चाक़- वि० (तु०) स्वस्थ, निरोग, यौ०- चाक़ चौबंद= १ हट्टा-कट्टा और स्वस्थ। २ सब तरह से ठीक।
चाकर- पुं० (फा०) दास, भृत्य, सेवक, नौकर।
चाकरी- स्त्री० (फा०) नौकरी, दासता, सेवा।
चाकू- पुं० (फा०) छुरी।
चादर- स्त्री० (फा०) १ कपड़े का लम्बा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढ़ने के काम में आता है। २ हलका ओढ़ना, चौड़ा दुपट्टा, पिछौरी। ३ किसी धातु का बड़ा चौखूँटा पत्तर, चद्दर। ४ पानी की चौड़ी धार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो। ५ फूलों की राशि जो किसी पूज्य स्थान पर चढ़ाई जाती है।
चापलूस- वि० (फा० चाप्लूस) खुशामदी.

लल्लो-चप्पो करने वाला, चाटुकार।
चापलूसी- स्त्री० (फा० चाप्लूसी) खुशामद।
चापाती- स्त्री० (फा०) चपाती।
चाबुक- पुं० (फा०) १ कोड़ा, हंटर, सोंटा। २ जोश दिलाने वाली बात।
चाबुकज़नी- स्त्री० (फा०) १ कोड़े मारने की क्रिया। २ कोड़ेकी मार।
चाबुकदस्त- वि० (फा०) (सं० चाबुकदस्ती) १ दक्ष, चतुर। २ फुरतीला।
चाय- स्त्री० (फा०) १ एक पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा चीनी के साथ पीने की चाल अब प्रायः सर्वत्र है। २ चाय का उबला हुआ पानी।
चार- वि० 'चहार' (चार) का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में) पुं० 'चारा' (वश) का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में)
चारआईना- पुं० (फा०) एक प्रकार का कवच या बख्तर।
चारजामा- पुं० (फा० चारजामः) एक प्रकार की ज़ीन।
चारनचार- क्रि० वि० (फा०) विवश होकर, लाचारी की हालत में।
चारपा- पुं० (फा०) चौपाया।
चारा- पुं० (फा० चारः) १ उपाय, तदबीर, तरकीब। २ वश, अधिकार।
चाराजोई- स्त्री० (फा०) कोशिश, प्रयत्न।
चालाक- वि० (फा०) १ व्यवहार कुशल, चतुर, दक्ष। २ धूर्त, चालबाज।
चालाकी- स्त्री० (फा०) १ चतुराई, व्यवहार कुशलता, दक्षता, पटुता। २ धूर्तता, चालबाजी। ३ युक्ति।
चाशनी- स्त्री० (फा० चाश्नी) १ चीनी,मिस्री या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और मधु के समान लसीला किया हुआ रस। २ चसका, मज़ा। ३ नमूने का सोना जो सुनार को गहने बनाने के लिये सोना देने वाला ग्राहक अपने पास रखता है।
चाश्त- स्त्री० (फा०) १ सूर्योदय के एक पहर बाद का स्नान। जैसे- चाश्त की नमाज। २ सबेरे का जल-पान।
चाह- पुं० (फा०) कूआँ, कूप। यौ०- चाह-कन= कुआँ खोदने वाला।
चाही- स्त्री० (फा०) वह जमीन जो कुएँ के पानी से सींची जाती हो।
चाहेज़क़न- पुं० दे० 'चाहेजनखदाँ'।
चाहेज़नख- पुं० दे० 'चाहेजनखदाँ'।
चाहेजनखदाँ- पुं० (फा०) ठोढ़ी या चिबुक पर का गड्ढ़ा।
चिक- स्त्री० (तु० चिक़) बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा, चिलमन।
चिकन- स्त्री० (फा० चिकिन) एक प्रकार का महीन सूती कपड़ा जिस पर उभरे हुए बूटे बने रहते हैं।
चिरकीं- वि० (फा०) मैला, गन्दा।
चिरा- अव्यय (फा०) क्यों, किस लिये। यौ०- चूँ व चिरा करना= आपत्ति करना, उज्र करना।
चिराग़- पुं० (फा०) दीपक, दीआ।
चिराग़दान- पुं० (फा०) दीपक का आधार, दीवट आदि।
चिरागपा- वि० (फा०) १ जिसका मुँह नीचे हो गया हो, औंधा। २ (घोड़ा) जो अपने अगले दोनों पैर ऊपर उठा ले। पुं० 'दे० चिराग़दान'।
चिराग़ी- स्त्री० (फा०) वह धन जो किसी मज़ार पर चिराग जलाने के समय मुल्ला या मुजाविर आदि को दिया जाता है।
चिराग़ेसहरी- पुं० (फा०) १ सबेरे का दीपक जिसके बुझने में विलम्ब न हो। २ वह जो मृत्यु या अन्त के समीप पहुँच चुका हो।
चिर्क- स्त्री० (फा०) १ मल, गन्दगी। २ मवाद, पीब।
चिर्की- वि० (फा०) गन्दा, मलिन।
चिर्म- पुं० (फा० मि० सं० चर्म) (वि० चिर्मी) चमड़ा, चर्म।
चिलग़ोज़ा- पुं० (फा० चिलगोजः) एक

प्रकार का मेवा। चीड़ या सनोबर का फल।
चिलता- पुं० (फा० चिल्तः) एक प्रकार का कवच।
चिलम- स्त्री० (फा० चिलिम) कटोरी के आकार का नालीदार मिट्टी का एक बरतन जिस पर तम्बाकू जला कर उसका धूआँ पीते हैं।
चिलमची- स्त्री० (तु०) देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।
चिलमन- स्त्री० (फा०) बाँस की फट्टियों का परदा, चिक।
चिल्ला- पुं० (फा० चिल्लः) १ चालीस दिन का समय। २ चालीस दिन का बंधेज या किसी पुण्य कार्य का नियम। मुहा०- चिल्ला बाँधना= चालीस दिन का व्रत करना। चिल्ला खींचना= चालीस दिन तक एकान्त में बैठ कर ईश्वर की उपासना करना। ३ स्त्रियों के लिये प्रसव में चालीस दिन का समय।
चीं- स्त्री० (फा०) चेहरे पर पड़ने वाली शिकन या बल। मुहा०- चींब-जबीं होना= चेहरे पर बल लाना, बिगड़ना, नाराज होना।
चीज़- स्त्री० (फा०) १ सत्तात्मक वस्तु, पदार्थ, द्रव्य। २ आभूषण, गहना। ३ गाने की चीज, गीत। ४ विलक्षण वस्तु। ५ महत्व की वस्तु।
चीदा- वि० (फा० चीदः) १ चुना हुआ। २ बढ़िया।
चीस्ताँ- स्त्री० (फा०) पहेली बुझौवल।
चुंगल- पुं० दे० 'चुँगुल'।
चुक़न्दर- पुं० (फा०) गाजर की तरह का एक कन्द जिसकी तरकारी बनती है।
चुग़द- पुं० (फा० चुग़द) १ उल्लू, उलूक। २ मूर्ख, मूढ़।
चुग़ल- पुं० (तु० चुग़ल) चुगुलखोर, चुगली खाने वाला।
चुगलखोर- पुं० (अ० चुग़लखोर) चुगली खाने वाला, पीठ-पीछे दूसरों की निन्दा करने वाला, पिशुन।
चुग़ली- स्त्री० (तु० चुग़ली) दूसरे की निन्दा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय।
चुग़ा- पुं० दे० 'चोगा'।
चुनाँ- अव्य० (फा०) इस प्रकार का, ऐसा, यौ०- चुना-चुनीं या चुनीं-चुनाँ करना= १ आपत्ति करना, उज्र करना। २ बढ़-बढ़ कर बातें करना।
चुनाँचे- अव्य० (फा०) १ जैसा कि, उदाहरण स्वरूप। २ इसलिये, इस वास्ते।
चुनिन्दा- वि० (फा०) १ चुना हुआ, छँटा हुआ। २ बढ़िया।
चुनीं- अव्य० (फा०) इस प्रकार का। वि० दे० 'चुनाँ'।
चुनीदा- वि० (फा० चुनीदः) चुना हुआ, जिसका चयन हुआ हो।
चुस्त- वि० (फा०) १ कसा हुआ, जो ढीला न हो, संकुचित, तंग। २ जिसमें आलस्य न हो, तत्पर , फुर्तीला, चलता। यौ०- चुस्त व चालाक= फुरतीला और चतुर। ३ दृढं, मजबूत।
चुस्ती- स्त्री० (फा०) १ फुरती, तेजी। २ कसावट, तंगी। ३ दृढ़ता, मजबूती।
चूँ- क्रि० वि० (फा०) १ इसलिए, इस वास्ते। २ अगर। मुहा०- चूँ व चिरा करना= हुज्जत या बहस करना। वि० तुल्य, समान।
चूँकि- क्रि० वि०, (फा०) इस कारण से, कि, क्योंकि, इसलिए कि।
चू- अव्य० (फा०) १ तुल्य, समान। २ जब। ३ अगर।
चूग़ा- पुं० दे० 'चोगा'।
चूज़ा- पुं० (फा० चूजः) १ मुरगी का बच्चा। २ नवयुवक (या नवयुवती)।
चे- अव्य० (पुं० चेह) क्या ?
चेगूना- अव्य० (फा० चे-गूनः) किस प्रकार, किस तरह।
चेचक- स्त्री० (फा०) शीतला नामक रोग। यौ०- चेचक-रू= जिसके मुँह पर शीतला के दाग हों।

चेह- पुं० (फा०) 'चेहरा' का संक्षिप्त रूप।
चेहरा- पुं० (फा० चेहरः) १ शरीर के ऊपरी गोल अंग का अगला भाग जिसमें मुँह, आँख, आदि रहते हैं, मुखड़ा, वदन। मुहा०- चेहरा उतरना= लज्जा, शोक, चिन्ता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना। चेहरा होना= फौज में नाम लिखाना। २ किसी चीज का अगला भाग, आगा। ३ देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है।
चेहलक़दमी- स्त्री० दे० 'चहल-क़दमी'।
चेहलुम- पुं० (फा०) किसी के मरने के दिन से चालीसवाँ दिन। वि० चालीसवाँ।
चोग़ा- पुं० (तु० चूग़ा) पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा, लबादा।
चोब- स्त्री० (फा०) १ शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २ नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३ सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा। ४ छड़ी।
चोबचीनी- स्त्री० (फा०) एक औषधि जो एक लता की जड़ है।
चोबदस्ती- स्त्री० (फा०) हाथ में रखने की छड़ी।
चोबदार- पुं० (फा०) १ वह नौकर जिसके पास चोब या आसा रहता है। आसा-बरदार। २ प्रतिहार, द्वारपाल।
चोबा- पुं० (फा० चोबः) १ बाण, तीर। २ कील।
चोबी- वि० (फा०) लकड़ी या काठ का।
चौगान- पुं० (फा०) १ एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। २ चौगान खेलने का मैदान। ३ नगाड़ा बजाने की लकड़ी।
चौगानबाज़ी- स्त्री० (फा०) चौगान खेलना।
चौबच्चा- पुं० दे० 'चहबच्चा'।
चौगिर्द- क्रि० वि० (हिं० चौ+फा० गिर्द) चारों ओर।
चौगोशा- वि० (हिं० चौ+फा० गोशः) जिसमें चार कोने हों, चौकोर।
चौगोशिया- स्त्री० (हिं०-चौ०+फा० गोशा) एक प्रकार की चौकोर टोपी।
जंग- पुं० (फा०) लड़ाई, युद्ध, समर।
ज़ंग- पुं० (फा०) लोहे पर लगने वाला मुरचा। २ पीतल का छोटा घंटा। ३ हब्शियों के देश का नाम।
ज़ंगआलूदा- वि० (फा० ज़ंग-आलूदः) जिसमें मुरचा लगा हो, मुरचा लगा हुआ।
जंगजू- वि० (फा०) लड़ाकू।
जंगल- पुं० (फा०) वन।
जंगली- वि० (फा०) १ जंगल में होने या रहने वाला। २ असभ्य, अशिष्ट।
ज़ंगार- पुं० (फा०) १ ताँबे का कसाव, तूतिया। २ एक रंग जो ताँबे का कसाव है।
ज़ंगारी- वि० (फा०) नीले रंग का।
जंगी- वि० (अ०) १ जंग या युद्ध सम्बन्धी। जैसे- जंगी जहाज। २ बहुत बड़ा, विशालकाय।
ज़ंगी- पुं० (फा०) हब्शी।
ज़ंजीर- स्त्री० (फा०) १ साँकल, कड़ियों की लड़ी। २ बेड़ी। ३ किवाड़ की कुंडी।
ज़ंजीरा- पुं० (फा० ज़ंजीरः) १ गले में पहनने की सिकड़ी। २ एक प्रकार की जंजीरदार सिलाई।
ज़ंजबील- स्त्री० (अ०) १ सुखाई हुई अदरक, सोंठ। २ स्वर्ग की एक नहर का नाम।
ज़ईफ- वि० (अ०) १ दुर्बल, कमजोर। २ वृद्ध, बुड्ढा।
ज़ईफ-उल-अक्ल- वि० (अ०) दुर्बल बुद्धिवाला, कमअक्ल।
ज़ईफ-उल-एतक़ाद- वि० (फा०) जो सहज में एक बात को छोड़कर दूसरी बात पर विश्वास कर ले।
ज़ईफी- स्त्री० (अ०) १ दुर्बलता, कमजोरी। २ बुढ़ापा।
ज़ईम- पुं० (अ०) नेता, रहनुमा।
ज़क- स्त्री० (अ०) १ हार, पराजय। २

ज़च्चाखानः -पुं० (फ़ा०) प्रसूतिगृह।
जज़ब- पुं० दे० 'जज़्ब'।
जज़र- पुं० (अ० जज़ः) वर्गमूल। यौ०- जज़रे कुसूर= भिन्न वर्गमूल।
जज़र व मद- (अ०) समुद्र का ज्वार-भाटा।
जज़ा- स्त्री० (अ०) १ बदला, प्रतिकार, परिणाम।
जज़ाक अल्लाह- अव्य० (अ०) १ ईश्वर तुम्हें इसका शुभ फल दे। २ शाबाश, बहुत अच्छे।
जज़ायर- पुं० (अ०) 'जज़ीरः' का बहु०, द्वीप, टापू।।
जज़िया- पुं० (अ० जज़ियः) १ दण्ड। २ एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य में अन्य धर्म वालों पर लगता था।
जज़ीरा- पुं० (अ० जज़ीरः) (बहु० जज़ायर) द्वीप, टापू।
जज़ीरानुमा- पुं० (अ०) वह स्थल जो तीन ओर जल से घिरा हो, प्रायद्वीप।
जज़्ब- पुं० (अ०) १ आकर्षण, खींचना। २ शोषण, सोखना।
जज़्ब-ए-इश्क- पुं० (अ०) प्रेम का आकर्षण।
जज़्बा- पुं० (अ० जज़्बः) १ आवेश, जोश। (प्रायः मन के सम्बन्ध में) २ भावना।
जज़्बात- पुं० (अ० जज़्बा का बहु०) भावनाएँ।
जज़्म- पुं० (अ०) अरबी लिपि में वह चिन्ह ( ـ ) जो किसी अक्षर पर यह सूचित करने को लगाया जाता है कि यह हलन्त या हल (स्वर रहित) है। यौ०- बिलजज़्म= दृढ़निश्चय-पूर्वक। जैसे- अज़्म-बिल-जज़्म।
जज़्र- पुं० (अ०) १ काटना। २ नदी या समुद्र के पानी का घटना, भाटा। यौ०- जज़्र व मद= समुद्र का भाटा और ज्वार। ३ गणित में घनमूल।
ज़द- वि० (फ़ा० ज़दः) मारा हुआ, आहत, जैसे- ग़मज़दा= गम का मारा हुआ।
जद- पुं० (अ०) पिता का पिता, दादा। २ माता का पिता, नाना। ३ सौभाग्य। ४ सम्पन्नता।
ज़द- स्त्री० (फ़ा०) १ मार, चोट। २ वह वस्तु जिस पर निशाना लगाया जाय, लक्ष्य। ३ हानि, नुकसान।
ज़दगी- स्त्री० (फ़ा०) मारने या लगाने की क्रिया। जैसे- आतिश-ज़दगी।
ज़दन- पुं० (फ़ा०) १ मारना, आघात करना। २ खाना-पीना। ३ खोलना। ४ फेंकना। ५ रखना। ६ करना। (प्रायः यौगिक शब्दों के अन्त में आकर उनकी क्रिया का अर्थ देता है। जैसे- चश्म-ज़दन, क़लम-ज़दन, नमक-ज़दन।)
जदल- पुं० (अ०) लड़ाई, युद्ध। यौ०- जंग व जदल= युद्ध।
जदवार- स्त्री० (अ०) निर्विषी नामक औषधि।
ज़दा- वि० (फ़ा० ज़दः) १ जिस पर ज़द या आघात लगा हो। २ जिस पर किसी वस्तु या मनोभाव का प्रभाव पड़ा हो, जैसे- ग़मज़दा। (प्रायः प्रत्यय के रूप में शब्दों के अंत में लगता है।)
जदाल- पुं० दे० 'जिदाल'।
जदी- पुं० (अ०) लघु सप्तर्षि। यौ०- खत्ते जदी= मकर रेखा।
जदीद- वि० (अ०) नया, नवीन, अधुनिक।
ज़दोकोब- स्त्री० (अ० ज़द व कोब) मार-पीट।
ज़द्द- स्त्री० (अ०) प्रयत्न, कोशिश। यौ०- जद्द व जहद= प्रयत्न और दौड़-धूप।
जद्दा- स्त्री० (अ० जद्दः) १ दादी। २ नानी। पुं० अरब का एक प्रसिद्ध नगर।
जद्दी- वि० (अ०) बाप-दादा का, पैतृक।
ज़न- स्त्री० (फ़ा०) (बहु० ज़नान) १ स्त्री, औरत। २ जोरू, पत्नी।
ज़नख- पुं० (फ़ा०) ठोड़ी, चिबुक।
ज़नखदाँ- पुं० (फ़ा०) ठोड़ी पर का गड्ढा।

चेह- पुं० (फा०) 'चेहरा' का संक्षिप्त रूप।

चेहरा- पुं० (फा० चेहरः) १ शरीर के ऊपरी गोल अंग का अगला भाग जिसमें मुँह, आँख, आदि रहते हैं, मुखड़ा, वदन। मुहा०- चेहरा उतरना= लज्जा, शोक, चिन्ता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना। चेहरा होना= फौज में नाम लिखाना। २ किसी चीज का अगला भाग, आगा। ३ देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है।

चेहलक़दमी- स्त्री० दे० 'चहल-क़दमी'।

चेहलुम- पुं० (फा०) किसी के मरने के दिन से चालीसवाँ दिन। वि० चालीसवाँ ।

चोग़ा- पुं० (तु० चूग़ा) पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा, लबादा।

चोब- स्त्री० (फा०) १ शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २ नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३ सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा। ४ छड़ी।

चोबचीनी- स्त्री० (फा०) एक औषधि जो एक लता की जड़ है।

चोबदस्ती- स्त्री० (फा०) हाथ में रखने की छड़ी।

चोबदार- पुं० (फा०) १ वह नौकर जिसके पास चोब या आसा रहता है। आसा-बरदार। २ प्रतिहार, द्वारपाल।

चोबा- पुं० (फा० चोबः) १ बाण, तीर। २ कील।

चोबी- वि० (फा०) लकड़ी या काठ का।

चौगान- पुं० (फा०) १ एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। २ चौगान खेलने का मैदान। ३ नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

चौगानबाज़ी- स्त्री० (फा०) चौगान खेलना।

चौबच्चा- पुं० दे० 'चहबच्चा'।

चौगिर्द- क्रि० वि० (हिं० चौ+फा० गिर्द) चारों ओर।

चौगोशा- वि० (हिं० चौ+फा० गोशः) जिसमें चार कोने हों, चौकोर।

चौगोशिया- स्त्री० (हिं०-चौ+फा० गोशा) एक प्रकार की चौकोर टोपी।

जंग- पुं० (फा०) लड़ाई, युद्ध, समर।

ज़ंग- पुं० (फा०) लोहे पर लगने वाला मुरचा। २ पीतल का छोटा घंटा। ३ हब्शियों के देश का नाम।

ज़ंगआलूदा- वि० (फा० ज़ंग-आलूदः) जिसमें मुरचा लगा हो, मुरचा लगा हुआ।

जंगजू- वि० (फा०) लड़ाकू।

जंगल- पुं० (फा०) वन।

जंगली- वि० (फा०) १ जंगल में होने या रहने वाला। २ असभ्य, अशिष्ट।

ज़ंगार- पुं० (फा०) १ ताँबे का कसाव, तूतिया। २ एक रंग जो ताँबे का कसाव है।

ज़ंगारी- वि० (फा०) नीले रंग का।

जंगी- वि० (अ०) १ जंग या युद्ध सम्बन्धी। जैसे- जंगी जहाज। २ बहुत बड़ा, विशालकाय।

ज़ंगी- पुं० (फा०) हब्शी।

ज़ंजीर- स्त्री० (फा०) १ साँकल, कड़ियों की लड़ी। २ बेड़ी। ३ किवाड़ की कुंडी।

ज़ंजीरा- पुं० (फा० जंजीरः) १ गले में पहनने की सिकड़ी। २ एक प्रकार की जंजीरदार सिलाई।

ज़ंजबील- स्त्री० (अ०) १ सुखाई हुई अदरक, सोंठ। २ स्वर्ग की एक नहर का नाम।

ज़ईफ़- वि० (अ०) १ दुर्बल, कमज़ोर। २ वृद्ध, बुड्ढा।

ज़ईफ़-उल-अक्ल- वि० (अ०) दुर्बल बुद्धिवाला, कमअक्ल।

ज़ईफ़-उल-एतक़ाद- वि० (फा०) जो सहज में एक बात को छोड़कर दूसरी बात पर विश्वास कर ले।

ज़ईफ़ी- स्त्री० (अ०) १ दुर्बलता, कमज़ोरी। २ बुढ़ापा।

ज़ईम- पुं० (अ०) नेता, रहनुमा।

ज़क- स्त्री० (अ०) १ हार, पराजय। २

ज़च्चाखानः -पुं0 (फा0) प्रसूतिगृह।
जज़ब- पुं0 दे0 'जज्ब'।
जज़र- पुं0 (अ0 जज़ः) वर्गमूल। यौ0- जज़रे कुसूर= भिन्न वर्गमूल।
जज़र व मद- (अ0) समुद्र का ज्वार-भाटा।
जज़ा- स्त्री0 (अ0) १ बदला, प्रतिकार, परिणाम।
जज़ाक अल्लाह- अव्य0 (अ0) १ ईश्वर तुम्हें इसका शुभ फल दे। २ शाबाश, बहुत अच्छे।
जज़ायर- पुं0 (अ0) 'जज़ीरः' का बहु0, द्वीप, टापू।।
जज़िया- पुं0 (अ0 जज़ियः) १ दण्ड। २ एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य में अन्य धर्म वालों पर लगता था।
जज़ीरा- पुं0 (अ0 जज़ीरः) (बहु0 जज़ायर) द्वीप, टापू।
जज़ीरानुमा- पुं0 (अ0) वह स्थल जो तीन ओर जल से घिरा हो, प्रायद्वीप।
जज्ब- पुं0 (अ0) १ आकर्षण, खींचना। २ शोषण, सोखना।
जज्ब-ए-इश्क- पुं0 (अ0) प्रेम का आकर्षण।
जज्बा- पुं0 (अ0 जज्बः) १ आवेश, जोश। (प्रायः मन के सम्बन्ध में) २ भावना।
जज्बात- पुं0 (अ0 जज्बा का बहु0) भावनाएँ।
जज्म- पुं0 (अ0) अरबी लिपि में वह चिन्ह ( ـْ ) जो किसी अक्षर पर यह सूचित करने को लगाया जाता है कि यह हलन्त या हल (स्वर रहित) है। यौ0- बिलजज्म= दृढ़निश्चय-पूर्वक। जैसे- अज्म-बिल-जज्म।
जज़- पुं0 (अ0) १ काटना। २ नदी या समुद्र के पानी का घटना, भाटा। यौ0- जज़ व मद= समुद्र का भाटा और ज्वार। ३ गणित में घनमूल।
ज़द- वि0 (फा0 ज़दः) मारा हुआ, आहत, जैसे- ग़मज़दा= गम का मारा हुआ।
जद- पुं0 (अ0) पिता का पिता, दादा। २ माता का पिता, नाना। ३ सौभाग्य। ४ सम्पन्नता।
ज़द- स्त्री0 (फा0) १ मार, चोट। २ वह वस्तु जिस पर निशाना लगाया जाय, लक्ष्य। ३ हानि, नुकसान।
ज़दगी- स्त्री0 (फा0) मारने या लगाने की क्रिया। जैसे- आतिश-ज़दगी।
ज़दन- पुं0 (फा0) १ मारना, आघात करना। २ खाना-पीना। ३ खोलना। ४ फेंकना। ५ रखना। ६ करना। (प्रायः यौगिक शब्दों के अन्त में आकर उनकी क्रिया का अर्थ देता है। जैसे- चश्म-ज़दन, क़लम-ज़दन, नमक-ज़दन।)
जदल- पुं0 (अ0) लड़ाई, युद्ध। यौ0- जंग व जदल= युद्ध।
जदवार- स्त्री0 (अ0) निर्विषी नामक औषधि।
ज़दा- वि0 (फा0 ज़दः) १ जिस पर ज़द या आघात लगा हो। २ जिस पर किसी वस्तु या मनोभाव का प्रभाव पड़ा हो, जैसे- ग़मज़दा। (प्रायः प्रत्यय के रूप में शब्दों के अंत में लगता है।)
जदाल- पुं0 दे0 'जिदाल'।
जदी- पुं0 (अ0) लघु सप्तर्षि। यौ0- खत्ते जदी= मकर रेखा।
जदीद- वि0 (अ0) नया, नवीन, अधुनिक।
ज़दोकोब- स्त्री0 (अ0 ज़द व कोब) मार-पीट।
ज़द्द- स्त्री0 (अ0) प्रयत्न, कोशिश। यौ0- जद्द व जहद= प्रयत्न और दौड़-धूप।
जद्दा- स्त्री0 (अ0 जद्दः) १ दादी। २ नानी। पुं0 अरब का एक प्रसिद्ध नगर।
जद्दी- वि0 (अ0) बाप-दादा का, पैतृक।
ज़न- स्त्री0 (फा0) (बहु0 ज़नान) १ स्त्री, औरत। २ जोरू, पत्नी।
ज़नख- पुं0 (फा0) ठोड़ी, चिबुक।
ज़नखदाँ- पुं0 (फा0) ठोड़ी पर का गड्ढा।

ज़नखा- पुं० (फा० ज़नख़ः) १ वह जिसके हाव-भाव आदि औरतों के-से हों। २ हिजड़ा।
ज़नमुरीद- वि० (फा०) (पुं० जनमुरीदी) अपनी पत्नी का भक्त।
ज़नाखी- स्त्री० (फा०) १ परम प्रिय सखी, सहेली। २ वह स्त्री जिसके साथ कोई स्त्री अस्वाभाविक रूप से अपनी कामेच्छा पूरी करती हो, दुगाना।
जनाजा- पुं० (अ० जनाजः) १ शव, लाश। २ अरथी या वह संदूक जिसमें लाश को रख कर गाड़ने या जलाने ले जाते हैं।
जनाज़ाबरदार- पुं० (अ०+फा०) अरथी या जनाज़ा उठाने वाला, अरथी को कंधा देने वाला।
ज़नानखाना- पुं० (फा०) स्त्रियों के रहने का स्थान, अंतःपुर।
ज़नाना- पुं० (वि० जनानः) १ स्त्रियों का, स्त्री-संबंधी। २ हिजड़ा। ३ निर्बल, डरपोक।
ज़नानी- वि० स्त्री० (फा० जनानः) स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाली, स्त्रियों की।
जनाब- पुं० (अ०) १ किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति का द्वार। २ बड़ों के लिए आदर-सूचक शब्द, महाशय। यौ०- जनाबेमन= मेरे मान्य और महोदय। जनाबेआली= श्रीमान्, महोदय। (सम्बोधन)
ज़नाशोई- वि (फा०) दाम्पत्य, पति और पत्नी के बीच की।
जनीन- पुं० (अ०) १ वह बच्चा जो गर्भ में ही हो। २ भ्रूण।
जनून- पुं० (अ०) पागलपन, उन्माद।
जनूनी- पुं० (अ०) पागल।
जनूब- पुं० (अ०) दक्षिण दिशा।
जनूबी- वि० (अ०) दक्षिण का, दक्षिणी।
ज़नोफर्जन्द- पुं० (अ०) स्त्री और पुत्र।
ज़न्द- पुं० (फा०) जरदुश्त का बनाया हुआ पारसियों का धर्मग्रन्थ।
ज़न्न- पुं० (अ०) १ विचार, खयाल। २ अनुभव, कल्पना। ३ भ्रम, गुमान। यौ०- ज़न्नेग़ालिब= बहुत अधिक सम्भावना। ज़न्नेफासिद= दुष्ट या बुरा विचार। ४ शक, संदेह।
जन्नत- स्त्री० (अ०) स्वर्ग, बहिश्त।
जन्नती- वि० (अ०) १ जन्नत या स्वर्ग सम्बन्धी, स्वर्ग का। २ स्वर्ग में रहने या स्थान पाने वाला।
जफर- पुं० (फा०) यंत्र और ताबीजें आदि बनाने की कला।
ज़फर- पुं० (अ०) १ विजय, जीत। २ प्राप्ति, लाभ।
ज़फरयाब- वि० (अ०+फा०) विजयी, विजेता।
जफा- स्त्री० (फा०) १ सख्ती, कड़ाई। २ जुल्म, अत्याचार। ३ आपत्ति, संकट, यौ०- जफा-कफा= आपत्ति।
जफाकश- वि० (फा०) (सं० जफाकशी) विपत्तियाँ और कष्ट सहने वाला, सहिष्णु।
जफाजू- वि० (फा०) नए-नए जुल्म ढाने वाला।
जफाफ- पुं० दे० 'ज़ुफाफ'।
जफाशुआर- वि० (फा०) (सं० जफाशुआरी) अत्याचार या उत्पीड़न करने वाला। (प्रायः प्रेमिकाओं के लिये प्रयुक्त।)
ज़फीरी- स्त्री० (अ०) १ सीटी का शब्द। २ वह चीज जिससे सीटी बजाई जाय, सीटी।
ज़फील- स्त्री० दे० 'ज़फीरी'।
ज़बर- वि० (अ०) १ बलवान, बली, ताकतवर। २ दृढ़, मजबूत। यौ०- ज़बर जंग= बहुत बड़ा बलवान्। ३ श्रेष्ठ, उच्च। पुं० फारसी लिपि में एक चिह्न जो अक्षरों के ऊपर 'अ' स्वर सूचित करने के लिये लगाया जाता है, अकारकी मात्रा।
ज़बरजद- पुं० (अ०) पुखराज नामक रत्न।
जबरन- क्रि० वि० (अ० जब्रन) जबरदस्ती, बलात्।
ज़बरदस्त- वि० (अ०+फा०) १ बलवान्, बली, शक्तिवाला। २ दृढ़, मजबूत।

ज़बरदस्ती- स्त्री० (अ०+फा०) अत्याचार, सीनाजोरी, जियादती, अन्याय।

जबल- पुं० (अ०) (बहु० जिबाल) पर्वत, पहाड़।

ज़बह- पुं० (अ० ज़िबह) गला काटकर प्राण लेने की क्रिया, वध, हत्या।

ज़बाँ- स्त्री० दे० 'ज़बान'। ('ज़बाँ' के यौ०- के लिये देखो 'ज़बान' के यौ०)

ज़बाँज़द- वि० (फा०) (बात) जो सब लोगों की जबान पर हो, प्रचलित, प्रसिद्ध।

ज़बाँदराज़- वि० (फा०) (सं० जबाँदराजी) १ बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करने वाला। २ जो मुँह में आवे, वही बकने वाला, अनुचित बातें करने वाला।

ज़बान- स्त्री० (फा०) १ जीभ, जिह्वा। मुहा०- ज़बान खींचना= धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिए कठोर दंड देना। ज़बान पकड़ना= बोलने न देना, कहने से रोकना। ज़बान पर आना= मुँह से निकलना। ज़बान में लगाम न होना= सोच समझकर बोलने में अयोग्य होना। ज़बान हिलाना= मुँह से शब्द निकालना। ज़बान से बोलना या कहना= अस्पष्ट रूप से बोलना, साफ-साफ न कहना। बेज़बान= बहुत सीधा। बरज़बान= कंठस्थ, उपस्थित। २ बात, बोल। ३ प्रतिज्ञा, वादा, कौल। ४ भाषा, बोल-चाल।

ज़बानी- वि० (फा०) १ जो केवल जबान से कहा जांय, किया न जाय, मौखिक। २ जो लिखित न हो मौखिक, मुँह से कहा हुआ।

जबाँबन्दी- स्त्री० (फा०) लिखा हुआ वक्तव्य आदि।

जबीं- स्त्री० (अ०) माथा, मस्तक। यौ०- चीं-ब-जबीं= माथे पर पड़ा हुआ शिकन या बल। (कुद्ध होने का चिन्ह।)

ज़बीन- स्त्री० दे० 'जबीं'।

ज़बीहा- पुं० (अ० जबीहः) वह पशु जो नियमानुसार जबह किया गया हो और जिसका मांस खाने योग्य हो।

ज़बून- वि० (फा०) (सं० जबूनी) बुरा, खराब।

ज़बूर- स्त्री० (अ०) हजरत दाऊद का लिखा हुआ धर्मग्रन्थ।

ज़ब्त- पुं० (अ०) १ वह जिसे सरकार ने छीन लिया हो। २ अपनाया हुआ।

ज़ब्ती- स्त्री० (अ०) जब्त होने की क्रिया या भाव।

जब्बार- वि० (फा०)जब्र या जबरदस्ती करने वाला। पुं० ईश्वर का एक नाम।

जब्र- पुं० (अ०) १ जबरदस्ती, बलप्रयोग। २ अत्याचार, जुल्म। यौ०- जब्र व तअद्दी= बलप्रयोग और उत्पीड़न।

जब्रन- क्रि० वि० (अ०) बलपूर्वक, जबरदस्ती।

जब्र व मुकाबला- पुं० (अ०) बीजगणित।

जब्री- वि० (अ०) १ जबरदस्ती करनेवाला। २ जबरदस्ती का।

ज़मज़म- पुं० (अ०) मक्के के पास का एक कुआँ जिसे मुसलमान बहुत पवित्र मानते हैं।

ज़मज़मा- पुं० (अ० जमजमः) संगीत, गाना बजाना।

ज़मज़मी- स्त्री० (अ०) वह पात्र जिसमें मुसलमान जमजम नामक कूएँ का पवित्र जल भर कर लाते हैं।

जमन- स्त्री० (फा०) यमुना नदी।

जमल- पुं० (अ०) ऊँट।

जमहूर- पुं० (अ०) १ जनसमूह, लोक समूह। २ राष्ट्र।

जमहूरी- वि० (अ०) जिसका सम्बन्ध सारे राष्ट्र या सब लोगों से हो। २ प्रजातंत्र संबंधी। जैसे- जमहूरी सलतनत = वह राज्य जहाँ प्रजातन्त्र हो।

ज़माँ- पुं० (अ०) ज़माना।

जमा- वि० (अ० जमऽ) १ संग्रह किया हुआ, एकत्र, इकट्ठा। २ सब मिला कर। ३ जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो। स्त्री० १ मूलधन, पूँजी। २ धन, रुपया पैसा। ३ भूमिकर, मालगुजारी, लगान। ४ जोड़ (गणित)।

जमाअ- पुं० दे० 'जिमाअ'।

जमाअत- स्त्री० दे० 'जमात'।

जमात- स्त्री० (अ० जमाअत) १ मनुष्यों का समूह, गरोह या जत्था। २ कक्षा, श्रेणी, दरजा।

जमाद- पुं० (अ० जिमाद) १ वह पदार्थ जो निर्जीव हो और बढ़ न सकता हो। जैसे- पत्थर और खनिज द्रव्य आदि। २ वह प्रदेश जहाँ वर्षा न हो। ३ कंजूस।

ज़माद- पुं० (अ०) शरीर पर लगाया जाने वाला लेप या मरहम।

जमादात- स्त्री० (अ० जिमाद का बहु०) खनिज द्रव्य और पत्थर आदि।

जमादार- स्त्री० (अ० जम अ०+फा० दार) सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।

जमादारी- स्त्री० (अ०+फा०) जमादार का काम या पद।

जमादी- वि० (अ०+जिमाद) जिमाद या खनिज पदार्थों से संबंध रखने वाला।

जमादी-उल्-अव्वल- पुं० (अ०) अरब वालों का पाँचवाँ चान्द्रमास जो मुहर्रम से पहले पड़ता है।

ज़मान- पुं० दे० 'जमाना'।

जमानए गुज़श्ता- पुं० (अ० जमानए गुजश्तः) भूतकाल।

ज़मानए हाल- पुं० (अ०) वर्तमान काल।

ज़मानत- स्त्री० (अ०) वह जिम्मेदारी जो जबानी कोई कागज लिखाकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है, जामिनी।

ज़मानत-दार- पुं० (अ०+फा०) वह जो किसी की जमानत करे।

ज़मानतन्- क्रि० वि० (अ०) जमानत के तौर पर।

ज़मानतनामा- पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिस पर किसी की जमानत का उल्लेख हो।

ज़माना- पुं० (अ० जमानः) १ समय, काल, वक्त। २ बहुत अधिक समय, मुद्दत। ३ प्रताप या सौभाग्य का समय। ४ दुनिया, संसार, जगत्।

जमानासाज- वि० (अ० + फा०) (सं० ज़मानासाज़ी) १ जो लोगों का रंग-ढ़ंग देख कर व्यवहार करता हो, दुनियासाज। २ अवसरवादी। ३ धूर्त।

जमा-बन्दी- स्त्री० (अ०+फा०) पटवारी का एक काग़ज जिसमें असामियों के लगान की रक़में लिखी जाती हैं।

जमा-मुकस्सर- स्त्री० (अ०) बहुवचन का वह भेद जिसमें एक वचन का रूप बदल जाता है। जैसे- किताब से कुतुब।

जमाल- पुं० (अ०) बहुत सुन्दर रूप, सौन्दर्य, ख़ूबसूरती।

जमालिस्तान- पुं० (अ०+फा०) सुन्दरियों का लोक, सौन्दर्यलोक।

जमाली- वि० (अ०) १ परम रूपवान। (ईश्वर का एक विशेषण) २ रूप सम्बन्धी।

जमासालिम- स्त्री० (अ०)बहुवचन का वह भेद जिसमें एकवचन का रूप ज्यों का त्यों रखकर अन्त में बहुवचन का सूचक प्रत्यय लगाते हैं। जैसे- नाजिर से नाज़रीन।

ज़मीं- स्त्री० दे० 'ज़मीन'।

ज़मींदार- स्त्री० पुं० (फ़ा०) जमीन का मालिक, भूमि का स्वामी।

ज़मींदारी- स्त्री० (फा०) १ जमींदार की वह जमीन जिसका वह मालिक हो। २ ज़मींदार का पद।

ज़मींदोज़- वि० (फा०) १ जो गिर कर जमीन के बराबर हो गया हो। २ ज़मीन पर गिरा हुआ। ३ जो ज़मीन के अन्दर हो, जमीन के नीचे का। पुं० एक प्रकार का खेमा।

जमीअ- वि० (अ०) कुल, सब।

ज़मीन- स्त्री० (फा०) १ पृथ्वी। २ पृथ्वी का वह ऊपर का ठोस भाग जिस पर लोग रहते हैं, भूमि, धरती। मुहा०- ज़मीन आसमान एक करना= बहुत बड़े-बड़े उपाय करना। ज़मीन-आसमान का फरक़= बहुत अधिक अंतर, बहुत बड़ा फरक़। ज़मीन देखना= १ गिर पड़ना, पटका जाना। २ नीचा देखना। ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना= १ बहुत बड़ी-बड़ी बातें सोचना।

२ बहुत बड़े-बड़े प्रयत्न करना।
ज़मीनी- वि० (फा०) ज़मीन या भूमि सम्बन्धी।
ज़मीमा- पुं० (अ० ज़मीमः) १ परिशिष्ट। २ अतिरिक्त पत्र, क्रोड़-पत्र।
ज़मीर- स्त्री० (अ०) (वि० ज़मीरी) १ मन, अन्तःकरण। २ विवेक। ३ व्याकरण में सर्वनाम।
जमील- वि० (अ०) बहुत सुन्दर, रूप-सम्पन्न, खूबसूरत।
ज़मुर्रद- पुं० (फा०) पन्ना नामक रत्न।
जमैयत- स्त्री० (अ०) १ दे० 'जमात'। २ मन की शान्ति या सन्तोष। ३ सेना, फौज।
ज़म्बील- स्त्री० (फा०) थैली, विशेषतः वह थैली जिसमें फकीर लोग भीख में मिली हुई चीजें माँग कर रखते हैं।
जम्बूर- पुं० (अ०) १ बर्र या भिड़ नामक उड़नेवाला कीड़ा जो डंक मारता है। २ दाँत उखाड़ने की चिमटी या सँडसी। ३ दे० 'जम्बूरक'।
जम्बूरक- स्त्री० (तु०) १ एक प्रकार की बड़ी बन्दूक। २ एक प्रकार की तोप जो प्रायः ऊँटों पर से चलाई जाती है।
ज़म्बूरची- पुं० (फा०) वह जो जम्बूर (बन्दूक या तोप) चलाता हो।
ज़म्बूरा- पुं० (फा० जंबूरः) १ तीर का फल। २ एक प्रकार की छोटी तोप। ३ एक प्रकार का बाजा।
ज़म्बूरी- पुं० (फा०) जालीदार कपड़ा।
जम्म- वि० (अ०) १ बहुत अधिक बड़ा। जैसे- जम्मे गफीर = बहुत बड़ी भीड़। २ सब, समस्त।
ज़म्म- पुं० (अ०) अर बी लिपि में वह चिह्न ज़ो किसी शब्द के ऊपर लग कर उकार की मात्रा का काम देता है, पेश। (')
जर- पुं० (अ०) खींचना।
ज़र- पुं० (फा०) १ सोना, स्वर्ण। २ धन, दौलत, रुपया। (जर के यौगिक शब्दों के लिये दे० 'ज़र' के अन्तर्गत।)
ज़रकशी- स्त्री० (फा०) कलाबत्तू का काम।
ज़रकोब- पुं० (फा० जरकोबी) सोने या चाँदी के पत्तर बनाने वाला, वरक़साज़।
ज़रखरी- वि० (फा०) धन देकर खरीदा हुआ, क्रीत।
ज़रखेज़- वि० (फा०) (सं० जरखेजी) उर्वर, उपजाऊ। (भूमि)
ज़रगर- पुं० (फा०) स्वर्णकार, सुनार।
ज़रगरी- स्त्री० (फा०) स्वर्णकार का काम, सुनारी।
ज़रगा- पुं० (तु० जर्गः) १ जनसमूह, भीड़। २ पठानों का दल या वर्ग जो जाति के रूप में होता है। इस प्रकार के दलों की सार्वजनिक सभा।
ज़रतुश्त- पुं० दे० 'जरदुश्त'।
ज़रद- वि० (फा० जर्द) पीला।
ज़रदा- पुं० (फा०) १ चावलों का बनाया हुआ एक प्रकार का व्यंजन। २ पान में खाने की एक प्रकार की सुगंधित सुरती (तम्बाकू)। ३ पीले रंग का घोड़ा।
ज़रदार- वि० (फा०) (सं० जरदारी) धनवान्, संपन्न, अमीर।
ज़रदालू- पुं० (फा०) खूबानी।
ज़रदी- स्त्री० दे० 'जर्दी'।
ज़रदुश्त- पुं० (फा०) फारस देश के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता आचार्य।
ज़रदोज़- पुं० (फा०) जरदोजी का काम करने वाला।
ज़रदोज़ी- पुं० (फा०) वह दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमें-सितारे आदि से की जाती है।
ज़रदोस्त- वि० (फा०) केवल धन को सबसे अधिक प्रिय समझने वाला।
ज़रनिगार- वि० (फा०) (सं० जरनिगारी) जिस पर सोने का पानी चढ़ा हो या सोने का काम किया हो।
ज़रपरस्त- वि० (फा०) (सं० जरपरस्ती) धन का उपासक, केवल धन को सब कुछ समझने वाला, धनलोलुप।
ज़रब- स्त्री० (अ० ज़र्ब) १ आघात, चोट।

मुहा०- ज़रब देना= चोट लगाना, पीटना। यौ०- ज़रब खफीफ= हलकी चोट। ज़रब शदीद= भारी या गहरी चोट।

ज़रबफ्त- पुं० (फा०) वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे हों।

ज़रबाफ- पुं० (फा०) ज़रबफ्त या जरदोजी का काम बनाने वाला।

ज़रबाफी- स्त्री० (फा०) ज़रदोजी। वि० जिस पर जरबफ्त का काम बना हो।

ज़रर- पुं० (अ०) १ चोट, आघात। यौ०- ज़रर शदीद= भारी चोट। ज़रर खफीफ= हलकी चोट। २ हानि, नुकसान, क्षति।

ज़रर रसाँ- वि० (अ०+फा०) १ चोट पहुँचाने वाला। २ हानि पहुँचाने वाला।

ज़रर रसानी- स्त्री० (अ०+फा०) १ चोट पहुँचाना। २ क्षति पहुँचाना।

जरह- स्त्री० दे० 'जिरह'।

ज़रा- क्रि० वि० (अ० ज़िराअत) खेती-बारी, कृषिकर्म। २ जोता-बोया हुआ खेत। ३ फसल, पैदावार।

ज़राअत पेशा- पुं० (अ०+फा०) खेती-बारी से जीविका निर्वाह करने वाला, खेतिहर।

जराफ- पुं० (फा० जिराफ) ऊँट की जाति का एक पशु जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं।

ज़राफत- स्त्री० (अ०) १ परिहास, मसखरी, मजाक। २ बुद्धिमत्ता, अक्लमन्दी।

ज़राफतन- क्रि० वि० (अ०) मज़ाक के तौर पर, हँसी में।

ज़राब- स्त्री० दे० 'जुर्राब'।

ज़राय- पुं० अ० 'जरीया' का बहु०।

ज़रायम- पुं० (अ० 'जुर्म' का बहु०) अनेक प्रकार के अपराध।

जरायम-पेशा- पुं० (अ०) वे लोग जो चोरी-डाके आदि से ही अपनी जीविका चलाते हों।

जरासीम- पुं० (अ०) कीटाणु।

ज़रिया- पुं० दे० 'ज़रीया'।

जरी- वि० (अ०) बहादुर, वीर।

ज़री- स्त्री० (फा०) १ ताश नामक कपड़ा जो बादले से बुना जाता है। २ सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।

जरीदा- वि० (फा० जरीदः) अकेला, एकाकी।

जरीदा- पुं० (अ० जरीदः) समाचार-पत्र।

जरीदानिगार- पुं० (अ० जरीदःनिगार) पत्रकार।

जरीदानिगारी- स्त्री० (अ० जरीदःनिगारी) पत्रकारिता।

ज़रीफ- पुं० (अ०) १ परिहास या मज़ाक करने वाला, हँसोड़, दिल्लगीबाज़, ठठोल। २ बुद्धिमान, अक्लमन्द।

जरीब- स्त्री० (अ०) खेत या ज़मीन मापने की ज़ंजीर।

ज़रीब-कश- वि० (अ०+फा०) वह जो ज़मीनों को नापता-जोखता हो।

जरीब-कशी- स्त्री० (अ०+फा०) ज़मीन को नापने की क्रिया, पैमाइश।

ज़री-बाफ- पुं० (फा०) ज़री के कपड़े आदि बुनने वाला।

ज़री-बाफी- स्त्री० (फा०) ज़री के कपड़े आदि बुनने का काम।

ज़रीबी- पुं० दे० 'जरीब-कश'। स्त्री० ज़मीन को नापने की मजदूरी या पारिश्रमिक। वि० जरीब सम्बन्धी।

ज़रीया- पुं० (अ० जरीय S) १ संबंध, लगाव द्वार। २ हेतु, कारण, सबब।

ज़रूर- वि० (अ० ज़ुरूर) १ आवश्यक, दरकारी। २ अनिवार्य। क्रि० वि० अवश्य, निश्चयपूर्वक। यौ०- बिल ज़रूर= अवश्य ही, निश्चयपूर्वक।

ज़रूरत- स्त्री० (अ० ज़ुरूरत) आवश्यकता, प्रयोजन।

ज़रूरतमंद- वि० (अ०) जिसे आवश्यकता हो।

ज़रूरी- वि० (अ० ज़ुरूर) १ जिसके बिना काम न चले, प्रयोजनीय। २ जो अवश्य होना चाहिए।

ज़रूरियात- स्त्री० (अ० 'ज़ुरूरी' का बहु०) १ आवश्यकताएँ। २ आवश्यक वस्तुएँ।

ज़रे-अमानत- पुं० (फा०) धरोहर में रखा हुआ धन।
ज़रेअस्ल- पुं० (फा०) मूलधन जिस पर ब्याज चलता हो।
ज़रे ज़ाफरी- पुं० (फा०) बिलकुल शुद्ध सोना।
ज़रेज़ामिनी- पुं० (फा०) जमानत में रखा हुआ धन।
ज़रेतावान- पुं० (फा०) हानि के बदले में दिया जाने वाला धन।
ज़रेनक्द- पुं० (फा०) पेशगी दिया जाने वाला धन, बयाना।
ज़रेमुताल्बा- पुं० (फा०) वह धन जो किसी से पावना हो, बाकी रुपया।
ज़रे-याफ्तनी- पुं० दे० 'जरेमुताल्बा'।
ज़रे-सफेद- पुं० (फा०) चाँदी।
ज़रे-सुर्ख- पुं० (फा०) सोना।
ज़र्क-बर्क- वि० (अ०) तड़क-भड़क वाला। भड़कीला, चमकीला।
ज़र्द- वि० (फा०) पीला, पीत।
ज़र्द-चोब- स्त्री० (फा०) हल्दी।
ज़र्द-रू- वि० (फा०) १ जिसका रंग पीला पड़ गया हो। २ लज्जित, शरमाया हुआ। ३ जिसका चेहरा पीला पड़ गया हो।
ज़र्दा- स्त्री० ((फा० जर्दः) १ पीलापन, पिलाई। २ अंडे के अन्दर का पीला चेप। ३ कमल रोग, पीलिया। ४ स्वर्ण मुद्रा, मोहर।
ज़र्दी- स्त्री० (फा०) १ पीलापन। २ अंडे के अंदर का पीला अंश।
ज़र्फ- पुं० (अ०) (बहु० जुरूफ) १ बरतन, भाँडा, पात्र। २ समाई। यौ०- आली जर्फ= उदार हृदय। कमजर्फ= तुच्छ हृदय, ओछा। ३ बुद्धिमत्ता। ४ व्याकरण में काल और स्थान-वाचक क्रिया विशेषण।
ज़र्फे-ज़माँ- पुं० (अ०) व्याकरण में काल वाचक क्रिया विशेषण। जैसे- कब, जब।
ज़र्फे-मकान- पुं० (अ०) व्याकरण में स्थान-वाचक क्रिया विशेषण जैसे- यहाँ, वहाँ।
ज़र्ब- स्त्री० दे० 'जरब'। यौ०- जर्बे खफीफ= हलकी चोट। जर्बे शदीद= गहरी चोट।
ज़र्ब-उल-मिसाल- स्त्री० (अ०) कहावत, लोकोक्ति। वि० जो सब लोगों की जबान पर हो, प्रसिद्ध।
ज़र्बत- स्त्री० (अ०) आघात, चोट।
ज़र्बात- स्त्री० (अ०) चोटें।
जर्र- पुं० (अ०) १ खींचना। २ अपराधी को पकड़ कर न्यायालय में ले जाना। यौ०- जर्रे सक़ील= भारी बोझ खींचने की विद्या।
ज़र्र- पुं० (अ०) नुक्सान, हानि, क्षति।
ज़र्रा- पुं० (अ० जर्रः) १ बहुत छोटा टुकड़ा या खंड, अणु, कण।
ज़र्राब- पुं० (अ०) १ वह जो जरब लगाता हो। २ सिक्के ढालने वाला अधिकारी।
ज़र्रार- वि० (अ) १ वीर, बहादुर। २ बहुत विशाल। (सेना आदि)
जर्राह- पुं० (अ०) चीर-फाड़ करने वाला हकीम, अस्त्र-चिकित्सक।
ज़र्राही- वि० (अ०) अस्त्र-चिकित्सा सम्बन्धी। स्त्री० घावों आदि की चीर-फाड़ करना, अस्त्र चिकित्सा।
ज़र्री- वि० (फा०) सोने का, सुनहला।
ज़र्द- स्त्री० (अ०) चोट, आघात।
ज़लक- स्त्री० (अ० जल्क) हाथ से रगड़-कर वीर्यपात करना, हस्तक्रिया, हथरस।
ज़लज़ला- पुं० (अ० जल्ज़लः) (बहु० जलाजिल) भूकम्प, भूचाल।
ज़लक़- स्त्री० (अ०) हस्तमैथुन।
ज़लकी- वि० (अ०) हस्त मैथुन करने वाला।
जलवा- पुं० दे० 'जल्सा'।
जलसा- पुं० दे० 'जल्सा'।
जलाल- पुं० (अ०) १ तेज प्रकाश। २ प्रभाव, आतंक।
जलालिया- पुं० (अ० जलालियः) १ वह जो ईश्वर के जलाली रूप का उपासक हो। २ एक प्रकार के फकीर।
ज़लाली- वि० (अ०) १ जलाल वाला,

तेज-युक्त। २ भीषण, विकराल। (ईश्वर का एक विशेषण; यौ०- इस्मे जलाल= १ ईश्वर का एक नाम जो उसके क्रोधात्मक रूप का सूचक है। २ कुरान की वे आयतें जो मंत्ररूप से काम में लाई जाती हैं।

जलावतन- वि० (अ०) देश से निकाला हुआ, निर्वासित।

जलावतनी- स्त्री० (अ०) देश निकाला, निर्वासन।

जली - वि० (अ०) प्रगट, स्पष्ट। स्त्री० वह लिपि जिसमें अक्षर मोटे, सुन्दर और स्पष्ट हों।

जलाल- वि० (अ०) बड़ा, बुजुर्ग। यौ०- जलील-उल-क़द्र= बहुत प्रतिष्ठित और मान्य।

जलालत- स्त्री० (अ०) श्रेष्ठता।

जलील- वि० (अ०) प्रतिष्ठित, सम्मान्य।

ज़लील- वि० (अ०) १ तुच्छ, बेक़दर। २ जिसने नीचा देखा हो, अपमानित।

जलीस- वि० (अ०) पास बैठने वाला, पार्श्ववर्ती।

ज़लूम- वि० (अ०) अत्याचारी।

जलूस- पुं० दे० 'जुलूस'।

ज़लूसी- वि० दे० 'जुलूसी'।

जलक़- पुं० (अ०) (कर्त्ता जल्क़ी) हाथ से इंद्रिय मल कर वीर्यपात करना, हस्तक्रिया।

जल्द- क्रि० वि० (अ०) १ शीघ्र, चटपट। २ तेजी से। यौ०- जल्द अज़ जल्द= शीघ्रातिशीघ्र, फौरन।

जल्दबाज- वि० (अ०+फा०) (सं० जल्दबाजी) जो किसी काम में बहुत जल्दी करता हो।

जल्दी- स्त्री० (अ०) शीघ्रता, फुरती।

जल्ल- वि० (अ०) १ श्रेष्ठ। २ महान। यौ०- जल्लेजलालहू= ईश्वरीय वैभव या महत्ता से संपन्न।

जल्लाद- पुं० (अ०) १ वह जो कोड़े मारता या खाल खींचता हो। २ प्राण-दंड पाने वालों की हत्या करने वाला, वधक, घातक। ३ क्रूर व्यक्ति। (प्रायः निर्दय प्रेमिका या प्रिय के लिए प्रयुक्त।)

जल्लादी- वि० (अ०) घोर अत्याचार करने वाला। स्त्री० जल्लाद का पेशा।

जल्वत- स्त्री० (अ०) अपने आप को सबके सामने प्रकट करना। 'खिल्वत' का उल्टा।

जल्वा- पुं० (अ० जल्वः) १ तड़क-भड़क, शोभा। २ रूप की शोभा। ३ वधू का पहले पहल अपने पति के सामने मुँह खोल कर होना (मुसल०)। ४ प्रदर्शन।

जल्वागाह- स्त्री० (अ०+फा०) १ वह स्थान जहाँ बैठ कर कोई अपना जलवा दिखलावे। २ संसार।

जल्सा- पुं० (अ० जल्सः) १ आनंद या उत्साह का समारोह। जिसमें खाना-पीना, गाना-बजाना, आदि हों। २ सभा, समिति। ३ अधिवेशन।

जवाँ- वि० (फा०) १ जवान, युवा। २ वीर, बहादुर।

जवाँ-बख्त- वि० (फा०) (सं० जवाँबख्ती) भाग्यवान, किस्मतवर।

जवाँमर्द- वि० (फा०) शूर-वीर, साहसी।

जवाँमर्दी- स्त्री० (फा०) वीरता, बहादुरी, साहस।

जवाँहिम्मत- वि० (फा०+अ०) अत्यंन्त उत्साही।

जवाज़- पुं० (अ०) धार्मिक सिद्धान्तों या नियमों आदि के अनुकूल होने का भाव, वैधानिकता।

जवान- वि० (फा०) १ युवा, तरुण। २ वीर, बहादुर।

जवानाँमर्ग- स्त्री० (फा०) जवानी में ही आने वाली मौत, जवानी में मरना।

जवानाना- वि० (फा० जवानानः) जवानों के जैसा।

जवानिब- स्त्री० (अ०) 'जानिब' का बहु०।

जवानी- स्त्री० (फा०) १ यौवन, तरुणाई। मुहा०- जवानी उतरना या ढलना= यौवन का उतार होना। २ युवावस्था।

जवाब- पुं० (अ०) १ किसी प्रश्न या बात

के समाधान के लिये कही हुई बात, उत्तर। २ वह बात जो किसी बात के बदले में की जाय, बदला। ३ मुकाबलेकी चीज़, जोड़ा। ४ नौकरी छूटने की आज्ञा, मौकूफी।
जवाबतलब- पुं० (अ०) स्पष्टीकरण करने के लिए कहना, पूछताछ।
जवाबदावा- पुं० (अ०) वह उत्तर जो वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिखकर अदालत में देता है।
जवाबदेह- वि० (अ०+फा०) उत्तरदायी, जिम्मेदार।
जवाबदेही- स्त्री० (अ०+फा०) उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी।
ज़वाबित- पुं० (अ०) 'ज़ाब्ता' का बहुवचन।
जवाबी- वि० (अ०) जवाब का, जिसका जवाब देना हो।
जवायद- पुं० (अ० 'ज़ायद' का बहु०) आवश्यकता से अधिक वस्तुएँ, जरूरत से ज्यादा चीजें।
जवार- पुं० (अ०) आस पास का स्थान। यौ०- क़र्ब-व-जवार= आस-पास और चारों ओर के स्थान।
जवारिश- स्त्री० (फा०) पेट के रोगों की एक प्रकार की स्वादिष्ट दवा।
ज़वाल- पुं० (अ०) १ अवनति, उतार, घटाव। २ जंजाल, आफत।
जवाहर- पुं० (अ० जवाहिर) रत्न।
जवाहिनिगार- वि० (अ०+फा०) रत्न-जटित, जड़ाऊ।
जवाहिर- पुं० (अ० 'जौहर' का बहु०) रत्न , मणि।
जवाहिरात- पुं० (अ० जवाहिर का बहु०) रत्न-समूह।
जशन- पुं० दे० 'जश्न'।
जश्न- पुं० (फा०) १ उत्सव, समारोह,जलसा। २ आनन्द, हर्ष।
जसामत- स्त्री० (अ०) १ मोटा या स्थूल होना। २ शरीर का आकार-प्रकार।
जसारत- स्त्री० (फा०) १ दृढ़ता। २ साहस, हिम्मत। ३ वीरता।
जसीम- वि० (अ०) भारी जिस्म वाला, मोटा-ताजा, स्थूल शरीर।
जस्त- स्त्री० (फा०) कूदने की क्रिया, छलाँग। क्रि० प्र० मरना।
ज़ह- पुं० (फा०) १ प्रसव, बच्चा जनना। यौ०- दर्दे ज़ह= प्रसवकाल की पीड़ा। २ सन्तान, बच्चा। ४ उल्ब नाल, आँवल-नाल, नारा।
जहद- स्त्री० (अ०) १ प्रयत्न, उद्योग। २ परिश्रम, मेहनत। यौ०- जद्द व जहद= प्रयत्न और परिश्रम।
ज़हन- पुं० दे० 'जिहन'।
जहन्नम- पुं० (अ०) नरक, दोजख। मुहा०- जहन्नम में जाय= चूल्हे में जाय, हमसे कोई सम्बन्ध नहीं।
जहन्नमी- वि० (अ०) नारकी, दोज़खी।
ज़हब- पुं० (अ०) सोना।
ज़हमत- स्त्री० (अ० ज़िह्मत) १ आपत्ति, मुसीबत, आफत। २ झंझट, बखेड़ा।
ज़हर- पुं० (फा० जह्र) १ विष, गरल। मुहा०- ज़हर उगलना= मर्मभेदी या कटु बात कहना। ज़हर का घूँट पीना= किसी अनुचित बात को देख कर क्रोध को मन ही मन दबा रखना। ज़हर का बुझाया हुआ= बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट। २ अप्रिय बात या काम।
ज़हर-आलूदा- वि० (फा० जह्र=आलूदः) जिसमें जहर मिला हो, विषाक्त।
ज़हर-क़ातिल- पुं० (फा० जह्रकातिल) प्राण-घातक विष।
ज़हरखुर्दा- वि० (फा० जह्रखुर्दः) जिसने जहर खाया हो।
ज़हरदार- वि० (फा० जह्रदार) जिसमें जहर हो, विषाक्त।
ज़हरबाद- पुं० (फा० जह्रबाद) एक प्रकार का बहुत भयंकर और जहरीला फोड़ा।
ज़हरमार- वि० (फा० जह्रमार) विष का प्रभाव नष्ट करने वाला, विषघ्न, विषनाशक। पुं० तिरयाक नामक औषधि जो

विषघ्न होती है, जहरमोहरा।

ज़हरमोहरा- पुं० (फा० ज़हमुहरः) १ एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है। २ हरे रंग का एक विषघ्न पत्थर।

ज़हरां- स्त्री० (अ० जह्रः) गोरी स्त्री।

ज़हरीला- वि० (फा० जह्र) जिसमें जहर हो, विषाक्त।

जहल- पुं० (अ० जह्ल) १ अज्ञान, बेवकूफी। २ असभ्यता, अशिष्टता।

जहली- वि० (अ० जहली) १ झगड़ालू। २ झक्की।

जहाँ- पुं० (फा०) जहान, संसार, दुनिया।

जहाँआरा- वि० (फा०) जो संसार की शोभा हो।

जहाँदार- पुं० (फा०) राजा, सम्राट।

जहाँदीदा- पुं० (फा०) वह जो संसार के सब ऊँच-नीच देख चुका हो, बहुत बड़ा अनुभवी।

जहाँपनाह- पुं० (फा०) १ वह जो सारे संसार को शरण दे। २ बादशाहों आदि के लिये सम्बोधन।

ज़हाक- पुं० (अ० जह्हाक्0) १ वह जो बहुत अधिक हँसे। २ एक बादशाह का नाम जो बहुत बड़ा दुष्ट, क्रोधी और अत्याचारी था।

जहाज़- पुं० (अ०) समुद्र में चलने वाली नाव, समुद्रपोत।

जहाज़राँ- पुं० (अ०+फा०) यानचालक, पोतचालक।

जहाज़रानी- स्त्री० (अ०+फा०) जहाज चलाने का काम।

जहाज़ी- वि० (अ०) जहाज से संबंध रखने वाला। पुं० वह जो जहाज़ चलाता हो, नाविक।

जहाद- पुं० (अ० जिहाद) वह युद्ध जो मुसलमान लोग काफिरों से करते हैं।

ज़हादत- स्त्री० (अ०) संयम, निग्रह।

जहादी- वि० (जिहादी) जहाद करने या काफिरों से लड़ने वाला।

जहान- पुं० (फा०) संसार, दुनिया। यौ०- जहाने फानी= नश्वर संसार। जहाने बाकी= शाश्वत संसार।

ज़हानत- स्त्री० (अ०) १ प्रतिभा। २ सूझ-बूझ।

ज़हाब- पुं० (अ०) प्रस्थान।

जहालत- स्त्री० (अ०) अज्ञान।

ज़हीन- वि० (अ०) जिसका जिहन अच्छा हो। बुद्धिमान, समझदार।

ज़हीर- पुं० (अ०) सहायक, मददगार।

जहूद- पुं० (फा०) यहूदी।

ज़हूर- पुं० (अ० जुहुर) १ जाहिर या प्रकट होने की क्रिया, प्रकाशन। २ उत्पन्न या आरम्भ होना। मुहा०- ज़हूर में आना= प्रकट होना, जाहिर होना।

ज़हूरा- पुं० (अ० जहूर) १ प्रताप, इकबाल। २ प्रकाश।

ज़हे- अव्य० (फा०) वाह, धन्य। जैसे- जहे किस्मत= धन्य भाग्य।

जहेज़- पुं० (अ०) वह धन-संपत्ति जो विवाह में कन्या पक्ष की ओर से वर को दी जाती है, दहेज।

ज़ह- पुं० (अ०) १ पिछला भाग, पृष्ठ, पीठ। २ ऊपरी या बाहरी भाग। पुं० दे० 'ज़हर'।

जहद- पुं० (अ०) १ शक्ति, बल। २ प्रयत्न। ३ दुःख।

जाँकन- वि० (फा०) (जाँकनी) प्राणों पर संकट लाने वाला, प्राणघातक।

जाँकाह- वि० (फा०) १ प्राणो पर संकट लाने वाला। २ भीषण, विकट।

जाँ-निवाज़- वि० (फा०) (सं० जाँनिवाज़ी) प्राणों पर दया करने वाला, दयालु, कृपालु।

जाँनिसार- वि० (फा०) अपने प्राण न्योछावर करने वाला।

जाँपनाह- वि० (फा०) प्राणरक्षक।

जाँफिज़ा- पुं० (फा०) अमृत।

जाँफिशानी- स्त्री० (फा०) बहुत अधिक परिश्रम, किसी काम के लिये जान तक लड़ा

देना।

जाँब-लब- वि० (फा०) जिसके प्राण होंठो तक आ गये हों, मरणासन्न, मरणोन्मुख।

जाँबाज- (फा०) (सं० जाँबाजी) १ बहुत अधिक परिश्रम करने वाला। २ जान पर खेल जाने वाला, जान देने तक को तैयार रहने वाला।

जा- स्त्री० (फा०) जगह, स्थान। यौ०- जा-बे-जा= मौके पर भी और बे-मौके भी, बुरी-भली बातें।

ज़ा- प्रत्य० दे० 'ज़ाद'।

जाइज़ा- पुं० (अ०) जायजा।

ज़ाइदा- वि० (फा० ज़ाइदः) जन्मा हुआ, उत्पन्न, जात।

ज़ाकिर- वि० (अ०) जिक्र या उल्लेख करने वाला।

ज़ाग़-पुं० (अ०) कौवा, काक।

जागीर- स्त्री० (फा०) राज्य की ओर से मिली हुई भूमि या प्रदेश, सरकार से मिला हुआ ताल्लुका।

जागीरदार- पुं० (फा०) १ वह जिसे जागीर मिली हो, जागीर का मालिक। २ अमीर, रईस।

जाजम- स्त्री० (तु० जाजिम) फर्श पर बिछाने की रंगीन और बूटेदार चादर जाजिम।

जाज़रूर- पुं० (फा०) मल त्याग करने का स्थान, शौचागार, पाखाना।

जाज़िब- वि० (फा०) जज्ब करने या सोखने वाला। २ खींचने वाला, आकर्षक। यौ०- कूवते जाज़िबा= आकर्षण-शक्ति।

ज़ाजिम- स्त्री० दे० 'जाजम'।

ज़ात- स्त्री० (अ० मि० सं० जाति) १ शरीर; देह। यौ०- जाते शरीफ= दुष्ट, पाजी। (व्यंग्य) २ जाति, वंश।

ज़ाती- वि० (अ०) १ व्यक्तिगत। २ अपना, निजका।

ज़ाद- प्रत्य० (अ० सं० जात) उत्पन्न, जन्मा हुआ। जैसे- आदमज़ाद= आदम से उत्पन्न, आदमी। पं० (अ०) भोजन।

ज़ादबूम- स्त्री० (अ० मि० सं० जात+भूमि) जन्मभूमि।

ज़ादराह- पुं० (अ०) मार्ग व्यय, रास्ते का खर्च, यात्राभत्ता।

ज़ादा- वि० (फा० जादः) (स्त्री०) (यौगिक शब्दों के अंत में। जैसे- शहज़ादा, अमीरज़ादा, हरामज़ादा आदि।)

जादू- पुं० (फा०) १ वह आश्चर्यजनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवी समझते हों, इन्द्रजाल, तिलस्म। मुहा०- जादू जमाना= जादू का प्रयोग या प्रभाव दिखलाना। २ वह अद्‌भूत खेल या कृत्य जो दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाय। ३ टोना, टोटका। ४ दूसरे को मोहित करने की शक्ति।

जादूगर- पुं० (फा०) जादू दिखलाने का काम, इंद्रजाल।

जान- स्त्री० (फा०) १ प्राण, जीव। प्राणवायु, दम। मुहा० - जान के लाले पड़ना= प्राण बचना कठिन दिखाई देना, जी पर आ बनना। जान को जान न समझना= अत्यन्त अधिक कष्ट या परिश्रम करना। जान छुड़ाना या बचाना= १ प्राण बचाना। २ किसी झंझटसे छुटकारा पाना। जान पर खेलना = प्राणोंको भय़में डालना। जान बहक तसलीम होना= मरना। जान से जाना= १ प्राण खोना। २ मरना, बल। ३ शक्ति, बूता, सामर्थ्य, दम। ४ सार, तत्व। ५ अच्छा या सुंदर करने वाली वस्तु, शोभा बढ़ाने वाली वस्तु। मुहा०- जान [illegible] = शोभा बढ़ना। ६ प्रेमी या प्रेमिका के लिए सम्बोधन।

जान-आफरीन- पुं० (फा० जाँआफरीं) १ सृष्टि करने वाला। २ जीवन देने वाला।

जानदार- वि० (फा०) १ जिसमें जीवन हो, सजीव। २ जिसमें जीवनी-शक्ति हो, सबल।

जान-बख़्शी- स्त्री० (फा०) पूर्ण रूप से क्षमा कर देना। प्राण-दंड तक से मुक्त कर देना।

जा-नमाज़- स्त्री० (फा०) वह छोटी दरी आदि जिस पर बैठकर नमाज़ पढ़ते हैं।
जानवर- पुं० (फा०) १ प्राणी, जीव। २ पशु, जंतु, हैवान।
जान-शीन- वि० (फा०) (सं० जा-नशीनी) किसी के स्थान पर उत्तराधिकारी होकर बैठने वाला, उत्तराधिकारी, वारिस।
जानाँ- पुं० स्त्री० (फा०) माशूक, प्रिय।
जानानाँ- पुं० दे० 'जानाँ'।
जानिब- स्त्री० (अ०) बहु० जानिबैन, जवानिव) १ ओर, तरफ, दिशा। २ पक्ष। यौ०- ईंजानिब= 'हम'। बहुत बड़े लोग छोटों से बातें करते वक्त अपने सम्बन्ध में प्रायः 'हम' के स्थान पर 'ई-जानिब' कहते हैं।) क्रि० वि० तरफ, ओर।
जानिब-दार- वि० (फा०) (सं० जानिबदारी) पक्षपाती, तरफदार।
जानिबैन- पुं० (अ०) दोनों पक्ष, उभयपक्ष।
ज़ानिया- सं०- स्त्री० (अ० जानियः) जिना करने वाली, व्यभिचारिणी।
जानी- वि० (फा०) जान से संबध रखने वाला, जान का। जैसे- जानी दुश्मन= जान लेने वाला दुश्मन। जानीदोस्त= परम मित्र। स्त्री० प्राण-प्यारी। पुं० प्राण-प्यारा।
ज़ानी- वि० (अ०) जिना करने वाला, व्यभिचारी, परस्त्रीगामी।
ज़ानू- पुं० स्त्री० (फा०) घुटना। यौ०- दो ज़ानू या दु-ज़ानू= घुटने के बल (बैठना)।
जाने-जहाँ- पुं० (फा०) संसार का प्राण, ईश्वर।
जाने-जाँ- पुं० (फा०) १ प्रेमी। २ ईश्वर।
जाने-मन- पुं० स्त्री (फा०) मेरे प्राण। (सम्बोधन)
जाफर- पुं० (अ०) बड़ी नदी, नद।
ज़ाफरान- पुं० (अ० जअफरान) केसर।
ज़ाफरानी- वि० (अ०) १ जाफरान या केसर-संबन्धी, केसर का। २ जाफरान के रंग का, केसरिया।
जाफरी- स्त्री० (अ० जअफरी) १ चीरे हुए बाँसों की बनाई हुई टट्टी या परदा। २ एक प्रकार का गेंदा (फूल)।
ज़ाबित- वि० (अ०) १ जब्त करने वाला, सहनशील। २ संयमी। ३ स्वामी, मालिक।
ज़ाबिता- पुं० दे० 'जाब्ता'।
जाबिर - वि० (फा०) जब्र या ज्यादती करने वाला, अत्याचारी।
जाबेह- पुं० (अ०) १ वह जो जब्ह करे। २ कसाई, बूचड़।
जाब्तगी- स्त्री० (अ०) नियमानुकूल होने का भाव, नियमानुकूलता।
जाब्ता- पुं० (अ० जाबितः) (बहु० जवावित) नियम, कायदा, व्यवस्था, कानून। यौ०- बा-ज़ाब्ता= नियमानुकूल। बेजाब्ता= नियम विरुद्ध।
जाब्ता-दीवानी- पुं० (फा०) सर्व-साधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाला कानून।
जाब्ता-फौजदारी- पुं० (अ०) दंडनीय अपराधों से संबंध रखने वाला कानून।
जाम- पुं० (फा०) १ प्याला, कटोरा। २ मद्य पीने का पात्र।
जामदानी- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा।
जामा- वि० (अ० जामऽ) १ जमा करने वाला। २ कुल, सब । यौ०- जामा मसजिद। पुं० (फा० जामः) १ पहनावा, कपड़ा, बुरका। २ चुननदार घेरे का एक प्रकार का पहनावा। मुहा०- जामे से बाहर होना= आपे से बाहर होना, अत्यन्त क्रोध करना।
जामातलाशी- स्त्री० (फा०) पहने हुए कपड़ों की तलाशी, नंगाझोरी।
जामा मसजिद- स्त्री० (अ० जामऽमसजिद) किसी नगर की वह बड़ी और प्रधान मसजिद जिसमें सब मुसलमान इकट्ठे होकर नमाज पढ़ते हैं।
जामावार- पुं० (फा० जामःवार) एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र।
जामिआ- स्त्री० (अ०) विश्वविद्यालय।

जामिद- वि० (फा०) जमा हुआ। पुं० व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी कोई व्युत्पत्ति न हो, देशज।

ज़ामिन- पुं० (अ०) वह जो किसी की जमानत करे। यौ०- फेल ज़ामिन= वह जो इस बात की जमानत करे कि अमुक व्यक्ति कोई अपराध या अनुचित कार्य न करेगा। माल ज़ामिन- वह जो किसी के ऋण आदि चुकाने की जमानत करे।

ज़ामिनी- स्त्री० दे० 'जमानत'।

जामे-जम- पुं० दे० 'जामे-जमशेद'।

जामे-जमशेद- पुं० (फा०) दे० 'जामे जहाँनुमाँ'।

जामे-जहाँनुमा- पुं० (फा०) एक कल्पित प्याला। कहते हैं कि कैसुसरो ने एक ऐसा बड़ा प्याला बनावाया था जिससे बैठे-बैठे सारे संसार की सब घटनाओं का तुरन्त पता चल जाता था।

जाय- स्त्री० (फा०) जगह, स्थान। जैसे- जाये एतराज= एतराज या आपत्ति का स्थान।

ज़ायका- पुं० (अ० जाइकः) खाने-पीने की चीजों का मजा, स्वाद।

ज़ायचा- पुं० (फा० जाइचः) जन्म-पत्र।

जायज़- वि० (अ०) १ उचित, मुनासिब। २ वैध।

जायजा- पुं० (अ० जाइजः) १ जाँच-पड़ताल। (विशेषतः हिसाब-किताब या कार्यों की)। क्रि० प्र० देना-लेना। २ पुरस्कार, इनाम।

जायद- वि० (अ० अधिक) १ जो ज्यादा हो, अधिक। २ बढ़ा हुआ, अतिरिक्त, अधिक। ३ निरर्थक, व्यर्थका।

जायदाद- स्त्री० (फा०) भूमि, धन या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो, संपत्ति। यौ०- जायदादे आबाई= बाप-दादा की कमाई हुई संपत्ति। जायदादे-गैरमनकूला= स्थावर संपत्ति। जायदादे-मनकूला= चल संपत्ति।

ज़ायर- पुं० (अ०) यात्री।

जायल- वि० (अ०) विराट्।

जाया- वि० (अ० जायऽ) नष्ट, बरबाद।

जार- पुं० (अ०) १ वह जो आकर्षण करता हो। २ व्याकरण में विभक्ति। पुं० (अ०) पड़ोसी।

ज़ार- पुं० (फा०) १ स्थान। जैसे- सब्जः ज़ार= हरा-भरा मैदान। २ वह स्थान जहाँ कोई चीज बहुत अधिकता से हो। जैसे- गुलजार= गुलाब का बाग। क्रि० वि० बहुत अधिकता से। जैसे- जार-जार रोना। यौ०- जार-व-क्तार = निरन्तर, लगातार।

ज़ार-व-निज़ार- वि० (फा०) १ दुबला-पतला। २ दुर्बल, कमजोर।

जारी- वि० (अ०) १ बहता हुआ, प्रवाहित। २ चलता हुआ।

ज़ारी- स्त्री० (फा०) रोना-धोना, रुदन। यौ०- आह-व-जारी= रोना-चिल्लाना। गिरिया-व-जारी= रोना-कलपना।

जारी-शुदा- वि० (अ० + फा०) १ जारी किया हुआ। २ प्रचलित।

जारुब- पुं० (फा०) झाड़ू, बुहारी।

जारुब-कश- पुं० (फा०) १ वह जो झाड़ू देता हो। २ चमार।

जाल- पुं० (अ० जअल मि० सं० जाल) फरेब, धोखा, झूठी कार्रवाई।

जालसाज़- पुं० (अ०+फा०) (सं० जालसाजी) वह जो दूसरों को धोखा देने के लिये किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करे।

ज़ालिम- वि० (अ०) जुल्म करने वाला।

जाली- वि० (अ० जअली) नकली।

जाविदाँ - क्रि० वि० (फा०) सदा, हमेशा। वि० सदा रहने वाला।

जाविदानी- स्त्री० (फा०) सदा बने रहने की अवस्था या भाव।

जाविया- पुं० (अ०जावियः) कोण, कोना।

जावेद- वि० (फा०) सदा बना रहने वाला, स्थायी।

जावेदाँ- वि० दे० 'जावेद'।

जासूस- पुं० (फा०) गुप्त रूप से किसी बात, विशेषतः अपराध आदि का पता लगाने वाला, भेदिया, मुखबिर।

जासूसी- स्त्री० (अ०) १ गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना। २ जासूस का काम या पद।

जाह- पुं० (अ०) १ ऊँचा पद, मर्त्तबा, रुतबा। २ प्रतिष्ठा, इज्जत। यौ०- जाह-व-जलाल या जाह-व-हश्म= पद और वैभव।

ज़ाहलीयत- स्त्री० दे० = 'जहालत'।

जाहिद- पुं० (अ०) (भाव० जाहिदी) सब दुष्कर्मों से बच कर ईश्वरकी उपासना करने वाला, जितेन्द्रिय या संयमी व्यक्ति।

जाहिर- वि० (अ०) १ जो सबके सामने हो, प्रकट, प्रकाशित, खुला हुआ। २ जाना हुआ, ज्ञात।

जाहिरदार- वि० (अ० + फा०) १ दिखौआ। २ बनावटी।

जाहिरदारी- स्त्री० (अ०+फा०) १ दिखावट, ऊपरी तड़क-भड़क। २ बनावटी या दिखौआ व्यवहार।

जाहिरन - क्रि० वि० दे० 'जाहिरा'।

जाहिर-परस्त- वि० (अ० + फा०) (सं० जाहिर-परस्ती) केवल ऊपरी तड़क-भड़क पर भूलने वाला।

जाहिरा- क्रि० वि० (अ०) ऊपर से देखने में।

ज़ाहिरी- वि० (अ०) ऊपर से जाहिर होने वाला, देखने में जान पड़ने वाला, बाहरी।

जाहिल- वि० (अ०) १ [illegible], अज्ञानी, नासमझ। २ अनपढ़, निरक्षर।

ज़िंदा- वि० = जिन्दा।

ज़िक्र- पुं० (अ०) चर्चा, प्रसंग। यौ०- जिक्र मजकूर= चर्चा। जिक्रे खैर= १ शुभ चर्चा। जैसे- अभी तो यहाँ आपका ही जिक्र हो रहा था। २ कुरानका पाठ और ईश्वर का गुणानुवाद।

जिगर- पुं० (फा०) १ कलेजा। २ चित्त, मन। ३ जीव। ४ साहस, हिम्मत। ५ गदा. सार।

जिगरबन्द- पुं० (फा०) १ हृदय और फुप्फुस आदि। २ पुत्र।

जिगरी- १ दिली, भीतरी। २ अत्यन्त घनिष्ठ, अभिन्न हृदय।

जिच्च- वि० (फा०) १ बेबसी, तंगी, मजबूरी। २ शतरंजमें खेलकी वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्षको कोई मोहरा चलने की जगह न रह जाय

जिद- स्त्री० (अ०) (वि० जिद्दी) १ विरोध। २ हठ। ३ दुराग्रह।

ज़िदा-बदी- स्त्री० (अ० जिद + हिं० बदना) १ प्रतियोगिता, होड़। २ लड़ाई-झगड़ा।

जिदाल- पुं० (अ०) युद्ध, समर। यौ०- जंग-व-जिदाल= युद्ध।

जिद्द- स्त्री० दे० 'जिद'।

जिद्दत- स्त्री० (अ०) १ नवीनता, नयापन। २ ताजगी।

जिद्दी- स्त्री० (अ०) जिद करने वाला, हठी।

ज़िन- पुं० (अ०) (बहु० जिन्नात) भूत-प्रेत।

जिनहार- क्रि० वि० (फा०) कदापि, हरगिज।

जिनाँ- पुं० (अ०) परस्त्रीगमन, व्यभिचार।

ज़िनाकार- वि० (अ० + फा०) जिना या पर-स्त्रीगमन करने वाला, व्यभिचारी।

ज़िनाकारी- स्त्री० (अ० + फा०) जिना, व्यभिचार।

ज़िना-बिज्जब्र- पुं० दे० 'जिनाबिल-जब्र'।

ज़िना-बिल-जब्र- पुं० (अ०) किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध और बलपूर्वक सम्भोग करना।

ज़िन्दगानी- स्त्री (फा०) जिन्दगी, जीवन।

ज़िन्दगी- स्त्री० (फा०) १ जीवन। २ जीवन-काल, आयु।

जिन्दाँ- पुं० (फा०) कैदखाना, बन्दी-गृह।

ज़िन्दा- वि० (फा० जिन्दः) जीवित, जीता हुआ। यौ०- जिन्दा दरगोर= जीते-जी

कबर में रहने के समान, जीते-जी मृतक के तुल्य।

ज़िन्दादिल- वि० (फा०) १ सदा प्रसन्न रहने वाला, सहृदय। २ हँसमुख। ३ रसिक, शौकीन।

जिन्दा-दिली- स्त्री० (फा०) १ सहृदयता। २ हँसोड़पन। ३ रसिकता।

जिन्दाबाद- पद (फा०) सदा जिन्दा रहे।

जिन्नात- पुं० (अ०) वह जो जिनों या भूत-प्रेतों को वश में करता हो।

जिन्नी-पुं० (अ०) वह जो जिनों या भूत-प्रेतों को वश में करता हो।

जिन्स- स्त्री० (अ०) (बहु०अजनास) १ प्रकार, किस्म, भाँति। २ चीज़, वस्तु, द्रव्य। ३ सामग्री, सामान। ४ अनाज, गल्ला, रसद।

जिन्सखाना- पुं० (अ०+फा०). भंडार, भांडागार।

जिन्स-वार- पुं० (अ० + फा०) हर एक जिन्स के विचार से अलग-अलग। पुं० पटवारियों का कागज जिसमें वे खेतों में बोए अनाजों के नाम लिखते हैं।

जिफाफ- पुं० दे० 'जुफाफा'।

जिवस- क्रि० वि० (फा०) पूर्ण रूप से। यौ०- जिबस कि = इसलिए कि।

जिबह- पुं० (अ०) जिसका वध किया गया हो।

जिबाल- पुं० बहु० (फा०) पर्वत, पहाड़।

जिब्राईल पुं० (फा०) एक फरिश्ते या देवदूत का नाम।

जिमन- पुं० (अ० जिम्न) १ भीतरी भाग या अंश। २ खण्ड, विभाग। ३ दफा, धारा।

जिमनी- वि० (अ० जिम्नी) गौण।

जिमाअ- पुं० (अ०) स्त्री-प्रसंग, संभोग।

जिमादात- पुं० (अ०) स्त्री० दे० 'जमादात'।

जिम्मा- पुं० (अ० जिम्मः) १ इस बात का भार ग्रहण कि कोई बात या कोई काम अवश्य होगा, और यदि न होगा तो उसका दोप-भार ग्रहण करने वाले पर होगा। दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा, जवावदेही। २ सुपुर्दगी, देखरेख।

ज़िम्मादार- पुं० (अ० जिम्मः + फा० दार) उत्तरदायी।

जिम्मादारी- स्त्री० (अ० जिम्मः + फा० दारी) उत्तरदायित्व।

ज़िम्मी- पुं० (अ०) वे काफिर और अन्य धर्मी जिन्हें मुसलमानी राज्यमें शरण दी गई हो और जो जजिया देते हों।

ज़िम्मेदार- वि० =जिम्मादार।

ज़िम्मेवार- वि०= जिम्मादार।

ज़ियाँ- पुं० (फा०) १ हानि, नुकसान। २ घाटा, टोटा।

ज़िया- स्त्री० (अ०) १ सूर्यका प्रकाश। २ प्रकाश, रोशनी।

ज़ियादा- वि० दे० 'ज्यादा'।

ज़ियान- पुं० दे० 'जियाँ'।

ज़ियाफत- स्त्री० (अ०) बड़ी दावत जिममें बहुत से लोगों को भोजन कराया जाता है।

ज़ियारत- स्त्री० (अ०) १ दर्शन। २ तीर्थ-दर्शन।

ज़ियारती- वि० (अ०) जियारत के लिये जाने वाला (यात्री)।

जिरगा- पुं० दे० 'जरगा'।

जिरह- स्त्री (अ० जरह या जुरह) १ हुज्जत, खुचुर। २ ऐसी पूछताछ जो किसी से कही हुई बातों की सत्यता के लिये की जाय।

ज़िरह - स्त्री (फा०) लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच, वर्म, बख्तर।

ज़िरहपोश- पुं० (फा०) वह जो जिरह पहने हो, कवच-धारी।

ज़िरही- पुं० दे० 'ज़िरहपोश'।

जिराअत- स्त्री० (अ०) कृषि, खेती।

जिरियान- पुं० (अ०) १ जल आदिका बहना। २ सूजाक नामक रोग।

जिरिह- स्त्री० (फा०) कवच।

जिर्म- स्त्री० (अ०) (बहु० अजराम) १ शरीर, बदन। २ निर्जीव पदार्थ का पिंड।

जिला- स्त्री० (अ०) १ चमक-दमक।

मुहा०- जिला देना= साफ करके चमकाना। २ साफ करके चमकाने की क्रिया।

ज़िला- पुं० (अ०) जनपद।

जिलाकार- स्त्री० (अ० + फा०) किसी चीज को चमका कर साफ करने वाला। सिकलीगर।

जिलादार- वि० (अ० + फा०) किसी जिले का अफसर या प्रधान कर्मचारी।

जिलेदारी- स्त्री० (अ०+फा०) जिलेदार का काम या पद।

जिल्कअद- स्त्री (अ०) इस्लामी ग्यारहवाँ चान्द्र मास।

जिल्द- स्त्री० (अ०) १ खाल, चमड़ा, खलड़ी। २ ऊपर का चमड़ा, त्वचा। ३ वह पुट्ठा या दफ्ती जो किसी किताब के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगाई जाती है। ४ पुस्तक की एक प्रति। ५ पुस्तक का वह भाग जो पृथक् सिला हो, भाग, खण्ड।

जिल्दबन्द- वि० दे० 'जिल्दसाज'।

जिल्दसाज- वि० (अ० + फा०) (सं० जिल्दसाजी) वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो, जिल्द बाँधने वाला।

जिल्दी- वि० (अ०) 'जिल्द' सम्बन्धी।

ज़िल्ल- पुं० (अ०) १ छाया। साया। जैसे- जिल्ले इलाहा= ईश्वरकी छाया या कृपा। २ विचार, ख्याल। ३ गरमी की अधिकता। ४ रात का अन्धकार।

ज़िल्लत- स्त्री० (अ०) १ अनादर, अपमान, तिरस्कार, बेइज्जती। मुहा०- जिल्लत उठाना या पाना= १ अपमानित होना। २ तुच्छ ठहरना। ३ दुर्गति, दुर्दशा।

जिल्हिज्ज- पुं० (अ०) इस्लामी बारहवाँ चान्द्रमास।

जिस्म- पुं० (अ०) शरीर। यौ०- जिस्मेफानी= नश्वर देह।

जिस्मानी- वि० (अ०) जिस्म संबंधी। शारीरिक।

जिस्मी- वि० (अ०) शारीरिक।

ज़िह- स्त्री० दे० 'जेह' और 'जह'।

ज़िहत- स्त्री० (अ०) कारण, वजह।

ज़िहन- पुं० (अ० जिह्न) समझ, बुद्धि। मुहा०- जिहन खुलना= बुद्धि का विकास होना, जिहन लड़ाना= खूब सोचना। जिहन नशीन होना= ध्यान में बैठना, समझ में आना।

ज़िहल- स्त्री० दे० 'जहल'।

ज़िह्नी- वि० (अ० जिह्नी) मानसिक।

जिहनीयत - स्त्री० (अ० जिह्नीयत) स्वभाव, प्रकृति।

जिहमत- स्त्री० (अ० जिह्मत) असह्य दुर्गंध।

ज़िहाद- पुं० (अ०) धर्मयुद्ध।

ज़िहालत- स्त्री० दे० 'जहालत'।

ज़िहेज- पुं० (फा०) दहेज।

ज़ीं० - स्त्री० (फा०) जीन।

ज़ी०- प्रत्य० (अ०) वाला, रखने वाला। (यौगिक शब्दों के आदि में, जैसे- जी-इख्तियार, जी-रुतबा।)

ज़ीक- स्त्री० (अ०) १ संकीर्णता, तंगी। २ मानसिक कष्ट। ३ कठिनता, अड़चन।

ज़ीक-उल्-नफ्स- पुं० (अ०) श्वास-रोग, दमा।

ज़ीकाद- पुं० (अ०) अरब वालों का ग्यारहवाँ चान्द्रमास।

ज़ीन- पुं० (फा०) १ घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, चारजामा। काठी। २ एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा।

ज़ीनत- स्त्री० (फा०)१ शोभा। २ श्रृंगार, सजावट।

ज़ीनपोश- पुं० (फा०) घोड़े के जीन के नीचे बिछाने का कपड़ा।

जीनसवारी- स्त्री० (फा०) घोड़े की पीठ पर की जाने वाली सवारी।

ज़ीनसाज़- वि० (फा०) (सं० जीनसाजी) घोड़े की जीन आदि बनाने वाला।

जीनहार- क्रि० वि० (फा०) हरगिज, कदापि।

ज़ीना- पुं० (फा०) सीढ़ी।

ज़ीर- स्त्री० (फा०) संगीत आदि में बहुत मन्द या धीमा स्वर। यौ०- जीर-व-बम= १

तबले आदि की तरह एक प्रकारके दो बाजे जो एक साथ बजाये जाते हैं। २ बहुत धीमा और बहुत ऊँचा स्वर।
ज़ीरक- वि० (फा०) बुद्धिमान्, समझदार।
ज़ीरा- पुं० (फा० जीरः) जीरा।
जीस्त- स्त्री० (अ०) जिन्दगी, जीवन।
ज़ी-हयात- वि० (अ०) जीवित, जिन्दा, बड़ी उम्र वाला।
जुआफ- पुं० (अ०) विष के कारण होने वाली अचानक मृत्यु।
ज़ुका- स्त्री० (अ०) सूर्य।
ज़ुकाम- पुं० (अ०) सरदी से होनू वाली एक बीमारी जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है, सरदी। मुहा०- मेंढकी को जुकाम होना= किसी छोटे मनुष्यका कोई बड़ा काम करना।
जुग़रात- पुं० (अ०) दही, दधि।
जुग़राफिया- पुं० (अ० जुगराफियः) भूगोल।
जुज़- पुं० (अ०) (बहु० अजज़ा) १ टुकड़ा, खंड। २ किसी वस्तु के संयोजक अवयव। ३ काग़ज के ताव जिसमें छपने पर ८, १२, या १६ पृष्ठ होते हैं। फारम (छपाई)। अव्य० सिवा, अतिरिक्त, अलावा।
जुज़दान- पुं० (अ० + फा०) पुस्तकें आदि बाँधने का कपड़ा, बस्ता।
ज़ुज़बन्दी- स्त्री० (अ० + फा०) पुस्तकों की वह सिलाई जिसमें प्रत्येक जुज या फार्म अलग-अलग सीया जाता है।
जुज़वियात- स्त्री० (अ०) १ विवरण की बातें। २ अंग, हिस्से, टुकड़े।
जुज़वी- वि० (अ०) बहुत अल्प या सामान्य, तुच्छ।
जुज़ाम- पुं० (अ०) कोढ़ रोग।
जुज़ामी- पुं० (अ०) कोढ़ी, कुष्ठ-रोग का रोगी। वि० कुष्ठ या कोढ़ सम्बन्धी।
जुज़ो- पुं० दे० 'जुज'।
जुज्व- पुं० दे० 'जुज'।
जुदा- वि० (फा०) १ पृथक्, अलग। २ भिन्न, निराला।
जुदाई- स्त्री० (फा०) जुदा होनेका भाव, बिछोह, वियोग।
जुदागाना- क्रि० वि० (अ० जुदागानः) अलग-अलग।
जुदायगी- स्त्री० दे० 'जुदाई'।
जुनूँ, जुनून- पुं० दे० 'जनून'।
जुन्द- पुं० (अ०) सेना, फौज।
जुन्दी- पुं० (अ०) सैनिक।
जुन्नार - पुं० (अ०) १ वह पवित्र डोरा जो पारसी कमर में बाँधे रहते हैं। २ यज्ञोपवीत, जनेऊ।
जुन्नारदार - पुं० (अ० + फा०) यज्ञोपवीतधारी, हिन्दू।
जुफाफ- पुं० (अ०) वर और वधू का प्रथम समागम। यौ०- शबे जुफाफ= सुहागरात।
जुफ्त - पुं० (फा०) जोड़ा, युग्म।
जुफ्ता - पुं० (फा० जुफ्तः) १ शिकन, बल, रेखा। २ कपड़े के सूतों का अपने स्थान से हट-बढ़ जाना, जिस्ता।
जुफ्ती - स्त्री० (अ०) पशु-पक्षियों आदि की संभोग-क्रिया। क्रि० प्र०- खाना।
ज़ुबान- स्त्री० (फा०) दे० 'जबान'।
जुब्बा - पुं० (अ० जुब्बः) फकीरों का एक प्रकार का लंबा पहनावा।
जुमरा - पुं० (अ० जुमरः) १ जन-समूह, भीड़। २ सेना, फौज।
जुमलगी - स्त्री० (फा०) कुल या सब का भाव।
जुमला - पुं० (अ० जुम्लः) १ पूरा वाक्य। २ कुल जोड़, सारी जमा। वि० कुल, सब। यौ०-फिल्-जुमला= सब कुछ होने पर भी तात्पर्य यह कि। मिनजुमला= १ सब मिलाकर। २ सब या कुल में से।
जुमा - पुं० (अ० जुमऽ) शुक्रवार।
जुमूद - पुं० (अ०) १ गतिरोध। २ खिन्नता, उदासी।
जुमेरात- स्त्री० (अ० जुमऽरात) बृहस्पतिवार।
जुम्बिश- स्त्री० (फा०) १ हिलना-डुलना,

गति, चाल, हरकत। २ काँपना, कम्प।

[illegible]- पुं० (अ०) जनता, जनसाधारण।

जु[illegible]यत - स्त्री० (अ०) जनतंत्र, गणतंत्र।

जुम्हूरी- वि० (अ०) सार्वजनिक।

जुरअत - स्त्री० (अ० जुअ्रत) साहस, हिम्मत।

जुरफा - पुं० (अ०) 'जरी' का बहु०।

जुरमाना- पुं० दे० 'जुर्माना'।

जुरह - स्त्री० दे० 'जिरह'।

जुराफ- पुं० दे० 'जुराफा'।

जुराफा - पुं० (अ० जुर्राफः) अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट जैसी लम्बी होती है। (कुछ हिंदी कवियों ने इसे भूल से पक्षी समझ लिया है।)

ज़ुरूफ - पुं० (अ० 'ज़र्फ' का बहु०) बरतन-भाँड़े।

जुरूर - वि० क्रि० वि० दे० 'जरुर'।

ज़ुरूरी- वि० दे० 'जरूरी'।

जुअत- स्त्री० (अ०) १ धृष्टता। २ साहस।

जुअतमंद- वि० (अ०) १ धृष्ट। २ साहसी।

जुर्म - पुं० (अ०) (बहु० जरायम) वह कार्य जिसके दंड का विधान राजनियम में हो, अपराध।

जुर्माना - पुं० (फा० जुर्मानः) वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े, अर्थदंड।

जुर्रत - स्त्री० (अ० जुअत) १ धृष्टता, २ साहस।

जुर्राफा - पुं० दे० 'जुर्राफा'।

जुर्राब - स्त्री० (तु०) पायताबा, पैरों में पहनने का मोजा।

जुलकअदा- पुं० (अ०) अरब वालों का ग्यारहवाँ चांद्रमास।

जुलाब - पुं० (अ० जुल्लाब) १ रेचन, दस्त। २ रेचक औपध, दस्त लाने वाली दवा।

ज़ुलाल- वि० (अ०) शुद्ध, स्वच्छ, निथरा हुआ (जल)।

जुलूस - पुं० (अ०) १ सिंहासनारोहण। २ किसी उत्सव का समारोह। ३ उत्सव या समारोह की यात्रा, धूमधाम की सवारी।

जुलूसी- वि० (अ०) (सन् या संवत्) जिसका आरम्भ किसी राजा या बादशाह के राज्यारोहण तिथि से हो, जुलूस-सम्बन्धी।

ज़ुल्कर-नैन- पुं० (अ०) सिकन्दर की एक उपाधि।

ज़ुल्फ - स्त्री० (फा०) १ सिर के लम्बे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं। पट्टा, कुल्ला, बालों की लट। यौ०- हम जुल्फ= १ स्त्री की बहन का पति, साढ़ू। २ प्रेमिका का दूसरा प्रेमी, रक़ीब।

ज़ुल्फिकार - स्त्री० (अ०) हजरत अली की तलवार का नाम।

ज़ुल्म - पुं० (अ०) अत्याचार, अन्याय। यौ०- जुल्म व सितम या जुल्म व तअद्दी= अत्याचार और अन्याय।

ज़ुल्मकेश- वि० दे० 'जालिम'।

ज़ुल्मत - स्त्री० (अ०) अन्धकार, अँधेरा।

जुल्मपेशा- वि० दे० 'जालिम'।

जुल्म-रसीदा- वि० (अ०+फा०) जिस पर जुल्म हुआ हो, अत्याचार पीड़ित।

जुल्मशआर - वि० दे० 'जालिम'।

जुल्मात - स्त्री० (अ० 'जुल्मत' का बहु०) कुछ विशिष्ट अन्धकार पूर्ण स्थान। यौ०- बहेर जुल्मात= एटलान्टिक महासागर।

ज़ुल्मी- वि० (अ० जुल्म) जुल्म करने वाला, जालिम, अत्याचारी।

ज़ुल्ला- पुं० (अ० जुल्लः) सायबान।

जुल्लाब - पुं० दे० 'जुलाब'।

जुल्हुज्जा - पुं० दे० 'जिलहिज्जा'।

जुस्तजू - स्त्री० (फा०) तलाश, अन्वेपण, ढूँढ, खोज।

जुस्सा - पुं० (अ० जुस्सः) बदन, शरीर, तन।

जुहद- पुं० (अ०) संसार के सब सुखो का त्याग, परहेजगारी।

जुहल - पुं० (अ०) शनैश्चर ग्रह।
जुहा- पुं० (अ०) जलपान समय। यौ०- ईद-उज़-जुहा= बकरीद नामका त्यौहार।
जुहूर - पुं० (अ०) आविर्भाव, प्रकट।
जुह्र - पुं० (अ०) दिन ढलने का समय, तीसरा पहर। यौ०- जुह्र की नमाज= तीसरे पहर की नमाज।
जू- स्त्री० (फा० जूए) १ नदी, दरिया। २ नहर। ३ जलाशय।
जू- प्रत्य० (अ०) रखने वाला (शब्दों के आदि में) जैसे- जू-मानी, जू-उल।
जूए- स्त्री० (फा०) १ नदी, दरिया। २ नहर। ३ जलाशय।
जूक - पुं० दे० 'जौक'।
जूद- क्रि० वि० (फा०) शीघ्र, जल्दी।
जूदफहम- वि० (फा०) किसी बात को जल्दी समझनें वाला।
जूद-रंज- वि० (फा०) जल्दी रंज या दुःखी हो जाने वाला, तुनक मिजाज।
जूफ - अव्य० (फा०) लानत, थुड़ी। जैसे- जूफ है तेरी सफेद दाढ़ी पर।
ज़ू-फनून- वि० (अ०) बहुत से फन या विद्याएँ जानने वाला।
जू-मानी- वि० (अ० जुलमानैन) १ दो मानी या अर्थ रखने वाला, द्व्यर्थक। २ श्लिप्ट, श्लेपात्मक।
जूर - पुं० (अ०) १ झूठापन, मिथ्यात्व। २ अभिमान, दम्भ।
जेब- स्त्री० (अ०) पहनने के कपड़ों के बगल में या सामने की ओर लगी हुई वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं, खीसा, खरीता, पाकेट।
ज़ेब- वि० (फा०) १ उपयुक्त, शोभा बढ़ाने वाला। यौ०- जेब व ज़ीनत= शोभा और श्रृंगार। क्रि० प्र० देना। स्त्री० शोभा, रौनक।
ज़ेबा- वि० (फा०) १ उपयुक्त, मुनासिब। २ शोभा देने वाला।
ज़ेबाइश - स्त्री० (फा०) १ सजावट, श्रृंगार। २ शोभा।
ज़ेबाइशी- वि० (फा०) शोभा और सौन्दर्य बढ़ाने वाला।
ज़ेबी- वि० (अ० जेब) १ जो जेब में रखा जा सके। २ बहुत छोटा।
ज़ेर- क्रि० वि० (फा०) नीचे। वि० निम्न कोटि का, घटिया। पुं० फारसी लिपि में एक चिह्न जो अक्षरों के नीचे लग कर एक प्रकार की मात्रा का काम देता है।
ज़ेर-अन्दाज- पुं० (फा०) कपड़े या दरी आदि का वह टुकड़ा जो हुक्के के नीचे बिछाया जाता है।
ज़ेर-जामा- पुं० (फा० जेरजामः) पाजामा, इजार।
ज़ेर-दस्त- वि० (फा०) १ मातहत, अधीन। २ परास्त, पराजित।
ज़ेर-पाई- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का हलका जूता।
ज़ेर-बन्द- पुं० (फा०) घोड़े के पेट पर बाँधा जाने वाला तस्मा या बन्द।
ज़ेर-बार- वि० (फा०) ऋण या व्यय आदि के भार से दबा हुआ।
ज़ेरबारी- स्त्री० (फा०) १ ऋण या व्यय आदि के भार से दबा होना। २ बहुत अधिक व्यय या आर्थिक हानि।
ज़ेर-लब- क्रि० वि० (फा०) बहुत धीरे से (कुछ कहना)।
ज़ेरे तजवीज- वि० (फा०) विचाराधीन।
ज़ेरेसाया- क्रि० वि० (फा० जेरेसायः) १ किसी की छाया के नीचे। २ किसी के संरक्षण में।
ज़ेरे-हुकूमत- वि० (फा०) शासनाधीन।
ज़ेरोज़बर - पुं० (फा०) जमाने का उलट-फेर, संसार का ऊँच-नीच।
ज़ेवर - पुं० (फा०) (बहु० जेवरात) १ आभूपण, अलंकार, गहना। २ वह जो शोभा बढ़ावें।
ज़ेह - स्त्री० (फा० जिह) १ धनुष की डोरी, पंतचिका। २ किनारा, तट ३ पार्श्व। ४ सिरा। स्त्री० दे० 'जह'।
ज़ेहन - पुं० (अ० जेह्न) १ प्रतिभा। २

बुद्धि। ३ स्मरण-शक्ति।
जैतून - पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध वृक्ष जो पवित्र माना जाता था।
जैयद- वि० (अ०) १ बलवान्, मजबूत। २ बहुत बड़ा, विशाल। ३ उपजाऊ। ४ अच्छा, बढ़िया।
ज़ैल - पुं० (अ०) १ दामन, पल्ला। २ नीचेका भाग। ३ आगे आने वाला अंश। मुहा०- ज़ैल में= नीचे, आगे। जैसे- सब नाम जैल में दर्ज हैं। यौ०- हस्व जैल= निम्नलिखित।
जैली- वि० (अ०) अधीनस्थ।
जोई- स्त्री० (फा०) १ ढूँढ़ने की क्रिया। २ संगोपन। ३ तुष्टि या रक्षा। जैसे- दिल-जोई।
ज़ोफ - पुं० (अ० जुअफ) १ दुर्वलता, कमजोरी। २ मूर्च्छा।
जोफ-उल-अक्ल- पुं० (अ०) मानसिक दुर्वलता या अशक्तता।
जोफे-दिमाग - पुं० (अ०) मानसिक दुर्वलता।
जोफेबसारत - पुं० (अ०) नेत्रों की दुर्वलता, आँखों से कम दिखाई पड़ना।
जोफेमेदा - पुं० (अ०) पाचन-शक्ति की दुर्वलता।
जोयाँ- वि० (फा०) ढूँढ़ने वाला।
ज़ोर - वि० (फा०) १ बल, शक्ति। मुहा०- (किसी बातपर) जोर देना= किसी बात को बहुत ही आवश्यक या महत्वपूर्ण बतलाना। (किसी बातके लिये) आग्रह करना। जोर मारना या लगाना= बल का प्रयोग करना। २ आंतक। ३ प्रयत्न।
ज़ोरआजमाई - स्त्री० (फा० जोरआज्माई) जोर या ताक़त आजमाना, बल परीक्षा।
जोरदार- वि० (फा०) १ जिसमें बहुत जोर हो, जोर वाला। २ प्रचंड, तेज। ३ जोशीला।
ज़ोरावर- वि० (फा० जोर+आवर, सं० जोरावरी) बलवान्, शक्तिशाली।
जोरेबाजू- पुं० (फा०) बाहुबल।
जोरोशोर- पुं० (फा०) १ शोरगुल। २ उत्साह। ३ तेजी।
जोश- पुं० (फा०) १ आँच या गरमी के कारण उबलना, उफान, उबाल। मुहा०- जोश खाना= उबलना, उफनना। जोश देना= पानी के साथ उबालना। २ चित्त की तीव्र वृत्ति, मनोवेग। मुहा०- खून का जोश= प्रेम का वह वेग जो अपने वंश के किसी मनुष्य के लिये हो। यौ०- जोश-व-खरोश= तपाक और आवेश।
जोशन - पुं० (फा० जौशन) १ भुजाओं पर पहनने का गहना। २ जिरह-बख्तर, कवच।
जोशाँदा- पुं० (फा०) औपधों को उबाल कर उनका तैयार किया हुआ रस, काढ़ा, क्वाथ।
ज़ोहरा- पुं० (अ० जुह्रः) वृहस्पति ग्रह।
जौ- पुं० (अ०) १ आकाश। २ आकाश की वायु।
जौक- पुं० (तु० 'जूक' का अरबी रूप) १ सेना, फौज। २ जनसमूह, भीड़।
जौक़ - पुं० (अ०) किसी वस्तु से प्राप्त होने वाला आनंद। मुहा०- जौक से= प्रसन्नता से, सुख पूर्वक। यौ०- जौक-शौक।
जौज़ - पुं० (अ०) १ अखरोट। २ जायफल। ३ नारियल।
जौजा - पुं० (अ० जौजः) १ युग्म, जोड़ा। २ पति, खसम।
जौज़ा- पुं० (अ०) मिथुन राशि।
ज़ौजा- स्त्री० (अ० ज़ौजः) पत्नी, जोरू।
ज़ौजियत - स्त्री० (अ०) १ विवाहित अवस्था। २ पत्नीत्व।
जौदत - स्त्री० (फा०) १ बुद्धि की कुशाग्रता। २ उत्तमता। ३ भलाई।
जौफ - पुं० (अ०) १ उदर, पेट। २ खाली जगह, अवकाश। ३ गड्ढा, विवर।
जौर - पुं० (अ०) अत्याचार, उत्पीड़न, जुल्म।
जौलाँ- पुं० (फा०) पाँव में पहनने की

बेड़ियाँ। यौ०- पा-ब-जौलाँ= पैरों में बेड़ियाँ पहनाये हुए।

जौलान- पुं० (फा०) तेजी से इधर उधर आना जाना।

जौलानी - स्त्री० (फा०) १ तेजी, फुरती। २ बुद्धि की प्रखरता या तीव्रता।

जौलानी-गाह- स्त्री० (फा०) सेना या फौज के खेलों का मैदान।

जौशन- पुं० दे० 'जोशन'।

जौहर- पुं० (अ०) (बहु० जवाहिर) १ रत्न, बहुमूल्य पत्थर। २ सार वस्तु, सारांश तत्व। ३ हथियार की ओप। ४ विशेपता, उत्तमता, खूवी। ५ वीरता।

जौहरी- पुं० (अ०) १ रत्न परखने या बेचने वाला, रत्न विक्रेता। २ किसी वस्तु के गुण-दोपों की पहचान रखने वाला।

ज्यादती - स्त्री० (अ० जियादती) १ अधिकता, बहुतायत। २ अत्याचार।

ज्यादा- वि० (अ० जियादः) अधिक, बहुत।

तंग - पुं० (फा०) घोड़ों की जीन कसने का तस्मा, कसन। वि० १ संकीर्ण, संकुचित। २ दुःखी। ३ निर्धन। ४ कम।

तंगखयाल- वि० (फा०+अ०) संकीर्ण विचारो वाला।

तंगचश्म- वि० (फा०+अ०) कंजूस, कृपण।

तंगदस्त- वि० (फा०) (सं०-तंग-दस्ती) जिसके पास धन न हो, गरीब।

तंग-दस्ती- स्त्री० (फा०) दरिद्रता, गरीवी।

तंग-दहन [illegible] (फा०) छोटे मुँह वाला।

तंग-दिल- [illegible] (फा०) (सं० तंगदिली) १ संकीर्ण हृदय वाला। २ कंजूस।

तंगनज़री- स्त्री० (फा० अ०) क्षुद्र दृष्टिकोण।

तंगवख्त- वि० (फा०) बदकिस्मत।

तंगसाल- पुं० (फा०) वह वर्प जिसमें वर्पा न हो।

तंगहाल- वि० (फा०) (सं० तंग-हाली) जिसकी अवस्था अच्छी न हो, दुर्दशा-ग्रस्त।

तंग-हौसला- वि० (फा०) (सं० तंग-हौसलगी) संकीर्ण-हृदय।

तंगा- पुं० (फा० तंगः) वह सिक्का जो चलता हो, प्रचलित मुद्रा।

तंगिएरिज्क- स्त्री० (फा०+अ०) अन्न की कमी।

तंगी - स्त्री० (फा० १ तंग या सँकरे होने का भाव, संकीर्णता, संकोच। २ दुःख, तकलीफ। ३ निर्धनता। ४ कमी।

तंज़ - पुं० (अ० तन्जS) बोली-ठोली, ताना, व्यंग्य।

तंज़ीम- स्त्री० (अ०) प्रवन्ध, व्यवस्था।

तंज़ीह- स्त्री० (अ०) शुद्धि, शुद्धिकरण।

तअक्कुब - पुं० (फा०) किसी का पीछा करना।

तअज्जुब- पुं० (फा०) आश्चर्य, विस्मय या अचम्भा।

तअद्दी - स्त्री० (अ०) १ बल प्रयोग, जबरदस्ती। २ अत्याचार, जुल्म।

तअन- पुं० (अ०) ताना, व्यंग्य।

तअफ्फुन - पुं० (अ०) दुर्गन्ध, बदबू।

तअब- पुं० (अ०) १ परिश्रम। २ कप्ट। ३ थकावट।

तअम्मुक- पुं० (अ०) १ गंभीरता। २ गहरापन, गहराई।

तअम्मुल- पुं० (अ०) कार्यान्वयन।

तअय्युन- पुं० (अ०) तैनात या मुकर्रर होना, नियुक्ति।

तअय्युनात - पुं० (अ० तअय्युनका बहु०) १ नियुक्तियाँ। २ पहरा देने वाली सेना।

तअर्रुज़- पुं० (अ०) १ आपत्ति, उज्र। २ विरोध। ३ रोकटोक।

तअल्लुक - पुं० (अ०) संबंध, लगाव।

तअल्लुका- पुं० (अ० तअल्लुकः) बहुत से मौजों की जमींदारी, बड़ा इलाक़ा।

तअल्लुकात - पुं० (अ० तअल्लुक का बहु०) सम्बन्ध।

तअल्लुकादार- पुं० (अ० तअल्लुकः+ फा० दार) इलाकेदार, तअल्लुके का मालिक।

तअल्लुकादारी- स्त्री० (अ० तअल्लुकः

+फा० दारी) तअल्लुकादार का पद या भाव।

तअश्शुक़- पुं० (अ०) इश्क या प्रेम करना।

तअस्सुफ़- पुं० (अ०) पथभ्रष्टता।

तअस्सुब- पुं० (अ०) पक्षपात, विशेषतः धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन।

तआम- पुं० (अ०) भोजन। खाद्य पदार्थ।

तआरुफ़- पुं० (अ०) जान-पहिचान, परिचय।

तआला- वि० (अ०) सर्वश्रेष्ठ। (ईश्वर के लिये प्रयुक्त) जैसे- अल्लाह-तआला, खुदा-तआला।

तआवुन- पुं० (अ०) एक दूसरे की सहायता करना।

तऐयुन- पुं० (अ० तअय्युन) १ तैनात या नियुक्त करने की क्रिया।

तक़्तीअ- स्त्री० (अ० तक्तीअ) १ अलग अलग टुकड़े करना, विश्लेषण। २ छन्दों की मात्राएँ गिनना। ३ सजावट।

तक़्दमा- पुं० (तक़दिमः) किसी चीज की तैयारी का वह हिसाव जो पहले से तैयार किया जाय, तखमीना, अन्दाज।

तक़्दीम- पुं० (अ०) १ अग्रता। २ श्रेष्ठता।

तक़्दीर - स्त्री० (अ० तक्दीर) (बहु० तक़ादीर) भाग्य, प्रारब्ध।

तक़्द्दुम- पुं० (अ०) १ किसी से पहले या किसीसे बढ़ कर होना, प्रमुखता, प्रधानता। २ श्रेष्ठता।

तक़्फीर- स्त्री० (अ० तक्फीर) १ किसी को काफिर कहना वा ठहराना। २ पापों का प्रायश्चित्त।

तक्बीर- स्त्री० (अ० तक्वीर) किसी को बड़ा मानना या कहना। २ ईश्वर की प्रशंसा। ३ 'अल्लाह अकवर' या 'ला-इल्हा इल्लिलाह' कहना।

तकब्बुर- पुं० (अ०) अभिमान, घमंड, गरूर।

तकमील- स्त्री० (अ० तक्मील) १ पूरा होने की क्रिया या भाव, पूर्णता। २ निष्पादन। ३ पूर्ति।

तकरार- स्त्री० (अ० तक्रार) १ किसी बातको बार-बार कहना। २ हुज्जत, विवाद, झगड़ा, टंटा।

तकरारी- वि० (अ० तक्रारी) तकरार या झगड़ा करने वाला, झगड़ालू।

तकरीज़- स्त्री० (अ०) समीक्षा।

तक़रीब- स्त्री० (अ० तक्रीब) १ करीब या पास होना, सामीप्य, नजदीकी। २ क़ोई ऐसा शुभ अवसर जिस पर बहुत से लोग एकत्र हों। जैसे- शादी की तक़रीब। ३ साधना।

तकरीबन- क्रि० वि० (अ० तक्रीबन) करीब-करीब, प्रायः, लगभग।

तकरीम- स्त्री० (अ०) प्रतिष्ठा करना, सम्मान करना।

तकरीर- स्त्री० (अ० तक्रीर) (बहु० तक़ारीर) १ बात-चीत। २ वक्तृता, भाषण।

तकरीरन्- क्रि० वि० (अ० तक्रीरन) मौखिक, जवानी, मुँह से कहकर।

तक़रीरी- वि० (अ० तक्रीरी) १ जिसमें कुछ कहने-सुनने की जगह हो, विवाद-ग्रस्त। २ जवानी।

तक़र्रुब- पुं० (अ०) निकटता, सामीप्य।

तकर्रुर- पुं० (अ०) नियुक्ति।

तकर्रुरी- स्त्री० (अ० तकर्रुर) मुक़र्रर होना, नियुक्ति।

तक़र्रो- पुं० (अ०) करवटें बदलने की क्रिया या भाव।

तक़लीद- स्त्री० (अ० तक्लीद) १ नकल या अनुकरण करना। २ किसी के पीछे विना समझे-बूझे चलना, अन्ध अनुकरण।

तक़्लीदी- वि० (अ० तक्लीदी) १ नकल किया हुआ, अनुकृत। २ जाली, बनावटी।

तकलीफ- स्त्री० (अ० तक्लीफ) (वहु० तक़ालीफ) १ कष्ट, क्लेश, दुःख। २ विपत्ति, मुसीवत।

तक़्लीफदेह - स्त्री० (अ० तक्लीफ +फा० देह) कष्टप्रद, कष्टकारी, दुःख देने वाला।

तक़्लीव- स्त्री० (अ० तक्लीब) (वि०

तक़्लीबी ) १ उलटना-पलटना। २ अक्षरों में परिवर्तन करना।

तकल्लुफ- पुं० ( अ० ) ( बहु० तकल्लुफात ) १ केवल दिखाने के लिये कप्ट उठाकर कोई काम करना, शिप्टाचार। २ शील-संकोच, लज्जा, शर्म।

तक़्वा- पुं० ( अ० तक्वः ) दोपों और दुप्कर्मों आदि से दूर रहना, परहेजगारी, सदाचार।

तकवियत - स्त्री० ( अ० तक्वियत ) १ ताक़त देना। २ बलवान करना, शक्ति। ३ समर्थन, पुप्टि।

तक़्वीम- स्त्री० ( अ० ) १ सीधा करना। २ ज्योतिपियों का पंचांग, जन्तरी।

तक़्सीम - स्त्री० ( अ० तक्सीम ) १ बाँटने की क्रिया या भाव, बँटाई। २ गणित में वह क्रिया जिससे कोई संख्या कई भागों में बाँटी जाय, भाग।

तक़्सीमनामा - पुं० ( अ० तक्सीम + फा० नामः ) वह पत्र जिस पर बँटवारे का विवरण और शर्तें लिखी हों, विभाग-पत्र।

तक़्सीमी- वि० ( अ० तक्सीमी ) जिसकी तकसीम या विभाग हो सके अथवा होने को हो।

तक़्सीर - स्त्री० ( अ० तक्सीर ) १ कमी, । त्रुटि, । कोताही। २ काम करते समय कोई बात छोड़ देना। ३ भूल, गलती। ४ दोप, अपराध, गुनाह, खता।

तकसीर-मन्द- वि० दे० 'तकसीरवार'।

तक़्सीर-वार- वि० ( अ० तक्सीर +फा० वार ) १ जिससे कोई तकसीर हो। २ अपराधी, दोपी।

तक़ाज़ा - पुं० ( तकाज़ः ) १ ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार हो, तगादा। २ ऐसा क़ाम करने के लिये कहना जिसके लिये वचन मिल चुका हो। ३ उत्तेजना, प्रेरणा। यौ०- तकाजाए उम्र= उम्र का तकाजा, उम्र की माँग।

तक़ाज़ाई- पुं० वि० ( अ० तक़ाज़ः ) तक़ाज़ा करने वाला।

तक़ादीर - स्त्री० ( अ० 'तक्दीर' का बहु० ) भाग्य।

तकान - पुं० ( फा० ) थकावट , थकान।

तक़ारुब- पुं० ( अ० ) समीपता।

तकालीफ - स्त्री० ( अ० 'तकलीफ' का बहु० ) १ कप्ट, क्लेश, दुःख। २ विपत्ति।

तक़ावी - स्त्री० ( अ० ) वह धन जो खेतिहरों को बीज खरीदने या कूआँ आदि बनाने के लिये क़र्ज दिया जाय।

तकिया - पुं० ( फा० तक्यः ) १ कपड़ें का वह थैला जिसमें रुई, पर आदि भरते हैं और जिसे लेटने के समय सिंर के नीचे रखते हैं, बालिश। २ पत्थर की वह पटिया आदि जो रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है, मुतक्का। ३ विश्राम करने का स्थान। ४ आश्रय, सहारा, आसरा। ५ वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फकीर रहता हो।

तकियाकलाम - पुं० ( फा० तक्यःकलाम ) वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों के मुँह से प्रायः निकला करता हो, सखुन-तकिया।

तकियादार - पुं० ( फा० ) तकिये पर रहने वाला मुसलमान फकीर।

तक़ी- वि० ( अ० ) १ धर्मनिप्ठ, परहेज़गार। २ संयमी।

तखफीफ- स्त्री० ( अ० तख्फीफ ) कमी, घटाव, न्यूनता। यौ०- तक़्फीफे लगा= लगान की कमी या छूट।

तखमीनन- क्रि० वि० ( अ० तख्मीनन ) तखमीने या अन्दाज से, अनुमानतः, प्रायः, लगभग।

तखमीना- पुं० ( अ० तख्मीनः ) अंदाज, अनुमान, अटकल।

तखमीर- स्त्री० ( अ० तख्मीर ) सड़ाने या खमीर उठाने की क्रिया।

तखय्युल- पुं० ( अ० ) १ सोच-विचार, चिंतन। २ कल्पना।

तखय्युलात- पुं० ( अ० तखय्युलका बहु० ) १ विचार। २ कल्पनाएँ।

तखरीज- स्त्री० ( अ० तख्रीज ) खारिज

करना, अलग करना।
तखलिया- पुं० (अ० तख्लीयः) १ खाली करना, रिक्त करना। २ एकान्त स्थान, निर्जन स्थान।
तखलीस- स्त्री० (अ० तख्लीस) छुटकारा, मुक्ति।
तखल्लुल- पुं० (अ०) १ खलल। २ विरोध, वैमनस्य।
तखल्लुस- पुं० (अ०) १ खलल। २ विरोध, वैमनस्य।
तखल्लुस- पुं० (अ०) कवियों का वह उपनाम जो वे अपनी कविताओं में रखते हैं।
तखवीफ- पुं० (अ०) धमकी।
तखसीस- स्त्री० (अ० तख्सीस) खास बात, खसूसियत, विशेपता।
तखारूज- प्रुं० (अ०) जायदाद का वारिसों में बँटवारा।
तखालुक- पुं० (अ०) वैर, विरोध।
तखैयुल- पुं० (अ०) विचार करना, ध्यान में लाना, खयाल करना।
तख्त- पुं० (फा०) १ राजा के बैठने का आसन, सिंहासन। २ तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।
तख्तगाह- स्त्री० (फा०) राजधानी, राजनगर।
तख्त-ताऊस- स्त्री० (फा०+अ०) मोर के आकार का एक प्रसिद्ध राज-सिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।
तख्तनशीं- वि० (अ०) (सं० तख्त-नशीनी) जो राज-सिंहासन पर बैठा हो, सिंहासनारुढ़।
तख्तपोश- पुं० (फा०) १ तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २ चौकी।
तख्तबन्दी- स्त्री० (फा०) तख्तों की बनी हुई दीवार।
तख्तवाँ- पुं० (फा०) १ वह तख्त या चौकी जिस पर बादशाह बैठकर मजदूरों के कन्धे पर चलते हैं, पालकी।
तख्ता- पुं० (फा० तख्तः) १ लकड़ी का लंबा-चौड़ा और चौकोर टुकड़ा, बड़ा पटरा पल्ला।
तख्ती- स्त्री० (फा० तख्तः) १ छोटा तख्ता। २ काठ की पटरी जिस पर लड़के लिखने का अभ्यास करते हैं, पटिया।
तख्तेताऊस- पुं० (फा०) १ मोर वाला सिंहासन। २ शाहजहाँ द्वारा बनवाया हुआ सिंहासन जिस पर मोर अपने परों से छाया करता था।
तख्तोताज- पुं० (फा०) १ सिंहासन और मुकुट। २ शासन का भार।
तग़मा- पुं० दे० 'तमग़ा'।
तग़य्युर- पुं० (अ०) बहुत बड़ा परिवर्तन। यौ०- तग़य्युर-व-तवद्दुल= बहुत बड़ा परिवर्तन।
तग़रीब- स्त्री० (अ० तग़्रीब) देश निकाला।
तगापो- स्त्री० (फा०) १ दौड़-धूप, पैरवी। २ चिन्ता, उधेड़-बुन।
तग़ाफुल- पुं० (अ०) ग़फलत, उपेक्षा, ध्यान न देना।
तग़ार- पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ इमारत के काम के लिये चूने, सुरखी आदि का गारा बनाया जाय।
तग़ैयुर- पुं० (अ० तगय्युर) बहुत बड़ा परिवर्तन।
तज़किरा- पुं० (अ० तज़किरः) चर्चा, जिक्र।
तज़कीर- स्त्री० (अ०) व्याकरण में पुल्लिग।
तजदीद- स्त्री० (अ०) १ फिर से नया करना। २ नवीनता।
तजनीस- स्त्री० (अ०) १ समानता, एक सा होना। २ काव्य आदि में ऐसे शब्दों का प्रयोग जिनमें अक्षर तो समान हों और केवल मात्राओं का अंतर हो। जैसे- मौजे चश्मे आशिकाँ दे तोड़ पल में पिल के पुल, यहाँ पल, पिल और पुल के प्रयोग में तजनीस हैं, यह एक शब्दालंकार है।
तज़बजुब- पुं० (अ०) १ लटकती हुई चीज का हवा में हिलना। २ असमंजस, आगा-पीछा, सोच-विचार।

तजम्मुल- पुं० (अ०) १ शृंगार, सजावट। २ शोभा, शान-शौकत, वैभव।

तजरबा- पुं० (अ० तज्रिबः) १ वह ज्ञान जो परीक्षा द्वारा प्राप्त किया जाय। अनुभव। २ वह परीक्षा जो ज्ञान प्राप्त करने के लिये की जाय।

तजरबाकार- पुं० (अ० तज्रिबः+फा०) (सं० तजरबाकारी) जिसने तजरबा किया हो, अनुभवी।

तजरुबा- पुं० दे० 'तजरबा'।

तजर्रुद- पुं० (अ०) १ एकान्तवास। २ ब्रह्मचर्य।

तजल्ला- पुं० दे० 'तजल्ली'।

तजल्ली- स्त्री० (अ०) १ प्रकाश, रोशनी। चमक-दमक। ३ वह ईश्वरीय प्रकाश जो तूर पर्वत पर हजरत मूसा को दिखाई पड़ा था।

तजवीज़- स्त्री० (अ० तज्वीज) १ सम्मति, राय। २ फैसला, निर्णय। ३ बन्दोबस्त।

तजवीज़सानी- स्त्री० (अ० तज्वीजसानी) अभियोग या दावे आदि का पुनर्विचार।

तजस्सुस- पुं० (अ०) ढूँढ़ने की क्रिया, तलाश।

तजहीज़- स्त्री० (अ० तज्हीज) १ विवाह में जहेज आदि की व्यवस्था। २ लाश को क़फन आदि पहनाना और उसे गाड़ने की सामग्री एकत्र करना। यौ०- तजहीज़-व-तकफीन- कफन और अंत्येष्टि क्रिया की व्यवस्था।

तजारत- स्त्री० दे० 'तिजारत'।

तजावुज़- पुं० (अ०) अपने अधिकार-क्षेत्र या सीमा से आगे बढ़ जाना, सीमा का उल्लंघन।

तजाहुल- पुं० (अ०) जान-बूझकर अनजान बनना। यौ०- तजाहुल आरिफाना= वह अज्ञानता जो जान-बूझकर और बहुत सीधे-सादे बनकर प्रकट की जाय।

तज़ीअ- स्त्री० (अ०) जाया या नष्ट करना। जैसे- तज़ीअ औकात= समय नष्ट करना।

तज्जार- पुं० 'ताजिर' का बहु०।

ततबीक- स्त्री० (अ०) दो चीजों को सामने रखकर उनकी तुलना करना।

ततरी- वि० (फा०) १ तातार देश में संवद्ध। २ तातारियों से सम्बद्ध।

तत्तिम्मा- पुं० (अ० तत्तिम्मः) १ परिशिष्ट। २ क्रोड़पत्र।

तदबीर- स्त्री० (अ० तद्बीर) (बहु० तदाबीर) अभीष्ट सिद्ध करने का साधन, उपाय, युक्ति, तरकीब।

तदरीज- स्त्री० (तद्रीज) क्रम-क्रम से घटने या बढ़ने का भाव। यौ०- ब-तदरीज= क्रमशः, धीरे-धीरे।

तदरीस- स्त्री० (अ० तद्रीस) शिक्षा देना, पढ़ाना।

तदाबीर- स्त्री० (अ०) 'तदबीर' का बहु०।

तदारुक- पुं० (अ०) १ भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना के संबंध में जाँच। २ दुर्घटना को रोकने के लिये पहले से किया हुआ प्रबंध, पेशबंदी। ३ सज़ा, दंड।

तन- पुं० (फा० मि० सं० तनु) शरीर, बदन, जिस्म।

तनक़ीद- स्त्री० (अ०) समीक्षा, आलोचना।

तनक़ीह- स्त्री० (अ० तन्क़ीह) १ जाँच, तहकीकात। २ अदालत का किसी मुकदमे की उन बातों का पता लगाना जिनका फैसला होना जरुरी हो, विवादग्रस्त विषयों का निश्चय।

तनक़ीहतलब- वि० (अ०) विचारणीय।

तनखाह- स्त्री० दे० 'तनख्वाह'।

तनख्वाहदार- वि० (फा०) तनख्वाह या वेतन पर काम करने वाला।

तनज़- पुं० (अ० तन्ज) बोली-ठोली, ताना, व्यंग्य।

तनज़न् - क्रि० वि० (अ०) ताने के तौर पर, व्यंग्यपूर्वक।

तनज़ीम - स्त्री० (अ० तन्ज़ीम) बिखरी हुई

शक्तियों को एकत्र और व्यवस्थित करना, संघटन।

तनज्जुल - पुं० (अ०) १ ह्रास, अवनति। २ अपने पद आदि से नीचे गिरना, पदच्युति।

तनज्जुली - स्त्री० १ ह्रास। २ पदच्युति, पद से गिरना।

तन-तनहा- क्रि० वि० (फा०) अकेला, एकाकी, विना किसी के साथ।

तन-तना - पुं० (अ० तन्तनः) १ क्रोधपूर्वक अधिकार का प्रदर्शन। २ तेजी, प्रखरता (स्वभाव की)। ३ अभिमान, घमंड।

तनदुरुस्त- वि० = तन्दुरुस्त।

तनदुरुस्ती- स्त्री० = तन्दुरुस्ती।

तन-देह- वि० (फा०) खूव जी लगाकर काम करने वाला।

तन-देही - स्त्री० (फा० तनदिही) १ परिश्रम, मेहनत। २ प्रयत्न, कोशिश। ३ चेतावनी।

तन-परवर- वि० (फा०) (सं० तनपरवरी) १ केवल अपने शरीर के पालन-पोपण का ध्यान रखने वाला। २ स्वार्थी, मतलवी।

तनपरस्त- वि० (फा०) आरामतलव।

तनफ्फुर- पुं० (अ०) नफरत।

तनवीन - स्त्री० (अ० तन्वीन) फारसी लिपि में दो जवर, दो जेर या दो पेश लगाना जिसमें 'नून' या 'न' का उच्चारण होता है। जैसे - मसलन्, तख्मीनन् आदि के अन्त में जो 'न' है, वह तनवीन लगाने से हुआ है।

तनसीख- पुं० (अ०) निरसन, रद्दगी।

तनसीफ - स्त्री० (अ० तन्सीफ) १ निस्फ या आधा-आधा करना, दो समान भागों में विभक्त करना। २ विभाग करना।

तनहा- वि० (फा०) जिसके संग कोई न हो, अकेला, एकाकी।

तनहाई - स्त्री० (फा०) १ तनहा होने की दशा या भाव, अकेलापन, एकान्त।

तना - पुं० (फा० तनः) वृक्षका जमीन से ऊपर निकला हुआ वह भाग जिसमें डालियाँ न निकली हों, पेड़ का धड़, मंडल।

तनाज़ा - पुं० (अ० तनाजअ) १ बखेड़ा, झगड़ा। २ शत्रुता। ३ खींचातानी।

तनाब- स्त्री० (अ०) खेमा बाँधने की रस्सी।

तनावर - वि० (फा०) १ मोटा-ताजा, ह्प्ट-पुप्ट। २ बलवान।

तनावुल- पुं० (अ०) १ लेना, ग्रहण करना। २ भोजन करना।

तनासाँ- वि० (फा०) सुस्त।

तनासुख - पुं० (अ०) १ विनाश। २ एक रूप से दूसरे रूप में जाना। ३ एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना।

तनासुव- पुं० (अ०) सब अंगों का अपने उचित और उपयुक्त रूप में होना, मुनासिवत।

तनासुल- पुं० (अ०) संन्तान उत्पन्न करना, नसल बढ़ाना। यौ०- आज़ाए-तनासुल= पुरुप की इन्द्रिय, लिंग।

तनूमन्द- वि० (फा०) (तनूमन्दी) १ मोटा-ताजा, ह्प्ट-पुप्ट। २ बलवान्, ताकतवर। ३ सम्पन्न, धनवान्।

तनूर - पुं० (अ०) भट्ठी की तरह का रोटी पकाने का मिट्टी का बहुत बड़ा, गोल पात्र, तन्दूर।

तन्दुरुस्त- वि० (फा०) जिसे कोई रोग न हो, नीरोग, स्वस्थ।

तन्दुरुस्ती - स्त्री० (फा०) आरोग्य, स्वस्थता, नीरोगता।

तन्दूर- पुं० दे० 'तनूर'।

तन्दूरी - वि० (हिं०) तन्दूर में पकी हुई (रोटी आदि)।

तन्देही- स्त्री दे० 'तनदेही'।

तन्नाज- वि० (अ०) १ इशारे से बातें करने वाला, नाज़-नखरा करने वाला।

तप - पुं० (फा० मि० सं० ताप) ज्वर, वुखार।

तपाक - पुं० (फा०) १ आवेश, जोश। २ वेग, तेजी।

तपिश- स्त्री० (फा० मि० सं० ताप) गरमी, तपन।
तपे-दिक - पुं० (फा०) क्षयरोग।
तफ़ज़ील - स्त्री० (अ० तफ्ज़ील) १ श्रेष्ठ मानना या ठहराना। २ तुलना।
तफ़जीह - स्त्री० (अ० तफ्जीह) निंदा, बुराई।
तफ़ज़्ज़ुल - पुं० (अ०) श्रेष्ठता, बड़प्पन, बड़ाई, बुजुर्गी।
तफतगी - स्त्री० (फा०) १ गरमी। २ उत्साह।
तफता- वि० (फा० तफ्तः) बहुत गरम या जला हुआ।
तफतीश- स्त्री० (अ० तफ्तीश) जाँच-पड़ताल, तहक़ीकात।
तफरका - पुं० (अ० तफ्रिकः) अंतर, फर्क़। २ फासला, दूरी। ३ वियोग, बिछोह।
तफरीक़ - स्त्री० (अ० तफ्रीक़) १ बाँटने की क्रिया, विभाग, बँटवारा। २ अलग करना, वर्गीकरण। ३ अन्तर, फर्क। ४ गणित में घटाने की क्रिया, बाक़ी।
तफ़रीह - स्त्री० (अ० तफ्रीह) १ मनोरंजन, मनबहलाव। २ दिल्लगी, हंसी, ठट्टा। ३ हवाखोरी, सैर।
तफवीज़- स्त्री० (अ० तफ्वीज़) सुपुर्द करना, सौंपना।
तफसीर - स्त्री० (अ० तफ्सीर) १ वर्णन। २ टीका, विशेषतः कुरान की टीका।
तफसील - स्त्री० (अ० तफ्सील) १ विस्तृत वर्णन। २ टीका, तशरीह, कैफियत, ब्योरा।
तफसीलवार- वि० विस्तारपूर्वक, तफसील के साथ।
तफाखुर - पुं० (अ०) फख्र करना, शेखी करना।
तफावत - पुं० (अ० तफावुत) १ फासला, दूरी। २ अन्तर।
तफासीर - स्त्री० (अ०) तफसीर का बहु०।
तफ़ूलियत- स्त्री० (अ०) बाल्यावस्था, लड़कपन।
तवंचा- पुं० दे० 'तमंचा'।
तवअ - स्त्री० (अ०) १ प्रकृति, तबीयत। २ मोहर लगाना। ३ छापना, अंकित करना। ४ ग्रन्थों आदि का संस्करण।
तवअ-आज़माई - स्त्री० (अ० + फा०) बुद्धि-बलकी परीक्षा।
तवई- वि० (अ०) प्राकृतिक, असली। यौ०- इल्मे तवई= १ प्रकृति-विज्ञान। २ दर्शन-शास्त्र।
तवक़- पुं० (अ०) १ आकाश के वे खण्ड जो पृथ्वी के ऊपर और नीचे माने जाते हैं, लोक, तल। २ परत, तह। ३ चाँदी-सोने के पत्तरों को पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ पतला वरक़। ४ चौड़ी और छिछली थाली।
तवक़गर- पुं० (अ०+फा०) (सं० तवक़गरी) सोने, चाँदी के तबक़ बनाने वाला, तवकिया।
तवक़ा - पुं० (अ० तवकः) १ खंड, विभाग। २ तह, परत। ३ लोक, तल। ४ आदमियों का गरोह। ५ श्रेणी।
तवदील- वि० दे० 'तबदील'।
तवद्दुल - पुं० (अ०) बदला जाना, परिवर्तन।
तवनियत- स्त्री० (अ० तब्नियत) दत्तक ग्रहण, गोद लेने का कार्य।
तवनियतनामा - पुं० (अ० तब्नियत + फा० नामः) वह पत्र जो किसी को दत्तक लेने के सम्बन्ध में लिखा जाता है।
तवन्नी - स्त्री० (अ०) दत्तक लेने की क्रिया, लड़का गोद लेना, दत्तकग्रहण।
तवर - पुं० (फा०) कुल्हाड़ी के आकार का एक अस्त्र, फरसा।
तवरज़न - पुं० (फा०) १ तबर से लड़ने वाला, सैनिक। २ लकड़हारा।
तवरीद - स्त्री० (अ०) १ वह ठंडा पेय पदार्थ जो प्रायः जुलाब के बाद पिया जाता है।
तवर्मक - पुं० (अ०) (बहु० तवरुक़ात) १

किसी से बरकत या बरकत वाली कोई चीज़ लेना। २ वह चीज़ जो बरकत के तौर पर ली जाय, प्रसाद।

तबर्रा - पुं० (अ०) १ घृणा, नफरत। २ वे घृणासूचक वाक्य जो शीया लोग मुहम्मद साहब के कुछ मित्रों के सम्बन्ध में कहते हैं।

तबल - पुं० (अ०) १ बड़ा ढोल। २ नगाड़ा, डंका।

तबलची- पुं० (अ० तबलः) वह जो तबला बजाता हो, तबलिया।

तबला - पुं० (अ० तब्लः) ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा, यह बाजा इसी तरह के और दूसरे बाजे के साथ बजाया जाता है जिसे बायाँ, ठेका या डुग्गी कहते हैं।

तबलीग़ - पुं० (अ० तब्लीग़) १ किसी के पास कुछ पहुँचाना। २ धर्मका प्रचार करना, दूसरों को अपने धर्म में मिलाना।

तबस्सुम - पुं० (अ०) १ मन्दहास, मुस्कराहट। २ कलियों का विकसित होना, खिलना।

तबस्सुर - पुं० (अ०) ध्यानपूर्वक देखना, गौर करना।

तबह- वि० तबाह।

तबाक़ - पुं० (अ०) एक प्रकार की बड़ी थाली।

तबादला - पुं० (अ० तबादलः) १ बदला जाना, परिवर्तन। २ किसी कर्मचारी का एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर नियुक्त किया जाना।

तबार - पुं० (फा०) १ जाति। २ परिवार।

तबाशीर - स्त्री० (अ० वि० सं० तवक्षीर) वंशलोचन नामक औषधि।

तबाह- वि० (फा०) जो बिलकुल खराब हो गया हो, नष्ट।

तबाही - स्त्री० (फा०) नाश।

तबीअत - स्त्री० (दे०) 'तबीयत'।

तबीब - पुं० (अ०) चिकित्सक, वैद्य, हकीम।

तबीयत - स्त्री० (अ०) १ चित्त, मन, जी। मुहा०- (किसी पर) तबीयत आना= (किसी पर) प्रेम होना, आशिक़ होना। तबीयत फड़क उठना= चित्त का उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो जाना। तबीयत लगना= १ मन में अनुराग उत्पन्न होना। २ ध्यान लगा रहना। ३ बुद्धि, समझ, ज्ञान।

तबीयतदार- वि० (अ० + फा०) (सं० तबीयतदारी) १ समझदार। २ भावुक, रसिक।

तब्दील- वि० (अ०) १ बदला हुआ, परिवर्तित। २ जो एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर कर दिया गया हो। स्त्री० परिवर्तन, बदला जाना। जैसे- तब्दील आब-व-हवा= जल-वायु का परिवर्त्तन।

तब्दीली - स्त्री० (फा०) १ बदले जाने की क्रिया, परिवर्तन। २ दे० 'तबादला'।

तब्बाख- पुं० (अ०) बावर्ची, रसोइया।

तमंचा- पुं० (तु० तमन्चः) १ छोटी बन्दूक, पिस्तौल। २ वह लंबा पत्थर जो दरवाज़ों की बगल में लगाया जाता है।

तमअ - स्त्री० दे० 'तमा'।

तमकनत - स्त्री० (अ० तम्कनत) १ मान, सम्मान। २ शान-शौकत। ३ अभिमान, घमंड।

तमग़ा - पुं० (तु० तमग़ः) १ पदक। २ मोहर। ३ राजाज्ञा।

तमद्दुन - पुं० (अ०) १ नगर में रहना, नगर-निवास। २ नागरिकता। ३ सभ्यता, संस्कृति।

तमन - पुं० दे० 'तुमन'।

तमन्ना- स्त्री० (अ०) कामना, इच्छा, ख्वाहिश।

तमर- पुं० (अ०) सूखी खजूर। यौ०- तमरे हिन्दी= इमली।

तमर्रुद- पुं० (अ०) १ उद्दंडता। २ विरोध, विद्रोह। ३ अधिकारियों की आज्ञा या कानून न मानना, नियमों की अवज्ञा।

तमसील- स्त्री० (अ० तम्सील) १ मिसाल, उदाहरण। २ उपमा।

तमसीलन- क्रि० वि० (अ०) मिसाल के तौर पर, उदाहरणार्थ।

तमस्खुर- पुं० (अ०) मसखरापन, हँसी-ठट्ठा, परिहास।

तमस्सुक- पुं० (अ०) वह कागज जो ऋण लेने वाला ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर महाजन को देता है, ऋणपत्र, दस्तावेज़।

तमहीद- स्त्री० (अ० तम्हीद) १ बिछौना या बिस्तर बिछाना। २ भूमिका, प्रस्तावना।

तमाँचा- पुं० (फा० तमान्चः) थप्पड़, तमाचा।

तमा- स्त्री० (अ० तमअ) १ लालच, लोभ। २ इच्छा।

तमाचा- पुं० (तु० तमाचः या फा० तमान्चः) हथेली और उँगलियों से गालपर किया हुआ प्रहार, थप्पड़, झापड़।

तमादी- स्त्री० (अ०) किसी बात की मुद्दत या मीयाद गुजर जाना, कालातीत।

तमानियत- स्त्री० (अ०) तसल्ली, इतमीनान, सन्तोप।

तमाम- वि० (अ०) १ पूरा, संपूर्ण, कुल। २ समाप्त, खतम।

तमामशुद- वि० (अ०) समाप्त।

तमामी- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का देशी रेशमी कपड़ा।

तमाशबीन- पुं० (अ० + फा०) १ तमाशा देखनेवाला। २ वेश्यागामी, ऐयाश।

तमाशा- पुं० (अ० तमाशः) १ वह दृश्य जिसके देखने से मनोरंजन हो, चित्त को प्रसन्न करने वाला दृश्य। २ अद्भुत व्यापार, अनोखी बात।

तमाशाई- स्त्री० (अ० तमाशा से फा०) वह स्थान जहाँ कोई तमाशा होता हो, रंगस्थल।

तमीज़- स्त्री० (अ०) १ भले और बुरे को पहचानने की शक्ति, विवेक। २ पहचान। ३ ज्ञान, बुद्धि। ४ अदब, कायदा। ५ व्याकरण में क्रियाविशेषण।

तम्बान- पुं० (फा०) बहुत ढीली मोहरियों का पाजामा।

तम्बीह- स्त्री० (अ०) १ नसीहत, शिक्षा। २ चेतावनी।

तम्बूर- पुं० दे० 'तम्बूरा'।

तम्बूरा- पुं० (अ० तम्बूरः) तंबूरा या तानपूरा नामक प्रसिद्ध बाजा।

तम्बूल- पुं० दे० 'तम्बोल'।

तम्बोल- पुं० (फा० मि० सं० ताम्बूल) पान, ताम्बूल।

तम्माअ- वि० (अ०) लालची, लोभी।

तय- वि० (अ० निर्णीत, निश्चित।

तयम्मुम - पुं० (अ०) जलके अभाव में, नमाज पढ़ने से पहले, मिट्टी से हाथ-मुँह साफ करना, मिट्टी से वज़ू करना।

तयशुदा- वि० (अ०) निश्चित, निर्णीत।

तयूर - पुं० (अ० 'तैर' का बहु०) चिड़ियाँ, पक्षी-समूह।

तय्यार- वि० (अ०) १ उद्यत, प्रस्तुत। २ समाप्त।

तर- वि० (फा०) १ भीगा हुआ, आर्द्र, गीला। यौ०- तर-बतर= बिलकुल भीगा हुआ। २ शीतल। ठंडा। ३ जो सूखा न हो, हरा। यौ०- तरो-ताजा= हरा और नया। प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों के अंत में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य सूचित करता है। जैसे- खुशतर, बेहतर।

तरकश- पुं० (फा० तर्कश) तीर रखने का चोंगा, भाथा, तूणीर।

तरकशबंद- वि० (फा०) तूणीरधारी।

तरका- पुं० (अ० तर्कः) वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले।

तरकारी- स्त्री० (फा० तरः + कारी) १ वह पौधा जिसकी पत्तियाँ, डंठल, फल आदि पकाकर खाने के काम आते हैं।

तरक़ीब- स्त्री० (अ० तर्कीब) (वि० तरक़ीबी) १ मिलान। २ बनावट, रचना। ३ युक्ति, उपाय, ढंग, ढब। ४ रचना-प्रणाली।

तरकीब-बंद- पुं० (अ० + फा०) तरजीअबन्द की तरह की एक प्रकार की कविता।

तरक्क़ी- स्त्री० (अ०) वृद्धि, उन्नति, प्रगति।

तरक्क़ी-पसन्द- वि० (अ०+फा०)

प्रगतिशील।

तरखीम - स्त्री० (अ० तर्खीम) १ शब्द का संक्षिप्त रूप। २ व्याकरण में किसी शब्द के अंतिम अक्षर का उच्चारण न करना।

तरग़ीब- स्त्री० (अ० तर्ग़ीब) १ उत्तेजन, उत्तेजित करना, उसकाना, भड़काना। २ कह-सुनकर अपने अनुकूल करना। क्रि० प्र० देना।

तरजीह- स्त्री० (अ०) १ वरीयता। २ प्राथमिकता।

तरजुमा- स्त्री० (अ० तर्जुमः) अनुवाद, भाषांतर, उल्था।

तरजुमान- पुं० ( अ० तर्जुमान) १ तरजुमा या अनुवाद करने वाला, अनुवादकर्ता। २ अच्छा भाषण करने वाला, सुवक्ता।

तरतीब- स्त्री० (अ० तर्तीब) वस्तुओं का अपने ठीक स्थानों पर लगाया जाना, क्रम, सिलसिला।

तरतीबवार- क्रि० वि० (अ० + फा०) तरतीब या क्रम से, सिलसिलेवार।

तर-दामन- वि (फा०+अ०) (सं० तरदामनी) १ अपराधी। २ पापी।

तरदीद- स्त्री० (अ० तर्दीद) १ काटने या रद करने की क्रिया, मंसूखी। २ खंडन, प्रत्युत्तर।

तरद्दुद- पुं० (अ०) (बहु० तरद्दुदात) सोच, फिक्र, अंदेशा, चिंता, खटका।

तरन्नुम- पुं० (अ०) स्वर-माधुर्य।

तरफ - स्त्री० (अ०) १ ओर, दिशा, अलग। २ किनारा, बगल। ३ पक्ष, पासदारी।

तरफदार- वि० (अ०+फा०) (सं० तरफदारी) पक्ष में रहनेवाला, पक्षपाती, हिमायती।

तरफैन- पुं० (तरफका बहु०) (अ०) दोनों तरफ के लोग, दोनों पक्ष।

तरब - पुं० (अ०) प्रसन्नता।

तरबियत- स्त्री० (अ० तर्बियत) सिखाने-पढ़ाने और सभ्य बनाने की क्रिया, शिक्षा-दीक्षा। यौ०- तालीम व तरबियत।

तरबुज़ - पुं० द्रि० 'तरबूज़'।

तरबूज़ - पुं० (फा० तरबुज़) १ एक प्रकार की बेल। २ इस बेल के बड़े गोल फल जो खाने के काम में आते हैं।

तरमीम- स्त्री० (अ० तर्मीम) संशोधन, सुधार।

तरस- पुं० (फा० तर्स मि० सं० त्रस्) १ भय, डर। २ दया, रहम। मुहा०- (किसी पर) तरस खाना= दया करना, रहम करना।

तरसाँ- वि० (फा०) भयभीत, डरा हुआ।

तरसील - स्त्री० (अ० तर्सील) इरसाल करने की या भेजने की क्रिया।

तरह - स्त्री० (अ०) १ प्रकार, भाँति, किस्म। २ रचना-प्रकार, ढाँचा, रूप-रंग। ३ ढब, तर्ज, प्रणाली। ४ युक्ति, उपाय। ५ हाल, दशा। मुहा०- तरह देना= जाने देना, ध्यान न देना। ६ वह पद या चरण जो ग़जल बनाने को दिया जाय, समस्या-पूर्ति का पद।

तरहदार- वि० (अ० + फा०) बाँका।

तरहदारी- स्त्री० (अ० + फा०) बाँकपन।

तरहहुम- पुं० (अ०) रहम, दया। स्त्री० (फा०) तरकारी।

तराज़ू - पुं० (फा०) सीधी डाँडी के छोरों से बँधे हुए दो पलड़े जिनसे वस्तुओं की तौल मालूम करते हैं, तुला, लकड़ी। यौ०- तराज़ू अद्ल= न्याय-तुला।

तरादूफ- पुं० (अ०) १ क्रमशः लगे होने का भाव। २ पर्याय।

तराना- पुं० (फा० तरानः) १ संगीत, गीत। २ राग। ३ एक प्रकार का चलता गाना।

तरावत - स्त्री० (अ०) १ आर्द्रता, नमी, तरावट। २ ताजापन, ताजगी।

तराविश - स्त्री० (फा०) टपकना, चूना।

तरावीह- स्त्री० (अ०) एक विशिष्ट प्रकार की नमाज़ या ईश्वर-प्रार्थना जो विशेष धर्मनिष्ठ मुसलमान करते हैं।

तराश- स्त्री० (फा०) १ काटने का ढंग या

भाव। काट। २ काट-छाँट, बनावट, रचना प्रकार। यौ०- तराश-खराश= काट-छाँट और बनावट। ३ ढंग।

तराशना- क्रि० (फा० तराश) काटना, कतरना।

तराशीदा- वि० (फा० तराशीदः) १ तराशा हुआ। २ काटा, छीला या कतरा हुआ।

तरी- स्त्री० (फा० तर) १ गीलापन, आर्द्रता। २ ठंढक, शीतलता। ३ वह नीची भूमि जहाँ बरसातका पानी इकट्ठा रहता हो, कछार, तराई, तरहटी।

तरीक़ - पुं० दे० 'तरीका'।

तरीक़त - स्त्री० (अ०) १ रास्ता, मार्ग। २ आचरण। ३ हृदय की शुद्धता।

तरीक़ा - पुं० (अ० तरीकः) १ ढंग, विधि, रीति। २ चाल, व्यवहार। ३ उपाय, तदवीर। यौ०- तरीक-ए-अमलदरामद= कार्यविधि, प्रक्रिया।

तरीन- प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों के अन्त में लगकर सबसे आधिक्य सूचित करता है। जैसे- खुशतरीन, बेहतरीन।

तर्क- पुं० (अ०) छोड़ने की क्रिया, परित्याग। यौ०- तर्क मावालात= असहयोग।

तर्कश - पुं० दे० 'तरकश'।

तर्कीब- स्त्री० ढंग, युक्ति।

तर्ज- स्त्री० (अ०) १ प्रकार, किस्म, तरह। २ रीति, शैली, ढंग, ढब। ३ रचना-प्रकार।

तर्जी- स्त्री० (अ० तर्जीह) १ वरीयता। २ प्राथमिकता।

तर्जुमा- पुं० दे० 'तरजुमा'।

तर्तीब- स्त्री० (अ०) क्रम।

तर्तीबवार- वि० (अ० + फा०) क्रम से होने वाला, क्रमिक।

तर्रा- पुं० (फा० तर्रः) तरकारी, शाक-भाजी।

तर्रार- वि० (अ०) (सं० तर्रारी) १ बहुत बोलने वाला, मुखर, तेज, चपल। यौ०- तेज-व-तर्रार= चपल और मुखर।

तर्रारा- पुं० (अ० तर्रार) १ तेजी। २ द्रुत गति। यौ०- तर्रारे भरना= बहुत तेजी से चलना या भागना।

तर्राह- पुं० (अ०) भवन-निर्माण की विद्या। स्थापत्य।

तर्स - पुं० दे० 'तर्स'।

तलक़ीन- स्त्री० (अ० तल्कीन) १ समझाना- बुझाना, शिक्षा देना।

तलख- वि० दे० 'तल्ख'।

तलत- स्त्री० (अ० तलअत) १ चेहरा, आकृति। २ दर्शन। ३ शोभा।

तलफ- वि (अ०) नष्ट, बरबाद।

तलफ़ी- स्त्री० (अ०) विनाश, बरबादी। यौ०- हक-तलफी= किसी को उसके हक़ या अधिकार का उपयोग न करने देना।

तलफ्फुज - पुं० (अ०) उच्चारण।

तलब - स्त्री० (अ०) १ खोज, तलाश। २ चाह, पाने की इच्छा। ३ आवश्यकता, माँग। ४ बुलावा, बुलाहट। ५ तनख्वाह।

तलबगार- वि० (फा०) (सं० तलबगारी) चाहनेवाला।

तलबनामा- पुं० (अ० + फा० नामः) वह पत्र जिसके द्वारा किसी को तलब किया या बुलाया जाय, सम्मन, सफीना।

तलबा- पुं० (अ० तालिब का बहु०) विद्यार्थीगण।

तलबाना- पुं० (फा० तलबानः) वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में दाखिल किया जाता है।

तलबी- स्त्री० (अ०) १ बुलाहट। २ माँग।

तलमीह - स्त्री० (अ०) लेखक का अपने ग्रंथ में किसी कथानक, पारिभाषिक शब्द या कुरान की आयत का उल्लेख करना।

तलव्वुन - पुं० (अ०) १ तरह-तरह के रंग बदलना। २ स्वभाव की अस्थिरता। यौ०- तलव्वुन-मिज़ाज= अस्थिर-चित्त, जिसका मन जल्दी किसी बात पर न जमे।

तलाक़ - पुं० (अ० तिलाक़) पति-पत्नी का सम्बन्ध टूटना। मुहा०- तलाक़ देना=

पति का पत्नी को या पत्नी का पति को परित्याग करना।

तलातुम - पुं० (अ०) नदी या समुद्र की बड़ी-बड़ी तरंगें।

तलाफी - स्त्री० (अ०) १ दोष या अनुचित कृत्य का परिहार। २ क्षतिपूर्ति।

तलावत - स्त्री० दे० 'तिलावत'।

तलाश - स्त्री० (तु०) १ खोज, ढूँढ-ढाँढ, अन्वेषण, अनुसंधान। २ आवश्यकता, चाह।

तलाशी - स्त्री० (तु०) गुम हुई या छिपाई हुई वस्तुको पाने के लिये ढूँढ़-खोज।

तलौवन - पुं० दे० 'तलव्वुन'।

तल्ख- वि० (फा०) १ कड़ुवा, कटु। २ अप्रिय, नागवार।

तल्ख- वि० (फा०) कटुभाषी, कड़वी जबान वाला।

तल्ख-मिजाज- वि० (फा०) (सं० तल्खमिजाजी) जिसका स्वाभाव उग्र और कटु हो।

तल्खा - पुं० (फा० तल्खः) १ पित्ताशय। पित्त। २ उबालकर सुखाए हुए चावलों का बनाया हुआ सत्तू, फरवी का सत्तू।

तल्खी- स्त्री० (फा०) १ कड़ुवापन, कटुता। २ स्वभाव की उग्रता और कटुता

तवंगर- वि० (फा०) (तवंगरी) धनवान, सम्पन्न।

तवक्का- स्त्री० (अ० तवक्कुअ) आशा, उम्मेद।

तवक्कुफ- पुं० (अ०) विलम्ब।

तवक्कुल- पुं० (अ०) १ ईश्वर पर भरोसा रखना। २ सांसारिक बातों से मुंह मोड़कर ईश्वर की ओर ध्यान लगाना।

तवज्जह- स्त्री० (अ० तवज्जोह) १ ध्यान, रुख। २ कृपादृष्टि।

तवर्रो- पुं० (अ०) संयम।

तवल्लुद- वि० (अ०) जिसने जन्म लिया हो, जात, उत्पन्न। मुहा०- तवल्लुद होना= पैदा होना।

तवस्सुल - पुं० दे० 'वसीला'।

तवाइफ- स्त्री० (अ०) रंडी, वेश्या।

तवाज़ा - स्त्री० (अ० तवाजुअ) १ आदर। मान, आव-भगत, २ मेहमानदारी, दावत। यौ०- तवाज़ा समरबन्दी= झूठ-मूठ की खातिरदारी, खिलाना-पिलाना कुछ नहीं, खाली बातों से आव-भगत करना।

तवान-गर- वि० (फा०) (सं० तवान-गरी) धनवान, सम्पन्न।

तवाना- वि० (फा०) (तवा-नई) बलवान, ताक़तवर।

तवाफ - पुं० (अ०) मक्के अथवा किसी दूसरे पवित्र स्थान की प्रदक्षिणा।

तवाम - पुं० (अ०) एक साथ उत्पन्न होने वाले दो बालक, यमज, जोड़िया बच्चे।

तवायफ- स्त्री० (अ० तवाइफ) १ 'तायफा' का बहु० । २ वेश्या। रंडी।

तवायफज़ादा- स्त्री० (अ० तवायफ + फा० जादा) वेश्यापुत्र।

तवारीख - स्त्री० (अ०) इतिहास।

तवारीखी - वि० (अ०) ऐतिहासिक।

तवालत - स्त्री० (अ०) १ तवील या लंबा होने का भाव, लंबाई, दीर्घता, २ अधिकता। ३ बखेड़ा, झंझट।

तवील- वि० (अ०) (तवालत) लम्बा, लम्ब। यौ०- तूल-तवील= लम्बा-चौड़ा।

तवेला- पुं० (अ० तवेल) अश्वशाला, घुड़साल।

तशखीस- स्त्री० (अ० तश्खीस) १ ठहराव, निश्चय। २ मर्ज़ की पहचान, रोग का निदान।

तशतरी- स्त्री० (फा० तश्तरी) प्लेट।

तशदीद- स्त्री० (अ० तश्दीद) १ कठोर बनाना। २ एक प्रकार का चिह्न जो अरबी-फारसी लिपि में किसी अक्षर के ऊपर लगकर उसका द्वित्व सूचित करता है।

तशद्दुद- पुं० (अ०) कड़ाई, सख्ती। (व्यवहार आदि की)

तशनीअ- स्त्री० (अ०) १ ताना। २ लानत-मलामत

तशन्नुज- पुं० (अ०) शरीर के अंगों का

ऐंठना। (रोग)

तशफ्फी- स्त्री० (अ०) १ तसल्ली, ढारस। २ सन्तोष।

तशबीह - स्त्री० (अ० तश्बीह) उपमा।

तशरीफ- स्त्री० (अ० तश्रीफ) बुजुर्गी, इज्जत, महत्व। बड़प्पन मुहा०- तशरीफ लाना= पदार्पण करना। तशरीफ रखना= विराजना, बैठना। (आदर) यौ०- तशरीफ आवरी= शुभागमन।

तशरीह- स्त्री० (अ० तश्रीह) १ व्याख्या, विस्तृत टीका। २ वह शास्त्र जिसमें शरीर के अंगों और उपांगों आदि की व्याख्या होती है, शरीर-शास्त्र।

तशवीश- स्त्री० (अ० तश्वीश) १ चिन्ता, फिक्र। २ तरद्दुद, परेशानी।

तशहीर- स्त्री० (अ०) १ किसी के दोषों को सब पर प्रकट करना। २ दंडस्वरूप किसी को अपमानित करके सब लोगों के सामने या सारे नगर में घुमाना।

तश्त- पुं० (फा०) एक प्रकार का बड़ा थाल। मुहा०- तश्त अज़बाम होना= भेद खुलना। २ बदनामी होना।

तश्तरी- स्त्री० (फा०) थाली के आकार का छिछला हलका बरतन, रिकाबी।

तश्नगी- स्त्री० (फा०) १ प्यास। २ तृष्णा।

तश्ना- वि० (फा०) प्यासा। यौ०- तश्नए खून= खून का प्यासा।

तसकीन - स्त्री० दे० 'तस्कीन'।

तसखीर- स्त्री० दे० 'तस्खीर'।

तसग़ीर- स्त्री० (अ० तस्ग़ीर) १ छोटा करना, संक्षिप्त करना। २ संक्षिप्त रूप।

तसदिआ- पुं० दे० 'तसदीअ'।

तसदीअ- स्त्री० (अ० तस्दीअ) १ कष्ट, पीड़ा। २ कठिनता, दिक्कत।

तसदीक़- स्त्री० (अ० तस्दीक़) सही बतलाना या ठहराना, यह कहना कि अमुक बात ठीक है।

तसद्दुक- पुं० (अ०) १ सदका उतारना, न्योछावर करना। २ दान, खैरात।

तसनिया- पुं० (अ० तस्नियः) व्याकरण में द्विवचन।

तसनीफ- स्त्री० दे० 'तस्नीफ'।

तसन्ना- पुं० (अ० तसन्नुअ) १ नकली या बनावटी चीज तैयार करना। २ बनाव-सिंगार, बनावट। ३ कारीगरी, कला-कौशल। ४ स्त्रियों का अपना श्रृंगार करके लोगों को दिखलाना।

तसफिया- पुं० दे० 'तस्फिया'।

तसबीह- स्त्री० दे० 'तस्बीह'।

तसमा- पुं० दे० 'तस्मा'।

तसरीफ- स्त्री० (अ० तस्रीफ) व्याकरण में शब्द के भिन्न भिन्न रूप। जैसे- करना, कराना, करवाना।

तसरीह- स्त्री० (अ० तस्रीह) १ प्रकट या स्पष्ट करना। २ व्याख्या।

तसर्रुफ- पुं० (अ०) १ व्यय, खर्च। २ उपयोग, प्रयोग। ३ अधिकार और भोग। ४ महात्माओं आदि की अलौकिक शक्ति।

तसलसुल- पुं० (अ० तसल्सुल) श्रृंखला, क्रम, सिलसिला।

तसलीम- स्त्री० दे० 'तस्लीम'।

तसलीस- स्त्री० (अ० तस्लीस) १ तीन भागों में बाँटना। २ तीन वस्तुओं का समूह, त्रयी।

तसल्ली- स्त्री० (अ०) १ ढारस, सांत्वना, आश्वासन। २ शांति, धैर्य, धीरज।

तसल्लुत- पुं० (अ०) पूर्ण अधिकार, विशेषतः शासन सम्बन्धी।

तसवीर- स्त्री० दे० 'तस्वीर'।

तसव्वुफ- पुं० दे० 'तसौव्वुफ'।

तसव्वर - पुं० दे० 'तसौवर'।

तसहीफ- स्त्री० (अ० तस्हीफ) लिखावट में होने वाली चूक।

तसहील- स्त्री० (अ० तस्हील) सहल या सहज करना।

तसहीह- स्त्री० (अ० तस्हीह) १ सही या दुरुस्त करना, शुद्ध करना। २ मिलान करके यह देखना कि ठीक और मूलके अनुसार है या नहीं।

तसानीफ- स्त्री० (अ० 'तस्नीफ' का बहु०)

रचनाएँ।

तसाबीह- स्त्री० (अ० तस्वीह का बहु०) मालाएँ।

तसाविया- पुं० (अ० तसाविय) गणित में समतासूचक चिह्न जो (=) इस प्रकार लिखा जाता है।

तसावी- स्त्री० (अ०) समानता, बराबरी।

तसावीर- स्त्री० (अ० 'तस्वीर' का बहु०) तस्वीरें।

तसाहुल- पुं० (अ०) १ आलस्य, सुस्ती। २ उपेक्षा, ध्यान न देना, लापरवाही।

तसौवफ- पुं० (अ० तसव्वुफ) १ सब प्रकार की कामनाओं से रहित होना और सब वस्तुओं में ईश्वर का अस्तित्व समझना। २ सूफियों का दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें उक्त बातें मुख्य होती हैं।

तसौवर- पुं० (अ० तसव्वुर) १ ध्यान, ख्याल। २ कल्पना। ३ विचार।

तस्कीन- स्त्री० (अ०) १ तसल्ली, ढारस। २ सन्तोष।

तस्खीर- स्त्री० (अ०) १ जीतकर अपने अधिकार में करना। (गढ़ या भूत-प्रेत आदि) २ जादू-मन्तर, टोना-टोटका। ३ अपनी ओर अनुरक्त करना। ४ अल्पार्थक रूप।

तस्नीफ- स्त्री० (अ०) (बहु० तसानीफ) १ ग्रन्थ आदि की रचना। २ लिखित या रचित ग्रंथ, रचना।

तस्फिया- पुं० (अ० तस्फियः) १ साफ या स्वच्छ करना (मन आदि)। २ झगड़े का निपटारा।

तस्वीह- स्त्री० (अ०) १ पवित्र होकर ईश्वर की आराधना करना। २ सौ दानों की वह माला जिसका प्रयोग मुसलमान जपके लिये करते हैं। ३ सुभान अल्लाह कहना।

तस्मा- पुं० (फा० तस्मः) चमड़े का चौड़ा फीता।

तस्मिया- पुं० (अ० तस्मियः) नामकरण, नाम रखना।

तस्मीत- पुं० (अ०) १ मोती पिरोना। २ अच्छी चीजें चुनकर एकत्र करना, चयन। ३ सुन्दर वस्तुओं का संग्रह।

तस्लीम- स्त्री० (अ०) १ सलाम, प्रणाम। २ किसी बात को स्वीकार करना, हामी।

तस्लीमात- स्त्री० (अ० 'तस्लीम' का बहु०) मुहा०- तस्लीमात बजा लाना= सलाम करना।

तस्वीर - स्त्री० (अ०) काग़ज आदि पर रंग आदि की सहायता से बनाई हुई वस्तुओं की प्रतिकृति, चित्र। वि० चित्र के समान सुन्दर, बहुत सुन्दर।

तह स्त्री० (फा०) १ किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो, परत। मुहा०- तह करना या लगाना= कि फैली हुई वस्तु के भागों को कई ओर से मोड़कर समेटना। तह कर रखो= रहने दो, नहीं चाहिए। तह तोड़ना= १ झगड़ा निवटाना। २ कूएँ का सब पानी निकाल देना जिससे जमीन दिखाई देने लगे। (किसी चीज की) तह देना= हलकी परत चढ़ाना, हलका रंग चढ़ाना। ३ किसी वस्तु के नीचे का विस्तार, तल। पेंदा। मुहा०- तह की बात= छिपी हुई बात, गुप्त रहस्य। किसी बात की तह तक पहुँचना= यथार्थ रहस्य जान लेना, असली बात समझ लेना। तहो-बाला होना= १ बिलकुल उलट-पलट होना। २ विनष्ट होना। ३ पानी के नीचे की जमीन, तल, थाह। ४ महीन पटल, वरक़, झिल्ली।

तहक़ीक- स्त्री० (अ०) १ जाँच-पड़ताल, अनुसंधान। २ वह जो जाँच-पड़ताल से ठीक सिद्ध हुआ हो। वि० १ अच्छी तरह जाँचा हुआ, ठीक। २ निश्चित।

तहक़ीक़ात - स्त्री० (अ० तहक़ीक़) किसी विषय या घटना की ठीक ठीक बातों की खोज, अनुसन्धान, जाँच।

तहकीर - स्त्री० (अ० तह्कीर) अपमान, बेइज्जती, मान-हानि। यौ०- तहकीरे अदालत= अदालत की मानहानि।

तहक्कुम- पुं० (अ०) १ प्रभुत्व, आधिपत्य, अधिकार। २ शासन, राज्य।

तहखाना- पुं० (फा० तहखानः) वह कोठरी या घर जो जमीन के नीचे बना हो, भुइँधरा, तल-गृह।

तह-अर्द- वि० दे० 'तह-दर्ज'।

तहज़ीब- स्त्री० (अ०) १ सभ्यता, संस्कृति। २ भल-मन-साहत, शिष्टाचार।

तहज़ीब-याफ्ता- वि० (अ० + फा०) सभ्य, शिष्ट।

तहज़ीर- स्त्री० (अ०) १ धमकी। २ तम्बीह।

तहज्जी- स्त्री० (अ०) १ हज्जे या निन्दा करना। २ हिज्जे। यौ०- हरफे तहज्जी= वर्णमाला के अक्षर।

तहज्जुद- पुं० (अ०) एक प्रकार की नमाज़ जो आधी रात के बाद पढ़ी जाती है।

तहत- पुं० (अ० तह्त) १ अधिकार, इख्तिहार, अधीनता। यौ०- तहत-उस्तरा= पाताल लोक।

तहती - वि० (अ०) निम्नलिखित।

तहत्तुक- पुं० (अ०) अपमान, हतक-इज्जत, अप्रतिष्ठा।

तहदर्ज- वि० (फा०) ऐसा नया जिसकी तह तक न खुली हो, बिलकुल नया।

तह-देगी- स्त्री० (फा०) देग के नीचे की वह खुरचन जो उसमें से खाद्य पदार्थ निकाल लेने के बाद खुरची जाती है।

तह-नशीन- वि० (फा०) तहमें या नीचे बैठा हुआ। पुं० तलछट, गाद।

तहनियत- स्त्री० (अ०) मुबारकबाद, बधाई।

तह-निशान- पुं० (फा०) तलवार आदि के दस्ते पर चाँदी-सोने के बने बेल-बूटे।

तहपेच- पुं० (फा०) वह छोटी टोपी या सिर पर लपेटा जानेवाला कपड़ा जो पगड़ी के नीचे रहता है।

तहपोशी- स्त्री० (फा०) वह छोटा काछरा जो स्त्रियाँ पतली साड़ियों के नीचे या अन्दर पहनती है, साया, अस्तर।

तह-बन्द- पुं० (फा०) वह कपड़ा जो मुसलमान कमर के चारों तरफ लपेटते हैं, तहमद, लुंगी।

तह-बन्दी- स्त्री० (फा०) १ पुस्तकों की जुज़-बन्दी। २ कपड़ा रंगने के पहले उसे किसी ऐसे रंग में रंगना जिससे उसपर का दूसरा रंग पक्का और अच्छा हो।

तहबाजारी- स्त्री० (फा०) बाजारों आदि में दूकानदारों से लिया जाने वाला जमीन का किराया।

तहमद- स्त्री० (फा० तहबंद) कमर से लपेटने का कपड़ा या अँगोछा, लुंगी तहबन्द।

तहमीद - स्त्री० (अ० तह्मीद) ईश्वर की बार-बार प्रशंसा करना।

तहम्मुल- पुं० (अ०) सहनशीलता, बरदाश्त।

तहरीक- स्त्री० (अ० तह्रीक) १ हिलाना-डुलाना, गति देना। २ उत्तेजित करना, भड़काना। ३ आन्दोलन। ४ प्रस्ताव।

तहरीफ- स्त्री० (अ० तह्रीफ) १ शब्दों या अक्षरों आदि को बदलना। २ लेख या हिसाब बगैरह की जालसाजी। ३ लेखमें होने वाली सामान्य भूल।

तहरीर- स्त्री० (अ० तह्रीर) १ लिखावट, लेख। २ लेख-शैली। ३ लिखी हुई बात। ४ लिखा हुआ प्रमाणपत्र। ५ लिखने की उजरत, लिखाई।

तहरीरी- वि० (अ०) लिखा हुआ, लिखित।

तहर्रुक- पुं० (अ०) हिलना-डुलना, गति।

तहलका- पुं० (अ० तह्लकः) १ मौत, मृत्यु। २ बरबादी, नाश। ३ खलबली, धूम, हलचल।

तहलील- स्त्री० (अ० तह्लील) १ गलना, घुलना। २ पचना, हज़म होना। ३ व्याकरण के अनुसार किसी शब्द की व्याख्या। ४ पदच्छेद।

तहवील- स्त्री० (अ० तह्वील) १ हवाले करना या सपुर्द करना, सपुर्दगी। २

अमानत, धरोहर। ३ खजाना, कोश । ४ रोकड़, जमा। ५ ज्योतिष में सूर्य्य या चन्द्रमा का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।

तहवीलदार- पुं० (अ० तहवील + फा० दार) कोशाध्यक्ष, खजानची।

तहसीन- स्त्री० (अ० तहसीन) प्रशंसा, सराहना, तारीफ।

तहसील- स्त्री० (अ० तहसील) १ लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया, वसूली, उगाही। २ वह आमदनी जो लगान वसूल करने से इकट्ठी हो। ३ तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी।

तहसीलदार- पुं० (अ० तहसील + फा० दार) १ कर वसूल करनेवाला। २ वह अफसर जो जमींदारों से सरकारी मालगुजारी वसूल करता और माल के छोटे मुकदमों का फैसला करता है।

तहसीलदारी- स्त्री० (अ० तहसील + फा० दारी) १ तहसीलदार का पद। २ तहसीलदार की कचहरी।

तहायफ- पुं० (अ०) 'तोहफा' का बहु०।

तहारत - स्त्री० (अ०) १ पवित्रता, शुद्धता, नमाज पढ़ने से पहले हाथ-पैर और मुँह आदि धोकर शरीर पवित्र करना।

तही- वि० (फा० तिही) खाली, रिक्त। जैसे- तही-दस्त, पहलू-तही।

तहीदस्त- वि० (फा०)( सं० तहीदस्ती) जिसका हाथ खाली हो, निर्धन, दरिद्र।

तहीमग़्ज़- वि० (फा० तहीमग्जी) जिसका मग्ज या दिमाग खाली हो, मूर्ख, बेवकूफ।

तहेदिल- स्त्री० (फा०) हृदय का भीतरी भाग। मुहा०- तहेदिल से= हृदय से।

तहैया- पुं० (अ० तहैयः) तैयारी, तत्परता।

तहैयुर- पुं० (अ० तहय्युर) आश्चर्य, अचंभा, अचरज।

तहो-बाला- वि० (फा०) १ नीचे का ऊपर और ऊपर का नीचे, उल्टा-पलटा। २ विनष्ट, बरबाद।

तहौवर- पुं० (अ०) १ शीघ्रता, जल्दी। २ क्रोध, गुस्सा।

ता- अव्य० (फा०) तक, पर्यन्त। प्रत्य० संख्यासूचक प्रत्यय। जैसे दो-ता, सेह-ता।

ताअत- स्त्री० (अ०) १ उपासना, ईश्वराराधन। २ सेवा।

ताईद- स्त्री० (अ०) १ पक्षपात, तरफदारी। २ अनुमोदन, समर्थन। पुं० वकील का मुहर्रिर।

ताईन- स्त्री० (अ० ताऽईन) १ निश्चय। २ नियुक्ति।

ताऊन- पुं० (अ०) १ वह भीषण संक्रामक रोग जिससे बहुत से लोग मरें। २ प्लेग नामक रोग।

ताऊस- पुं० (अ०) मयूर, मोर। यौ०- तख्त-ताऊस= शाहजहाँ का बनवाया हुआ रत्नों का एक प्रसिद्ध बहुमूल्य सिंहासन, मयूर सिंहासन।

ताक़- पुं० (अ०) चीजें रखने के लिये दीवार में बना हुआ खाली स्थान, आला, ताखा। मुहा०- ताक पर रखना= अलग रखना, छोड़ देना, ताक़ भरना= क़ोई मन्नत पूरी होने पर मसजिद के ताक़ों में मिठाइयाँ रखना। वि० १ जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागों में न बँट सके, विषम। जैसे- तीन, सात, ग्यारह। २ जिसके जोड़ का दूसरा न हो, अद्वितीय, बेजोड़।

ताक़त- स्त्री० (अ०) १ जोर, बल शक्ति, सामर्थ्य।

ताक़त-आजमाई- स्त्री० (अ०+फा०) शक्ति का प्रयोग

ताक़तवर- वि० (अ०+फा०) बलवान्, बलिष्ठ, शक्तिमान्।

ताक़ा- पुं० (अ० ताकः) कमड़े का थान।

ता-कि- अव्य (फा०) जिसमें, इसलिए कि, जिससे।

ताक़ी- वि० (अ० ताक़). कंजी आँखोंवाला, कंजा।

ताकीद- स्त्री० (अ० ताऽक़ीव) जोर के साथ किसी बात की या अनुरोध, खूब चेताकर कही हुई आज्ञा बात।

ताकीदन- क्रि० वि० (अ०) ताकीद के

साथ, आग्रहपूर्वक्।
ताकीदी- वि० (अ०) ताकीदका, जरूरी। जैसे- ताकीदी चिट्ठी। ताकीदी हुक्म।
ताखीर- स्त्री० (अ०) विलम्ब।
ताख्त- पुं० (फा०) सेना का आक्रमण। फौज की चढ़ाई। यौ०- ताख्त-व-ताराज= देश और प्रजा आदि का विनाश।
ताग़ी - वि० (अ०) विद्रोही।
ताचंद- क्रि० वि० (फा०) कब तक।
ताज - पुं० (अ०) १ बादशाह की टोपी, राजमुकुट। २ कलगी, तुर्रा। ३ पक्षियों के सिरकी चोटी, शिखा। ४ मकान के ऊपर शोभा के लिए बनाई हुई ताज के आकार की बुर्जी। ५ गंजीफे के एक रंग का नाम। ६ आगरे का ताजमहल।
ताज़गी- स्त्री० (फा०) ताज़ा होने का भाव, ताज़ापन।
ताजदार- पुं० (अ०+फा०) १ वह जिसके सिर पर ताज हो। २ बादशाह। सम्राट।
ताजवर- पुं० (फा०) (भाव० ताजवरी) राजा, बादशाह।
ताज़ा- वि० (फा० ताज़ः) १ जो सूखा या कुम्हलाया न हो, हरा-भरा, (फल आदि)। २ जिसे पेड़ से अलग हुए देर न हुई हो। ३ जो थका-माँदा न हो, स्वस्थ, प्रफुल्लित। यौ०- मोटाताज़ा= हृष्ट-पुष्ट। ४ तुरन्त का बना, सद्यः प्रस्तुत। ५ जो व्यवहार के लिये अभी निकाला गया हो। ६ जो बहुत दिनों का न हो।
ताज़ियत- स्त्री० (अ० तअजियत) १ मातम-पुरसी करना, मृतक सम्बन्धियों को सांत्वना देना। २ रोना-पीटना।
ताजियत-नामा- पुं० (अ० + फा०) शोक सूचक पत्र, मातम-पुरसी का खत।
ताज़िया- पुं० (अ० तअज़ियः) बाँस की कमचियों आदि का मक़बरे के आकार का मंडप जिसमें इमामहुसेन की कब्र होती है, मुहर्रम में शीया मुसलमान इसके सामने मातम करते और तब इसे दफन करते हैं।
ताज़ियादारी - स्त्री० (अ० + फा०) १ ताज़िए बनाने का काम। २ मुहर्रम में मातम करना।
ताज़ियाना- पुं० (फा० ताजियानः) १ चाबुक, कोड़ा। २ कोड़े लगाने की सजा।
ताजिर- पुं० (अ०) तिजारत करनेवाला, व्यापारी, सौदागर।
ताज़ी- पुं० (फा०) १ अरब देश का घोड़ा। २ अरब देश का कुत्ता। स्त्री० अरबी भाषा।
ताज़ीक- पुं० (फा०) संकर जाति का घोड़ा।
ताजी-खाना - पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ ताज़ी कुत्ते रखे जाते हों।
ताज़ीम- स्त्री० (तअज़ीम) बड़े के सामने उसके आदर के लिये उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि। यौ०- ताजीराते हिन्द= भारतीय दण्ड संहिता।
ताज़ीर - स्त्री० (अ०) दंड। सजा।
ताज़ीरी- वि० (अ०) दंड संबंधी, जैसे ताजीरी पुलिस।
ताज्जुब- पुं० दे० 'तअज्जुब'।
तातील- स्त्री० (अ० तअतील) छुट्टी का दिन।
तातीलात- स्त्री० (अ० तातील का बहु०) छुट्टियाँ।
तादाद- स्त्री० (अ० तअदाद) संख्या, गिनती।
तादीब- स्त्री० (अ०) १ दोप आदि दूर करके सुधारना। २ भाषा और साहित्य की शिक्षा।
तादीबखाना- पुं० (अ० + फा०) वह स्थान जहाँ किसी के दोपों का सुधार किया जाय।
ताना- पुं० (अ०) आक्षेप-वाक्य। व्यंग्य।
तानीस- स्त्री० (अ०) स्त्रीलिंगी।
ताफ्ता- पुं० (फा० ताफ्तः) एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।
ताब- स्त्री० (फा०) १ ताप, गरमी। २ चमक, आभा, दीप्ति। ३ शक्ति। सामर्थ्य। ४ मन को वश में रखने की शक्ति।
ताबईन - पुं० (अ० 'ताबऽ' का बहु०) १

आज्ञाकारी लोग। २ वे मुसलमान जिन्होंने मुहम्मद साहब के साथियों से भेंट की हो।
ताब-खाना- पुं० (फा०) १ हम्माम। २ रोटी पकाने का तन्दूर।
ताबदान- पुं० (फा०) १ खिड़की। २ रोशनदान।
ताबाँ- वि० दे० 'ताबान'।
ताबान- वि० (फा०) प्रकाशमान, चमकदार, चमकीला।
ताबिस्तान- पुं० (फा०) ग्रीष्म ऋतु, गरमी।
ताबीर- स्त्री० (अ० तअबीर) फल, विशेपतः स्वप्न आदि का शुभाशुभ फल।
ताबूत- पुं० (अ०) १ वह सन्दूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने को ले जाते हैं। २ हुसेन के मकबरे की वह प्रतिकृति जिसका मुसलमान लोग मुहर्रम में जलूस निकालते हैं।
ताबे- वि० (अ० ताबऽ) १ वशीभूत, अधीन, मातहत। २ आज्ञानुवर्ती, हुक्म का पावन्द।
ताबेदार- पुं० (अ०+फा०) (सं० ताबेदारी) आज्ञाकारी, हुक्म का पावन्द।
तामअ- वि० (अ०) तमअ या लालच करनेवाला, लालची, लोभी।
तामीर- स्त्री० (अ० तअमीर) (बहु० तामीरात) मकान बनाने का काम, भवन-निर्माण।
तामील- स्त्री० (अ० तअमील) (आज्ञा का) पालन।
ताम्मुल- पुं० (अ० तअम्मुल) १ सोच-विचार। २ आगापीछा, दुविधा, असमंजस। ३ निश्चयका अभाव, संदेह।
तायफ- पुं० (अ० ताहफ) १ चारों ओर घूमना, परिक्रमा। २ चौकीदारी।
तायफा- पुं० (अ० ताइफः) १ वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २ वेश्या। ३ यात्रीदल।
तायब- वि० (अ० ताइब) तौबा करनेवाला। स्त्री० (अ०) १ सहायता, मदद। २ समर्थन।

तायर- पुं० (अ०) (बहु० तयूर) १ वह जो उड़ता हो। २ पक्षी, चिड़िया।
तार - पुं० (फा० मि० सं० तार) १ सूत का डोरा। २ तपी हुई धातु को खींच और पीटकर बनाया हुआ तागा। मुहा०- तार तार करना= टुकड़े-टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। वि० अन्धकारपूर्ण, अँधेरा।
तारकश- पुं० (फा०) धातुका तार खींचनेवाला।
तारकशी - स्त्री० (फा०) धातु के तार बनाने के काम।
तारबरकी - पुं० (फा०) १ बिजली का वह तार जिसकी सहायता से समाचार भेजे जाते है। २ इस तारकी सहायता से आया हुआ समाचार।
ताराज - पुं० (फा०) १ लूटमार। २ विनाश, बरबादी।
तारिक- वि० (अ०) तर्क करने या छोड़नेवाला, त्यागी। यौ०- तारिक उद् दुनिया= संसार त्यागी।
तारी- वि० (अ०) प्रकट होना, जाहिर होना। २ ऊपर से आ पड़ना। २ आ घेरना, छाना। जैसे- खौफ तारी होना। स्त्री० (फा०) तारीकी।
तारीक- वि० (फा०) १ अन्धकारपूर्ण, अँधेरा। २ काला, स्याह।
तारीकी- पुं० (फा०) अन्धकार, अँधेरा।
तारीख- स्त्री० (अ०) १ महीने का हर एक दिन (२४ घंटे का) में तिथि। २ वह तिथि जिसमें पूर्वकाल के किसी वर्ष में कोई विशेष घटना हुई हो। ३ नियत तिथि, किसी काम के लिए ठहराया हुआ दिन। मुहा०- तारीख डालना= तारीख मुकर्रर करना, दिन नियत करना। ४ इतिहास।
तारीख-वार- क्रि० वि० (अ०) तारीखों के क्रम से, कालक्रम से।
तारीफ- स्त्री० (अ० तअरीफ) १ लक्षण, परिभापा। २ वर्णन, विवरण ३ बखान। प्रशंसा। ५ विशेपता, गुण, सिफत।
तारीफी- वि० (अ० तअरीफी) १ तारीफ

संबंधी। २ प्रशंसनीय।

तालअ- पुं० (अ०) भाग्य।

ताला - पुं० दे० 'तअला'।

तालाब - पुं० (फा०) जलाशय। सरोवर।

तालिब- वि० (अ०) (बहु० तुल्बा) १ ढूँढ़ने या तलाश करनेवाला। २ चाहनेवाला।

तालिब-इल्म- पुं० (अ०) (भाव० तालिब-इल्मी) विद्यार्थी।

तालीक़ा- पुं० (अ० तअलीकः मि० सं० तालिका) वस्तुओं या संपत्ति आदि की सूची।

तालीफ - स्त्री० (अ०) १ ग्रन्थ की रचना या संकलन। २ आकृष्ट करना, खींचना। जैसे- तालीफे-कुलूब= दूसरों के हृदयों को अपनी ओर आकृष्ट करना।

तालीम - स्त्री० (अ० तअलीम) अभयासार्थ उपदेश, शिक्षा। यौ०- ताली में निस्वाँ= स्त्री शिक्षा।

तालीम-याफ्ता- वि० (अ०) शिक्षित।

तालील- स्त्री० (अ० तअलील) १ व्याकरण में सन्धि के नियमों के अनुसार स्वरों का परिवर्त्तन। २ दलील पेश करना, कारण बतलाना।

ताले-वर- वि० (अ० तालअ + फा० वर) (सं० तालेवरी) धनी।

ताल्लुक़ - पुं० दे० 'ताअल्लुक़'।

तावान - पुं० (फा०) वह चीज जो नुकसान भरने के लिए दी या ली जाय, दंड, डाँड।

तावीज़ - पुं० (अ० तअवीज) १ यंत्र-मंत्र या कवच जो किसी संपुट के भीतर रखकर पहना जाय। २ धातु का चौकोर या अठ-पहला संपुट जिसे तागे में लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं, जन्तर।

तावील - स्त्री० (अ०) १ व्याख्या। २ किसी बात के विशेपतः स्वप्न आदि के शुभाशुभ फल कहना। ३ झूठी कैफियत, बहाना।

ताश - स्त्री० (अ० तास) १ एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा, जरबफ्त। २ खेलने के लिये मोटे कागज के चौखूँटे टुकड़े जिन पर रंगों की बूटियाँ या तस्वीरें बनी रहती हैं। ३ छोटी दफ्ती जिस पर सीने का तागा लपेटा रहता है।

ताशा- पुं० (अ० तासः) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।

तास- पुं० दे० 'ताश'।

तासा - पुं० दे० 'ताशा'।

तासीर - स्त्री० (अ०) असर, प्रभाव।

तास्सुफ - पुं० (अ० तअस्सुफ) अफसोस, खेद, दुःख।

तास्सुब- पुं० दे० 'तअस्सुब'।

तास्सुर - पुं० दे० 'तासीर'।

ताहम- अव्य० (फा०) तो भी, तिसपर भी, इतना होने पर भी।

ताहरी - स्त्री० दे० 'ताहिरी'।

ताहिर - वि० (अ०) शुद्ध, पवित्र।

ताहिरी- स्त्री० (अ०) एक प्रकार की खिचड़ी।

तिक्का- पुं० (फा० तिक्कः) १ मांस का टुकड़ा, बोटी। मुहा०- तिक्का-बोटी उड़ाना= १ टुकड़े-टुकड़े करना। २ बोटी-बोटी करना। पुं० (अ० तिक्कः) इज़ारबन्द।

तिगदौ - पुं० दे० 'तगबदौ'।

तिजारत- स्त्री० (अ०) व्यापार, रोज़गार।

तिजारती- वि० (अ०) तिजारत या रोजगार संबंधी।

तितिम्भा- पुं० (अ० तितिम्मः) परिशिष्ट।

तिफ्ल- पुं० (अ०) (बहु० अतफालः) बच्चा, बालक, लड़का।

तिफ्ली - स्त्री० (अ०) बचपन।

तिबाबत- स्त्री० (अ०) तबीब का काम या पेशा, चिकित्सा।

तिब्ब- स्त्री० (अ०) यूनानी चिकित्सा-शास्त्र।

तिब्बी- वि० (अ०) तिब्ब या यूनानी चिकित्सा संबंधी।

तिरयाक़- पुं० (अ० तिर्याक) १ ज़हर मोहरा जिससे साँप के विष का प्रभाव नष्ट

होता है। २ सब रोगों की रामबाण औपधि।
तिलिस्म- पुं० (अ० तिलिस्म यू० टेलिस्मा) १ जादू, इन्द्रजाल। २ अद्भुत या अलौकिक व्यापार, करामात।
तिलस्मी- वि० (अ० तिलिस्मी) तिलस्म सम्बन्धी।
तिलस्मात- पुं० (यू० टेलिस्मा) 'तिलस्म' का बहु०।
तिलस्मी- वि० (यू० टेलिस्मा) तिलस्म-संबंधी।
तिला- वि० (फा०) वह तेल जो नपुंसकता दूर करने के लिये इन्द्रिय पर मला जाता है। पुं० (अ०) सोना, स्वर्ण।
तिलाई- वि० (अ०) सोने का।
तिलाक़- पुं० दे० 'तलाक़'।
तिलाकारी- स्त्री० (अ०+फा०) सोने का मुलम्मा चढ़ाने का काम।
तिलादानी- स्त्री० (फा०) वह थैली जिसमें दर्जी या स्त्रियाँ सूई, तागा आदि रखती हों।
तिलावत - स्त्री० (अ०) कुरान का पाठ।
तिलिस्म- पुं० दे० 'तिलस्म'।
तिल्ला- पुं० (फा०) सोना।
तिश्नगी- स्त्री० (फा०) प्यास, पिपासा।
तिश्ना- पुं० (अ० तिश्नऽ) व्यंग्य, ताना। वि० (फा० तिश्नः) १ प्यासा। २ परम इच्छुक या उत्सुक।
तिहाल- स्त्री० (अ०) पेट के अन्दर की तिल्ली, प्लीहा।
तिही- वि० दे० 'तही'।
तीनत- स्त्री० (अ०) प्रकृति, स्वभाव, आदत। यौ०- बद-तीनत= दुष्ट स्वभाववाला।
तीमारदार- वि० (फा०) (सं० तीमारदारी) १ सहानुभूति रखने वाला। २ रोगी की सेवा-शुश्रूपा करने वाला।
तीरंदाज़- वि० (फा०) तीर चलाने वाला।
तीरंदाज़ी- स्त्री० (फा०) धनुष विद्या।
तीर - पुं० (फा०) बाण, शर। यौ०- तीर-ब-हदफ= ठीक निशाने पर, अचूक।
तीर-गर- वि० (फा०) (सं० तीरगरी) तीर बनाने वाला।
तीरगी- स्त्री० (फा०) अंधकार, अँधेरा।
तीरा- वि० (फा० तीरः) अंधकारपूर्ण, अँधेरा।
तीरादिल- वि० (फा०) कलुपित हृदय वाला।
तीरा-बख्त- वि० (फा०) अभाग्य।
तुंग - पुं० (फा०) अनाज आदि रखने का बोरा।
तुकमा - पुं० (तु० तुकमः) घुंडी फँसाने का फंदा, मुद्धी।
तुख्म - पुं० (फा०) बीज।
तुख्मा - पुं० (अ० तुख्मः) १ अपच, बदहज़मी। २ संग्रहणी रोग।
तुग़यानी - स्त्री० (अ० तुग्यानी) नदी आदि की बाढ़।
तुग़रा - पुं० (तु० तुग्रा) एक प्रकार की लेख-प्रणाली जिसके अक्षर पेचीले होते हैं।
तुग़लक- पुं० (अ० तुग्लक) सरदार।
तुज़ुक़- पुं० (अ०) १ शोभा, वैभव, शान। २ कानून, नियम। ३ आत्म-चरित्र (विशेपतः किसी बादशाह का लिखा हुआ आत्म-चरित्र)।
तुनक- वि० (फा०) १ दुर्बल, कमज़ोर। २ नांज़ुक, कोमल। ३ हलका, सूक्ष्म।
तुनक-मिजाज- वि० (फा०) (सं० तुनक-मिज़ाजी) बात-बात पर बिगड़ने या रंज होने वाला, चिड़चिड़ा।
तुनक-हवास- वि० (फा०) (सं० तुनक-हवासी) जिसके मन पर किसी बात का जल्दी प्रभाव पड़े।
तुन्द- वि० (फा०) १ तेज, तीक्ष्ण। २ उग्र, उत्कट। ३ भीपण, विकट। ४ कड़ुवा, कटु।
तुन्द-खू- वि० (फा०) जिसका स्वभाव उग्र हो, कड़े मिजाज का।
तुन्दबाद - स्त्री० (फा०) आँधी।
तुन्दी - स्त्री० (फा०) १ तेज़ी, तीक्ष्णता। २ उग्रता, उत्कटता। ३ विकटता।
तुपक - स्त्री० (तु०) तोप।
तुपकची - स्त्री० (फा०) तोप चलानेवाला.

तोपची।
तुफंग – स्त्री० (फा०) बन्दूक।
तुफंगची– पुं० (फा०) वह जो बन्दूक चलाता हो।
तुफ़– अव्य (फा०) थुड़ी है, लानत है, धिक्कार है।
तुफ़ूलियत– स्त्री० दे० 'तिफ्ली'।
तुफ़ैल – पुं० (अ०) साधन, द्वारा। मुहा०– किसी के तुफ़ैल से= किसी के द्वारा।
तुम-तराक – पुं० (फा०) १ तड़क-भड़क, शान-शौकत। २ ठसक, बनावट।
तुमन– पुं० (फा० तु० तमिनसे) १ भाईचारा। २ सेना। मुहा०– तुमन बाँधना= सेना एकत्र करना।
तुरंगबीन– पुं० दे० 'तुरंजबीन'।
तुरंज – पुं० (फा०) १ चकोतरा नीबू। २ बिजोरा नीबू। ३ वह बड़ा बूटा जो दुशाले आदि के कोनों पर होता है।
तुरंजबीन – पुं० (फा०) १ एक प्रकार की चीनी जो ऊँटकटारे के पौधों पर जमती है। २ नीबू के रस का शरबत।
तुरकी – स्त्री० दे० 'तुर्की'।
तुफरत-उल्-ऐन – पुं० (अ०) १ एक बार पलक झपकाना। २ उतना कम समय जितना एक बार पलक झपकाने में लगता है।
तुरफा– वि० (अ० तुर्फ़ः) (सं० तुर्फगी) अनोखा, विलक्षण।
तुरबत– स्त्री० (अ० तुर्बत) कब्र, समाधि।
तुराब – पुं० (अ०) १ जमीन। २ मिट्टी। मृत्तिका, खाक।
तुर्क – पुं० (तु०) १ तुर्किस्तान का निवासी। २ तुर्किस्तान देश।
तुर्कमान – पुं० (फा०) एक जाति का नाम। वि० तुर्की के समान वीर।
तुर्कसवार– पुं० (तु० + फा०) घुड़सवार, अश्वारोही।
तुर्की– स्त्री० (तु०) तुर्किस्तान की भाषा। मुहा०– तुर्की-ब-तुर्की जवाब देना= जैसे को तैसा उत्तर देना, पूरा-पूरा उत्तर देना। पुं० १ तुर्किस्तान का निवासी, तुर्क। २ तुर्किस्तान का घोड़ा।
तुर्रा– पुं० (अ० तुर्रः) १ घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो, काकुल। २ परका फूँदना जो पगड़ी में लगाया या खोंसा जाता है, कलगी, गोशवारा।
तुर्श – वि० (फा०) १ खट्टा, अम्ल। २ कठोर, कड़ा।
तुर्श-रू– वि० (फा०) कड़ी और अनुचित बातें कहने वाला। उग्र स्वभाव वाला।
तुर्श-रुई – स्त्री० (फा०) कठोर और अनुचित बातें कहना।
तुर्शी– स्त्री० (फा०) १ खट्टापन। २ व्यवहार आदि की कठोरता।
तुलबा– पुं० (अ०) १ 'तालिब' का बहु०। २ विद्यार्थी लोग।
तुलूअ – पुं० (अ०) सूर्य या किसी नक्षत्र का उदय होना।
तुहमत– स्त्री० (अ०) १ लांछन, कलंक। २ आरोप।
तूग़ – पुं० (तु०) सेना का झंडा और निशान।
तूज़ुक – पुं० दे० 'तुजुक'।
तूत – पुं० दे० 'शहतूत'।
तूतिया– पुं० (अ०) नीला-थोथा या तूतिया नाम का खनिज द्रव्य, तुत्थ।
तूती – स्त्री० (फा०) १ छोटी जाति का तोता। २ कनेरी नामकी छोटी सुन्दर चिड़िया। ३ मटमैले रंग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुन्दर बोलती है। मुहा०– किसी की तूती बोलना= किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना। नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है= भीड़-भाड़ या शोरगुल में कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती। बड़े आदमियों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता। ३ मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।
तूदा – पुं० (फा० तूदः) १ टीला, दूह। २ खेत की मेंड़। ३ ढेर, राशि। ४ सीमा का चिन्ह, हदबन्दी। ५ मिट्टी का वह टीला

जिसपर लोग निशाना लगाना सीखते हैं।

तूदा-बन्दी - स्त्री० (फा०) खेतों आदि की हद-बंदी करना।

तूफान - पुं० (अ०) १ डुबाने वाली बाढ़। २ ऐसा अंधड़ जिसमें खूब धूल उड़े, पानी बरसे तथा इसी प्रकार के और उत्पात हों, आँधी। ३ आपत्ति, आफत। ४ हल्लागुल्ला। ५ झगड़ा, बखेड़ा। ६ झूठा दोषारोपण, तोहमत। मुहा०- तूफान उठाना= झूठा अभियोग लगाना।

तूफानी - वि० (अ० तूफान) १ बखेड़ा करने वाला, उपद्रवी, फसादी। २ झूटा कलंक लगानेवाला। ३ उग्र, प्रचंड।

तूबा- पुं० (अ०) स्वर्ग का एक वृक्ष जिसके फल परम स्वादिष्ट माने जाते हैं।

तूमार- पुं० (अ०) १ बात का व्यर्थ विस्तार, बात का बतंगड़। यौ- तूमारे जमा= जमा बही।

तूर- पुं० (अ०) १ शाम देश का एक पर्वत। (कहते हैं कि इसी पर्वत पर हजरत मूसा को ईश्वरीय चमत्कार दिखाई पड़ा था।) २ सेना।

तूरा- पुं० दे० 'तोरा'।

तूरानी- वि० (फा०) तूरान देश का निवासी, तुर्क।

तूल- पुं० (अ०) लम्बाई, विस्तार। मुहा०- तूल खींचना या पकड़ना= बहुत बढ़ जाना, विस्तार का आधिक्य हो जाना। यौ०- तूल कलाम= लम्बी-चौड़ी बातें। २ कहा-सुनी, झगड़ा। तूल-तवील= लम्बा चौड़ा, विस्तृत।

तूलानी- वि० (अ०) लम्बा।

तुले-बलद- पुं० (अ०) भूगोल में देशान्तर।

तूस - पुं० (अ०) एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

तूसी- वि० (अ० तूस) भूरे रंग का (कपड़ा)।

तेग़ - स्त्री० (फा० तेगः) तलवार, खड्ग।

तेग़ा- पुं० (फा०) १ एक प्रकार की छोटी चौड़ी तलवार। २ मेहरवान। ३ कुश्ती एक का पेंच।

तेज़- वि० (फा०) १ तीक्ष्ण या पैनी धार वाला। २ जल्दी चलने वाला। ३ चटपट काम करनेवाला, फुरतीला। ४ तीक्ष्ण, धारदार। ५ मँहगा, गराँ। ६ उग्र, प्रचंड। ७ चटपट अधिक प्रभाव डालने वाला, तीव्र बुद्धि वाला।

तेज़दस्त- वि० (फा०) (सं० तेजदस्ती) जल्दी काम करने वाला, फुरतीला।

तेज़-मिज़ाज- वि० (फा०) (सं० तेज-मिजाजी) १ उग्र स्वभाव वाला। २ क्रोधी।

तेजरफ्तार- वि० (फा०) (सं० तेजरफ्तारी) तेज चलने वाला, शीघ्रगामी।

तेज़ी- स्त्री० (फा०) १ तेजता होने का भाव। २ तीव्रता, प्रवलता। ३ उग्रता, प्रचंडता। ४ शीघ्रता, जल्दी। ५ महँगी, मंदी का उलटा।

तेज़ाव- पुं० (फा०) औषध के काम के लिये किसी क्षार पदार्थ का तरल रूप में तैयार किया हुआ अम्ल-सार जो द्रावक होता है।

तेज़ी - स्त्री० (फा०) १ तेज होने की अवस्था या भाव। २ तीव्रता। ३ शीघ्रता।

तेशा- पुं० (फा० तेशः) वसूला नामक औज़ार।

तै- पुं० (अ०) १ निबटारा, फैसला। यौ०- तै तमाम= अन्त, समाप्ति। वि० १ पूरा करना, पूर्ति। २ जिसका निबटारा या फैसला हो चुका हो। ३ जो पूरा हो चुका हो। ४ जो पार किया जा चुका हो।

तैनात- वि० (अ० तअय्युनात) किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ, मुकर्रर, नियत, नियुक्त।

तैनाती- स्त्री० (अ० तअय्युनात) १ मुकर्ररी, नियुक्ति। २ किसी विशिष्ट कार्य के लिये रखे हुए पहरेदार सैनिक।

तैयार - वि० (अ०) १ जो काम में आने के लिये बिलकुल उपयुक्त हो गया हो, दुरुस्त, ठीक, लैस। मुहा०- हाथ तैयार होना=

कला आदि में हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना। २ उद्यत, तत्पर, मुस्तैद। ३ प्रस्तुत, उपस्थित, मौजूद। ४ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।

तैयारा- पुं० (अ० तैयारः) १ गुब्बारा। २ हवाई जहाज।

तैयारी- स्त्री० (अ० तैयार) १ तैयार होने की क्रिया या भाव, दुरुस्ती। २ तत्परता, मुस्तैदी। ३ शरीर की पुष्टता, मोटाई। ४ प्रबन्ध आदि के सम्बन्ध की धूमधाम। ५ सजावट।

तैर - पुं० (अ०) (बहु० तयूर) पक्षी, चिड़िया।

तैश- पुं० (अ०) आवेश, क्रोध।

ताज़- वि० (फा०) ढूँढने वाला।

तोता - पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध पक्षी, कीर, सूआ।

तोदरा- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का कँटीला पौधा जिसके बीज दवा के काम में आते हैं।

तोदा - पुं० दे० 'तूदा'।

तोप - स्त्री० (तु०) एक प्रकार का बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः दो या चार पहियों की गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाये जाते हैं। मुहा०- तोप कीलना= तोप की नाली में लकड़ी का कुंदा खूब कसकर ठोंक देना जिसमें उसमें से गोला न चलाया जा सके। तोप की सलामी उतारना= किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर अथवा किसी महत्वपूर्ण घटना के समय बिना गोले के बारुद भरकर शब्द करना।

तोपखाना- पुं० (तु० + फा० खानः) १ वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो। २ युद्ध के लिये सुसज्जित चार से आठ तोपों तक का समूह।

तोपची- पुं० (तु० तोप + ची प्रत्य०) तोप चलाने वाला, गोलंदाज।

तोबरा- पुं० (फा० तोबरः) वह थैली जिसमें से घोड़ा दाना खाता है।

तोबा- स्त्री० (फा० तौबः) किसी अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की शपथ पूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा। मुहा०- तोबा तिल्ला करना या मचाना= रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना। तोबा बोलना= पूर्ण रूप से परास्त करना।

तोरा- पुं० (तु० तोरः) १ वह थाल जिसमें तरह-तरह के गोश्तों की थालियाँ रखकर विवाह के अवसर पर भेंट रूप में देते हैं। २ अभिमान, घमंड। ३ वे सामाजिक नियम आदि जो चंगेजखाँ ने प्रचलित किये थे।

तोला - पुं० (फा०) पिल्ला।

तोश- पुं० (तु०) १ छाती, सीना। २ शारीरिक बल। यौ०- तन व तोश= शरीर का बड़ा आकार और बल।

तोशक- स्त्री० (फा०) खोल में रुई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना, हल्का गद्दा।

तोशदान- पुं० (फा०) १ वह थैला जिसमें यात्रा के लिये भोजन आदि रखते हैं। २ कारतूस रखने की सिपाहियों की पेटी।

तोशा- पुं० (फा० तोशः) १ वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिये अपने साथ रख लेता है, पाथेय, कलेवा। २ साधारण खाने-पीने की चीज।

तोशाखाना- पुं० (तु० तोशः + फा० खानः) वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े, गहने आदि रहते हैं।

तोहफगी- स्त्री० (अ० तुहफः से फा०) उत्तमता, अच्छापन।

तोहफा - स्त्री० (अ० तुहफः) (बहु० तहायफ़) सौगात, उपहार। वि० अच्छा, उत्तम, बढ़िया।

तोहमत - स्त्री० (अ० तुहमत) वृथा लगाया हुआ दोष, झूठा कलंक।

तोहमती- वि० (अ० तुहमत) दूसरों पर तोहमत या कलंक लगाने वाला।

तौ- पुं० (फा०) परत, तह।

तौअन-व-करहन- क्रि० वि० (अ०) १

आज्ञापालन-पूर्वक। २ बहुत ही कठिनता से, विवश होकर।

तौअम- पुं० (अ०) १ एक ही गर्भ से एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बच्चे, यमज, जुड़वाँ। २ मिथुन राशि।

तौक़- पुं० (अ०) १ हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक गहना। २ इसी आकार की बहुत भारी वृत्ताकार पटरी या मँडरा जिसे अपराधी या पागल के गले में पहना देते हैं। ३ इसी आकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो पक्षियों आदि के गले में होता है, हँसुली। ४ पट्टा, चपरास। ५ कोई गोल घेरा या पदार्थ।

तौक़ीर- स्त्री० (अ०) आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा।

तौज़ीअ- स्त्री० (अ०) हिसाब का चिट्ठा, खर्रा।

तौफीक- स्त्री० (अ०) १ ईश्वर की कृपा। २ श्रद्धा, भक्ति। ३ सामर्थ्य, शक्ति।

तौफीर- स्त्री० (अ०) मुनाफा।

तौबा- स्त्री० दे० 'तोबा'।

तौर- पुं० (अ०) १ चाल-ढाल, चाल-चलन। २ हालत, दशा, अवस्था। ३ तरीक़ा, तर्ज, ढंग। ४ प्रकार, भाँति, तरह। मुहा०- तौर-बे-तौर होना= १ बुरे लक्षण उत्पन्न होना। २ अवस्था खराब होना।

तौर-तरीक़ा- पुं० (अ०) रंग-ढंग, चाल-ढाल।

तौरात- पुं० दे० 'तौरेत'।

तौरेत - पुं० (इब्रा०) यहूदियों का प्रधान धर्म-ग्रन्थ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था।

तौसन - पुं० (फा०) घोड़ा।

तौसीअ- स्त्री० (अ०) वसीअ होना या करना, प्रशस्तता, फैलाव।

तौसीफ- स्त्री० (अ०) वस्फ वतलाना, व्याख्या करना।

तौहीद - स्त्री० (अ०) १ यह मानना कि एक ही ईश्वर है। २ एकेश्वरवाद।

तौहीन - स्त्री० (अ०) अप्रतिष्ठा, अपमान, बेइज्जती।

तौहीनी- स्त्री० दे० 'तौहीन'।

(थ)

थानाजात - पुं० (हिं०+फा०) थाने।

(द)

दंग- वि० (फा०) विस्मित, चकित, आश्चर्यान्वित, स्तब्ध।

दंगल - पुं० (फा०) १ पहलवानों की वह कुश्ती जो जोड़ बदकर हो और जिसमें जीतने वाले को इनाम आदि मिले। २ अखाड़ा, मल्ल-युद्धका स्थान। ३ जमावड़ा, समूह, जमात, दल। ४ बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

दंगा- पुं० (फा० दंगल) १ झगड़ा, बखेड़ा, उपद्रव। २ गुल-गपाड़ा, हुल्लड़, शोरगुल।

दकायक - स्त्री० (अ० दकीक का बहु०) सूक्ष्मताएँ।

दक़ियानूस- पुं० (अ०) फारस और अरब का एक पुराना बादशाह जो बहुत बड़ा अत्याचारी था। वि० १ पुराना, प्राचीन । २ बहुत वृद्ध, बुड्ढा।

दकियानूसी- वि० (अ०) अत्यन्त प्राचीन। बहुत पुराना।

दक़ीक़- वि० (अ०) (बहु० दक़ायक़) १ बारीक, महीन। २ नाजुक, कोमल। ३ मुश्किल, कठिन।

दक़ीका- पुं० (अ० दक़ीकः) १ बारीकी, सूक्ष्मता। २ कठिनता, विपत्ति, कष्ट। मुहा०- दक़ीका बाकी न रखना= कोई परिश्रम या प्रयत्न बाकी न रखना, सब कुछ कर गुजरना। ३ क्षण, पल।

दक़ीक़ा-रस- वि० (अ०+फा०) (सं० दक़ीक़ा-रसी) वारीक बातें देखनेवाला, सूक्ष्मदर्शी।

दखल - पुं० (अ० दख्ल) १ अधिकार, कब्जा। २ हस्तक्षेप, हाथ डालना। ३ पहुँच, प्रवेश।

दखलअंदाजी - स्त्री० (फा० दख्लअंदाजी) हस्तक्षेप।

दखलनामा - पुं० (अ० + फा०) वह पत्र

जिसमें यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को अमुक जमीन आदि का दखल दिया गया।

दखलयाबी - स्त्री० (अ० दख्ल + फा० याबी) दखल या अधिकार पाना।

दखील- वि० (अ०) जिसका दखल या कब्जा हो, अधिकार रखने वाला।

दखीलकार - पुं० (अ० + फा०) वह आदमी जिसने किसी जमींदार के खेत या जमीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दखल रक्खा हो।

दखीलकारी- स्त्री० (अ० + फा०) १ दखीलकार का भाव। २ जमींदार का वह खेत या ज़मीन जिस पर किसी असामी का कम से कम बारह वर्ष तक दखल रहा हो।

दखूल - पुं० (अ०) दाखिल होना, अन्दर जाना, प्रवेश।

दख्ल- पुं०. (अ०) कब्जा, अधिकार, दखल।

दग़दग़ा- पुं० (अ० दग़दग़ः) १ डर, भय। २ संदेश। ३ एक प्रकार की कंडील।

दग़ल- पुं० (अ०) १ छल, कपट, फरेब। २ हीला, बहाना। यौ०- दग़ल-फसल= छल-कपट। वि० दग़ाबाज, कपटी।

दग़ा - स्त्री० (अ०) छल-कपट, धोखा।

दग़ादार- वि० दे० 'दगाबाज'।

दग़ाबाज़ - वि० (फा०) धोखा देनेवाला, छली, कपटी।

दग़ाबाज़ी- स्त्री० (फा०) छल।

दज्जाल - पुं० (अ०) १ मुसलमानों के अनुसार एक काना, बहुत बड़ा काफिर जो दजला नदी से उत्पन्न होकर सारे संसार को अपने वश में कर लेगा और अन्त में मारा जायगा। २ काना, एकाक्ष। ३ दुष्ट, पाजी।

ददा- स्त्री० (तु० ददह या ददक) बच्चों का पालन-पोषण करनेवाली नौकरानी, दाई।

दन्दाँ - पुं० (फा० मि० सं० दन्त) दाँत, दन्त।

दन्दाँशिकन- वि० (फा०) १ दाँत तोड़नेवाला। २ बहुत उग्र या कड़ा। जैसे- दन्दाँशिकन जवाब।

दन्दाना- पुं० (फा० दन्दान वि० दन्दानादार) दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तु, दाँता। जैसे- आरे या कंघी का दन्दाना।

दंदादराज़ - वि० (फा०) लालची, लोभी।

दंदासाज- पुं० (फा०) दाँत का डाक्टर, दंतकार।

दफ - स्त्री० (फा०) डफ नामका बाजा। पुं० १ जहर, विष। २ जोश, आवेग। ३ क्रोध, गुस्सा। ४ तेजी, उग्रता।

दफअतन- क्रि० वि० (अ०) अचानक, सहसा, एकाएक।

दफ्तर - पुं० दे० 'दफ्तर'।

दफ्ती - स्त्री० (अ० दफ्ती) काग़ज़ के कई तख्तों को एक में सटाकर बनाया हुआ गत्ता, कुट, बसली।

दफन - पुं० (अ०) किसी चीज को विशेषतः मुरदे को जमीन में गाड़ने की क्रिया।

दफा - स्त्री० (अ० दफS) १ बार, बेर। २ किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के सम्बन्ध में व्यवस्था हो, धारा। मुहा०- दफा लगाना= अभियुक्त पर किसी दफा के नियमों को घटाना। पुं० (अ० दफS) दूर करना,। हटाना। यौ०- रफा-दफा करना= विवाद आदि मिटाना।

दफात- स्त्री० (अ० दफा का बहु०) धाराएँ।

दफातन- क्रि० वि० (अ०) अचानक, अकस्मात्।

दफातर- पुं० (अ०) 'दफ्तर' का बहु०।

दफादार- पुं० (अ० + फा०) फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

दफान - पुं० (अ० दफS) दूर होना, अलग होना, हटना।

दफायन - पुं० (अ०) 'दफीना' का बहु०।

दफाली - पुं० (फा०) डफला, ताशा, ढोल आदि बजाने वाला।

दफीना - पुं० (अ० दफीनः) (बहु० दफायन) गड़ा हुआ धन या खजाना।

दफैया - पुं० (अ० दफैयऽ) १ दफा या दूर करने की क्रिया। २ दफा या दूर करने की युक्ति। ३ दफा या दूर करने वाली वस्तु।

दफ्तर - पुं० (फा०) १ वह स्थान जहाँ किसी कारखाने आदि के सबंध की कुछ लिखा-पढ़ी और लेन-देन आदि हो, आफिस, कार्यालय। २ लम्बी-चौड़ी चिट्ठी। ३ सविस्तर वृत्तांत, चिट्ठा।

दफ्तर-निगार - पुं० (अ० + फा०) दफ्तर में काम करने वाले कर्मचारी, लिपिक, क्लर्क।

दफ्तरी- पुं० (फा०) १ वह कर्मचारी जो दफ्तर के काग़ज़ आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर लकीरें खींचता हो। २ कितावों की जिल्द बाँधने वाला, जिल्दसाज, जिल्दवंद।

दफ्ती- स्त्री० दे० 'दफती'।

दफ्तीन- स्त्री० (अ०) दफती।

दवदवा - पुं० (अ० दबदबः) रोब-दाब, आतंक।

दबिस्ताँ - पुं० (फा०) पाठशाला, मकतब।

दबीज़- वि० (फा०) जिसका दल मोटा हो, गाढ़ा, संगीन।

दबीर - पुं० (फा०) लिखनेवाला, लेखक।

दबूर - स्त्री० (अ०) पश्चिम की हवा।

दम - पुं० (फा०) १ साँस, श्वास। मुहा०- दम अटकना या उखड़ना= साँस रुकना, विशेपतः मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना= १ चुप रह जाना। २ साँस ऊपर चढ़ना। दम घोंटकर मारना= १ गला दवाकर मारना। २ बहुत कष्ट देना। दम तोड़ना= अंतिम साँस लेना। दम फूलना= १ अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी-जल्दी चलना, हाँफना। २ दमे के रोग का दौरा होना। दम मारना= १ किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमान पूर्वक उसका वर्णन करना। २ परिश्रम के कारण थक जाना। दम मारना= १ विश्राम करना, सुस्ताना। २ बोलना, कुछ कहना, चूँ करना। दम लेना= विश्राम करना, सुस्ताना। दम साधना= १ श्वास की गति को रोकना। २ चुप होना, मौन रहना। ३ नशे आदि के लिये साँस के साथ धूआँ खींचने की क्रिया। मुहा०- दम मारना या लगाना= गाँजा आदि को चिलम पर रखकर उसका धूआँ खींचना। ४ साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूँकने की क्रिया। ५ उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है, लहमा, पल। मुहा०- दम के दम= क्षण भर, थोड़ी देर। दम पर दम= थोड़ी-थोड़ी देर पर। ६ प्राण, जान, जी। मुहा०- दम खुश्क होना= दे० 'दम सूखना'। दम नाक में या नाक में दम आना= बहुत तंग या परेशान होना। दम निकलना= मृत्यु होना, मरना। दम सूखना= बहुत डर के कारण साँस तक न लेना, प्राण सूखना। ७ शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाये रखता और काम देता है, जीवनी-शक्ति। ८ व्यक्तित्व। मुहा०- (किसी का) दम ग़नीमत होना= (किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ अच्छी बातों का होते रहना। ९ खाद्य पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका मुँह बन्द करके आग पर पकाने की क्रिया। १० धोखा, छल, फरेब। यौ०- दमझाँसा= छलकपट। दमदिलासा या दमपट्टी= वह बात जो केवल फुसलाने के लिये कही जाय, झूठी आशा। मुहा०- दम देना= बहकाना, धोखा देना। ११ तलवार या छुरी आदि की धार।

दमकदम- पुं० (फा०) जीवन और अस्तित्व।

दमखम- पुं० (फा०) १ दृढ़ता। २ जीवनी-शक्ति, प्राण। ३ तलवार की धार

और उसका झुकाव।

दमदमा – पुं० (फा० दमदमः) वह किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भरकर की जाती है, मोरचा, धुस।

दमदार – वि० (फा०) १ जिसमें जीवनी शक्ति यथेष्ट हो, २ दृढ़, मजबूत। ३ जिसमें दम या श्वास अधिक समय तक रुके। ४ जिसकी धार तेज़ हो, चोखा।

दम-दिलासा – पुं० (फा० + हिं०) टालने के लिये की जाने वाली खाली बातें।

दमपुख्त- वि० (फा०) जो बरतनका मुँह बन्द करके आग पर पकाया गया हो।

दम-ब-खुद- वि० (फा०) जो आश्चर्य, दुःख आदि के कारण बोल न सके। बिलकुल चुप, सन्न।

दम-ब-दम- क्रि० वि० (फा०) १ बहुत थोड़ी-थोड़ी देर पर, घड़ी घड़ी। २ हरदम।

दमबाज़- वि० (फा०) (सं० दमबाजी) दम देने वाला, फुसलाने वाला।

दमवी- वि० (फा०) दम या खूनसे सम्बन्ध रखने वाला, खूनी।

दमसाज़- वि० (फा०) (सं० दमसाज़ी) घनिष्ठ मित्र, दिली दोस्त।

दमा- वि० (फा० दमः) एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेने में बहुत कष्ट होता हो, खाँसी आती है और कफ बड़ी कठिनता से निकलता है, साँस, श्वास।

दमामा – पुं० (फा० दमामः) नगाड़ा, डंका।

दमी- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का छोटा हुक्का।

दमीम- वि० (अ०) बदशक्ल, भोंड़ा।

दमेनक्द – क्रि/ वि० (फा०) बिना किसी को साथ लिये, अकेले।

दयानत – स्त्री० (अ० दियानत) सत्यनिष्ठा, ईमान।

दयानतदार- पुं० (अ० + फा०) ईमानदार, सच्चा।

दयानतदारी – स्त्री० (अ० + फा०) सत्यनिष्ठा, ईमानदारी।

दयार – पुं० (अ० दियार) प्रवेश।

दर – पुं० (फा०) दरवाजा, द्वार। मुहा०- दर दर या दर बदर मारा फिरना= दुर्दशा-ग्रस्त होकर घूमना। अव्य० (फा०) में अन्दर।

दर-अन्दाज- पुं० (फा०) दो आदमियों में लड़ाई कराना।

दर-अन्दाज़ी – स्त्री० (फा०) दो आदमियों में लड़ाई कराना।

दरअस्ल- क्रि० वि० (फा० + अ०) वस्तुतः, वास्तव में।

दर-आमद- स्त्री० (फा०) १ अन्दर आने की क्रिया, आगमन। २ विदेश से मालका आना, आयात।

दरकार- वि० (फा०) आवश्यक, अपेक्षित। स्त्री० आवश्यकता।

दरकिनार- क्रि० वि० (फा०) एक तरफ, दूर, अलग। जैसे- देना-दिलाना तो दर-किनार, उन्होंने सीधी तरह से बात भी नहीं की।

दरखशाँ – वि० (फा०) चमकता हुआ, चमकीला।

दरखास्त – स्त्री० (फा० दरख्वास्त) १ किसी बात के लिये प्रार्थना, निवेदन। २ प्रार्थना पत्र, निवेदन-पत्र।

दरखास्त-कुनिन्दा- पुं० (फा० दरख्वास्तकुनिंदा) दरख्वास्त देने वाला, निवेदक, प्रार्थी।

दरख्त – पुं० (फा०) वृक्ष, पेड़।

दरख्वास्त – स्त्री० दे० 'दरखास्त'।

दरगाह – स्त्री० (फा०) १ चौखट, देहरी। २ दरबार, कचहरी। ३ किसी सिद्ध पुरुषका समाधि-स्थान, मकबरा।

दरगुज़र – स्त्री० (फा०) १ अनदेखी। २ क्षमा।

दरगोर- वि (फा०) कब्र में, कब्र में जाय। (अव्य० – जहन्नुम में जाय)। दूर हो।

दरज- वि० दे० 'दर्ज'।

दरज़ – स्त्री० दे० 'दर्ज़'।

दरजा – पुं० दे० 'दर्जा'।

दरजात – पुं० दे० 'दर्जात'।

दरद - पुं० दे० 'दर्द'।
दरदामन - पुं० (फा०) १ दामन। २ सदरी पर बनाये जाने वाले बेल-बूटे।
दर-परदा- वि० (फा०) १ परदे में। २ छिपकर, गुप्त रूप से।
दर-पेश- क्रि० वि० (फा०) आगे, सामने। वि० प्रस्तुत।
दरपेशी- स्त्री० (फा०) प्रस्तुतीकरण।
दर-पै- क्रि० वि० (फा०) किसी के पीछे, किसी की तलाश में। मुहा०- किसी के दर पै होना= किसी के पीछे पड़ना, किसी को तंग करने की घात में रहना।
दरबदर- क्रि० वि० (फा०) एक दर से दूसरे दर, घर-घर, गली-गली।
दर-बन्द- पुं० (फा०) १ किला। २ दरवाजा। ३ पुल, सेतु।
दरबहिश्त- स्त्री० (फा०) एक प्रकार की मिठाई।
दरबा - पुं० (फा० दर) कबूतरों और मुरगों के रहने का खानेदार सन्दूक, काबुक।
दरबान - पुं० (फा०) द्वारपाल।
दरबानी - स्त्री० (फा०) दरबान का काम या पद।
दरबाब -अव्य० (फा०) बारे में, विषय में।
दरबार - पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहिबों के साथ बैठते हैं। राजसभा। मुहा०- दरबार खुलना= दरबार में जाने की आज्ञा मिलना, दरबार बन्द होना= दरबार में जाने की रोक होना। ३ महाराज, राजा, (रजवाड़ों में)। ४ दरवाजा, द्वार।
दरबार-आम - पुं० (फा० + अ०) बादशाहों आदि का वह दरबार जिसमें साधारणतः सब लोग सम्मिलित होते हों।
दरबारखास- पुं० (फा०+अ०) बादशाहों आदि का वह दरबार जिसमें केवल विशिष्ट लोग ही रहते हैं।
दरबार-दारी - स्त्री० (फा०) किसी के यहाँ बार-बार जाकर बैठना और खुशामद करना।
दरबारी - स्त्री० (फा०) दरबार में बैठने वाला आदमी।
दरमाँदगी - स्त्री० (फा०) १ लाचारी, विवशता। २ विपत्ति।
दरमाँदा - वि० (फा० दरमान्दह) १ थका हुआ, शिथिल। २ जिसके पास कोई साधन न हो।
दरमान- पुं० (फा०) १ चिकित्सा, इलाज। २ औषध।
दरमाहा- पुं० (फा०) मासिक वेतन, तनख्वाह।
दरमियान - पुं० (फा०) मध्य।
दरमियानी- वि० (फा०) बीच का। पुं० दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटारा करने वाला।
दरयाफ्त - स्त्री० (फा०) पूछताछ, जाँच।
दरवाज़ा - पुं० (फा० दरवाजः) १ द्वार, मुहाना। २ किवाड़।
दरवेज़ा - पुं० (फा० दरवेज़) भिक्षावृत्ति।
दरवेश - पुं० (फा०) फक़ीर, भिक्षुक।
दरवेशाना - वि० (फा० दरवेशानः) फक़ीरों का-सा।
दरवेशी - स्त्री० (फा०) फकीरी।
दर-सूरत - क्रि० वि० (फा० + अ०) सूरत में, अवस्था में, दशा में।
दर-हकीक़त- क्रि० वि० (फा० + अ०) वास्तव में, सचमुच।
दरहम- वि० (फा०) तितर-बितर, अव्यवस्थित। यौ०- दरहम-बरहम= १ उलट-पुलट, तितर-बितर, विनष्ट। २ क्रुद्ध, नाराज।
दरा- पुं० दे० 'दर्रा'।
दराज़- वि० (फा०) लम्बा, विस्तृत।
दराज़-दस्त- वि० (फा०) (सं० दराजदस्ती) दराज का भाव, लम्बाई।
दरामद- स्त्री० (फा०) आयात, विदेश से आया हुआ माल।
दरिन्दा - पुं० (फा० दरिन्दः) फाड़ खाने वाला जानवर।

दरिया- पुं० (फा० दर्या) १ नदी। २ समुद्र, सिंधु।
दरियाई- वि० (फा० दर्याई) १ नदी, संबंधी। २ समुद्र-संबंधी, समुद्री। स्त्री० १ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २ पतंग या गुड्डी को दूर ले जाकर हवा में छोड़ना।
दरियाई घोड़ा - पुं० (फ़ा० दर्याई + हिं०) गैंडे की तरह का एक जानवर जो अफ्रीका में नदियों के किनारे रहता है।
दरियाई नारियल - पुं० (फ़ा० + हिं०) एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का वह पात्र बनता है जिसे संन्यासी या फ़क़ीर अपने पास रखते हैं।
दरियाए शोर- पुं० (फा०) १ समुद्र। २ कालापानी।
दरिया-दिल- वि० (फा०) (सं० दरियादिली) १ उदार । २ दाता।
दरियाफ्त- वि० (फा०) जिसका पता लगा हो, ज्ञात, मालूम।
दरियावरापद- स्त्री० (फा०) वह जमीन जो नदी के पीछे हट जाने से निकल आई हो, गंगबरार।
दरिया-बुर्द - स्त्री० (फा०) वह जमीन जो नदी के बढ़ने के कारण कट या बह गई हो, गंग-शिकस्त।
दरी-खाना- पुं० (फा०) १ वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों, बारहदरी। २ बादशाही दरबार।
दरीचा- पुं० (फा० दरीचः) १ खिड़की, झरोखा। २ खिड़की के पास बैठने की जगह।
दरीदा- वि० (फा० दरीदः) फटा हुआ। यौ०- दरीदा-दहन= निःसंकोच होकर बुरी बातें कहने वाला, मुँह-फट।
दरीबा- पुं० (फा० दर) पानका बाजार या सट्टी।
दरूद- स्त्री० दे० 'दुरूद'।
दरेग़ - स्त्री० (फा०) १ दुःख, रंज। २ पश्चात्ताप। ३ कर्म।
दरेज़ - स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी छपी मलमल या छींट।
दरोग़ - पुं० (फा०) झूठ।
दरोग़गो- वि० (फा०) (सं० दरोग़गोई) झूठ बोलने वाला।
दरोग़गोई - स्त्री० (फा०) असत्य कथन, झूठ बोलना।
दरोग़हलफी - पुं० (फा०) हलफ़ लेकर या कसम खाकर भी झूठ बोलना। (विशेषतः न्यायालय में।)
दरोग़ा - पुं० (फा०) थाने का अधिकारी।
दरो-बस्त- वि० (फा० दर व बस्त) कुल, पूरा, सब।
दर्क - पुं० (अ०) १ ज्ञान। २ समझ। ३ दखल, हस्तक्षेप।
दर्ज- वि० (फा०) काग़ज पर लिखा हुआ, लिखित।
दर्ज़ - स्त्री० (फा०) दरार, शिगाफ, झरी।
दर्ज़ा - पुं० (अ० दर्जः) १ ऊँचाई-नीचाई के क्रम के विचार से निश्चित स्थान,श्रेणी, कोटि, वर्ग। २ पढ़ाई के क्रम में ऊँचा- नीचा स्थान, श्रेणी, कोटि, वर्ग। ३ पद, ओहदा। ४ किसी वस्तु का वह विभाग जो ऊपर-नीचे के क्रम से हो, खंड। क्रि० वि० गुणित, गुना।
दर्जात - पुं० (अ०) 'दर्जा' का बहु०।
दर्जावार- क्रि० वि० (अ०+फा०) दर्जे के मुताबिक़, सिलसिलेवार।
दर्ज़ी- पुं० (फा०) १ वह पुरुष जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे। २ कपड़ा सीने वाली जाति का पुरुष।
दर्द- पुं० (फा०) १ पीड़ा, व्यथा, तकलीफ। २ दया, करुणा।
दर्दअंगेज़- वि० दे० 'दर्दनाक'।
दर्दअफ़ज़ा- वि० (फा०) दर्द बढ़ाने वाला।
दर्दआमेज़- वि० दे० 'दर्दनाक'।
दर्दनाक- वि० (फा०) जिसे देख या सुन कर मन में दर्द या करुणा उत्पन्न हो, करुणाजनक।
दर्दमन्द- वि० (फा०) १ दुःखी, पीड़ित। २ सहानुभूति रखने वाला, दर्दशरीक। ३

दयालु, कोमल-हृदय।

दर्दमन्दी- स्त्री० (फा०) दूसरे की विपत्ति में होने वाली सहानुभूति, हमदर्दी।

दर्दशरीक- वि० (फा०) विपत्ति के समय साथ देने और सहानुभूति दिखाने वाला, हमदर्द।

दर्देज़ह- पुं० (फा०) प्रसव की पीड़ा।

दर्देदिल- पुं० (फा०) हृदय की वेदना।

दर्देसर- पुं० (फा०) १ सिर की पीड़ा। २ कठिनाई या दिक्कत का काम।

दर्देसरी- स्त्री० (फा०) कठिनता, दिक्कत, जहमत।

दर्रा- पुं० (फा० दर्रः) पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग, घाटी।

दर्स- पुं० (अ०) (वि० दर्सी) १ पढ़ना, अध्ययन। यौ०- दर्स व तदरीस= पढ़ना-पढ़ाना। २ वह जो कुछ पढ़ा जाय, पाठ। ३ उपदेश, नसीहत।

दलायल- स्त्री० (अ०) 'दलील' का बहु०।

दलाल- पुं० (अ० दल्लाल) १ वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने-बेचने में सहायता दे, मध्यस्थ। २ कुटना।

दलालत- स्त्री० (अ०) १ रास्ता बतलाना। २ चिह्न, पता। ३ दलील, तर्क। ४ रोब-दाब, शोभा, शान।

दलाली- स्त्री० (अ० दल्लाली) दलाल का काम। २ वह द्रव्य जो दलाल को मिलता है।

दलील- स्त्री० (अ०) १ तर्क, युक्ति। २ बहस, वाद-विवाद।

दल्क़- स्त्री० (अ०) फकीरों के पहनने की गुदड़ी।

दल्क़पोष- वि० (अ०+फा०) (सं० दल्क़ पोशी) दल्क या गुदड़ी पहनने वाला फ़क़ीर।

दल्लाल- पुं० दे० 'दलाल'।

दल्लाला- स्त्री० (अ० दल्लालः) १ दलाल स्त्री०। २ कुटनी, दूती।

दल्व- पुं० (अ०) ज्योतिष में कुम्भ राशि।

दवा- स्त्री० (अ०) १ वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो, औषध। २ रोग दूर करने का उपाय, उपचार, चिकित्सा। ३ दूर करने की युक्ति। मिटाने का उपाय। ४ दुरुस्त करने की तदबीर।

दवाखाना- पुं० (अ + फा०) १ वह जगह जहाँ दवा मिलती हो। २ औषधालय।

दवात- स्त्री० (अ०) लिखने की स्याही रखने का बरतन, मसि-पात्र।

दवाम- पुं० (अ०) सदा का भाव, हमेशगी। क्रि० वि० हमेशा, सदा, नित्य।

दवामी- वि० (अ०) जो चिरकाल तक के लिये हो, स्थायी।

दवामी-बन्दोबस्त- पुं० (अ० + फा०) ज़मीन का वह बन्दोबस्त जिसमें सरकारी माल-गुजारी एक ही बार सदा के लिये मुक़र्रर हो।

दवायर- पुं० (अ०) 'दायरा' का बहु०।

दश्त- पुं० (फा०) (वि० दश्ती) जंगल।

दश्त-नवर्दी- स्त्री० (फा०) जंगलों और उजाड़ जगहों में मारा-मारा फिरना।

दस्त- पुं० (फा० मि० सं० हस्त) १ पतला पाखाना, विरेचन। २ हाथ।

दस्त-अंदाज- वि० (अ०) हस्तक्षेप करने वाला।

दस्तअंदाजी- स्त्री० (फा०) हस्तक्षेप।

दस्तआमेज़- स्त्री० (फा०) हाथों पर सधाया हुआ, पालतू (पशु-पक्षी आदि)।

दस्तक- स्त्री० (फा०) १ हाथ से खट-खट शब्द करने या खट-खटाने की क्रिया। २ बुलाने के लिये दरवाजे की कुंडी खट-खटाने की क्रिया। ३ माल-गुज़ारी वसूल करने के लिये गिरफ्तारी या वसूली का परवाना। ४ माल आदि ले जाने का परवाना। ५ कर, महसूल।

दस्तक़लम- वि० (फा०+अ०) पढ़ा-लिखा, शिक्षित।

दस्तकार- पुं० (फा०) (सं० दस्तकारी) हाथ से कारीगरी का काम करने वाला आदमी।

दस्तकारी- स्त्री० (फा०) हाथ की

कारीगरी, शिल्प।

दस्तकी- स्त्री० (फा०) १ वह छोटी बही या कापी जो याददाश्त लिखने के लिए हर-दम पास रहे। २ वह दस्ताना जो शिकारी पक्षी पालने वाले हाथ में पहनते हैं।

दस्तखत- पुं० (फा०) अपने हाथ का लिखा हुआ अपना नाम।

दस्तखती- वि० (फा०) १ हाथ का लिखा हुआ। २ हस्ताक्षर किया हुआ, हस्ताक्षरित।

दस्त-गरदाँ- वि० (फा०) १ फेरी वाले से खरीदा हुआ (पदार्थ)। २ हाथ उधार लिया हुआ (धन)।

दस्त-गाह- स्त्री० (फा०) १ ताक़त। २ माल-असवाब, सम्पत्ति।

दस्त-गीर- वि० (फा०) विपत्ति के समय हाथ पकड़ने वाला, रक्षक।

दस्त-गीरा- स्त्री० (फा०) विपत्ति के समय हाथ पकड़ना, सहायता।

दस्त-दराज़- वि० (फा०) (सं० दस्त-दराजी) १ जरा सी बात पर मार बैठने वाला। २ उचक्का, हाथ-लपक।

दस्तनिगर- वि० (फा०) किसी के हाथ या दान की अपेक्षा रखने वाला, ग़रीब, दरिद्र।

दस्तन्दाज़- वि० (फा० दस्तअन्दाज) हस्तक्षेप करने वाला।

दस्तन्दाज़ी- स्त्री० (फा० दस्तअन्दाजी) हस्तक्षेप, दखल देना।

दस्त-पनाह- पुं० (फा०) कोयला आदि उठाने का चिमटा।

दस्त-पाक- पुं० (फा०) हाथ पोछने का अँगोछा, रूमाल।

दस्त-बखैर- (फा० + अ०) ईश्वर करे, यह हाथ पड़ना शुभ हो, हमारे इस हाथ रखने का फल शुभ हो।

दस्त-ब-दस्त- क्रि० वि० (फा०) हाथों हाथ।

दस्त-बन्द- पुं० (फा०) हाथ में पहनने का एक प्रकार का जड़ाऊ गहना।

दस्त-बरदार- वि० (फा०) (सं० दस्त-बरदारी) जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले।

दस्त-बरदारी- स्त्री० (फा०) १ किसी काम से हाथ खींच लेना, अलग होना। २ किसी वस्तु या सम्पत्ति से अपना अधिकार या स्वत्व हटा लेना।

दस्त-बस्ता- क्रि० वि० (फा० दस्तबस्तः) हाथ बाँधे हुए, हाथ जोड़कर।

दस्तबुर्द- वि० (फा०) अनुचित रूप से प्राप्त किया हुआ (धन आदि)।

दस्तबोस- वि० (फा०) हाथ को चूमनेवाला। मुहा०- दस्त बोस होना= किसी बड़े के हाथ चूमकर उसका अभिवादन करना।

दस्तबोसी- स्त्री० (फा०) किसी बड़ेका हाथ चूमकर उसका अभिवादन करने की क्रिया।

दस्तम-बखैर- दे० 'दस्त बखैर'।

दस्त-माल- पुं० (फा०) रूमाल।

दस्त-याब- वि० (फा०) (सं० दस्तयाबी) हस्तगत, प्राप्त।

दस्तयार- वि० (फा०) सहायक।

दस्तयारी- स्त्री० (फा०) सहायता।

दस्तरखान- पुं० (फा० दस्तरख्वान) वह चादर जिसपर ख़ाना रखा जाता है। (मुसल०)

दस्तरस- स्त्री० (फा०) १ पहुँच, रसाई। २ सामर्थ्य, शक्ति। ३ हाथ से की जानेवाली क्रिया।

दस्तरसी- स्त्री० दे० 'दस्तरस'।

दस्तसाज़- वि० (फा०) हाथ से बनाया हुआ।

दस्ता- पुं० (फा० दस्तः) १ वह जो हाथ में आवे या रहे। २ किसी औजार आदि का वह हिस्सा जो हाथ से पकड़ा जाता है, मूठ, बेंट। ३ फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता। ४ सिपाहियों का छोटा दल, गारद। ५ किसी वस्तु का उतना गड्डा या पूला जितना हाथ में आ सके। ६ काग़ज के चौबीस या पचीस तावों को गड्डी।

दस्ताना- पुं० (फा० दस्तानः) पंजे और

हथेली में पहनने का बुना हुआ कपड़ा, हाथ का मोजा।

दस्तार- स्त्री० (फा०) पगड़ी।

दस्तारबन्द- पुं० (फा०) वह जो पगड़ी बनाकर तैयार करता हो, चीरा-बन्द।

दस्तावर- वि० (फा० दस्त+आवुर= लानेवाला) जिसके खाने या पीने से दस्त आवे, विरेचक।

दस्तावेज़- स्त्री० (फा०) वह कागज जिसमें कुछ आदमियों के बीच के व्यवहार की बात लिखी हो और जिसपर व्यवहार करने वालों के दस्तखत हों, व्यवहार संबंधी लेख।

दस्तियाब- वि० दे० 'दस्तयाब'।

दस्ती- वि० (फा०) हाथ का। स्त्री० १ हाथ में लेकर चलने की बत्ती, मशाल। २ छोटी मूठ, छोटा बेंट। ३ छोटा कलमदान। ४ रुमाल।

दस्तूर- पुं० (फा०) १ रीति, रस्म, रवाज, चाल, प्रथा। २ नियम, कायदा, विधि। यौ०- दस्तूरे अदालत= अदालत की प्रथा। दस्तूरे मुकामी= देश की प्रथा।

दस्तूर-उल-अमल- पुं० (फा० + अ०) १ प्रायः काम में आने वाले नियम या परिपाटी। २ नियम, दस्तूर, क़ायदा। ३ शासन प्रणाली।

दस्तूरी- स्त्री० (फा० दस्तूर) वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक़ के तौर पर पाते हैं।

दस्ते-कुदरत- पुं० (फा०) १ प्रकृति का हाथ। २ सामर्थ्य, शक्ति।

दस्ते-शफा- पुं० (फा०) वह जिसके हाथ की चिकित्सा से शीघ्र लाभ हो, यशस्वी (चिकित्सक)।

दह- वि० (फा०) दस,नौ और एक।

दहक़ान- पुं० (फा० 'देह' से अ०) (वि० दहक़ानी) गँवार, देहाती।

दहक़ानियत- स्त्री० (अ० दहक़ान) गंवारपन, देहातीपन।

दहक़ानी- वि० (फा० 'देह' से अ०) देहातियों का-सा, गँवारू। पुं० गँवार, देहाती।

दहन- पुं० (फा०) मुख, मुँह।

दहर- पुं० (फा० दह) जमाना, समय, युग।

दहरिया- पुं० (अ० दहरियः) वह जो ईश्वर को न मानकर केवल प्रकृति को ही सब कुछ मानता हो, नास्तिक।

दहलीज़- स्त्री० (फा०) द्वार के चौखट के नीचेवाली लकड़ी जो जमीन पर रहती है, देहली, डेहरी।

दहशत- स्त्री० (फा०) डर, भय, खौफ।

दहशत-अंगेज़- वि० (फा०) दहशत पैदा करनेवाला, भयानक।

दहशत-ज़दा- वि० (फा० दहशतज़दः) डरा हुआ, भयभीत।

दहशत-नाक- वि० (फा०) भीषण, डरावना, भयानक।

दहा- पुं० (फा० दह) १ मुहर्रम का महीना। २ मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय। ३ ताजिया।

दहान- पुं० (फा०) १ मुँह। २ छेद, सूराख। ३ घाव।

दहाना- पुं० (फा० दहानः) १ चौड़ा मुँह, द्वार। २ वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है, मुहाना। ३ मोरी।

दहुम- वि० (फा० मि० सं० दशम) दसवाँ, दशम।

दहे- पुं० (फा० दह=दस) मुहर्रम के दस दिन जिनमें ताजिए बैठाकर मुसलमान हसन तथा हुसेन का मातम मनाते हैं।

दहेज़- पुं० दे० 'जहेज़'।

दाँ- वि० (फा०) जानने वाला। जैसे- कद्र-दाँ, ज़बान-दाँ।

दाँग- स्त्री० (फा०) १ छः रत्ती की एक तौल। २ किसी चीज का छठा भाग। ३ दिशा, ओर, तरफ।

दाइन- पुं० (अ०) ऋण देने वाला, ऋणदाता।

दाइया- स्त्री० (अ० दाइयः) दावा करने

वाली स्त्री । पुं० दावा, अभियोग।

दाइरा- पुं० (अ० दाइरः) दायरा, घेरा।

दाई- विं० (अ०) १ दुआ माँगने वाला। २ प्रार्थी।

दाखिल- वि० (अ०) प्रविष्ट, घुसा हुआ, पैठा हुआ।

दाखिल-खारिज़- पुं० (अ० + फा०) किसी सरकारी काग़ज़ पर से किसी जायदाद के पुराने हक़दार का नाम काटकर उसपर उसके वारिस या दूसरे हक़दार का नाम लिखना।

दाखिल-दफ्तर- वि० (अ० + फा०) दफ्तर में इस प्रकार डाल रखा हुआ (काग़ज) जिसपर कुछ विचार न किया जाय।

दाखिला- पुं० (अ० दाखिलः) १ प्रवेश, पैठ। २ संस्था आदि में सम्मिलित किये जाने का कार्य।

दाखिली- वि० (अ०) १ भीतरी। २ संबद्ध।

दाग़- पुं० (फा०) १ धब्बा, चित्ती। मुहा०- सफ़ेद दाग़= एक प्रकार का कोढ़ जिससे शरीर पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं, फूल। २ निशान, चिन्ह, अंक। ३ फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिन्ह। ४ कलंक, ऐब, दोप, लांछन। ५ जलने का चिन्ह।

दाग़दार- वि० (फा०) जिस पर दाग़ या धब्बा लगा हो।

दाग़ना- क्रि० स० (फा० दाग़) रंग आदि से चिहं या दाग़ लगाना, अंकित करना।

दाग़-बेल- स्त्री० (फा० दाग़ + हिं० बेल) भूमि पर फावड़े या कुदाल से बनाये हुए चिह्न जो सड़क बनाने, नींव खोदने आदि के लिये डाले जाते हैं।

दाग़ी- वि० (फा० दाग़) १ जिसपर दाग़ या धब्बा हो। २ जिसपर सड़ने का चिह हो। ३ कलंकित, दोपयुक्त, लांछित। ४ जिसको सज़ा मिल चुकी हो।

दाज- पुं० (अ०) १ अंधकार, अंधेरा। २ अंधेरी रात।

दाद- स्त्री० (फा०) १ इन्साफ, न्याय। मुहा०- दाद चाहना= किसी अन्याय के प्रतिकार की प्रार्थना करना। २ प्रशंसा, तारीफ। मुहा०- दाद देना= प्रशंसा करना, तारीफ करना। वि० दिया हुआ, दत्त। जैसे- खुदा दाद। यौ०- दाद व सितद= लेन-देन, व्यवहार।

दाद-ख्वाह- वि० (फा०) (सं० दाद-ख्वाही) अन्याय का प्रतीकार चाहने वाला।

दाद-दहिश- स्त्री० (फा०) उदारतापूर्वक देना, दान।

दादनी- स्त्री० (फा० दादन= देना) १ वह धन जो अन्न आदि खरीदने के लिए कृपकों को पेशगी दिया जाता है। २ ऋण, कर्ज़।

दादनी-दार- वि० (फा०) अनाज आदि बेचने के लिये पेशगी धन या दादनी लेनेवाला।

दाद-फरियाद- स्त्री० (फा०) न्याय के लिये प्रार्थना।

दाद-रस- वि० (फा०) (सं० दादरसी) अन्याय का प्रतीकार करनेवाला।

दादरसी- स्त्री० (फा०) अन्याय का प्रतिकार, कष्ट का निवारण।

दाद-सितद- स्त्री० (फा०) १ लेन-देन, व्यवहार। २ क्रय विक्रय।

दान- वि० (फा०) १ जाननेवाला। जैसे- क़द्र-दान। २ रखनेवाला, आधार। जैसे- कलमदान, शमादान। (यौगिक शब्दों के अन्त में)।

दाना- पुं० (फा०) १ जानने वाला, ज्ञाता, २ बुद्धिमान्, अक्लमन्द। यौ०-दाद दाना= बुद्धिमान् और देखने समझने वाला। पुं० (फा० दानः) १ अनाज का कण। २ अनाज। ३ माल-असबाब।

दानाई- स्त्री० (फा०) बुद्धिमत्ता, अक्लमन्दी।

दानायान- पुं० (फा०) 'दाना' (बुद्धिमान्) का बहु०।

दानिश- स्त्री० (फा०) समझ, बुद्धि,

अक्ल।

दानिशमन्द- वि० (फा०) (सं० दानिशमन्दी) बुद्धिमान्।

दानिस्त- स्त्री० (फा०) जानकारी, ज्ञान।

दानिस्ता- क्रि० वि० (फा० दानिस्तः) जान-बूझकर। यौ०- दीदा व दानिस्ता= देखकर और जानबूझकर।

दानी- वि० स्त्री० (फा० दान) रखनेवाली (आधार)। जैसे-चूहे-दानी, सुरमें-दानी।

दाफा- वि० (फा० दाफS) दफा या दूर करने वाला, नाशक।

दाब- पुं० (फा०) १ रंग-ढंग, तौर तरीका। २ शान-शौकत, दब-दबा। यौ०- रोब-दाब। पुं० (अ०) स्वभाव, आदत।

दाम- पुं० (फा०) १ जाल, फन्दा। यौ०- दामे-मुहब्बत= प्रेमपाश, मुहब्बत का फन्दा। २ एक पुराना सिक्का जो एक पैसे के लगभग होता था। ३ एक तौल जो १२, १८ और २१ माशे की मानी गई है।

दामगाह- पुं० (फा०) वह जगह जहाँ जाल बिछा हो।

दामन- पुं० (फा०) १ अंगे, कोट, कुरते इत्यादि का निचला भाग, पल्ला। २ पहाड़ों के नीचे की भूमि।

दामन-गीर- पुं० (फा०) १ वह जो दामन पकड़ ले। २ आपत्ति या विरोध करने वाला। ३ दावा करनेवाला, दावेदार। मुहा०- दामन-गीर होना= किसी का दामन पकड़कर उससे न्याय चाहना।

दामाद- पुं० (फा०) १ नवविवाहित पुरुष। २ जामाता, जँवाई, लड़की का पति।

दामान- पुं० दे० 'दामन'।

दायन- पुं० (अ० दाइन) ऋण देनेवाला, धनी, महाजन।

दायम- क्रि० वि० (अ०) सदा।

दायम-उल्-मरीज़- वि० दे० 'दायम-उल्-मर्ज़'।

दायम-उल-मर्ज- वि० (अ०) सदा बीमार रहने वाला।

दायम-उल्-हब्स- पुं० (अ०) आजन्म कारागार में रखने का दंड।

दायमी- वि० (अ०) सदा रहने वाला, स्थायी।

दायर- वि० (अ० दाइर) १ फिरता या चलता हुआ। २ चलता, जारी। मुहा०- दायर करना= मामले मुकदमे वगैरह को चलाने के लिए पेश करना।

दायरा- पुं० (अ० दाएरः) १ गोल घेरा, कुंडल, मंडल। २ वृत्त। ३ कक्षा।

दाया- स्त्री० (फा० दायः) दाई, धाय, धात्री।

दायागिरी- स्त्री० (फा० दायः गिरी) धात्री विद्या।

दार- स्त्री० (फा०) १ सूली जिससे प्राणदंड देते थे। २ फाँसी। पुं० (अ०) १ स्थान, जगह। २ घर, शाला, मकान। वि० (फा०) रखनेवाला। जैसे- ईमान-दार, दूकान-दार।

दारचीनी- स्त्री० (फा०) १ एक प्रकार का तज जो दक्षिण भारत और सिंहल में होता है, इस पेड़ की सुगंधित छाल जो दवा और मसाले के काम में आती है।

दार-मदार- पुं० (फा० दार व मदार) १ आश्रय, ठहराव। २ किसी कार्य का किसी पर अवलंबित रहना।

दारा- पुं० (फा०) राजा, बादशाह।

दाराई- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, दरियाई।

दारुल-अमन- पुं० (अ०) अमन या सुख से रहने का स्थान।

दारुल-अमान- पुं० (अ०) १ अमन या सुख से रहने का स्थान, शान्तिपूर्ण स्थान। २ वह देश जिस पर जहाद करना धर्म विरुद्ध हो।

दारुल-अमारत- पुं० (अ०) राजधानी।

दारुल-आखिर- पुं० (अ०) परलोक।

दारुलउलूम- पुं० (अ०) विश्वविद्यालय।

दारुल-क़रार- पुं० (अ०) १ क़ब्र जहाँ पहुँचकर मनुष्य सुख से रहता है। २ मुसलमानें के सात बहिश्तों या स्वर्गों में से एक।

दारुल-खिलाफत- पुं० (अ०) १ खलीफा के रहने का स्थान। २ राजधानी।

दारुल-ज़र्ब- पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ सिक्के ढलते हैं, टकसाल।

दारुल-फना- पुं० (अ०) वह लोक जहाँ सब चीजें नष्ट हो जाती हैं।

दारुल-बका- पुं० (अ०) परलोक जहाँ पहुँचकर जीव अमर हो जाते हैं।

दारुल-मकाफात- पुं० (अ०) १ वह स्थान जहाँ अपने कर्मों के शुभाशुभ फल भोगने पड़ते हैं। २ संसार।

दारुल-शफा- पुं० (अ०) रोगियों की चिकित्सा का स्थान, अस्पताल।

दारुल-सल्तनत- पुं० स्त्री० (अ०) राजधानी।

दारुल-सलाम- पुं० (अ०) १ सुखपूर्वक रहने का स्थान। २ स्वर्ग।

दारुल-हुकूमत- पुं० स्त्री० (अ०) राजधानी।

दारुल-हरब- पुं० (अ०) १ युद्ध-क्षेत्र। २ काफ़िरों का देश जिसपर आक्रमण करना मुसलमानों के लिये धर्मविहित है।

दारू- स्त्री० (फा०) १ दवा, औषध। २ शराब। ३ बारूद।

दारोग़ा- पुं० (फा० दारोगः) १ देखभाल करनेवाला या प्रबंध करने वाला व्यक्ति, निरीक्षक। २ थानेदार।

दारोमदार- पुं० (फा०) निर्भरता।

दालान- पुं० (फा०) मकान में वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो, बरामदा, ओसारा।

दावत- स्त्री० (अ० दअवत) १ ज्योनार, भोज। २ बुलावा, निमंत्रण।

दावतनामा- पुं० (अ० दअवत + फा० नामः) निमंत्रण-पत्र।

दावर- पुं० (फा०) १ न्यायकर्त्ता। २ हाकिम, अधिकारी।

दावरी- स्त्री० (फा०) १ न्यायशीलता। २ दावर का पद या कार्य।

दावा- पुं० (अ०) १ किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य। किसी चीज का हक़ जाहिर करना। २ स्वत्व, हक़। यौ०- दावा-ए-मुआवजः= क्षतिपूर्ति का दावा। ३ किसी जायदाद या रुपये पैसे के लिये चलाया हुआ मुकदमा। ४ नालिश, अभियोग। ५ अधिकार, जोर। ६ कोई बात कहने में वह साहस जो उसकी यथार्थता के निश्चय से उत्पन्न होता है। ७ दृढ़तापूर्वक कथन।

दावागीर- पुं० (अ० + फा०) दावा करने वाला, अपना हक़ बताने वाला।

दावात- स्त्री० (अ० 'दअवत' का बहु०) पुत्र-तुल्य या छोटे के लिये आशीर्वाद और शुभ कामना का प्रदर्शन। स्त्री० (अ०) लिखने के लिये स्याही रखने का बरतन, मसि-पात्र।

दावीदार- पुं० (अ० + फा०) दावा करने वाला, अपना हक़ जताने वाला।

दावेदार- पुं० दे० 'दावादार'।

दाश्त- स्त्री० (फा०) १ लालन-पालन। २ देख-रेख।

दास्तान- स्त्री० (फा०) १ वृत्तांत। २ कथा। ३ वर्णन।

दास्तान-गो- पुं० (फा०) दास्तान या कहानी कहने वाला।

दास्ताना- पुं० दे० 'दस्ताना'।

दिक़- वि० (अ०) १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो, हैरान, तंग। २ अस्वस्थ, बीमार। ('तबीयत' शब्द के साथ) पुं० क्षय रोग, तपेदिक।

दिक़- दारी- स्त्री० (अ० + फा०) कठिनता, विपत्ति, तकलीफ।

दिक्क़त- स्त्री० (अ०) १ 'दिक' का भाव, परेशानी, तकलीफ, तंगी। २ कठिनता।

दिगर- वि० (फा०) दूसरा, अन्य।

दिगर-गूँ- वि० (फा०) १ जिसका रंग बदल गया हो। २ शोचनीय (अवस्था)।

दिमाग़- पुं० (अ०) १ सिरका गूदा, मस्तिष्क, भेजा। मुहा०- दिमाग़ खाना या चाटना= व्यर्थ की बातें कहना, बहुत बकवाद

करना। दिमाग़ खाली करना= ऐसा काम करना जिससे मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो, मग़ज़-पच्ची करना। दिमाग़ चढ़ना या आसमान पर होना= बहुत अधिक घमंड होना। दिमाग़ चल जाना= दिमाग़ खराब हो जाना, पागल होना। २ मानसिक शक्ति, बुद्धि, समझ। मुहा०- दिमाग़ लड़ाना= बहुत अच्छी तरह विचार करना, खूब सोचना। ३ अभिमान, घमंड, शेखी।

**दिमाग़दार-** वि० (अ०+फा०) १ जिसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी हो, बहुत बड़ा समझदार। २ अभिमानी।

**दिमाग़-रौशन-** स्त्री० (अ० + फा०) सुँघनी, नस्य।

**दिमाग़ी-** वि० (अ०) दिमाग़ संबंधी।

**दियानत-** स्त्री० दे० 'दयानत'।

**दियार-** पुं० (अ०) प्रदेश।

**दिरम-** पुं० दे० 'दिरहम'।

**दिरहम-** पुं० (अ०) चाँदी का एक छोटा सिक्का जो प्रायः चवन्नी के बराबर होता है।

**दिर्म-** पुं० दे० 'दिरहम'।

**दिर्रा-** पुं० दे० 'दुर्रा'।

**दिल-** पुं० (फा०) १ कलेजा, हृदय। २ मन, चित्त, जी। मुहा०- दिल कड़ा करना= हिम्मत बाँधना, साहस करना। दिल का कँवल खिलना= चित्त प्रसन्न होना, मन में आनंद होना। दिल का गवाही देना= मन में किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना। दिल का बादशाह= १ बहुत बड़ा, उदार। २ मनमौजी, लहरी। दिल के फफोले फोड़ना= भली-बुरी सुनाकर अपना जी ठंडा करना। दिल जमना= १ किसी काम में चित्त लगना, ध्यान या जी लगना। २ संतुष्ट होना। जी भरना। दिल ठिकाने होना= मन में शांति, संतोष या धैर्य होना। दिल बुझना= चित्त में किसी प्रकार का उत्साह या उमंग न रह जाना। दिल में फरक़ आना= सद्भाव में अंतर पड़ना, मन-मोटाव होना। दिल से= १ जी लगाकर, अच्छी तरह, ध्यान देकर। २ अपने मन से, अपनी इच्छा से। दिल से दूर करना= भुला देना, विस्मरण करना, ध्यान छोड़ देना। दिल ही दिल में= चुपके-चुपके, मन ही मन। ३ साहस, दम। ४ प्रवृत्ति, इच्छा।

**दिल-आज़ार-** वि० (फा०) (सं० दिलज़ारी) १ दिल को तकलीफ पहुँचाने वाला। २ अत्याचारी।

**दिलकश-** वि० (फा०) (सं० दिलकशी) मन को लुभाने वाला, आकर्पक, मनोहर।

**दिल-कुशा-** वि० (फा०) मनोहर, सुन्दर।

**दिल-खराश-** वि० (फा०) दिल को तोड़ने या बहुत कप्ट पहुँचाने वाला (कप्ट या दुर्घटना आदि)।

**दिल-ख़्वाह-** वि० (फा०) दिल के मुताबिक, मनोनुकूल।

**दिलगीर-** वि० (फा०) १ उदास। २ दुःखी।

**दिलचला-** वि० (फा० + हिं०) १ साहसी, हिम्मतवाला, दिलेर। २ वीर, बहादुर।

**दिल-चस्प-** वि० (फा०) (सं० दिलचस्पी) जिसमें जी लगे, मनोहर, चित्ताकर्पक।

**दिल-ज़दा-** वि० (फा० दिलज़दः) दुःखी, रंजीदा, खिन्न।

**दिल-जमई-** स्त्री० (फा०) इतमीनान, तसल्ली।

**दिल-जला-** वि० (फा० + हिं०) जिसके दिल को बहुत कप्ट पहुंचा हो।

**दिल-जान-** स्त्री० (फा०) एक प्रकार का सम्बन्ध जो मुसलमान स्त्रियाँ आपस में सखियों से स्थापित करती हैं।

**दिल-जोई-** स्त्री० (फा०) किसी का दिल या मन रखना, किसी को प्रसन्न और संतुप्ट करना।

**दिल-दादा-** वि० (फा० दिलदादः) जिसने किसी को अपना दिल दिया हो, प्रेमी, प्रिय।

**दिलदार-** वि० (फा०) (सं० दिलदारी) १ उदार, दाता। २ रसिक। ३ प्रेमी, प्रिय।

दिलदारी- स्त्री० (फा०) ढारस, सांत्वना।
दिल-दिही- स्त्री० (फा०) दिलजोई, सांत्वना, ढारस।
दिल-नवाज- वि० (फा०) ढारस-बँधाने वाला।
दिल-पसन्द- वि० (फा०) दिल को पसन्द आने वाला, सुन्दर।
दिल-नशीन- वि० (फा०) (सं० दिलनशीनी) जो दिल में जम या बैठ जाय, जो मन को ठीक जँचे।
दिल-पज़ीर- वि० (फा०) मनोहर, मोहक, सुन्दर।
दिलपसन्द- वि० (फा०) प्रिय, मनोहर, रुचिकर।
दिल-फरेब- वि० (फा०) (सं० दिल फरेबी) मनोहर, मोहक।
दिलफ़रोश- पुं० (फा०) दिल बेचने वाला, प्रेमी, आशिक।
दिलबर- वि० (फा०) प्यारा, प्रिय।
दिल-बस्ता- वि० (फा० दिलबस्तः) जिसका दिल किसी की तरफ बँधा या लगा हो, प्रेमी।
दिल-बस्तगी- स्त्री० (फा०) दिल का किसी तरफ लगना या बँधना, मनोरंजन।
दिल-मिला- पुं० (फा० + हिं०) एक प्रकार का सम्बन्ध जो मुसलमान स्त्रियाँ आपस में सखियों से स्थापित करती हैं।
दिलरुबा- पुं० स्त्री० (फा०) वह जिससे प्रेम किया जाय, प्यारी।
दिल-रुबाई- स्त्री० (फा०) १ दिलरुबा होने का भाव। २ मोहकता। ३ प्रेम, मुहब्बत।
दिल-शाद- वि० (फा०) जिसका दिल खुश हो, प्रसन्न, आनन्दित।
दिल-शिकनी- स्त्री० (फा०) किसी का दिल तोड़ना, किसी को बहुत दुःखी या निराश करना।
दिल-शिकस्ता- वि० (फा० दिलशिकस्तः) जिसका दिल टूट गया हो, दुःखी, खिन्न।
दिल-सोज- वि० (फा०) (सं० दिलसोजी) १ सहानुभूति रखने वाला, कृपालु। २ मन में करुणा उत्पन्न करने वाला, करुण।
दिला- पुं० (फा०) दिल का सम्बोधन, ऐ दिल, हे मन!
दिलाज़ार- वि० (फा०) सताने वाला।
दिलारा- वि० (फा०) प्रिय, माशूक।
दिलाराम- पुं० (फा०) प्यारा, प्रिय, दिल-रुबा।
दिलावर- वि० (फा०) (सं० दिलावरी) १ शूर, बहादुर। २ उत्साही, साहसी।
दिलावेज़- वि० (फा०) (सं० दिलावेजी) मनोहर, सुन्दर।
दिलासा- पुं० (फा०) आश्वासन, ढारस, सान्त्वना।
दिली- वि० (फा०) दिल-सम्बन्धी।
दिलेर- वि० (फा०) (सं० दिलेरी) १ बहादुर। २ साहसी।
दिलेराना- वि० (फा० दिलेरानः) वीरों का-सा, वीरोचित।
दिलेरी- स्त्री० (फा०) १ बहादुरी, वीरता। २ साहस।
दिल्लगी- स्त्री० (फा० दिल+हिं० लगाना) १ दिल लगाने की क्रिया या भाव। २ केवल चित्त विनोद या हँसने-हँसाने की बात, ठट्ठा, ठिठोली, मजाक, मखौल। मुहा०- किसी बात की दिल्लगी उड़ाना= (किसी बात को) अमान्य और मिथ्या ठहराने के लिए। उसे हँसी में उड़ा देना, उपहास करना।
दिल्लगी-बाज़- पुं० (हिं०+फा०) हँसी-दिल्लगी करने वाला, मसखरा।
दिल्लगी-बाज़ी- दे० 'दिल्लगी'।
दिहिश- स्त्री० (फा०) दान, खैरात। यौ०- दाद व दिहिश= दान, पुण्य।
दिवाना- पुं० दे० 'दीवाना'।
दीग़र- वि० (फा०) दूसरा, अन्य।
दीद- स्त्री० (फा०) देखादेखी, दर्शन, दीदार। मुहा०- दीद न शुनीद= जान न पहिचान, न कभी देखा न सुना।
दीद-ओ-दानिस्तः- क्रि वि० (अ०) जान

बूझकर।
दीदनी - वि० (फा०) देखने योग्य, दर्शनीय।
दीदा - पुं० (फा० दीदः) १ दृष्टि, नजर। २ आँख, नेत्र। मुहा०- दीदा लगाना= जी लगाना, ध्यान जमना। दीदे का पानी ढल जाना= निर्लज्ज हो जाना। दीदे निकालना= क्रोध की दृष्टि से देखना। दीदे फाड़कर देखना= अच्छी तरह आँख खोलकर देखना। यौ०- दीदा व दानिस्ता= जान-बूझकर। ३ अनुचित साहस।
दीदाबाजी - स्त्री० (फा० दीदःबाजी) १ आँखें लड़ने की क्रिया। २ ताक-झाँक।
दीदार- पुं० (फा०) दर्शन, देखा-देखी।
दीदारबाज़- वि० (फा०) (सं० दीदारबाजी) आँखें लड़ाने वाला, रूप देखने का लोलुप।
दीदारू- वि० (फा० दीदार) देखने योग्य, सुन्दर, सुदर्शन।
दीदा-रेज़ी - स्त्री० (फा०) ऐसा महीन काम करना जिसमें आँखों पर बहुत जोर पड़े।
दीदा-व-दानिस्ता- क्रि० वि० (फा० दीदः व दानिस्तः) देख और समझकर, जान बूझकर।
दीन- पुं० (अ०) १ धर्म। २ मत, मजहब।
दीनदार- वि० (अ० + फा०) अपने धर्म पर विश्वास रखने वाला।
दीनदारी- स्त्री० (अ० + फा०) धर्म की आज्ञाओं के अनुसार आचरण, अपने धर्म पर विश्वास रखना, धार्मिकता।
दीन-दुनिया - स्त्री० (अ० दीन व दुनिया) यह लोक और परलोक।
दीन-पनाह - पुं० (अ० + फा०) दीन या धर्म का रक्षक।
दीनार - पुं० (फा० + स०) १ स्वर्णभूपण, सोने का गहना। २ निप्क की तौल। ३ स्वर्ण मुद्रा, मोहर।
दीनी - वि० (अ०) १ दीनसम्बन्धी, धार्मिक। २ धर्मनिष्ठ।
दीबाचा - पुं० (फा० दीबाचः) भूमिका। प्रस्तावना।
दीमक - स्त्री० (फा०) चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा जो लकड़ी, क़ागज आदि में लग कर उसे खोखला और नष्ट कर देता है, वल्मीक।
दीयत - स्त्री० (अ०) वह धन जो हत्या करने वाला निहत के सम्बन्धियों को क्षतिपूर्ति के रूप में दे, खूँ-बहा।
दीवान - पुं० (अ०) १ राजा या बादशाह के बैठने की जगह, राज-सभा, कचहरी। यौ०- दीवाने-आम= साधारण सभा। दीवाने-खास= विशिष्ट लोगों की सभा। २ राज्य का प्रबन्ध करने वाला, मंत्री, वजीर, प्रधान। ३ ग़जलों का संग्रह।
दीवान-आम - पुं० (अ०) १ ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों। २ वह स्थानर्न जहाँ आम दरबार लगता हो।
दीवान-खाना - पुं० (अ० + फा०) घर का वह बाहरी हिस्सा जहाँ बड़े आदमी बैठते और सब लोगों से मिलते हैं, बैठक।
दीवान-खास - पुं० (अ०) १ ऐसी सभा जिसमें राजा या बादशाह मन्त्रियों तथा चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है, खास दरबार। २ वह जगह जहाँ खास दरबार होता हो।
दीवानगी - स्त्री० (फा०) पागलपन, उन्माद।
दीवाना- वि० (फा० दीवानः) (स्त्री० दीवानी) पागल।
दीवानागर- वि० (फा० दीवानःगर) पागल बना देने वाला।
दीवाना-पन - पुं० (फा० + हिं०) पागलपन, सिड़ीपन।
दीवानी - वि० स्त्री० (फा० दीवानः) पागल, विक्षिप्त। स्त्री० (फा०) १ दीवान का पद। २ वह न्यायालय जो सम्पात्त सम्बन्धी स्वत्वों का निर्णय करे।
दीवार - स्त्री० (फा०) १ पत्थर, ईंट,

मिट्टी आदि को नीचे ऊपर रखकर उठाया हुआ परदा जिससे किसी स्थान को घेरकर मकान आदि बनाते हैं, भीत। २ किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो।

दीवार-क़हक़हा - स्त्री० (अ०) १ एक कल्पित दीवार। कहते हैं कि इसे सिकन्दर ने बनवाया था: और जो आदमी इस दीवार पर चढ़ता है, वह खूब जोर से हँसते-हँसते मर जाता है, सिंद्दे सिकन्दरी। २ चीन की प्रसिद्ध बड़ी दीवार।

दीवारगीर - पुं० (फा०) दिया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवारगीरी - स्त्री० (फा०) १ वह परदा जो दीवार के आगे शोभा के लिए लटकता है। २ पलस्तर, कहगिल।

दीवाल- स्त्री० दे० 'दीवार'।

दीह - पुं० (फा०) गाँव।

दु - वि० दे० 'दो' ('दु' के यौगिक शब्दों के लिये दे० 'दो' के यौगिक)।

दुई - स्त्री० (फा० दूई) १ 'दो' का भाव। २ अपने आपको ईश्वर से अलग समझना।

दुआ - स्त्री० (अ०) १ प्रार्थना, दरखास्त, विनती, याचना। मुहा०- दुआ माँगना= प्रार्थना करना। २ आशीर्वाद, असीस। दुआ लगना= आशीर्वाद का फली-भूत होना।

दुआइया- वि० (अ० दुआइय़ः) दुआ या शुभ कामना सम्बन्धी।

दुआए-ख़ैर- स्त्री० (अ०) किसी की भलाई के लिए ईश्वर से की जाने वाली प्रार्थना, मंगल-कामना।

दुआए-दौलत- स्त्री० (अ०) किसी की धन सम्पत्ति की वृद्धि के लिये ईश्वर से की जाने वाली प्रार्थना।

दुआगो - वि (अ० + फा०) १ किसी के लिए दुआ माँगने वाला। २ शुभ-चिन्तक।

दुआल - स्त्री० (फ़ा० दोआल) १ चमड़ा। २ तसमा। ३ रिकाब का तसमा।

दुआली- स्त्री० (फा० दुआल) चमड़े का वह तसमा जिससे कसेरे और बढ़ई खराद घुमाते हैं।

दुकान - स्त्री० (फा०) वह स्थान जहाँ बेचने के लिये चीजें रखी हों और जहाँ ग्राहक जाकर उन्हें खरीदते हों, सौदा विकने का स्थान, हट्ट, हट्टी। मुहा०- दुकान बढ़ाना= दुकान बंद करना। दुकान लगाना= १ दुकान का असबाब फैलाकर यथा-स्थान बिक्री के लिये रखना। २ बहुत-सी चीजों को इधर-उधर फैलाकर रख देना।

दुकानदार - पुं० (फा०) १ दुकान पर बैठकर सौदा बेचने वाला, दुकानवाला। २ वह जिसने अपनी आय के लिये कोई ढोंग रच रखा हो।

दुकानदारी - स्त्री० (फा०) १ दुकान या बिक्री-बट्टे का काम, दुकान पर माल बेचने का काम। २ ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम।

दुखान - पुं० (अ०) धूआँ, धूम।

दुख़ानी - वि० (अ०) धूएँ या आग के जोर से चलने वाला। जैसे- दुखानी जहाज़।

दुख़्त - स्त्री० दे० 'दुख़्तर'।

दुख़्तर - स्त्री० (फा०), स्त्री० (फा० मि० सं० दुहितृ) लड़की, बेटी।

दुख़्तरे-रज़ - स्त्री० (फा०)१ अँगूर की लड़की अर्थात् अँगूरी शराब। २ मद्य, शराब।

दुगाना - स्त्री० दे० 'दोगाना'।

दुज़्द- पुं० (फा०) चोर।

दुज़्दी- पुं० (फा०) चोरी।

दुज़्दीदा- वि० (फा० दुज़्दीदः) चोरी का। यौ०- दुज़्दीदा-निगाहें= औरों की नज़र बचा कर देखने वाली आँखें।

दुतरफा- वि (फा० दुतर्फ़ः) द्विपक्षीय।

दुनियवी- वि० (अ०) दुनिया से संबन्ध रखने वाला, सांसारिक, लौकिक।

दुनिया- स्त्री० (अ० दुन्या) १ संसार, जगत्। यौ०- दीन-दुनिया= लोक-परलोक। मुहा०- दुनिया के परदे पर= सारे संसार में। दुनिया की हवा लगना= सांसारिक अनुभव होना, सांसारिक विपयों का अनुभव होना। दनियाभर का= १ बहत या बहत

अधिक। २ संसार के लोग, लोक, जनता, संसार का जंजाल।

दुनियाई- वि० (अ० दुनिया) सांसारिक। स्त्री० संसार।

दुनियादार- वि० (अ०+फा०) सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य, गृहस्थ। २ ढंग रचकर अपना काम निकालने वाला, व्यवहार-कुशल।

दुनियादारी- स्त्री० (अ० + फा०) १ दुनिया का कारबार, गृहस्थी का जंजाल। २ वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो, स्वार्थ-साधन। ३ बनावटी व्यवहार।

दुनियावी- वि० दे० 'दुनियवीं'।

दुनिया-साज़- वि० (अ० + फा०) (सं० दुनिया-साज़ी) १ ढंग रचकर अपना काम निकालने वाला, स्वार्थ-साधक, २ चापलूस।

दुबारा- क्रि० वि० (फा० दुवारः) फिर, पुनः।

दुमंजिला - वि० (फा० दुमंजिलः) दुतल्ला, दो खंडों वाला।

दुम - स्त्री० (फा०) १ पूँछ, पुच्छ। मुहा०- दुम दबाकर भागना= डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना। दुम हिलाना= कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना। २ पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। ३ पीछे-पीछे लगा रहनेवाला आदमी। ४ किसी काम का सबसे अंतिम थोड़ा-सा अंश।

दुमची- स्त्री० (फा०) घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है।

दुमदार- स्त्री० (फा०) १ पूँछवाला। २ जिसके पीछे पूँछ की-सी कोई वस्तु हो।

दुम्बल - पुं० (फा० दुंबलः) बड़ा घोड़ा।

दुम्बा- पुं० (फा० दुंबः) मेढ़ा, मेष।

दुम्बाला- पुं० (फा० दुंबालः) १ पिछला भाग। २ दुम, पूँछ। ३ वह सुरमे की लकीर जो आँख के कोए से आगे तक सुन्दरता के लिए बढ़ा ले जाते हैं। ४ पतवार।

दुर - पुं० (अ० दुर्र) १ मोती। मुक्ता। वि० दे० 'दुर्र'।

दुर-अफशानी - स्त्री० (फा०) १ मोती छिड़कना या बिखेरना। २ सुन्दर और उत्तम बातें कहना।

दुरफिश-काबियानी- पुं० (फा०) वह रेशमी तिकोना और जरी का काम किया हुआ कपड़ा जो प्रायः झंडे के सिरे पर लगाया जाता है।

दुरुस्त- वि० (फा०) (सं० दुरुस्ती) १ कड़ा, कठोर। २ खुरदरा।

दुरुस्त- वि० (फा०) १ जो अच्छी दशा में हो, जो टूटा-फूटा या बिगड़ा न हो, ठीक। २ जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३ उचित, मुनासिब। ४ यथार्थ।

दुरुस्ती - स्त्री० (फा०) १ सुधार। २ संशोधन।

दुरूद - स्त्री० (फा०) १ मुहम्मद साहब की स्तुति। २ दुआ, शुभ-कामना। यौ०- फातिहा व दुरूद= मुसलमानों के मरने पर होने वाली अन्तिम क्रियाएँ।

दुरेशह-वार- पुं० (फा०) बहुत बड़ा और बादशाहों के योग्य मोती।

दुर्र- पुं० (अ०) १ मोती। २ कान और नाक में पहनने का वह लटकन जिसमें मोती लगा हो।

दुर्रा- पुं० (फा० दिर्रः) चाबुक, कोड़ा।

दुर्रानी - पुं० (फा०) कानों में मोती पहनने वाला पठानों का एक फिरका।

दुलदुल - स्त्री० (अ०) वह खच्चरी जो इसकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नजर में दी थी, साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम के दिनों में इसी की नकल निकालते हैं।

दुशनाम- स्त्री० दे० 'दुश्नाम'।

दुशमन- पुं० दे० 'दुश्मन'।

दुशवार- वि० (फा०) १ कठिन, दुरूह, मुश्किल। २ दुःसह।

दुशवारी- स्त्री० (फा०) कठिनता, मुश्किल, दिक्कत।

दुशाला- पुं० (फा० दोशालः मि० सं०

दिशाट) पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें बनी रहती हैं।

दुश्नाम- स्त्री० (फा०) गाली, दुर्वचन, कुवाच्य।

दुश्मन- पुं० (फा०) १ शत्रु, वैरी। मुहा०- दुश्मनों की तबीयत खराब होना= किसी प्रिय का अस्वस्थ होना, किसी प्रिय का कोई अनिष्ट होने पर कहते हैं-दुश्मनों का अमुक अनिष्ट हुआ।) २ प्रेमिका या प्रियका दूसरा प्रेमी, प्रेम-क्षेत्र का प्रतिद्वन्द्वी। स्त्री० प्रिय सखी के लिए प्यार या व्यंग्य का सम्बोधन या सम्बन्ध।

दुश्मनी- स्त्री० (फा०) वैर।

दुश्वार- वि० (फा०) कठिन, मुश्किल।

दुश्वारी- स्त्री० (फा०) १ कठिनता, कठिनाई। २ तंगी। ३ मुसीबत, विपत्ति।

दुसालः- वि० (फा०) दो बरस का, द्विवर्षीय।

दूकान- स्त्री० दे० 'दुकान'।

दूद- पुं० (फा०) धूआँ। यौ०- दूदे दिल= दीर्घ श्वास।

दूदमान- पुं० (फा०) खानदान, परिवार, वंश।

दून- वि० (अ०) तुच्छ, नीच। अव्य० सिवा, अतिरिक्त।

दूर- क्रिया० वि० (फा० सं०) देश, काल या सम्बन्ध आदि के विचार से बहुत अंतर पर, बहुत फासले पर, पास या निकट का उलटा। मुहा०- दूर करना= १ अलग करना, जुदा करना। २ न रहने देना, मिटाना। दूर भागना या रहना= बहुत बचना, पास न जाना, अलग हो जाना। २ मिट जाना, नष्ट होना। दूर की बात= १ बारीक बात, कठिन बात। वि० जो दूर या फासले पर हो।

दूर-अन्देश- वि० (फा०) (सं० दूर-अन्देशी) बहुत दूर तक की बात सोचने वाला, अग्रसोची, दूरदर्शी।

दूर-दराज- वि० (फा०) बहुत दूर।

दूर-दस्त- वि० (फा०) बहुत दूर का, पहुँच के बाहर, दुर्गम।

दूर-पार- (फा०) ईश्वर करे, यह मुझसे बहुत दूर रहे, दूर करो, हटाओ।

दूरबीन- स्त्री० (फा०) गोल नलके आकार का एक काँच लगा हुआ यंत्र जिससे दूरकी चीजें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं।

दूरी- स्त्री० (फा० मि० सं० दूर) दो वस्तुओं के मध्य का स्थान, दूरत्व, अंतर, फासला।

देग- स्त्री० (फा०) खाना पकाने का चौड़े मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन।

देगचा- पुं० (फा० देगचः) छोटा देग।

देर- स्त्री० (फा०) १ नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय, विलंब। २ समय, वक्त।

देर-पा- वि० (फा०) देर तक ठहरने वाला, मजबूत, दृढ़।

देरी- स्त्री० दे० 'देर'।

देरीना- वि० (फा० देरीनः) १ पुराना, प्राचीन। २ वृद्ध।

देव - पुं० (फ़ा०) १ राक्षस, दैत्य। २ बहुत हृष्ट-पुष्ट और बलवान्।

देवज़ाद- वि० (फा०) १ देव से उत्पन्न। २ बहुत हृष्ट-पुष्ट और बलवान्।

देवलाख- पुं० (फा०) देवों या असुरों के रहने का स्थान।

देह- पुं० (फा० दिह) गाँव, ग्राम, खेड़ा, मौजा। वि० देने वाला। जैसे- तकलीफ-देह।

देहक़ानी- पुं० (फा०) १ ग्रामवासी। २ गँवार व्यक्ति। वि० ग्रामीण।

देहबन्दी- स्त्री० (फा०) गाँवों की हल्क़ा-बन्दी।

देहलीज़- स्त्री० दे० 'दहलीज'।

देहात- पुं० (फा० 'देह' का बहु०) (वि० देहाती) गाँव।

देहाती- वि० (फा० देहात) १ गाँव का। २ गाँव में रहने वाला, गँवार, गँवई।

देही- वि० (फा०) ग्रामीण। पुं० ग्रामवासी।
दैन- पुं० (अ०) कर्ज।
दैन-दार- पुं० (अ० + फा०) कर्जदार, ऋणी।
दैजूर- स्त्री० (अ०) अंधेरी रात। वि० घोर अंधकार।
दैर- पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ पूजा के लिए कोई मूर्ति रक्खी हो, मन्दिर।
दो- वि० (फा० मि० सं० द्वि) एक और एक। मुहा०- दो एक या दो चार= कुछ, थोड़े। दो चार होना= भेट होना, मुलाकात होना। आँखें दो-चार होना= सामना होना। दो दिन का= बहुत ही थोड़े समय का।
दो-अमला- वि० (फा० दो + अ० अमल) जो दो व्यक्तियों के अधिकार में हो।
दो-अमली- स्त्री० (फा० + अ०) १ द्वैध शासन। २ अराजकता, अव्यवस्था।
दो-अस्पा- पुं० (फा० दोअस्पः) १ वह सैनिक जिसके पास दो निजी घोड़े हों। २ दो घोड़ों की डाक।
दो-आतशा- वि० (फा० दो आतशः) जो दो बार भभके में खींचा या चुआया गया हो।
दो-आब- पुं० (फा०) किसी देश का वह भाग जो दो नदियों के बीच में हो।
दो-आबा- पुं० दे० 'दो-आब'।
दो-आल- स्त्री० दे० 'दुआल'।
दो-आशियाना- पुं० (फा० दो-आशियानः) एक प्रकार का खेमा या तम्बू जिसमें दो कमरे होते हैं।
दोग़- पुं० (फा०) मठा, तक्र।
दोग़ला- वि० (फा० दो + ग़ल्लाः) (स्त्री० दोग़ली) १ वह मनुष्य जो अपनी माता के यार से उत्पन्न हुआ हो, जारज। २ वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न-भिन्न जातियों के हों।
दोगाना- स्त्री० (फा० दोगानः) १ एक साथ मिली हुई दो चीजें। २ सखी।
दो-चन्द- वि० (फा०) दूना, द्विगुण।
दो-चोवा- पुं० (फा० दो-चोवः) वह खेमा जिसमें दो चोबें लगती हों।
दोज़- वि० (फा०) १ सीनेवाला, सिलाई करने वाला। जैसे- खेमादोज, जर-दोज। २ मिला हुआ, सटा हुआ। जैसे- जमीं-दोज।
दो-ज़ख- पुं० (फा०) १ द्रोजख सम्बन्धी, दोजख का। २ बहुत बड़ा अपराधी या पापी, नारकी।
दो-ज़रबा- वि० दे० 'दो-आतशा'।
दो-ज़ानू- क्रि० वि० (फा०) घुटनों के बल (बैठना)।
दोज़ी- स्त्री० (फा०) सीने का काम, सिलाई। जैसे- खेमा-दोजी, जर-दोजी।
दो-तरफा- वि० (फा० दो-तरफः) दोनों तरफ का, दोनों ओर सम्बन्धी। क्रि० वि० दोनों तरफ, दोनों ओर।
दो-पाया- वि० (फा० दो-पायः) दो पैरों वाला।
दो-पारा- वि० (फा० दोपारः) दो टुकड़े किया हुआ।
दो-प्याज़ा- पुं० (फा०) वह मांस जो प्याज मिलाकर बनाया जाता है।
दो-फसला- वि० दे० 'दो-फसली'।
दो-फसली- वि० (फा० दो + अ० फसल) १ दोनों फसलों के संबंध का। २ जो दोनों ओर लग सके, दोनों ओर काम देने योग्य।
दो-बाजू- पुं० (फा०) १ वह कबूतर जिसके दोनों पैर सफेद हों। २ एक प्रकार का गिद्ध।
दो-बारा- क्रि० वि० (फा० दोबारः) एक बार हो चुकने के उपरांत फिर एक बार, दूसरी बार।
दो-बाला- वि० (फा०) दूना।
दो-मंजिला- वि० (फा० दो-मंजिलः) जिसमें दो खंड या मंजिलें हों। (मकान)
दोम- वि० दे० 'दोयम'।
दोयम- वि० (फा०) दूसरा, पहले के बाद का।
दोरुखा- वि० (फा० दोरुखः) १ जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों। २ जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर

दूसरा रंग हो।

दो-लाब- पुं० (फा०) पानी खींचने की चरखी।

दोश- पुं० (फा०) कन्धा, स्कन्ध।

दोश-माल- पुं० (फा०) कन्धे पर रखने का रूमाल या अँगोछा।

दो-शम्बा- पुं० (फा० दोशम्बः) सोमवार।

दो-शाखा- पुं० (फा० दोशाखः) वह शमादान जिसमें दो शाखें हों। वि० दो शाखाओं वाला।

दोशाला- पुं० दे० 'दुशाला'।

दोशीज़गी- स्त्री० (फा०) दोशीजा या कुमारी होने का भाव, कुमारित्व।

दोशीज़ा- स्त्री० (फा० दोशीजः) कुमारी लड़की, अविवाहित।

दो-साला- वि० (फा० दो + सालः) दो साल का, दो वर्ष का पुराना।

दोस्त- पुं० (फा०) मित्र, स्नेही।

दोस्त-दार- वि० (फा०) मित्रता या सहानुभूति रखनेवाला।

दोस्त-दारी- स्त्री० (फा०) दोस्ती, मित्रता।

दोस्ताना- पुं० (फा० दोस्तानः) १ मित्रता। २ मित्रता का व्यवहार।

दोस्ती- स्त्री० (फा०) मित्रता।

दौर- पुं० (अ०) १ चक्कर, भ्रमण, फेरा। २ दिनों का फेर, कालचक्र। ३ अभ्युदय काल, बढ़ती का समय। यौ०- दौर-दौरा= प्रधानता, प्रबलता। ४ प्रताप, प्रभाव, हुकूमत। ५ बारी, पारी। ६ बार, दफा। ७ दे० 'दौरा'।

दौरा- पुं० (अ० दौरः) १ चक्कर, भ्रमण। २ इधर-उधर जाने या घूमने की क्रिया, फेरा, गश्त। ३ अफसर का इलाके में जाँच-पड़ताल के लिये घूमना। मुहा०- (असामी या मुक़दमा) दौरा सुपुर्द करना= (असामी या मुक़दमें को) फैसले के लिये सेशन जज के पास भेजना। ४ सामयिक आगमन, फेरा। ५ किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय समय पर होता है, आवर्त्तन।

दौरान- पुं० (फा०) १ दौरा, चक्र। २ दिनों का फेर। ३ फेरा। ४ बीच, मध्य।

दौलत- स्त्री० (अ०) धन। यौ०- दौलते हुस्न= रूप की संपत्ति।

दौलत-खाना- पुं० (अ० + फा०) निवास स्थान, घर (आदरार्थ)।

दौलत-मन्द- वि० (अ० + फा०) (सं० दौलत-मन्दी) धनी, संपन्न।

नंग- पुं० (फा०) १ प्रतिष्ठा, सम्मान। २ लज्जा, शर्म, हया। ३ कलंक का कारण या साधन। मुहा०- नंगे खान्दान= कुल कलंक, यौ०- नंग व नामूस= १ लज्जा, शरम। २ प्रतिष्ठा, सम्मान।

न- अव्य० (फा० नह मि० सं० न) निषेधवाचक शब्द, नहीं, मत।

नअत- स्त्री० (अ०) १ प्रशंसा, स्तुति। २ मुहम्मद साहब की स्तुति।

नअश- स्त्री० दे० 'नाश'।

नईम- स्त्री० (अ०) १ बहिश्त, स्वर्ग। २ नियामत। ३ पहुँच, रसाई। ४ लाड़-प्यार, दुलार। ५ इनाम में दी हुई चीज।

नऊज़- पुं० (अ०) हम ईश्वर सें पनाह माँगते हैं। ईश्वर हमारी रक्षा करे। यौ०- नऊज़ बिल्लाह= ईश्वर हमारी रक्षा करे।

नक़द- पुं० (अ० नक्द) वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा। वि० १ (रुपया) जो तैयार हो। (धन) जो तुरन्त काम में लाया जा सके। २ खास। क्रि० वि० तुरन्त दिये हुए रुपये के बदले में, "उधार" का उलटा।

नकदखाँ- पुं० (अ०+फा०) १ प्रचलित सिक्का। २ खरा और बढ़िया माल।

नक़द-जान- स्त्री० (अ०+फा०) आत्मा, रुह।

नक़द-दम- क्रि० वि० (अ०) अकेले, बिना किसी को साथ लिये।

नक़दमाल- पुं० (अ०) खरा और बढ़िया माल।

नक़दी- स्त्री० वि० दे० "नक़द"।

नक़ब- स्त्री० (अ०) चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद, सेंध।
नक़्बज़न- पुं० (अ०+फा०) वह जो नक़ब या सेंध लगाता हो।
नक़्बज़नी- स्त्री० (अ०+फा०) नकब या सेंध लगाने की क्रिया।
नक़्बत- स्त्री० (अ० नक्बत) १ दुर्दशा। २ विपत्ति। ३ निर्धनता, दरिद्रता।
नकरा- पुं० (अ० नक्रः) १ अभाव। २ व्याकरण में जातिवाचक।
नक़्ल- स्त्री० (अ० नक्ल) (बहु० नक्लियात, नुकूल।) १ वह जो किसी दूसरे के ढ़ंग पर या उसकी तरह तैयार किया गया हो। अनुकृति, कापी। २ एक के अनुरुप दूसरी वस्तु बनाने का कार्य, अनुकरण। ३ लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि, कापी। ४ किसी के वेप, हाव-भाव या बातचीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण, स्वाँग। ५ अद्‌भुत और हास्यजनक आकृति। ६ हास्य रस की कोई छोटी मोटी कहानी, चुटकुला।
नक़्लनवीस- वि० (अ० नक्ल+फा०) (सं० नक़्लनवीसी) वह आदमी, विशेपतः अदालत का मुहर्रिर जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नक्ल करना होता है, प्रतिलिकार।
नक़्ली- वि० (अ० नक्ली) १ जो नक़्क्ल करके बनाया गया हो, कृत्रिम, बनावटी। २ खोटा, जाली, झूठा, पुं० कहानियाँ सुनानेवाला, किस्सागो।
नक़्लेपरवाना- पुं० (अ०+फा०) साला, स्त्री० का भाई। (परिहास या व्यंग्य)
नक़्ले-मज़हब- पुं० (अ०) एक धर्म छोड़कर दूसरा धर्म ग्रहण करना, धर्म परिवर्तन।
नकसीर- स्त्री० (अ० नक्सीर) नाक के अन्दर की नसें। मुहा०- नकसीर फटना= नाक से खून जाना।
नकहत- स्त्री० (अ० नक्हत) सुगंधी, महक, खुशबू।
नक़ाब- स्त्री० (अ० निक़ाब) १ वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिये सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है (मुसलमान)। २ साड़ी या चादर का वह भाग जिससे स्त्रियों का मुँह ढँका रहता है, घूँघट।
नक़ाबपोश- वि० (अ० + फा०) (नक़ाबपोशी) जिसने मुँह पर नक़ाब डाली हो।
नक़ायस- पुं० (अ० "नक़ीसः" का बहु०) नुक्स, बुराइयाँ, ऐब।
नक़ास- वि० दे० "नाकास।"
नक़ाहत- स्त्री० (अ०) निर्बलता, विशेषतः रोग के समय होनेवाली।
नक़ी- वि० (अ०) विशुद्ध, बहुत, बढ़िया।
नक़ीज़- वि० (अ०) १ तोड़ने या गिरानेवाला। २ विशुद्ध, विपरीत, उल्टा, जैसे- "सही" का नक़ीज़ "ग़लत" है। स्त्री० १ अस्तित्व मिटाने की क्रिया। २ विरोध, उल्टापन। ३ शत्रुता, दुश्मनी।
नक़ीब- पुं० (अ०) १ चारण, बंदी-जन, भाट। २ कड़खा गाने वाला पुरुष, कड़खैत।
नक़ीर- स्त्री० (अ०) उन दो फरिश्तो में से एक जो मुरदे से क़ब्र में प्रश्न करते हैं कि तुम किसके सेवक या उपसक हो। (दूसरे फरिश्ते का नाम मुनकिर है।)
नक़ीर- वि० (अ०) बहुत छोटा। पुं० नहर।
नकीरैन- पुं० (अ० "नकीर" का बहु०) मुनकिर और नकीर नामक दोनों फरिश्ते या देवदूत जो क़ब्र में मुर्दे से पूछते हैं कि तुम किसके सेवक या उपासक हो।
नक़ीह- वि० (अ०) दुर्बल, दुबला।
नक्क़ाद- वि० (अ०) १ खरा-खोटा परखने वाला, पारखी। २ समीक्षक।
नक्क़ारखाना- पुं० (फा० नक्क़ारखानः) वह स्थान जहाँ पर नक्क़ारा बजता है, नौबत-खाना। मुहा०- नक्क़ारा खाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है= बड़े-बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता।
नक्क़ारची- पुं० (फा०) नगाड़ा बजाने

वाला।
नक्कारा- पुं० (फा० नक्कारः) नगाड़ा, डंका, नौबत, दुंदुभी।
नक्काल- पुं० (अ०) १ वह जो नक्ल करता हो। २ बहुरुपिया। ३ भाँड़।
नक्काली- स्त्री० (अ० नक्काल) १ नक्ल करने का काम। २ भाँड़पन, भँड़ैती।
नक्काश- पुं० (अ०) वह जो नक्काशी करता हो।
नक्काशी- स्त्री० (अ०) (वि० नक्काशीदार) १ धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे जो इस प्रकार बनाये गये हो।
नक्ज़- पुं० (अ०) तोड़ना। जैसे- नक्ज़े अहद= प्रतिज्ञा तोड़ना।
नक्द- पुं० क्रि० वि० दे० "नक़्द।"
नक्ल- पुं० दे० "नक़ल।"
नक्श- वि० (अ०) जो अंकित या चित्रित किया गया हो, बनाया या लिखा हुआ। मुहा०- मन में नक्श करना या कराना= किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना। पुं० (अ०) (बहु० नुकूश) १ तसवीर, चित्र। २ खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३ मोहर, छाप। मुहा०- नक्श बैठना= अधिकार जमाना। ४ वह यन्त्र जो रोगों आदि को दूर करने के लिये कागज़ आदि पर लिखकर बाँह या गले में पहनाया जाता है, ताबीज। ५ जादू टोना।
नक्शबंदी- स्त्री० (अ०+फा०) चित्रकारी, चित्रकला।
नक्श-व-दीवार- वि० (अ०+फा०) १ दीवार पर बने हुए चित्र के समान। २ चकित, स्तंभित।
नक्शा- पुं० (अ० नक्शः) १ रेखाओं द्वारा आकार आदि का निर्देश, चित्र, प्रति-मूर्ति, तसवीर। २ आकृति, शक्ल, ढाँचा, गढ़न। ३ किसी पदार्थ का स्वरूप, आकृति। ४ चाल-ढाल, तर्ज, ढंग। ५ अवस्था, दशा। ६ ढाँचा, ठप्पा, किसी धरातल पर बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथ्वी या खगोल का कोई भाग अपनी स्थिति के अनुसार अथवा और किसी विचार से चित्रित हो, ऐसे चित्रों में प्रायः देश, पर्वत, समुद्र, नदियाँ और नगर आदि दिखलाये जाते हैं।
नक्शाजात- पुं० (अ०) नक्शे।
नक्शानवीस- वि० (अ०+फा०) (सं० नक्शा नवीसी) जो किसी तरह के नक्शे बनाता या तैयार करता हो।
नक्शीं,नक्शी- वि० (अ० नक्श) जिस पर नक्शी या बेल-बूटे बने हों, नक्काशीदार।
नक्शीन- वि० (फा०) नक्काशीदार।
नक्शेआब- पुं० (अ०+फा०) १ पानी पर बनाया हुआ चिह्न जो तुरंत मिट जाता है। २ अस्थायी वस्तु।
नक्शेकदम- पुं० (अ०) पदचिह्न।
नक्शोनिगार- पुं० (अ०+फा०) फूल-पत्ती, बेल-बूटे।
नक्स- पुं० (अ०) भूल, त्रुटि।
नख- स्त्री० (फा०) वह पतला रेशमी या सूती तागा जिससे गुड्डी या पतंग उड़ाते हैं, डोर।
नखचीर- पुं० (फा०) १ वे जंगली जानवर जिनका शिकार किया जाता है। २ शिकार।
नखचीर-गाह- स्त्री० (फा०) शिकार-गाह, आखेट-स्थल।
नखरा- पुं० (फा० नखरः) १ वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानी की उमंग में अथवा प्रिय को रिझाने के लिये हो, चोचला।
नखरा-तिल्ला- पुं० (फा० नखरा+हिं० तिल्ला अनु०) नखरा, चोचला।
नखरे-बाज़- वि० (फा० नखरःबाज़) (नखरे-बाजी) जो बहुत नखरा करे, नखरा करने वाला।
नखल- पुं० दे० "नख्ल।"
नखवत- स्त्री० (अ०) घमंट, अभिमान, शेखी।
नाखास- पुं० (अ० नख्खास) गुलामों या जानवरो के बिकने का बाज़ार। मुहा०-नखासवाली= वेश्या, रंडी।

नखुस्त- पुं० (फा०) १ आरंभ। २ प्रधान।
नखुद- पुं० (फा०) चना नामक अन्न।
नख्ल- पुं० (अ०) १ खजूर या छुहारे का वृक्ष। २ वृक्ष।
नख्लबन्द- पुं० (अ०+फा०) १ माली, बागवान। २ मोम के वृक्ष और फूल पत्ते बनाने वाला।
नख्लिस्तान- पुं० (अ०+फा०) १ खजूर के वृक्षो का वन। २ वन। oasis। ३ वाटिका, बाग़।
नख्ले-ताबूत- पुं० (अ०+फा०) ताबूत या रत्थी की सजावट जो प्रायः किसी वृद्ध के मरने पर की जाती है।
नख्ले-तूर- पुं० (अ०) तूर पर्वत का वह वृक्ष जिस पर हजरत मूसा को ईश्वरीय प्रकाश दिखाई पड़ा था।
नख्ले-मरियम- पुं० (अ०) खजूर का वह सूखा वृक्ष जो उस समय मरियम के स्पर्श से हरा हो गया था जब वह प्रसव वेदना से विकल होकर जंगल में उसके नीचे जा बैठी थी।
नख्ले-मातम- पुं० दे० "नख्ले-ताबूत।"
नख्लेमोम- पुं० (अ०) मोम का बनाया हुआ वृक्ष और उसके फल-फूल आदि।
नग- पुं० दे० "नगीना"।
नग़मा- पुं० दे० "नग्म"।
नगीं- पुं० (फा०) नगीना।
नगीना- पुं० (फा० नगीनः) रत्न, मणि। वि० चिपका या ठीक बैठा हुआ।
नगीनासाज़- वि० (फा०) (सं० नगीना-साजी) वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।
नग्ज़- वि० (अ०) श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया, जैसे- नग्जगुफ्तार= सुवक्ता।
नग्ज़क- पुं० (अ० "नग्ज" से फा०) १ बहुत उत्तम पदार्थ, बढ़िया चीज। २ आम, आम्र।
नग्म- पुं० (अ० नग्मः का बहु०) गीत, राग।
नग्मा- पुं० (अ० नग्मः) १ राग, गीत। २ सुरीली और बढ़िया आवाज, मधुर स्वर।
नग्मात- स्त्री० (अ० नग्म का बहु०) १ गीत, राग। २ सुन्दर और सुरीले शब्द।
नग्मा-सरा- (अ०+फा०) १ गाने वाला, गायक। २ सुन्दर स्वर निकालने वाला।
नग्मासराई- स्त्री० (अ०+फा०) गाना, अलापना।
नज़अ- पुं० (अ०) मरने के समय साँस तोड़ना।
नज़दीक- वि० (फा० नज्दीक) निकट, पास, क़रीब, समीप।
नज़दीकी- वि० (फा० नज्दीकी) नजदीक या पास का, समीपस्थ। स्त्री० नजदीक का भाव, समीपता, सामीप्य, निकटता।
नज़फ- पुं० (अ०) १ ऊँचा टीला। २ अरब के एक नगर का नाम।
नज़्म- स्त्री० दे० "नज्म।"
नज़र- स्त्री० (अ०) (बहु० अन्ज़ार) १ दृष्टि, निगाह, मुहा०- नजर आना= दिखाई देना, दिखाई पड़ना। नजर पर चढ़ना= पसन्द आ जाना, भला मालूम होना। नजर पड़ना= दिखाई देना। नजर बाँधना= जादू या मंत्र आदि के जोर से किसी को कुछ कर दिखाना। २ कृपादृष्टि, मेहरबानी से देखना। ३ निगरानी, देख-रेख। ४ ध्यान, ख्याल। ५ परख, पहचान, शिनाख्त। ६ दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुन्दर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पड़कर उसे खराब कर देने वाला माना जाता है। मुहा०-नजर उतारना=बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मंत्र या युक्ति से हटा देना। नजर लगना=बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना। स्त्री० (अ० नज्र) १ भेंट, उपहार। २ अधीनता सूचित करने की एक रस्म जिसमें राजाओं आदि के सामने प्रजावर्ग के या अधीनस्थ लोग नक़द रुपया आदि हथेली में रखकर सामने लाते हैं।
नज़र-अन्दाज़- वि० (अ०+फा०) जिस पर नजर न पड़ी हो, नजर से चूका या गिरा हुआ।

नज़र-गाह- स्त्री० (अ०+फ़ा०) रंग शाला।

नज़र-गुजर- स्त्री० (अ० नजर+गुजर अनु० )बुरी नजर, कुट्टष्टि।

नज़र-फरेब- वि० (अ०+फा०) सुन्दर, लुभावना।

नज़र-बन्द- वि० (अ०+फा०) जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय जहाँ से वह कहीं आ जा न सके। पुं० सं० जादू या इन्द्रजाल आदि का वह खेल जिसके विषय में लोगों का यह विश्वास रहता है कि वह नजर बाँधकर किया जाता है।

नज़र-बन्दी- स्त्री० (अ०+फा०) १ राज्य की ओर से वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित या नियत स्थान पर रखा जाता है। २ नजर बन्द होने की दशा। ३ जदूगरी, बाजीगरी।

नज़र-बाग़- पुं० (अ०) महलों या बड़े बड़े मकानों आदि के सामने या चारों ओर का बाग।

नज़रबाज़- वि० (अ०+फा०) (सं० नजरबाज) १ तेज नजर रखने वाला, ताड़ने वाला, चालाक। २ नजर लड़ाने वाला, आँख लड़ाने वाला।

नज़रबाजी- स्त्री० (अ०+फा०) १ आँखें लड़ाने की क्रिया, २ ताक-झाँक।

नज़र-सानी- स्त्री० (अ० नजरेसानी) जाँचने के विचार से किसी देखी हुई चीज के फिर से देखना।

नज़रहाया- वि० (अ० नजर+हाया) (हिं० प्रत्य०) (स्त्री० नजर-हाई) नजर लगाने वाला।

नज़राना- पुं० (अ० नज+फा० आनः) (प्रत्य०) भेंट, उपहार, क्रि० वि० (अ० नजर=दृष्टि) नजर लगना, बुरी दृष्टि के प्रभाव में आना। क्रि० स० नजर लगाना।

नज़री- स्त्री० (अ०) अरबों के अनुसार शास्त्रो के दो भेदों में पहला भेद, वे शास्त्र जिनमें प्रत्यक्ष वस्तुओं का कल्पना के आधार पर विवेचन हो, जैसे- ज्योतिष, खनिज विद्या, तर्कशास्त्र आदि, हिक्मते इल्मी।

नज़रीया- पुं० (अ०) दृष्टिकोण।

नज़रीयात- पुं० (अ०) नजरीया का बहु०।

नज़ला- पुं० (अ० नज्लः) १ एक प्रकार का रोग जिसमें गरमी के कारण सिर का विकार युक्त पानी ढललकर भिन्न-भिन्न अंगों की ओर प्रवृत्त होकर उन्हें खराब कर देता है। २ जुकाम, सरदी।

नज़ला-बन्द- पुं० (अ०+फा०) १ औषध में तर क्रिया हुआ वह फाहा जो कनपटियों पर नजला रोकने के लिये लगाया जाता है। २ सोने के वर्क आदि का वह गोल टुकड़ा जो कुछ स्त्रियाँ शोभा के लिये कनपटियों पर लगाती हैं।

नजस- पुं० (अ०) नजिस या अपवित्र रहने का भाव अपवित्रता।

नज़ाकत- स्त्री० (अ० नाजुक से फा०) नाजुक होने का भाव, सुकुमारता, कोमलता।

नजात- स्त्री० (अ०) १ मुक्ति, मोक्ष। २ छुटकारा, रिहाई।

नज़ाद- पुं० (फा०) १ मूल। २ वंश, परिवार।

नज़ाबत- स्त्री० (अ० निज़ाबत) १ कुलीनता। २ सज्जनता, शराफत।

नज़ामत- स्त्री० दे० "निज़ामत"।

नजायर- स्त्री० (अ०) "नजीर" का बहु०।

नज़ार- वि० (फा०) १ दुबला-पतला, निर्धन, ग़रीब।

नज़ारत- स्त्री० (अ०) १ नजर रखने की क्रिया, देख-भाल, रक्षा, निगरानी। २ नाजिर का काम, पद व कार्यालय।

नज़ारा- पुं० (अ० नज्जारः) १ दृश्य। २ दृष्टि, नजर। ३ प्रिय को लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।

नज़ारा-बाज़ी- स्त्री० (अ०+फा०) नज़ारा लड़ाने की क्रिया या भाव।

नजासत- स्त्री० (अ०) १ गन्दगी, मैलापन। २ अपवित्रता।
नजिस- वि० (अ०) १ मैला, गन्दा। २ अपवित्र, अशुद्ध। यौ०- नजिस-उल्-ऐन= जो सदा अपवित्र रहे, कभी पवित्र न हो सके, जैसे- कुत्ता, शराब आदि।
नजीब- पुं० (अ०) (बहु० नुजब) श्रेष्ठ कुलवाला, कुलीन। यौ० नजीब-उल्-तरफैन= वह जिसकी माता और पिता दोनों उत्तम कुल के हों, सही-उल्-नसब, सिपाही, सैनिक।
नजीर- स्त्री० (अ०) (बहु० नजायर) उदाहरण, दृष्टान्त, मिसाल।
नजूम- पुं० दे० 'नुजूम।'
नजूल- पुं० (अ० नुजूल) १ उतरना, गिरना। २ आकर उपस्थित होना। ३ नजला नामक रोग। ४ वह रोग जो पानी उतरने के कारण हो। जैसे- मोतियाबिन्दु, अंड कोश की वृद्धि आदि। ५ नगर की वह भूमि जिसपर सरकार का अधिकार हो।
नज्जार- पुं० (अ०) लकड़ी के सामान बनाने वाला, बढ़ई, तरखान।
नज्जारगी- स्त्री० (अ० नज्जारः से फा०) नजारा लड़ाने की क्रिया, दीदार-बाजी।
नज्जारा- पुं० दे० 'नजारा।'
नज्जारी- स्त्री० (अ०) बढ़ई का काम या पेशा।
नज्द- पुं० (अ०) १ ऊँची जमीन, बाँगर। २ अरब के एक प्रसिद्ध नगर का नाम।
नज्म- पुं० (अ०) तारा, सितारा। यौ०- नज्म-उल्-हिन्द= भारत का सितारा, सितारए हिन्द।
नज्म- स्त्री० (अ०) १ मोतियों आदि को तागे में पिरोना। २ प्रबंध, व्यवस्था, बन्दोवस्त। यौ०- नज्म व नस्त्र= प्रबन्ध और व्यवस्था। ३ कविता।
नज्र- स्त्री० दे० 'नजर।'
नतीजा- पुं० (अ० नतीजः बहु० नतायज) परिणाम, फल।
नदामत- स्त्री० (अ०) (वि० नादिम) १ लज्जित होने का भाव, शरमिन्दगी, हलकापन। २ पश्चाताप। क्रि० प्र०-उठाना।
नदारद- वि० (फा०) जो मौजूद न हो, गायब, अप्रस्तुत, लुप्त।
नदीद- वि० (अ०) तुल्य, समान।
नदीदा- वि० (फा० ना-दीदः का संक्षिप्त रुप) (स्त्री० नदीदी) १ बिना देखा हुआ, अन-देखा। २ जिसने कभी कुछ देखा न हो, नजर लगाने वाला, लोभी, लोलुप।
नदीम- पुं० (अ०) (बहु० नुदमा) पार्श्ववर्त्ती, साथी, सहचर।
नद्दाफ- पुं० (अ०) रुई धुनने वाला, धुनिया।
नद्दाफी- स्त्री० (अ०) रुई धुनने का काम।
नफक़ा- पुं० (अ० नफकः) खाने-पीने का खर्च, भरण-पोषण का व्यय। यौ०- नान-नफक़ा= रोटी-कपड़ा या उसका व्यय।
नफर- पुं० (अ०) १ दास, सेवक, नौकर। २ व्यक्ति।
नफरत- स्त्री० (अ० नफ्रत) घृणा।
नफरत-आमेज- वि० (अ० नफ्रत + फा०) जिसे देखकर नफरत पैदा हो, घृणा उत्पन्न करने वाला।
नफरतज़दा- वि० (अ० नफ्रत +फाजदः) घृणित।
नफरीं- स्त्री० (फा०) १ शाप, बद-दुआ। २ लानत, धिक्कार।
नफरी- स्त्री० (फा० नफर) १ मजदूर की एक दिन की मजदूरी या काम। २ मजदूरी का दिन।
नफल- पुं० (अ० नफल) वह अतिरिक्त ईश्वर-प्रार्थना जो कर्त्तव्य न हो, केवल विशेष फल की कामना से की जाय।
नफस- पुं० (अ०) (बहु० अन्फास) १ श्वास-प्रश्वास, साँस। २ पल, क्षण। पुं० दे० 'नफस।'
नफस-परवर- वि० (अ०+फा०) मन को प्रसन्न करने वाला, मनोहर। वि० दे०

'नफसपरवर।'
नफसानियत- स्त्री० दे० 'नफसानियत।'
नफसानी- वि० दे० 'नफसानी।'
नफसी- वि० दे० 'नफसी।'
नफसे-वापसीं- पुं० (अ०+फा०) मरने के समय की अन्तिम साँस।
नफा- पुं० (अ० नफ्अ) लाभ।
नफाक़- पुं० दे० 'निफाक़।'
नफाज़- पुं० (अ०) १ प्रचलित होने की क्रिया, जारी होना। जैसे-हुक्म या फरमान को नफाज। २ एक चीज का दूसरी चीज में से होकर पार होना।
नफायस- स्त्री० (अ० 'नफीस' का वहु०) उत्तम वस्तुएँ।
नफास- पुं० (अ० निफास) १ प्रवृत्ति। २ वह रक्त जो प्रसव के उपरान्त चालीस दिनों तक स्त्रियों की जननेंद्रिय से निकलता रहता है। ३ आँवल, नाल, खेड़ी।
नफासत- स्त्री० (अ०) १ सफाई, स्वच्छता। २ नफीसका भाव, उम्दा-पन, उम्दगी, उत्तमता।
नफासतपसंन्द- वि० (अ०+फा०) सफाईपसन्द।
नफी- स्त्री० (अ०) १ न होने का भाव, अस्तित्व का अभाव। २ निकलना, दूर करना। ३ इन्कार, अस्वीकृति। मुहा०- नफी करना= १ घटाना, कम करना। २ दूर करना, हटाना। नफी में जवाव देना= इन्कार करना।
नफीर- वि० (अ०) नफरत या घृणा करने वाला, स्त्री० रोना चिल्लाना, फरियाद, पुकार। स्त्री० दे० 'नफीरी।'
नफीरी- स्त्री० (अ०) तुरही या क़रनाय नामक बाजा।
नफीस- वि० (अ०) १ उमदा, उत्तम, बढ़िया। २ साफ, स्वच्छ। ३ सुन्दर।
नफ्फार- वि० (अ०) नफरत या घृणा करने वाला।
नफ्स- पुं० (अ०) (बहु० नुफूस) १ आत्मा, रुह, प्राण। २ अस्तित्व। ३ वास्तविक तत्व, सत्ता। ४ पुरुष की इंद्रिय, लिंग। ५ काम-वासना। ६ ग्रन्थ में प्रतिपादित विषय या उसका मूल पाठ। पुं० दे० 'नफस।'
नफर- पुं० (अ०) १ व्यक्ति। २ मजदूर। ३ दास।
नफरी- स्त्री० (अ० नफर) १ मजदूरी। २ दिहाड़ी।
नफस- पुं० (अ०) १ सांस। २ क्षण। पुं० (अ० नफ्स) आस्तत्व, सत्ता।
नफ्स-उल्-अमर- क्रि० वि० (अ०) वास्तव में, वस्तुतः, दर-हक़ीक़त।
नफ्स-कुश- वि० (अ०+फा० संज्ञा नफ्स-कुशी) अपनी इंद्रियों का दमन करने वाला।
नफ्स-परवर- वि० (अ०+फा०) (सं नफ्स-परवरी) नफ्स-परस्त, इंद्रिय लोलुप।
नफ्स-परस्त- वि० (अ०+फा०) (सं नफ्स-परस्ती) अपनी इंद्रियों की वासन तृप्त करने वाला, इंद्रिय-लोलुप।
नफ्सा-नफ्सी- स्त्री० (अ० नफ्स) अप अपनी चिन्ता आपाधापी।
नफ्सानियत- स्त्री० (अ०) १ केवल अप शरीर की चिन्ता, स्वार्थपरता। २ अभिमा घमंड।
नफ्सानी- वि० (अ०) नफ्ससम्बन्धी, नप का।
नफ्सा- वि० (अ०) १ नफ्ससम्बन्धी। निजी, व्यक्तिगत।
नफ्सुलअम्र- स्त्री० (अ०) वास्तविकता।
नफ्से-अम्मारा- पुं० (अ० नफ्सेअम्मारः इन्द्रियों के भोग या दुष्कर्मों की ओर हो वाली प्रवृत्ति।
नफ्से-नफीस- पुं० (अ०) सुन्दर और शु व्यक्तित्व। (प्रायः बड़ों के सम्बन्ध में बोलते हैं।)
नफ्से-नबाती- पुं० (अ०) वनस्पति आदि में रहने वाली आत्मा।
नफ्से-नातिक़ा- पुं० (अ०) १ आत्मा, रुह।

२ बहुत प्रिय या विश्वसीनय व्यक्ति।

नफ्से-बहीमी- पुं० दे० "नफ्से-अम्मारा"।

नफ्से-मतलब- पुं० (अ०) वास्तविक उद्देश्य या तात्पर्य।

नफ्से-वापसीं- पुं० (अ०) मरने के समय का अन्तिम साँस।

नबवी- वि० (अ०) नबी सम्बन्धी, नबी का।

नबर्द- स्त्री० (फा०) युद्ध, समर, लड़ाई।

नबर्द-आज़मा- वि० (फा०) युद्धक्षेत्र का अनुभवी, वीर, योद्धा।

नबर्दगाह- स्त्री० (फा०) युद्धक्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

नबनी- वि० (अ०) नबी या पैगंबर सम्बन्धी।

नबात- स्त्री० (अ०) १ साग भाजी, तरकारी। २ मिसरी।

नबातात- स्त्री० (अ० "नबात" का बहु०) १ बनस्पति, साग तरकारियाँ।

नबाती- वि० (अ०) नबात या वनस्पति-सम्बन्धी।

नबी- पुं० (अ०) ईश्वर का दूत, पैगम्बर, रसूल।

नबीरा- पुं० (अ० नबीरः) पोता, पौत्र।

नबीसा- पुं० (अ० नबीसः) नाती, दौहित्र।

नबुअत- स्त्री० दे० "नबूवत"।

नबूवत- स्त्री० (अ०) नबी या पैगम्बर होने का भाव, पैगम्बरी, नबी-पन।

नब्ज़- स्त्री० (अ०) हाथ की वह रक्तवाही नाली जिसकी चाल से रोग की पहचान की जाती है। नाड़ी, मुहा०- नब्ज़ चलना= नाड़ी में गति होना। नब्ज़ छूटना= नाड़ी की गति या प्राण न रह जाना।

नब्बाज़- पुं० (अ०) नब्ज़ या नाड़ी देखने वाला, हकीम, वैद्य।

नब्बाज़ी- स्त्री० (अ०) नब्ज़ या नाड़ी देखकर रोग पहचानना, नाड़ी-परीक्षा, नाड़ी ज्ञान।

नब्बाश- पुं० (अ०) वह जो गड़े हुए मुरदे उखाड़कर उनका कफ़न आदि चुराता है।

नम- वि० (फा०) (सं० नमी) भीगा हुआ, आर्द, गीला, तर, (कुछ कवियों ने आर्दता या तरी के अर्थ में और संज्ञा के रुप में भी इसका प्रयोग किया है।

नमक- पुं० (फा०) १ एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जिससे भोज्य पदार्थो में एक प्रकार का स्वाद उत्पन्न होता है, लवण, नोन। मुहा०- नमक अदा करना= स्वामी के उपकार का बदला चुकाना। (किसी का) नमक खाना= (किसी के द्वारा) पालित होना, (किसी का) दिया खाना। नमक मिर्च मिलाना या लगाना= किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना। नमक फूट कर निकलना= नमक-हरामी की सज़ा मिलना, कृतघ्नता का दंड मिलना। कटे पर नमक छिड़कना= किसी दुखी को और भी दुःख देना। २ कुछ विशेष प्रकार का सौन्दर्य जो अधिक मनोहर या प्रिय हो, लावण्य।

नमकख्वार- वि० (फा०) (सं० नमकख्वारी) नमक खाने वाला, पालित होने वाला।

नमक-चशी- स्त्री० (फा० नमक+चशीदन= चखना) १ बच्चे को पहने पहल नमक खिलाने की रस्म, अन्नप्राशन। २ खाने की चीज़ मुँह में यह देखने के लिये रखना कि उसमें नमक पड़ा है या नहीं। ३ मुसलमानों में मँगनी के बाद होने वाली एक रसम।

नमक-दान- पुं० (फा०) नमक रखने का पात्र।

नमक-परवरदा- वि० (फा० नमक पर्वदः) किसी का पालित।

नमक-सार- पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो।

नमक-हराम- वि० (फा०+अ०) (सं० नमक-हरामी) वह जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उसी का द्रोह करे, कृतघ्न।

नमक-हलाल- वि० (फा०+अ०) (सं० नमक-हलाली) वह जो अपने स्वामी या अन्नदाता का कार्य धर्म पूर्वक करे, स्वामिनिष्ठ, स्वामि-भक्त।

नमकीं- वि० (फा०) नमकीन।
नमकीन- वि० (फा०) (सं० नमकीनी) १ जिसमें नमक का सा स्वाद हो। २ जिसमें नमक पड़ा हो। ३ सुंदर, खूबसूरत। पुं० वह पकवान आदि जिसमें नमक पड़ा हो।
नमगीरा- पुं० (फा० नमगीरः) १ ओस रोकने के लिये ऊपर ताना जाने वाला मोटा कपड़ा। २ शामियाना।
नमदा- पुं० (फा० नम्दः) जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।
नमनाक- वि० (फा०) गीला, तर, आर्द।
नमश,नमश्क- स्त्री० दे०"नमिश"।
नमाज़- स्त्री० (फा० मि० सं० नमन) मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना जो नित्य पाँच बार होती है।
नमाज़ी- पुं० (फा०) १ नमाज पढ़ाने वाला। २ वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर नमाज पढ़ी जाती है।
नमाज़े-इसतरका- स्त्री० (फा०+अ०) वह नमाज जो अकाल के दिनों में वृष्टि के उद्‌देश्य से पढ़ी जाती है।
नमाज़े-कुसूफ- स्त्री० (फा०+अ०) सूर्य ग्रहण के समय पढ़ी जाने वाली नमाज।
नमाज़-खुसूफ- स्त्री० (फा०+अ०) चंद्र ग्रहण के समय पढ़ी जाने वाली जाने वाली नमाज।
नमाज़े-ज़नाज़ा- स्त्री० (फा०+अ०) वह नमाज जो किसी के मरने पर उसके शव के पास खड़े होकर पढ़ते हैं।
नमाज़े-पंचगाना- स्त्री० (फा०) नित्य के पाँचों वक्त की नमाज।
नमाज़े-पेशी- स्त्री० (फा०) सबेरे की पहली नमाज।
नमाजे-मैयत- स्त्री० (फा०) दे० "नमाजे जनाजा"।
नामिश- स्त्री० (फा० नमश्क) एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।
नमी- स्त्री० (फा०) गीलापन, आर्दता।
नमीम- पुं० (अ०) चुगलखोर।
नमू- पुं० (अ०) १ वनस्पति। २ वृद्धि, बाढ़।
नमूद- स्त्री० (फा०) निकलने या उदित होने की क्रिया। २ स्पष्ट या प्रकट होने का भाव। ३ उभार। ४ तलवार की बाढ़। ५ निशान, चिह्न। ६ आस्तित्व। ७ शान शौकत। ८ प्रसिद्धि, शोहरत। ९ शेखी, घमंड, मुहा०- नमूद की लेना= शेखी हाँकना।
नमूदार- वि० (फा०) (सं० नमूदारी) १ प्रकट,जाहिर। २ सामने आया हुआ, उदित।
नमूना- पुं० (फा० नमूनः) १ अधिक पदार्थ में से निकला हुआ वह थोड़ा अंश जिससे उस मूल पदार्थ के गुण और स्वरुप आदि का ज्ञान होता है, बानगी। २ ढाँचा, ठाठ; खाका।
नम्द,नम्दा- पुं० दे० "नमदा"।
नयस्ताँ- पुं० (फा०) नै या नरसल का जंगल।
नर- वि० (फा० मि० सं० नर=पुरुष) पुरुष ज़ाति का (प्राणी), मादा का उल्टा।
नरग़ा- पुं० (यू० नर्गा) १ आदमियों का वह घेरा जो पशुओं का शिकार करने के लिये बनाया जाता है। २ भीड़, जनसमूह। ३ कठिनाई, विपत्ति।
नरगाव- पुं० (फा०) १ साँड। २ बैल।
नरगिस- स्त्री० (फा० नर्गिस) प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार का सफेद फूल लगता है, उर्दू फारसी के कवि इस फूल से आँख की उपमा देते हैं।
नरगिसी- वि० (फा० नर्गिसी) नरगिस संबंधी, नरगिस का, पुं० १ एक प्रकार का कपड़ा। २ एक प्रकार का तला हुआ अंडा।
नरगिसे-बीमार- स्त्री० (फा०) प्रेमिका की मस्त आँखें।
नरगिसे-शहला- स्त्री० (फा०) नरगिस का वह फूल जिसकी कटोरी पीली न होकर काली हो और इसीलिए मनुष्य की आँखो से अधिक मिलती जुलती हो।
नरम- वि० दे० "नर्म"।

नरमा- स्त्री० (फा० नर्मः) १ एक प्रकार की कपास, मनवा, देव-कपास, राम-कपास। २ सेमल की रुई। ३ कान के नीचे का भाग, लौ। ४ एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।
नरमी- स्त्री० दे० "नर्मी"।
नर-मेश- पुं० (फा० मि० सं० नर+मेष) मेंढ़ा।
नरी- स्त्री० (फा०) बकरी का रँगा हुआ चमड़ा जिससे प्रायः जूते बनते हैं।
नरीना- वि० (फा० नरीनः) नर या पुरुषजाति संबंधी, जैसे- औलादे-नरीना= पुरुष-संतान।
नर्गिस- स्त्री० दे० "नरगिस"।
नर्द- स्त्री० (फा०) १ चौसर या शतरंज आदि की गोटी, मोहरा। २ एक प्रकार का खेल।
नर्दबाज़- पुं० (फा०) चौसर का खिलाड़ी।
नर्दबान- स्त्री० (फा०) सीढ़ी, जीना।
नर्म- वि० (फा०) १ मुलायम, कोमल, मृदु। २ लचक्दार, लचीला। ३ मंदा। तेज का उल्टा। ४ धीमा, मद्धिम। ५ सुस्त, आलसी। ६ जल्दी पचने वाला, लघुपाक। ७ जिसमें पौरुष का अभाव या कमी हो।
नर्मएगोश- स्त्री० (फा०) कान की लौ।
नर्म-गर्म- वि० (फा०) १ भला बुरा। २ ऊँच नीच।
नर्म-तबीयत- वि० (फा०+अ०) विनम्र, विनीत।
नर्म-दिल- वि० (फा०) कोमल हृदय, उदार और दयालु।
नर्मी- स्त्री० (फा०) नर्म होने का भाव, नरम पन।
नवा- स्त्री० (फा०) १ संगीत, गाना बजाना। २ सुन्दर स्वर। ३ शब्द, आवाज़। ४ धन सम्पत्ति, दौलत। ५ सामग्री, सामान। ६ रोजी, जीविका। ७ भेंट, उपहार। ८ सेना, फौज।
नवाज़- वि० (फा०) (सं० नवाजी) १ कृपा या दया करने वाला, जैसे- बन्दा-नवाज़, गरीब-नवाज़। २ प्रसन्न या सन्तुष्ट करने वाला, जैसे- मेहमान-नवाज़।
नवाज़िश- स्त्री० (फा०) कृपा, दया, अनुग्रह, मेहरबानी।
नवाज़िशनामा- पुं० (फा० नवाजिशनामः) कृपापात्र।
नवाब- पुं० (अ० नव्वाब) १ मुगल सम्राटों के समय बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश का शासक होता था। २ एक उपाधि जो आजकल छोटे-मोटे मुसलमानी राज्यों के मालिक अपने नाम के साथ लगाते हैं। ३ राजा की उपाधि के समान एक उपाधि जो मुसलमान अमीरों को अँग्रेजी सरकार की ओर से मिलती है। वि० बहुत शान-शौकत और अमीरी ढंग से रहने वाला।
नवाबी- स्त्री० (अ० नव्वाब) १ नवाब का पद। २ नवाब का काम। ३ नवाब होने की दशा। ४ नवाबों का राजत्व काल। ५ नवाबों की सी हुकूमत। ६ बहुत अधिक अमीरी।
नवाला- पुं० (फा० नवालः) ग्रास, कौर।
नवासा- पुं० (फा० नवासः) (स्त्री० नवासी) बेटी का बेटा, दौहित्र।
नवाह- स्त्री० (अ०) आसपास के प्रदेश। यौ०- गिर्द व नवाह= आसपास के स्थान।
नविश्त- स्त्री० (फा०) १ लिखा हुआ काग़ज़ या लेख आदि। २ दस्तावेज़, तमस्सुक।
नविश्ता- वि० (फा० नविश्तः) लिखा हुआ, लिखित। पुं० १ दस्तावेज या तमस्सुक आदि लिखित लेख। २ भाग्य, प्रारब्ध, तक्दीर।
नविश्तोख्वाँद- पुं० (फा०) लिखा-पढ़ी।
नवी- वि० (फा०) नया, नवीन।
नवीस- वि० (फा०) लिखने वाला, लेखक, कातिब। जैसे- अर्ज़ीन-वीस, अखबार-नवीस।
नवीसिन्दा- वि० (फा० नवीसिन्दः) लिखने वाला, लेखक।

नवीसी- स्त्री० ( फा० ) लिखने की क्रिया या भाव, लिखाई।
नवेद- स्त्री० ( फा० ) शुभ समाचार। पुं० निमंत्रणपत्र, ( विशेषतः विवाह आदि का )।
नवैयत- स्त्री० ( अ० नौईयत ) १ प्रकार, किस्म। २ विशेपता, खूबी।
नव्वाब- पुं० दे० "नवाब"।
नव्वाबी- स्त्री० दे० "नवाबी"।
नशतर- पुं० दे० "नश्तर"।
नशर- वि० ( अ० ) १ बिखरा हुआ। २ दुर्दशा ग्रस्त।
नशा- पुं० ( अ० नशाऽ ) १ उत्पन्न करना, बनाना। २ संसार, पुं० ( अ० नश्शः ) १ वह अवस्था जो शराब, अफीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीन से होती है। मुहा०- नश किरकिरा हो जाना= किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मजा बीच में बिगड़ जाना। (आँखो में) नशा छाना= नशा चढ़ना, मस्ती चढ़ना। नशा जमना= अच्छी तरह नशा होना। नशा हिरन होना= किसी असंभावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना। २ वह चीज जिससे नशा हो, मादक द्रव्य, यौ०- नशा-पानी= मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। ३ धन, विद्या, प्रभुत्व या रुप आदि का घमंड़, अभिमान, मद, गर्व, मुहा०- नशा उतारना= घमंड़ दूर करना।
नशाखोर- पुं० ( अ०+फा० ) ( सं० नशाखोरी ) वह जो नशे का सेवन करता हो।
नशात- पुं० ( अ० ) १ उत्पत्ति। २ प्राणी, जीव, स्त्री० दे० "निशात"।
नशान- पुं० ( फा० ) निशान।
नशास्ता- पुं० ( फा० ) गेहूँ का सत्र।
नशिस्त- स्त्री० दे० "निशस्त"।
नशीं- वि० दे० "नशीन"।
नशीन- वि० ( फा० ) १ बैठने वाला। २ बैठा हुआ।
नशीला- वि० ( अ० नश्शः+ईला प्रत्य० ) ( स्त्री० नशीली ) १ नशा उत्पन्न करने वाला, मादक। २ जिस पर नशे का प्रभाव हो। मुहा०- नशीली आँखें= वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो।
नशूर- पुं० दे० "नुशूर"।
नशेब- पुं० ( फा० निशेब ) १ नीची भूमि। २ निचाई। यौ०- नशेब व फराज़= १ ऊँचाई और निचाई। २ जमाने का ऊँच-नीच, संसार के दुःख-सुख।
नशे-बाज़- वि० ( अ० नश्शः+फा० बाज़ ) ( सं० नशे-बाजी ) वह जो बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करता हो।
नशेमन- पुं० ( फा० निशिमन ) १ विश्राम् करने का एकान्त स्थल, आराम करने की जगह। २ पक्षियों का घोंसला। ३ भवन।
नशेमन-गाह- स्त्री० ( फा० ) विश्राम-स्थल, आराम-गाह।
नशो- पुं० ( अ० नश्व ) १ उत्पन्न होना और बढ़ना। यौ०- नशो-नुमा= १ उत्पन्न होकर बढ़ना। २ उन्नति, बृद्धि।
नशूअत- स्त्री० ( अ० ) उत्पत्ति, आविर्भाव।
नश्तर- पुं० ( फा० ) एक प्रकार का बहुत तेज छोटा चाकू, इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरने में होता है।
नश्र- पुं० ( अ० ) १ प्रकट या प्रसिद्ध करना। २ प्रसार, फैलाव। ३ चिन्ता, मानसिक कष्ट। ४ सुगंधि। ५ जीवन।
नश्व- पुं० ( अ० ) उद्भव, विकास।
नश्वा- पुं० ( फा० ) १ सुगंधि। २ सचेत होना।
नसतालीक़- पुं० ( अ० नस्तऽलीक़ ) १ फारसी या अरबी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर खूब साफ और सुन्दर होते हैं। घसीट या "शिकस्त का उल्टा। २ वह जिसका रंग ढंग बहुत अच्छा और सुन्दर हो।
नसनास- पुं० ( अ० नस्नास ) एक प्रकार का कल्पित बन-मानुस। जिसका एक हाथ, एक पाँव, तथा एक ही कान होता है।
नसब- पुं० ( अ० ) १ वंश, कुल, खानदान। २ वंशावली।

नसबनामा- पुं० (अ०+फा० नामः) वंशावली, वंश-वृक्ष।
नसबी- वि० (अ०) वंश या कुल-सम्बन्धी।
नसर- स्त्री० दे० "नस्त्र"।
नसरानी- पुं० (अ०) ईसाई।
नसरीन- स्त्री० दे० "नस्रीन"।
नसल- स्त्री० दे० "नस्ल"।
नसायम- स्त्री० (अ०) "नसीम" का बहु०।
नसायह- स्त्री० (अ० "नसीहत" का बहु०) उपदेश।
नसारा- पुं० (अ०) ईसाई।
नसीब- पुं० (अ०) भाग्य, प्रारब्ध, मुहा०- नसीब होना= प्राप्त होना, मिलना।
नसीबवर- वि० (अ०+फा०) भाग्यवान्, सौभाग्यशाली।
नसीबा- पुं० दे० "नसीब"।
नसीबे-आदा- (अ० नसीबे अअदा) दुश्मनों का नसीब। (जब किसी प्रिय के रोग आदि का उल्लेख करते हैं, तब इस पद का प्रयोग करते हैं। जैसे- नसीबे-आदा उन्हें बुखार हो आया है)
नसीबे-दुश्मनाँ- दे० "नसीबे आदा"।
नसीम- स्त्री० (अ०) (बहु० नसायम) शीतल, मन्द और सुगंधि वायु, यौ०- नसीमे-सहर या नसीमे सहरी= प्रातःकाल की सुन्दर वायु।
नसीर- पुं० (अ०) १ सहायक, मददगार। २ ईश्वर का एक नाम।
नसीहत- स्त्री० (अ०) (बहु० नसायत) १ उपदेश, सीख। २ अच्छी सम्पत्ति।
नसीहत-आमेज- वि० (अ०+फा०) जिसमें नसीहत भी शामिल हो।
नसीहत-गो- पुं० (अ०+फा०) नसीहत या उपदेश देनेवाला, उपदेशक।
नसूह- पुं० (अ०) वह तौबा जो कभी तोड़ी न जय, पक्की तौबा, वि० शुद्ध, साफ, निर्मल।
नस्क़- पुं० (अ०) १ प्रणाली, दस्तुर। २ व्यवस्था, इन्तजाम, यौ०- नज्म व नस्क़= प्रबन्ध और व्यवस्था।
नस्ख- पुं० (अ०) १ प्रतिलिपि, नक़्ल। २ किसी चीज़ से अच्छी चीज बना कर उस पुरानी चीज को रद्द या नष्ट कर देना। ३ अरबी की एक लिपि प्रणाली जिसके प्रचलित होने पर पहले की पाँच लिपि प्रणालियाँ रद्द हो गई थीं।
नस्तरन- पुं० (फा०) १ सफेद गुलाब। २ एक तरह का कपड़ा।
नसतालीक़- वि० (अ०) शिष्ट, सभ्य।
नस्ब- पुं० (अ०) (बहु० अन्साब) १ स्थापित करना। २ खड़ा करना, जैसे- खेमा नस्ब करना।
नस्र- स्त्री० (अ०) १ सहायता, मदद। २ पक्ष का समर्थन। ३ गद्य लेख, पुं० गिद्ध पक्षी, उक़ाब।
नस्रीन- पुं० (फा०) सेवती, जंगली गुलाब।
नस्ल- स्त्री० (अ०) १ सन्तान। २ वंश, कुल, यौ०- नस्लन् बाद नस्लन= पुश्त दर पुश्त, वंशानुक्रम से।
नस्लदार- वि० (अ०+फा०) (सं० नस्लदारी) उत्तम वंश का।
नस्ली- वि० (अ०) नस्ल या वंश सम्बन्धी।
नस्साज- पुं० (अ०) जुलाहा।
नस्सार- पुं० (अ०) वह जो अच्छा गद्य लिखता हो, गद्य-लेखक।
नहंग- पुं० (फा०) घड़ियाल।
नहज- पुं० (अ०) १ सीधा रास्ता। २ तौर तरीका, रंग-ढंग।
नहर- स्त्री० (फा० नह्र) वह कृत्रिम जल मार्ग जो खेतों की सिंचाई या यात्रा आदि के लिये तैयार किया जाता है।
नहरी- वि० (फा० नह्र) नहर-सम्बन्धी, नहर का, स्त्री० वह भूमि जो नहर के जल से सींची जाती हो।
नहल- स्त्री० (अ० नह्ल) शहद की मक्खी, मधु-मक्षिका।
नहस- वि० (अ० नह्स) अशुभ, मनहूस।
नहाफत- स्त्री० (अ०) "नहीफ" का भाव,

दुर्बलता।
नहार- पुं० (अ०) दिन, दिवस, यौ०- लैलो नहार= रात और दिन, वि० (फा० मि० सं० निराहार) जिसने सबेरे से कुछ खाया न हो, बासी मुँह, मुहा०- नहार मुँह= बिना सवेरे से कुछ खाये हुए। नहार तोड़ना= जल-पान करना।
नहारी- स्त्री० (फा०) १ जलपान। २ एक प्रकार की शोरबेदार तरकारी।
नही- स्त्री० (अ० नह्इ) निषेध, मनाही।
नहीफ़- वि० (अ०) (सं० नहाफ़त) दुबला-पतला।
नहीब- पुं० (अ०) १ भय, डर। २ लूट-पाट।
नहुत्फ़ा- वि० (फा० नहुत्फ़ः) छिपा हुआ, गुप्त।
नहूसत- स्त्री० (अ०) १ मनहूस होने का भाव, उदासीनता, मनहूसी। २ अशुभ लक्षण।
नहो- स्त्री० (अ० नहव) १ रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा। २ व्याकरण।
नहूव- पुं० (अ०) पद्धति।
नहूस- वि० (अ०) अशुभ, अमांगलिक।
नहूसू- वि० (अ०+फा०) मनहूस।
ना- (फा० मि० सं० ना) एक प्रत्यय जो शब्दों के आरम्भ में लग कर "नहीं" या "अभाव" आदि सूचित करता है। जैसे- ना-इत्तफ़ाक़ी, ना-पाक, ना-चीज़, ना-हक़ आदि।
ना-अहल- वि० (फा०+अ०) १ अयोग्य। २ असभ्य।
ना-आशना- वि० (फा०) (सं० ना-आशनाई) जिससे आशनाई या जान पहचान न हो, अनजान, अपरिचित।
ना-इत्तफ़ाक़ी- स्त्री० (फा०+अ०) इत्तफ़ाक़ या एकता न होना, अनबन, बिगाड़।
ना-इन्साफ़- वि० (फा०+अ०) (सं० ना-इन्साफ़ी) अन्यायी।
ना-इन्साफ़ी- स्त्री० (फा०+अ०) अन्याय।
ना-उम्मीद- वि० (फा०) निराश।
ना-उम्मीदी- स्त्री० (फा०) निराशा।
नाक- वि० (फा०) भरा हुआ, पूर्ण। (प्रत्यय के रुप में यौगिक शब्दों के अन्त में लगता है। जैसे- ग़म-नाक, दर्दनाक।)
ना-कतखुदा- वि० (फा०) अविवाहित, कुँआरा।
ना-कदखुदा- वि० (फा०) अविवाहित, कुँआरा।
ना-कदखुदाई- स्त्री० (फा०) अविवाहित अवस्था, कौमार।
ना-कन्द- पुं० (फा०) १ दो साल से कम उमर का घोड़ा, बछेड़ा। २ वह जो कम उमर का हो, कमसिन, बच्चा। ३ नासमझ, अनाड़ी, मूर्ख।
ना-क़दर- वि० दे० "नाक़द्र"।
ना-क़दरी- स्त्री० (फा० नाक़द्र) गुणों का आदर न करना, क़दर न करना।
ना-क़द्र- वि० (फा०+अ०) जो किसी की कद्र न समझे, जो गुणों का आदर न करें।
नाक़द्री- स्त्री० (फा०+अ०) अवमान, तिरस्कार।
नाक़बूल- वि० (फा०+अ०) अस्वीकृत।
ना-करदनी- वि० स्त्री० (फा०) न करने योग्य, नामुनासिब (बात)।
ना-करदा- वि० (फा० ना-कर्दः) जो किया न हो, बिना किया। जैसे- ना-करदा जुर्म।
ना-करदगार- वि० (फा० ना-कर्दःगार) जिसे अनुभव न हो, अनजान, अनाडी।
नाकस- वि० (फा०) (नाकसी) १ नीच। २ तुच्छ।
नाकसी- स्त्री० (फा०) नीचता, अधमता।
नाकाम- वि० (फा०) विफल क्रि० वि० व्यर्थ।
नाकमियाब- वि० (फा०) विफल, असफल।
नाक़ा- स्त्री० (अ० नाक़ः) मादा ऊँट, ऊँटनी, साँडनी।
नाक़ाबिल- वि० (फा० सं०

ना-क़ाबिलीयत) १ जो क़ाबिल या योग्य न हो। २ अशिक्षित।

ना-काम- वि० (फा०) (सं० ना-कामी) १ जिसका उद्‌देश्य सिद्ध न हुआ हो, विफल मनोरथ। २ निराश नाउम्मेद।

नाकारा- वि० (फा० नाकारः) १ जो काम में न आ सके, निकम्मा, निरर्थक। २ नालायक, अयोग्य।

नाक़ा-सवार- पुं० (अ०+फा०) १ वह जो ऊँटनी पर सवार हो। २ पत्र या सन्देश ले जाने वाला, हरकारा।

नाक़िल- वि० (अ०) १ नक़्ल या अनुकरण करने वाला। २ प्रतिलिपि करने वाला। ३ वर्णन करने वाला।

नाक़िला- पुं० (अ० नाक़िलः) (बहु० नवाक़िल) १ इतिहास। २ कथा कहानी।

नाक़िस- वि० (अ०) १ जिसमें कुछ नुक्स या त्रुटि हो, त्रुटिपूर्ण। २ अधूरा, अपूर्ण। ३ बुरा, निकम्मा।

नाक़िस-उल्-अक्ल- वि० (अ०) खराब अक्ल वाला, निकृष्ट बुद्धिवाला।

नाक़िस-उल-खिल्कत-वि० (अ०) जन्म से ही जिसका कोई अंग खराब हो, जन्म का विकलांग।

नाकूस- वि० (अ०) शंख जो फूँक कर बजाया जाता है।

ना-खलफ- वि० (फा०+अ०) (सं० नाखलफी) ना-लायक, अयोग्य। (पुत्र के लिये)

नाखुदा- पुं० (फा० नाव+खुदा) मल्लाह, नाविक।

नाखुन- पुं० (फा०) १ नाखून, नख, मुहा०- अक्ल के नाखून लेना= बुद्धि से काम लेना, बुद्धिमान् बनना। यौ०- नाखुने-शमशेर= तलवार की धार। २ पशुओं का खुर, सुम।

नाखुन-गीर- पुं० (फा०) नाखून काटने का औजार, नहरनी।

नाखुना- पुं० (फा० नाखुनः) १ सितार बजाने का मिजराब। २ आँख का एक रोग जिसमें आँख की सफेदी में एक लाल झिल्ली-सी पैदा हो जाती है।

नाखुश- वि० (फा०) अप्रसन्न।

ना-खुशी- स्त्री० (फा०) अप्रसन्नता, नाराज़गी।

नाखून- पुं० (फा०) नाखून, नख।

नाख्वाँदा- वि० (फा० नाख्वाँदः) १ बिना बुलाया हुआ। २ जो पढ़ा-लिखा न हो, अशिक्षित।

नागवार- वि० (फा०) १ जो हज़म न हो, जो न पचे। २ जो अच्छा न लगे, अप्रिय। ३ असह्य।

ना-गवारा- वि० दे० "ना-गवार"।

नागहाँ- क्रि० वि० (फा०) अचानक, सहसा, एकाएक।

नागहानी- वि० (फा०) अचानक होने वाला। जैसे- नागहानी मौत, स्त्री० अचानक या सहसा होने का भाव।

नाग़ा- पुं० (तु० नाग़ः) किसी निरन्तर या नियत अवसर पर न होना, अंतर, बीच।

नागाह- क्रि० वि० (फा०) सहसा, अचानक, एकाएक।

ना-गुज़ीर- वि० (फा०) परम आवश्यक, अनिवार्य।

नागुफ्ता- वि० (फा० नागुफ्तः) जो कहा न गया हो, अकथित।

नाचाक़- वि० (फा०) १ अस्वस्थ, बीमार। २ दुबला-पतला। ३ जिसमें कुछ मजा न हो, आनन्द रहित।

ना-चाक़ी- स्त्री० (फा० नाचाक़) १ अस्वस्थता, बीमारी। २ अनबन, बिगाड़, मनमुटाव।

नाचार- वि० (फा०) जिसको कोई चारा न हो, विवश, मजबूर। क्रि० वि० लाचारी की हालत में विवश होकर।

नाचारी- स्त्री० (फा०) १ लाचारी, विवशता, मजबूरी।

नाचीज़- वि० (फा०) तुच्छ, निकृष्ट।

नाज़- पुं० (फा०) १ नखरा, चोचला, मुहा०- नाज़ उठाना= चोचला सहना। २ घमंड, गर्व।

नाज़नीं- स्त्री० (फा०) सुंदरी।

नाज़परर्वर्दा- वि० (फा० नाज़परर्वर्दः) १ जिसे नाज़ से पाला गया हो। २ सुकुमार।

नाज़बालिश- पुं० (फा०) छोटा मुलायम तकिया।

नाज़रीन- पुं० दे० "ना-ज़रिन"।

नाज़-व-नियाज़- पुं० (फा०) नाज-नखरा, चोचला।

नाज़ाँ- वि० (फा०) नाज या अभिमान करने वाला, अभिमानी।

ना-जायज़- वि० (फा०+अ० जाइज़) जो जायज़ न हो, जो नियम विरुद्ध हो, अनुचित।

नाज़िम- पुं० (अ०) १ वह जो लड़ी बनाता या पिरोता हो। २ इन्तजाम करने वाला, व्यवस्थापक। ३ नज्म या पद्य बनाने वाला, कवि। ४ मुसलमानी राज्यकाल में वह प्रधान कर्मचारी जो किसी देश का शासक और व्यवस्थापक होता था।

नाज़िर- पुं० (अ०) १ नजर करने या देने वाला। २ निरीक्षक। ३ अदालत या कार्यालय में लेखकों का प्रधान। ४ ख्वाजा, महलसरा। ५ वेश्याओं का दलाल।

नाज़िरा- क्रि० वि० (अ० नाज़िरः) ग्रंथ आदि देखकर (पढाना) पुं० १ देखने की शक्ति, दृष्टि। २ आँख।

नाज़िराख्वाँ- वि० (अ०+फा०) (सं० नाज़िरा ख्वानी) जो कोई ग्रन्थ, विशेषतः कुरान, केवल देख कर पढ़ता हो और जिसे कंठस्थ न हो।

नाज़िरीन- पुं० (अ० नाजिर का बहु०) १ देखने वाले लोग, दशेकगण। २ पढ़ने वाले लोग।

नाज़िल- वि० (फा०) उतरने या नीचे आने वाला, गिरने वाला। मुहा०- नाज़िल होना= १ ऊपर से नीचे आना। २ आ पहुँचना या पड़ना, जैसे- बला नाजिल होना।

नाज़िला- पुं० (अ० नाज़िलः) आपत्ति, संकट, मुसीबत।

नाज़िश- स्त्री० (फा०) १ नाज करना। २ घमंड या अभिमान, इतराहट।

ना-जिन्स- वि० (फा०+अ०) १ दूसरे वर्ग या जाति का। २ अनमेल। ३ अयोग्य, नालायक। ४ कमीना ५ अशिक्षित, असभ्य।

नाज़ुक- वि० (फा०) १ कोमल, सुकुमार। २ पतला, महीन, बारीक। ३ सूक्ष्म, गूढ़। ४ जरा से झटके या धक्के से टूट-फूट जाने वाला। यो०- नाज़ूक मिज़ाज= जो थोड़ा सा कष्ट भी न सह सके। ५ जिसमें हानि या अनिष्ट की आशंका हो, जोखिमभरा, जोखों का।

नाजुक-अन्दाम- वि० (फा०) दुबले-पतले और नाजुक बदन वाला।

नाजुक-कलाम- वि० (फा०+अ०) (सं० नाजुकलामी) सूक्ष्म और बढ़िया बातें कहने वाला।

नाजुक-ख्याल- वि० (फा०+अ०) (सं० नाजुकख्याली) बहुत ही सूक्ष्म विचारों वाला।

नाजुक-तबा- वि० दे० "नाजुक मिजाज"।

नाजुक-दिमाग़- वि० (फा०+अ०) (सं० नाजुकदिमाग़ी) १ जरा सी बात में जिसका दिमाग़ खराब हो जाय, चिड़चिड़ा। २ अभिमानी।

नाजुक-बदन- वि० (नाजुकबदनी) दे० "नाजुक अन्दाम"।

नाजुक-मिज़ाज- वि० (फा०+अ०) (सं० नाजुकमिजाजी) १ जो थोड़ा सा भी कष्ट न सह सके। २ जल्दी बिगड़ जाने वाला, चिडचिडा। ३ घमंड़ी।

नाजुकी- स्त्री० (फा०) १ नाजुक होने होने का भाव, नजाक्त। २ कोमलता, मुलामियत। ३ उत्तमता, खूबी। ४ घमंड, अभिमान।

ना-ज़ेब- वि० (फा०) जो देखने में ठीक न जान पड़े, भद्दा, बेमेल।

नाज़ेबा- वि० (फा० ना-ज़ेब) १ दे० "नाजेब"। २ अनुचित, ना-मुनासिब।

ना-तजरुबेकार- वि० (फा०+अ०) (सं० ना-तजरुबेकारी) जिसे तजरुबा या अनुभव

न हो, अनुभवहीन, अनुभवी।
ना-तमाम- वि० (फा०+अ०) अपूर्ण, अधूरा।
ना-तराश- वि० (फा०) १ जो तराशा या छीला न गया हो, अनगढ़। २ असभ्य, उजड्ड।
ना-तराशीदा- वि० दे० "ना-तराश"।
ना-तवाँ- वि० (फा०) कमज़ोर, दुर्बल, अशक्त।
ना-तवानी- स्त्री० (फा०) कमजोरी, दुर्बलता, अशक्तता।
ना-ताक़त- वि० (फा०+अ०) (सं० ना़ताकती) दुर्बल, कमजोर।
नातिक़- पुं० (अ०) १ वह जो बोलता हो, बोलने वाला। २ बुद्धिमान्, अक्लमन्द। वि० १ स्थायी, दृढ़, पक्का। २ अन्तिम।
नातिक़ा- पुं० (अ० नातिक़ः) बोलने की शक्ति, वाक्-शक्ति।
नातुवाँ- वि० (फा०) निर्बल, कमजोर।
नातुवानी- स्त्री० (फा०) निर्बलता, कमजोरी।
नाद-ए-अली- स्त्री० (अ०) १ एक मंत्र जो प्रायः जमर-मोहरे या चाँदी के पत्र पर खोदकर बच्चों के गले में, उन्हें भय और रोग आदि से बचाने के लिये, पहनाते है। २ जहर-मोहरे का पतला टुकड़ा जो इस प्रकार बच्चों के गले में पहनाया जाता है।
ना-दहिन्द- वि० दे० "नादिहंद।"
नादान- वि० (फा०) (सं० नादानी) नासमझ, अनजान, मूर्ख।
ना-दानिस्तगी- स्त्री० (फा०) अनजानपन।
ना-दानिस्ता- क्रि० वि० (फा० नादानिस्तः) अनजान में।
नादानी- स्त्री० (फा०) ना-समझी, मूर्खता।
नादार- वि० (फा०) (सं० नादारी) ग़रीब, दरिद्र, मुफलिस।
नादिम- वि० (अ०) (सं० नदामत) १ शर्मिन्दा, लज्जित। २ पश्चाताप करने वाला।
नादिर- वि० (अ०) (बहु० नादिरात, नवादिर) १ अनोखा, अद्भुत, विलक्षण। २ दुष्प्राप्य। ३ बहुत बढ़िया, पुं० फारस का एक बादशाह जिसने मुहम्मद शाह के समय भारत पर चढ़ाई की थी और दिल्ली में बहुत नर हत्या कराई थी।
नादिर-गरदी- स्त्री० दे० "नादिरशाही"।
नादिर-शाही- स्त्री० (फा०) नादिरशाह का सा अत्याचार और कुप्रबन्ध।
नादिरा- वि० दे० "नादिर"।
नादिरी- स्त्री० (फा०) १ एक प्रकार की सदरी या कुरती। २ गंजीफे या ताश के पत्तों में एक्का। ३ नादिरशाही।
नादिहन्द- वि० (फा० ना+अ० दहिन्द) (सं० ना-दिहन्दी) जो जल्दी रुपया पैसा न दे, देने में तरह तरह के झगड़े निकालने वाला।
ना-दीदा- वि० (फा० नादीदः) १ जो देखा न हो, बिना देखा हुआ। २ जिसने कुछ देखा न हो। ३ जो खाने पीने की चीज पर नजर रखे, न-दीदा।
नादुरुस्त- वि० (फा०) (नादुरुस्ती) १ जो दुरुस्त या ठीक न हो। २ अनुचित, ना-मुनासिब।
नान- स्त्री० (फा०) रोटी।
नानकार- पुं० (फा०) वह धन या भूमि जो किसी के निर्वाह के लिये दिया जाय।
नानकोर- वि० (फा०) विश्वासघात करने वाला।
नानखताई- स्त्री० (फा०) टिकिया के आकार की एक प्रकार की सोंधी खस्ता मिठाई।
नानपाव- स्त्री० (फा० नान+पुर्त० पाव=रोटी) एक प्रकार की मोटी बड़ी रोटी। पावरोटी।
नानबा- पुं० (फा०) नानबाई।
नानबाई- पुं० (फा० नान+आबा=शोरबा+ई प्रत्य०) रोटी पकाने या बेचने वाला।
नान-व-नफक़ा- पुं० (फा० नान-व-नफकः) रोटी कपड़ा, खाने पहनने का खर्च। भरण पोषण का व्यय।

नाना- पुं० (अ० नअनअ) पुदीना।
नाने-जवीं- स्त्री० (फा०) १ जौ की रोटी। २ गरीबों का रुखा-सूखा भोजन।
नापसन्द- वि० (फा०) १ जो पसंद न हो। जो अच्छा न लगे। २ अप्रिय।
नापाक- वि० (फा०) (सं० नापाकी) १ अपवित्र, अशुद्ध। २ मैला-कुचैला।
नापायदार- वि० (फा०) (संव० पायदारी) जो मजबूत या टिकाऊ न हो, कमजोर।
नापुख्ता- वि० (फा० नापुख्तः) अशक्त, कमजोर, अपक्व।
ना-पैद- वि० (फा० ना+पैदा) १ जो अभी तक पैदा या उत्पन्न न हुआ हो। २ विनष्ट। ३ अप्राप्य।
ना-पैदा- वि० (फा०) १ जो पैदा न हुआ हो। २ गुप्त, छिपा हुआ। ३ विनष्ट, बरबाद१
नाफ- स्त्री० (फा० मि० सं० नाभि) १ जरायुज जन्तुओं के पेट के बीच का चिह्न या गड्ढा, नाभि, तोंदी, तुंदी। २ मध्यभाग।
नाफरजाम- वि० (फा० नाफर्जाम) १ जिसका अन्त बुरा हो। २ अयोग्य, निकम्मा।
ना-फरमान- पुं० (फा० नाफर्मान) एक प्रकार का पौधा जिसके फूल ऊदे या बैंगनी होते है। वि० आज्ञा न मानने वाला, उद्दण्ड।
ना-फरमानी- पुं० (फा० नाफर्मानी) एक प्रकार का ऊदा या बैंगनी रंग। स्त्री० आज्ञा न मानना, अवज्ञा।
ना-फहम- वि० (फा० ना-फहम) जिसे फहम या समझ न हो, ना-समझ।
ना-फहमी- स्त्री० (फा० ना-फहमी) ना-समझी, मुर्खता।
नाफा- पुं० (फा० नाफः) कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि से निकलती है। वि० दे० "नाफिअ"।
नाफिअ- वि० (अ० नाफिS) नफा या लाभ पहुँचाने वाला, लाभदायक।
नाफिज़- वि० (अ०) जारी या प्रचलित होने वाला।
नाफिर- वि० (अ०) नफरत या घृणा करने वाला।
नाब- वि० (फा०) १ खालिस, निर्मल, बे-मैल। २ शुद्ध, पवित्र। ३ अच्छी तरह भरा हुआ, लबालब, परिपूर्ण, स्त्री० तलवार पर की वह नाली जो दोनों तरफ एक सिरे से दूसरे सिरे तक होती है, पुं० (अ०) १ दाढ़ का दाँत। २ हाथी का दाँत। ३ साँप का जहरीला दाँत।
ना-बकार- वि० (फा०) १ व्यर्थ का, निरर्थक। २ अयोग्य, नालायक। ३ दुष्ट, पाजी। ४ अनुचित।
नाबदान- पुं० (फा० नाब=नाली) वह नाली जिससे मैला पानी आदि बहता है, पनाला, नरदा।
ना-बलद- वि० (फा०+अ०) १ गँवार, उजड्ड, मुर्ख, अनाड़ी। २ अपरिचित, अनजान।
ना-बालिग़- वि० (फा०+अ०) (सं० नाबालिग़ी) जो पूरा जवान न हुआ हो, अप्राप्त वयस्क।
नाबीना- वि० (फा०) अन्धा।
नाबूद- वि० (फा०) १ जिसका अस्तित्व न रह गया हो, बरबाद। २ नष्ट होने वाला, नश्वर।
ना-मंजूर- (फा०+अ०) (सं० ना-मंजूरी) जो मंजूर न हो, अस्वीकृत।
नाम- पुं० (फा० मि० सं० नाम) १ वह शब्द जिससे किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, प्रसिद्ध, यश।
नामआवर- वि० (फा०) प्रसिद्धि, नामवर।
नामआवरी- स्त्री० (फा०) प्रसिद्धि, कीर्ति, यश।
नामए-आमाल- पुं० (फा०+अ०) वह पत्र जिसपर किसी के अच्छे और बुरे सब कार्यों का उल्लेख हो, आमालनामा।
नामज़द- वि० (फा०) १ प्रसिद्ध, मशहूर। २ किसी के नाम पर रखा या निकाला हुआ। ३ जिसका नाम किसी विषय में

लिखा गया हो। जैसे- तहसीलदारी के लिए चार आदमी नामज़द हुए हैं।

नामज़दगी- स्त्री० (फा०) नामांकन।

नामदार- वि० (फा०) प्रसिद्ध, नामवर, नामी।

नामर्द- वि० (फा०) (नामर्दी) १ नपुंसक। २ डरपोक, कायर।

नामर्दी- स्त्री० (फा०) १ नपुंसकता, क्लीवता। २ कायरता, बोदा-पन।

नामर्दुम- वि० (फा०) अधम, नीच।

नामर्दुमी- स्त्री० (फा०) अधमता, नीचता।

नामवर- वि० (फा०) प्रसिद्धि, यशस्वी।

नामवरी- स्त्री० (फा०) प्रसिद्धि, यश।

नामहद्दूद- वि० (फा०+अ०) जिसकी हद न हो, असीम।

नामहरूम- वि० (फा०+अ०) अपरिचित, अजनबी, बाहरी। पुं० मुसलमान स्त्रियों के लिये ऐसा पुरुष जिससे विवाह हो सकता हो और जिससे परदा करना उचित हो।

नाम व निशान- पुं० (फा०) १ नाम और चिन्ह, नाम और लक्षण। २ नाम और पता।

नाम-वर- वि० (फा० 'नाम-आवर' का संक्षिप्त रुप) पंसिद्ध, मशहूर।

नामवरी- स्त्री० (फा० 'नाम-आवरी' का संक्षिप्त रुप) प्रसिद्धि, शोहरत।

नामा- पुं० (फा० नामः) १ खत, पत्र। २ ग्रन्थ, पुस्तक।

ना-माकूल- वि० (फा०+अ०) (ना-माकूलियत) १ अयोग्य, नालायक। २ अयुक्त, अनुचित।

नामा-निगार- वि० (फा०) (नामा-निगारी) समाचार लिखने वाला, सामाचार-लेखक, संवाददाता, रिपोर्टर।

नामाबर- पुं० (फा० नामः बर) पत्र-वाहक, हरकारा।

ना-मालूम- वि० (फा०+अ०) १ जिसे मालूम न हो, अनजान, अपरिचित, अजनबी। २ अज्ञात। ३ अप्रसिद्ध।

नामी- वि० (फा०) १ नामवाला, नामधारी, नामक। २ प्रसिद्ध; मशहूर। यौ०- नामी-गरामी= बहुत प्रसिद्ध।

ना-मुआफिक़- वि० (फा०+अ०) (ना-मुआफिक़त) १ जो मुआफिक़ या उपयुक्त न हो। २ जो अनुकूल न हो, विरुद्ध। ३ जो अच्छा न लगे।

नामुक़िर- वि० (फा०+अ०) जो इकरार या स्वीकार न करे।

नामुबारक- वि० (फा०+अ०) अशुभ।

ना-मुनासिब- वि० (फा०+अ०) अनुचित।

ना-मुमकिन- वि० (फा०+अ० मुम्किन) असंभव।

ना-मुराद- वि० (फा०) (ना-मुरादी) १ जिसकी कामना पूरी न हुई हो, विफल-मनोरथ। २ अभागा, बद-किस्मत।

नामुलाइम- वि० (फा०) १ कठोर, कड़ा। २ अनुचित, ना-मुनासिब।

नामूस- स्त्री० (फा०) १ प्रतिष्ठा, इज्जत, नेकनामी। २ पातिव्रत, स्त्रियों का सदाचार। ३ लज्जा, गैरत।

नामूसी- स्त्री० (फा० नामूस) १ बेइज्जती। २ बदनामी।

नामेखुदा- (फा०) ईश्वर कुदृष्टि से बचावे, ईश्वर करे, नजर न लगे। जैसे- वह चाँद-सा मुँह नामेखुदा और ही कुछ हैं।

ना-मौजू- वि० (फा०) १ जो मौजूँ या उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त। २ बे-जोड़। ३ अनुचित।

नाय- स्त्री० (फा०) १ नरकट। २ बाँसुरी।

नायज़ा- पुं० (फा० नायज़ः) पुरुष की इंद्रिय, लिंग।

नायब- पुं० (अ०) १ किसी की ओर से काम करने वाला, मुनीब, मुख्तार। २ सहायक, सहकारी।

नायबत- स्त्री० (अ०) नायब का कार्य वा पद, नायबी।

नायबी- स्त्री० (अ० नायब) नायब का कार्य या पद।

नायाब- वि० (फा०) १ जो जल्दी न मिले, अप्राप्य। २ बहुत बढ़िया।

नारंगी- स्त्री० (फा० मि० सं० नागरंग) १

नीबू की जाति का एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगन्धित और रसीले फल लगते हैं। २ नारंगी के छिलके का-सा रंग। वि0- पीलापन लिये हुए लाल रंग का।

नारंज- पुं0 (फा0) नारंगी, संतरा, कमला नीबू।

नारंजी- वि0 (फा0) नारंगी के रंग का (पीला)।

नार- स्त्री0 (अ0) (बहु0 नैरान) अग्नि, आग। पुं0 (फा0 अनार) यौगिक में 'अनार' का संक्षिप्त रुप। जैसे- गुल-नार।

नारजील- पुं0 (फा0) नारियल, नारिकेल।

ना-रवा- वि0 (फा0) १ अनुचित, ना-मुनासिब, ग़ैरवाजिब। २ नियम आदि के विरुद्ध। ३ अप्रचलित। ४ विफल-मनोरथ।

ना-रसा- वि0 (फा0) (ना रसाई) १ जो उद्दिष्ट स्थान तक न पहुँच सके। २ जिसका कुछ प्रभाव न हो।

नारा- पुं0 (अ0 नअरः) १ जोर की आवाज़, घोष। २ युद्ध का विजय-घोष। क्रि0 प्र0- नारा लगाना। ३ पीड़ा या कष्ट के समय चिल्लाने का शब्द।

नाराज़- वि0 (फा0+अ0) अप्रसन्न, रुष्ट, नाखुश, खफा।

नाराज़गी- स्त्री0 दे0 "नाराजी"।

नाराज़न- वि0 (अ0+फा0) (सं0 नाराजनी) नारा लगाने वाला, जोर से पुकारने या घोष करने वाला।

ना-राज़ी- स्त्री0 (फा0+अ0) अप्रसन्नता, रुष्टता, खफ़गी।

ना-रास्त- वि0 (फा0) १ जो सीधा न हो, टेढ़ा। २ जो ठीक न हो।

नारी- वि0 (अ0) १ अग्नि सम्बन्धी, अग्नि का। २ दोज़ख की आग में जलने वाला, दोज़खी, नारकीय।

नाल- पुं0 (फा0 मि0 सं0 नालक) १ सूत की तरह का रेशा जो किलिक की कलम से निकलता है। २ नरसल, नरकट, पुं0 (अ0 नअल) १ लोहे का वह अर्धचंद्राकार खंड जिसे घोड़ों की टाप के नीचे या जूतों की एड़ी के नीचे उन्हें रगड़ से बचाने के लिए जड़ते हैं। २ तलवार आदि के म्यान की साम जो नाक पर मढ़ी होती है। ३ कुंडलाकार गढ़ा हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसके बीचों-बीच पकड़ कर उठाने के लिये एक दस्ता रहता है। इसे कसरत करने वाले उठाते हैं। ४ लकड़ी का वह चक्कर जिसे नीचे डाल कर कुएँ की जड़ाई की जाती है। ५ वह रुपया जो जुआरी जूए का अड्डा रखने वाले को देते हैं। ६ लकड़ी के जूते।

नाल-बन्द- (अ0+फा0) (सं0 नालबन्दी) जूते की एड़ी या घोड़े की टाप में नाल जड़ने वाला।

नाल-बहा- पुं0 (अ0+फा0) वह धन जो अपने से बड़े राजा या महाराजा को कोई छोटा राजा देता है, खिराज।

नालाँ- वि0 (फा0) १ जो रोता हो, रोने वाला। २ रोकर फ़रियाद या नालिश करनेवाला।

नाला- पुं0 (फा0 नालः) १ रोकर प्रार्थना करना, बावैला, रोना-धोना। २ शोरगुल, मुहा0- नाला खींचना= आह करना, दीर्घश्वास लेना।

नालाकश- वि0 (फा0 नालःकश) प्रार्थना या फरियाद करने वाला।

ना-लायक- वि0 (फा0+अ0 लाइक़) अयोग्य, निकम्मा, मूर्ख।

ना-लायक़ी- स्त्री0 (फा0+अ0 लाइक़ी) अयोग्यता।

नालिश- स्त्री0 (फा0) किसी के द्वारा पहुँचे हुए दुःख या हानि का ऐसे मनुष्य के निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो, फरियाद, यौ0- नालिशे दीवानी= दीवानी मुकदमा। नालिशे फौजदारी= फौजदारी मुकदमा।

नालिशी- वि0 (फा0) १ नालिश करने वाला, नालिश-सम्बन्धी।

नालैन- पुं0 (अ0) जूतों का जोड़ा।

नाव- स्त्री0 (फा0 मि0 सं0 नौ) नौका,

किश्ती।

नावक- पुं० (फा०) १ एक प्रकार का छोटा वाण। २ मधु-मक्खी का डंक। पुं० (सं० नाविक) केवट, मल्लाह।

नावक-अफगन- वि० (फा०) (सं० नावक-अफगनी) तीर चलाने वाला।

ना-वक्त- वि० (फा०+अ०) (सं० ना-वक्ती) १ जो ना-मुनासिब वक्त पर हो, बे-वक्त, कुसमय, क्रि० वि० अनुचित अवसर पर, बेमौके, पुं० देर।

नावदान- पुं० (फा०) परनाला, मोर।

नावनेश- स्त्री० (फा०) रंगरली।

ना-वाक़िफ- वि० (फा०+अ०) अपरिचित, अनजान।

ना-वाकिफीयत- स्त्री० (फा०+अ०) वाक़फीयत या जानकारी का अभाव, अनजानपन।

नावाजिब- वि० (फा०+अ०) अनुचित, ना-मुनासिब, ग़ैरवाजिब।

नाश- स्त्री० (अ० नअश) १ मृतक की रथी, ताबूत। २ मृत शरीर, लाश। ३ सप्तर्षि।

नाशपाती- स्त्री० (फा०) मझोले डील डौल का एक पेड़ जिसकें फल प्रसिद्ध मेवों में गिने जाते हैं।

ना-शाइस्ता- वि० (फा० नाशाइस्तः) १ अनुचित, ना-मुनासिब। २ अनुपयुक्त। ३ असभ्य, उजड्ड।

ना-शइस्तगी- स्त्री० (फा०) १ अनौचित्य। २ अनुपयुक्तता। ३ असभ्यता, उजड्डपन।

ना-शाद- वि० (फा०) १ अप्रसन्न, दुःखी, नाखुश, नाराज २ अभागा, बदकिस्मत, यौ०- नाशाद व नामुराद= अभागा और विफल मनोरथ।

ना-शिकेब- वि० (फा०) १ अधीर। २ विफल, बेचैन।

ना-शिकेबा- वि० दे० 'नाशिकेब'।

नाशिता- पुं० (फा०) १ सुबह से भूखा रहना, कुछ न खाना। २ सवेरे का भोजन, जलपान।

नाशी- वि० (अ०) नौजवान।

ना-शुकरा- वि० दे० "नाशुक्र"।

ना-शुकरी- स्त्री० (फा०) कृतघ्नता।

ना-शुक्र- वि (फा०) कृतघ्न।

ना-शुक्रगुज़ार- वि० (फा०+अ०) कृतघ्न।

ना-शुक्रगुज़ारी- स्त्री० (फा०+अ०) कृतघ्नता।

ना-शुदनी- वि० (फा०) १ जो न हो सके, ना-मुमकिन, असम्भव। २ जो होनहार न हो अयोग्य, नालायक। ३ अभागा, कमबख्त।

नाश्ता- पुं० (फा० नाशितः) जलपान, कलेवा।

नासज़ा- वि० (फा०) ना-मुनासिब, अनुचित।

ना-सज़ावार- वि० (फा०) १ अनुचित। २ अनुपयुक्त, गैरवाजिब। ३ असभ्य, उज्जड, गँवार।

ना-सबूर- वि० (फा०) १ जिसे सब्र न हो, अधीर। २ बेचैन।

ना-समझ- वि० (फा० ना+हिं० समझ) जिसे समझ न हो, निर्बुद्धि, बेवकूफ।

ना-समझी- स्त्री० (फा० ना+हिं० समझ) बेवकूफी।

नासह- वि० (अ० नासिह) नसीहत या उपदेश देने वाला, उपदेशक।

ना-साज- वि० (फा०) (सं० ना-साजी) १ विरोधी। २ जो उपयुक्त न हो। ३ अस्वस्थ, बीमार।

नासिख- पुं० (अ०) १ लिखनेवाला, लेखक। २ नष्ट या रद्द करने वाला।

ना-सिपास- वि० (फा०) (सं० ना-सिपासी) कृतघ्न, नमक-हराम।

नासिया- पुं० (फा० नासियः) मस्तक, माथा। यौ०- नासिया-साई= १ ज़मीन पर माथा रगड़ना, चरम सीमा की दीनता दिखलाना।

नासिर- वि० (अ०) (बहु० अन्सार) (सं० पुं० अ०) नसर यस गद्य लिखने वाला, गद्य-लेखक, मदद करने वाला, सहायक।

नासूत- पुं० (अ०) मर्त्यलोक।
नासूर- पुं० (अ०) घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारणा घाव जल्दी अच्छा नहीं होता, नाड़ी-व्रण।
ना-हंजार- वि० (फा०) १ दुश्चरित्र, बद-चलन। २ दुष्ट, पाजी। ३ नालायक, अयोग्य। ४ कमीना।
ना-हक़- क्रि० वि० (फा०+अ०) वृथा, व्यर्थ, बे-फायदा।
नाहक-शनास- वि० (फा०+अ०) (सं० नाहक़-शनासी) जो औचित्य या न्याय का ध्यान न रखे, अन्यायी।
ना-हमवार- वि० (फा०) (सं० ना-हमवारी) १ जो हमवार या समतल न हो, ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा। २ नालायक।
नाहार- वि० (फा०) जिसने सुबह से कुछ खाया न हो, नाहार मुँह।
नाहीद- पुं० (फा०) शुक्र ग्रह।
निआमत- स्त्री० दे० 'नियामती'
निक़रिस- पुं० (अ०) पैरों में होने वाला एक प्रकार का गठिया-का दर्द।
निक़ात- पुं० (अ०) नुक्ता का बहु०।
निक़ाब- स्त्री० (अ०) नक़ाब।
निकाह- पुं० (अ०) मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।
निकाह-नामा- पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिस पर निकाह और मुहर (वधु को दिये जाने वाले धन) का उल्लेख हो।
निकाती- वि० (अ० निकाह) स्त्री जिसके साथ निकाह हुआ हो।
निको- वि० (फा०) उत्तम, अच्छा, नेक। जैसे- निका-नामी= नेक-नामी। निकोकारी= अच्छे काम।
निक़ोई- स्त्री० (फा०) १ नेकी, भलाई, उपकार, उत्तमता। अच्छापन। ३ सद्व्यवहार।
निकोहिश- स्त्री० (फा०) १ धिक्कार, लानत। डाँट-डपट, धमकी।
निक्मत- स्त्री० (अ०) १ कष्ट, पीड़ा। २ मनोमालिन्य, द्वेष।
निखालिस- वि० (हिं० नि+अ० खालिस) १ जो खालिस या शुद्ध न हो, जिसमें मिलावट हो। २ दे० 'खालिस'।
निगन्दा- पुं० (फा० निगन्दः) १ एक प्रकार की बढ़िया सिलाई, बखिया। २ लिहाफ, रजाई आदि में रुई को जमाए रखने के लिए की जाने वाली दूर-दूर की सिलाई।
निगर- प्रत्य० (फा०) देखने वाला।
निगराँ- वि० (फा०) निगरानी या देख-रेख करने वाला, रक्षक। २ प्रतीक्षा करने वाला।
निगरानी- स्त्री० (फा०) देख-रेख, निरीक्षण।
निगह- स्त्री० दे० 'निगाह'।
निगह-बान- पुं० (फा०) निगाह या देख-रेख रखने की क्रिया, रक्षा, हिफाजत।
निगार- वि० (फा०) (सं० निगारी) कलम आदि से लिखने या बेल-बूटे बनाने वाला। जैसे- नामा-निगार। पुं० १ चित्र, तसबीर। २ मूर्ति, प्रतीक। ३ प्रिय, प्यारा। ४ शोभा के लिए बनाये हुए बेल-बूटे आदि।
निगार-खाना- पुं० (फा०) चित्रशाला।
निगारिश- स्त्री० (फा०) १ लिखना, लेखन। २ लेख, लिपि। ३ बेल-बूटे बनाना।
निगारिस्तान- पुं० (फा०) चित्रशाला।
निगारीं- वि० (फा०) १ जिसने अपने हाथों-पैरों में मेंहदी लगाई हो। २ प्रिय, प्यारा।
निगारे-आलम- पुं० (फा०+अ०) वह जो संसार में सबसे अधिक सुन्दर हो।
निगाह- स्त्री० (फा०) १ दृष्टि, नजर, देखने की क्रिया या ढंग, चितवन, कताई। ३ कृपादृष्टि, मेहरवानी। ४ ध्यान, विचार। ५ परख, पहचान।
निगाह-बान- पुं० दे० 'निगह-बान'।
निगाह-बानी- स्त्री० दे० 'निगहबानी'।
निगूँ- वि० (फा०) १ झुका हुआ, नत। जैसे- सर-निगूँ= जो सिर झुकाए हो। २

टेढ़ा, वक्र। ३ रहित, हीन। जैसे- निगूँ-बख्त= कम्बख्त, अभागा। निगूँ-हिम्मत= कायर।

निज़दात- स्त्री० (फा० निज्द) अमानत की रकम या मद।

निज़ा- पुं० (अ० निज़ाअ) १ झगड़ा, विवाद, लड़ाई। २ शत्रुता, दुश्मनी, वैर। (कुछ कवियों ने इसे स्त्रीलिंग भी माना है।)

निज़ाई- वि० (अ०) १ निज़ाअ-सम्बन्धी, झगड़े का। २ जिसके सम्बन्ध में झगड़ा हो। जैसे- निज़ाई ज़मीन।

निजाबत- स्त्री० (अ०) 'नजीब' का भाव, कुलीनता।

निज़ाम- पुं० (अ०) १ मोतियों या रत्नों आदि की लड़ी। २ जड़, बुनियाद। ३ क्रम, सिलसिला। ४ इन्तज़ाम, बन्दोबस्त, व्यवस्थ, हैदराबाद के शासकों का पदवी सूचक नाम।

निज़ामत- स्त्री० (अ०) १ व्यवस्था, प्रबन्ध, २ नाजिम का कार्य, पद या कार्यालय।

निज़ामे-बतलीमूस- पुं० (अ०) हकीम बतलीमूस का वह सिद्धान्त कि पृथ्वी सारी सृष्टि का केन्द्र है और सब ग्रह-नक्षत्र आदि पृथ्वी की ही परिक्रमा करते हैं।

निज़ामे-शम्सी- पुं० (अ०) सौर, चक्र, सूर्य और ग्रहों आदि का क्रम या व्यवस्था।

निज़ार- वि० (अ०) १ दुबला, दुर्बल। २ कमजोर, निर्बल। ३ दरिद्र, ग़रीब, असमर्थ।

निज़्द- क्रि० वि० (फा०) १ निकट, पास। २ सामने, आगे, दृष्टि में।

निदा- स्त्री० (अ० मि० सं० नाद) १ पुकारने की आवाज या क्रिया, पुकार, हाँक। २ सम्बोधन का शब्द। जैसे- ऐ, ओ, हे आदि।

निफ़ाक़- पुं० (अ०) भीतरी वैर या छल-कपट। २ शत्रुता, दुश्मनी। ३ विरोध। जैसे- निफ़ाक़-राय= मत-भेद।

निफ़ाक़ता- पुं० (अ० निफाक़ से उर्दू) (स्त्री० निफ़ाक़ती) छल करने वाला, कपटी।

निफ़ाज़- पुं० (अ०) प्रचलन।

निफास- पुं० दे० 'नफास'।

नि-बख्ता- वि० (हिं० नि०+फा० बख्त) (स्त्री० निबख्ती) कम्बख्त, अभागा।

नियाज़- स्त्री० (फा०) १ कामना, इच्छा। २ प्रेम-प्रदर्शन। ३ दीनता, आबिजी। ४ बड़ो का प्रसाद। ५ मृतक केह उद्देश्य से दरिद्रों को भोजन आदि देना, फातिहा, दुरूद। ६ भेट, उपहार। ७ बड़ो से होने वाला परिचय। मुहा०- नियाज़ हासिल करना= किसी बड़े की सेवा में उपस्थित होना।

नियाज़-मन्द- वि० (फा०) (सं० नियाज-मन्दी) १ इच्छा या कामना रखने वाला। २ सेवक, अधीनस्थ।

नियाज़ी- वि० (फा०) १ प्रेमी। २ प्रिय। ३ मित्र।

नियाबत- स्त्री० (अ०) १ नायब होने की क्रिया या भाव। २ स्थानापन्न होना। ३ प्रतिनिधित्व।

नियाम- पुं० (फा०) तलवार की म्यान।

नियमत- स्त्री० (अ० नेअमत) (बहु० नअम) १ अलभ्य पदार्थ, दुर्लभ पदार्थ। २ स्वादिष्ट भोजन, उत्तम व्यंजन। ३ धन-दौलत।

नियामत-ग़ैर-मुतरक्क़िबा- (अ०+फा०) वह धन या उत्तम वस्तु जिसके मिलने की पहले से कोई आशा न हो।

नियामत-परवरदा- वि० (अ०+फा०) जिसका पालन-पोषण बहुत सुख से हुआ हो, दुलारा।

निर्ख़- पुं० (फा०) भाव, दर।

निर्ख़नामा- पुं० (फा० निर्ख़नामः) वह पत्र जिस पर सब चीजों का निर्ख़ या भाव लिखा हो।

निर्ख़-बन्दी- स्त्री० (फा०) भाव या दर निश्चित करना।

निर्ख़ी- पुं० (फा०) वह जो निर्ख़ या दर ठहराता हो।

निवाला- स्त्री० (फा० नवालः) ग्रास,

कौर।

निशस्त- स्त्री० (फा०) बैठने का भाव या क्रिया, बैठक। यौ०- निशस्त-बरखास्त= १ उठना-बैठना। २ सज्जनें की मंडली में रहने की कला या तौर-तरीका।

निशस्त-गाह- स्त्री० (फा०) बैठने का स्थान, बैठक।

निशा-खातिर- स्त्री० (फा० निशाँ अ०) खातिर तसल्ली, सन्तोष, दिल-जमई।

निशात- स्त्री० (फा० नशात) १ सुख, आनन्द। २ आनन्द मंगल, सुखभोग।

निशान- पुं० (फा०) १ लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जा सके, चिह्न। २ किसी पदार्थ से अंकित किया हुआ चिह्न। ३ शरीर अथवा और किसी पदार्थ पर का चिह्न दाग या धब्बा। ४ वह चिह्न जो अनपढ़ आदमी अपने हस्ताक्षर के बदले में किसी काग़ज आदि पर बनाता है। यौ०- नाम-निशान= १ किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। २ अस्तित्व का लेश, बचा हुआ थोड़ा अंश। ३ पता, ठिकाना। मुहा०- निशान देना= १ आसामी को समन्स आदि तामील करने के लिये पहचनवाना। २ समुद्र में या पहाड़ों आदि पर बना हुआ वह स्थान जहाँ लोगों को मार्ग आदि दिखाने के लिये कोई प्रयोग किया जाता हो। ३ ध्वजा, पताका, झंडा। मुहा०- किसी बात का निशान उठना या खड़ा करना= किसी काम में अगुआ या नेता बनकर लोगों को अपना अनुयायी बनाना। ४ दे० 'निशाना'। ५ दे० 'निशानी'।

निशानची- पुं० (फा० निशान+हिं० ची प्रत्य०) वह जो किसी राजा, सेना या दल आदि के आने झंडा लेकर चलता हो, निशानबरदार।

निशान-देही- स्त्री० (फा०) आसामी को सम्मन आदि की तामील के लिये पहचनवाने की क्रिया।

निशान-बरदार- पुं० दे० 'निशानची'।

निशाना- पुं० (फा० निशानः) १ वह जिस पर ताक्कर किसी अस्त्र या शस्त्र आदि का वार किया जाय, लक्ष्य। २ किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करना। मुहा०- निशाना बाँधना= वार करने के लिये अस्त्र आदि के इस प्रकार साधना जिसमें ठीक लक्ष्य पर वार हो। निशाना मारना या लगाना= ताक्कर अस्त्र आदि का वार करना। ३ वह जिस पर लक्ष्य करके कोई व्यंग या बात कही जाय।

निशाना-अन्दाज़- पुं० (फा०) (सं० निशानः अन्दाज़ी) वह जो बहुत ठीक निशाना लगाता हो।

निशानी- स्त्री० (फा०) १ स्मृति के उद्देश्य से दिया अथवा रखा हुआ पदार्थ, यादगार, स्मृति चिह्न। २ वह चिह्न जिससे कोई चीज पहचानी जाय।

निशास्ता- पुं० (फा० निशास्तः) १ गेहूँ को भिगोकर उसका निकाला या जमाया हुआ सत या गूदा। २ माड़ी, कलफ।

निशीद- पुं० (फा०) गाने बजाने की आवाज, संगीत का शब्द।

निसबत- स्त्री० (अ० निस्बत) १ संबंध, लगाव, ताल्लुक। २ मँगनी, विवाह संबंध की बात। ३ तुलना, मुक़ाबला।

निसबती- वि० (अ० निस्बत) निसवत या सम्बन्ध रखनेवाला, सम्बन्धी। यौ०- निसबती भाई= १ बहनोई। २ साला।

निसवाँ- स्त्री० (अ० निसाऽ का बहु०) स्त्रियाँ, महिलाएँ। जैसे- तालीमे निसवाँ= स्त्री-शिक्षा।

निसा- स्त्री० बहु० (अ०) स्त्रियाँ।

निसाब- पुं० (अ०) १ मूल धन, पूँजी। २ सम्पत्ति, दौलत। ३ उतना धन जिस पर जकात देना कर्तव्य हो।

निसार- पुं० (अ०) निछावर करने की क्रिया, सदका, निछावर। वि० निछावर किया हुआ।

निसियाँ- पुं० दे० 'निसियान'।

निसियान- पुं० (अ०) १ भूलना, याद न रखना, स्मरण शक्ति का अभाव। २ भूल,चूक, ग़लती।

निस्फ- मि० (अ०) आधा, अर्द्ध।
निस्फ-उन्नहार- पुं० (अ०) शीर्ष-बिन्दु जहाँ सूर्य ठीक दोपहर के समय पहुँचता है।
निस्फनिस्फ- वि० (अ० निस्फ) ठीक आधा-आधा, आधे-आध।
निस्बत- स्त्री० दे० 'निसबत'।
निस्बाँ- स्त्री० दे० 'निसबाँ'।
निस्यान- पुं० (अ०) विसमरण, विस्मृति।
निस्वत- स्त्री० (अ०) औरत, स्त्री।
निस्वाँ- स्त्री० (अ०) निस्वत का बहु०।
निहंग- पुं० (फा०) १ घड़ियाल या मगर नामक जलजन्तु। यौ०- निहंगे अजल= यमदूत। २ तलवार, आंसे। वि० (सं० निःसंग) १ जिसके साथ कोई न हो, अकेला। २ नंगा।
निहंग-लाड़ला- वि० (हिं० नहंग+लाड़ला) जो माता-पिता के दुलान के कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।
निहाँ- वि० (फा०) छिपा हुआ।
निहाद- स्त्री० (फा०) १ मूल, जड़, असल, बुनियाद। २ मन, हृदय। ३ स्वभाव। जैसे- नेक निहाद= सुशील।
निहानी- स्त्री० (फा०) छिपाने की क्रिया। वि० गुप्त, छिपा हुआ। जैस- अन्दामे निहानी= स्त्री के गुप्त अंग।
निहायत- वि०(अ०) अत्यन्त, बहुत, स्त्री० इद, सीमा।
निहाल- पुं० (फा०) १ नया लगाया हुआ वृक्ष या पौधा। २ तोशक, गद्‌दा। ३ शिकार, आखेट। वि० (फा०) जो सब प्रकार से संतुष्ट और प्रसन्न हो गया हो, पूर्ण-काम।
निहालचा- पुं० (फा० निहालचः) तोशक, गद्‌दा।
निहाली- स्त्री० (फा०) १ तोशक, गददा। २ लिहाफ, रजाई। ३ निहाई।
निहुफ्ता- वि० (फा० निहुफ्तः) गुप्त, छिपा हुआ।
नीको- वि० (फा०) १ अच्छा, बढ़िया, उत्तम। २ सुन्दर।
नीकोई- स्त्री० (फा०) १ अच्छापन। २ उपकार, भलाई।
नीकोकार- वि० (फा०) (सं० नीकोकारी) अच्छे या शुभ कर्म करने वाला।
नीज़- अव्य० (फा०) १ और। २ भी।
नीम- वि० (फा०) आध, अर्द्ध। पुं० बीच, मध्य।
नीम-अस्तीन- स्त्री० दे० 'नीमास्तीन'।
नीम-कश- वि० (फा०) (तलवार या तीर आदि) जो पूरा खींचा न गया हो, बल्कि आधा अन्दर और आधा बाहर हो।
नीम-खुर्दा- वि० (फा० नीम+खुर्दः) जूठा, उच्छिष्ट।
नीमचा- पुं० (फा० नीमचः) एक प्रकार की छोटी तलवार या कटारी।
नीमजाँ- वि० (फा०) १ जिसकी आधी जान निकल चुकी हो, केवल आधी वाकी हो, अधमरा। २ मीरणोन्मुख, मरणासन्न।
नीम-निगाह- स्त्री० (फा०) आधी या तिरछी नजर, कनखी।
नीमबज़- वि० (फा०) आधा खुला और आध बन्द। जैसे- नीमबज़ आँखें।
नीम-बिस्मिल- वि० (फा०) १ जो आधा जबह किया गया हो, अधमरा किया हुआ। २ घायल।
नीम-रज़ा- वि० (फा०) १ थोड़ी बहुत रज़ामंदी। २ कुछ संतोष या प्रसन्नता।
नीम-राज़ी- वि० (फा०) जो आधा राज़ी हो गया हो।
नीम-रोज़- पुं० (फा०) दो-पहर।
नीमा- पुं० (फा० नीमः) १ स्त्रियों के ओढ़ने का बुरका। २ एक प्रकार का ऊँचा जामा। वि० आधा।
नीमास्तीन- स्त्री० (फा० आस्तीन) आधी आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।
नीयत- स्त्री० (अ०) आन्तरिक लक्ष्य, उद्‌देश्य, आशय, संकल्प, इच्छा, मंशा। यौ०- नीयते बद= बुरा इरादा। मुहा०- नीयत डिगना या बद होना= बुरा संकल्प होना। नीयत बदल जाना= १ संकल्प या विचार और का और होना, अनुचित या

बुरी बात की ओर प्रवृत्त होना। नीयत-बाँधना= संकल्प करना, इरादा करना। नीयत भरना= जी भरना, इच्छा पूरी होना। नीयत में फर्क़ आना= बेईमानी या बुराई सूझना। नीयत लगी रहना= इच्छा लगी रहना, जी ललचाया करना।

नील- पुं० (फा० मि० सं० नील) १ एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नला रंग निकलता है। मुहा०- नाल बिगड़ना या नील का माट बिगड़ना= १ नील का हौज या माट खराब होना जिससे नील का रंग तैयार नहीं होता। २ चाल-चलन बिगड़ना। ३ अशुभ बात होना। नील की सलाई फेरवाना= आँख फोड़वाना, अन्ध करना। नील ढलना= मरते समय आँखो से जल गिरना। नील जलाना= वर्षा रोकने के लिये नील जलाकर टोटका करना। २ गहरा नीला या आस्मानी रंग। ३ चोट का नीले या काले रंग का दाग जो शरीर पर पड़ जाता है। मुहा०- नील का टीका= लांछन, कलंक।

नीलगर- पुं० (फा०) नील बनाने वाला।

नीलगूँ- वि० (फा०) नीले रंग का।

नीलफाम- वि० (फा०) कृष्णा वर्ण, साँवला।

नीलम- पुं० (फा० मि० सं० नीलमणि) नीलमणि, नीले रंग का रत्न, इंद्रनील।

नीलाम- पुं० (पुर्त० लीलाम) बिक्री का एक ढंग जिसमें माल उस आदमी को दिया जाता है जो सबसे अधिक दाम लगाता है, बोली बोल कर बेचना।

नीलोफर- पुं० (फा० मि० सं० नीलोत्पल) १ नीलकमल। २ कुई, कुमुद।

नुक्ता- पुं० (अ० नुक्तः) (बहु० नुकात) १ वह गूढ़ और बुद्धिमत्तापूर्ण बात जिसे सब लोग सहज में न समझ सकें, बारीक या सूक्ष्म बात। २ चोज-भरी बात, चुटकुला। ३ घोड़े के मुँह पर बाँधा जाने वाला चमड़ा। ४ त्रुटि, दोष, ऐब।

नुक़्ता- पुं० (अ० नुक्तः) (बहु० नुकात, नुक्त) बिंदु, बिन्दी।

नुक्ता-गीर- वि० दे० 'नुक्ताचीं'।

नुक्ताचीं- वि० (अ०+फा०) ऐब या दोष निकालने वाला।

नुक्ताचीनी- स्त्री० (फा०) छिद्रान्वेषणा, दोष निकालना।

नुक्ता-दाँ- वि० दे० 'नुक्ता-शनास'।

नुक्ता-परदाज़- वि० (अ०) (सं० नुक्ता-परदाज़ी) गूढ़ और उत्तम बातें कहने वाला, सुवक्ता।

नुक्ताबीं- वि० (अ०+फा०) (सं० नुक्ताबीनी) ऐब या दोष ढूँढ़ने वाला।

नुक्ता-रस- वि० (अ०+फा०) (सं० नुक्ता-रसी) सूक्ष्म बातों को समझने वाला, बुद्धिमान्।

नुक्ता-शिनास- वि० (अ०+फा०) (सं० नुक्ता-शिनासी) गूढ़ बातें समझने वालो, बुद्धिमान्।

नुक्ता-संज- वि० (अ०+फा०) (सं० नुक्तासंजी) १ गूढ़ और अच्छी बातें कहने वाला, सुवक्ता। २ कवि।

नुकराई- वि० (अ०) १ चाँदी का, रुपहला। २ सफेद, श्वेत।

नुक़रा- पुं० (अ० नुक़्रः) १ चाँदी। यौ०- नुक़र-ए-खाम= शुद्ध चाँदी। २ घोड़ो का सफेद रंग। वि० सफेद रंग का (घोड़ा)।

नुक्ल- पुं० दे० 'नुक्ल'।

नुक़्सान- पुं० (अ० नुक़्सान) १ कमी, घटी, ह्रास, छीज। २ हानि, घाटा, क्षति। मुहा०- नुक़्सान उठाना= हानि सहना, क्षतिग्रस्त होना। नुक़्सान पहुँचाना= हानि करना, क्षतिग्रस्त करना। नुक़्सान भरना= हानि की पूर्ति करना, घाटा पूरा करना। ३ दोष, अवगुण, विकार। मुहा०- नुक़्सान करना= स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना।

नुक़्सान-देह- वि० (अ०+फा०) नुक्सान पहुँचाने वाला, हानिकर।

नुक़्सान-रसानी- स्त्री० (अ०+फा०) नुक़्सान पहुँचाने की की क्रिया।

नुकीला- वि० (फा० नोक) १ जिसमें नोक निकली हो। २ नोकदार, बाँका-तिरछा।

नुकूल- स्त्री० (अ०) 'नक़्ल' का बहु०।
नुकूश- पुं० (अ०) 'नक्श' का बहु०।
नुक्त- पुं० (अ०) 'नुक्ता' का बहु०। मुहा०- बे-नुक्तसुनाना= खूब खरी खोटी या अनुचित बातें कहना।
नुक्ता- पुं० दे० 'नुक़्ता'।
नुक़ः- पुं० (फा०) चाँदी।
नुक्ल- पुं० (अ०) १ वह चीज जो अफीम या शराब आदि के साथ खाई जाय, गज़क। २ एक प्रकार की मिठाई। ३ वह मिठाई आदि जो भोजनोपरान्त खाई जाय। यौ०- नुक्ले महफिल या नुक्ले मजलिस= महफिल को हँसाने वाला मसखरा।
नुक्स- पुं० (अ०) (बहु० नुकायस) दोष, खराबी, बुराई, त्रुटि, कसर।
नुक्सान- पुं० दे० 'नुक़्सान'।
नुजबा- पुं० (अ०) 'नजीब' का बहु०।
नुज़हत- स्त्री० (अ०) १ प्रसन्नता, खुशी। २ सुख-भोग।
नुज़हत-गाह- स्त्री० (अ०+फा०) आनन्द-भोग या सैर का स्थान।
नुजूम- पुं० (अ०) १ 'नज्म' का बहु०। २ सितारे, तारे। ३ ज्योतिषशास्त्र।
नुजूमी- पुं० (अ०) ज्योतिषी।
नुजूल- पुं० दे० 'नजूल'।
नुतफा- पुं० दे० 'नुत्फा'।
नुत्क़- पुं० (अ०) बोलने की शक्ति, वाक्-शक्ति।
नुत्फा- पुं० (अ० नुत्फ़ः) १ वीर्य्य, शुक्र। २ सन्तान, औलाद। यौ०- नुत्फए-बे-तहक़ीक़= वह जिसके सम्बन्ध में यह न निश्चय हो कि किसकी सन्तान है, दोग़ला, हरामी। नुत्फ-ए-हराम= दे० 'नुत्फए-बे-तहक़ीक़'।
नुदबा- पुं० (अ० नुद्बः) १ किसी के मरने पर होने वाला रोना पीटना, मातम, शोक। २ मातम या शोक का सूचक शब्द। जैसे, हाय हाय।
नुदरत- स्त्री० (अ० नुद्रत) 'नादिर' का भाव, अनोखापन।
नुफ़ूज़- पुं० (अ०) १ प्रचलित होना। २ घुसना, बैठना।
नुफूर- वि० (अ०) १ नफरत या घृणा करने वाला। २ भागने या दूर रहने वाला।
नुफूस- पुं० (अ०) 'नफ्स' (रूह) का बहु०।
नुमा- वि० (फा०) १ दिखाई पड़ने वाला। जैसे- बद-नुमा, खुशनुमा। २ दिखलाने या वतलाने वाला। जैसे- रहनुमा, जहाँनुमा। ३ सदृश, समान। जैसे- गुम्बद-नुमा, मेहराब-नुमा।
नुमाइन्दगी- स्त्री० (फा०) प्रतिनिधित्व।
नुमाइन्दा- पुं० (फा० नुमाइन्दः) १ दिखाने वालो। २ प्रतिनिधि।
नुमाइश- स्त्री० (फा०) १ दिखावट, दिखावा, प्रदर्शन। २ तड़क-भड़क, ठाठ-बाट, सज-धज। ३ नाना प्रकार की वस्तुओं का कुतूहल और परिचय के लिये एक स्थान पर दिखाया जाना, प्रदर्शिनी।
नुमाइश-गाह- स्त्री० (फा०) नुमाइश की जगह, प्रदर्शिनी का स्थल।
नुमाइशी- वि० (फा०) जो केवल दिखावट के लिये हो, किसी प्रयोजन का न हो, दिखाऊ, दिखौवा।
नुमाई- स्त्री० (फा०) दिखलाने की क्रिया, प्रदर्शन। जैसे- खुद-नुमाई।
नुमायाँ- वि० (फा०) जो स्पष्ट दिखाई पड़ता हो, प्रकट।
नुमूद- स्त्री० (फा०) १ अविर्भाव। २ प्रकटीकरण।
नुमूदार- वि० (फा०) १ अविर्भूत। २ प्रकट, व्यक्त।
नुशूर- पुं० (अ०) कयामत या हश्र के दिन सब मुरदों का फिर से जीवित होकर उठना।
नुसखा- पुं० दे० 'नुस्खा'।
नुसरत- स्त्री० (अ० नुस्रत) १ सहायता, मदद। २ पक्ष का समर्थन। ३ विजय, जीत।
नुसार- पुं० (अ०) वह धन जो किसी परसे निसार या निछावर करके फेंका या

बाँटा जाय।

नुसैरी- पुं० (अ०) १ अरब का एक मुसलमानी सम्प्रदाय। ३ परमनिष्ठ भक्त।

नुस्खा- पुं० (अ० नुस्खः) १ लिखा हुआ काग़ज। २ ग्रन्थ आदि की प्रति। ३ वह कागज जिस पर हकीम या चिकित्सक रोगी के लिये औषध और उसकी सेवन विधि लिखते है।

नुहुम- वि० (फा०) नवाँ, नवम।

नूर- पुं० (अ०) (बहु० अनवार) १ ज्योति, प्रकाश। यौ०- नूरेचश्म= आँख की रोशनी, लडका। नूरेजहाँ= संसार को रोशनी देने वाला। मुहा०- नूर का तड़का= प्रातःकाल। २ श्री, कान्ति, शोभा। नूर बरसना= प्रभा का अधिकता से प्रकट होना।

नूर-उल-ऐन- पुं० (अ०) १ आँखो की रोशनी, नेत्रों की ज्योति। २ पुत्र, बेटा, लड़का।

नूरवाफ- वि० (अ०+फा०) (सं० नूरबाफी) कपड़ा बुनने वाला जुलाहा।

नूरा- पुं० (अ० नूरः) वह दवा जिसके लगाने से शरीर परके बाल झड़ जाते हैं।

नूरानी- वि० (अ०) प्रकाशमान, चमकीला। रूपवान्, सुन्दर।

नूरी- वि० (अ०) नूर-सम्बन्धी।

नूर-ऐन- पुं० दे० 'नूर-उल्-ऐन'।

नूरे-चश्म- पुं० (अ०+फा०) १ नेत्रों का प्रकाश, आँखो की रोशनी। २ पुत्र, बेटा लड़का।

नूरे-जहाँ- पुं० (अ०+फा०) सारे संसार को प्रकाशित करने वाला प्रकाश। स्त्री० जहाँगीर बादशाह की सुप्रसिद्ध बेगम जो बहुत अधिक रूपवती थी।

नूरे-दीदा- पुं० दे० 'नूरे-चश्म'।

नूह- पुं० (अ०) १ नौहा करने या रोने वाला। २ यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के अनुसार एक पैगम्बर जिनके समय में एक बहुत बड़ा तुफान और बाढ़ आई थी, उस समय आपने एक किश्ती या नाव बनाकर सब प्रकार के जीवो का एक एक जोड़ा उस पर रख लिया था, वही किश्ती बच रही थी और सारा संसार उस बाढ़ से डूब गया था, कहते हैं कि ये उम्र भर रोते रहे, इसी से इनका यह नाम पड़ा।

नेअम- स्त्री० (अ० नअम) 'नेअमत' का बहु०।

नेअम-उल्-बदल- पुं० (अ०) किसी चीज के बदले में मिलने वाली दूसरी अच्छी चीज।

नेअमत- स्त्री० दे० 'नियामत'।

नेक- वि० (फा०) १ भला, उत्तम। २ शिष्ट, सज्जन। क्रि० वि० थोड़ा, जरा, तनिक।

नेक-क़दम- वि० (फा०+अ०) जिसका आगमन शुभ हो।

नेकखू- वि० (फा०) अच्छे स्वभाव वाला।

नेकख्याल- पुं० (फा०) अत्तम विचार।

नेक-ख्वाह- वि० (फा०) शुभ चिन्तक।

नेक-चलन- वि० (फा० नेक+हिं० चलन) (सं० नेक-चलनी) अच्छे चाल-चलन का, सदाचारी।

नेकतरीन- वि० (फा०) सब से अच्छा।

नेकनाम- वि० (फा०) (सं० नेकनामी) जिसका अच्छा नाम हो, यशस्वी।

नेक-निहाद- वि० (फा०) सुशील।

नेक-नीयत- वि० (फा० नेक+अ० नीयत) (सं० नेक-नीयती) १ अच्छे संकल्प का, शुभ संकल्प वाला। २ उत्तम विचार का।

नेकबख्त- वि० (फा०) (सं० नेक-बख्ती) १ भाग्यवान्, किस्मतवर। २ सीधा, सच्चा और सुशील। ३ आज्ञाकारी और योग्य (पुत्र तथा पुत्री के लिये)।

नेकबीं- वि० (फा०) अच्छाई देखने वाला।

नेक-मंजूर- वि० (अ०+फा०) सुन्दर, खूबसूरत।

नेकमर्द- वि० (फा०) भला, सज्जन।

नेकी- स्त्री० (फा०) १ भलाई, उत्तम व्यवहार। २ सज्जनता, भलमनसाहत। यौ०- नेकी-बदी= भलाई-बुराई। ३

उपकार।

नेको- वि० दे० 'नीको'।

नेज़ा- पुं० (फा० नेज़ः) भाला, बरछा, साँग।

नेज़ा-दार- वि० दे० 'नेज़ा-बरदार'।

नेज़ा-बरदार- वि० (फा०) (सं० नेज़ा-बरदारी) नेज़ा या भाला रखने वाला, बल्लम-बरदार।

नेज़ा-बाज़- वि० (फा०) (सं० नेज़ा-बाज़ी) नेज़ा या भाला चलाने वाला, बरछैत।

नेफा- पुं० (फा० नेफ़ः) पायजामे या लहँगे के घेरे में इजारबंद पिरोने का स्थान।

नेमत- स्त्री० दे० 'नियामत'।

नेवाला- पुं० दे० 'निवाला'।

नेश- पुं० (फा०) १ नोक, अनी। २ जहरीले जानवरों का डंक। ३ काँटा, शूल।

नेशकर- पुं० (फा०) गन्ना, ऊख, ईख।

नेश-ज़नी- स्त्री० (फा०) १ डंक मारना। २ निन्दा या बुराई करना, चुगली खाना।

नेश्तर- पुं० (फा०) जख्म चीरने का औजार, नश्तर।

नेशदुम- वि० (फा०) बिच्छू।

नेस्त- वि० (फा०) जो न हो। यौ०- नेस्त-नाबूद= नष्ट-भ्रष्ट।

नेस्ता- पुं० दे० 'नयस्ताँ'।

नेस्ती- स्त्री० (फा०) १ न होना, नास्तित्व। २ आलस्य। ३ नाश।

नेस्तोनाबूद- वि० (फा०) नष्ट, विनष्ट, ध्वस्त, बर्बाद।

नै- स्त्री० (फा०) १ बाँस की नली। २ हुक्के की निगालो। ३ बाँसरी।

नैचा- पुं० (फा० नैचः) हुक्के की निगाली, नै।

नैचा-बन्द- वि० (फा०) बहुत चमकने वाला सितारा। यौ०- नैयरे असग़र= चंद्रमा। नैयरे आज़म= सूर्य।

नैयर- पुं० (फा०) १ छल, कपट, धोखा। २ इनद्रजाल, जादूगरी, विलक्षण वस्तु या बान। ४ चित्रों आदि की रूप-रेखा।

नैरंग-साज़- वि० (फा०) (सं० नैरंगसाजी) १ धूर्त, जादूगर।

नैरंगी- स्त्री० (फा०) १ धोखेबाजी, चालबाजी। २ जादूगरी। यौ०- नैरंगी-ए-ज़माना= संसार का उलट-फेर।

नैसाँ- पुं० (फा०) सीरिया देश का सातवाँ महीना जो वैसाख के लगभग होता है।

नैशकर- स्त्री० (फा०) गन्ना।

नैस्ताँ- पुं० दे० 'नयस्ताँ'।

नोक- स्त्री० (फा०) (वि० नुकीला) १ उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती पड़ती गई हो, सूक्ष्म अग्र भाग। २ किसी वस्तु के निकले हुए भाग का पतला सिरा। ३ निकला हुआ कोना।

नोक-झोंक- स्त्री० (फा० नोक+हिं० झोंक) १ बनाव-सिंगार, ठाट-बाट, सजावट। २ तपाक, तेज, आतंक, दर्प। चुभने वाली बात, व्यंग, ताना, आवाज। ४ छेड़-छाड़।

नोकदार- वि० (फा०) जिसमें नोक हो। चुभने वाला, पैना। ३ चित्त में में चुभने वाला। ४ शानदार।

नोक-पलक- स्त्री० (फा० नोक+हिं० पलक) आँख, नाक आदि चेहरे का नकशा।

नोकीला- वि० दे० 'नुकीला'।

नोके-जबाँ- स्त्री० (फा० नोक+जबाँ) जीभ का अगला भाग। वि० कंठस्थ, मुखाग्र, बर-जबान।

नोल- स्त्री० (फा०) चोंच।

नोश- वि० (फा०) १ पीने वाला। जैसे- मै-नोश= शराब पीने वाला। २ स्वादिष्ट, रुचिकर, प्रिय। मुहा०- नोश जान करना या फरमाना= खाना, भोजन करना। (बड़ो के सम्बन्ध में आदरार्थ) नोश-जाँ होना= खाना पीना शुभ सिद्ध होना। पुं० १ पीने की कोई बढ़िया चीज। २ अमृत। ३ ज़हर-मोहरा। ४ शहद, मधु। ५ जीवन।

नाश-दारु- स्त्री० (फा०) १ सर्प का विष नाश करने वाला जहर मोहरा। २ शराब,

मदिरा। ३ वह स्वादिष्ट भोजन या अवलेह जो बहुत पौष्टिक हो।
नोशादुर- पुं० (फा०) नौसादर।
नोशी- वि० (फा०) मीठा, मधुर।
नोशी- स्त्री० (फा०) पीने की क्रिया, पान। जैसे- मै-नोशी= मद्यपान।
नौ- वि० (फा० मि० सं० नव) नया, नवीन। स्त्री० (अ० नौअ) भाँति, प्रकार, तरह। २ तौर-तरीका।, रंग-ढंग। ३ जाति।
नौ-आबाद- वि० (फा०) जो अभी हाल में बसा हो, नया बसा हुआ।
नौआमोज़- वि० (फा०) जिसने कोई काम हाल में सीखा हो, नौ-सिखुआ।
नौईयत- स्त्री० (अ०) १ प्रकार, तरह। २ विशेषता।
नौ-उम्मेद- वि० (फा०) (सं० नौ-उम्मेदी) निराश, ना-उम्मेद।
नौउम्र- (फा०+अ०) १ अल्पवयस्क। २ किशोर।
नौउम्री- स्त्री० (फा०+अ०) १ अल्पवयस्कता। २ किशोरावस्था।
नौकर- पुं० (फा०) १ चाकर, टहलुआ। २ कोई काम करने के लिये वेतन आदि पर नियुक्त मनुष्य, वैतनिक कर्मचारी।
नौकरशाही- स्त्री० (फा० नौकर+अ० शाही) वह शासन प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े-बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती हैं।
नौकरानी- स्त्री० (फा० नौकर) घर का काम धंधा करने वाली स्त्री, दासी, मजदूरनी।
नौकरी- स्त्री० (फा० नौकर) १ नौकर का काम, सेवा, टहल, खिदमत। २ कोई ऐसा काम जिसके लिये तनख्वाह मिलती हो।
नौकरी-पेशा- पुं० (फा०) जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो।
नौ-खास्ता- वि० (फा० नौखास्तः) नौजवान।
नौ-खेज- वि० दे० 'नौजवान'।
नौ-चन्दा- पुं० (फा० नौ+हिं० चन्दा) शुक्ल पक्ष में पहले पहल चन्द्रमा दिखाई पड़ने के बाद दूसरा दिन।
नौचा- पुं० (फा०) नवयुवक।
नौची- स्त्री० (फा०) नवयुवती।
नौज- (अ० 'नऊज' का अपभ्रंश) ईश्वर न करे।
नौजवान- वि० (फा०) नवयुवक, नया जवान।
नौजवानी- स्त्री० (फा०) नव यौवन।
नौदामाद- पुं० (फा०) दुल्हा, वर।
नौदौलत- वि० (फा०+अ०) नया अमीर, नया धनिक।
नौ-निहाल- पुं० (फा०) १ नया पौधा। २ नौ-जवान।
नौबत- स्त्री० (फा०) १ बारी, पारी। २ गति, दशा। ३ संयोग। ४ वैभव या मंगल सूचक वाद्य, विशेषतः सहनाई और नगाड़ा जो मंदिरों या बड़े आदमियों द्वार पर बजता है। मुहा०- नौबत झड़ना= दे० 'नौबत बजना'। नौबत बजना= १ आनन्द उत्सव होना। २ प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना।
नौबत-खाना- पुं० (अ०+फा० खानः) फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठ कर नौबत बजाई जाती है, नक्कारखाना।
नौबत-ब-नौबत- क्रि० वि० (अ० नौबत) क्रम-क्रम से, एक के बाद एक, एक-एक करके।
नौबती- पुं० (फा०) १ नौबत बजाने वाला, नक्कारची। २ फाटक पर पहरा देने वाला, पहरेदार। ३ बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। ४ बड़ा खेमा या तंबू।
नौ-ब-नौ- वि० (फा०) बिलकुल ताजा, नया।
नौ-बहार- स्त्री० (फा०) नई आई हुई बसन्त ऋतु, बसन्त का आरम्भ।
नौ-मश्क़- वि० (फा०+अ०) जो अभी मश्क या अभ्यास करने लगा हो, नौसिखुआ।

नौमीद- वि० (फा०) (सं० नौमीदी) नाउम्मीद, निराश।
नौ-मुस्लिम- वि० (फा०+अ०) जो हाल में मुसलमान बना हो।
नौरोज़- पुं० (फा०) १ पारसियों में नये वर्ष का पहला दिन, इस दिन बहुत आनन्द-उत्सव मनाया जाता था। २ त्योहार।
नौ-रोज़ी- वि० (फा०) नौरोज सम्बन्धी, नौरोज का।
नौ-वारिद- वि० (फा०) जो कहीं बाहर से अभी हाल में आया हो।
नौशहाना- वि० (फा०) नौशा या दूल्हे का-सा, वर की तरह का।
नौशा- पुं० (फा० नौशः) दूल्हा।
नौशादर- पुं० दे० 'नौसादर'।
नौसफर- वि० (फा०+अ०) पहले-पहल सफर पर निकला हुआ।
नौसादर- पुं० (फा० नौशादर) एक तीक्ष्ण झालदार खार या नमक।
नौहा- पुं० (अ० नौहः) १ किसी के मरने पर किया जाने वाला शोक। २ रोना-पीटना, रुदन।
नौहा-गर- वि० (अ०+फा०) (सं० नौहागरी) रो-पीट कर मातम करने वाला, शोक मनाने वाला।
न्यामत- स्त्री० दे० 'नियामत'।
पंज- वि० (फा० मि० सं० पंच) पाँच, चार और एक। ५।
पंजगाना- वि० (फा० पंचगानः) पाँचों समय की (नमाज)।
पंज-तन-पाक- पुं० (फा०) मुसलमानों के अनुसार पाँच पवित्र आत्माएँ, यथा-मुहम्मद, अली, फातिमा, हसन और हुसेन।
पंज-वक्ती- वि० दे० 'पंचगाना'।
पंज-शंबा- पुं० (फा० पंज-शम्बः) बृहस्पतिवार, जुमेरात।
पंजसाला- वि० (फा० पंजसालः) पंचवर्षीय।
पंजा- पुं० (फा० पंजः मि० सं० पंचक) १ पाँच चीज़ों का समूह। २ हाथ या पैर की पाँचों उँगलियाँ। मु०- पंजे झाड़कर पीछे पड़ना= हाथ धोकर या बुरी तरह पीछे पड़ना। पंजे में= हाथ में, अधिकार में। ३ पंजा लड़ाने की कसरत। ४ उँगलियों के सहित हथेली का संपुट, चंगुल। ५ मनुष्य के पंजे के आकार का धातु का टुकड़ा जिसे बाँस में बाँधकर झंडे की तरह ताजिये के साथ लेकर चलते हैं। ६ ताश का वह पत्ता जिसमें पाँच बूटियाँ होती हैं। मुहा०- छक्का पंजा= दाँव-पेच, छल-कपट।
पंजी- स्त्री० (फा० पंजः) वह मशाल या लकड़ी जिसमें पाँच बत्तियाँ जलती हों, पंच-शाखा।
पंद- स्त्री० (फा०) उपदेश, नसीहत।
पंबा- (फा० पम्बः) रूई। यौ०- पंबा-बागोश= बहरा, बधिर। पंबा-दहन= कम बोलने वाला।
पख- स्त्री० (फा०) १ विष्टा, मल, गू। २ शोर, गुल। ३ अशिष्टतापूर्ण बात। ४ कठिनता, दिक्कत, खराबी। ५ अड़चन, व्यर्थ का छिद्रान्वेषण।
पखिया- वि० (फा० पखः) (स्त्री० पखनी) पख निकालने वाला, व्यर्थ छिद्रान्वेषण करने वाला।
पगाह- स्त्री० (फा०) १ प्रभात, तड़का। २ सवेरा।
पज़मुरदा- वि० (फा० पज़मुर्दः) (सं० पज़मुर्दगी) कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।
पज़ावा- पुं० (फा० पज़ावः) ईंटें पकाने का आँवाँ।
पज़ीर- वि० (फा०) मानने वाला, ग्रहण या पालन करने वाला। (यौगिक में) जैसे इताअत-पज़ीर= आज्ञा मानने वाला।
पज़ीरा- वि० (फा०) मानने योग्य।
पज़ीराई- स्त्री० (फा०) मानना, कबूलियत, स्वीकृति।
पतील- पुं० (फा०) चिराग की बत्ती।
पतील-सोज़- पुं० दे० 'फतील सोज़'।
पनाह- स्त्री० (फा०) १ रक्षा। २ शरण,

रक्षा या आश्रय पाने का स्थान। मुहा०- पनाह माँगना= रक्षा या परित्राण का प्रार्थना करना।

पनीर- पुं० (फा०) १ फाड़कर जमाया हुआ छेना। २ वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पयादा- पुं० (फा० पयादः) १ पैदल चलने वाला व्यक्ति। २ पैदल सिपाही।

पयाम- पुं० (फा०) सन्देश।

पयाम-बर- पुं० (फा०) पयाम या संदेश ले जाने वाला, क़ासिद।

पयामी- वि० (फा०) संदेश वाहक।

पर- पुं० (फा०) चिड़ियों का डैना और उस पर के घूए या रोएँ, पंख, पक्ष। मुहा०- पर कट जाना= शक्ति या बल का आधार न रह जाना, अशक्त हो जाना। पर जमना= १ पर निकलना। २ जो पहले सीधा सादा रहा हो, उसे शरारत सूझना। (कहीं जाते हुए) परजलना= १ हिम्मत न होना, साहस न होना। २ गति न होना, पहुँच न होना। पर न मापना= पैर न रख सकना। बे-पर की उड़ाना= बिना सिर पैर की बातें करना, व्यर्थ डींग हाँकना।

परकार- पुं० (फा०) वृत्त या गोलाई खींचने का एक औज़ार।

परकाला- पुं० (फा० परकालः) १ टुकड़ा, खंड। २ शीशे का टुकड़ा। ३ चिनगारी। मुहा०- आफ्त का परकाला= गजब करने वाला, प्रचंड या भयंकर मनुष्य।

परखाश- पुं० स्त्री० (फा०) लड़ाई, झगड़ा।

परगना- पुं० (फा० पर्गनः) वह भू भाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम या गाँव हों।

परचम- पुं० (फा०) १ झंडे का कपड़ा, ताका। २ जुल्फ और काकुल।

परचा- पुं० (फा० परचः) १ टुकड़ा, खंड। २ काग़ज़ का टुकड़ा। ३ पत्र, चिट्ठी।

परतौ- पुं० (फा०) १ रश्मि, किरण। २ प्रतिच्छाया, अक्स।

परदगी- स्त्री० (फा० पर्दगी) १ परदे में रहने वाली स्त्री।

परदा- पुं० (फा० पर्दः) १ आड़ करने वाला कपड़ा या चिक आदि। मुहा०- परदा उठाना= भेद खोलना। परदा डालना= छिपाना। २ लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति, आड़, ओट, छिपाव। ३ स्त्रियों को बाहर निकल कर लोगों के सामने न होने देने की चाल। यौ०- परदा-दार= १ वह जो परदा करे। २ वह जिसमें परदा हो। ३ वह दीवार जो विभाग या ओट करने के लिये उठाई जाय। ४ तह, परत, तल।

परदाख्त- स्त्री० (फा०) १ बनाना, करना। २ पूरा करना। ३ देख-रेख करना।

पर-दाज़- पुं० (फा०) १ सजाना, सजावट। २ चित्र के चारों ओर बेल-बूटे बनाना।

पर-दाज़ी- स्त्री० (फा०) सजाने या बेल-बूटे बनाने की क्रिया।

पर-दार- वि० (फा०) जिसे पर हों, परोंवाला।

परदा-दार- वि० (फा०) १ जिसमें परदा लगा हो। २ जो परदे में रहे।

परदा-दारी- स्त्री० (फा०) परदे में रहना।

परदा-नशीन- वि० स्त्री० (फा०) परदे में रहने वाली (स्त्री)।

परदा- पोशी- स्त्री० (फा०) किसी के रहस्य या दोषों पर परदा डालना, ऐब छिपाना।

परन्दा- पुं० (फा० परन्दः) पक्षी।

परबस्ता- वि० (फा० परबस्तः) जिसके पर बँधे हों।

परवर- वि० (फा०) पालन करने वाला, पालक। (यौगिक शब्दों के अन्त में)

परवरदा- वि० (फा० परवर्दः) पाला हुआ, पालित।

परवरदिगार- पुं० (फा०) १ पालन करने वाला। २ ईश्वर।

परवरिश- स्त्री० (फा०) पालन-पोषण।

परवा- स्त्री० (फा०) १ चिन्ता, खटका,

आशंका। २ ध्यान, खयाल। ३ आसरा।

परवाज़- पुं० (फा०) उड़ना।

परवाज़ी- स्त्री० (फा०) उड़ने की क्रिया या भाव।

परवानगी- स्त्री० (फा०) इजाज़त, आज्ञा, अनुमति।

परवाना- पुं० (फा०) १ आज्ञा-पत्र। २ पतंगा, पंखी।

परवीन- पुं० (फा०) कृत्ति का नक्षत्र, झुमका।

परवेज़- पुं० (फा०) १ विजयी। २ खुसरो बादशाह जो नौशेरवाँ का पोता था।

परस्त- वि० (फा०) परस्तिश या पूजा करने वाला, पूजक। (यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- आतिश-परस्त= अग्निपूजक।)

परस्तार- पुं० (फा०) १ पूजा या उपासना करने वाला। २ दास। ३ सेवक।

परस्तिश- स्त्री० (फा०) पूजा, आराधना।

परस्तिश-गाह- स्त्री० (फा०) पूजा या आराधना करने का स्थान।

परहेज़- पुं० (फा० पर्हेज) १ स्वास्थ्यको हानि पहुँचाने वाली बातों से बचना, खाने-पीने आदि का संयम। २ दोषों और बुराइयों से दूर रहना।

परहेज-गार- पुं० (फा० पर्हेज़गार) (भाव० परहेज़गारी) १ परहेज करने वाला, संयमी। २ दोषों से दूर रहने वाला।

पर-हुमा- पुं० (फा०) १ हुमापक्षी का पर। २ कलगी।

परा- पुं० (फा० परः) क़तार, पंक्ति।

परागंदा- वि० (फा० परागन्दः) (परागंदगी) १ बिखरा हुआ, तितर-बितर। २ दुर्दशा-ग्रस्त।

परिंदा- पुं० (फा० परिन्दः) पक्षी, चिड़िया।

परिस्तान- पुं० (फा० परस्तान) १ परियों के रहने का स्थान। २ वह स्थान जहाँ बहुत-सी सुन्दरियाँ एकत्र हो।

परी- स्त्री० (फा०) १ फारसकी प्राचीन कथाओं के अनुसार क़ाफ नामक पहाड़ पर बसने वाली कल्पित सुन्दरी और परवाली स्त्रीयाँ। २ परम सुन्दरी।

परीइज़ार- वि० स्त्री० (फा०+अ०) जिसके गाल परियों जैसे हों।

परी-ख्वान- पुं० (फा०) वह जो मंत्रों के द्वारा परियों और देवों आदि को वश में करना जानता हों।

परी-ज़ाद- वि० (फा०) परी की सन्तान, बहुत अधिक सुन्दर।

परी-पैकर- वि० (फा०) परी के समान सुन्दर चेहरे वाला (वाली)।

परी-रु- वि० (फा०) जिसकी आकृति परी के समान सुन्दर हो।

परी-वश- वि० दे० 'परी-रु।'

परीशाँ- वि० (फा०) परेशान।

परेशान- वि० (फा०) व्यग्र, व्याकुल, उद्विग्न।

परेशानी- स्त्री० (फा०) व्याकुलता, उद्विग्नता, व्यग्रता।

पर्वेज़- वि० (फा०) सम्मानित, प्रतिष्ठित।

पलंग- पुं० (फा०) १ एक प्रकार का हिंसक पशु। २ शेर। पुं० (सं० पर्यङ्क) अच्छी और बड़ी चारपाई। यौ०- पलंग-पोश= पलंग के बिछौने पर बिछाने की चादर।

पलक- स्त्री० (फा०) आँखो के ऊपर का चमड़े का परदा, पपोटा और बरौनी। मुहा०- किसी के लिए पलकें बिछाना= अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। पलक लगाना= १ आँखें मुँदना, पलक झपकना। २ नींद आना।

पलाव- पुं० (फा०) पुलाव।

पलास- पुं० (फा०) सनका मोटा कपड़ा, टाट।

पलीता- पुं० (फा० पलीतः) १ बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह काग़ज जिस पर कोई यन्त्र लिखा हो। २ वह बत्ती जिससे बन्दूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है। ३ कपड़े की वह बत्ती जिसे

पँचशाखे पर रखकर जलाते हैं।

पलीद- वि० (फा०) १ अपवित्र, अशुद्ध। २ दुष्ट और नीच। पुं० दुष्टात्मा।

पलीदी- स्त्री० (फा०) १ अपवित्रता। २ मलिनता।

पल्ला- पुं० (फा० पल्लः) १ तराजू का पलड़ा। २ सीढ़ी का डंडा। ३ पद, दरजा। यौ०- हम-पल्ला= बराबरी का दरजा रखने वाला।

पशेमान- वि० (फा०) १ जिसे पश्चात्ताप हुआ हो, पछताने वाला। २ लज्जित, शरमिंदा।

पशेमानी- स्त्री० (फा०) १ पश्चाताप, पछतावा। २ लज्जा, शरम।

पश्तो- स्त्री० (फा० पश्तू) अफ़गानिस्तान की भाषा।

पश्म- स्त्री० (फा०) १ बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं। २ उपस्थपर के बाल। ३ बहुत ही तुच्छ वस्तु।

पश्मीना- पुं० (फा० पश्मीनः) १ पशम। २ पशम का बना हुआ कपड़ा।

पश्शा- पुं० (फा० पश्शः) मच्छर।

पसंद- स्त्री० (फा०) अच्छा लगने की वृत्ति, अभिरुचि।

पसंदा- पुं० (फा० पसन्दः) १ कीमा। एक प्रकार का कबाब।

पसंदीदगी- स्त्री० (फा०) रुचि, रुझान।

पसंदीदा- वि० (फा० पसन्दीदः) पसन्द किया हुआ, चुना हुआ, अच्छा, बढ़िया।

पस- क्रि० वि० (फा०) १ पीछे, बाद। २ अन्त में, आखिर। ३ इसलिये।

पस-अंदाज़- पुं० (फा०) वह धन जो वृद्धावस्था या संकट काल के लिये बचाकर रखा गया हो।

पसखुरदा- पुं० (फा० पसखुर्दः) १ खाने के बाद बचा हुआ अशं, जूठन। २ जूठन खाने वाला, टुकड़गदाई।

पस-ग़ैबत- क्रि० वि० (फा० पस+अ० ग़ैबत) पीठ पीछे, अनुपस्थिति में।

पस-पा- वि० (फा०) १ जिसने पीछे की ओर पैर हटाया हो, पीछे हटने वाला। २ पराजित।

पसमाँदा- वि० (फा० पस-माँदः) १ जो पीछे रह गया हो। २ बाकी बचा हुआ।

पस-रौ- वि० (फा०) पीछे चलने वाला, अनुयायी।

पसोपेश- पुं० (फा०) आगा पीछा, असमंजस।

पस्त- वि० (फा०) १ नीच, कमीना। २ निम्न कोटिका। जैसे- पस्त-खयाल। ३ हारा हुआ। जैसे- पस्त-हिम्मत।

पस्ता-क़द- वि० (फा०) छोटे क़द का, नाटा।

पस्ती- स्त्री० (फा०) १ नीचाई। २ नीचता, कमीनापन।

पहलवान- पुं० (फा० पह्लवान) १ कुश्ती लड़ने वाला बली पुरुष। कुश्तीबाज, मल्ल। २ बलवान् तथा डील-डौल वाला।

पहलवी- स्त्री० दे० 'पल्हवी'।

पहलू- पुं० (फा० पह्लू) १ बग़ल और कमरे के बीच का वह भाग जहाँ पसलियाँ होती हैं, पार्श्व, पाँजर। २ दायाँ अथवा बायाँ भाग, पार्श्व-भाग, बाजू, बग़ल। ३ करवट, बल। ४ दिशा, तरफ।

पहलू-तिही- स्त्री० (फा० पह्लूतिही) ध्यान न देना, बचा जाना।

पहलू-दार- वि० (फा० पह्लूदार) जिसमें पहलू या पार्श्व हों, पहलदार।

पहलूनशीन- वि० (फा० पह्लनशीन) पास बैठने वाला।

पल्हव- पुं० (फा०) १ पारस देश का प्राचीन नाम। २ वीर। ३ पहलवान।

पल्हवी- स्त्री० (फा०) अति प्राचीन पारसी या जेंद अवस्ता की भाषा और आधुनिक फारस के मध्यवर्ती काल की फारस की भाषा।

पा- पुं० (फा० मि० सं० पाद) पैर, पाँव। (कुछ शब्दों के अन्त में लगकर यह स्थायी आदि का अर्थ भी देता है। जैसे- देर-पा=

देर तक ठहरने वाला।)

पा-अन्दाज़- पुं० (फा०) पैर पोंछने का बिछावन जो कमरों के दरवाजों पर पैर पोंछने के लिये रखा जाता है।

पाईन- वि० (फा०) १ पिछला। २ निचला। पुं० पैताना।

पाएजामः- पुं० (फा०) पाजामा।

पाएमाल- वि० (फा० पामाल) पैरों से रौंदा हुआ, पामाल।

पाक- वि० (फा०) १ स्वच्छ, निर्मल। २ पवित्र, शुद्ध। ३ जिसमें किसी प्रकार का मैल न हो, खालिस। ४ निर्दोष, निरपराध, निरीह। ५ जिस पर किसी प्रकार का बार या देन न हो।

पाक-दामन- वि० (फा०) (पाक-दामनी) जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो, सच्चरित्र। (विशेषतः स्त्रियों के लिये।)

पाक-नफ्स- वि० (फा०+अ०) (पाक-नफ्सी) शुद्ध और पवित्र आचार-विचार वाला।

पाक-बाज़- वि० (फा०) सच्चरित्र।

पाकी- स्त्री० (फा०) १ पवित्रता, शुद्धता। २ उपस्थ पर के बाल। ३ उस्तरे से बाल मुँड़ना। (विशेषतः उपस्थ पर के) क्रि० प्र० लेना।

पाकीज़ा- वि० (फा० पाकीज़ः) (पाकीज़गी) १ पाक, साफ। २ सुन्दर। ३ निर्दोष।

पाखाना- पुं० (फा० पायखाना) १ मल त्याग करने का स्थान। २ मल, पुरीष, गू।

पाचक- पुं० (फा०) उपला, कंडा।

पाज़ामा- पुं० (फा० पायजामः) पैरों में पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं- सुथना, तमान, इजार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नैपाली आदि।

पाजी- पुं० (फा० पा) (बहु० पवाज) १ दुष्ट, कमीना, बदमाश। २ छोटे दरजे का नौकर, खिदमतगार।

पाज़ेब- स्त्री० (फा०) स्त्रियों का एक गहना जो पैरों में पहना जाता है, मंजीर, नूपुर।

पा-तराव- पुं० (फा०) प्रस्थान, यात्रा, सफर।

पाताबा- पुं० (फा० पाताबः) पैरों में पहनने का मोजा।

पादशाह- पुं० दे० 'बादशाह'।

पादाश- स्त्री० (फा०) परिणाम, फल। (विशेषतः बुरे कामों का)

पा-पोश- पुं० (फा०) जूता, उपानह।

पा-प्यादा- क्रि० वि० (फा०) पैदल, बिना किसी सवारी के।

पाबन्द- वि० (फा०) १ बँधा हुआ, बद्ध, अस्वाधीन, क़ैद। २ किसी बात का नियमित रूप से अनुसरण करने वाला। ३ नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदि का पालन करने के लिये विवश।

पाबन्दी- स्त्री० (फा०) पाबंद होने का भाव।

पा-ब-जंजीर- वि० (फा०) जिसके पैर जंजीरों से बँधे हों, जिसके पैर में बेड़ियाँ हों।

पा-ब-रकाब- क्रि० वि० (फा०) रिकाब पैर रखे हुए, चलने को तैयार।

पा-बोस- वि० (फा०) पैर चूमने वाला।

पा-बोसी- स्त्री० (फा०) बड़ों के पैर चूमना।

पामर्द- वि० (फा०) सहायक,सहयोगी।

पा-माल- वि० (फा०) (पामाली) १ पैरों से रौंदा या कुचला हुआ। २ दुर्दशाग्रस्त।

पा-मोज़- पुं० (फा०) एक प्रकार का कबूतर जिसके पैरों पर भी बाल होते हैं।

पायँचा- पुं० (फा० पायँचः) पाजामे आदि का वह अंश जिसमें पैर रहते हैं।

पाय- पुं० (फा० मि० सं० पाद) १ पैर, पाँव। २ आधार।

पायक- पुं० (फा० मि० सं० पादिक) १ पैदल सिपाही, पदातिक। २ समाचार पहुँचाने वाला दूत, हरकारा। ३ कर उगाहने

वाला एक प्रकार का छोटा कर्म्मचारी।
पायखाना- पुं0 दे0 'पाखाना'।
पायगाह- पुं0 (फा0) पद, ओहदा।
पायजामा- पुं0 (फा0) पाजामा।
पाय-तख्त- पुं0 (फा0) राजधानी।
पाय-तराब- पुं0 (फा0) यात्रा के आरंभ में पहले दिन कुछ दूर चलना।
पायताबा- पुं0 दे0 'पाताबा'।
पायदार- वि0 (फा0) पक्का, मजबूत, दृढ़।
पायदारी- स्त्री0 (फा0) दृढ़ता।
पायमाल- वि0 दे0 'पामाल'।
पाया- पुं0 (फा0 पायः) १ पलंग, चौकी आदि में नीचे के वे डंडे जिनके सहारें उनका ढाँचा खड़ा रहता हैं, गोड़ा, पाया। २ खम्भा। ३ पद, दरजा, ओहदा। ४ सीढ़ी, जीना।
पायान- पुं0 (फा0) अन्त, समाप्ति।
पायानी- स्त्री0 दे0 "पायान।"
पायाब- वि0 (फा0) ("पायाबी") इतना कम गहरा (जल) कि पैदल चलकर पार किया जा सके।
पा-रकाब- पुं0 (फा0) किसी बड़े आदमी के साथ चलने वाले लोग, सहचर, क्रि0 वि0 चलने के तैयार, प्रस्थान के लिये उद्यत।
पारीना- वि0 (फा0 पारीनः) पुराना, प्राचीन।
पालायश- स्त्री0 (फा0) साफ करना, सफाई।
पालान- पुं0 (फा0 मि0 सं0 पर्य्याण) घोड़े की पीठ पर रखा जाने वाला वह कपड़ा जिस पर जीन रखी जाती है।
पालूदा- पुं0 दे0 'फालूदा'।
पाश- पुं0 (फा0) १ फटना, टुकड़े टुकड़े होना। २ टुकड़ा, खंड।
पाशा- पुं0 (तु0) १ प्रांत का शासक। २ बहुत बड़ा अफसर।
पाशी- स्त्री0 (फा0) जल छिड़कना, जल से तर करना। यौ0- आब-पाशी= पानी सींचना।
पासंग- पुं0 (फा0) तराजू की डंडी को बराबर रखने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ बोझ, पसंघा। मुहा0- किसी का पासंग भी न होना= किसी के मुकाबिले में कुछ भी न होना।
पास- पुं0 (फा0) १ लिहाज, खयाल। २ पक्षपात, तरफदारी। ३ पालन। ४ पहरा, चौकी।
पास-दार- पुं0 (फा0) १ रक्षक, रखवाला। २ पक्ष लेने वाला।
पास-दारी- स्त्री0 (फा0) १ रक्षा, हिफाजत। २ तरफदारी, पक्षपात।
पास-बान- पुं0 (फा0) चौकीदार, पहरेदार, रक्षक। स्त्री0- रखी हुई स्त्री, रखेली, रखनी (राजपूताना)।
पास-बानी- स्त्री0 (फा0) चौकीदारी, पहरेदारी।
पिजीराई- स्त्री0 (फा0) स्वीकृति।
पिदर- पुं0 (फा0 मि0 सं0 पितृ) पिता, बाप।
पिदराना- वि0 (फा0 पिदरानः) पिदर या बाप का-सा, बाप की तरह का।
पिदरी- वि0 (फा0) पिता का, पैतृक।
पिनहाँ- वि0 (फा0 पिन्हाँ) छिपा हुआ।
पिनहानी- वि0 (फा0 पिन्हानी) १ भीतरी। २ आध्यात्मक।
पिन्दार- पुं0 (फा0) १ कल्पना। २ समझ, बुद्धि। ३ अभिमान, घमंड।
पियाज़- स्त्री0 (फा0) प्याज।
पियादा- पुं0 दे0 'प्यादा'।
पियाला- पुं0 दे0 'प्याला'।
पिशवाज़- स्त्री0 (फा0) एक प्रकार का घाघरा जो प्रायः वेश्याएँ नाचने के समय पहनती हैं।
पिसर- पुं0 (फा0) पुत्र, बेटा, लड़का।
पिस्ताँ- स्त्री0 (फा0) स्तन, छाती।
पिस्त- पुं0 (फा0) आटा, बेसन या सत्तू।
पिस्ता- पुं0 (फा0 पिस्तः) एक प्रकार का प्रसिद्ध सूखा मेवा।

पीचीदगी- स्त्री० (फा०) पेचीला होने का भाव, पेचीलापन।

पीर- पुं० (फा०) १ वृद्ध, बूढ़ा, बुजुर्ग, महात्मा, सिद्ध। यौ०- पीरे-मुग़ाँ= १ अग्नि का उपासक। २ प्रिय, प्रेमपात्र।

पीरज़न- स्त्री० (फा०) बूढ़ी औरत।

पीरज़ादा- पुं० (फा०) किसी पीर का वंशज।

पीर-भुचड़ी- पुं० (फा० पीर+देहि० भुचड़ी) हिजड़ों के एक कल्पित पीर का नाम।

पीराई- पुं० (फा० पीर) एक प्रकार के मुसलमान बाजा बजाने वाले जो पीरों के गीत गाते हैं।

पीराना- वि० (फा० पीरानः) पीरों या बुजुर्गों का-सा।

पीरी- स्त्री० (फा०) १ बुढ़ापा, वृद्धावस्था। २ चेला मूँड़ने का धंधा या पेशा, गुरुआई। ३ इजारा, ठेका। ४ हुकूमत।

पील- पुं० (फा०) हाथी। वि० बहुत बड़ा या भारी, जैसे- पीलतन= हाथी के समान बड़े शरीर वाला।

पील-पा- पुं० (अ०) एक रोग जिसमें पैर फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है, फील-पा।

पील-पाया- पुं० (फा० पील-पायः) १ हाथी का पैर। २ बहुत बड़ा खंभा।

पील-वान- पुं० (फा०) हाथीवान, महावत।

पीला- पुं० (फा० पीलः) हाथी।

पुख़्तारी- स्त्री० (फा०) १ एक प्रकार की बढ़िया रोटी। २ वह रोटी जो गोश्त के प्याले पर उसे गरम रखने के लिये रखी जाती है।

पुख़्ता- वि० (फा० पुख़्तः) (पुख़्तगी) पक्का, दृढ़, मज़बूत।

पुदीना- पुं० दे० 'पोदीना'।

पुर- वि० (फा० मि० सं० पूर्ण) भरा हुआ, पूर्ण, यौगिक में जैसे-पुरफ़िज़ा, पुरबहार।

पुरआर्ज़ू- वि० (फा०) जिसके मन में कामनाएँ हों।

पुरज़ा- पुं० (फा० पुर्ज़ः) १ टुकड़ा, खंड। मुहा० पुरजे पुरजे करना या उड़ाना= खंड खंड करना, टूक टूक करना। २ कतरन, धज्जी, कटा हुआ टुकड़ा, कतल। ३ अवयव, अंग। ४ अंश, भाग, मुहा०- चलता पुरज़ा= चालाक आदमी।

पुरदर्द- वि० (फा०) दर्दभरा, दर्दनाक।

पुरदलील- वि० (फा०) तर्कपूर्ण।

पुरनम- वि० (फा०) नम, गीला।

पुरनूर- वि० (फा०) प्रकाशमान, ज्योतिर्मय।

पुरफ़न- वि० (फा०) धूर्त।

पुरफ़िज़ा- वि० (फा०+अ०) सुन्दर और शोभायुक्त (स्थान)।

पुरमज़ाक़- वि० (फा०) विनोदी, हँसोड़।

पुरसाँ- वि० (फा०) पूछने वाला।

पुरसा- पुं० (फा० पुर्सः) मृतक के सम्बन्धियों को सान्त्वना देना, मातमपुरसी, क्रि० प्र० देना।

पुरसिश- स्त्री० (फा०) पूछना।

पुरसी- स्त्री० (फा०) पूछने की क्रिया, (यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- मिज़ाजपुरसी, मातम-पुरसी।)

पुरी- स्त्री० (फा०) १ पूरे या भरे होने की अवस्था, पूर्णता। २ भरने की क्रिया, भरना। (यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- खाना पुरी।)

पुर्स- वि० (फा०) पूछने वाला, जैसे- बाजपुर्स।

पुल- पुं० (फा०) नदी, जलाशय आदि के आर पार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछा कर बनाया जाय, सेतु। मुहा०- किसी बात का पुल बाँधना= झड़ी बाँधना, बहुत अधिकता कर देना, अतिशय करना। पुल टूटना= १ बहुतायत होना, अधिकता होना। २ अटाला या जमघट लगना।

पुलसरात- पुं० (फा०) मुसलमानों के विश्वास के अनुसार वह पुल जिस पर से अन्तिम निर्णय के दिन सच्चे आदमी तो

स्वर्ग में चले जायँगे और दुष्ट नरक में गिरेंगे।

पुलाव- पुं० (फा०) एक व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है, मांसोदन।

पुश्त- स्त्री० (फा०) १ पीठ, पृष्ठ। २ सहारा, आसरा। ३ पीढ़ी, पूर्वज। यौ०- पुश्त दर पुश्त= पीढी-दर-पीढ़ी।

पुश्तक- पुं० (फा०) घोड़ों आदि का अपने पिछले पैरों से मारना, क्रि० अ०- झाड़ना, मारना।

पुश्तखार- पुं० (फा०) एक प्रकार का पंजा या दस्ता जिससे पीठ खुजलाते हैं।

पुश्तपनाह- स्त्री० (फा०) १ रक्षा करने वाला, रक्षक। २ आश्रय का स्थान।

पुश्ता- पुं० (फा० पुश्तः) १ पानी की रोक या मजबूती के लिये दीवार की तरह बनाया हुआ ढालुआँ टीला। २ बाँध, ऊँची मेड़। ३ किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा, पुट्ठा।

पुतारा- पुं० (फा० पुश्तारः) उतना बोझ जो पीठ पर उठाया जा सके।

पुश्ती- स्त्री० (फा०) १ समर्थन और सहायता, पृष्ठ पोषण। २ पुस्तक की जिल्द का पुट्ठा।

पुश्तीबान- पुं० (फा०) (भाव० पुश्तीबानी) पृष्ठ-पोषण।

पुश्तैनी- वि० (फा०) १ जो कई पुश्तों से चला आता हो, दादा-परदादा के समय का पुराना। २ आगे की पीढ़ियों तक चलने वाला।

पूच- वि० (फा०) १ खाली, रिक्त। २ व्यर्थ का, फ़ज़ूल, वाहियात। ३ तुच्छ। ४ नीच, कमीना।

पूज़- पुं० (फा०) पशुओं की आकृति, जानवर का चेहरा, यौ०- पूज़बन्द= जानवरों के मुँह पर बाँधने की जाली।

पेच- पुं० (फा०) १ घुमाव, घिराव, चक्कर। मुहा०- पेच व ताव खाना= मन ही मन कुढ़ना और क्रुद्ध होना। २ उलझन, झंझट, बखेड़ा। ३ चालाकी, चालबाजी, धूर्तता। ४ पगड़ी की लपेट। ५ कल, यंत्र, मशीन। ६ मशीन के पुर्जे। मुहा०- पेच घुमाना= ऐसी युक्ति करना जिससे किसी के विचार बदल जायँ। ७ वह कील या काँटा या उसके नुकीले आधे भाग जिन पर चक्करदार गड़ारियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है, स्क्रू। ८ कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। ९ तरकीब, युक्ति। १० एक प्रकार का आभूषण जो कानों में पहना जाता है।

पेचक- स्त्री० (फा०) बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।

पेच-दर-पेच- वि० (फा०) जिसमें पेच के अन्दर और भी पेच हों।

पेचदार- वि० (फा०) १ जिसमें कोई पेच या कल हो, पेचदार। २ जो टेढ़ा-मेढ़ा और कठिन हो, मुश्किल।

पेचवान- पुं० (फा० पेच) एक प्रकार का हुक्का।

पेचाँ- वि० (फा०) घुमावदार, पेचीला।

पेचिश- स्त्री० (फा०) पेट की वह पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है, मरोड़।

पेचीदा- वि० (फा० पेचीदः) १ जिसमें पेच या घुमाव हो। २ जल्द समझ में न आने वाला, जटिल, गूढ़।

पेश- पुं० (फा०) १ अगला भाग, आगे का हिस्सा। २ 'उ' कारका द्योतक चिन्ह जो अक्षरों के ऊपर लगता है। क्रि० वि० आगे, सामने। मुहा०- पेश आना= १ आगे आना। २ व्यवहार करना, सलूक करना।

पेशक़दमी- स्त्री० (फा०) १ किसी काम में बढ़ना या चलना। २ नेतृत्व। ३ आक्रमण। किसी काम में आगे बढ़ना या चलना। नेतृत्व। ३ आक्रमण।

पेश-क़ब्ज- स्त्री० (फा०) छोटी कटार।

पेश-कश- स्त्री० (फा०) १ बड़ो को दी जाने वाली भेंट। २ प्रस्ताव। ३ प्रार्थना।

पेशकार- पुं० (फा०) हाकिम के सामने काग़ज़-पत्र पेश करने वाला कर्मचारी।

पेशकारी- स्त्री० (फा०) पेशकार का कार्य या पद।

पेश-खेमा- पुं० (फा०) १ फौज का वह सामान जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। २ फौज का अगला हिस्सा, हरावल। ३ किसी बात या घटना का पूर्व लक्षण।

पेश-गाह- स्त्री० (फा०) मकान के आगे का खुला भाग, आँगन।

पेशगी- वि० (फा०) वह धन जो किसी को कोई काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय, अगौड़ी, अगाऊ, बयाना।

पेश-गोई- स्त्री० (फा०) कोई बात पहले से कह रखना, भविष्य कथन।

पेशदंदाँ- पुं० (फा०) सवेरे का जलपान, नाश्ता।

पेश-दस्ती- स्त्री० (फा०+अ०) पहले से व्यवस्था करना, पेशबंदी।

पेश-नमाज़- पुं० (फा०) वह धार्मिक नेता जो नमाज पढ़ने के समय सबके आगे रहता हैं, इमाम।

पेश-बंद- पुं० (फा०) घोड़े के चार-जामे का वह बंद जो घोड़े की गरदन पर से लाकर दूसरी तरफ बाँधा जाता है और जिससे चार-जामा खिसक नहीं सकता।

पेश-बंदी- स्त्री० (फा०) पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति।

पेश-बीं- वि० (फा०) आगे की बात पहले से देख या समझ लेने वाला, दूरदर्शी।

पेश-बीनी- स्त्री० (फा०) पहले से कोई बात जान या समझ लेना, दूरदर्शिता।

पेश-रौ- पुं० (फा०) १ सबके आगे चलने वाला। २ मार्गदर्शक।

पेशवा- पुं० (फा०) १ नेता, सरदार, अग्रगण्य। २ महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मन्त्रियों की उपाधि।

पेशवाई- स्त्री० (फा०) १ किसी माननीय पुरुष के आने पर कुछ दूर आगे चलकर उसका स्वागत करना, अगवानी। २ पेशवाओं का शासन।

पेशवाज़- पुं० स्त्री० दे० 'पिशवाज।'

पेशा- पुं० (फा० पेशः) वह कार्य जो जीविका उपार्जित करने के लिये किया जाय, कार्य, उद्यम, व्यवसाय।

पेशानी- स्त्री० (फा०) १ मस्तक, माथा। २ भाग्य, क़िस्मत। ३ अगला या ऊपरी भाग।

पेशाब- पुं० (फा०) मूत, मूत्र।

पेशाब-खाना- पुं० (फा० पेशाबखानः) वह स्थान जहाँ लोग मूत्र त्याग करते हों।

पेशा-वर- पुं० (फा० पेशःवर) किसी प्रकार का पेशा करने वाला, व्यवसायी।

पेशी- स्त्री० (फा०) १ हाकिम के सामने किसी मुकदमे के पेश होने की क्रिया, मुकदमे की सुनवाई। २ सामने होने की क्रिया या भाव।

पेशीन- वि० (फा०) पुराना, प्राचीन।

पेशीन-गोई- स्त्री० (फा०) भविष्य-कथन, पेश-गोई।

पेशोपस- पुं० (फा०) असमंजस, आगा-पीछा।

पेश्तर- क्रि० वि० (फा०) पहले, पूर्व।

पैक- पुं० (फा०) समाचार ले जाने वाला, हरकारा।

पैकर- स्त्री० (फा०) चेहरा, मुख। यौ०- परी-पैकर= जिसका मुख परियों के समान सुन्दर हो।

पैकाँ- पुं० दे० 'पैकान।'

पैकान- पुं० (फा०) तीरका फल, माँसी।

पैकार- स्त्री० (फा०) युद्ध, लड़ाई। पुं० (फा० पायकार) फुटकर सौदा बेचने वाला।

पैखाना- पुं० (फा० पाखानः) १ वह स्थान जहाँ मल-त्याग किया जाय। २ मल, गू, ग़लीज़, पुरीष।

पैग़ंबर- पुं० (फा०) मनुष्यों के पास ईश्वर का संदेशा लेकर आने वाला। जैसे- ईसा, मुहम्मद।

पैग़ाम- पुं० (फा०) वह बात जो कहला भेजी जाय, संदेशा, संदेश।

पैज़ार- स्त्री० (फा०) उपानह, जूता, जोड़ा।

पै- पुं० (फा०) १ क़दम, पैर। २ पैरों का निशान। मुहा०- किसी के पर-पै-होना= किसी के पीछे पड़ जाना, बहुत तंग करना।
पै-दर-पै- क्रि० वि० (फा०) १ क्रम क्रम से, क्रमशः। २ लगातार।
पैदा- वि० (फा०) १ उत्पन्न, प्रसूत। २ प्रकट, अविर्भूत, घटित। ३ प्राप्त, अर्जित, कमाया हुआ।
पैदाइश- स्त्री० (फा०) उत्पत्ति।
पैदाइशी- वि० (फा०) जो पैदाइश या जन्म से हो, जन्म-जात।
पैदावारी- दे० 'पैदावार।'
पैमाइश- स्त्री० (फा०) ज़मीन आदि नापने की क्रिया या भाव, माप।
पैमान- पुं० (फा०) १ वचन, वादा। २ संधि।
पैमाना- पुं० (फा० पैमानः) मापने का औजार या साधन, मान-दंड।
पैमानाकश- पुं० (फा० पैमानःकश) शराबी, मद्यप।
पैरवी- स्त्री० (फा०) १ अनुगमन, अनुसरण। २ आज्ञापालन। पक्ष का मंडन, पक्ष लेना। ४ कोशिश।
पैरहन- पुं० (फा०) चोग़े की तरह का एक लम्बा पहनावा।
पैरास्ता- वि० (फा० पैरास्तः) सजाया हुआ, सुसज्जित। यौ०- आरास्तः व पैरास्तः।
पैरो- वि० (फा०) अनुयायी।
पैरो-कार- पुं० (फा०) मुक़दमे आदि की पैरवी करने वाला।
पैबंद- स्त्री० (फा० पैवंद) १ कपड़े आदि का छेद बंद करने का छोटा टुकड़ा, चकती, थिगली, जोड़। २ किसी पेड़ की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़ कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय। ३ किसी चीज में लगाया हुआ जोड़।
पैबंदी- वि० (फा० पैबंदी) पैबंद लगाकर पैदा किया हुआ (फल आदि)।
पैवस्त- वि० दे० 'पैवस्ता।'
पैवस्ता- वि० (फा० पैवस्तः) (पैवस्तगी) १ मिला हुआ, सम्बद्ध। २ अच्छी तरह साथ में जोड़ा हुआ।
पैहम- वि० (फा०) सटा हुआ। क्रि० वि० लगातार।
पोइया- स्त्री० (फा० पोइयः) घोड़े की एक प्रकार की चाल, क़दम।
पोच- वि० (फा० पूच) १ तुच्छ, क्षुद्र। २ अशक्त, क्षीण। ३ निकम्मा।
पोतादार- पुं० (फा० पोतःदार) खजानची, कोषाध्यक्ष।
पोदीना- पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसकी हरी पत्तियाँ मसाले के काम में आती हैं, पुदीना।
पोलाद- पुं० दे० 'फ़ौलाद।'
पोश- पुं० (फा०) १ वह जिससे कोई चीज ढँकी जाय। जैसे- मेज़-पोश, तख्त-पोश। २ आगे से हटाने का संकेत, हट जाओ। वि० पहनने वाला। जैसे- सफ़ेद-पोश।
पोशाक- स्त्री० (फा०) पहनने के कपड़े, वस्त्र, परिधान, पहनावा।
पोशीदगी- स्त्री० (फा०) १ पोशीदा होने का भाव। २ छिपावा, दुराव।
पोशीदा- वि० (फा० पोशीदः) छिपा हुआ।
पोशिश- स्त्री० (फा०) पहनावा, पोशाक।
पोस्त- स्त्री० (फा०) १ छिलका, बकला। २ खाल, चमड़ा। ३ अफ़ीम के पौधे का डोडा या ढोढ़। ४ अफ़ीम का पौधा, पोस्त।
पोस्त-कंदा- वि० (फा० पोस्तकन्दः) १ जिसके ऊपर का छिलका निकाल दिया गया हो। २ (बात) जिसमें बनावट न हो, साफ साफ, स्पष्ट।
पोस्ती- पुं० (फा०) १ वह जो नशे के लिये पोस्त के डोडे पीसकर पीता हो। २ आलसी आदमी।
पोस्तीन- पुं० (फा०) १ गरम और मुलायम रोएँवाले समूर आदि, कुछ जानवरों की खाल का बना हुआ पहनाव। २ खाल का बना हुआ कोट जिसमें नीचे की ओर बाल

होते हैं।

पौलाद- पुं० देखो० 'फौलाद'

प्याज़- स्त्री० (फा० पियाज) उग्र गंधवाला एक प्रसिद्ध कंद।

प्याज़ी- वि० (फा० पियाजी) प्याज के रंग का, हलका गुलाबी।

प्यादा- पुं० (फा० पियादः) १ पदाति, पैदल। २ दूत, हरकारा।

प्याला- पुं० (फा० पियालः) (स्त्री० अल्पा० प्याली) १ एक प्रकार का छोटा कटोरा, बेला, जाम। २ शराब पीने का पात्र। मुहा०- हम-प्याला व हम-निवाला= एक साथ खाने-पीने वाले लोग। ३ तोप या बंदूक आदि में वह गड्ढा जिसमें रंजक रखते हैं।

फक़- वि० (अ०) भय आदि के कारण जिसका रंग पीला पड़ गया हो। जैसे- चेहरा फक़ हो जाना।

फक़त- क्रि० वि० (अ०) केवल, मात्र, सिर्फ।

फक़ीर- पुं० (अ०) (बहु० फुक़रा) १ भीख माँगने वाला, भिखमंगा, भिक्षुक। २ साधु, संसार-त्यागी। ३ निर्धन मनुष्य।

फक़ीराना- क्रि० वि० (अ० फक़ीर+फा० आनः) फक़ीरों की तरह। वि० फक़ीरों का सा। पुं० वह भूमि जो किसी फक़ीर को उसके निर्वाह के लिये दान कर दी जाय।

फक़ीरी- स्त्री० (अ० फक़ीर) १ भिखमंगापन। २ साधुता। ३ निर्धनता।

फक्क- स्त्री० (अ०) १ दो मिली हुई चीजों को अलग करना। २ मुक्ति, छुटकारा।

फक्क-उल्-रेहन- पुं० (अ०) रेहन रखी हुई चीज छुड़ाना।

फक़्र- (अ०) १ दीनता, दरिद्रता। २ फक़ीर का भाव, फक़ीरी, साधुता। ३ आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु की कामना न करना।

फखर- पुं० दे० 'फख्र'।

फख्र- पुं० (अ०) १ अभिमान, घमंड, शेखी। २ वह वस्तु या बात जिसके कारण महत्व प्राप्त हो या अभिमान किया जा सके।

फख्रेकौम- पुं० (अ०) वह जिस पर कौम को फख्र हो।

फख्रिया- क्रि० वि० (अ०) फख्र या अभिमान-पूर्वक।

फग़फूर- पुं० (फा० फग़फूर) चीन के बादशाहों की उपाधि।

फग़ाँ- पुं० दे० 'फुगाँ।'

फज- पुं० (अ०) पहाड़ी रास्ता।

फजर- स्त्री० (अ० फज्र) १ प्रभात, तड़का, सबेरा, प्रातःकाल।

फज़ल- पुं० दे० 'फज्ल।'

फज़ा- स्त्री० (अ०) १ खुला हुआ मैदान, विस्तृत क्षेत्र। २ शोभा।

फजाइया- पुं० (अ०) आश्चर्य या खेदसूचक चिह्न जो इस प्रकार (!) लिखा जाता है।

फज़ायल- पुं० (अ० फज़ाइल) फजीलत का बहु०, अच्छाइयाँ, खूबियाँ।

फजीअत- स्त्री० (अ०) दुर्दशाय, दुर्गति।

फजीलत- स्त्री० (अ०) १ बड़प्पन, श्रेष्ठता। २ खूबी, उत्तमता, अच्छापन। मुहा०-फजीलत की पगड़ी बाँधना=बड़प्पन या श्रेष्ठता सम्पादित करना।

फज़ीह- वि० (अ०) १ बदनाम करने या नीचे गिराने वाला। २ निंदित।

फज़ीहत- स्त्री० (अ० फजीअत) अपमान, निन्दा, बदनामी।

फज़ीहती- स्त्री० दे० "फजीहत"। वि० लड़ाई झगड़ा या फजीहत करने वाला।

फजूल- वि० (अ० फुजूल) १ आवश्यकता से अधिक, अतिरिक्त। २ व्यर्थ का, निकम्मा, निरर्थक।

फजूलखर्च- वि० (अ०+फा०) (फजूल-खर्ची) अपव्ययी, बहुत खर्च करने वाला।

फजुलगो- वि० (अ०+फा०) (फजूल-गोई) व्यर्थ की बातें कहने वाला, बकवादी।

फज्र- स्त्री० (अ०) सवेरा, प्रातःकाल।

फज्ल- पुं० (अ०) १ अधिकता, ज्यादती।

२ कृपा, दया, अनुग्रह। जैसे- फज्लेखुदा= ईश्वर की कृपा।

फतवा- पुं० (अ० फत्वः) मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी आदि किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं।

फतह- स्त्री० (अ० फत्ह) (बहु० फुतूह) १ विजय। २ सफलता, कृतकार्य्यता।

फतहनामा- पुं० (अ०फत्ह+फा०नामः) वह पत्र जिस पर किसी की विजय का वर्णन हो।

फतहमन्द- वि० (अ०+फा०) (फतहमन्दी) विजयी, विजेता।

फतहयाब- वि० (अ० फत्त + फा०) (फतहयाबी) जिसने विजय प्राप्त की हो, विजयी।

फतीन- वि० (अ०) चतुर, बुद्धिमान, सयाना।

फतीर- पुं० (अ०) ताजा गुँधा हुआ आटा, "खमीर" का उल्टा। यौ०- फतीरी-रोटी= ताजे गुँधे हुए आटे की रोटी।

फतीलसोज़- पुं० (अ०+फा०) १ धातु की दीवट जिसमें एक या अनेक दीए ऊपर नीचे बने होते है, चौमुखा। २ दीवट, चिरागदान।

फतीला- पुं० (अ० फतीलः) १ बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज जिस पर कोई यंत्र लिखा हो। २ वह बत्ती जिससे बन्दूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है। ३ कपड़े की वह बत्ती जिसे पनशाखे पर रख कर जलाते हैं। वि० बहुत क्रुध, आग बबूला।

फतूर- पुं० (अ० फुतूर) १ विकार, दोष। २ हानि, नुकसान। ३ विघ्न, बाधा। ४ उपद्रव, खुराफात।

फतूरिया- वि० (अ० फुतूर+हिं०इया) खुराफात करने वाला, उपद्रवी।

फतूरी- वि० दि० "फतूरिया"।

फतूही- स्त्री० (अ०) १ बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती, सदरी। २ लड़ाई या लूट में मिला माल।

फत्ताँ- वि० (अ०) फितना या आफत करने वाला। जैसे-चश्मे फत्ताँ=आफत ढाने वाली आँख। २ दुष्ट, पाजी। पुं० १ शैतान। २ सुनार।

फत्ताह- वि० (अ०) १ खोलने वाला। २ आज्ञा देने वाला। ३ ईश्वर का एक विशेषण।

फन- पुं० (अ०) १ गुण, खूबी। २ कला, विद्या। यौ०-फन्नेलतीफ=ललित कला। ३ दस्तकारी। ४ छलने का ढंग, मकर।

फनकार- पुं० (अ०+फा०) कलाकार।

फनकारी- स्त्रीं० (अ०+फा०) कलाकारी, कला।

फना- स्त्री० (अ०) १ नाश, बरबादी। २ मृत्यु।

फनाफीअल्लाह- पुं० (अ०) फकीरों के ध्यान की वह अवस्था लिसमें वि अपना और सारे संसार का आस्तित्व भूल कर ईश्शवर चिन्तन में तन्मय हो जाते हैं।

फनून- पुं० दे० "फुनून"।

फन्द- पुं० (फा०) छल, कपट, फरेब। यौ०-फन्द व फरेब=छल कपट।

फनदुक़- स्त्री० (अ० फुन्दुक़) १ एक प्रकार का लाल रंग का छोटा फल या मेवा जिसकी उपमा प्रमिकाओं के होठों या मेंहदी लगी उँगलियों से देते हैं। २ उँगलियों के सिरों पर मेंहदी लगाने की क्रिया।

फन्नी- वि० (अ०) कला संबंधी।

फम्म- पुं० (अ०) मुख।

फरंग- पुं० दे० "फिरंग"।

फर- पुं० (फा०) १ सजावट, शोभा। २ चमक दमक। यो०-कर्र व फर=शान शौकत, शोभा।

फरअ- स्त्री० (अ०) (बहु० फरुअ) शाखा, डाल, टहनी।

फरऊन- पुं० (अ०) १ मगर या घड़ियाल नामक जल जन्तु। २ मिस्र के नास्तिक बादशाहों की उपाधि जो स्वयं अपने आप को ईश्वर कहा करते थे। ३ अत्याचारी, अन्यायी, जालिम। ४ घमंडी, अभिमानी।

मुहा0-फरऊन बे सामान=वह अभिमानी और उद्दंड जिसमें सामर्थ्य कुछ भी न हो, झूठमूठ इतराने वाला।

फरऊनी- स्त्री0 (अ0 फरऊन से उर्दू) १ उद्दंडता। २ घमंड। ३ पाजीपन, शरारत।

फरक़- पुं0 (अ0 फर्क़) १ पार्थक्य, अलगाव। २ बीचक, अन्तर, दूरी। मुहा0-फरक़ फरक़ होना="दूर हो" या "राह छोड़ो" की आवाज होना, "हटो बचो" होना। ३ भेद, अंतर, ४ दुराव, परायापन, अन्यता। ५ कमी, कसर।

फरखुन्दा- (फा0 फर्खुन्दः) शुभ, उत्तम, नेक। जैसे-फरखुन्दा बख़्त=भाग्यवान।

फरगुल- स्त्री0 पुं0 (अ0) रुईदार लबादा या पहनावा।

फरज़- दे0 "फर्ज़"।

फज़न्द- स्त्री0 दे0 "फर्ज़न्द"।

फरज़ानगी- स्त्री0 दे0 "फर्ज़ानगी"।

फरजाना- वि0 दे0 "फर्ज़ाना"।

फरज़ाम- पुं0 (फा0 फर्ज़ाम) १ अन्त, समाप्ति। २ परिणाम, फल।

फरज़ीन- पुं0 (फा0) १ बुद्धिमान्, अक्लमन्द। २ शतरंज में वज़ीर नाम का मोहरा। यौ0-फरजीनवन्द=शतरंज में वह मात जो फरजीन या वज़ीर का आगे बढ़ा दी जाय।

फरतूत- वि0 (फा0) १ बहुत वृद्ध, बहुत बुड्ढा। २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ निकम्मा, निरर्थक।

फरद- स्त्री0 दे0 "फर्दा"।

फरदा- क्रि0 वि0 (फा0) आगामी कल, आनेवाला दूसरा देन, स्त्री0 क़यामत या प्रलय का दिन।

फरदी- स्त्री0 दे0 "फर्दा"।

फरफर- क्रि0 वि0 (फा0) जल्दी-जल्दी।

फरबही- स्त्री0 (फा0 फर्बही) मोटाई, मोटापा, स्थूलता।

फरवा- वि0 (फा0 फर्बः) मोटा ताजा, स्थूल शरीर वाला। यौ0-फरवा अन्दाम=स्थूल शरीर।

फरमाँबरदार- वि0 (फा0) (फरमाँबरदारी) हुकुम मानने वाला।

फरमाँरवा- पुं0 (फा0) १ फरमान जारी करने वाला, आज्ञा देने वाला। २ बादशाह, शासक।

फरमारवाई- स्त्री0 (फा0) १ फ़रमान जारी करना। २ बादशाही।

फरमाइश- स्त्री0 (फा0) आज्ञा। (विशेषतः कोई चीज लाने या बनाने आदि के लिये।)

फरमाईशी- वि0 (फा0) विशेष रुप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।

फरमान- पुं0 (फा0) (बहु0 फरामीन) राजकीय आज्ञा पत्र, अनुशासन पत्र।

फरमाना- क्रि0 सं0 (फा0 फरमान) आज्ञा देना, कहना (आदर सूचक)।

फरश- पुं0 (अ0 फर्श) १ बैठने के लिए बिछाने का वस्त्र, बिछावन। २ धरातल, समतल भूमि। ३ पक्की बनी हुई ज़मीन, गच।

फरशवन्द- पुं0 दे0 "फरश"।

फरशी- स्त्री0 (फा0 फर्शी) १ धातु का वह बरतन जिस पर मैचा, सटक आदि लगा कर लोग तमाकू पीते हैं; गुड़गुडी। २ उक्त प्रकार का बना हुआ हुक्का।

फरसंग- पुं0 दे0 "फरसख"।

फरस- पुं0 (अ0) घोड़ा।

फरसख- पुं0 (फा0 'फरसंग' का अ0 रुप) एक प्रकार की दूरी की नाप जो एक कोस से कुछ अधिक और तीन मील के लगभग होती है।

फरसूदा- वि0 (फा0 फर्सूदः) १ बहुत पुराना और निकम्मा। २ थका हुआ, शिथिल। ३ दुर्दशा ग्रस्त।

फरहंग- स्त्री0 (फा0) १ बुद्धिमत्ता, समझ। २ शब्द कोश।

फरह- स्त्री0 (अ0) आनन्द, प्रसन्नता, खुशी। वि0 प्रसन्न, खुश।

फरद्दत- स्त्री0 (अ0) प्रसन्नता, आनन्द, खुशी।

फरद्दतअफज़ा- वि० (अ०+फा०) आनन्द बढ़ाने वाला, सुखद।
फरहतबख्श- वि० दे० "फरहत अफज़ा"।
फरहमन्द- वि० (अ०+फा०) आनन्दित, हर्षित।
फरहाँ- वि० (फा०) प्रसन्न।
फरहाद- पुं० (फा०) १ पत्थर पर खुदाई का काम बनाने वाला, संग तराश। २ फारस का एक प्रसिद्ध संग तराश जा शीरीं नामक राजकुमारी पर आसक्त था और उसी के लिये जिसने अपने प्राण दे दिये थे।
फराइज- पुं० (अ०) फरायज।
फराख- वि० (फा०) (फराखी) १ दूर तक फैला हुआ, विस्तृत। २ चौडा। ३ विशाल, बड़ा।
फराग़- पुं० दे० "फराग़त"।
फराग़त- स्त्री० (अ०) १ छुटकारा, छुट्टी, मुक्ति। २ निश्चिन्तता, बेफिक्री। ३ मलत्याग, पाखाना फिरना।
फराज़- वि० (वि०) ऊँचा, उच्च, पुं० ऊँचाई। यौ०-नशेय व फराज=ऊँच नीच, भला बुरा।
फरामीन- पुं० (फा०) "फरमान" का अरबी बहु०।
फरामोश- वि० (फा०) भूला हुआ, विस्मृत।
फरामोशी- स्त्री० (फा०) भूलने की क्रिया, विस्मृति, विस्मरण।
फरायज- पुं० (अ० 'फर्ज' का बहु०) १ वे कार्य जिनका करना कर्त्तव्य हो, कर्तव्य समूह। २ सत्तराधिकार सम्बन्धी विद्या या शास्त्र।
फरार- पुं० (अ० फिरार) भागना। वि० भागा हुआ।
फरारी- वि० (अ० फिरार से फा०) १ भागने वाला, निकल जाने वाला। २ गायब हो जाने वाला। ३ भागा हुआ।
फरासत- स्त्री० दे० "फिरासत"।
फराहत- स्त्री० चालाकी, होशियारी।
फराहम- क्रि० वि० (फा०) इकट्ठा।
फराहमी- स्त्री० (फा०) संग्रह।
फरियाद- स्त्री० (फा० फर्याद) १ दुःख से बचाए जाने के लिए पुकार, शिकायत, नालिश। २ विनती, प्रार्थना।
फरियादरस- वि० (फा०) (फरियाद रसी) किसी की फरियाद सुन कर उसका कष्ट दूर करने वाला।
फरियादी- वि० (फा०)फरियाद करने वाला।
फरिश्ता- पुं० (फा० फिरिश्तः) (बहु० फरिश्त गान) १ ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता हो। २ देवता।
फरिश्ताखाँ- (पुं०) दे० "फरिश्ता खबाँ"।
फरिस्तादा- वि० (फा० फिरिस्तादः) भेजा हुआ, रवाना किया हुआ। पुं० दूत।
फरीक़- पुं० (अ०) १ फर्क़ समझने वाला, विवेकशील। २ समूह, टोली, जत्था, झुंड। ३ किसी प्रकार का झगड़ा या विवाद करने वालो में से कोई एक पक्ष।
फरीकेअव्वल- पुं० (अ०) १ पहला पक्ष। २ अभियोग उपस्थित करने वाला पक्ष, मुदई, वादी।
फरीकेसानी- पुं० (अ०) १ दूसरा पक्ष। २ वह पक्ष जिस पर अभियोग लगाया जाय, मुद्दालेह, प्रतिवादी।
फरीकैन- पुं० (अ० "फरीक़" का बहु०) १ दोनों पक्ष। २ वादी और प्रतिवादी, मुद्दई और मुद्दालेह।
फरीद- वि० (अ०) अनुपम, बेजोड़।
फरुग़- पुं० (फा० फरुग) १ ज्योति, प्रकाश। २ आसक्त होने वाला, आशिक, मोहित।
फरेब- पुं० (फा०) १ छल, कपट। २ चालाकी, धुर्त्तता।
फरेबदादा- वि० (फा० फरेबदादः) जिसके साथ फरेब किया गया हो, फरेब का शिकार।
फरेबदिही- स्त्री० (फा०) धोखा देना।
फरेबी- पुं० (फा०) कपटी।

फरो- क्रि० वि० (फा० फिरो) नीच, अधीन, मातहत। वि० १ नीच, तुच्छ, कमीना। २ शान्त, दबा हुआ। जैसे-गुस्सा फरो करना।

फरोकश- वि० (फा० फरो+कश) उतरना या ठहरना। जैसे-बादशाह महल में फरोकश हुए।

फरोख्त- स्त्री० (फा० फिरोख्त) बेचने की क्रिया, बिक्री, विक्रय।

फरोख्ती- स्त्री० (फा०) बिक्री, विक्रय।

फरोग- पुं० दे० "फरुग"।

फरोगुजाइश्त- स्त्री० (फा०) १ ध्यान न देना, उपेक्षा, लापरवाही। २ आगा-पीछा, आनाकानी, टाल मटोल। ३ त्रुटि, कमी। ४ भूल चूक।

फरोतन- वि० (फा०) (फरोतनी) दीन, गरीब।

फरोद- क्रि० वि० (फा) नीचे पुं० ठहरना, टिकना।

फरोदगाह- स्त्री० (फा०) उतरने या ठहरने की जगह।

फरोमाँदा- वि० (फा० फरोमाँदः) (फरोमाँदगी) १ दीन, गरीब। २ पका हुआ, शिथिल।

फरोमाया- वि० (फा० फरोमायः) १ नीच, कमीना। २ ओछा।

फरोश- पुं० (फा० फिरोश) बेचने वाला, विक्रेता। जैसे-मेवा-फरोश।

फरोशिन्दा- वि० दे० "फरोश"।

फरोशी- स्त्री० (फा० फिरोशी) बेचने की क्रिया, विक्रय। जैसे-मेवा-फरोश

फर्क़- पुं० दे० "फरक"।

फर्ज- स्त्री० (अ०) १ दरार, सन्धि। २ स्त्री की योनि, भग। पुं० (अ०) (बहु० फरायज) १ कर्तव्य कर्म। २ कल्पना, मान लेना। यौ० बिल-फर्ज=मान लो कि।

फर्जकिफाया- पुं० (अ०) वह कर्त्तव्य जो परिवार के किसी एक व्यक्ति के पूरा करने पर उसके अन्य सम्बन्धियों के लिये आवश्यक न रह जाय। जैसे-किसी के मरने पर नमाज पढ़ना।

फर्जन्- क्रि० वि० (अ० "फर्ज" से उर्दू) फर्ज करके, मान कर।

फर्जन्द- पुं० (फा०) १ पुत्र, बेटा लड़का। २ संतान।

फर्जन्दी- स्त्री० (फा०) "फर्जन्द" का भाव, पुत्रत्व, सुतत्व, लडकापन। मुहा०-फर्जन्दी में लेना= १ किसी को अपना लड़का बनाना। २ गोद या दत्तक लेना। ३ अपना दामाद बनाना।

फर्जानगी- स्त्री० (फा०) १ बुद्धिमत्ता, समझदारी, अकलमन्दी। २ विद्या, शास्त्र। ३ गुण। ४ योग्यता।

फर्जाना- वि० (फा० फर्जानः) १ बुद्धिमान, अक्लमन्द, समझदार। २ ज्ञानी। ३ विद्वान, पंडित।

फर्जी- वि० (अ० "फर्ज" से फा०) १ कल्पित, माना हुआ। २ कल्पित नाम मात्र का, सत्ताहीन।

फर्त- स्त्री० (अ०) अधिकता, ज्यादती। जैसे-फर्ते शौक, फर्ते मुहब्बत।

फर्द- स्त्री० (अ०) १ कागज या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २ इस प्रकार के टुकड़े पर लिखा हुआ विवरण या सुची आदि। फर्दे जुर्म=आरोप पत्र। ३ रजाई, शाल आदि का एक या ऊपरी पल्ला। ४ कोई अकेला शेर या कविता का पद। ५ एक व्यक्ति। ६ एक प्रकार का पक्षी। वि० १ अकेला। २ एक।

फर्दनकर्दन- क्रि० वि० (अ०) एक एक करके, अलग अलग।

फर्दबशर- पुं० (अ०) एक व्यक्ति, एक आदमी।

फर्दबातिल- वि० (अ०) १ निकम्मा, निरर्थक। २ अयोग्य।

फर्रार- वि० (अ०) बहुत तेज भागने या दौडने वाला।

फर्राश- पुं० (अ०) १ वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, फर्श बिछाना और दीपक जलाना आदि होता है। २ नौकर,

खिदमतगार।

फर्राशखाना- पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ तोशक, तकिया व चाँदनी आदि रखे जाते हैं, तोशक खाना।

फर्राशी- वि० (अ० "फर्राश" से फा०) फर्श या फर्राश के कामों से संबंध रखने वाला। यौ०-फर्राशी पंखा=बड़ा पंखा जिससे फर्शभ पर हवा की जा सकती हो, स्त्री० फर्राश का काम या पद।

फर्रुख- वि० (फा०) १ शुभ, उत्तम। २ सुन्दर, मनोहर।

फर्श- पुं० (अ०) १ बिछावन। २ दे० "फरश"।

फर्शी- स्त्री० (अ०) एक प्रकार का बड़ा हुक्का, वि० फर्श-संबंधी, फर्श का। मुहा०-फर्शीसलाम=ज़मीन पर झुक कर क़िया जाने वाला सलाम।

फलक- पुं० (अ०) आकाश, आत्मान। मुहा०-फलक पर चढ़ाना=दिमाग़ बहुत बढ़ा देना, बढ़ावा देना।

फलकबोस- (अ०+फा०) गगनचुम्बी।

फलकसैर- स्त्री० (अ० "फलक" से) विजया, भंग, भँग।

फालकी- वि० (अ० "फलक" से) फलक या आकाश संबंधी, आसमान का।

फ़लकीयान- स्त्री० (अ०) अंतरिक्ष-विमान।

फलाँ- पुं० (अ० फुलाँ) अनिश्चित, आमुक।

फलाकत- स्त्री० (अ०) १ दरिद्रता, गरीबी। २ विपत्ति, कष्ट।

फलाकतज़दा- वि० (अ०+फा०) (फलाकत-ज़दगी) दुर्दशाग्रस्त, विपत्ति में पड़ा हुआ।

फलातूँ- पुं० (अ०) अफलातून या प्लेटो नामक यूनानी दार्शनिक और विद्वन्।

फलान- स्त्री० (अ० फुलाँ) आमुक, कोई आनिश्चित।

फल्सफिा- पुं० (अ०) १ दर्शन-शास्त्र। २ शास्त्र, विज्ञान।

फलाह- स्त्री० (अ०) १ सफलता, विजय। २ सुख, आराम। ३ परोपकार, भलाई। ४ उत्तमता।

फलाहत- स्त्री० (अ०) कृषि कर्म, खेती-बारी।

फलीता- पुं० (अ० फलीतः) १ बड़ आदि के रेशों से बटी हुई रस्सी जिसमें तोड़ेदार बंदूक दागने के लिए आग लगा कर रखी जाती है, पलीता।

फलूस- पुं० (अ० फल्स) ताँबे का सिक्का।

फल्सफा- पुं० (अ०) १ दर्शन-शास्त्र। २ शास्त्र, विज्ञान।

फल्सफी- वि० (यू० से) फल्सफा या दर्शन-शास्त्र जानने वाला।

फवायद- पुं० (अ०) "फायदा" का बहुवचन।

फव्वारा- पुं० (अ० फव्वारः) "फौव्वारा"।

फसल- स्त्री० दे० "फस्ल"।

फसली- वि० दे० "फस्ली"।

फसाँ- स्त्री० (फा०) छुरी आदि पर सान रखने का पत्थर, सान, कुरुंड।

फसाद- पुं० (अ०) १ विकार, बिगाड़। २ दंगा, बलवा। ३ ऊधम, उपद्रव। ४ झगड़ा, लड़ाई।

फसादज़दा- वि० (अ०+फा० ज़दः) दंगाग्रस्त,दंगापीडित।

फसादी- वि० (अ० "फसाद" से फा०) १ फसाद खड़ा करने वाला, उपद्रवी। २ झगड़ालू।

फसाना- पुं० (फा० फसानः) १ मन से गढ़ा हुआ किस्सा, कल्पित कहानी। २ विवरण, हाल।

फसानाख्वाँ- वि० (फा० फसानःख्वाँ) कहानी कहने वाला।

फसानानवीस- पुं० (फा० फसानःनवीस) उपनयास कार।

फसाहत- स्त्री० (अ०) किसी विषय का सुन्दर और मनोहर रुप से वर्णन करना, उत्तम भाषण करने की शक्ति।

फसील- स्त्री० (अ०) नगर या बस्ती के चारों ओर की दीवार, शहर पनाह, परकोटा।

फसीह- वि० (अ०) जिसमें फसाहत का गुण हो, सुवक्ता।

फसुर्दगी- स्त्री० (फा० अफ्सुर्दगी) उदासी, खिन्नता।

फसुर्दा- वि० (फा० उफ्सुर्दः )उदास, खिन्न।

फसूँ- पुं० (अ०) जादू-टोना, मंत्र, टोटका।

फसूँगर- वि० (फा०) (फसूँगरी) १ जादू टोना करने वाला। २ मंत्र, मुग्ध करने वाला।

फसूँसाज़- वि० दे० "फसूँगर"।

फस्ख- पुं० (अ०) १ (विचार आदि) बदलना। २ तोड़ना। ३ रद्द करना।

फस्द- स्त्री० (अ०) नस को छेद कर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया। मुहा०-फस्द-खुलवाना या लेना=१ शरीर का दूषित रक्त निकलवाला। २ होश की दवा कराना।

फस्ल- स्त्री० (अ०) १ ऋतु, मौसिम। २ काल, समय। ३ खेत की उपज, शस्य, पैदावार। ४ ग्रन्थ का अध्याय या प्रकरण। ५ पार्थक्य, जुदाई। ६ दो वस्तुओं का अन्तर बतलाने वाली चीज। ७ धोखा, छल।

फस्ली- वि० (अ० "फस्ल" से फा०) फसल का, फस्ल-संबंधी। पुं० हैजा नामक रोग, विशूचिका।

फस्लीसन्- पुं० (फा०) अकबर का चलाया हुआ एक संवत् जिसका प्रचार उत्तरी भारत में कृषि सम्बन्धी कार्यो के लिये होता है।

फस्लीसाल- पुं० दे० "फस्लीसन्"।

फस्लेगुल- स्त्री० दे० "फसले-बहार"।

फस्लेबहार- स्त्री० (अ०+फा०) बसन्त ऋतु।

फस्साद- पुं० (अ०) फस्द खोलने वाला, जर्राह।

फस्साद- स्त्री० (अ०) फस्द खोलने का काम, जर्राही।

फहम- स्त्री० (अ० फह्म) बुद्धि, समझ, ज्ञान, अक़्ल।

फहमाइश- स्त्री० (फा० फह्माइश) समझाने या सतर्क करने की क्रिया, तंबीह, चेतावनी।

फहमीद- स्त्री० (फा० फह्मीद) समझ, बुद्धि, अक्ल।

फहमीदा- वि० (फा० फह्मीदः) समझा हुआ।

फद्दरिस्त- दे० "फेहरिस्त"।

फद्दश- वि० (अ० फुहश) फूहड़, अश्लील।

फहीम- वि० (अ०) समझदार।

फाइज़- वि० (अ०) कामयाब, सफल।

फाइदा- पुं० (अ० फाइदः) फायदा, लाभ।

फाइल- वि० दे० "फायल"।

फाक़ा- पुं० (अ० फाकः) १ निराहार रहना, उपबात। २ दरिद्रता, ग़रीबी।

फाक़ाकश- वि० (अ० फाकः+फा०) (फांक़ाकशी) १ भूख रहने वाला, भूखा। २ निर्धन, कंगाल।

फाक़ाज़दा- वि० (अ० फाकः+फा० जदः) भूख का मारा, भुखा।

फाक़ामस्त- वि० (अ० फाकः+फा०) (फाक़ा-मस्ती) जो खाने पीने का कष्ट उठा कर भी कुछ चिन्ता न करता हो।

फाकेमस्त- वि० दि० "फाक़ामस्त"।

फाखिर- वि० (अ०) (स्त्री० फाखिरः) १ फख्र या घमंड करने वाला, अभिमानी। २ बहुमूल्य, कीमती।

फाखिरा- वि० स्त्री० (अ० फाखिरः) बहुत बढ़िया और बहुमूल्य।

फाख्तई- वि० स्त्री० (अ० फाख्तः) एक प्रकार का खाकी रंग। वि० पडुक के रंग का, खाकी।

फाख्ता- स्त्री० (अ० फाख्तः) पंडुक नामक पक्षी, धँवरख। मुहा०-फाख्ता उड़ाना=गुलछर्रे उड़ाना, आनन्द-मंगल करना।

फाजिर- पुं० (अ०) (स्त्री० फाजिरा) १ व्यभिचारी। २ पापी।

फा[illegible]- वि० (अ०) आवश्यकता से अ[illegible], बढ़ा हुआ, ज्यादा। (बहु० फुजला) पुं० विद्वान, पंडित।

फाज़िलबाकी- वि० (अ०) ज्यादा और किसी के जिम्मे बाकी निकलने वाला, बाकी बचा हुआ।

फातिमा- स्त्री० (अ० फतिमः) १ वह स्त्री जो बच्चे को स्तनपान कराना जल्दी बन्द कर दे। २ मुहम्मद साहब की कन्या जो हजरत अली की पत्नी और हसन तथा हुसैन की माता थी।

फातिहा- पुं० स्त्री० (अ० फातिह) १ प्रार्थना। २ वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय।

फातेह- वि० (अ० फातिह) (स्त्री० फातिहा) १ आरम्भ करने या खोलने वाला। २ फतह या विजय करने वाला, विजयी। ३ मरने वाला।

फासी- वि० (अ०) १ नष्ट हो जाने वाला, नश्वर। २ मरने या प्राण देने वाला।

फानूस- पुं० (फा०) १ एक प्रकार की बढ़ी कंदील। २ एक दंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

फानूसेखयाल- पुं० (फा०+अ०) कागज आदि की बनी हुई वह कन्दील जिसके अन्दा हाथी घोड़े आदि के चित्र एक चक्कर में लगे रहते हैं और हवा या दीये के धूएँ से घूमते हैं।

फानूसेखयाली- पुं० दे० "फानूसे-खयाल"।

फाम- पुं० (फा०) वर्ण, रंग। वि० १ रंग वाला, जैसे-सियह-फाम=काले रंग वाला। २ जैसा, समान।

फायक़- वि० (अ० फाइक़) १ श्रेष्ठता रखने वाला, श्रेष्ठ, उच्च। २ बढ़ा हुआ, अच्छा।

फायज़- वि० (अ० फाइज़) १ पहुँचने या प्राप्त करने वाला। २ विजयी।

फयदा- पुं० (अ० फाइदः) १ लाभ, नफ़ा, प्राप्ति। २ प्रयोजन सिद्धह, मतलब पूरा होना। ३ अच्छा फल, भला परिणाम। ४ उत्तम प्रभाव।

फायदामन्द- वि० (अ०+फा०) (फायदामन्दी) लाभदायक।

फायल- वि० (अ० फाइल) १ कोई फेल या काम करने वाला। २ बालकों के साथ प्रकृति विरुद्ध संभोग करने वाला। पुं० व्याकरण में कर्ता।

फयली- वि० (अ०) क्रियाशील, जो अच्छी तरह कार्य कर सके।

फायलेहक़ीकी- पुं० (अ०० सच्चा ईश्वर।

फार- पुं० (अ०) चूहा।

फारखती- स्त्री० (अ० फारिग+खती) वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के जम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया, चुकती, बेबाकी।

फारस- पुं० (फा०) ईरान या पारस नामक देश।

फारसी- स्त्री० (फा०) फारस देश की भाषा, वि० फारस का, फारस सम्बन्धी।

फारसीदाँ- वि० (फा०) फारसी भापा जानने वाला।

फारिग़- वि० (अ०) १ जो कोई काम करक निश्चिन्त हो गया हो, जिसने किसी काम से छुट्टी पा ली हो, बेफिक्री। २ जिसे छुटकारा मिल गया हो, मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद।

फरिगउलबाल- वि० (अ०) जो सब प्रकार से निश्चिन्त और सुखी हो।

फारिगखती- स्त्री० (अ०+फा०) फरखती।

फारिस- पुं० दे० "फारस"।

फारुक- वि० (अ०) १ भले और बुरे का फर्क बतलाने या जानने वाला, विवेकशील। २ दूसरे खलीफा हजरत उमर की उपाधि।

फारुकी- वि० (अ०) दूसरे खालीफा का वंशज।

फार्स- पुं० (फा०) फारस।

फार्सी- स्त्री० (फा०) फारसी।

फाल- स्त्री० (अ०) पाँसा आदि फेंक कर शुभ अशुभ बतलाने की क्रिया। मुहा०-फाल खुलवाना=रमल आदि की सहायता से शुभ अशुभ आदि का पता लगाना। फाल देखना=उक्त क्रिया से शुभ अशुभ बतलाना।

फालनामा- पुं० (अ०+फा० नामः) वह ग्रन्थ सजिसे देख कर फाल की सहायता से शमुन या शुभ अशुभ आदि बतलाते हैं।

फलसई- वि० (फा० फाल्सः) फालसे के रंग का,ललाई लिये हुए हलका ऊदा।

फलसा- पुं० (फा० फाल्सः मि० सं० परुपक) एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटेखराट मीठे फलल लगते हैं।

फालिज़- पुं० (अ०) एक रोग जिसमें अधा अंग सुन्न हो जाता है, अर्धांग, पक्षाघात।

फालीज़- स्त्री० (फा०) १ खेत। २ ब्राग, उपवन, वाटिका।

फालूदा- सापुं० (फा० फालूदः)पीने के लिये गेहुँ के सत्त से बनाई हुई एक चीज (मुसल) बिया, सिमइयाँ।

फाश- वि० (फा०) खुला हुआ, प्रक्ट, स्पप्ट।

फासला- पुं० (अ० फासिलः) दूरी, अन्तर।

फासिद- वि० (अ०) १ फसाद या झगड़ा करने वाला, झगडालू। २ बिगडा हुआ, खराब। जैसे फासिद खून। ३ दुष्ट, पाजी।

फासिदा- वि० दे० "फासिद"।

फासिल- वि० (अ०) १ बहुत अधिक दुश्चरित्र या पाजी। २ गालियाँ या गन्दी बातें बकने वाला। ३ लज्जाजनक।

फाहिशा- स्त्री० (अ० फाहिशः) दुश्चरित्रा, पुंश्चली।

फिक़रा- पुं० (अ० फिक्रः) १ वाक्य। २ झाँसा पट्टी। ३ व्यंग्य।

फिकरेबाज- वि० (अ० फिक्र+फा०) (फिक़रेबाजी) झाँसा पट्टी देने वाला।

फिकरेबाजी- स्त्री० (फा० फिक्रःबाजी) फिकरे कसने का काम।

फिक्का- स्त्री० (अ०) १ चिंता, सोच, खटका। २ ध्यान, विचाररं। ३ उपाय का विचार, यत्न।

फिक्रमन्द- वि० (अ०+फा०) (फिक्रमन्दी) चिन्ताग्रस्त।

फिगार- वि० (फा०) घायल, जख्मी।

फिज़ा- स्त्री० (अ० फज़ा) १ खुली जमीन, मैदान। २ शोभा, बहार। यौ०-पुर फिज़ा= सुन्दर और शोभायुक्त (स्थान)।

फिज़ल- वि० दे० "फजूल"।

फितनएआलम- दे० "फितनएजहाँ"।

फितनएजहाँ- वि० (अ०+फा०) १ सारे संसार में आफत मचाने वाला। २ प्रेमिका का एक विशेषण।

फितना- पुं० (अ० फित्ना) १ पाप, अपराध। २ लड़ाई झगड़ा। ३ एक प्रकार का इत्र। वि० १ दुष्ट, पाजी, झगड़ालू। २ उपद्रव या आफत करने वाला। ३ प्रेमिका का एक विशेषण।

फितनाअंगेज- वि० (अ० फित्ना+फा०) (फितना-अंगेज़ी) १ फितना या आफत खड़ा करने वाला, उपद्रवी, २ प्रेमिका का एक विशेषण।

फतनापरदाज़- वि० (अ० फित्ना+फा०) (फितना परदाजी) १ फितना या उपद्रव खड़ा करने वाला। २ प्रेमिका का एक विशेषण।

फतरत- स्त्री० (अ० फित्रत) १ प्रकृति। २ स्वभाव। ३ बुद्धिमत्ता, होशियारी, समझदारी। ४ धूर्तता।

फितरती- वि० (अ० फित्रती फा०) १ प्रकृतिक। २ स्वाभाविक। ३ धूर्त।

फितरा- पुं० (अ० फित्रः) वह अन्न जो ईद के दिन नमाज से पहले दान के लिये निकाल कर रखा जाता है।

फितराक़- पुं० (फा० फित्राक़) चमड़े के वे तस्में जो घोड़े की जीन के दोनों तरफ सामान बाँधने के लिए रहते हैं।

फितरी- वि० (अ० फित्री) प्राकृतिक।

फितानत- स्त्री० (फा०) बुद्धिमत्ता,

अक्लमन्दी।
फितीर- पुं० दे० "फतीर"।
फितूर- पुं० दे० "फतूर"।
फित्रीन- वि० (अ०) धूर्त, चालाक।
फित्र- पुं० (अ० फित्र) दिन भर रोजा रखने के बाद सन्ध्या को कुछ खाकर रोजा खोलना। बहु० अफ्तार। यौ०- ईद-उल्-फित्र= ईद का त्यौहार।
फिदवी- वि० (अ० फिद्वी) स्वामिभक्त, आज्ञाकारी। पुं० (स्त्री० फिदविया) दास।
फिदा- वि० (अ०) १ किसी के लिये प्राण देने वाला। २ आसक्त, मुग्ध। ३ निछावर, सदके।
फिदाई- स्त्री० (अ०) फिदा होने या जान देने वाला, किसी के लिये प्राण निछावर करने वाला।
फिदिया- पुं० (अ० फिदियः)१ वह धन जिसके बदले में किसी अपराधी को कारागार से छुड़ाया जाय आथवा प्राण दंड से मुक्त कराया जाय। २ अर्थदंड, जुरमाना। ३ वह विशेष कर जो राजा की ओर से अन्य धर्मावलम्बियों पर लगता हैं।
फिन्नार- क्रि० वि० (अ०) नरक या नरक की अग्नि में। (प्रायः शाप के रुप में बोलते हैं।)
फिरंग- पुं० (अ० "फ्रांक" से फा० फरंग) १ युरोप का एक देश, फांन्स, गोरों का मुल्क, फिरंगिस्तान। २ गरमी, आतशक (रोग)।
फिरंगिस्तान- पुं० (फा० फरंगिस्तान) युरोप महादेश।
फिरंगी- पुं० (फा० फरंग) १ फिरंग देश में उत्पन्न। २ फिरंग देश में रहने वाला।
फिरक़ा- पुं० (फा० फिर्क़ः) १ जाति। २ जत्था। ३ पंथ, संप्रदाय।
फिरक़ापरस्त- वि० (अ० फिरक़ः+फा० परस्त) सम्प्रदयिक, साम्प्रदायिकतावादी।
फिरदौस- पुं० (अ० फिर्दौस) १ वाटिका, बाग। २ स्वर्ग, बहिश्त।
फिरदौसमंज़िलत- वि० दे० "फिरदौस-मकानी"।
फिरदौसमकानी- वि० (अ० फिर्दौस+फा०) १ स्वर्ग में रहने वाला। २ स्वर्गीय।
फिरनी- स्त्री० (फा० फिर्नी) एक प्रकार की खीर जो पीसे हुए चावलों से पकाई जाती है।
फिराक़- पुं० (अ०) १ वियोग, बिछोह। २ चिन्ता। ३ खोज।
फिराग़- पुं० (अ०) १ मुक्ति, छुटकारा, रिहाई। २ फुरसत, सुभीता। ३ आनन्द, खुशी। ४ अधिकता, बहुतायत। ५ सन्तोष, इतमीनान।
फिरार- पुं० दे० "फरार"।
फरावाँ- वि० (फा०) (फिरावानी) बहुत, अधिक, ज्यादा।
फिरासत- स्त्री० (अ०) बुद्धि की तीव्रता, बुद्धिमत्ता, अक्लमन्दी।
फिरिश्तगान- पुं० (फा०) "फिरिश्ता" का बहु०"।
फिरिश्ता- पुं० दे० "फरिश्ता"।
फिरुद- क्रि० वि० दे० "फरोद"।
फिरो- क्रि० वि० दे० "फरो"।
फिरोख्त- स्त्री० दे० "फरोख्त"।
फिल्-जुमला- क्रि० वि० (अ०) १ तात्पर्य यह कि, संक्षेप में। २ थोड़ा सा। ३ यों ही।
फिलफिल- स्त्री० (अ०) काली मिर्च।
फिलफौर- क्रि० वि० (अ०) तुरन्त, तत्काल।
फिलबदोह- क्रि० वि० (अ०) बिना पहले से सोचे हुए, तुरन्त, तत्काल।
फिलमसल- क्रि० वि० (अ०) उदाहरण स्वरुप।
फिलवाक़ा- क्रि० वि० (अ०) वास्तव में, वस्तुतः, दरहक़ीकत।
फिलहकीक़त- क्रि० वि० (अ०) वास्तव में, वास्तुतः।
फिलहाल- क्रि० वि० (अ०) इस समय, इस अवसर पर।
फिशाँ- वि० (फा०) (फिशानी) छिड़कने या बिखेरने वाला,बरसाने या झाड़ने वाला।

यौ०-आतिश-फिशँ=आग बरसाने वाला।

फ़िशार- पुं० (फा०) १ मुसललमानों के अनुसार किसी के शव को कब्र के चारो ओर से खूब कस कर (दंड-स्वरुप) दबाना। २ निचोड़ना।

फिसाद- पुं० दे० "फसाद"।

फिसाना- पुं० दे० "फसाना"।

फिसाल- पुं० (अ०) १ जुदाई, वियोग, दूध छुड़ाई।

फिस्क- पुं० (अ०) १ आज्ञा का उल्लंघन। २ सन्मार्ग से च्युत होना। ३ अपराध, कसूर, दोष। ४ पाप, गुनाह। यौ०-फिस्क व फुजुर= अपराध और कुकर्म।

फिस्ख- वि० दे० "फस्ख"।

फिहरिसत- स्त्री० दे० "फेहरिस्त"।

फी- वि० (अ०) प्रत्येक, हर एक।

फीअमानअल्लाह- (अ०) ईश्वर तुम्हें अपनी रक्षा में रखे।

फीज़माना- क्रि० वि० (अ०+फा०) आज कल के ज़माने में, इन दिनों।

फीता- पुं० (पुर्त० से फा० फीतः) पतली धज्जी या सूत आदि जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आता है।

फीमाबैन- क्रि० वि० (अ०) दोनों पक्षों के बीच में।

फीरनी- स्त्री० दे० "फिरनी"।

फीरोज़- वि० (फा०) १ विजयी। २ सुखी और संपन्न।

फीरोज़ा- पुं० (फा० फिरोजः) हरापन लिये नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।

फील- पुं० (फा०) हाथी, हस्ती।

फीलखाना- पुं० (फा०) वह घर जहाँ हाथी बाँधा जाता हो, हस्ति शाला।

फीलपा- पुं० (फा०) एक रोग जिसमें पैर या और कोई अंग फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है।

फीलपाया- पुं० (फा०) स्तम्भ, खम्भा।

फीलबान- पुं० (फा०) हाथीवान।

फीलमुर्ग- पुं० (फा०) मोर की तरह का एक प्रकार की पक्षी।

फीला- पुं० (फा० फीलः) शतरंज का एक मोहरा जिसे हाथी, किश्ती और रुख भी कहते हैं।

फीसदी- क्रि० वि० (अ०+फा०) हर सैकड़े पर, प्रतिशत।

फीसबीलअल्लाह- क्रि० वि० (अ०) ईश्वर के लिये, खुदा की राह पर।

फुक़रा- पुं० (अ०) "फकीर" का बहु०।

फुकाअ- स्त्री० (अ०) १ चावल से बनी शराब। २ प्याला, चषक।

फुगा- पुं० (फा०) रोगा, चिल्लाना।

फुज़ला- पुं० (अ०) "फाज़िल" (विद्वन) का बहु०। पुं० (अ० फुज्लः) १ बाकी बचा हुआ। २ जूठा, उच्छिष्ट। ३ शरीर से निकलने वाले मल, जैसे-थूक, पसीना, पेशाब, पाखाना आदि। ४ मल।

फुज़ूँ- वि० (फा०) बढ़ा हुआ, अधिक।

फुजूर- पुं० (अ०) १ पाप। २ अपराध। ३ दुराचार।

फुजूल- वि० दे० "फजूल"।

फुतूर- पुं० दे० "फतूर"।

फतूह- स्त्री० (अ०) १ "फतह" (विजय) का बहु०। २ ऊपर से होने वाला लाभ, अतिरिक्त लाभ। ३ लूट में मिला हुआ माल।

फतूहात- स्त्री० (अ०) "फुतूह" का बहु०।

फुनून- पुं० अ० में "फन" का बहु०।

फुरक़त- स्त्री० (अ०) वियोग, जुदाई, बिछोह।

फुरक़ान- स्त्री० (अ०) कुरानशरीफ, मुसलमानों धर्म ग्रन्थ।

फुरसत- स्त्रीर० (अ० फुर्सत) १ अवसर, समय। २ अवकाश, निवृत्ति, छुट्टी। ३ रोग से मुक्ति, आराम।

फुरुग- पुं० दे० "फरुग"।

फुरूश- पुं० (अ०) "फर्श) का बहु०।

फुर्ज- स्त्री० दे० "फर्ज"।

फुलाँ- पुं० दे० "फलाँ"।

फुलूस- पुं० (अ० फल्स का बहु०) तांवे का सिक्का, पैसा।

फुसूल- पुं० (अ०) "फस्ल" का बह०।

फुहश- वि० दे० "फहूश"।

फेल- पुं० (अ० फेअल) [बहु० अफाल] १ कार्य, काम, कर्म। यौ०-फेलन व कौलन=वाचाकर्मणा, कर्म और वचन से। २ दुष्कर्म। ३ सम्भोग, विषय। ४ व्याकरण में क्रिया।

फेलजामिनी- स्त्री० (अ० फेल+जामिन) नेक चलनी की जमानत।

फेलन्- क्रि० वि० (अ०) कार्य रुप में।

फेलमुतअद्दी- पुं० (अ०) व्याकरण में सकर्मक क्रिया।

फेललाज़िमी- पुं० (अ०) व्याकरण में अकर्मक क्रिया।

फेलिया- वि० दे० "फेली"।

फेली- वि० (अ० फेल) १ धूर्त्त, चालाक। २ बदचलन, दुराचारी।

फेहरिस्त- स्त्री० (फा० फहरिस्त) सुची, तालिका।

फैज़- पुं० (अ०) १ परोपकार, उपकार, हित। २ फायदा, लाभ। ३ कीर्ति, यश।

फैज़रसाँ- वि० (अ०+फा०) (फैजरसानी) १ दानी। २ यश देने वाला।

फैज़ेआम- पुं० (अ०) जन साधारण का हित, लोकोपकार।

फैयाज़- वि० (अ०) बहुत बड़ा दाता, दानी, उदार।

फैयाज़ी- स्त्री० (अ०) १ दानशीलता। २ उदारता।

फैलसूफ- पुं० (यू० से० फा०) १ विद्वन, विद्याप्रेमी। २ धोखेबाज, चालबाज। ३ फजूलखर्ची।

फैसल- पुं० (अ०) १ फैसला करने वाला हाकिम, न्यायकर्ता। २ न्याय, फैसला।

फैसला- पुं० (अ० फैस्लः) १ दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, इसका निबटेरा। २ किसी मुकदमें में अदालत की आखिरी राय।

फोता- पुं० (फा० फोतः) १ भूमिकर, लगान। २ थैली, कोष, थैला। ३ अंडकोष।

फोताखाना- पुं० (फा०) खज़ाना, कोष।

फोतेदार- पुं० (फा०) १ खजानची, कोषाध्यक्ष। २ रोकड़िया।

फौक़- वि० (अ०) १ उच्च, श्रेष्ठ, उत्तम, पुं० १ उच्चता, उँचाई। २ उत्तमता, श्रेष्ठता। ३ बड़प्पन। मुहा०-फौक़रखना या ले आना= बढ़कर होना।

फौकउलभड़क- वि० (अ० "फौक़" से उर्दू) भड़कीला, भड़कदार।

फौकानी- वि० (अ०) १ ऊपर का ऊपरी। २ श्रेष्ठ, उत्त्म, पुं० वह अक्षर जिसके ऊपर नुकता लगा हो।

फौक़ियत- स्त्री० (अ०) श्रेष्ठता, उत्तमता। २ किसी से बढ़कर होने की अवस्था।

फौज- स्त्री० (अ०) १ झुंड, जत्था। २ सेना, लशकर।

फौज़- पुं० (अ०) १ विजय, जीत। २ लाभ, फायदा। ३ मुक्ति।

फौजकशी- पुं० (अ०+फा०) सैनिक आक्रमण, चढ़ाई, धावा।

फौजदार- पुं० (अ०+फा०) सेनापति।

फौजदारी- स्त्री० (अ०+फा०) १ लड़ाई झगड़ा, मारपीट। २ वह अदालत जहाँ ऐसे मुकदमों का निर्णय होता हो जिनमें अपराधी को दंड मिलता है।

फौजी- वि० (अ० फौज) फौज सम्बन्धी, सैनिक।

फौत- स्त्री० (अ०) १ न रह जाना, नष्ट हो जाना। २ मृत्यु, मौत, वि० मरा हुआ, मृत।

फौती- स्त्री० (अ० फौत से फा०) मरना, मृत्यु, वि० मरा हुआ, मृत।

फौतीनामा- पुं० (अ० फौत+फा० नामः) किसी की मृत्यु का सूचना पत्र।

फौर- पुं० (अ०) १ समय, वक्त। २ जल्दी, शीघ्रता।

फौरन्- क्रि० वि० (अ०) चटपट, तुरन्त।

फौलाद- पुं० (अ०) एक प्रकार का कड़ा

और अच्छा लोहा, खेड़ी।
फौलादी- वि० (फा० ) फौलाद, नामक लोहे का बना हुआ, स्त्री० भाले या बल्लम की लकड़ी।
फौव्वारा- पुं० (अ० फव्वारः ) १ जल का महीन-महीन छींटा। २ जल की वह टोंटी जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उड़ कर गिरा करते हैं, जल यंत्र।
बंग- स्त्री० (फा० ) भंग, भाँग।
ब- उप० (फा०) एक उपसर्ग जो शब्दों पहले लगकर 'के साथ' 'से' 'पर' आदि हअर्थ देता है, जैसे-ब-शौक।
बअदालत- क्रि० वि० (फा०+अ० ) अदालत में।
बआराम- क्रि० वि० (फा० ) आराम से।
बइफ़रात- क्रि० वि० (फा०+अ० ) अत्यधिक।
बइवज- (फा०+अ० ) बदले में।
बइस्तस्ना- क्रि० वि० (अ० ) १ छोड़ देने पर भी। २ न मानने या लेने पर भी।
बईद- क्रि० वि० (अ० ) दूर, फासले का अन्तर पर।
बऐनही- क्रि० सवि० (अ० ) १ ठीक वही। २ ठीक उसी तरह।
बकदर- क्रि० वि० (फा० ब+कद्र) १ अमुक हिसाब या दर से। २ अनुसार, वि० इतना।
बक़र- पुं० (अ० ) १ गौ। २ बैल।
बकलमेंखुद- क्रि० वि० (फा०+अ० ) अपने कलम से।
बक़ा- स्त्री० (अ० ) १ बाकी या बना रहना। २ शाश्वत या अमर होने का भाव, अमरता।
बकावल- पुं० (फा० ) भोजन बनाने वाला, बावरची, रसोइया।
बक़ाया- पुं० (अ० बक़ायः ) वह जो बाक़ी बचा हो। वि० अवशिष्ट।
बकार- क्रि० वि० (फा० ) काम से।
बक़िया- वि० (अ० बकियः ) बाक़ी बचा हुआ, अवशिष्ट।
बक़ौल- क्रि० वि० (अ० ) किसी के कौल या कहने के मुताबिक, किसी के कथनानुसार।
बक्क़ाल- पुं० (अ० ) तरकारी और उन्नआदि बेचने वाला, बनिया।
बक्तर- पुं० दे० "बख्तर"।
बक़रईद- स्त्री० (अ० ) मुसलमानों का एक त्यौहार जो जिलहिज मास की १०वीं तारीख को होता है आर जिसमें वे पशुओं की बलि देते हैं।
बखिदमत- क्रि० वि० (फा०+अ० ) सेवा में।
बखिया- पुं० (फा० बखियः ) कपड़े की एक प्रकार की मज़बूत सिलाई।
बखील- पुं० (अ० ) (भाव० बखीली) कंजूसी, कृपण, मक्खीचूस।
बखीली- स्त्री० (फा० बखीला) कंजूसी, कृपणता।
बखूबी- क्रि० वि० (फा० ) खूबी के साथ अच्छी तरह, उचित रुप में।
बखूर- पुं० (अ० ) सुगंध, महक।
बखैर- क्रि० वि० (फा० ) खैरियत के साथ कुशलपूर्वक, अच्छी तरह।
बख्त- पुं० (फा० ) १ भाग्य, किस्मत, तक़दीर। २ सौभाग्य।
बख्तर- पुं० (फा० ) एक प्रकार की जिरह या कपड़ा जो सैनिक लोगह लड़ाई के समय पहनते हैं।, सन्नाह।
बख्तावर- वि० (फा० ) भाग्यवान, खुशकिस्मत, तकदीरवर।
बख्तावरी- स्त्री० (फा० ) सौभाग्य, खुशकिस्मती।
बख्या- पुं० (फा० बख्यः ) एक प्रकार की सिलाई।
बख्श- वि० (फा० ) १ बख्शने या माफ करने वाला। २ प्रदान करने वाला।
बख्शना- क्रि० स० (फा० बख्शीदन) १ प्रदान करना, देना। २ छोड़ना, जाने देना, क्षमा करना, माफ करना।
बख्शवाना- क्रि० स० (फा० बख्शीदन) बख्शने की प्रेरण करना, बख्शने में प्रवृत्त

करना।

बख्शिश- स्त्री0 (फा0) १ उपहार, भेंट। २ पुरस्कार, इनाम।

बख्शिशनामा- पुं0 (फा0 बख्शिशनामः) दानपत्र, हिब्बानामा।

बख्शी- पुं0 (फा0) १ वह कर्मचारी जो लोगों का वेतन बाँटता हो। २ कर वसूल करने वाला कर्मचारी।

बग़रज- क्रि0 वि0 (फा0+अ0) १ के लिए। २ के उद्देश्य से।

बग़ल- स्त्री0 (फा0) १ बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा, काँख। २ छाती के दोनों के किनारों का भाग, पार्श्व। मुहा0 बग़ल में दबाना या धरना=अधिकार करना। ले लेना। बग़लें बजाना=बहुत प्रसन्नता प्रकट करना, खूब खुशी मनाना। बग़ल गरम करना=साथ में सोना, संभोग करना। बग़ल में मुँह डालना=लज्जित होना, सिर नीचा करना। बग़लें झाँकना=लज्जित होकर इधर उधर देखना, भागने का रास्ता ढूँढ़ना।

बग़लगीर- वि0 (फा0) १ बगल में में रहना। २ गले लगना, लिपटना।

बग़ली- स्त्री0 (फा0) १ वह थैली जिसमें दर्जी सूई, तागा आदि रखतेह हैं, तिलादानी। २ कुरते आदि में कपड़े का वह टुकड़ा जो कंधे आदि के नीचे रहता है, बग़ल। ३ कुश्ती का एक पेंच। ४ एक प्रकार का डंडों का खेल, वि0 बग़ल का, बग़ल सम्बन्धी।

बग़ावत- स्त्री0 (अ0) किसी के विरुद्ध खड़े होना, विद्रोह।

बग़ीचा- पुं0 (फा0 बग़ीचः) छोटा बाग़। वाटिका।

बग़ैर- क्रि0 वि0 (अ0) बिना, छोड़कर, अलग रखतेहह हुए।

बचकाना- वि0 (फा0 बचगानः) १ बच्चों का सा। २ बच्चों के योग्य।

बचगाना- वि0 दे0 "बचकाना"।

बच्चा- पुं0 (फा0 बच्चः मि0 सं0 वत्स) १ किसी प्राणी का शिशु। २ बालक, लड़का।

बज़ला- पुं0 (अ0 बज़लः) मज़ाक, विनोद, परिहास, ठट्ठा। यौ0- बज़ला-संज= ठठोल।

बजा- वि0 (फा0) १ ठीक, दुरुस्त। २ वाजिब, उचित। मुहा0-बजालाना= १ पालन करना, पूरा करना। २ जैसे-आदाब बजा लाना।

बजाआवरी- स्त्री0 (फा0) आज्ञा या कर्त्तव्य आदि का पालन, हुक्के के मुताबिक काम करना।

बज़ाज़- पुं0 दे0 "बज़्ज़ाज"।

बजाय- क्रि0 वि0 (फा0) किसी की जगह पर, बदले में, जैसे-आप कपड़ों के बजाय नक़द दे दीजियेगा।

बजाहिर- क्रि0 वि0 (फा0) जाहिर में, ऊपर से देखने पर।

बजिद- क्रि0 वि0 (फा0+अ0) हठपूर्वक।

बजिन्स- वि0 क्रि0 वि (फा0) ठीक वैसा ही, ज्यों का त्यों।

बजुज़- अव्य0 (फा0) इसको छोड़ कर, अतिरिक्त, सिवा।

बज़ोर- क्रि0 वि0 (फा0) जोंर के साथ बलपूर्वक जबरदस्ती।

बज़्ज़- पुं0 (अ0) १ वस्त्र, कपड़ा। : सामान।

बज़्ज़ाज़- पुं0 (अ0) कपड़ा, बेचने वाला वस्त्र का व्यवसाय, कपड़े का कार बार।

बज्म- स्त्री0 (फा0) १ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग एकत्र हों, सभा। २ वह स्था जहाँ नृत्य गीत या आमोद प्रमोद हो, रं स्थल।

बज्मगाह- स्त्री0 (फा0) वह स्थान जहाँ नृत्य गीत और मद्य पान आदि हो महफिल।

बत- स्त्री0 (अ0) १ बत्तख। २ बत्तख वे आकार की शराब रखने की सुराही।

बतक- स्त्री0 दे0 "बत्तख"।

बतदरीज- क्रि0 वि0 (फा0+अ0) क्रम क्रम से, क्रमशः।

बत्तख- स्त्री0 (अ0 बत) हंस की जाति

की पानी की एक प्रसिद्ध चिड़िया।
बत्न- पुं० (अ०) (बहु० बतून) १ पेट, उदर। २ गर्भ।
बद- वि० (फा०) बुरा, खराब (प्रायः यौगिक में जैसे-बद-चलन, बदमआश।)
बदअमनी- स्त्री० (फा०+अ०) आशान्ति, अव्यवस्था।
बद-ख्शाँ पुं० (फा०) वंक्षु नदी के उद्गम के पास का एक देश जहाँ का लाल (रत्न) बहुत प्रसिद्ध हैं।
बद-गुमान- वि० (फा०) (बदगुमानी) जिसके मन में किसी की ओर से सन्देह उत्पन्न हुआ हो, असन्तुष्ट।
बद-गो- वि० (फा०) (बद-गोई) १ बुरी बातें कहने वाला। २ निन्दा करने वाला, चुगलखोर।
बद-चलन- वि० (फा० बद+हिं० चलन) (बद-चलनी) जिसका चाल-चलन अच्छा न हो, दुराचारी।
बदज़बान- वि० (फा०) (बद-जबानी) जो जबान सँभाल कर न बोलता हो, गाली-गुफ्ता बकने वाला।
बदजात- वि० (फा०) १ नीच कुल में उत्पन्न, कमीना, नीच। २ वाहियात, पाजी, दुष्ट।
बद-ज़ेब- वि० (फा०) जो देखने में अच्छा न लगे, जो खिलता न हो, भद्दा।
बदतमीज़- वि० (फा०+अ०) अशिष्ट, उजड्ड।
बद-तर- वि० (फा०) किसी की तुलना में अधिक बुरा, ज्यादा खराब।
बद-दिमाग़- वि० (फा०+अ०) (बद-दिमाग़ी) दुष्ट विचारों या स्वभाव वाला।
बददियानत- वि० (फा०) (बददियानती) जिसकी नीयत खराब हो, बेइमान।
बद-दुआ- स्त्री० (फा०) बुरी दुआ, शाप।
बदन- पुं० (अ०) (वि० बदनी) १ तन, शरीर, जिस्म। २ शरीर का गुप्त अंग।
बद-नसीब- वि० (फा०) (बद-नसीबी) अभागा, कम्बख्त।
बद-नाम- वि० (फा०) जिसकी निंदा हो रही हो, कलंकित।
बद-नामी- स्त्री० (फा०) लोक निन्दा, अपवाद।
बद-नीयत- वि० (फा०) (बद-नीयती) जिसकी नीयत खराब हो।
बद-नुमा- वि० (फा०) (बद-नुमाई) जो देखने में अच्छा न हो, कुरुप, भद्दा।
बद-परहेज- वि० (फा०) (बद-परहेजी) जो ठीक तरह से परहेज़ न कर सके।
बद-फेल- पुं० (फा०+अ०) बुरा काम, कुकर्म। वि० बुरे काम करने वाला, कुकर्मी।
बद-फेली- स्त्री० (फा० बद-फेल) कुकर्म।
बद-बख्त- वि० (फा०+अ०) कम्बख्त, अभागा।
बदबू- स्त्री० (फा०) (वि० बदबू-दार) खराब बू, दुर्गन्ध।
बद-मआश- दे० 'बदमाश'।
बद-मज़गी- स्त्री० (फा०) १ मजे या स्वाद का अभाव। २ मन मुटाव, पारस्परिक विरोध।
बद-मज़ा- वि० (फा० बदमज़ः) १ खराब मजे या स्वाद वाला। २ खराब, बुरा। ३ गुस्से में आया हुआ, क्रुद्ध।
बद-मस्त- वि० (फा०) (बदमस्ती) नशे में चूर, मस्त।
बदमाश- वि० (फा०) (बदमाशी) १ बुरे आचरण वाला, दुराचारी। २ लुच्चा, लफंगा।
बद-मिज़ाज- वि० (फा०+अ०) (बद-मिजाजी) दुष्ट स्वभाव वाला।
बद-मुआमिला- वि० (फा०) (बद-मुआमिलगी) जिसका व्यवहार या लेन देन ठीक न हो, चालाक बेईमान।
बद-रंग- वि० (फा०) १ जिसका रंग उड़ गया हो, खराब रंग वाला। २ किसी दूसरे रंग का (ताश)।
बदर-का- पुं० दे० 'बद्र क़ा'।
बदर-रौ- स्त्री० (फा०) नाली, मोरी, पनाला।

बद-राह- वि० (फा०) बुरी राह पर चलने वाला, कुमार्गी।

बदरौ- वि० (फा०) बुरे रास्ते पर चलने वाला, पथ भ्रष्ट।

बदरौर- स्त्री० दे० 'ब्रदर-रौं'।

बदल- पुं० (अ०) १ एककी जगह दूसरा रखना, बदलना। २ परिवर्तन, बदला। ३ एक चीज़ के बदले में दी हुई दूसरी चीज़।

बद-लगाम- वि० (फा०) १ (घोड़ा) जो लगाम का संकेत या जोर न माने। २ जो बोलते समय भले-बुरे का ध्यान न रखे।

बदला- पुं० (अ० बदल) १ परस्पर लेने और देने का व्यवहार, विनिमय। २ एक वस्तु की हानि या स्थान की पूर्ति के लिये उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु, पलटा, एवज। ३ एक पक्ष के किसी व्यवहार के उत्तर में दूसरे पक्ष का वैसा ही व्यवहार, पलटा, प्रतीकार। मुहा०- बदला लेना या चुकाना= किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना।

बदली- स्त्री० (अ० वदल) १ एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति, तबदीली, तबादला।

बदशक्ल- वि० (फा०+अ०) कुरुप, भोंडा।

बदशुअर- वि० (फा०+अ०) अशिष्ट, बदतमीज।

बद-सलूकी- स्त्री० (फा०) बुरा सलूक, अनुचित व्यवहार।

बदसूरत- वि० (फा०) खराब सूरत वाला, बद-शक्ल, कुरुप।

ब-दस्त- क्रि० वि० (फा०) हाथ से, द्वारा, मारफत, हस्ते।

बन्दस्तूर- क्रि० वि० (फा०) दस्तूर या क़ायदे के मुताबिक, नियमानुसार, जिस तरह होता आया हो, उसी तरह।

बद-हज़मी- स्त्री० (फा०) हजम न होना, अनपच, अपच।

बद-हवास- वि० (फा०) (बद-हवासी) जिसके होश हवास ठिकाने न हों, बहुत घबराया हुआ, विकल।

बदहाल- वि० (फा०+अ०) बुरे हाल वाला, दुर्दशाग्रस्त।

बदहाली- स्त्री० (फा०+अ०) बुरा हाल, दुर्गति, दुर्दशा।

बदी- स्त्री० (फा०) १ बद का भाव। २ बुराई, दोष, खराबी। ३ अपकार, अहित।

बदीअ- वि० (अ०) (बहु० बदाया) बिलक्षण, असाधारण, आश्चर्यजनक।

बदील- पुं० (अ०) धार्मिक पुरुष।

बदीह- वि० (अ०) स्पष्ट, खुला हुआ।

बदीही- वि० (अ०) १ खुला हुआ, स्पष्ट। २ पहले से बिना सोचा हुआ, तुरन्त ही कहा या सोचा हुआ।

बदौलत- क्रि० वि० (फा०) कृपा या अनुग्रह से। जैसे- आप की बदौलत यह काम हो गया।

बद्दू- पुं० (फा० बद) १ लुच्चा, बदमाश। २ अरब में बसने वाली एक जाति।

बद्र- पुं० (फा०) पूर्ण चन्द्रमा, पूर्णिमा का चाँद।

बद्रक़ा- पुं० (फा०) १ मार्गदर्शक। २ रक्षक। ३ औषध आदि का अनुपान।

बनफ़शा- पुं० (फा० बनफ़शः) एक प्रकार की बनस्पति जिसकी जड़ और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

ब-नाम- क्रि० वि० (फा०) १ नाम पर, नाम से। २ के विरुद्ध। जैसे- मोहन बनाम सोहन दावा हुआ है, सोहन के नाम पर मोहन का दावा हुआ है।

व-निस्बत- क्रि० वि० (फा०+अ०) किसी के मुकाबले में, अपेक्षा।

बनी- पुं० (अ०) लड़के। यौ०- बनी-आदम= आदम के लड़के, मनुष्य।

बन्द- पुं० (फा०) १ बाँधने की चीज। २ पुश्ता, बाँध। ३ शरीर में अंगों का जोड़। ४ कौशल, कारीगरी। ५ क़ाग़ज़ का ताव या टुकड़ा। ६ कविता का पद। वि० (फा०) १ चारों ओर से रुका या बाँधा हुआ। २ जिसके मुँह पर ढकना या आवरण लगा

हो। ३ 'खुला' का उल्टा। ४ जिसका कार्य रुका हो। ५ बाँधने वाला। जैसे- जिल्द-बन्द।

बन्दगी- स्त्री० (फा०) १ भक्तिपूर्वक ईश्वर की वन्दना। २ सेवा, खिदमत। ३ आदाब, प्रणाम, सलाम।

बन्दर- पुं० (फा०) (बहु० बनादिर) समुद्र तट का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं, बन्दरगाह।

बन्दा- पुं० (फा० बन्दः) (बहु० बन्दगान) १ सेवक, दास। २ मनुष्य, आदमी।

बन्दा-नवाज- पुं० (फा०) (भाव० बन्दा-नवाज़ी) वह जो अपने दासों या आश्रितों पर पूर्ण कृपा रखता हो, दीन-दयालु।

बन्दा-परवर- वि० (फा०) (बन्दा-परवरी) जो अपने सेवकों या आश्रितों का अच्छी तरह पालन करता हो, दीन-बन्धु।

बन्दिश- स्त्री० (फा०) १ बाँध नेकी क्रिया या भाव। २ गाँठ गिरह। ३ छन्द की रचना। ४ उपाय, तरकीब, योजना। ५ इलज़ाम, अभियोग।

बन्दी- पुं० (फा०) क़ैदी, बँधुआ। स्त्री० (फा० बन्दः) दासी, सेविका, चेरी। प्रत्य० बाँधे जाने या लिपि-बद्ध होने की क्रिया। जैसे- जमा-बन्दी, जबान-बन्दी, जिल्द-बन्दी।

बन्दीखाना- पुं० (फा०) कारागार, क़ैदखाना।

बन्दूक़- स्त्री० (अ०) एक प्रसिद्ध अस्त्र जो गोली रखकर बारुद की सहायता से चलाई जाती है।

बन्दूक़ची- पुं० (अ०) बन्दूक चलाने वाला सिपाही।

बन्दोबस्त- पुं० (फा०) १ प्रबन्ध, इन्तज़ाम। २ खेतों को नापकर उनका राज-कर निश्चित करना। ३ वह विभाग जिसके सुपुर्द यह काम हो।

बबर- पुं० (अ०) शेर, सिंह, केसरी।

ब-मंजिला- क्रि० वि० (फा०) जगह पर, पद पर। जैसे- ब-मंजिला माँ= माँ की जगह पर।

ब-मूजिब- क्रि० वि० (फा०) अनुसार, मुताबिक। जैसे- मैं आपके हुक्म के बमूजिब काम करूँगा।

ब-मै- क्रि० वि० (फा०) सहित, साथ। जैसे- ब-मै कपड़ों के बक्स भेज दो।

बयाज़- स्त्री० (अ०) १ सादा काग़ज या बही आदि। २ वह बही आदि जिसपर याददास्त के लिए कुछ लिख रखते हैं। ३ बही-खाता।

बयान- पुं० (अ० बैआनः) निश्चित किये हुए मूल्य का वह अंश जो खरीदने की बात-चीत करने के समय दिया जाता है, पेशगी, अगाऊ।

बयाबान- पुं० (फा०) १ निर्जल स्थान, सहारा। २ उजाड़ और सुनसान जगह।

बर- अव्य० (फा०) ऊपर, पर । जैसे- बर-वक्त= समय पर। मुहा०- बरआना। मुकाबले में ठहरना। वि० १ बढ़ा-चढ़ा, श्रेष्ठ। २ पूरा, पूर्ण (आशा आदि के सम्बन्ध में)। जैसे- मुराद बर आना= मनोरथ पूर्ण होना। वि० १ ले जाने वाला। जैसे- नामाबर= १ पत्र वाहक । २ लेने वाला। जैसे- दिल बर।

बर-अंगेख्ता- वि० (फा० बर-अंगेख्तः) क्रोध में आया हुआ, क्रुद्ध।

बर-अक्स- क्रि० वि० (फा०+अ०) विपरीत, उलटा।

बर-आमद- वि० दे० 'बरामद'।

बर-आबुर्द- पुं० (फा०) १ आँकने या जाँचने की क्रिया। २ वह पत्र जिसपर वेतन आदि का विवरण लिखा हो।

बर-आबुर्दन- पुं० (फा०) १ बाहर निकालना। २ ऊपर करना।

बर-आबुर्दा- वि० (फा० बर-आबुर्दः) १ बाहर निकाला या ऊपर लाया हुआ। २ जिसे आगे ले जायँ (हिसाब या रकम)।

बरक़ंदाज़- पुं० (अ० बर्क+फा० अन्दाज) बड़ी लाठी या तोड़ेदार बन्दूक रखने वाला

सिपाही।

बरकत- स्त्री० (अ०) बहु० बरकात) १ किसी पदार्थ की बहुलता या आवश्यकता से अधिकता, बहुतायत। २ लाभ, फायदा। ३ समाप्ति, अंत। ४ एककी संख्या। ५ धन-दौलत। ६ प्रसाद, कृपा।

बर-क़रार- वि० (फा०) १ भली भाँति स्थापित किया हुआ, दृढ़। २ वर्तमान, उपस्थित, बना हुआ।

बरखास्त- वि० (फा० बरख्वास्त) (बरख्वास्तगी) १ जो उठ या बन्द हो गया हो (कार्यलाय, न्यायालय आदि)। २ जो नौकरी से अलग कर दिया गया हो। स्त्री० १ उठना या बन्द होना। २ नौकरी से अलग होना।

बर-खिलाफ- वि० (फा०) उलटा, विपरीत। क्रि० वि० उलटे, विरुद्ध।

बर-खुरदार- वि० (फा० बरखुर्दार) (बर-खुरदारी) खाने-पीने आदि सब प्रकार से सुखी, निश्चिंत और सम्पन्न (आशावादी)। पुं० लड़का, पुत्र, बेटा।

बर-गश्ता- वि० (फा० बर-गश्तः) (बर-गश्तगी) १ पीछे की ओर मुड़ा या उलटा हुआ, फिरा हुआ। २ जो विरोध में खड़ा हो, विद्रोही।

बर-गुज़ीदा- वि० (फा० बर-गुजीदः) चुना हुआ।

बर-ज़ख- पुं० (अ०) १ किसी के मरने और क़यामत के बीच का समाय। २ दो बातों के बीच का समय या श्रृंखला आदि। ३ पीर आदि की आत्मा जो किसी पर आवे। ४ आकृति, चेष्टा।

बर-जस्ता- वि० (फा० बर-जस्तः) बात पड़ने पर तुरन्त कहा हुआ, बिना पहले से सोचे कहा हुआ (उत्तर, व्याख्यान) आदि।

बर-तरफ- वि० (फा०) (बरतरफी) १ एक तरफ किया हुआ। २ अलग किया हुआ, नौकरी आदि से अलग किया हुआ, पदच्युत।

बरदा- पुं० (तु० बरदः) १ युद्ध में पकड़ कर बनाया हुआ दास। २ दास, गुलाम।

बरदाफरोश- वि० (फा०) (बरदाफरोशी) जो दास बेचने का व्यापार करता हो, गुलामों को खरीदने और बेचने वाला।

बरदार- वि० (फा०) (बरदारी) उठाकर ले चलने वाला। जैसे- आसा-बरदार, हुक्का-बरदार।

बरदाश्त- स्त्री० (फा०) १ सहनेकी क्रिया या भाव, सहनशीलता। २ जाकड़ या उधार माल लेने की क्रिया।

बर-पा- वि० (फा०) १ अपने पैरों पर खड़ा हुआ। २ दृढ़। मुहा०- बरपा करना= खड़ा करना। जैसे- हश्र बरपा करना= भारी आफत खड़ी करना।

बरफ- पुं० दे० 'बर्फ'।

बरफी- स्त्री० (फा० बर्फ) एक प्रकार की मिठाई।

बरबाद- वि० (फा०) नष्ट, चौपट।

बरबादी- स्त्री० (फा०) नाश।

बरबिना- क्रि० वि० (फा०+अ०) के कारण।

बर-मला- क्रि० वि० (फा०) खुलेआम, सबके सामने।

बर-महल- वि० (फा०) जो ठीक स्थान पर अवसर पर हो। क्रि० वि० ठीक मौक़े पर, उपयुक्त अवसर पर।

बररु- क्रि० वि० (फा०) मुँह पर, सामने।

बर-हक़- वि० (फा०) १ जो हक़ पर हो। २ ठीक, उचित। ३ वास्तविक।

बरहना- वि० (फा० बरहनः) (बरहनगी) नंगा, नग्न, विवस्त्र, वस्त्र-हीन।

बरहम- वि० (फा०) १ चकराया हुआ, चकित। २ गुस्से में आया हुआ, क्रुद्ध, नाराज। ३ तितर-बितर, छितराया हुआ। यौ०- दरहम-बरहम।

बरारा- क्रि० वि० (फा०) वास्ते, लिए।

बराज़- पुं० (अ०) मल, पाखाना, गू, मैला।

बरादर- पुं० (फा०) भाई।

बरादराना- वि० (फा० बरादरानः) भाइयों जैसा।

बरादरी- स्त्री० (फा०) जाति के लोग।
बराबर- वि० (फा० बर) १ मात्रा, गुण, मूल्य आदि के विचार से समान, तुल्य, एक-सा। २ जिसकी सतह ऊँची-नीची न हो, समतल। मुहा०- बराबर करना= समाप्त कर देना। क्रि० वि० लगातार, निरन्तर।
बराबरी- स्त्री० (फा० बर) १ बराबर होने की क्रिया या भाव, समानता, तुल्यता। २ सादृश्य। ३ मुकाबला, सामना।
बरामद- वि० (फा० बर+आमद) १ ऊपर या सामने आया हुआ। २ ढूँढ़कर बाहर निकाला हुआ। स्त्री० नदी के हट जाने से निकली हुई जमीन, गंग-बरार।
बरामदा- पुं० (फा० बरआम्दः) १ मकानों के बाहर निकला हुआ छायादार अंश, बारजा, छज्जा। २ दालान।
बराय- अव्य० (फा०) वास्ते, लिये। जैसे- बराय खुदा= खुदा या ईश्वर के वास्ते। बराय नाम= नाम मात्र को, केवल नाम के लिए।
बरार- पुं० (फा० बर+आर) १ कर, महसूल। २ ऊपर या सामने लाने की क्रिया। ३ पूरा करने की क्रिया। वि० १ लाने वाला। २ लाया हुआ। जैसे- गंग-बरार।
बरारी- स्त्री० (फा० बर+आर) पूरा होने की क्रिया।
बरिन्दा- पुं० (फा० बरिन्दः) १ वह जो ले जाता हो, वाहक। २ गुप्त रुप से कोई वर्जित वस्तु लाने वाला।
बरीं- वि० (फा०) बहुत ऊपर का।
बरी- वि० (अ०) मुक्त, छूटा हुआ, जो अलग हो गया हो। जैसे- इलजाम से बरी।
बरीद- पुं० (अ०) पत्रवाहक, हरकारा।
बरीयत- स्त्री० (अ०) बरी होने की क्रिया या भाव, छुटकारा, परित्राण, रिहाई।
बर्क़- पुं० (अ०) विद्युत्, बिजली।
बर्ग- पुं० (फा०) १ वृक्ष आदि की पत्ती, पत्ता, पत्र। २ सामग्री।
बर्फ- पुं० (फा०) १ हवा में मिली हुई भाप के अत्यन्त सूक्ष्म अणुओं की तरह जो वातावरण की ठंडक के कारण जमीन पर गिरती हैं। २ वहुत अधिक ठंडक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पार-दर्शी होता है। ३ मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों का रस।
बर्फानी- वि० (फा०) बर्फ का, जिसमें या जिस पर बर्फ हो। जैसे- बर्फानी पहाड़।
बर्र- पुं० (अ०) १ सूखी जमीन, स्थल। २ जंगल, वन।
बर्र-ए-आज़म- पुं० (अ०) महाद्वीप (भूगोल)।
बर्राक़- वि० (अ०) १ चमकता हुआ, चमकीला। २ हवा की तरह तेज, शीघ्रगामी। ३ बहुत अधिक स्वच्छ और सफेद।
बर्स- पुं० (अ०) कोढ़, कुष्ट रोग।
बलन्द- वि० (फा०) १ ऊँचा, उच्च। २ श्रेष्ठ, बहुत अच्छा।
बलन्दी- स्त्री० (फा०) १ ऊँचाई, उच्चता। २ अभिमान, गर्व, शेखी।
बलवा- पुं० (अ० बल्वा) १ दंगा, विप्लव, हुल्लड़। २ विद्रोह, बग़ावत।
बलवाई- पुं० (अ० बल्वा) १ दंगा या उपद्रव करने वाले। २ विद्रोही।
बला- स्त्री० (अ०) (बहु० बलैयात) १ आपत्ति, विपत्ति, आफत। २ दुःख, कष्ट। ३ भूत-प्रेत या उसकी बाधा। ४ रोग, व्याधि। मुहा०- बलाका= घोर, अत्यन्त।
बलाग़त- स्त्री० (अ०) १ उचित अवसर पर उपयुक्त रुप से बातें करना, अच्छी तरह बोलना। २ युवावस्था, जवानी।
बलिहाज- क्रि० वि० (फा०+अ०) के विचार से।
बलीग़- पुं० (अ०) वह जो उचित अवसर पर उपयुक्त भाषण करे, अच्छा वक्ता।
बलूग़- पुं० दे० 'बुलूग़'।
बलूत- पुं० (अ० बल्लूत) एक प्रकार का

वृक्ष जिसकी छाल में चमड़ा रंगा जाता है, सीता-सुपारी।

बले- अव्य० (फा०) हाँ, ठीक है।

बलैयात- स्त्री० (अ०) 'बला' का बहु०।

बल्कि- अव्य० (फा०) १ अन्यथा, इसके विरुद्ध, प्रत्युत्। २ और अच्छा है, बेहतर है।

बल्के- अव्य० दे० 'बल्कि'।

बल्ग़म- स्त्री० (अ०) श्लेष्मा, कफ।

बल्ग़मी- वि० (अ०) १ बल्ग़म सम्बन्धी, बल्ग़म का। २ जिसकी प्रकृति में बल्ग़म की अधिकता हो।

बल्द- पुं० (अ०) (बहु० विलाद) नगर, शहर।

बल्दिया- स्त्री० (अ०) नगर महापालिका।

बल्लूत- पुं० दे० 'बलूत'।

बवक्त- क्रि० वि० (फा०+अ०) समाय पर।

बवसीला- क्रि० वि० (फा०+अ०) के द्वारा।

बवासीर- स्त्री० (अ०) गुदा का रोग।

बशर- पुं० (अ०) (भाव० बशरियत) मनुष्य।

बशरा- पुं० (अ० बशरः) १ रुप-रंग, आकृति। २ चेहरा, मुख।

ब-शर्तेकि- क्रि० वि० (फा०) शर्त यह है कि।

बशरियत- स्त्री० (फा० मनुष्यता।

बशारत- पुं० (अ०) १ सुसमाचार, खुश-खबरी। २ ईश्वरीय प्रेरणा या आभास।

बशीर- वि० (अ०) १ खुश-खबरी लाने वाला, शुभ समाचार सुनाने वाला। २ सुन्दर, खूबसूरत।

बश्शाश- वि० (अ०) खुश, प्रसन्न।

बशाशत- स्त्री० (अ०) प्रसन्नता, खुशी।

बस- वि० (फा०) प्रयोजन के लिये पूरा, पर्याप्त, भरपूर, बहुत, काफी। प्रत्य० १ पर्याप्त, काफी, अलम्। २ सिर्फ, केवल, इतना मात्र।

बसर- पुं० (अ०) (भाव० बसारत) १ दृष्टि, नजर। २ आँख, नेत्र। ३ ज्ञान, इल्म।

बसा- वि० (फा०) बहुत, अधिक। यौ०- बसा औक़ात= अक्सर, प्रायः।

बसारत- स्त्री० (अ०) १ देखने की शक्ति, दृष्टि। २ अनुभव करने या समझने की शक्ति, समझ।

बसिलसिला- क्रि० वि० (फा० ब+अ० सिलसिलः) १ के क्रम में। २ के प्रसंग में।

बसीत- वि० (अ०) १ फैलाया हुआ। २ सरल, सादा।

बसीरत- स्त्री० दे० 'बसारत'।

बस्तगी- स्त्री० (फा०) बँधने या संलग्न होने की क्रिया। जैसे- दिल-बस्तगी।

बस्ता- पुं० (फा० बस्तः) काग़ज़-पत्र या पुस्तकें आदि बाँधने का कपड़ा। वि० बँधा या बाँधा हुआ। जैसे- दस्त-बस्ता= हाथ बाँधे हुए।

बस्मा- पुं० दे० 'बस्मा'।

बहबूद- पुं० दे० 'बहबूदी'।

बहबूदी- स्त्री० (फा० बेहबूदी) १ भलाई, उपकार। २ अच्छी बात, शुभ कार्य।

बहम- क्रि० वि० (फा०) १ एक साथ, दारसंग। २ एक दूसरे के साथ या प्रति, परम्परा। मुहा०- बहम पहुँचाना= लाकर देना, मुहैया करना।

बहमन- पुं० (फा० बह्मन) फारसी ग्यारहवाँ महीना जो फागुन के लगभग पड़ता है।

बहर- क्रि० वि० (फा० बह) वास्ते, लिये। मुहा०- बहरे खुदा= खुदा के वास्ते, ईश्वर के लिये। पुं० (अ० बह) १ समुद्र। २ छन्द।

बहर-कैफ- क्रि० वि० (फा० बह+अ०) चाहे जिस तरह हो, किसी हालम में।

बहर-हाल- क्रि० वि० (फा० बहहाल) हर हालत में, जिस तरह हो, जो हो। जैसे- बहर हाल आप वहाँ जायँ तो सही।

बहरा- पुं० ( फा० बहः ) १ हिस्सा, भाग। २ भाग्य, नसीब, तक़दीर।

बहरामन्द- वि० (फा० बहःमन्द) १

भाग्यवान्। २ संपन्न। ३ प्रसन्न। मुहा०- बहरामन्द होना= लाभ उठाना।

बहरा-वर- पुं० (फा० बह्रःवर) जिसका भाग्य अच्छा हो, भाग्यवान्, नसीबवर।

बहराम- पुं० (फा० बह्राम) मरीख या मंगल ग्रह।

बहरी- वि० पुं० (अ० बह्री) १ समुद्र सम्बन्धी, सागर का। २ नदी संबन्धी।

बहला- पुं० (फा० बहलः) १ रुपये-पैसे रखने का थैला। २ वह चमड़े का दस्ताना जो शिकारी हाथ में पहनते है।

बहलोल- पुं० (अ०) १ सर्वदलील, तर्क, खंडन-मंडन की युक्ति। यौ०- बहमत लब= बहस के योग्य। २ विवाद, झगड़ा, हुज्जत। ३ होड़, बाजी, बदा-बदी।

बहा- पुं० (फा०) मूल्य, दाम, कीमत। यौ०- बे-बहा= बहुमुल्य।

बहादुर- पुं० (फा०) १ वीर, योद्धा। २ बलवान्, शक्तिशाली।

बहादुरी- स्त्री० (फा०) बीरता।

बहाना- पुं० (फा० बहानः) १ किसी बात से बचने या मतलब निकालने के लिये झूठ बात कहना, मिस, हीला। २ उक्त उद्देश्य से कही हुई झूठ बात। ३ कहने-सुनने के लिये एक कारण, निमित्त।

बहानेबाज- वि० (फा० बहानःबाज़) बहाने बनाने वाला।

बहानेबाज़ी- स्त्री० (फा० बहानःबाजी) १ बहाने बनाने की क्रिया। २ बहाना।

बहार- स्त्री० (फा०) १ वसंत ऋतु। २ मौज, आनन्द। ३ यौवन का विकास, जवानी का रंग। ४ रमणीयता, सुहावनापन, रौनक़। ५ विकास, प्रफुल्लता। ६ मजा, तमाशा।

बहाल- वि० (फा०) १ ज्यों का त्यों बना हुआ, कायम, बर-क़रार। २ अच्छी या ठीक अवस्था में। ३ भला चंगा, स्वस्थ। ४ प्रसन्न, खुश।

बहाली- स्त्री० (फा० बहाल) बहाल होने की क्रिया या भाव, पुनर्स्थापना।

बहिश्त- पुं० (फा०) स्वर्ग, वैकुण्ठ।

बहिश्ती- पुं० (फा०) १ वह जो बहिश्त में रहते हों, स्वर्ग का निवासी। २ मश्क में रखकर पानी पहुँचाने या पिलाने वाला, सक्का भिश्ती, माश्क़ी। वि० बहिश्त सम्बन्धी, स्वर्ग का।

बहीर- पुं० (फा०) १ सैनिक छावनी में रहने वाले सामान्य लोग। २ छावनी का वह भाग जिसमें सैनिकों की स्त्रियाँ और बच्चे रहते है। (यह शब्द वस्तुतः हिन्दी का है, पर फारसी बना लिया गया है।)।

बहुक्म- क्रि० वि० (फा०+अ०) हुक्म से।

बह्- पुं० (अ०) (बहु० अबहार) १ समुद्र, सागर। २ छन्द।

बहे-रवाँ- पुं० (फा०) जहाज़, बड़ी नाव।

बाँग- स्त्री० (फा०) १ शब्द, आवाज। २ जोर से पुकारने की क्रिया, पुकार। ३ मुर्गे आदि के बोलने का शब्द। क्रि० प्र० देना।

बा- उप० (फा०) १ साथ, सहित। २ सामने, समक्ष।

बाअसर- वि० (फा०+अ०) असर वाला, प्रभावशाली।

बाआबरू- वि० (फा०) प्रतिष्ठित।

बाइख्तियार- क्रि० वि० (फा०+अ०) अधिकार पूवर्क, साधिकार।

बाइस- पुं० (अ०) १ कारण, सबब, वजह। २ मूल संचालक या कर्ता।

बाक- पुं० (फा०) भय, डर। यौ०- बे-बाक= निडर, निर्भय।

बाक़र- पुं० (अ०) बहुत बड़ा विद्वान् या धनवान्।

बाक़र-खानी- स्त्री० (अ०) एक प्रकार की बढ़िया रोटी।

बाक़ला- पुं० (अ० बाक़लः) एक प्रकार का बड़ा मटर।

बाक़िर- वि० (अ०) बहुत बड़ा पंडित, परम विद्वान्।

बाकिरा- स्त्री० (अ० बाकिरः) कुँआरी लड़की, कुमारी।

बाक़ियात- स्त्री० (अ०) 'बाक़ी' का बहुवचन, बाक़ी पड़ी हुई रकमें।

बाक़ी- वि० (अ०) जो बचा हुआ हो, अवशिष्ट, शेष। स्त्री० १ गणित में दो संखयाओं का अन्तर निकालने की रीति। २ वह संख्या जो घटाने पर निकले।

बाक़ी-दर- वि० (अ०+फा०) बाक़ी रखने वाला, जिसके जिम्मे कुछ बाक़ी हो।

बाखबर- वि० (फा०) १ खबर रखने वाला। २ होशियार, सतर्क। ३ ज्ञाता, जानकार, जानने वाला।

बाख्ता- वि० (फा० बाख्तः) जो हार या गँवा चुका हो। जैसे- हवास-बाख्ता।

बाग़- पुं० (अ०) (बहु० बाग़ात) उद्यान, उपवन, वाटिका। मुहा०- बाग़ बाग़ होना= बहुत अधिक प्रसन्न होना। सब्ज बाग़ दिखलाना= झूठ-मूठ बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।

बाग़बान- पुं० (अ०+फा०) बाग़ की रक्षा और व्यवस्था करने वाला, माली।

बाग़वानी- स्त्री० (अ०+फा०) बाग़वान या माली का काम।

बाग़ाती- स्त्री० (अ० 'बाग़' से फा०) वह भूमि जो बाग़ लगाने या खेती-बारी करने के योग्य हो।

बाग़ी- वि० (अ० बाग़) बाग़ संवन्धी, बाग़ या उपवन का। पुं० (अ०) १ बग़ावत या विद्रोह करने वाला, विद्रोही। २ विरुद्ध आचरण करने वाला, विरोधी।

बाग़ीचा- पुं० (फा० बाग़चः) छोटा बाग़, उपवन।

बाज़- पुं० (फा०) कर, महसूल। जैसे- बाजगुज़ार= करद।

बाज़- वि० (अ० बअज) कोई कोई, कुछ, थोड़े कुछ, विशिष्ट। पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। क्रि० वि० (फा०) पीछे, उलटे। मुहा०- बाज़ आना= १ लौट आना, वापस आना। २ किसी काम से हाथ खींचना, रुक जाना। ३ दूर रहना, अलग रहना, कुछ भी सम्बन्ध न रखना। ४ छोड़ना, त्यागना। बाज़ रखना= रोकना, न करने देना। प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगाकर कर्त्ता और शौकीन आदि का अर्थ देता है। जैसे- कबूतर-बाज, पतंग-बाज।

बाज़ औकात- क्रि० वि० (अ०) कभी-कभी।

बाज़-गश्त- वि० (फा०) वापस आना, लौटना। मुहा०- आवाज़ बाज़-गश्त= प्रतिध्वनि, आवाज का लौटकर वापस आना।

बाज-गीर- पुं० (फा०) वह जो कर संग्रह करता हो।

बाज-गुज़ार- पुं० (फा०) कर या महसूल देने वाला, करद।

बाजदार- पुं० दे० 'बाजगीर'।

बाजदावा- पुं० (अ०) दावे का त्याग।

बाज़-पुर्स- स्त्री० (फा०) १ किसी बात का पता लगाने के लिए पूछ-ताछ करना, जाँच-पड़ताल करना। २ कैफियत लेना, कारण या हिसाब आदि पूछना।

बाज़-याफ्त- वि० (फा०) वापस आया हुआ, फिर से मिला हुआ।

बाज़ाप्ता- क्रि० वि० (अ० बाज़ाबितः) नियमानुसार।

बाज़ार- पुं० (फा०) १ वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थो की दूकानें हों। मुहा०- बाज़ार करना= चीजें खरीदने के लिए बाजार जाना। बाज़ार गर्म होना= १ बाजार में चीजों या ग्राहकों आदि की अधिकता होना। २ खूब काम चलना। बाज़ार तेज़ होना= १ बाज़ार में किसी चीज की माँग अधिक होना। २ किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना। ३ काम जोरों पर होना, खूब काम चलना। बाज़ार उतरना या मंदा होना= १ बाजार में किसी चीज की माँग कम होना। २ दाम घटना। ३ कार-बार कम चलना।

बाज़ारी- वि० (फा०) १ बाज़ार सम्बन्धी, बाजार का। २ मामूली, साधारण। ३ अशिष्ट।

बाजारु- वि० (फा० बाज़ार) १ बाज़ार

सम्बन्धी, बाजार का। २ मामूली, सांधारण। ३ अशिष्ट।

बाज़िन्दगी- स्त्री० (फा०) १ खेल, खेलवाड़। २ धूर्त्तता, चालाकी।

बाज़िन्दा- पुं० (फा० बाज़िन्दः) १ खेलाड़ी, खेलने वाला। २ लोटन कबूतर।

बाज़ी- स्त्री० (फा०) १ ऐसी शर्त जिसमें हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो, शर्त, दाँव, बदान। मुहा०- बाज़ी मारना= बाज़ी जीतना, दाँव जीतना। बाज़ी ले जाना= किसी बात में आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ ठहरना। २ आदि से अन्त तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें शर्त या दाव लगा हो।

बाज़ीगर- पुं० (फा०) १ कसरत के खेल करने वाला, नट। २ जादूगर।

बाज़ीगरी- स्त्री० (फा०) कसरत या जादू के खेल।

बाज़ीगाह- स्त्री० (फा०) खेल की जगह या मैदान, अखाड़ा।

बाज़ीचा- प्रुं० (बाज़ीचः) १ खिलौना। २ खेलवाड़।

बाजुर्गान- पुं० (फा०) (भाव० बाजुर्गानी) व्यापारी, रोजगारी।

बाज़ू- पुं० (फा०) १ भुजा, बाहु, बाँह। २ बाज़ूबन्द नाम का गहना। ३ सेना का किसी ओर का एक पक्ष। ४ वह जो हर काम में बराबर साथ रहे और सहायता दे। ५ पक्षी का डैना। ६ पार्श्व, तरफ।

बाज़ू-शिकन- वि० (फा०) बाँहें तोड़ने की शक्ति रखने वाला, बलवान्, ताकतवर, जबरदस्त।

बातिन- पुं० (अ०) १ भीतरी भाग, अन्दर का हिस्सा। २ अन्तःकरण, मन।

बातिनी- पुं० (अ०) १ भीतरी, अन्दर का। २ आन्तरिक, मनका।

बातिल- वि० (अ०) १ झूठा। २ मिथ्या, झूठ। ३ निरर्थक, व्यर्थ। ४ जिसमें कुछ शक्ति या प्रभाव न हो। ५ रद्द किया हुआ।

बाद- क्रि० वि० (अ० बअद) अनंतर, पीछे। वि० अलग किया या छोड़ा हुआ। २ अतिरिक्त, सिवाय। पुं० (फा०) हवा, वायु, पवन।

बादअज़ा- क्रि० वि० (अ०) इसके बाद।

बाद-कश- पुं० (फा०) १ पंखा। २ हवा आने का झरोखा। ३ भाथी, धौंकनी।

बाद-गिर्द- पुं० (फा०) बवंडर, बगूला।

बाद-फरोश- पुं० (फा०) १ झूठी प्रशंसा करने वाला, खुशामदी। २ व्यर्थ बकने वाला, बकवादी, बक्की।

बाद-फ़िरंग- स्त्री० (फा०) आतशक या गरमी का रोग, उपदंश।

बादबान- पुं० (फा०) जहाज़ का पाल।

बाद-रफ्तार- वि० (फा०) हवा की तरह तेज चलने वाला।

बादशाह- पुं० (फा०) १ बहुत बड़ा राजा या महाराज, सम्राट।

बादशाह-ज़ादा- पुं० (फा०) बादशाह का लड़का, महाराजकुमार।

बादशाहत- स्त्री० (फा०) बादशाह का राज्य।

बादशाही- वि० (फा०) बादशाहों या महाराजाओं का।

बाद-सख्त- स्त्री० (फा०) १ तेज़ हवा, आँधी। २ भारी आपत्ति, बड़ी आफत।

बादा- पुं० (फा० बादः) शराब, मद्य।

बादा-कश- पुं० (फा०) शराबी।

बादा-परस्त- पुं० (फा०) (भाव० बादा-परस्ती) शराबी, मद्यप।

बादाम- पुं० (फा०) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसके छोटे फल मेवों में गिने जाते है, इसके फल के साथ प्रायः नेत्र की उपमा दी जाती हैं।

बादामा- पुं० (फा० बादामः) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

बादामी- वि० (फा०) १ बादाम सम्बन्धी, बादाम का। २ बादाम के आकार का। जैसे- बादामी आँख। ३ बादाम के रंग का।

बादिया- पुं० (फा०) एक प्रकार का ताँबे का कटोरा। पुं० (अ०) जंगल, बन।

बादी- वि० (फा०) बाद या हवा सम्बन्धी, हवाई।

बादी-उन्नज़र- क्रि० वि० (अ०) पहले पहल देखने में, यों ही देखने में।

बादे-सवा- स्त्री० (फा०) पूर्व से आने वाली हवा, पुरवा हवा।

बान- प्रत्य० (फा०) १ रखवाली करने वाला, रक्षक। जैसे- दरबान। २ रखने और दिखलाने वाला। ३ हाँकने या चलाने वाला। जैसे- फील-बान= महावत।

बा-नवा- वि० (फा०) १ अच्छी आवाज़ वाला, आवाज़दार। २ सम्पन्न, धनवान्। ३ समर्थ, शक्तिशाली।

बानी- पुं० (अ०) १ आरंभ करने या बनाने वाला, तैयार करने वाला। यौ०- बानिए फसाद= झगड़ा शुरु करने वाला। २ मूल साधन या उद्गम। ३ अधिकार करने वाला। ४ नेता, प्रधान।

बानीकार- वि० (फा०) बहुत तेज़ और चालाक, परम धूर्त्त।

बानू- स्त्री० दे० 'बानो'।

बानो- स्त्री० (फा० बानू) भले घर की स्त्री, भद्र महिला।

बाफ- वि० (फा०० १ बुनने वाला, २ बुना हुआ।

बाफी- स्त्री० (फा०) बुनने का काम, बुनाई।

बाफ्ता- वि० (फा० बाफ्तः) बुना हुआ। पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

बाब- पुं० (अ०) दरवाज़ा, द्वार। २ अध्याय, परिच्छेद, प्रकरण।

बाबत- स्त्री० (फा०) १ सम्बन्ध। २ विषय। अव्य० विषय में, बारे में। यौ०- बाबत इत्तिला= सूचना के विषय में।

बाबा- पुं० (फा०) बृद्ध और पूज्य व्यक्ति के लिये संबोधन।

बाबुल- पुं० (फा०) बैबिलोन नगर का नाम।

बाबूना- पुं० (फा० बाबूनः) एक पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है।

बाम- पुं० (फा०) घर की छत, अटारी।

बा-मुहावरा- वि० (अ०) मुहावरे वाला, जो मुहावरे की दृष्टि से ठीक हो, मुहावरेदार।

बाया- वि० (अ० बायः) वय करने वाला, बेचने वाला, विक्रेता।

बायद- क्रि० वि० (फा०) जैसा चाहिये, जैसा होना आवश्यक हो।

बायद व शायद- वि० (फा०) जैसा होना चाहिये वैसा, आदर्श, बहुत अच्छा।

बार- पुं० (फा०) १ भार, बोझ। २ फल। ३ परिणाम, नतीजा। ४ द्वार, दरवाजा। जैसे- बारे खास= राजाओं का खास दरवार। बारे आम= आम या सार्वजनिक दरबार।

बार-आम- पुं० (फा०) राजा की वह कचहरी जिसमें सब लोग जा सकें, सार्वजनिक राज-सभा।

बार-कश- पुं० (फा०) बोझ ढोने की गाड़ी।

बार-खास- पुं० (फा०) राजा का वह दरबार जिसमें सिर्फ खास आदमी रहते है।

बार-गह- स्त्री० दे० 'बारगाह'।

बार-गाह- स्त्री० (फा०) वह स्थान जहाँ लोग राजा की सेवा में उपस्थित होते हो, दरबार।

बार-गीर- पुं० (फा०) १ बोझ ढोने वाला पुरुष। २ वह सैनिक जो स्वामी के घोड़े पर रहता हो और निजी घोड़ा न रखता हो।

बारचा- पुं० दे० 'बारजा'।

बारजा- पुं० (फा० बारचः) १ मकान के सामने का बँरामदा। २ कोठा, अटारी।

बारदाना- पुं० (फा० बारदानः) १ सेना आदि की रसद। २ वे पात्र या सन्दूक आदि जिनमें कोई चीज भरकर कहीं भेजी जाय।

बार-बरदार- पुं० (फा० बारबर्दार) वह जो बोझ ढोता हो, माल ढोने वाला।

बार-बरदारी- स्त्री० (फा० बारबर्दारी) १ बोझ ढोने की क्रिया। २ बोझ ढोने की मजदूरी।

बार-याव- वि० (फा०) जिसे किसी राजा या बड़े आदमी के सामने उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हो, बड़े के समक्ष उपस्थित होने वाला।

बार-यावी- स्त्री० (फा०) राजा या बड़े के समक्ष उपस्थित होने की क्रिया, हाजिर होना।

बार-वर- वि० (फा०) जिसमें फल लगते हों।

बारहदरी- स्त्री० (हिं बारह+फा० दर) वह कमरा या बैठक जिसके चारों तरफ बहुत से दरवाजे हो।

बारह-वफ़ात- स्त्री० (फा०) मुहम्मद साहब के जीवन के वे अन्तिम बारह दिन जिनमें वे बहुत बीमार थे।

बारहा- क्रि० वि० (फा०) कई बार अक्सर, प्रायः, बहुत दफा, बार बार।

बाराँ- पुं० (फा०) बरसने वाला पानी, वर्षा, मेंह।

बारानी- वि० (फा०) (खेत आदि) जो वर्षा के जलपर निर्भर हो। पुं० वह वस्त्र जिस पर वर्षा का प्रभाव न हो, बरसातीं।

बारिश- स्त्री० (फा०) वर्षा।

बारी- पुं० (फा०) ईश्वर, परमात्मा। यौ०- बारी-ताला= ईश्वर।

बारीक- वि० (फा०) १ महीना, पतला। २ सूक्ष्म, जो जल्दी समझ में न आवे, दुरुह।

बारीक-बीं- वि० (फा०) बारीकी समझने या देखने वाला, सूक्ष्मदर्शी।

बारीक-बीनी- स्त्री० (फा०) किसी बात की बारीकी या गुण देखना, सूक्ष्मदर्शिता।

बारीकी- स्त्री० (फा०) १ बारीक का भाव। २ पतलापन। ३ सूक्ष्मता। ४ कठिनता, दुरुहता।

बारी-त-आला- पुं० (अ०) ईश्वर जो सवसे बड़ा है।

बारे- क्रि० वि० (फा०) १ एक बार। २ अन्त में।

बारे में- अव्य० (फा० बारः) विषय में, सम्बन्ध में।

बारूत- स्त्री० दे० 'बारुद'।

बारुद- स्त्री० (तु० बारूत) एक प्रकार का चूर्ण या बुकनी जिसमें आग लगने से तोप-बन्दूक चलती है, दारु। मुहा०- गोली-बारुद= लड़ाई की सामग्री।

बाल- पुं० (फ़ा०) डैना, पंख।

बालगीर- पुं० (फा०) साईस।

बाला- अव्य० (फा०) ऊपर, पर। वि० ऊँचा, ऊपर का।

बालाई- वि० (फा०) ऊपरी, ऊपर का। जैसे- बालाई आमदनी। स्त्री० दूध पर की साड़ी, मलाई।

बाला-खाना- पुं० (फा०) मकान का ऊपरी, कमरा।

बाला-दस्त- पुं० (फा०) (भाव० बालादस्ती) १ प्रधान, उच्च। २ बलवान्, ज़बरदस्त।

बाला-नशीन- पुं० (फा०) १ बैठने का सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान। २ वह जो सबसे ऊपर या श्रेष्ठ स्थान पर बैठे।

बाला-पोश- पुं० (फा०) वह कपड़ा जो किसी चीज को ढाँकने के लिये उसके उपर डाला जाय।

बालावर- क्रि० वि० (फा०) ऊपर ही ऊपर; अलग से, बाहर से। जैसे- तुमने बाला बाला सौ रुपये मार लिये।

बालिग़- वि० (अ०) जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो,वयस्क।

बालिश- स्त्री० (फा०) सिर के नीचे रखने का तकिया।

बालिश्त- पुं० (फा०) प्रायः १२ अंगुल की एक नाम जो हाथ पंजे को पूरी तरह फैलाने पर अँगूठे के सिरे से छोटी ऊँगली के सिरे तक होती है, बिलस्त, बीता, बित्ता।

बाली-दगी- स्त्री० (फा०) बाढ, विकास, बढ़ने की क्रिया। (वनस्पति आदि के सम्वन्ध में)

बालान- पुं० (फा०) सिरहाना, तकिया।

बालू-शाही- स्त्री० (हिं० बालू+शाही= अनुरुप) एक प्रकार की मिठाई, बड़ी

टिकिया।
बा-वजूद- क्रि० वि० (फा०) इतना होने पर भी, तिसपर भी।
बावर- पुं० (फा०) विश्वास, यक़ीन।
बावर्ची- पुं० (तु०) भोजन बनाने वाला रसोइया।
बावर्ची-खाना- पुं० (तु०+फा०) भोजन बनाने का स्थान, पाकशाला, रसोई-घर।
बावर्ची-गरी- स्त्री० (तु०+फा०) बावर्ची काम या पद, रसोईदारी।
बा-वस्फ़- क्रि० वि० (फा०) इतना होने पर भी। वि० गुणवान, गुणी।
बाश- वि० (फा०) १ होना। २ रहना, ठहरना। अव्य० (फा०) रह, इसी अवस्था में बना रह। ( विधि या आशीष। जैसे- खुश बाश= खुश रह।)
बाशा- पुं० (फा० बाशः) एक प्रकार की शिकारी पक्षी।
बाशिन्दा- वि० (फा० बाशिन्दः) रहने वाला, निवासी, वासी।
बासिरा- पुं० (अ० बासिरः) देखने की शक्ति, दृष्टि, नजर, आँख।
बाह- स्त्री० (अ०) संभोग की इच्छा या शक्ति।
बाहम- क्रि० वि० (फा०) १ आपस में परस्पर। २ साथ, सहित।
बाहम-दिगर- क्रि० वि० (फा०) १ एक दूसरे के साथ, परस्पर। २ मिलकर।
बाहमी- वि० (फा०) आपसी।
बाहलफ़- क्रि० वि० (अ०) शपथ पूर्वक।
बिचारा- वि० दे० 'बेचारा'।
बिज़न- पुं० (फा०) बहुत से लोगों की एक साथ हत्या, कत्ले आम।
बिज़ाअत- स्त्री० (अ०) मूलधन, पूँजी।
बिज़ातिही- क्रि० वि० (अ०) स्वयं, खुद।
बिदअत- स्त्री० (अ०) (कर्त्ता० बिदअती) १ इस्लाम धर्म में कोई ऐसी नई बात निकालना जो मुहम्मद साहब के समय में न रही हो, ऐसा आरण धर्म-विरुद्ध समझा जाता है। २ अनीति, अन्याय। ३ लड़ाई, झगड़ा।
बिदून- अव्य० (फा०) बग़ैर, बिना।
बिद्दत- स्त्री० दे० 'बिदअत'।
बिन- पुं० (अ०) लड़का, बेटा, पुत्र। जैसे- ज़ैद बिन बक्र= ज़ैद, लड़का बक्र का।
बिना- स्त्री० (अ०) १ मकान की नींव। २ जड़, मूल आधार। ३ उद्गम। ४ आरम्भ, शुरु। मुहा०- बिनाए-दावा= दावा या नालिश करने का कारण
बिना-बर- क्रि० वि० (फा०) इस कारण से, इस वजह से, इसलिये, अतः।
बिना- स्त्री० (अ०) (बहु० बिनात) लड़की, कन्या।
बियाबान- पुं० दे० 'बयाबान'।
बिरंज- पुं० (फा० बिरिंज) १ चावल। २ पीतल।
बिरंज़ी- वि० (फा० बिरिंजी) पीतल का।
बिरयाँ- वि० (फा०) भुना हुआ।
बिरयानी- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का नमकीन पुलाव। (भोजन)
बिरादर- पुं० (फा०) १ भाई। २ रिश्तेदार। ३ बिरादरी का आदमी।
बिरादर-ज़ादा- पुं० (फा०) भाई का लड़का, भतीजा।
बिरादराना- वि० (फा०) १ भाइयों का सा। २ बिरादरी या भाई चारे का।
बिरादरी- स्त्री० (फा०) १ भाईचारा। २ एक ही जाति के लोगों का समूह।
बिरियानी- स्त्री० दे० 'बिरयानी'।
बिरेज़- अव्य० (फा०) रक्षा करो, त्राहि त्राहि।
बिल्- उप० (अ०) एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर साथ, सहित, युक्त आदि का अर्थ देता है। जैसे- बिल्-जब्र= जबरदस्ती। बिल्उमूम= आम तौर पर, साधारणतः। बिलकुल= सब, पूरा।
बिल-अक्स- क्रि० वि० (अ०) इसके विपरीत, इसके विरुद्ध।
बिलइरादा- क्रि० वि० (अ० बिल्इरादः) जान बूझकर।

विलउमूम- क्रि० वि० (अ०) आम तौर पर, साधारणतः।

बिल-जब्र- क्रि० वि० (अ०) जब्र के साथ, जबरदस्ती, बलपूर्वक। जैसे- ज़िना बिल्-जब्र।

बिल-ज़रुर- क्रि० वि० (अ०) जरुर, आवश्य, निश्चयपूर्वक।

बिल-जुमला- क्रि० वि० (अ० बिल्-जुमलः) कुल मिलाकर, सब मिलाकर।

बिल-फर्ज- क्रि० वि० (अ०) १ यह फर्ज करते हुये। २ यह मानकर।

बिल-फेल- क्रि० वि० (अ०) इस समय, इस काल में, इस अवसर पर।

बिल-मुक़ाबिल- क्रि० वि० (अ०) मुकाबले में, तुलना में, सामने।

बिल-मुक्ता- वि० (अ०) पूर्व निश्चय के अनुसार होने वाला, निश्चित।

बिला- अव्य० (अ०) बग़ैर, बिना। जैसे- बिला-बजह= बिना किसी कारण के, बिला-शक, निस्संदेह।

बिलातवक्कुफ- क्रि० वि० (अ०) तुरंत, अविलम्ब।

बिलाद- पुं० (अ०) 'बल्द'। (नगर) का बहुवचन, बस्तियाँ।

बिल्कुल- क्रि० वि० (अ०) नितान्त, सर्वथा।

बिलाशक- क्रि० वि० (अ०) निस्संदेह।

बिल्लूर- पुं० दे० 'बिल्लौर'।

बिल्लौर- पुं० (फा० बिल्लूर) १ एक प्रकार का स्वच्छ, सफेद, पारदर्शक पत्थर, स्फटिक। २ बहुत स्वच्छ शीशा।

बिलोरी- वि० (फा० बिल्लूरी) बिल्लौर का।

बिसात- स्त्री० (अ०) १ बिछाने की चीज। जैसे- बिछौना, चटाई आदि। २ वह काग़ज या कपड़ा, जिस पर शतरंज या चौपड़ खेलने के लिये खाने बने होते हैं। ३ हैसियत, समर्थ, बित्त। ४ सामर्थ्य, शक्ति। ५ पूँजी, पास का धन।

बिसाती- पुं० (अ० बिसात) सूई, तागा, चूड़ी, खिलौने इत्यादि वस्तुएँ बेचने वाला।

बिसियार- वि० (फा०) बहुत, अधिक, ढेर।

बिस्तर- पुं० (फा०) बिछाने की चीज़, विछौना।

बिस्मिल- वि० (अ०) कुर्बानी किया हुआ, घायल, जख्मी (प्रायः प्रेमी के लिए प्रयुक्त होता हैं।) जैसे- नीम-बिस्मिल= आधा घायल, जख्मी।

बिस्मिल्लाह- (अ०) 'बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम'। (उस दयालु ईश्वर के नाम से) पद का पूवर्सर्ध और संक्षिप्त पद जिसका अर्थ है- 'ईश्वर के नाम से'। इसका प्रयोग प्रायः कोई कार्य आरम्भ करने के समय होता हैं।

बिहिश्त- पुं० दे० 'बहिश्त'।

बिही- पुं० (फा०) एक पेड़ जिसके फल अमरुद से मिलते-जुलते होते हैं।

बिहीदाना- पुं० (फा०) बिही नामका फल का बीज जो दवा के काम में आता हैं।

बिक्र- स्त्री० (अ०) लड़कियों का कुँआरापन। मुहा०- बिक्र तोड़ना= कुमारी कन्या का कौमार्य भग करना, कुमारी से पहले पहल संभोग करना।

बीं- वि० (फा०) देखने वाला, दर्शक। (यौगिक में) जैसे- बारीक-बीं= सूक्ष्मदर्शी।

बी- स्त्री० (फा० बीवी) स्त्री, महिला, इसका प्रयोग प्रायः किसी नाम के साथ होता है। जैसे- बी सलीमा।

बीन- वि० (फा०) १ जो देखता हो। जैसे- खुर्द-बीन। २ जिससे देखने में सहायता ली जाय। जैसे- दूर-बीन।

बीनश- स्त्री० (फा०) देखने की शक्ति, दृष्टि।

बीना- वि० (फा०) जिसे दिखाई देता हो, सुझाखा।

बीनाई- स्त्री० (फा०) देखने की शक्ति, दृष्टि।

बीनी- स्त्री० (फा०) नाक, नासिका।

बीबी- स्त्री० (फा०) १ भले घर की स्त्री, कुल-बधू। २ पत्नी, जोरु। ३ भले घर की स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द।
बीम- पुं० (फा०) डर, भय।
बीमा- पुं० (फा० बीमः) किसी प्रकार की हानि की जिम्मेदारी जो कुछ धन लेकर उसके बदले में उठाई जाती हैं।
बीमार- वि० (फा०) रोगी, रोग ग्रस्त।
बीमारदार- वि० (फा०) रोगी की सेवा-शुश्रूषा करने वाला।
बीमारदारी- स्त्री० (फा०) रोगी की सेवा-शुश्रूषा।
बीमार-पुरसी- स्त्री० (फा०) किसी बीमार या रोगी के पास जाकर उसके स्वास्थ्य का हाल पूछना।
बीमारी- स्त्री० (फा०) रोग, व्याधि, मर्ज।
बीवी- स्त्री० दे० 'बीबी'।
बुआ- स्त्री० दे० 'बूआ'।
बुक़चा- पुं० (तु० बुक़चः) कपड़ो आदि की छोटी गठरी, बड़ी पोटली।
बुखार- पुं० (अ०) १ वाष्प, भाप। २ ज्वर, ताप, शोक, क्रोध या दुःख आदि का आवेग।
बुखारात- पुं० (फा०) 'बुखार' का बहुवचन, भाप।
बुख्ल- स्त्री० (अ०) कंजूसी, कृपणता। २ हृदय की संकीर्णता।
बुग़स- पुं० (फा०) एक प्रकार का बड़ा छुरा।
बुग़ारह- पुं० (फा०) किसी चीज के बीच का बहुत बड़ा छेद।
बुग्चा- पुं० (फा० बुग्चः) छोटी पोटली जिसे बगल में दबाया जा सके।
बुग्ज़- पुं० (अ०) मन में रखा जाने वाला द्वेष, भीतरी दुश्मनी।
बुग्दा- पुं० (अ०) एक प्रकार का बड़ा छुरा।
बुज़- स्त्री० (फा०) बकरी, अजा, छागल।
बुज़दिल- वि० (फा०) जिसका दिल बकरी की तरह हो, कच्चे दिल का, डरपोक, कायर।
बुज़दिली- स्त्री० (फा०) डरपोकपन, कायरता।
बुज़ुर्ग- पुं० (फा०) (बुज़ुर्गी) १ वृद्ध और पूज्य, माननीय। २ वृद्ध, बुड्ढा। ३ पूर्वज, पुरखा।
बुज़ुर्गवार- वि० (फा०) (बुज़ुर्गवारी) १ पूज्य और वृद्ध, माननीय। २ पूर्वज, पुरखा।
बुज़ुर्गी- स्त्री० (फा०) १ बुज़ुर्ग का भाव। २ वृद्धावस्था, वार्द्धक्य। ३ बड़प्पन, बड़ाई, श्रेष्ठता।
बुत- पुं० (फा० मिला सं० बुद्ध या पुतला) १ मूर्ति, मूरत। २ प्रेमिका, प्रेयसी। ३ वह जो कुछ न बोलता हो, चुप्पा। ४ मूर्ति की तरह निश्चल। ५ मूर्ख, बेवकूफ।
बुतकदा- पुं० (फा० बुतकदः) १ बुतखाना, मन्दिर। २ प्रेमिका के रहने का स्थान।
बुतखाना- पुं० (फा०) १ वह स्थान जहाँ पूजा के लिये मूर्तियाँ रखी हों। २ प्रेमिका के रहने का स्थान।
बुतपरस्त- वि० (फा०) मूर्ति की पूजा करने वाला, मूर्ति-पूजक।
बुतपरस्ती- स्त्री० (फा०) मूर्ति पूजा।
बुतशिकन- वि० (फा०) (सं० बुतशिकनी) मूर्तियों को तोड़ने वाला, मूर्तियाँ खंडित करने वाला।
बुतान- पुं० (फा०) 'बुत' का बहु०।
बुद- पुं० (अ०) उपाय।
बुन- पुं० (अ०) १ कहवे का बीज, कहवा। २ जड़, मूल। ३ नींव।
बुनियाद- स्त्री० (फा०) १ जड़, मूल, नींव। २ असलियत।
बुरक़ा- पुं० दे० 'बुर्क़ा'।
बुरहान- पुं० (अ०) १ तर्क, दलील। २ प्रमाण, सबूत।
बुराक़- पुं० (अ०) एक कल्पित घोड़ा या खच्चर, कहते हैं कि एक बार हजरत मुहम्मद साहब इसी पर सवार होकर जरुसलम से स्वर्ग गये थे और वहाँ ईश्वर से मिल कर मक्के लौट आये थे।

बुरादा- पुं० (फा० बुरादः) चूर्ण, चूरा।
बुरीदा- वि० (फा० बुरीदः) काटा या तराशा हुआ।
बुरूज- पुं० (अ०) 'बुर्ज' का बहु०।
बुरूदत- स्त्री० (अ० बुर्द=ठंढा) ठंढक, शीतलता।
बुर्क़ा- पुं० (अ० बुर्क़ः) एक प्रकार का आच्छादन या पहनावा जिससे मुसलमान स्त्रियाँ अपना बदन सिर से पैर तक ढक लेती हैं।
बुर्क़ापोश- वि० (अ०+फा०) जो बुर्क़ा ओढ़े हो।
बुर्ज- पुं० (अ०) (स्त्री० अल्पा० बुर्जी) (बहु० बुरूज) १ किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये स्थान होता है। २ गरागज। ३ मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकार का इमारत का कोई अंग। ४ गुंबद। ५ ज्योतिष में घर, राशि।
बुर्द- पुं० (फा०) १ मुफ्त में मिलने वाली रकम, लाभ। मुहा०- बुर्द मारना= मुफ्त की रकम पाना। २ रिश्वत या नज़र में मिली हुई चीज़। ३ बाज़ी, शर्त। मुहा०- बुर्द देना= गँवाना, नष्ट करना। ४ शतरंज के खेल में वह अवस्था जब कि एक पक्ष में केवल बादशाह बच रहे और बाजी मात न हो।
बुर्दबार- वि० (फा०) (सं० बुर्दबारी) सहने वाला, सहनशील, सुशील।
बुर्रा- वि० (अ०) बहुत तेज धार वाला, धारदार (हथियार)।
बुर्राक़- वि० दे० 'बर्राक़'।
बुलन्द- वि० दे० 'बलन्द'।
बुलबुल- स्त्री० पुं० (अ०) एक गाने वाली प्रसिद्ध काली छोटी चिड़िया।
बुलहवस- वि० (अ०) जिसको हवस या लोभ हो, लोभी।
बुलाक़- स्त्री० (तु०) वह लम्बोतरा या सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।
बुलूग़- पुं० (अ०) युवावस्था को प्राप्त होना, बालिग़ होना, जवान होना।
बुलूग़त- स्त्री० (अ०) बलिग़ होने की अवस्था, युवावस्था।
बुस्ताल- पुं० (फा०) बाग़, बगीचा, उपवन।
बुहतान- पुं० दे० 'बोहतान'।
बू- स्त्री० (फा०) १ बास, गंध, महक। २ दुर्गन्ध, बदबू।
बूआ- स्त्री० (देश०) १ पिता की बहन, फूफी। २ बड़ी बहन।
बूक़लमूँ- पुं० (अ०) गिरगिट।
बूग़दान- पुं० (फा०) मदारियों का थैला।
बूग़बन्द- पुं० (फा०) सामग्री रखने की थैली या कपड़ा।
बूज़ना- पुं० (फा० वज़नः) बन्दर।
बूज़ा- पुं० (फा० बूज़ः)एक प्रकार की शराब।
बूज़ीखाना- पुं० (फा० बूज़ा+खाना) शराबखाना, मधुशाला।
बूज़ीना- पुं० (फा० बूज़ीनः) बंदर।
बूदगी- स्त्री० (अ०) अस्तित्व।
बूतात- पुं० (अ०) घर खर्च का हिसाब।
बूदोवाश- स्त्री० (फा०) रहना सहना, निवास।
बूबक- पुं० (तु०) पुराना, बेवकूफ।
बूम- पुं० (अ०) उलूक पक्षी, उल्लू। पुं० (फा०) भूमि।
बूरानी- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का बैंगन का पकवान।
बे- प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दों के पहले लग कर प्रायः निषेध या अभाव आदि सूचित करता है। जैसे- बेअसर, बेईमान, बेखुद।
बेअक़्ल- वि० (फा०+अ०) जिसे अक्ल न हो, मूर्ख।
बेअदब- वि० (फा० बे+अ० अदब) (सं० बेअदबी) जो बड़ो का आदर-सम्मान न करे, अशिष्ट।
बेअसर- वि० (फा०) जिसका कोई असर न हो, प्रभावरहित।
बेअसल- वि० (फा० बे+अ० असल) १

जिसका कोई आधार या असल न हो, निराधार। २ मिथ्या, झूठ।

बेआबरू- वि० (फा०) (सं० बेआबरुई) अप्रतिष्ठित, बेइज्जत।

बेइख्तियार- वि० (फा०) (भाव० बेइख्तियारी) १ जिसका अपने ऊपर कोई वश न हो। २ जिसके हाथ में कोई अधिकार न हो।क्रि० वि० आप से आप, स्वतः और सहसा।

बेइज़्ज़त- वि० (फा० बे+अ० इज्जत) (सं० बेइज्जती) १ जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। २ अपमानित।

बेइज़्ज़ती- स्त्री० (फा० बे+अ० इज्जत) अप्रतिष्ठा, अपमान।

बेइन्तज़ामी- स्त्री० (फा०) इन्तज़ाम या व्यवस्था का अभाव।

बेइन्तहा- वि० (फा०+अ०) जिस की इन्तहा या हद न हो, बेहद, असीम।

बेइन्साफ- वि० (फा०+अ०) (सं० बेइन्साफी) जो इंसाफ या न्याय न करे, अन्यायी।

बेइल्म- वि० दे० 'लाइल्म'।

बेइल्मी- स्त्री० दे० 'लाइल्मी'।

बेईमान- वि० (फा०+अ०) (सं० बेईमानी) १ जिसे धर्म का विचार न हो, अधर्मी१ २ जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करता हो।

बेएतबार- वि० (फा०+अ०) (सं० बेएतबारी) १ जिसका कोई एतबार या विश्वास न करे। २ जिस पर एतबार या विश्वास न किया जा सके, अविश्वसनीय। ३ जो किसी का विश्वास न करे।

बेक़दर- वि० (फा० बे+अ० क़द्र) जो किसी की क़दर या आदर करना न जाने। २ जिसकी कुछ भी कद्र न हो, तुच्छ।

बेक़दरी- स्त्री० (फा० बे+अ० क़द्र) १ कद्र या आदर का न होना। २ अप्रतिष्ठा, अपमान।

बेकमो कास्त- वि० (फा०) बिना कुछ भी घटाये बढ़ाये, ज्यों का त्यों।

बेक़रार- वि० (फा०) (बेक़रारी) जिसे शान्ति या चैन न हो, व्याकुल, विकल।

बेकल- वि० (फा० बे+हिं० कल) (बेकली) विकल, बेचैन।

बेक़सूर- वि० (फा० बेक़ुसूर) निर्दोष।

बेकाबू- वि० (फा०) अनियंत्रित।

बेक़ायदा- वि० (फा०+अ०) क़ायदे या नियम के विरुद्ध।

बेकार- वि० (फा०) १ जिसके पास कोई काम न हो, निकम्मा, निठल्ला। २ जिसका कोई उपयोग न हो सके, निरर्थक, व्यर्थ। ३ जिसका कोई फल न हो, निष्फल। क्रि० वि० बिना किसी उपयोग या फल आदि के, व्यर्थ।

बेकारी- स्त्री० (फा०) १ बेकार होने की अवस्था या भाव, निकम्मापन। २ अनुपयोगिता, व्यर्थता। ३ काम धन्धे का न होना, बेरोजगारी।

बेख- स्त्री० (फा०) जड़, मूल, उद्गम।

बेखबर- वि० (हिं० बे०+फा० खबर) (सं० बेखबरी) १ अनजान, नावाक़िफ। २ बेहोश, बेसुध।

बेखुद- वि० (फा०) (बेखुदी) १ जो अपने आपे में न हो, जिसका होश हवास ठिकाने न हो। २ बेहोश, ज्ञान शून्य।

बेग- पुं० (तु०) (स्त्री० बेगम) १ सम्पन्न, अमीर। २ मुग़ल काल की एक उपाधि।

बेगम- स्त्री० (तु०) १ रानी। २ उच्च कुल की महिला।

बेगानगी- स्त्री० (फा०) बेगाना या पराया होने का भाव, परायापन।

बेगाना- वि० (फा० बेगानः) १ जो अपना न हो, पराया, ग़ैर, दूसरा। २ अजनबी, अपरिचित।

बेगार- स्त्री० (फा०) १ वह प्रथा जिसमें गरीबों आदि से ज़बरदस्ती और बिना मजदूरी दिये काम लिया जाता है। २ वह काम जो बिना मन के या विवश होकर किया जाय।

बेगारी- स्त्री० (फा०) वह जिससे मुफ्त में

और जबरदस्ती काम लिया जाय।
बेगुनाह- वि० (फा०) निरपराध, निर्दोष।
बेग़ैरत- वि० (फा०+अ०) (भाव० बेग़ैरती) निर्लज्ज, बेहया।
बेचारा- वि० (फा० बेचारः) (स्त्री० बेचारी) (भाव० बेचारगी) दीन और निस्सहाय, ग़रीब, दीन।
बेचूँ- वि० (फा०) जिसकी कोई उपमा न हो, जिसकी बराबरी कोई न कर सके। (प्रायः ईश्वर के सम्बन्ध में होता है।)
बेचैन- वि० (फा०) (सं० बेचैनी) जिसे चैन न पड़ता हो, बेचैन।
बेचोबा- पुं० (फा० बेचोबः) एक प्रकार का खेमा जिसमें चोब या खम्भा नहीं लगता।
बेज़बान- वि० (फा०) मूक।
बेजा- वि० (फा०) १ बेठिकाने, बेमौके। २ अनुचित।
बेजान- वि० (फा०) निष्प्राण, निर्जीव।
बेज़ार- वि० (फा०) (सं० बेज़ारी) १ नाराज, अप्रसन्न। २ दुःखी।
बेतकल्लुफ- क्रि० वि० (फा०) निस्संकोच।
बेतरह- क्रि० वि० (फा०) बुरी तरह से, बेढब तरीके से, कुछ भीषण या उग्र रुप से, जैसे-बेतरह फटकारना।
बेतहाशा- क्रि० वि० (फा०+अ० तहाशा) १ बहुत जोर से या उग्र रुप से। २ बहुत घबरा कर। ३ बिना सोचे समझे।
बेताब- वि० (फा०) (बेताबी) विकल, व्याकुल, बेचैन।
बेतार- पुं० (अ०) अश्वचिकित्सक, शालिहोत्री।
बेद- स्त्री० (फा०) बेंत का पौधा।
बेदखल- वि० (हिं०+अ०) जिसका दखल, कब्जा या अधिकार न हो, अधिकारच्युत।
बेदखली- स्त्री० (हिं०+अ०) सम्पत्ति पर से दखल या कब्जे का हटाया जाना अथवा न होना।
बेदम- वि० (फा०) अशक्त, निर्बल।
बेदर्द- वि० (फा०) निर्मम, निर्दय।
बेदर्दी- स्त्री० (फा०) निर्ममता, निर्दयता।
बेदाग- वि० (फा०) निर्दोष।
बेदार- वि० (फा०) जागता हुआ।
बेदारी- स्त्री० (फा०) जागने की अवस्था, जाग्रति।
बेनज़ीर- वि० (फा०) जिसकी कोई नजीर या उपमा न हो, बेजोड़, अनुपम, लासानी।
बेनवा- वि० (फा०) (बेनवाई) १ दरिद्र। २ फक़ीर।
बेनसीब- वि० (फा०+अ०) अभागा।
बेनियाज़- वि० (फा०) (सं० बेनियाज़ी) १ सब प्रकार की आवश्यकताओं और बन्धनों आदि से रहित, परम स्वतन्त्र, स्वच्छन्द (प्रायः ईश्वर के संबन्ध में)। २ लापरवाह।
बेपर्द- वि० (फा० बे+पर्दः) जिसके आगे कोई परदा न हो, आगे से खुला हुआ।
बेपर्दगी- स्त्री० (फ़ा०) परदे क़ा अभाव, परदा न होना।
बेपीर- वि० (फा०) १ जिसका कोई पीर या गुरु न हो, निगुरा। २ स्वार्थी और अन्यायी, निर्दय और अत्याचारी।
बेफिक्र- वि० (फा०+अ०) निश्चिंत।
बेफिक्री- स्त्री० (फा०+अ०) निश्चिंतता।
बेबदल- वि० (फा०) १ सदा एकरस रहने वाला, जिसमें कोई परिवर्तन न हो। २ निश्चित, ध्रुव। ३ बेजोड़।
बेबस- वि० (फा० बे+हिं० बस) (सं० बेबसी) १ जिसका कुछ बस न चल सके। २ निर्बल, असमर्थ।
बेबहा- वि० (फा०) जिसका मूल्य न लग सके, बहुमूल्य।
बेबाक- वि० (अ०+फा०) (सं० बेबाकी) निडर, निर्भय।
बेबाक़- वि० (फा०) (सं० बेबाक़ी) चुकता किया हुआ, चुकाया हुआ (क़र्ज या देन)।
बेबुनियाद- वि० (फा० बेबुनियाद) निराधार।
बेमजा- वि० (फा०) १ आनन्दहीन। २ फीका।
बेमहल- वि० (फा०+अ०) जो उपयुक्त

अवसर पर न हो, बेमौक़े।
बेमानी- वि० (फा०) निरर्थक।
बेमिसाल- वि० (फा०+अ०) अनुपम, बेजोड़।
बेमौके- क्रि० वि० (फा० बे+अ० मौक़ा) असमय।
बेरहम- वि० (फा०+अ०) निर्दय, निर्मम।
बेल- स्त्री० (फा०) फावड़ा, कुदाली।
बेलचा- पुं० (फा० बेलचः) छोटी कुदाली, छोटा फावड़ा।
बेलदार- पुं० (फा०) फावड़ा चलाने वाला मज़दूर।
बेला- पुं० (फा०) वह थैली जिसमें दरिद्रों को बाँटने के लिये रुपये लेकर निकलते हों।
बेलाबरदार- पुं० (फा०) वह आदमी जो साथमें बेला या बाँटने के लिए रुपयों की थैली लेकर चलता हो।
बेवकूफ- वि० (फा०) मूर्ख, नासमझ।
बेवकूफी- स्त्री० (फा०) मूर्खता, नासमझी।
बेवक्त- क्रि० वि० (फा०+अ०) असमय, बेमौके।
बेवजह- क्रि० वि० (फा०+अ०) अकारण।
बेवफा- वि० (फा०+अ०) कृतघ्न, विश्वासघाती, अनिष्ठावान।
बेवफाई- स्त्री० (फा०+अ०) कृतघ्नता, विश्वासघात, निष्ठाहीनता।
बेवा- स्त्री० (फा० बेवः) जिसका पति मर गया हो, विधवा, राँड।
बेश- वि० (फा०) १ अधिक, ज्यादा। २ श्रेष्ठ, अच्छा, बढिया।
बेशक- क्रि० वि० (फा०) बिना किसी शक के, निस्संदेह।
बेशक़ीमत- वि० (फा०+अ०) बहुमूल्य।
बेशर्म- वि० (फा०+अ०) निर्लज्ज।
बेशी- स्त्री० (फा०) १ अधिकता, ज्यादती। २ वृद्धि।
बेशुमार- वि० (फा०+अ०) असंख्य।
बेह- वि० (फा०) अच्छा, उत्तम। पुं० बिही नामक फल या मेवा।
बेहतर- वि० (फा०) अपेक्षाकृत उत्तम, किसी के मुक़ाबले में अच्छा। क्रि० वि० बहुत अच्छा, ठीक है, ऐसा ही होगा, ऐसा ही सही।
बेहतरी- स्त्री० (फा०) १ अच्छाई, उत्तमता। २ कल्याण, मंगल, भलाई।
बेहतरीन- वि० (फा०) सबसे अच्छा।
बेहबूद,बेहबूदी- स्त्री० दे० 'बहबूद' और 'बहबूदी'।
बेहमैयत- वि० (फा०) बेशर्म, निर्लज्ज, बेहया।
बेहया- वि० (फा०+अ०) (सं० बेहयाई) निर्लज्ज।
बेहयाई- स्त्री० (फा०) निर्लज्जता।
बेहाल- वि० (फा० बे+अ० हाल) (सं० बेहाली) व्याकुल, विकल, बेचैन। क्रि० वि० बहुत बुरी अवस्था में।
बेहिस- वि० दे० 'बेहोश'।
बेहिसाब- (हिं० बे+फा० हिसाब) बहुत अधिक, बहुत ज्यादा, जिसकी गिनती या हिसाब न हो।
बेहुरमत- वि० (फा०+अ०) (भाव० बेहुरमती) बेइज्जत।
बेहूदगी- स्त्री० (फा०) 'बेहूदा' का भाव, असभ्यता, अशिष्टा।
बेहूदा- वि० (फा० बेहूदः) असभ्य।
बेहोश- वि० (फा०) मूर्छित, अचेत।
बेहोशी- स्त्री० (फा०) मूर्छा, अचेतनता।
बै- स्त्री० (अ० बैअ) १ बेचने की क्रिया, बिक्री, विक्रय। २ खरीदना और बेचना, क्रय-विक्रय।
बैआना- पुं० (अ०) बयाना, साई।
बैइयत- स्त्री० (अ०) १ आज्ञाकारिता। २ किसी पीर आदि का शिष्य होना।
बैज़- पुं० बहु० (अ०) १ पक्षियों आदि के अंडे। २ अंडकोश।
बैज़वी- वि० (फा०) अंडे के आकार का, अंडाकार।
बैज़ा- पुं० (फा०) १ पक्षियों आदि का अंडा। २ अंडकोश।
बैज़ावी- वि० दे० 'बैज़वी'।

बैत- स्त्री० (अ०) १ कविता। २ छन्द। ३ मसनवी में का कोई एक शेर, पुं० शाला, घर, (केवल यौगिक में) जैसे- बैत-उल-हराम, बैत-उल्-खला।

बैत-उल्-खला- पुं० (अ०) शौचागार, पाखाना, टट्टी।

बैत-उल्-माल- पुं० (अ०) १ सरकारी खजाना। २ वह राजकोश जिसमें प्राचीन अरब और मुसलमान लूट का माल और लावारिस माल जमा करते थे। ३ वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो, लावारिस माल।

बैत-उल्-मुकद्दस- पुं० (अ०) १ मक्का। २ मक्के का प्रसिद्ध स्थान।

बैत-उल-हरम- पुं० (अ०) मुसलमानों का पवित्र स्थान, मक्का।

बैत-उल्ला- पुं० (अ०) खुदा का घर, काबा।

बैदक़- पुं० (अ०) शतरंज का प्यादा।

बैन- क्रि० वि० (अ०) मध्य, बीच।

बैनामा- पुं० (अ० बैअनामः) वह पत्र जिसमें किसी वस्तु के बेचने का उल्लेख हो, विक्रय-पत्र।

बैरक़- पुं० (तु०) झंडा, पताका, (बैरक विशेपतः उस झण्डे को कहते हैं जो किसी नये स्थान पर अधिकार करके या अक्सर मुहर्रम के जलूस में 'अलम' पर लगाते हैं)।

बैरूँ- अव्य० (फा० बेरूँ) बाहर, अलग, पुं० आस-पास का या बाहरी प्रदेश।

बैरूनी- वि० (फा० बेरूनी) बाहरी, बाहर का।

बोग़दान- पुं० (फा०) वह थैला जिसमें मदारी आदि अपनी सामग्री रखते हैं।

बोग़बन्द- पुं० (फा०) वह थैला या कपड़ा जिसमें कोई चीज रखी या बाँधी जाय।

बोरिया- पुं० (फा०) ताड़ के पत्तों की बनी हुई चटाई।

बोल- पुं० (अ० बौल) मूत्र, पेशाब, जैसे- बोल व बराज= मूत्र और मल, पेशाब और पैखाना।

बोश- पुं० (अ०) १ शान-शौकत, दबदबा। २ कमीना, पाजी, लुच्चा, (इस अर्थ में इसका बहु० 'औबाश' है)।

बोस- प्रत्य० (फा०) चूमने वाला।

बोसा- पुं० (फा० बोसः) मुँह या गाल चूमने की क्रिया, चुम्बन।

बोसीदा- वि० (फा० बोसीदः) (सं० बोसीदगी) पुराना-धुराना, सड़ा-गला, बेदम।

बोसोकनार- पुं० (फा०) प्रेमिका का मुख चूमना और उसे गले लगाना, चुम्बन और आलिंगन।

बास्ताँ- पुं० (फा०) बाग़, वाटिका, उपवन।

बोस्ताँपैरा- वि० (फा०) माली।

बोहतान- पुं० (अ० बुहतान) मिथ्या अभियोग, झूठा इलजाम। मुहा०-बोहतान जोड़ना=कलंक लगाना।

बौल- पुं० (अ०) मूत्र, पेशाब।

बौलदान- पुं (अ०+फा०) मूत्रपात्र।

मंज़र- पुं (अ०) दृश्य।

मंज़िल- स्त्री० (अ०) (बहु० मनाज़िल) १ यात्रा में ठहरने का स्थान, पड़ाव। २ मकान का खंड, मरातिब।

मंज़िलत- स्त्री० (अ०) १ पद, ओहदा। २ आदर सत्कार।

मंजूर- वि० (अ०) १ जो मान लिया गया हो, स्वीकृत। २ देखा हुआ।

ममजूरी- स्त्री० (अ० मंजूर) मंजूर होने का भाव, स्वीकृति।

मअदन- पुं (अ०) (बहु० मआदिन) सोने चाँदी आदि की खान।

मअदानियात- स्त्री० (अ०) खान से निकले हुए द्रव्य, खनिज पदार्थ।

मअदनी- वि० (अ०) खान से निकला हुआ, खनिज।

मअदिलत- स्त्री० (अ०) अदल, इंसाफ, न्याय।

मअदूद- वि० (अ०) १ गिने हुए। २ परिमित।

मअदूम- वि० दे० 'मादूम'।

मअबद- पुं० (अ०) (बहु० मआबिद) ईश्वराराधन करने का स्थान, मन्दिर, मस्जिद, गिरजा आदि।

मअबूद- पुं (अ०) वह जिसकी इबादत या आराधना की जाय, ईश्वर, परमात्मा।

मअरूज़- वि० (अ०) अर्ज किया गया, निवेदित।

मअलूल- वि० (अ०) तर्क द्वारा सिद्ध किया हुआ। पुं निष्कर्ष।

मआज़-अल्लाह- (अ०) ईश्वर रक्षा करे।

मआद- स्त्री० (अ०) १ लौट कर आने का स्थान। २ परलोक। ३ होने वाला जन्म।

मआनी- पुं० (अ० 'मअनी' का बहु०) १ माने, अर्थ। २ उद्देश्य।

मआब- पुं० (अ०) निवास स्थान। जैसे-इज्ज़त मआब= प्रतिष्ठा का आगार, परम प्रतिष्ठित।

मआरिज़- वि० (अ०) विरोध करने वाला।

मआल- पुं (अ०) अन्त।

मआल-अन्देश- पुं० (अ०+फा०) (सं० मआल-अन्देशी) वह जो परिणाम का ध्यान रखता हो, परिणामदर्शी।

मआश- स्त्री० (अ०) १ जीविका का साधन, आजीविका। २ जमींदारी। जैसे-नेकमआश, बद-मआश।

मआशरत- स्त्री० (अ०) सामाजिक जीवन, मिलजुल कर जीवन व्यतीत करना।

मआसिर- पुं० (अ० मआसरत का बहु०) अच्छे और बड़े काम।

मईशत- स्त्री० (अ०) १ जीविका। २ दैनिक भोजन। ३ अवश्यक वस्तुएँ।

मकतब- पुं० (अ० मक्तब) (बहु० मक़ातिब) १ वह स्थान जहाँ लिखना पढ़ना सिखाया जाता हो। २ पाठशाला, विद्यालय।

मक़्तल- पुं० (अ० मक्तल) १ वह स्थान जहाँ लोग क़त्ल किये जाते हो, वध स्थान। २ प्रेमिका का क्रीड़ा क्षेत्र।

मक़्ता- पुं० (अ० मक्तः) गजल का अन्तिम चरण जिसमें कवि का नाम भी रहता है।

मक़्तूब- वि० (अ० मक्तूब) (बहु० मकतूबात) लिखा हुआ, लिखित। पुं० १ लेख। २ पत्र, चिट्ठी।

मक्तूबइलैह- पुं० (अ० मक्तूबइलैह) वह जिसके नाम कोई पत्र लिखा गया हो, पत्र पाने वाला।

मक़्तूम- वि० (अ० मक्तूम) छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त।

मक़्तूल- वि० (अ० मक्तूल) १ जो क़त्ल कर डाला गया हो। २ प्रेमी।

मक़्दम- पुं० (अ०) १ वापस आना, लौटना। २ पहुँचना।

मक़्दूर- पुं० (अ० मक्दूर) सामर्थ्य।

मक्नां- पुं० (अ० मक्नः) एक प्रकार की ओढ़नी या चादर।

मक़्नातीस- पुं० (अ० मक्नातीस) (वि० मक़्नातीसी) चुम्बक पत्थर।

मक्नून- वि० (अ०) गुप्त, रहस्यमय।

मकफूल- वि० (अ० मक्फूल) (भाव० मक़्फूलियत) रेहन या बन्धक रखा हुआ।

मक़्बरा- पुं० (अ० मक्बरः) (बहु० मक़ाबिर) वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो, रौजा, मज़ार।

मक़्बूज़ा- वि० (अ० मक्बूज़ः) जिस पर कब्जा किया गया हो, अधिकृत।

मक़्बूल- वि० (अ० मक्बूल) (भाव० मक़्बूलियत) १ कबूल किया हुआ, १ पसन्द होने के लायक, अच्छा, बढ़िया। २ चुना हुआ।

मक़्रूक़- वि० (अ० मक्रूक) कुर्क़ किया हुआ।

मक़्रूज- वि० (अ० मक्रूज) जिस पर कर्ज़ हो, ऋणी, कर्जदार।

मक़्रूह- वि० (अ० मक्रूह) (बहु० मकरुहात) घृणित, बहुत बुरा, गंदा और खराब।

मक़्लूब- वि० (अ० मक्लूब) उलटा हुआ। पुं० वह शब्द या पद जो सीधा और उलटा दोनों ओर से पढ़ने पर सामान हो। जैसे-दरद।

मक़्सद- पुं० (अ० मक्सिद) (बहु० मक़ासिद) १ उद्देश्य, अभिप्राय। २ कामना। मुहा०-मक़्सद बर आना=कामना पूर्ण होना।

मक़्सूद- वि० (अ० मक्सूद) उद्दिष्ट, अभिप्रेत।

मक़्सूम- वि० (अ० मक्सूम) बाँटा हुआ, विभक्त। पुं० १ भाग्य, किस्मत, तक़्दीर। २ गणित में भाज्य।

मक्सूर- वि० (अ० मक्सूर) (अक्षर) जिसमें कस्र का चिह्न (ज़ेर या एकार या इकार का चिह्न) लगा हो।

मक़ातिब- पुं० (अ०) 'मक़्तब' का बहु०, पाठशाला।

मकान- पुं० (अ०) रहने की जगह, घर, आलय।

मकाफात- दे० 'मुकाफात'।

मक़ाबिर- पुं० (अ०) 'मक़्बरा' का बहु०।

मक़ाम- पुं० (अ०) १ ठहरने की जगह। २ स्थान, जगह।

मक़ामी- वि० (अ०) १ ठहरा हुआ, स्थिर। २ स्थानीय।

मक़ाल- पुं० (अ०) १ शब्द। २ वाचा।

मक़ाला- पुं० (अ० मक़ालः) १ कही हुई बात। २ ग्रन्थ।

मक़ासिद- पुं० (अ०) 'मक़्सद' का बहु०।

मक़ुला- पुं० (अ० मकूलः) (बहु० मकूलात) १ मसला, कहावत। २ उक्ति, क़ौल।

मक्का- पुं० (अ०) अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है।

मक्कार- वि० (अ०) (स्त्री० मक्कारः) धोखा देने वाला, छली।

मक्कारी- स्त्री० (अ० मक्कार) छल, फरेब, धोखा।

मक्र- पुं (अ०) फरेब, दग़ा।

मख़ज़न- पुं० (अ० मख़्ज़न) १ खज़ाना, कोश। २ शब्दो आदि का बहुत बड़ा संग्रह, शब्द कोश।

मख़्दूम- पुं० (अ० मख़्दूम) १ (स्त्री० मख़दूमा) (बहु० मख़ादिम) वह जिसकी खिदमत या सेवा की जाय। २ मालिक, स्वामी। ३ एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी।

मख़दूश- वि० (अ० मख़्दूश) जिसमें कोई ख़दशा या डर हो, जिसमें आपत्ति या हानि की आशंका हो।

मख़बूत- वि० (अ० मख़्बूत) सनकी, ख़ब्ती। यौ०- मख़बूत-उल्-हवास= वह जिसका दिमाग़ ख़ब्त हो, पागल, विक्षिप्त, ख़ब्ती।

मख़मल- स्त्री० (अ० मख़्मल) (वि० मख़मली) एक प्रकार का प्रसिद्ध कपड़ा जिसमें बहुत चिकने रोएँ होते हैं।

मख़मसा- पुं० (अ० मख़मसः) विकट प्रसंग या प्रश्न।

मख़मूर- वि० (अ० मख़्मूर) नशे में चूर, मतवाला।

मख़रज- पुं० (अ० मख़्रज) (बहु० मख़ारिज) १ मूल या उद्गम स्थान। २ शब्द की व्युत्पत्ति। ३ निकलने का रास्ता। ४ बोलने की इद्रिय, मुँह।

मख़रूत- वि० (अ० मख़्रूत) वह जो नीचे की ओर मोटा और ऊपर की ओर पतला होता गया हो, कोणाकार, गजरडौल।

मख़लूक़- वि० (अ०) रचा या बनाया हुआ। स्त्री० १ रची या बनाई हुई चीजे। २ सृष्ट के जीव आदि।

मख़लूक़ात- स्त्री० (अ० मख़्लूक़ात) 'मख़लूक़' का बहु०, सृष्टि के जीव आदि।

मख़लूत- वि० (अ० मख़लूत) मिलाजुला, मिश्रित।

मख़फ़ी- वि० (अ०) छिपा हुआ, गुप्त, पोशीदा।

मख़्सूस- वि० (अ०) खासतौर पर अलग किया हुआ, विशिष्ट। यौ०- मुक़ाम-मख़्सूस= स्त्री या पुरुष की गुप्त इन्द्रिय।

मग़फ़िरत- स्त्री० (अ० मग़्फ़िरत) अपराध क्षमा करना, माफी।

मग़फ़ूर- वि० (अ० मग़्फ़ूर) मृत, स्वर्गीय।

मग़मूम- वि० (अ० मग़मूम) ग़म में भरा हुआ, दुःखी, रंजीदा।
मगर- अव्य० (अ०) पर, परन्तु, लेकिन।
मग़रिब- पुं० (अ० मग़्रिब) पश्चिम दिशा। यौ०-मग़रिब की नमाज़=सूर्यास्त के समय पढ़ी जाने वाली नमाज़।
मग़रिबी- वि० (अ० मग़्रिबी) मग़रिब या पश्चिम का, पश्चिमी।
मग़रुर- वि० (अ० मग़रुर) जिसे ग़रुर हो, अभिमानी, घमंडी, अभिमान।
मग़रुरी- स्त्री० (अ० मग़रुर) ग़रुर, घमंड़, अभिमान।
मग़लूब- वि० (अ० मग्लूब) (भाव० मग़लूबियत) जिस पर कोई ग़ालिब आया हो, पराजित, परास्त।
मगस- स्त्री० (अ०) मक्खी।
मग़ज़- पुं० (अ०) (बहु० मग़्ज़ियात) १ मस्तिष्क, दिमाग, भेजा। २ गिरी, मींगी, गूदा।
मग़ज़ी- स्त्री० (अ० मग़ज़) गोट, किनारा, हाशिया।
मज़कूर- वि० (अ० मज़कूर) जिसका ज़िक्र हुआ हो, उक्त। पुं० विवरण, विशेशतः लिखित विवरण। यौ०- मज़कूरा-वाला= जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका हो, उपर्युक्त, उल्लिखित।
मज़कूरी- पुं० (फा० मज़्कूरी) सम्मन तामील करने वाला कर्मचारी।
मजज़ूब- वि० (अ० मज्ज़ूब) १ जो जज्ब हो गया हो, जो सोख लिया गया हो। २ किसी विषय में डूबा हुआ, तन्मय, तल्लीन।
मज़दूर- पुं० (फा० मज़्दूर) १ बोझ ढोने वाला, मजूर, कुली, मोटिया। २ कल कारखानों में छोटा मोटा काम करने वाला।
मज़दूरी- स्त्री० (फा० मज़्दूरी) १ मज़दूर का काम। २ बोझ ढोने या और कोई छोटा मोटा काम करने का पुरस्कार। ३ परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन, उजरत।
मजनूँ- वि० (अ० मज्नूँ) १ जो प्रेम में पागल हो गया हो। २ बहुत ही दुबला पतला, क्षीण शरीर।
मजनूनियत- स्त्री० (अ० मज्नूनियत) पागलपन, उन्माद।
मज़बह- वि० (अ० मज़्बह) ज़बह करने की जगह, वध-स्थल।
मज़बूत- वि० (अ० मज़्बूत) १ दृढ़, पुष्ट, पक्का। २ बलवान्, सबल।
मज़बूती- स्त्री० (अ० मज़्बूती) १ मज़बूत का भाव, दृढ़ता, पुष्टता। २ ताक़त, बल। ३ साहस।
मजबूर- वि० (अ० मज्बूर) विवश, लाचार।
मजबूरन- क्रि० वि० (अ० मज्बूरन) मजबूर होकर, विवश होकर, लाचारी से।
मजबूरी- स्त्री० (अ० मज्बूरी) विवशता, लाचारी।
मजमा- पुं० (अ० मज्मः) (बहु० मजामऽ) १ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग एकत्र हों। २ बहुत से लोगों का समूह, भीड़।
मजमूआ- पुं० (अ० मज्मूअः) १ बहुत सी चीजों का समूह। २ संग्रह। वि० एकत्र किया हुआ।
मजमूई- वि० (अ० मज्मूई) कुल, एक में मिला हुआ, सब।
मज़मून- पुं० (अ० मज़्मून) (बहु० मज़ामीन) १ वह विषय जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। २ लेख।
मज़मूम- वि० (अ० मज़्मूम) १ मिलाया हुआ, संबद्ध किया हुआ। २ अक्षर जिस पर 'पेश' या उकार की मात्रा अथवा चिह्न लगा हो। जैसे-'कुल' में का काफ (क)। वि० जिसकी मज़म्मत या बुराई की गई हो, खराब, बुरा।
मज़म्मत- स्त्री० (अ०) १ बुराई, निन्दा। २ निन्दात्मक लेख या कविता।
मज़रा- पुं० (अ० मज़्रअ) १ खेत, छोटा गाँव।
मज़रूआ- वि० (अ० मज़रूअऽ) जोता बोया हुआ (खेत)।
मज़रूब- वि० (अ० मज़रूब) १ जिस पर

जर्ब या चोट पड़ी हो। २ (संख्या) जिसका गुणा किया जाय, गुणा।

मजरूर- वि० (अ० मज्रूर) खिंचने या आकृष्ट होने वाला।

मजरूह- वि० (अ० मज्रूह) १ जिसे घाव या चोट लगी हो, घायल। २ प्रेम और विरह में विकल।

मज़र्रत- स्त्री० (अ०) हानि, नुकसान; चोट, आघात।

मजलिस- स्त्री० (अ० मज्लिस) (बहु० मजालिस) १ सभा, समाज। २ जलसा। यौ०-मीर मजलिस=सभापति। ३ नाच रंग का स्थान, महफिल।

मजलिसखाना- पुं० (अ० मज्लिस+फा० खानः) मजलिस या जलसा होने का स्थान, रंग शाला।

मजलिसी- वि० (अ० मज्लिसी) १ मजलिस सम्बन्धी, मजलिस का। २ जो मजलिस में जाता या निमंत्रित हो।

मजलूम- वि० (अ० मज्लूम) मजलूमी, जिस पर जुल्म किया गया हो, अत्याचार पीड़ीत।

मज़हका- पुं० (अ० मज्हकः) १ यह बात या वस्तु जिसे देख कर हँसी आवे। २ दिल्लगी, उपहास, मखौल। मुहा०-मज़हका उड़ाना= उपहास करना।

मजहब- पुं० (अ० मज्हब) (बहु० मज़ाहिब) सम्प्रदाय, धर्म, पंथ, मत।

मजहबी- वि० (अ० मज्हबी) धर्मसम्बन्धी धार्मिक, पुं० मेहतर या भंगी सिक्ख।

मजहूल- वि० (अ० मज्हूल) (भा० मजहूली) १ अज्ञात। २ सुस्त, निकम्मा। ३ थका हुआ, शिथिल।

मज़ा- पुं० (फा० मज़ः) १ स्वाद, लज्जत। मुहा०-मजा चखाना= किये हुए अपराध का दंड देना। २ आनन्द, सुख, दिल्लगी, हँसी। मुहा०- मजा आ जाना= परिहास का साधन प्रस्तुत होना, दिल्लगी का सामान होना।

मज़ाक- पुं० (अ०) १ चखने क्रिया या शक्ति। २ रुचि, प्रवृत्ति, चसका। ३ परिहास, ठट्ठा, हँसी।

मज़ाकन- क्रि० वि० (अ०) मजाक से, हँसी या परिहास में।

मज़ाकिया- वि० (अ० मजाकियः) मज़ाक सम्बन्धी। २ परिहासप्रिय, हँसोड़, ठठोल।

मजाज़- वि० (अ०) जिसे नियम या कानून आदि के अनुसार कोई काम करने का अधिकार मिला हो, नियमानुसार समर्थ। पुं० नियमानुसार मिला हुआ अधिकार या सामर्थ्य।

मजाज़न्- क्रि० वि० (अ०) कानून या नियम के अनुसार, नियमित रुप में।

मजाज़ी- वि० (अ०) १ कृत्रिम, नकली, झूठा। २ संसार या लोकसंबंधी, सांसारिक, लौकिक, 'अध्यात्मिक' का उलटा।

मज़ामीन- पुं० (अ०) 'मजमून' का बहु०।

मज़ामीर- पुं० (अ० मिज़मार=बाँसुरी का बहु०) १ अनेक प्रकार के बाजे, वाद्य। २ घुड़दौड़ के मैदान।

मज़ार- पुं० (अ०) १ वह स्थान जहाँ लोग ज़ियारत या दर्शन करने जायँ। २ कब्र।

मज़ारा- पुं० (अ० मज़ारS) किसान, खेतिहर।

मजाल- स्त्री० (अ०) शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता।

मज़ाहिब- पुं० (अ०) 'मजहब' का बहु०।

मज़ाहिरा- पुं० (अ० मज़ाहिरः) वह काम जो दिखलाने या भाव प्रगट करने के लिए किया जाय, प्रदर्शन।

मजीद- वि० (अ०) १ पवित्र और, पूज्य। २ बड़ा। पुं० मुसलमानों का धर्म ग्रंथ कुरान।

मज़ीद- पुं० (अ०) ज्यादती, अधिकता। वि० १ जिसमें अधिकता की गई हो, बढ़ाया हुआ। २ अधिक, ज्यादा।

मजूस- पुं० (फा०) जरदुश्त का अनुयायी, अग्नि पूजक, पारसी।

मजेदार- वि० (फा० मज़ःदार) १ स्वादिष्ट, जायकेदार। २ अच्छा, बढ़िया। ३ जिसमें बानन्द आता हो।

**मज़ेदारी**- स्त्री० (फा० मज़ःदारी) १ स्वाद, ज़ायका। २ आनन्द, लुत्फ, मज़ा।

**मतन**- पुं० (अ० मत्न) १ मध्य भाग, बीच का हिस्सा। २ वह मूल ग्रन्थ जो टीका करने के योग्य हो। ३ पीठ, पृष्ठ भाग। वि० पक्का, दृढ़, मज़बूत।

**मतबख**- पुं० (अ० मत्बख) रसोईघर, बावर्चीखाना।

**मतबखी**- पुं० (अ० मत्बखी) रसोइया। वि० रसोईघर सम्बन्ध।

**मतबा**- पुं० (अ० मत्बS) यंत्रालय, छापाखाना।

**मतबूअ**- वि० (अ०) १ जो पसन्द किया गया हो। २ अनुकरणीय।

**मतबूआ**- वि० (अ० मत्बूअ) छापा हुआ, मुद्रित।

**मतब्ब**- पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ हकीम या चिकित्सक बैठ कर रोगियों की चिकित्सा करता है, औषधालय, दवाखाना।

**मतरूक**- वि० (अ० मत्रूक) जो तर्क या अलग कर दिया गया हो, छोड़ा हुआ, त्यक्त, परित्यक्त।

**मतलब**- पुं० (अ० मत्लब) (बहु० मतालिब) १ तात्पर्य, अभिप्राय, आशय। २ अर्थ, मानी। ३ अपना हित, स्वार्थ। ४ उद्देश्य, विचार। ५ सम्बन्ध, वास्ता।

**मतला**- पुं० (अ० मत्लS) १ किसी तारे आदि के उदय होने की दिशा, पूर्व। २ गज़ल के आरम्भिक दो चरण जिनमें अनुप्रास होता है।

**मतलूब**- वि० (अ० मत्लूब) १ जो तलब किया या माँगा गया हो। २ अभीष्ट, उद्दिष्ट।

**मता**- पुं० (अ० मताअ) १ माल असबाब। २ सम्पत्ति। यौ०- माल मता= धन दौलत।

**मतानत**- स्त्री० (अ०) दृढ़ता, मज़बूती, पुष्टता।

**मताफ**- पुं० (अ०) परिक्रमा करने का फेरा।

**मतालिब**- पुं० (अ०) 'मतलब' का बहु०।

**मतीन**- वि० (अ०) दृढ़, पक्का।

**मत्न**- पुं० दे० 'मतन'।

**मद**- स्त्री० (अ०) १ विभाग, सीग़ा, सरिश्ता। २ खाता।

**मदखूल**- वि० (अ० मद्ख़ूल) दाखिल या जमा किया हुआ।

**मदखूला**- स्त्री० (अ० मद्ख़ूलः) वह स्त्री जो यों ही घर में रख ली गई हो, उपपत्नी, रखेली, सुरैतिन।

**मदद**- स्त्री० (अ०) सहायता, सहारा।

**मददगार**- पुं० (अ० + फा०) (भाव० मददगारी) मदद करने वाला, सहायक।

**मदफन**- पुं० (अ० मद्फ़न) वह स्थान जहाँ मुरदे दफन किये जाते हैं, शव गाड़ने की जगह, कब्रिस्तान।

**मदफून**- वि० (अ० मद्फ़ून) १ दफन किया हुआ, गाड़ा हुआ। २ छिपा कर रखा हुआ।

**मदयून**- वि० (अ० मद्यून) जिस पर ऋण हो, कर्ज़दार।

**मदरसा**- पुं० (अ० मद्रिसः) (बहु० मदारिस) पाठशाला।

**मद व जज़र**- पुं० (अ०) समुद्री ज्वार और भाटा।

**मदह**- स्त्री० (अ० मद्ह) (बहु० मदायह) प्रसंशा। यौ०- मदहे सहाबा= मुहम्मद साहब के कतिपय घनिष्ठ मित्रों की प्रशंसा जो सुन्नी लोग करते हैं।

**मदहख्वाँ**- पुं० (अ० मद्ह+फा०) तारीफ करने वाला, प्रशंसक।

**मदहोश**- वि० (अ० मद्होश) (सं० मदहोशी) १ नशे में मसत, मत्त, मतवाला। २ हतबुद्धि।

**मदाखिल**- स्त्री० (अ०) १ दखल या प्रवेश करने का स्थान, प्रवेशद्वार। २ आय, आमदनी।

**मदाखिलत**- स्त्री० (अ०) १ दखल देना। २ अधिकार जमाना।

**मदाखिलतबेजा**- स्त्री० (अ० + फा०) अनुचित रूप से कहीं प्रवेश करना, अनधिकार प्रवेश।

मदार- पुं (अ०) १ दौरा करने का रास्ता, भ्रमणमार्ग। २ आधार, आश्रय। ३ मुसलमानों के एक पीर का नाम।

मदार-उल्-महाम- पुं० (अ०) १ प्रधान मंत्री, अमात्य। २ प्रधान व्यवस्थापक।

मदारात- स्त्री० (अ०) आदर-सत्कार, आव-भगत।

मदारिज- पुं० बहु० (अ०) किसी काम के दरजे या श्रेणियाँ।

मदारिस- पुं० (अ०) 'मदरसा' का बहुवचन।

मदारी- पुं० (अ० मदार) १ मदार नामक पीर का अनुयायी। २ वह जो बंदर और भालू आदि नचाता या इंन्द्रजाल के खेल करता हो।

मदीद- वि० (अ०) १ लम्बा। २ विस्तृत।

मदीना- पुं० (अ० मदीनः) १ नगर। २ अरब का एक प्रसिद्ध नगर।

मद्दाह- वि० (अ०) मदह या प्रशंसा करने वाला, प्रशंसक।

मद्रसा- पुं० दे० 'मदरसा'।

मन- वि० (फा०) १ मैं। २ मेरा।

मनकूता- वि० (अ० मन्कूतः) जिस पर नुक़्ते या बिन्दियाँ लगी हों। पुं० वह लेख या कविता जिसमें केवल नुक़्ते वाले अक्षरों का व्यवहार हो, इसकी गणना अलंकारों में होती है।

मनकूल- वि० (अ०) १ एक स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर रखा हुआ। २ जिसकी प्रतिलिपि की गई हो, नक़्ल किया या उतारा हुआ। ३ उद्धृत, कहीं से लिया हुआ।

मनकूला- वि० (अ० मन्कूलः) (बहु० मनकूलात) स्थिर या स्थावर का उलटा, चल। यौ०- जायदाद मनकूला= चल संपत्ति। ग़ैर मनकूला= स्थिर या स्थायी सम्पत्ति, स्थावर।

मनकूश- वि० (अ० मन्कूश) नक़श किया हुआ, अंकित।

मनकूह- वि० (अ० मन्कूह) विवाहिता।

मनकूहा- वि० (अ० मनकूहः) (स्त्री) विवाहिता।

मनज़र- पुं० (अ० मन्जर) दृश्य, नजारा।

मनज़ूम- वि० (अ० मन्ज़ूम) नज्म के रुप में छन्दोबद्ध।

मनफ़ी- वि० (अ० मन्फ़ी) घटाया या कम किया हुआ।

मनशा- स्त्री० (अ० मन्शाअ) १ उद्देश्य, अभिप्राय। २ कामना।

मनसब- पुं० (अ० मन्सब) (बहु० मनासिब) १ पद, ओहदा। २ कर्म। ३ अधिकार।

मनसबी- वि० (अ० मन्सबी) मनसब या पदसम्बन्धी।

मनसूबा- पुं० (अ० मन्सूबः) १ युक्ति, ढ़ंग। मुहा०- मनसूबा बाँधना= युक्ति सोचना। २ इरादा, विचार।

मनहूस- वि० (अ० मन्हूस) (सं० मनहूसियत, मनहूसी) १ अशुभ, बुरा। २ अप्रिय दर्शन, देखने में बेरौनक।

मना- वि० (अ० मनअ) १ निषिद्ध, वर्जित। २ वारण किया हुआ। ३ अनुचित, नामुनासिब।

मनाज़िर- पुं० (अ०) मन्ज़र (दृश्य) का बहु०।

मनाल- पुं० (अ०) १ लाभ। २ संपत्ति।

मनासबत- स्त्री० दे० 'मुनासिबत'।

मनाही- स्त्री० (अ०) न करने की आज्ञा, रोक, निषेध।

मनी- स्त्री० (अ०) वीर्य।

मन्कूब- वि० (अ०) गरीब, निर्धन।

मन्तिक़- पुं० (अ०) तर्कशास्त्र।

मन्तिक़ी- पुं० (अ० मन्तिक़) तर्कशास्त्र का ज्ञाता, तार्किक।

मन्द- प्रत्य० (फा०) वाला, रखने वाला। जैसे- दौलतमन्द।

मन्दील- स्त्री० (अ० मिन्दील) १ रुमाल। २ पगड़ी। ३ कमर में बाँधने का पटका।

मन्शा- स्त्री० दे० 'मनशा'।

मन्सूख- वि० (अ०) रद्द किया हुआ,

निकम्मा ठहराया हुआ।
मन्सूखी- स्त्री० (अ० मन्सूख) रद्द करने या निकम्मा ठहराने की क्रिया।
मन्सूब- वि० (अ०) १ निसबत या संबन्ध रखने वाला। २ जिसकी किसी के साथ मँगनी हुई हो।
मन्सूबा- पुं० दे० 'मनसूबा'।
मन्सूर- वि० (अ०) १ जिसे ईश्वरीय सहायता मिली हो। २ विजयी।
मफऊल- पुं० (अ० मफ्ऊल) (भाव० मफ्ऊलियत) १ वह जिसके साथ कोई फेल या काम किया जाय। २ वह जिसके साथ संभोग किया जाय। ३ व्याकरण में कर्म।
मफकूद- वि० (अ० मफ्कूद) १ खोया हुआ, गुम। २ जिसका कुछ पता न लगे।
मफरुक़- वि० (अ० मफरूक़) १ अलग किया हुआ, निकला या घटाया हुआ।
मफरूज- वि० (अ० मफरूज) फर्ज किया हुआ, माना हुआ, माना हुआ, कल्पित।
मफरुर- वि० (अ० मफ्रूर) भागा हुआ। (अपराधी आदि)।
मफलूक- वि० (अ० मफ्लूक) फलक या आकाश का सताया हुआ, दुर्दशाग्रस्त।
मफहूम- वि० (अ० मफ्हूम) समझा हुआ, पुं० पदार्थ, वस्तु।
मफासिद- वि० (अ०) 'फिसाद' का बहु०।
मफ्तून- वि० (अ०) अनुरक्त, आसक्त।
मफ्तूह- वि० (अ०) फतह किया हुआ, जीता हुआ, विजित।
मबज़ूल- वि० (अ० मब्जूल) १ खर्च किया हुआ। २ प्रदान किया हुआ।
मबनी- वि० (अ० मब्नी) आधार पर ठहरा हुआ, आश्रित।
मब्दा- पुं० (अ० मब्दिअ) १ मूल, उद्गम, उत्पत्ति स्थान। २ सृष्टि का मूल कारण, परमात्मा।
ममदूह- वि० (अ० मम्दूह) १ जिसकी मदह या प्रशंसा की जाय। २ उल्लिखित, उक्त।
ममनूअ- वि० (अ० मम्नूअ) जो मना किया गया हो, वर्जित।
ममनून- वि० (अ० मम्नून) उपकृत, कृतज्ञ।
ममलूह- वि० (अ० मम्लूह) नमकीन।
ममात- स्त्री० (अ०) मृत्यु।
ममलकत- स्त्री० (अ० मम्लुकत) (बहु० मुमालिक) राज्य, सल्तनत।
ममालिक- पुं० दे० 'मुमालिक'।
मम्बा- पुं० (अ० मम्बः) १ पानी का सोता, जलस्रोत, चश्मा। २ निकलने की जगह।
मयस्सर- वि० (अ०) मिलता या मिला हुआ, प्राप्त, उपलब्ध।
मरकज़- पुं० (अ० मर्कज) १ मध्य का स्थान, केन्द्र। २ कुछ विशिष्ट अक्षरों (जैसे- काफ, गाफ) के ऊपर लगने वाली तिरछी पाई।
मरक़द- पुं० (अ० मर्क़द) १ शयनागार। २ क़ब्र, समाधि।
मरकूम- वि० (अ० मर्क़ूम) लिखा हुआ।
मरकूमा- वि० दे० 'मरकूम'।
मरग़ूब- वि० (अ० मर्ग़ूब) जिसकी तरफ़ रग़बत या रुचि हो, रुचिकर। १ प्रिय। २ सुन्दर, प्रिय-दर्शन।
मरग़ोल- पुं० (फा० मर्ग़ूलः) १ मुड़े हुए बालों का घूँघर। २ गाने वाले पक्षियों का मनोहर स्वर। ३ गाने में गिटकिरी।
मरग़ोला- पुं० दे० 'मरग़ोल'।
मरज- पुं० (अ०) रोग।
मरजान- पुं० (फा० मर्जान) मूँगा।
मरज़ी- स्त्री० (अ० मर्जी) (बहु० मरजियात) १ इच्छा, कामना, चाह। २ प्रसन्नता, खुशी। ३ आज्ञा, स्वीकृति।
मरतूब- वि० (अ० मर्तूब) गीला, भीगा हुआ, नम, तर।
मरदानगी- स्त्री० (फा० मर्दानगी) १ वीरता, शूरता, शौर्य। २ साहस, हिम्मत।
मरदाना- वि० (फा० मर्दानः) १ पुरुष-संबंधी। २ पुरुषों का सा। ३ वीरोचित।
मरदी- स्त्री० दे० 'मरदानगी'।
मरदुआ- पुं० (फा० मर्द) अपरिचित पुरुष के लिये तिरस्कार सूचक शब्द (स्त्रियाँ)।
मरदुम- पुं० (फा० मर्दुम) मनुष्य, आदमी।

यौ०- मरदुम-आज़ार= मनुश्यों को कष्ट पहुँचाने वाला, जालिम। मरदुमशुमारी= जनगणना।

मरदुक- स्त्री० (फा० मर्दुक) आँख की पुतली।

मरदुमी- स्त्री० दे० 'मरदानगी'।

मरदूद- वि० (अ० मर्दूद) रद्द किया हुआ, त्यक्त। पुं० एक प्रकार की गाली।

मरफा- पुं० (फा० मरफ) ढोल।

मरबूत- वि० (अ०) १ जिसके साथ रब्त हो। २ संबद्ध, बँधा हुआ।

मरमर- पुं० (अ०) एक प्रकार का बढ़िया सफेद और मुलायम पत्थर, संगमरमर१

मरम्मत- स्त्री० (अ०) किसी वस्तु के टूट-फूटे अंगों को ठीक करना, दुरुस्ती, जीर्णोद्धार।

मरम्मततलब- वि० (अ०) जिसमें मरम्मत की आवश्यकता हो।

मरवारीद- पुं० (फा०) मोती।

मरसिया- पुं० (अ० मर्सियः) १ किसी व्यक्ति के गुणें का कीर्तन। २ उर्दू भाषा में वह शोकसूचकणों कविता जो किसी की मृत्यु के सम्बन्ध में बनाई जाती हैं। ३ मरणशोक, रोना-पीटना।

मरसियाख्वाँ- पुं० (अ० मर्सियः+फा०) मरसिया कहने या पढ़ने वाला।

मरसियाख्वानी- स्त्री० (अ० मर्सियः+फा०) मरसिया पढ़ने की क्रिया।

मरसियागो- पुं० दे० 'मरसियाख्वाँ'।

मरहबा- अवय० (अ० मर्हबा) शाबाश, वहुत अच्छे। (बहुत प्रसंशा करने के लिये कहते हैं)।

मरहम- स्त्री० (अ० मर्हम) औपधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या पीड़ित स्थानों पर लगाया जाता हैं।

मरहमत- स्त्री० (अ० मर्हमत) (बहु० मराहिम) १ दया, अनुग्रह। २ प्रदान। ३ क्षमा।

मरहला- पुं० (अ० मर्हलः) (बहु० मराहिल) १ टिकांन, मंजिल, पड़ाव। २ मरातिब। मुहा०-मरहला तै करना = झमेला निबटाना, कठिन काम पूरा करना।

मरहून- वि० (अ० मर्हन) जो रेहन या बन्धक रखा गया हो।

मरहूम- वि० (अ० मर्हूम) (स्त्री० मरहूमा) स्वर्गीय, मृत, मरा हुआ।

मराज़अत- स्त्री० (अ०) दूसरे के बच्चे को स्तन पान कराना।

मरात- स्त्री० (अ०) स्त्री।

मरातिब- पुं० (अ०) 'मरतबा' का बहु०। १ पद, मर्यादा आदि, रुतबे, दरजे। २ विषय या कार्य आदि। ३ मकान के खंड, मंजिल।

मरासिम- पुं० (अ०) 'रस्म' का बहु०।

मराहिल- पुं० (अ०) 'मरहला' का बहु०।

मरियम- स्त्री० (अ०) १ कुमारी। २ ईसा मसीह की माता का नाम।

मरीज़- पुं० (अ०) (स्त्री० मरीजः) रोगी, बीमार।

मर्ग- पुं० (फा०) मृत्यु, मौत।

मर्ग़ज़ार- पुं० (फा०) हरा-भरा मैदान।

मर्ज़- पुं० (अ०) रोग, बीमारी।

मर्ज़ी- स्त्री० (अ०) इच्छा।

मर्जूह- वि० (अ०) पराजित।

मर्तबत- स्त्री० दे० 'मर्तबः'।

मर्तबः- पुं० (अ०) १ पद, पदवी। २ बेर, दफा।

मर्तबान- पुं० (अ०) मिट्टी का रोग़नी बरतन, जिसमें आचार वगैरह रखते हैं, अमृतबान।

मर्द- पुं० (फा०) १ पुरुप। २ वीर या साहसी। ३ पति।

मर्दक- पुं० (अ० 'मर्द' का अल्पा०) आदमी या मनुप्य के लिये घृणा अथवा तिरस्कार सूचक, तुच्छ व्यक्ति।

मर्दी- स्त्री० (फा०) १ मनुप्यता। २ वहादुरी। ३ कामशक्ति।

मर्दुम- पुं० (फा०) मनुप्य।

मर्दूद- वि० (अ०) १ निप्कासित। २ तिरस्कृत।

मर्रा- क्रि० वि० (अ० मर्रः) एक बार,

यौ०-रोज़मर्रा=हर रोज।

मर्हम- पुं० (फ़ा०) मलहम।

मर्हला- पुं० (अ० मर्हलः) १ गंतव्य स्थल। २ विकट कार्य।

मलंग- पुं० (फा०) निश्चिंत व्यक्ति।

मलऊन- वि० (अ०) (बहु० मलाईन) जिस पर लानत भेजी गई हो, निन्दनीय और शापित।

मलक- पुं० (अ०) (वि० मलकी) फरिश्ता, देवदूत।

मलका- पुं० (अ० मलकः) १ बुद्धि की विलक्षणता, प्रतिभा। २ दक्षता। स्त्री० दे० 'मलिका'।

मलक-उल्-मौत- पुं० (अ०) वह देवदूत जो जीवों के प्राण लेता है, इज्राईल।

मलग़ोबा- पुं० (तु० मल्गोबा) १ गन्दगी, मल। २ मवाद, पीब। ३ कूड़ा-करकट। ४ एक प्रकार की पकी हुई दाल जिसमें दही भी मिला होता है।

मलज़ूम- वि० (अ० मल्ज़ूम) जो लाजिम या जरूरी हो।

मलफ़ूज़- पुं० (अ० मल्फ़ूज़) (बहु० मलफ़ूज़ात) किसी महात्मा या धार्मिक आचार्य का वचन।

मलफ़ूफ़- वि० (अ० मल्फ़ूफ़) १ लपेटा हुआ। २ लिफाफे में बन्द किया हुआ।

मलबूस- पुं० (अ० मल्बूस) (बहु० मल्बूसात) पहनने के कपड़े, पोशाक। वि० जिसने लिबास या कपड़े पहने हों।

मलहूज़- वि० (अ० मल्हूज़) जिसका लिहाज या ध्यान रखा गया हो।

मलामत- स्त्री० (अ०) (भाव० मलामती) १ भर्त्सना, डाँट-फटकार। २ गन्दगी। ३ दूषित और हानिकर अंश।

मलायक- पुं० (अ०) 'मलक' का बहु०।

मलाल- पुं० (अ०) (भाव० मलालत) १ दुःख, रंज। २ उदासीनता, उदासी।

मलाहत- स्त्री० (अ०) १ साँवलापन। २ चेहरे पर का नमक, लावण्य, सौन्दर्य। ३ कोमलता, मुलामियत।

मलिक- पुं० (अ०) (बहु० मलूक) (स्त्री० मलिका) बादशाह, महाराज।

मलिका- स्त्री० (अ० मलिकः) बादशाह की पत्नी, महारानी।

मलीदा- पुं० (अ० मलीदः) १ चूरमा। २ एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।

मलीह- वि० (अ०) १ नमकीन। २ साँवला।

मज़ूल- वि० (अ०) दुःखी, चिन्तित।

मल्लाह- पुं० (अ०) नाव चलाने वाला, नाविक।

मल्लाही- स्त्री० (अ०) १ मल्लाह का कार्य या पद। २ मल्लाह की मज़दूरी।

मवक्किल- पुं० (अ० मुअक्किल) वह जो किसी को अपना वकील मुकर्रर करे।

मवहिद- पुं० (अ०) वह जो केवल एक ईश्वर को मानता हो, एकेश्वरवादी।

मवाखज़ा- पुं० (अ० मुआखजः) जवाब तलब करना, कैफियत माँगना।

मवाज़ी- वि० (अ०) १ कुल, सब। २ प्रायः बराबर, लगभग। सं० पुं० जोड़, योग।

मवाजे- पुं० (अ० मौज़ा का बहु०) गाँव-समूह।

मवाद- पुं० (अ०) मवाद्दः) १ 'माद्दा' (तत्व) का बहुवचन। २ रद्दी और निकृष्ट अंश। ३ पीब।

मवालात- स्त्री० (फा०) १ मित्रता, प्रेम। २ सहयोग। यौ०-तर्कमवालात=असहयोग।

मवेशी- पुं० (अ०) पशु, ढोर।

मशअल- स्त्री० दे० 'मशाल'।

मशक- स्त्री० दे० 'मश्क'।

मशकूक- वि० दे० 'मश्कूक'।

मशक्क़त- स्त्री० (अ०) १ मेहनत, परिश्रम। २ कष्ट।

मशग़ला- पुं० (अ० मश्ग़लः) (बहु० मशाग़िल) दिल-बहलाव।

मशगूल- वि० (अ० मश्गूल) किसी शग़ल या काम में लगा हुआ।

मशमूल- वि० (अ० मश्मूल) सम्मिलित।

मशरफ- पुं० (अ० मश्रफ़) ऊँचा या

प्रतिष्ठा का स्थान।
**मशरब**- पुं० दे० 'मिशरब'।
**मशरिक़**- पुं० (अ० मश्रिक़) पूर्व।
**मशरिक़ी**- वि० (अ० मश्रिक़ी) पूरब का।
**ममशरूअ**- वि० (अ० मश्रूअ) जो शरअ या धार्मिक व्यवस्था के अनुकूल हो।
**मशरूत**- वि० (अ० मश्रूत) वि० जिसके बारे में शर्तें की गई हों।
**मशरूब**- पुं० (अ० मश्रूब) पेय पदार्थ।
**मशरूह**- वि० (अ०) जिसकी शरह या टीका की गई हो।
**मशवरत**- स्त्री० (अ० मश्वुरत) 'मशवरा'।
**मशवरा**- पुं० (अ० मश्वुरः) १ परामर्श, सलाह। २ षड्यन्त्र।
**मशहूर**- वि० (अ० मश्हूर) (बहु० मशाहीर) प्रख्यात, प्रसिद्ध।
**मशायरा**- पुं० दे० 'मुशायरा'।
**मशाल**- स्त्री० (अ० मश्अल) (बहु० मशाएल) एक प्रकार की मोटी बत्ती जो लकड़ी पर कपड़ा लपेट कर बनाई और अधिक प्रकाश के लिये जलाई जाती है।
**मशालची**- पुं० (अ० मश्अलची) मशाल दिखाने या जलाने वाला।
**मशाहीर**- पुं० बहु० (अ०) मशहूर या प्रसिद्ध लोग।
**मशीयत**- स्त्री० (अ०) १ इच्छा, ख्वाहिश। २ मरजी, खुशी। यौ०- मशीयत एज़िदी= ईश्वर की इच्छा।
**मशीर**- पुं० दे० 'मुशीर'।
**मश्क**- स्त्री० (फा०) वह खाल जिसमें पानी भर कर रखते या ले जाते हैं, पखाल।
**मश्क़**- स्त्री० (अ०) कोई कार्य बार बार करना जिसमें वह पक्का हो जाय, अभ्यास।
**मश्कूक**- वि० (अ०) जिसमें कुछ शक हो, संदिग्ध।
**मश्कूर**- वि० (अ०) (भाव० मश्कूरी) जो शुक्रिया अदा करे, उपकृत, कृतज्ञ, शुक्रगुजार।
**मश्मूल**- वि० (अ०) जो शामिल किया गया हो, सम्मिलित।
**मश्शाक़**- वि० (अ०) १ जिसको खूब मश्क़ या अभ्यास हो, अभ्यस्त। २ दक्ष, कुशल।
**मश्शाक़ी**- स्त्री० (अ०) १ मश्शाक़ होने की क्रिया या भाव, अभ्यास। २ दक्षता, कुशलता।
**मश्शाता**- स्त्री० (अ० मश्शातः) (बहु० मश्शातगी) १ वह स्त्री जो दूसरी स्त्रियों की कंघी चोटी और श्रृंगार करती हो। २ कुटनी, दूती।
**मस**- पुं० (अ०) १ छूना, स्पर्श करना। २ छूने या स्पर्श करने की शक्ति। ३ सम्भोग, स्त्री-गमन, प्रसंग।
**मसऊद**- पुं० (अ० मस्ऊद) १ भाग्यवान्। २ प्रसन्न। ३ पवित्र।
**मसकन**- पुं० (अ० मस्कन) मकान, घर।
**मसजिद**- स्त्री० (अ० मस्जिद) (बहु० मसाजिद) वह स्थान जहाँ मुसलमान एकत्र होकर सिजदा करते और नमाज पढ़ते हैं।
**मसतूर,मसतूरात**- वि० स्त्री० दे० 'मस्तूर' और 'मस्तूरात'।
**मसदर**- पुं० (अ० मस्दर) (बहु० मसादिर) १ मूल स्थान, उद्‌गा। २ क्रिया का सामान्य रूप जिससे किसी काम का होना या करना सूचित होता है। जैसे-खाना, पीना, सोना, लेना।
**मसदाक़**- पुं० दे० 'मिसदाक'।
**मसदूद**- वि० (अ० मस्दूद) बन्द किया या रोका हुआ।
**मसनद**- स्त्री० (अ० मस्नद) १ बड़ा तकिया, गाव तकिया। २ अमीरों के बैठने की गद्दी।
**मसनवी**- स्त्री० (अ० मस्नवी) एक प्रकार की कविता जिसमें दो दो चरण एक साथ रहते हैं और दोनों में तुकान्त मिलाया जाता है।
**मसनूअ**- पुं० (अ० मस्नूअ) वह चीज जो कारीगरी से बनाई गई हो।
**मसनूई**- वि० (अ० मस्नूई) १ बनावटी, कृत्रिम। २ नकली, जाली।
**मसमुआ**- वि० (अ० मस्मुआ) सुना हुआ,

श्रुत।

मसरफ- पुं० (अ० मस्रिफ) (बहु० मसारिफ) १ खर्च या उसकी मद। २ उपयोगिता।

मसरूक़-मसरूक़ा- वि० (अ० मसरूकः) चोरी का, चुराया हुआ।

मसरूफ- वि० (अ० मस्रूफ) १ जो खर्च किया गया हो। २ काम में लगा हुआ, मशगूल।

मसरूर- वि० (अ० मस्रूर) प्रसन्न।

मसल- स्त्री० (अ० मस्ल) कहावत, लोकोक्ति।

मसलक- पुं० (अ० मस्लक) (बहु० मसालक) मार्ग, रास्ता।

मसलख- पुं० (अ० मस्लख) वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या की जाती है, बूचड़खाना।

मसलन्- क्रि० वि० (अ० मस्लन्) मिसाल के तौर पर, उदाहरण स्वरुप, उदाहरणार्थ।

मसलहत- स्त्री० (अ० मस्लहत) १ ऐसी गुप्त युक्ति या भलाई जो सहसा जानी न जा सके, अप्रकट शुभ हेतु। २ रहस्य।

मसलहतन- क्रि० वि० (अ० मस्लहतन) मसलहत के खयाल से, जान-बूझ कर और किसी उद्देश्य से।

मसला- पुं० (अ० मसलः) (बहु० मसायल) १ कहावत, लोकोक्ति। २ विचारणीय विषय।

मसलूक- वि० (अ० मस्लूक) जिसके साथ सलूक या उपकार किया जाय।

मसलूब- वि० (फा० मस्लूब) १ पकड़ा हुआ। २ नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ। ३ वंचित किया हुआ। वि० (अ०) सूली पर चढ़ाया हुआ। यौ०-मसलूब-उल्-हवास= वृद्धावस्था के कारण जिसकी इंद्रियाँ शिथिल हो गई हों।

मसविदा- पुं० (अ० मसव्वदः) १ काट-छाँट करने और साफ करने के उद्देश्य से पहली बार लिखा हुआ लेख, प्रारूप, खर्रा, मसविदा। २ उपाय, युक्ति, तरकीब। मुहा०-मसौदा गाँठना या बाँधना=कोई काम करने की युक्ति या उपाय सोचना।

मसह- पुं० (अ० मस्ह) १ हाथ से मलना, हाथ फेरना। २ सम्भोग, प्रसंग। ३ नमाज पढ़ने से पहले मस्तक, कान और गरदन धोना (वुज़ू का एक अंग)।

मसहफ- पुं० दे० 'मुसहफ'।

मसाइब- पुं० (अ०) 'मुसीबत' का बहु०, विपत्तियाँ, कठिनाइयाँ।

मसाइल- पुं० (अ० मस्लः का बहु०) मसले, समस्याएँ।

मसाकिन- पुं० (अ०) 'मसकन' (रहने का स्थान या घर) का बहु०।

मसाकीन- पुं० (अ०) 'मिसकीन' (दरिद्र) का बहु०।

मसाजिद- स्त्री० (अ०) 'मसजिद' का बहु०, मसजिदें।

मसादिर- पुं० (अ०) 'मसदर' का बहु०।

मसाना- पुं० (अ० मसानः) पेट के अन्दर वह थैली जिसमें पेशाब जमा रहता है, मूत्राशय।

मसाफ- पुं० (अ०) १ युद्ध। २ युद्धक्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

मसाफत- स्त्री० (अ०) १ अंतर, दूरी, फासला। २ श्रम, थकावट।

मसाम- पुं० ( अ०) (बहु० मसामात) शरीर पर के छोटे छोटे छिद्र, रोमकूप।

मसामात- पुं० (अ० 'मसाम' का बहु०) रोमकूप।

मसायब- पुं० (अ०) 'मुसीबत' का बहु०।

मसायल- पुं० (अ०) 'मसला' का बहु० प्रश्न, समस्याएँ।

मसारिफ- पुं० (अ० 'मसरफ' का बहु०) अनेक प्रकार के व्यय या उनकी मदें।

मसालेह- पुं० (अ० 'मसलहत' का बहु०) शुभ बातें, भलाइयाँ। पुं० (अ०) १ वे वस्तुएँ जिनसे कोई चीज प्रस्तुत होती है, सामग्री, उपकरण। २ ओषधियों अथवा रासायनिक द्रव्यों का योग या समूह। ३

तेल। ४ आतिशबाजी।
मसालहत- स्त्री० (अ०) १ आपस में संधि करना। २ मेल जोल।
मसाला- पुं० दे० 'मसालह'।
मसालेहत- स्त्री० दे० 'मसालहत'।
मसास़- पुं० (अ०) १ मलना। २ संभोग या प्रसंग करना।
मसाहत- स्त्री० (अ०) १ नाप, माप। २ जमीनों की नाप-जोख।
मसीह- पुं० (अ०) १ मित्र, दोस्त। २ वह जिसने दूर दूर के देशों में भ्रमण किया हो। ३ ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक महात्मा ईसा की उपाधि। ४ प्रेमिका जो उसी प्रकार अपने प्रेमियों को जीवनदान देती है जिस प्रकार ईसा मसीह रोगियों और मृतकों को देते थे।
मसीहा- पुं० दे० 'मसीह'।
मसीहाई- स्त्री० (अ० मसीह) १ मसीह का पद या कार्य। २ मसीह की तरह की करामात। ३ प्रेमिका का वह गुण जिससे वह प्रेमियों को जीवनदान देती है।
मसौदा- पुं० दे० 'मसवदा'।
मस्कन- पुं० (अ०) (बहु० मसाकन) रहने की जगह, घर
मस्कनत- स्त्री० (अ०) १ नम्रता। २ ग़रीबी। ३ तुच्छता।
मस्खरा- पुं० (अ० मस्खरः) बहुत हँसी-मज़ाक करने वाला, हँसोड़, ठट्ठेबाज, दिल्लगीबाज।
मस्खरापन- पुं० दे० 'मस्खरी'।
मस्खरगी- स्त्री० (अ०+फा०) हँसी-ठट्ठा, मज़ाक।
मस्जिद- स्त्री० (अ०) मसजिद, मसीत।
मस्त- वि० (फा० मि० सं० मत्त) १ जो नशे आदि के कारण मत्त हो, मतवाला, मदोन्मत्त, मत्त। २ सदा प्रसन्न और निश्चित रहने वाला। ३ यौवनमद से भरा हुआ। ४ जिसमें मद हो, मदपूर्ण। ५ परम प्रसन्न, मग्न, आनंदित।
मस्तगी- स्त्री० (अ०) एक वृक्ष का गोंद जो औषध के काम आता है।
मस्ताना- पुं० (अ० मस्तानः) वह जो मस्त हो गया हो। क्रि० वि० मस्तों की तरह। क्रि० अ० मस्त होना, मत्त होना।
मस्ती- स्त्री० (फा०) १ मस्त होने की क्रिया या भाव, मत्तता, मतवालापन। २ वह स्थान जो कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि के पास उनके मस्त होने के समय होता है, मद। ३ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदि में होता है।
मस्तूर- वि० (अ० सतर=पंक्ति) १ सतरों या पंक्तियों के रूप में लिखा हुआ, लिखित। २ उल्लिखित, उक्त। वि० (अ० सत्र=परदा) परदे में छिपा हुआ।
मस्तूरात- स्त्री० बहु० (अ० मस्तुरः का बहु०) १ स्त्रियाँ, औरतें। २ भले घर की स्त्रियाँ।
मस्तूरी- स्त्री० (अ०) दुराव, छिपाव।
मस्तूल- पुं० (पुर्तगाली मस्टो) नावों के बीच में खड़ा किया हुआ वह शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।
मस्मूअ,मस्मूआ- वि० (अ० मस्मूअऽ) सुना हुआ, श्रुत।
मह- पुं० (फा० माह का संक्षिप्त रूप) चाँद, चन्द्रमा।
महकमा- पुं० (अ० मह्कमः )किसी विशिष्ट कार्य के लिए अलग किया हुआ विभाग, सीग़ा।
महकूम- वि० (अ० मह्कूम) १ जिसके ऊपर हुकुम चलाया जाय। २ अधीनस्थ, आश्रित।
महकूमा- वि० (अ० मह्कूमः ) जिनके ऊपर हुकुम चलाया या शासन किया जाय, शासित।
महज- वि० (अ० मह्ज़) जिसमें और किसी वस्तु का मेल न हो, शुद्ध। क्रि० वि० सिर्फ, केवल। यौ०-महज़क़ैद=क़ैद जिसमें मेहनत न करनी पड़े, सादी सजा।
महजबीं- वि० दे० 'माहजबीं'।
महज़रनामा- पुं० (अ० मह्ज़र+फा०

नाम: ) घोषणापत्र, सूचनापत्र।
महजूँ- वि० (अ०) दुखी, व्यथित।
महज़ूज़- वि० (अ०) प्रसन्न, ख़ुश।
महज़ूफ़- वि० (अ०) १ लिखने आदि के समय छोड़ा हुआ (अक्षर आदि) २ स्पष्ट उल्लेख न होने पर भी जिसका आशय निकलता हो।
महजूब- वि० (अ० मह्जूब) (सं० महजूबी) १ छिपा हुआ, गुप्त। २ (उत्तराधिकार आदि से) वंचित किया हुआ। ३ लज्जाशील।
महजूर- वि० (अ० मह्जूर) (सं० महजूरी) १ अलग किया हुआ, विभक्त। २ छोड़ा हुआ, परित्यक्त। ३ दुःखी और चिन्तित।
महताब- पुं० (फा० महताब) १ चन्द्रमा, चाँद। २ चन्द्रमा की चाँदनी, चन्द्रिका।
महताबी- स्त्री० (फा० माहताबी) १ जलाशय के पास की वह छोटी इमारत जिसमें बैठ कर चाँदनी रात को आनंद लेते हैं। २ एक प्रकार की आतिशबाजी। ३ चकोतरा नीबू।
महदी- पुं० (अ० मह्दी) १ ठीक रास्ते पर चलने वाला। २ बारहवें इमाम जिन्हें शिया मुसलमान अब तक जीवित मानते हैं।
महदूद- वि० (अ० मह्दूद) १ जिसकी हद बाँध दी गई हो, सीमित, परिमित। २ जिसकी ठीक ठीक व्याख्या कर दी गई हो।
महदूम- वि० (अ० मह्दूम) पूर्णरूप से नष्ट किया हुआ, विनष्ट।
महफिल- स्त्री० (अ० महफिल) १ मजलिस, सभा, समाज, जलसा। २ नाच-गाना होने का स्थान।
महफ़ूज़- वि० (अ० मह्फ़ूज़) जिसकी अच्छी तरह हिफाजत की गई हो, भलीभाँति रक्षित,सुरक्षित। मुहा०-महफूज़ रखना=सब प्रकार की आपत्तियों आदि से रक्षा करना।
महबस- पुं० (अ० मह्बस) कारागार, जेलखाना।
महबूब- पुं० (अ० मह्बूब) (स्त्री० वि० महबूबाना) वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, प्रिय, प्रेमपात्र।
महबूबा- स्त्री० (अ० मह्बूबः) प्रेमिका, प्रेयसी।
महबूबियत- स्त्री० (अ० मह्बूब+फा० प्रत्य०) महबूब होने का भाव, प्रेम, प्यार।
महबूबी- स्त्री० (अ० मह्बूबी) प्रेम।
महबूस- वि० (अ० मह्बूस) जो महबस में बन्द किया गया हो, क़ैदी।
महमिल- पुं० (अ० मह्मिल) (बहु० महामिल) १ आधार। २ ऊँट पर कसने का कजावा।
महमूज़- वि० (अ० मह्मज) दूषित, विकृत।
महमूद- वि० (अ० मह्मूद) प्रशंसित।
महमूदी- स्त्री० (फा० मह्दूदी) १ एक प्रकार की मलमल। २ एक प्रकार का सिक्का, महमूद-सम्बन्धी।
महमूम- वि० (अ० मह्मूम) १ ज्वर से पीड़ित। २ संतप्त।
महमेज़- स्त्री० दे० 'मिहमीज़'।
महरम- पुं० (अ० महम) (बहु० महरमात) (भाव० महरमियत) १ वह जिसके साथ हार्दिक मित्रता हो, अंतरंग मित्र। २ वह जो जनानखाने में जा सकता हो या जिसके सामने स्त्रियाँ हो सकती हों। (मुसलमानों में कुछ विशिष्ट संबंधियों को ही यह अधिकार प्राप्त होता है।) ३ वह जिससे बहुत घनिष्टता हो, सुपरिचित। स्त्री० स्त्रियों की कुरती या अँगिया आदि का वह अंश जिसमें स्तन रहते हैं, कटोरी।
महराब- स्त्री० (अ० मिहराब) द्वार आदि के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार भाग।
महराबदार- वि० (अ०+फा०) जिसमें मेहराब हो, कमानीदार।
महरू- वि० (फा० मह्रू) जिसका मुख चन्द्रमा के समान हो, चन्द्रमुखी।
महरूम- वि० (अ० मह्रूम) १ जिसे कोई वस्तु प्राप्त न हुई हो, वंचित। २ अभागा, बदनसीब।
महरूमियत,महरूमी- स्त्री० (अ० मह्रूमियत,

महरूमी) १ महरूम होने का भाव, वंचित होना। २ अभाग्य।

महरूर- वि० (अ० मह्रूर) गर्म, तप्त।

महरूस- वि० (अ० मह्रूस) १ जिसकी देखरेख होती हो। २ हिरासत में रखा हुआ।

महरूसा- पुं० (अ०) किलेबन्दी वाली जगह।

महल- पुं० (अ०) १ बहुत बड़ा और बढ़िया मकान, प्रासाद। २ पत्नी, बीवी।

महलक़ा- वि० दे० 'माहलक़ा'।

महलसरा- स्त्री० (अ०) अन्तःपुर, रनिवास।

महली- पुं० (अ० महल) अन्तःपुर का चौकीदार, हिजड़ा।

महल्ला- पुं० (अ० महल्लः) शहर का कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुत से मकान हों, टोला,
पुरा।

महल्लेदार- पुं० (अ० महल्लः+फा०) किसी महल्ले का प्रधान व्यक्ति, महल्ला-मुख्तार, मीर-महल्ला।

महव- वि० (अ० मह्व) निमग्न, तल्लीन।

महवश- वि० दे० 'माहवश'।

महवीयत- स्त्री० (अ० मह्वीयत) १ महो या अनुरक्त होने का भाव। २ सौन्दर्य, आकर्षण।

महशर- पुं० (अ० मह्शर) मुसलमानी धर्म के अनुसार वह अन्तिम दिन जिसमें ईश्वर सब प्राणियों का न्याय करेगा, महाप्रलय। मुहा०-महशर बरपा करना=बहुत अधिक आन्दोलन करना, आकाश सिर पर उठा लेना।

महसूब- वि० (अ० मह्सूब) १ जिसका हिसाब लगाया गया हो। २ जो हिसाब में लिखा गया हो।

महसूर- वि० (अ० मह्सूर) चारों ओर से घिरा हुआ, जिसपर घेरा पड़ा हो। (नगर या किला आदि।)

महसूरीन- पुं० बहु० (अ०) चारों ओर से घिरे हुए लोग।

महसूल- पुं० (अ० मह्सूल) १ वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी विशिष्ट कार्य के लिये ले, कर। २ भाड़ा, किराया। ३ मालगुज़ारी, लगान।

महसूलदार- पुं० (अ० मह्सूल+फा०) वह जो किसी प्रकार का महसूल अदा करता हो, कर देने वाला। वि० जिस पर कोई मंहसूल या कर लगता हो।

महसूली- वि० (अ० मह्सूली) १ जिस पर किसी प्रकार का महसूल या कर लगता हो। स्त्री० वह भूमि जिसका महसूल मिलता हो।

महसूस- वि० (अ० मह्सूस) १ जिसका ज्ञान या अनुभव हुआ हो, जो मालूम किया हो। २ जिसका ज्ञान या अनुभव हो सके, जो मालूम किया जा सके।

महसूसात- स्त्री० बहु० (अ० मह्सूसात) मह्सूस का बहु० वे पदार्थ जिनका ज्ञान या अनुभव होता हो।

महाज़- पुं० दे० 'मुहाज़'।

महाबत- पुं० (अ०) भय, डर।

महाबा- वि० (अ० महाबः) भय, डर। यौ-बेमहाबा= निर्भयतापूर्वक।

महार- स्त्री० (फा०) ऊंट की नकेल। यौ०-बेमहार= अनियंत्रित।

महारत- स्त्री० (अ०) १ दक्षता, निपुणता। २ अभ्यास।

महाल- पुं० (अ० 'महल' का बहु०) १ महल्ला, टोला, पाड़ा। २ ज़मीन का वह विभाग जिसमें कई गाँव हों, हिस्सा।

महाला- पुं० (अ० महालः) इलाज, उपाय।

महीब- वि० दे० 'मुहीब'।

महो- वि० (अ० मह्व) १ मिटाया या नष्ट किया हुआ। २ पूर्ण रूप से रत। ३ इतना अनुरक्त या ध्यान में मग्न कि अपने आप में न हो।

मह- पुं० (अ०) वह धन जो मुसलमानों में स्त्री को विवाह के समय ससुराल से मिलता है।

महूव- वि० दे० 'महो'।
महूवर- पुं० (अ०) धुरी, अक्ष।
माँदगी- स्त्री० दे० 'मान्दगी'।
माँदा- वि० दे० 'मान्दा'।
मा- पुं० (अ०) १ जल, पानी। २ रस, तरल सार, उप० एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे लगकर 'कौन' और 'उस' आदि का सूचक होता है, जैसे-माबाद=इसके बाद, मासिवा=इसके सिवा।
मा-उल्-लहम- पुं० (अ०) एक प्रकार का रस जो मांस और औषधों के योग से बनाया जाता है और बहुत पौष्टिक माना जाता है।
माक़बल- क्रि० वि० (अ० माक़ब्ल) इसके पहले।
माकूस- वि० (अ० मअकूस) औंधाया हुआ, उलटा, विपरीत। -
माकूल- वि० (अ० मअकूल) (बहु० माकूलता) १ उचित, वाजिब। २ लायक़। ३ अच्छा, बढ़िया। ४ जिसने वाद विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो।
माकूलात- स्त्री० (अ० मअकूलात) खाने-पीने की चीजें।
माकूलियत- स्त्री० (अ०) १ माकूल का भाव। २ सम्भावना।
माखज- पुं० (फा०) मूल, उद्गम।
माखूज़- वि० (अ०) जिस पर कोई अभियोग लगाया गया हो, अभियुक्त।
माखूज़ी- पुं० (अ०) वह जो किसी अभियोग में पकड़ा गया हो, गिरफ्तार किया हुआ।
माखूलिया- पुं० दे० 'मालीखूलिया'।
माज़रत- स्त्री० (अ०) उज्र या हीला करना, बहाना।
माजरा- पुं० (अ०) १ घटना, २ घटना का विवरण, हाल, यौ०-माजराए दिल=दिल का हाल, दिल की व्यथा।
माजिद- वि० (अ०) (स्त्री० माजिदा) पूज्य, मान्य। जैसे-वालिद-माजिद।
माज़िया- क्रि० वि० (अ० माजियः) इसके पहले, पूर्व में।
माज़ी- वि० (अ०) भूतपूर्व, पहले का, गत काल का। सं० पुं० भूतकाल, बीता हुआ समय।
माजू- पुं० (फा०) एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल, माजूफल।
माजून- स्त्री० (अ० मअजून) औषध के रूप में काम आने वाला कोई मीठा अवलेह।
माजूर- वि० (अ० मअज़ूर) १ जिसमें उज्र हो। २ जो काम के योग्य न रह गया हो। ३ असमर्थ।
माज़ूरी- स्त्री० (अ० मअज़ूर) असमर्थता।
माज़ूल- वि० (अ० मअज़ूल) १ जो बेकार कर दिया गया हो। २ अपने पद आदि से हटाया हुआ।
माज़ूली- स्त्री० (अ०) माजूल होने की क्रिया या भाव, पदच्युति।
मात- स्त्री० (अ०) पराजय, हार। क्रि० प्र० करना, खाना, देना।
मातदिल- वि० (अ० मुअतदिल) १ जो न बहुत उग्र हो और न बहुत कोमल। २ जो न बहुत ठंढा हो और न गरम।
मातबर- वि० (अ० मुअतबर) १ जिसका एतबार किया जाय, विश्वसनीय। २ सच्चा, ठीक।
मातबरी- स्त्री० (अ० मुअतबर) मातबर होने का भाव, विश्वसीनयता।
मातम- पुं० (अ०) वह दुःख जो किसी के मरने पर किया जाता है, शोक, सोग।
मातमकदा- पुं० (अ०+फा० कदः) वह स्थान जहाँ लोग बैठकर मातम करें।
मातमखाना- पुं० (अ०+फा० खानः) वह स्थान जहाँ बैठ कर लोग शोक करते हैं।
मातमज़दा- वि० (अ०+फा० जदः) जिसका कोई निकटस्थ सम्बन्धी मर गया हो, जो शोक कर रहा हो, शोकग्रस्त।
मातमदारी- स्त्री० (अ०+फा०) शोक मनाना।
मातमपुरसी- स्त्री० (अ०+फा० पुर्सी) किसी के मरने पर उसके सम्बन्धियों के

प्रति सहानुभूति या समवेदना प्रकट करना।

मातमी- वि० (अ०) मातम या शोक प्रकट करने वाला, शोक सूचक। जैसे-मातमी सूरत।

मातहत- वि० (अ०) १ अधीन या आश्रय में रहने वाला, अधीनस्थ। २ निम्न कोटि का, छोटी श्रेणी का।

मादन- पुं० दे० 'मअदन'। मादन के विकारी शब्दों के लिए दे० 'मअदन' के साथ।

मादर- स्त्री० (फा० मि० सं० मातृ) माता, जननी, माँ।

मादरखवाही- स्त्री० (फा०) माँ की गाली।

मादरज़ाद- वि० (फा०) ज़ैसा माता के गर्भ में उत्पन्न हुआ था, वैसा ही, वैसा ही जैसा जन्म समय में था। जैसे- मादरज़ाद नंगा।

मादर-ब-खता- वि० (फा०) १ अपनी माता के साथ भी अनुचित कर्म या बुरा काम करने वाला। २ बहुत बडा दुष्ट और नीच।

मादरी- वि० (फा०) १ माता से सम्बन्ध रखने वाला। २ माता का। जैसे-मादरी जबान।

मादरीज़बान- स्त्री० (फा०) वह भाषा जो बालक अपनी माता से सीखता है, मातृभाषा।

मादा- स्त्री० (फा०) स्त्री जाति का प्राणी, 'नर' का उलटा (जीव-जन्तुओं के लिये)।

मादियान- स्त्री० (फा०) घोड़ी।

मादीन- स्त्री० दे० 'मादा'।

मादूद- वि० दे० 'मअदूद'।

मादूम- वि० (अ० मअदूम) जिसका अस्तित्व न रह गया हो, नष्ट।

माद्दा- पुं० (अ० माद्दः) १ मूल तत्व। २ योग्यता, क़ाबिलीयत। ३ मवाद, पीब।

माद्दी- वि० (अ०) १ माद्दा या तत्व से सम्बन्ध रखने वाला, तत्वसम्बन्धी। २ स्वाभाविक, प्राकृतिक। ३ भौतिक।

मानअ- पुं० (अ०) १ मनाही, रुकावट। २ आपत्ति, उज्र। ३ वह जो मना करे या रुकावट डाले। पुं० दे० 'माना'।

मानन्द- वि० (फा०) समान, तुल्य।

मानवी- वि० (अ० मअनवी) १ मानी या अर्थ से सम्बन्ध रखने वाला। २ भीतरी, आन्तरिक। ३ अभिप्रेत (अर्थ आदि)।

माना- पुं० (इ०) एक प्रकार का मीठा रेचक, निर्यास या गोंद।

मानिन्द- वि० (फा० मानन्द) समान, तुल्य, ऐसा।

मानी- स्त्री० (अ०) १ अर्थ, मतलब। २ अभिप्राय, उद्देश्य। यौ०-बेमानी=जिसका कोई अर्थ न हो, व्यर्थ का, बेमतलब।

मानूस- वि० (अ०) जिसके साथ उन्स या प्रेम हो गया हो, काफी मेल-जोल में आया हुआ, हिला-मिला।

मान्दगी- स्त्री० (फा०) १ थकावट, शिथिलता। २ रुग्णता, बीमारी।

मान्दा- वि० (फा० मान्दः) १ बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट। २ पीछे छूटा हुआ। ३ थका हुआ, शिथिल। ४ बीमार, रोगी। यौ०-दरमान्दा= १ थका हुआ, शिथिल। २ जिसके पास कोई साधन न हो।

माफ- वि० (अ० मुआफ) जिसे क्षमा कर दिया गया हो।

माफिक़- वि० दे० 'मुआफिक'।

माफिक़त- स्त्री० दे० 'मुआफिक़त'।

माफी- स्त्री० (अ० मुआफी) १ क्षमा। २ वह भूमि जिसका कर सरकार से माफ हो।

माफी-उल्-ज़मीर- पुं० (अ०) विचार, इरादा।

माफीदार- पुं० (अ०+फा०) वह जिसे ऐसी ज़मीन मिली हो जिसका लगान न देना पड़े।

माबक़ा- वि० (अ०) बाक़ी बचा हुआ, अवशिष्ट।

माबद- पुं० दे० 'मअबद'।

माबाद- क्रि० वि० (अ०) किसी के बाद में।

माबूद- पुं० दे० 'मअबूद'।

माबैन- क्रि० वि० (अ०) इस बीच में, इतने समय के बीच में।

मामन- पुं० (अ०) सुरक्षित स्थान।

मामला- पुं० (अ० मुआमलः) १ व्यापार,

काम। २ पारस्परिक व्यवहार। ३ व्यवहार या व्यापार-सम्बन्धी विवादास्पद विषय। ४ झगड़ा, विवाद। ५ मुक़दमा, अभियोग। ६ संभोग, विषय।

मामा- स्त्री० (फा०) दासी, नौकरानी, मज़दूरनी।

मामागरी- स्त्री० (फा०) दासी का काम या पद।

मामूर- वि० (अ० मअमूर) १ भरा हुआ, पूर्ण। २ नियुक्त किया हुआ, मुकर्रर किया हुआ।

मामूल- पुं० (अ० मअमूल) रीती, रवाज, रस्म।

मामूली- वि० (अ० मअमूल) साधरण, सामान्य।

मायल- वि० (अ०) १ झुका हुआ, प्रवृत्त, रुजू। २ मिश्रित।

मायह- स्त्री० (फा० मि० सं० माया) सम्पत्ति, धन, पूँजी।

माया- पुं० दे० 'मायह'।

मायूब- वि० (अ० माअयूब) १ जिसमें ऐब या दोष हो। २ बुरा, खराब। ३ निन्दनीय।

मायूस- वि० (अ०) जिसकी आशा टूट गई हो, निराश, ना-उम्मेद।

मायूसकुन- वि० (अ०+फा०) निराशाजनक।

मायूसी- स्त्री० (अ०) निराश होने की अवस्था, निराशा।

मार- पुं० (फा०) साँप, सर्प।

मारका- पुं० (अ० मअरकः) युद्धक्षेत्र, रणभूमि। मुहा०-मारके का= महत्वपूर्ण।

मारफत- अव्य० (अ० मअरिफत) द्वारा,जरिये से। स्त्री० १ पहचान, शनाख्त। २ ईश्वरीय या आध्यात्मिक ज्ञान। ३ द्वार, साधन।

मारूत- पुं० (फा०) एक फरिश्ते का नाम।

मारूफ- वि० (अ० मअरूफ) प्रसिद्ध, सं० पुं० गणित में ज्ञात राशि।

माल- पुं० (अ०) (बहु० अमवाल) १ सम्पत्ति, धन, दौलत। २ कोई बढ़िया चीज़। ३ सुन्दरी। पुं० दे० 'मआल'।

माल-ए-ग़नीमत- पुं० (अ०) लूट का माल, लूट कर एकत्र की हुई संपत्ति।

माल-ए-मन्कूलह- पुं० (अ०) वह सम्पत्ति जो एक स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर रखी जा सके, चल संपत्ति।

माल-ए-मुफ्त- पुं० (अ०+फा०) मुफ्त का माल, बिना परिश्रम के प्राप्त की हुई सम्पत्ति। मुहा०- __ मालेमुफ्त, दिल बेरहम=बिना परिश्रम अर्जित की हुई संपत्ति बहुत लापरवाही से खर्च की जाती है।

माल-ए-लावारिस- पुं० (अ०) वह माल जिसका कोई वारिस न हो, वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

माल-ए-वक्फ- पुं० (अ०) किसी धार्मिक कार्य के लिये उत्सर्ग किया हुआ धन, धर्म के लिये छोड़ा या दान किया हुआ माल।

मालकियत- स्त्री० (अ०) मालिक होने का भाव, स्वामित्व।

मालखाना- पुं० (अ०+फा० खानः) वह स्थान जहाँ माल असबाब रहता है, भंडार, कोश।

मालगुज़ार- पुं० (अ०+फा०) १ एक प्रकार के जमींदार। २ वह जो सरकार को मालगुजारी या लगान देता है।

मालगुज़ारी- स्त्री० (अ०+फा०) सरकार को दिया जाने वाला भूमि-कर।

मालग़ैरमन्कूला- पुं० (अ०) वह सम्पत्ति जो अपने स्थान से हटाई न जा सकती हो, अचल संम्पत्ति। जैसे-मकान, बाग आदि।

मालज़ब्ती- पुं० (अ०) कुर्क या जब्त किया हुआ माल, वह संपत्ति जिस पर देना आदि चुकाने के लिए अधिकार कर लिया गया हो।

मालज़ादा- पुं० (अ०+फा०) (स्त्री० मालजादी) वेश्या पुत्र, रंडी के गर्भ से उत्पन्न लड़का।

मालज़ामिन- पुं० (अ०) वह जो किसी के ऋण चुकाने का जिम्मा या भार ले।

मालज़ामिनी- स्त्री० (अ०) किसी का ऋण

आदि चुकाने का जिम्मा या भार अपने ऊपर लेना।

मालदार- वि० (अ०+फा०) जिस के पास बहुत माल या संपत्ति हो, संपन्न, धनवान्, अमीर।

मालदारी- वि० (अ०+फा०) संपन्नता, दौलतमन्दी, अमीरी।

मालमक़रूका- पुं० (अ०) कुर्क किया हुआ धन, वह धन जिस पर ऋण चुकाने के लिये अधिकार कर लिया गया हो।

मालमतरूका- पुं० (अ०+फा०) तरके या उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति, वरासत में मिला हुआ माल।

मालमता- पुं० (अ० माल व मुताअ) धन-दौलत, सम्पत्ति।

मालमस्त- वि० (अ०+फा०) जो अपनी सम्पन्नता के कारण किसी की परवा न करे, धनवान् होने के कारण सुखी, लापरवाह या मस्त रहने वाला।

मालमस्ती- स्त्री० (अ०+फा०) धन का घमंड, दौलतमन्द होने की शेखी या लापरवाही।

मालवर- वि० दे० 'मालदार'।

मालशराकत- पुं० (अ०) वह सम्पत्ति जिस पर सब लोगों का सम्मिलित अधिकार हो, अविभक्त सम्पत्ति, बिना बाँटी हुई जायदाद।

मालसायर- पुं० (अ०) भूमि कर के अतिरिक्त अन्य साधनों से होने वाला राजकीय आय।

मालामाल- वि० (अ० माल) बहुत सम्पन्न, अमीर।

मालिक- पुं० (अ०) १ ईश्वर। २ स्वामी। ३ पति, शौहर।

मालिकअराज़ी- पुं० (अ०) खेत या अराजी का मालिक, जमींदार।

मालिका- स्त्री० (अ० मालिकः) स्वामिनी।

मालिकाना- वि० (अ० मालिकानः) मालिक का, स्वामी का। सं० पुं० वह हक़ या धन जो किसी चीज के मालिक को उसके स्वामित्व के बदले में मिलता हो।

मालिकी- पुं० (अ०) सुन्नी मुसलमानों का एक संप्रदाय। स्त्री० (अ० मालिक) मिलकियत, स्वामित्व।

मालियत- स्त्री० (अ०) १ सम्पत्ति, धन, पूँजी। २ दाम, मूल्य।

मालियात- स्त्री० (अ०) मालियत का बहु० सम्पत्तियाँ।

मालिश- स्त्री० (फा०) १ मलने की क्रिया, मलना-दलना। २ रगड़ कर चमकीला बनाना। मुहा०-जी मालिश करना= जी मिचलाना, क़ै या उलटी मालूम होना।

माली- वि० (अ०) १ माल सम्बन्धी, धन का। जैसे-माली हालत। २ राज कर-सम्बन्धी। ३ अर्थशास्त्र सम्बन्धी।

मालीखूलिया- पुं० (अ०) एक प्रकार का उनमाद जिसमें रोगी बहुत दुःखी और चुपचाप रहता है।

मालीदा- वि० (फा० मालीदः) मला हुआ, मर्दित। सं० पुं० मला या कुचला हुआ पदार्थ।

मालूफ़- वि० (अ०) १ सुपरिचित। २ परमंप्रिय।

मालूम- वि० (अ० मअलूम) जाना हुआ, ज्ञात।

माश- पुं० (अ० मि० सं० माष) १ घर गृहस्थी का सामान। २ मूँग। ३ उड़द।

माशा- पुं० (फा० माशः) १ लोहारो की सँड़सी। २ आठ रत्ती की तौल।

माशा-अल्लाह- (अ०) ईश्वर उसे बुरी नजर से बचावे, ईश्वर कुदृष्टि से उसकी रक्षा करे। (किसी सुन्दर वस्तु या अच्छे कार्य को देख कर उसके कर्त्ता आदि के सम्बन्ध में बोलते हैं)।

माशूक़- वि० (अ० मअशूक़) जिसके साथ इश्क़ या प्रेम किया जाय, प्रेमपात्र, प्रेमिका।

माशूक़ा- स्त्री० (अ० मअशूक़ः) प्रेयसी, प्रेमिका।

माशूक़ाना- वि० (अ० मअशूक़ानः) माशूक़ों का सा, प्रेमपात्रो की तरह का।

माशूक़ी- स्त्री० (अ० मअशूक़) १ माशूक़ होने की क्रिया या भाव। २ सुन्दरता, सौन्दर्य।
माश्की- पुं० (फा० मश्क) मश्क में पानी भर कर ले जाने वाला, भिश्ती, सक्क़ा।
मासबक़- वि० (अ०) जिसका पहले उल्लेख हो चुका हो, पहले कहा हुआ, उक्त।
मासलफ़- वि० (अ०) जो पूर्व काल में हो चुका हो, बीता हुआ, विगत।
मासियत- स्त्री० (अ० मअसियत) (बहु० मआसी) १ आज्ञा न मानना। २ अपराध, गुनाह।
मासिवा- अव्य० (अ०) इसके सिवा, इसके अतिरिक्त।
मासूम- वि० (अ० मअसूम) १ बेगुनाह, निरपराध। २ जो कुछ न जानता हो, निरीह।
मासूमियत- स्त्री० (अ० मअसूमियत) १ मासूम होने का भाव। २ निरीहता। ३ शैशव काल।
माह- पुं० (फा०) १ चन्द्रमा, चाँद। २ मास, महीना।
माह-ए-क़मरी- पुं० (फा०) चान्द्रमास।
माह-ए-शम्सी- पुं० (फा०) सौर मास।
माहजबीं- वि० (फा०) चन्द्रमा के समान मुख वाला, बहुत सुंदर। (प्रिय या नायिका आदि के लिये)।
माहज़र- वि० (अ०) अपस्थित, मौजूद, वर्तमान।
माहताब- पुं० (फा०, १ चाँद। २ चन्द्रमा की चाँदनी।
माहताबी- वि० (फा०) चन्द्रमा की चाँदनी में रख कर तैयार किया हुआ (औषध आदि)। जैसे- माहताबी गुलकन्द।
माह-ब-माह- क्रि० वि० (फा०) महीने-महीने। हर महीने।
माहर- वि० दे० 'माहिर'।
माहरु- वि० दे० 'माहजबीं'।
माहलक़ा- वि० दे० 'माहजबीं'।
माहवश- वि० (अ०) चन्द्रमा के समान सुंदर मुख वाला, बहुत सुन्दर।
माहवार- क्रि० वि० (फा०) महीने महीने, हर महीने, प्रति मास।
माहवारी- वि० (फा०) हर मास का। स्त्री० स्त्रियों का मासिक धर्म।
माहसल- पुं० (अ०) १ वह जो उत्पन्न और प्राप्त हो, उपज। २ प्राप्ति, लाभ। ३ परिणाम।
माहियत- स्त्री० (अ०) किसी वस्तु का वास्तविक तत्त्व, गुण या स्वरूप, असलियत।
माहियाना- पुं० (फा० माहियानः) मासिक वेतन।
माहिर- वि० (अ०) अच्छा जानकार।
माही- स्त्री० (फा०) मछली।
माहीख़्वार- पुं० (फा०) बगला।
माहीगीर- पुं० (फा०) मछली पकड़ने वाला, मछुआ।
माहीपुश्त- वि० (फा०) जिसकी पीठ या तल ऊपर की ओर उभरा हुआ हो, उभारदार, उभरवाँ।
माहीफरोश- पुं० (फा०) मछली पकड़ने वाला, मछुआ।
माहीमरातिब- पुं० (फा०) मुसलमान राजाओं के आगे हाथी पर चलने वाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदि की आकृतियाँ होती थीं।
मिअयार- पुं० (अ०) १ कसौटी। २ सोना-चाँदी तौलने का काँटा।
मिक़द- स्त्री० (अ० मिक़अद) गुदा, मल-द्वार।
मिक्दार- स्त्री० (अ० मिक्दार) परिमाण, मात्रा।
मिक़्ना- पुं० (अ० मिक़्नअ) एक प्रकार की ओढ़नी या चादर।
मिक़्नातीस- पुं० दे० 'मक़्नातीस'।
मिक़्यास- पुं० (अ० मिक्यास) १ अन्दाज, अनुमान, क़्यास। २ वह चीज जिससे अन्दाज या अनुमान किया जाय। जैसे-

मिक़्यास-उल्-हरारत = ताप मापक यन्त्र।
मिक़राज़- स्त्री० (अ० मिक़ाज़) कैंची, कतरनी।
मिज़ह- स्त्री० (फा०) आँख की पलक।
मिज़गाँ- स्त्री० (फा० मिज़ह का बहु०) आँखो की पलकें।
मिज़मार- पुं० (अ० मिज़्मार) १ बाँसुरी, बंशी। २ बाजा, वाद्य। ३ घुड़दौड़ का मैदान।
मिज़राब- स्त्री० (अ० मिज़ाव) तार का वह नुकीला छल्ला जिससे सितार आदि बजाते हैं।
मिज़ह- स्त्री० (फा०) (बहु० मिज़गाँ) आँख की पलक।
मिज़ाज- पुं० (अ०) १ किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे, तासीर। २ प्रवृत्ति, स्वभाव, प्रकृति। ३ शरीर या मन की दशा, तबीयत,दिल। मुहा०- मिज़ाज खराब होना = मन में उप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना, अस्वस्थ होना। मिज़ाज पुरसी = यह पूछना कि आप का मिज़ाज कैसा है। मिज़ाज बिगाड़ना = किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना। मिज़ाज पाना = १ किसी के स्वभाव से परिचित होना। २ किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। मिज़ाज पूछना = ३ यह पूछना कि आप का शरीर तो अच्छा है। ४ अभिमान, घमंड, शेखी। मुहा०- मिज़ाज न मिलना = घमंड के कारण किसी से बात न करना।
मिज़ाजदाँ- वि० (अ०+फा०) मिज़ाज या प्रकृति पहचानने वाला।
मिज़ाज़न- क्रि० वि० (अ०) मिज़ाज या प्रकृति के विचार से।
मिज़ाजो- (अ० मिज़ाज) बहुत अभिमान करने वाली स्त्री (व्यंग और तिरस्कार सूचक)
मिनक़ार- पुं० (अ० मिन्क़ार) १ पक्षी का चोंच, चंचु। २ लकड़ी में छेद करने का बरमा।
मिनजानिब- क्रि० वि० (अ०) किसी की ओर से।
मिलजुमला- क्रि० वि० (अ० मिलजुम्मलः) इन सबमें से।
मिनहा- वि० (अ० मिन्हा) घटाया या कम किया हुआ।
मिनहाई- स्त्री० (अ० मिन्हा) घटाने या कम करने की क्रिया, कटौती।
मिनार- स्त्री० दे० 'मीनार'।
मिनक़ार- स्त्री० (अ०) चोंच।
मिन्तक़ा- पुं० (अ० मिन्तक़ः) १ कमरबन्द, पटका। २ क्रान्ति वृत्त। ३ कटिबन्ध।
मिन्नत- स्त्री० (अ०) प्रार्थना।
मिफताह- स्त्री० (अ०) कुंजी।
मिम्बर- पुं० (अ०) मसजिद में वह ऊँचा चबूतरा जिस पर बैठ कर मुल्ला आदि उपदेश करते और खुतबा पढ़ते हैं।
मियाँ- पुं० (फा०) १ स्वामी, मालिक। २ पति, खसम। ३ बड़ों के लिये सम्बोधन, महाशय। ४ मुसलमान।
मियाद- स्त्री० दे० 'मीयाद'।
मियादी- वि० (अ० मीआद) अवधि-संबंधी, आवधिक।
मियान- पुं० (फा०) १ किसी चीज का मध्य भाग। २ कमर। ३ तलवार का खाना, म्यान।
मियाना- वि० (फा० मियानः) मझोले आकार का, न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा। पुं० १ केन्द्र, मध्य भाग। २ एक प्रकार की पालकी।
मियानी- स्त्री० (फा० मियान) पाजामे के बीच का भाग। वि० बीच का।
मिरज़ई- स्त्री० (फा० मीरज़ा) कमर तक का एक प्रकार का बंददार अंगा या अँगरखा।
मिरात- स्त्री० (अ०) दर्पण, शीशा।
मिर्ज़ा- पुं० (फा० शुद्ध रूप मीरज़ा या मीरज़ादा) १ मीर या सरदार का लड़का। २ मुग़लों की एक उपाधि।
मिर्ज़ाई- स्त्री० (फा०) १ मिरज़ा का पद

या उपाधि। २ मिरज़ापन।

**मिर्रीख-** पुं० (अ०) मंगलग्रह।

**मिल्क-** स्त्री० (अ०) १ भूसम्पत्ति, जमींदारी। २ माफी, जमीन। ३ स्वामित्व।

**मिल्कियत-** स्त्री० (अ०) १ भूमि पर स्वामित्व का अधिकार। २ सम्पत्ति।

**मिल्की-** पुं० (अ०) भूस्वामी, जमींदार। वि० भूस्वामित्व-सम्बन्धी।

**मिल्लत-** स्त्री० (अ०) मजहब, धर्म। स्त्री० (हिं० मिलना) मेल-मिलाप।

**मिश्क-** पुं० (फा०) मुश्क, कस्तूरी।

**मिस-** पुं० (फा०) (वि० मिसी) ताँबा, ताम्र।

**मिसदाक़-** पुं० (अ०) १ वह जिस पर कोई आशय या अर्थ घटे। २ वह जो किसी दूसरे के अनुरुप हो। ३ साक्षी, गवाही। ४ गवाह, साक्षी।

**मिसरा-** पुं० (अ० मिस्रअ) छन्द का चरण या पद।

**मिसरी-** पुं० (अ० मिस्री) मिस्र देश का निवासी। स्त्री० १ मिस्र देश की भाषा। २ दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी या खाँड।

**मिसवाक-** स्त्री० (अ०) दाँतून, दँतौन।

**मिसाल-** स्त्री० (अ०) (बहु० अम्साल) १ उपमा, तुलना। यौ०- अदीम-उल्-मिसाल= अनुपम, बेजोड़। २ उदाहरण, नमूना, नजीर। ३ कहावत।

**मिसालन-** क्रि० वि० (अ०) उदाहरणार्थ।

**मिसाली-** वि० (अ०) उदाहरण के रुप में होने वाला।

**मिसी-** वि० (अ०) ताँबे का। स्त्री० दे० 'मिस्सी'।

**मिस्क़ल-** पुं० (अ०) एक प्रकार का औजार जिससे छड़ियाँ और तलवारें साफ करके चमकाई जाती हैं।

**मिस्क़ला-** पुं० दे० 'मिस्क़ल'।

**मिस्क़ाल-** पुं० (अ०) ४ माशे और ३।। रत्ती की एक तौल।

**मिस्कीं-** वि० दे० 'मिस्कीन'।

**मिस्कीन-** वि० (अ०) (बहु० मसाकीन) दीन, दुःखी।

**मिस्कीनी-** स्त्री० (अ०) १ दीनता। २ दरिद्रता।

**मिस्तर-** पुं० (अ०) वह तख्ती जिस पर बराबर बराबर दूरी पर डोरे बँधे रहते हैं और जिसके ऊपर सादा क़ागज रख कर लिखने के लिये पंक्तियों के सीधे चिह्न बनाते हैं।

**मिस्बाह-** पुं० (अ०) दीपक।

**मिस्मार-** वि० (अ०) (भाव० मिस्मारी) तोड़ा-फोड़ा और गिराया हुआ, ढाया हुआ (मकान आदि)।

**मिस्र-** पुं० (अ०) आफ्रिका के उत्तर पूर्व का एक प्रसिद्ध देश।

**मिस्री-** पुं० स्त्री० दे० 'मिसरी'।

**मिस्ल-** वि० (अ०) समान, तुल्य।

**मिस्सी-** स्त्री० (फा० मिसी=ताँबे का) १ एक प्रकार का चूर्ण जिससे स्त्रियाँ दाँत काले करती हैं। यौ०- मिस्सी काजल = शृंगार की सामग्री। २ वेश्याओं में उस समय की एक रसम जब किसी वेश्या का पहले पहल किसी पुरुष के साथ समागम होता है।

**मिहतर-** पुं० (फा०) १ भंगी। २ नेता। वि० सबसे बड़ा।

**मिहमीज़-** स्त्री० (अ० मिह्मीज) एक प्रकार की लोहे की नाल जो जूते में एड़ी के पास लगी रहती है और जिसकी सहायता से सवार घोड़े को एड़ लगाता है।

**मीज़ान-** पुं० (अ०) १ चीजें तौलने का तराजू। २ तुला राशि। ३ गणित में संख्याओं का जोड़।

**मीना-** पुं० (फा०) १ रंगीन आबगीना या बहुमूल्य पत्थर जिससे सोने और चाँदी पर रंग-बिरंगा काम करते हैं। २ सोने या चाँदी पर किया जाने वाला रंग-बिरंगा काम। ३ मद्य रखने का शीशे का पात्र।

**मीनाकार-** पुं० (फा०) चाँदी और सोने पर मीना करने वाला।

**मीनाकारी-** स्त्री० (फा०) चाँदी और सोने

पर किया हुआ मीने का काम।
मीनाबाज़ार- पुं० (फा०) सुन्दर और बढ़िया बाजार।
मीनार- स्त्री० (अ० मिनारः) गोलाकार ऊँची इमारत, स्तम्भ।
मीयाद- स्त्री० (अ० मीआद) किसी कार्य की समाप्ति आदि के लिये नियत समय, अवधि।
मीयादी- वि० (अ०) जिसके लिए कोई अवधि नियत हो, मीयाद वाला, आवधिक।
मीर- पुं० (फा० 'अमीर' का संक्षिप्त रूप) १ सरदार, प्रधान, नेता। २ धार्मिक आचार्य। ३ सैयद जाति की उपाधि। ४ वह जो किसी प्रतियोगिता में पहला निकले। ५ ताश के पत्तों में बादशाह।
मीरअदल- पुं० (फा० मीरेअदल) प्रधान न्यायाधीश।
मीरआखोर- पुं० (फा०) घोड़ों का बड़ा अफसर, अस्तबल का दारोगा, अश्वपति।
मीरआतिश- पुं० (फा०) तोपखाने का प्रधान कर्मचारी।
मीरज़ा- पुं० (फा०) १ मुस्लिम राजवंश के लोगों की उपाधि। २ सैयदों की उपाधि, मिरज़ा।
मीरज़ादा- पुं० (फा०) राजकुमार, शाहजादा।
मीरतुज़क- पुं० (फा०) अभियान या जलूस आदि की व्यवस्था करने वाला कर्मचारी।
मीरफर्श- पुं० (फा०) वह पत्थर या दूसरे भारी पदार्थ जो चाँदनी या फर्श के कोनों पर उन्हें उड़ने से रोकने के लिए रखे जाते हैं।
मीरबख्शी- पुं० (फा०) सबको वेतन बाँटने वाला प्रधान कर्मचारी।
मीरबह- पुं० (फा०) १ जहाजी बेड़े का अफसर, नौ-सेनापति। २ वह प्रधान कर्मचारी जो किसी बन्दरगाह में आने और जाने वाले माल का महसूल वसूल करता है।
मीरमजलिस- पुं० (फा०) मजलिस का प्रधान सभापति, प्रधान।
मीरमतबख- पुं० (फा०) पाकशाला का प्रधान व्यवस्थापक।
मीरमहफिल- पुं० (अ० मीर महि्फल) सभापति।
मीरमहल्ला- पुं० दे० 'महल्लेदार'।
मीरमुन्शी- पुं० (फा०) कार्यालय के मुंशियों का प्रधान, प्रधान लिपिक।
मीरमैदाँ- वि० (अ०+फा०) १ विजयी योद्धा। २ रनबाँकुरा।
मीरशिकार- पुं० (फा०) शिकार की व्यवस्था करने वाला प्रधान कर्मचारी।
मीरहाज- पुं० (फा०) हज करने वालों या हाजियों का सरदार।
मीरास- स्त्री० (अ०) उत्तराधिकार में प्राप्त होने वाली सम्पत्ति।
मीरासी- वि० (अ० मीरास) मीरास या उत्तराधिकारसम्बन्धी। सं० पुं० एक प्रकार के मुसलमान गवैये जो प्रायः बहुत मसखरे भी होते हैं।
मुंजमिद- वि० दे० 'मुनजमिद'।
मुअइयन- वि० (अ०) तइनात या मुकर्रर किया हुआ, नियुक्त।
मुअजज़ा- पुं० दे० 'मोजज़ा'।
मुअजिज़ात- 'मुअजज़ा' का बहु०।
मुअज़्ज़म- वि० (अ०) (स्त्री० मुअज़्ज़मा) जिसे बहुत महत्व दिया गया हो, परम माननीय या प्रतिष्ठित, बहुत बड़ा (व्यक्ति)।
मुअज़्ज़िज़- वि० (अ०) इज्जतदार, प्रतिष्ठित।
मुअज़्ज़िन- पुं० (अ०) वह जो मसजिद में नमाज के समय अजान देता है।
मुअतक़िद- वि० दे० 'मोतक़िद'।
मुअतरिज़- वि० दे० 'मोतरिज़'।
मुअतरिफ- वि० (अ०) एतराफ या इकरार करने वाला, मानने वाला।
मुअतदिल- वि० दे० 'मातदिल'।
मुअतबर- वि० दे० 'मातबर'।
मुअतबरी- वि० 'मातबरी'।
मुअतमद- वि० दे० 'मोतमिद'।
मुअतमिद- वि० दे० 'मोतमिद'।

मुअताद- स्त्री० दे० 'मोताद'।
मुअत्तर- वि० (अ०) जिसमें खूब इत्र लगा हो, इत्र बसा हुआ, सुवासित।
मुअत्तल- वि० (अ०) (सं० मुअत्तली) जो अपने काम से कुछ समय के लिए (प्रायः दंड स्वरूप) हटा दिया गया हो।
मुअद्दद- वि० (अ०) गिना हुआ।
मुअद्दिब- वि० (अ०) जो बड़ों का अदब करे, सुशील, विनम्र।
मुअन्नस- पुं० (अ०) स्त्रीलिंग, मादा।
मुअम्बर- वि० (अ०) जिसमें अंबर लगा हुआ हो, अंबर की सुगंधि वाला।
मुअम्मा- पुं० (अ०) प्रतियोगिता।
मुअम्मर- वि० (अ०) जिसकी उम्र ज्यादा हो, वृद्ध, बुड्ढा।
मुअम्मा- पुं० (अ० मुअम्मः) १ छिपी हुई चीज। २ पहेली। ३ समस्या, कठिन और विचारणीय विषय।
मुअय्यन- वि० (अ० मुअयन) नियत, निश्चित।
मुअर्रखा- वि० (अ०) १ लिखा हुआ। २ तिथि या तारीख दिया हुआ।
मुअरब- वि० (अ०) (अक्षर) जिन पर एराब (इ, उ आदि की मात्राएँ या चिह्न) लगे हों।
मुअर्रब- वि० (अ०) अरबी रूप में लाया हुआ, जो अरबी बनाया गया हो। (शब्द आदि)।
मुअर्रा- वि० (अ०) १ नग्न, नंगा। २ शुद्ध, साफ। ३ सीधा, सरल।
मुअर्रिख- पुं० (अ०) (बहु० मुअर्रिखीन) इतिहास-लेखक।
मुअर्रिफ- वि० (अ०) तारीफ करने या लक्षण बतलाने वाला।
मुअल्लक़- वि० (अ०) १ लटका हुआ। २ लगा हुआ, संलग्न।
मुअल्ला- वि० (अ०) (बहु० मआली) १ परम उच्च और श्रेष्ठ। २ मान्य, प्रतिष्ठित।
मुअल्लिफ- पुं० (अ०) (वि० मुअल्लिफः) ग्रन्थ का रचयिता या संकलनकर्ता, संपादक।
मुअल्लिम- वि० (अ०) (स्त्री० मुअल्लिमा) इल्म या ज्ञान देने वाला, शिक्षक, उस्ताद।
मुअल्लिमी- स्त्री० (अ०) मुअल्लिम का पद या कार्य।
मुअस्सिर- वि० (अ०) तासीर या असर करने वाला, प्रभावशाली।
मुआइनः - पुं० (अ०) निरीक्षण, जाँचा।
मुआक़बत- स्त्री० (अ०) दंड।
मुआफ- वि० दे० 'माफ'।
मुआफिक़- वि० (अ०) १ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल। २ सदृश, समान। ३ मनोकूल।
मुआफिक़त- स्त्री० (अ० मुआफिक़) मुआफिक़ का भाव, अनुकूलता।
मुआफी- स्त्री० दे० 'माफी'।
मुआफीदार- दे० 'माफीदार'।
मुआमला- पुं० दे० 'मामला'।
मुआयना- पुं० (अ०) देख भाल, जाँच-पड़ताल, निरीक्षण।
मुआलिज- पुं० (अ०) इलाज करने वाला, चिकित्सक।
मुआलिजा- पुं (अ० मुआलिजः) इलाज, चिकित्सा।
मुआवज़ा- पुं० (अ० मुआविज़ः) १ बदले में दी हुई चीज़ या धन, बदला। २ बदलने की क्रिया, परिवर्तन।
मुआवदत- स्त्री० (अ०) लौट आना, वापस आना।
मुआविन- पुं० (अ०) सहायक, मददगार।
मुअविनत- स्त्री० (अ०) सहायता, मदद।
मुआहदा- पुं० (अ० मुआहदः) पक्की बातचीत, दृढ़ निश्चय, करार, अनुबन्ध।
मुआहिद- वि० (अ०) अहद करने वाला, वचन देने वाला या कोई बात पक्की करने वाला, अनुबंधकर्ता।
मुआहिदीन- पुं० (अ० मुहादि का बहु०) अनुबंध करने वाले लोग।
मुअयन- वि० (अ०) मुकर्रर किया हुआ, नियत।

मुअयना- वि० दे० 'मुअयन'।
मुक़ई- वि० (अ०) जिसके खाने या पीने से क़ै या उलटी आवे।
मुक़त्तर- वि० (अ०) क़तरा या बूँद बूँद करके टपकाया हुआ।
मुकत्ता- वि० (अ० मुकत्तS) चारों ओर से काट-छाँट कर दुरुस्त किया हुआ।
मुक़द्दम- वि० (अ०) १ आगे या पहले आने वाला। २ प्रधान, मुख्य।
मुक़द्दमा- पुं० (अ० मुक़द्दमः) १ दो पक्षों के बीच का धन या अधिकार आदि से सम्बन्ध रखने वाला अथवा किसी अपराध (जुर्म) का मामला जो विचार के लिए न्यायालय में जाय, अभियोग। २ दावा, नालिश।
मुकद्दर- वि० (अ०) १ गँदला, मैला, गंदा। २ क्षुब्ध, असन्तुष्ट।
मुक़द्दर- पुं० (अ०) तक़दीर।
मुक़द्दस- वि० (अ०) पवित्र, पाक। यौ०- किताब-ए-मुक़द्दस = पवित्र धर्म ग्रन्थ।
मुक़फ्फल- वि० (अ०) जिसमें कुफ्ल या ताला लगा हो, तालाबंद।
मुक़फ्फा- वि० (अ० मुक़फ्फः) काफिये या अनुप्रास से युक्त।
मुकम्मल- वि० (अ०) पूरा किया हुआ, पूर्ण।
मुक़रब- पुं० (अ०) घनिष्ठ मित्र।
मुकर्रम- वि० (अ०) प्रतिष्ठित।
मुकर्रर- क्रि० वि० (अ०) दोबारा, फिर से।
मुक़र्रर- वि० (अ०) (सं० मुक़र्ररी) १ इक़रार किया हुआ, निश्चित। २ तैनात, नियुक्त, नियत।
मुकर्ररा- वि० (अ० मुक़र्ररः) मुक़र्रर किया हुआ, नियत।
मुकर्ररी- स्त्री० (अ०) १ निश्चित लगान, कर या वेतन आदि। २ नियुक्ति।
मुकल्लफ़- वि० (अ०) सजाया हुआ।
मुक़ल्लिद- वि० (अ०) तक़लीद या अनुकरण करने वाला, अनुयायी।
मुक़ल्लिब- वि० (अ०) घुमाने या बदलने वाला। यौ०- मुक़ल्लिब-उल्-फलूब = हृदय बदलने वाला, ईश्वर।
मुक़व्वी- वि० (अ०) (बहु० मुकव्वियात) कूवत या ताक़त बढ़ाने वाला, बलवर्धक, पौष्टिक।
मुक़श्शर- वि० (अ०) जिसका छिलका उतारा गया हो।
मुकस्सर- वि० (अ०) १ दो बार गुणा किया हुआ, घन। २ समान लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई वाला।
मुकाफ़ात- स्त्री० (अ०) १ बुरे कामों का फल, पाप का परिणाम। २ बदला।
मुक़ाया- पुं० (अ० मुक़अबः) शृंगारदान।
मकाबिज़त- स्त्री० (अ०) कब्जा, अधिकार।
मुक़ाबिल- क्रि० वि० (अ०) सम्मुख।
मुक़ाबिला- पुं० (अ० मुकाबिलः) १ आमना-सामना। २ मुठभेड़, प्रतियोगिता। ३ समानता। ४ तुलना। ५ मिलन। ६ लड़ाई।
मुक़ाम- पुं० (अ०) (बहु० मुक़ामात) १ ठहरने का स्थान, टिकान, पड़ाव। २ ठहरने की क्रिया, कूच का उल्टा, विराम। ३ रहने का स्थान, घर। ४ अवसर। पुं० दे० 'मक़ाम'।
मुक़ामी- वि० (अ०) १ ठहरा हुआ। २ स्थानीय।
मुक़िर- वि० (अ०) इक़रार करने वाला, मानने वाला। यौ०- मन मुक़िर = मैं इक़रार करने वाला (दस्तावेजों आदि में)।
मुक़ीम- वि० (अ०) १ क़याम करने या ठहरने वाला। २ ठहरा हुआ।
मुक़ैयद- पुं० वि० (अ०) क़ैद किया हुआ।
मुक्कैश- पुं० (अ०) १ वह चीज जिस पर सोने या चाँदी का तार चढ़ा हो।
मुक्तज़ाअ- पुं० (अ०) तक़ाजा, जरुरत, आवश्यक।
मुक्तज़ी- वि० (अ०) तक़ाजा करने वाला, माँगने वाला।
मुक्तदा- पुं० (अ०) १ नेता, अगुआ। २

धार्मिक आचार्य।

मुखन्नस- वि० (अ०) हिजड़ा, नपुंसक।

मुख़फ़्फ़फ़- वि० (अ०) घटा कर कम किया हुआ, संक्षिप्त। सं० पुं० घटाकर कम करने की क्रिया।

मुखबिर- पुं० (अ० मुख़्बिर) छिप कर खबर पहुँचाने वाला, भेदिया।

मुखबिरी- स्त्री० (अ० मुख़्बिरी) मुखबिर का काम, गुप्त रुप से समाचार पहुँचाना, जासूसी।

मुखम्मस- पुं० (अ०) १ वह चीज जिसमें पाँच कोण या अंग हों। २ पाँच पाँच चरणों की एक प्रकार की कविता।

मुखलिस- वि० (अ० मुख़्लिस) १ निष्ठ, सच्चा। २ अकेला। ३ अविवाहित।

मुखलिसी- स्त्री० (अ० मुख़्लिसी) छुटकारा, मुक्ति, रिहाई।

मुखतिब- पुं० (अ०) १ वह जो किसी से कुछ कहता हो, वक्ता। मुहा०- किसी की तरफ मुखातिब होना= किसी से बातचीत करने के लिए उसकी ओर प्रवृत्त होना।

मुखालिफ- पुं० (अ०) मुखालिफत या विरोध करने वाला, विरोधी। वि० विरुद्ध, विपरीत।

मुखालिफत- स्त्री० (अ०) मुखालिफ या विरोधी होने का भाव, शत्रुता, विरोध।

मुख़ासमत- स्त्री० (अ० मुखासिमत) शत्रुता, दुश्मनी।

मुख़िल- वि० (अ०) खलल या बाधा डालने वाला, बाधक।

मुख़ैयर- वि० (अ०) १ दानशील। २ उदार।

मुख़ैयला- स्त्री० (अ० मुख़ैयलः) सोचने विचारने की शक्ति, विचारशक्ति।

मुख़्तलिफ़- वि० (अ०) १ भिन्न भिन्न, अलग अलग। २ भिन्न, अलग, दूसरी तरह का।

मुख़्तसर- वि० (अ०) थोड़े में कहा या किया हुआ, संक्षिप्त।

मुख़्तसरन- क्रि० वि० (अ०) संक्षेप में, संक्षेपतः।

मुख़्तार- पुं० (अ०) १ जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बना कर कोई काम करने का अधिकार दिया हो, अधिकारप्राप्त प्रतिनिधि। २ एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और काम करने वाला।

मुख़्तारएआम- पुं० (अ०) वह मुख़्तार या कार्यकर्ता जिसे सब प्रकार के कार्य करने के अधिकार दिये गये हों।

मुख़्तारकार- पुं० (अ०+फा०) प्रधान संचालक या अधिकारी।

मुख़्तारकारी- स्त्री० (अ०+फा०) १ मुख़्तार का काम या पद। २ मुख़्तार का काम या पद।

मुख़्तारखास- पुं० (अ०+फा०) वह जिसे कोई विशेष कार्य करने का अधिकार दिया गया हो।

मुख़्तारतन्- क्रि० वि० (अ०) मुख़्तार के द्वारा।

मुख़्तारनामा- पुं० (अ०+फा० नामः) वह पत्र जिसके अनुसार किसी को कोई कार्य करने का अधिकार सौंपा जाय।

मुख़्तारी- स्त्री० (अ०) मुख़्तार का काम, पद या पेशा।

मुख़्बिर- पुं०(अ०) जासूस, भेदिया।

मुग़- पुं० (अ०० वह जो अग्नि की उपसना या पूजा करता हो।

मुग़न्नी- पुं० (अ०) (स्त्री० मुग़न्निया) गाने वाला, गायक।

मुग़ल- पुं० (अ०) १ मंगोल देश का निवासी। २ तुर्की का एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देश का निवासी था। ३ मुसलमानों के चार वर्गों में से एक।

मुग़लक़- वि० (अ०) कठिन अर्थ वाला (शब्द या वाक्य)।

मुग़लानी- स्त्री० (अ० मुग़ल+आनी हिं० प्रत्य०) १ दासी, परिचारिका। २ स्त्रियों के कपड़े सीने वाली स्त्री।

मुग़ाँ- पुं० (अ०) 'मुग़' का बहु०। अग्नि की उपसना करने वाले लोग।

मुग़ालता- पुं० (अ० मुग़ालतः) १ किसी को भ्रम में डालना। २ धोखा, छल। ३ भूल, भ्रम।
मुग़ील- पुं० (अ०) बबूल।
मुग़ीलाँ- (अ०) 'मुग़ील' का बहु०।
मुग़ीस- वि० (अ०) दावा या अभियोग उपस्थित करने वाला, वादी।
मुग़ैयर- वि० (अ०) बदला हुआ।
मुचलका- पुं० (तु० मुचल्कः) वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो।
मुज़क्कर- पुं० (अ०) वह जो पुरुष जाति का हो, पुल्लिंग, नर।
मुज़खरफ- पुं० (अ०) (बहु० मुज़खरफात) व्यर्थ की बात, बक़वाद।
मुज़गा- पुं० (अ० मुजगः) १ मांस का टुकड़ा। २ निवाला, लुकमा, कौर। ३ गर्भाशय, बच्चेदानी।
मुज़तबा- वि० (अ०) चुना हुआ, श्रेष्ठ।
मुजतमअ- वि० (अ० मुज्तमअ) जो जमा हुए हों, एकत्र।
मुज़तर- वि० (अ०) बेचैन, विकल।
मुजतरिब- वि० (अ०) (क्रि० वि० मुजतरिबाना) बेचैन।
मुजतहिद- पुं० (अ०) (बहु० मुजतहिदीन) १ धार्मिक आचार्य। २ धर्मशास्त्र का सबसे बड़ा पंडित या आचार्य जिसका निर्णय अंतिम होता है।
मुज़दा- स्त्री० (फा० मुज़दः) शुभ समाचार, अच्छी खबर।
मुजद्दिद- पुं० (अ०) सुधारक।
मुज़फ्फर- वि० (अ०) जफर या फतह पाने वाला, विजयी।
मुज़बज़ब- वि० (अ०) १ जो कुछ निश्चय न कर सके, असमंजस में पड़ा हुआ। २ अनिश्चित।
मुजमल- वि० (अ०) १ एकत्र किया हुआ। २ संक्षिप्त।
मुजमलन्- क्रि० वि० (अ०) संक्षेप में, थोड़े में।
मुज़महिल- वि० (अ०) १ बहुत थका हुआ, शिथिल। २ दुर्बल।
मुज़मिन- वि० (अ० मुज़्मिन) पुराना।
मुज़मिर- वि० (अ० मुज़्मिर) छिपाने वाला।
मुज़म्मा- पुं० (अ०) एड़। मुहा०- मुज़म्मा लेना = आड़े हाथों लेना, फटकारना।
मुजरा- पुं० (अ० मुज्रा) १ वह जो जारी किया गया हो। २ वह रकम जो किसी रक़म में से काट ली गई हो। ३ किसी बड़े या धनवान के सामने जाकर उसे सलाम करना, अभिवादन। ४ वेश्या का बैठ कर गाना।
मुजराई- पुं० (अ० मुज्राई) १ मुजरा होने या काटे जाने की क्रिया, बाद होना, काटा जाना, कटौती। २ वह जो मुजरा या सलाम करने के लिए सेवा में उपस्थित हो। ३ मरसिया पढ़ने वाला, मरसियागो।
मुजरिम- वि० (अ० मुज्रिम) (क्रि० वि० मुजरिमाना) जिसने कोई जुर्म या अपराध किया हो, अपराधी।
मुज़र्रत- स्त्री० (अ०) हानि।
मुजर्रद- वि० (अ०) १ जिसका विवाह न हुआ हो, अविवाहित, कुआँरा। २ जिसके साथ और कोई न हो, अकेला, एकाकी।
मुजर्रदी- स्त्री० (अ०) मुजर्रद रहने की अवस्था, अविवाहित या अकेला रहना।
मुजर्रब- वि० (अ०) तजरुबा किया हुआ, जाँचा हुआ, परक्षित।
मुजर्रबात- पुं० (अ० 'मुजर्रब' का बहु०) रामबाण औषधों के नुस्खे।
मुजल्लद- वि० (अ०) (ग्रन्थ) जिस पर जिल्द चढ़ी हो, जिल्ददार।
मुजल्ला- वि० (अ०) जिस पर जिल्द की गई हो, चमकाया हुआ।
मुजल्लिद- पुं० (अ०) वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो, जिल्दबन्द।
मुजव्वज़ह- वि० (अ०) १ निश्चित किया

हुआ। २ बतलाया हुआ, सुझाया हुआ। ३ प्रस्तावित।

मुजव्वफ़- वि० (अ०) अन्दर से खाली, खोखला, पोला।

मुजव्विज़- वि० (अ०) १ जो तजबीज किया गया हो, प्रस्तावित। २ जिसकी तज़वीज या निश्चय हो चुका हो निश्चित।

मुजस्सम- वि० (अ०) शरीरधारी, शरीरी। क्रि० वि० सशरीर।

मुजस्सिम- वि० दे० 'मुजस्सम'।

मुज़हर- पुं० (अ० मुज्हर) १ दृश्य। २ रंगमंच।

मुज़हिर- पुं० (अ० मुज्हिर) १ वह जो ज़ाहिर करे, प्रकट करने वाला। २ भेदिया, जासूस, गुप्तचर।

मुज़ाअफ- वि० (अ०) १ द्विगुण, दूना। २ गुण किया हुआ, गुणित।

मुजादला- पुं० (अ० मुजादलः) १ लड़ाई-झगड़ा। २ विरोध।

मुज़ाफ- वि० (अ०) १ बढ़ाया या मिलाया हुआ। सं० पुं० व्याकरण में, सम्बन्धसूचक कारक।

मुज़ाफइलैह- पुं० (अ०) व्यकरण में वह वस्तु जिसका किसी के साथ सम्बन्ध हो या जो किसी के अधिकार में हो। जैसे- राम का घोड़ा, इसमें राम मुज़ाफ और घोड़ा मुज़ाफइलैह है।

मुज़ाफात- स्त्री० बहु० (अ० मुज़ाफत का बहु०) १ बढ़ाई या मिलाई हुई चीज़। २ नगर के आसपास के और उसके आमने-सामने के स्थान।

मुजामअत- स्त्री० (अ०) स्त्री प्रसंग, सम्भोग।

मुज़ायक़ा- पुं० (अ० मुज़ायकः) हर्ज, हानि।

मुज़ारा- वि० (अ० मुज़ारअ) समान, तुल्य, बराबर का। पुं० (अ० मुज़ारअ) कृषक, खेतिहर।

मुजारियह- वि० (अ०) १ जो जारी हो, चलता हुआ, प्रचलित। २ कानून या नियम के रूप में बनाया हुआ, नियमबद्ध।

मुजारी- वि० दे० 'मुजारियह'।

मुजाविर- पुं० (अ०) मजार या दरगाह आदि स्थानों पर रहने वाला जो वहाँ का चढ़ावा आदि लेता हो।

मुजाविरी- स्त्री० (अ०) मुजाविर का काम या पद।

मुजाहिद- पुं० (अ०) (बहु० मुजाहिदीन) धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करने वाला, धार्मिक योद्धा।

मुज़ाहिम- वि० (अ०) १ कष्ट देने वाला, पीड़क। २ बाधा डालने या रोकने वाला, बाधक।

मुज़ाहिमत- स्त्री० (अ०) १ कष्ट देना। २ रोकना।

मुज़िर- वि० (अ०) १ हानिकारक, नुक़सान पहुँचाने वाला। २ बुरा।

मुजौविज़ह- वि० दे० 'मुजव्वजह' और 'मुजव्विज़'।

मुज्तबा- वि० (अ०) सम्मानित।

मुज्मल- वि० (अ०) संक्षिप्त।

मुतंजन- पुं० (फा०) मांस के साथ एक विशेष प्रकार से पकाया हुआ चावल।

मुतअइयन- वि० (अ०) नियुक्त किया हुआ, मुकर्रर किया हुआ।

मुअतिक्क़ब- वि० (अ०) पीछा करने वाला।

मुतअज्जिब- वि० (अ०) जिसे ताज्जुब या आश्चर्य हुआ हो, चकित।

मुतअद्दिद- वि० (अ०) जायदाद या संख्या में अधिक, कई, अनेक।

मुतअद्दी- पुं० (अ०) सकर्मक क्रिया।

मुतअफ्फिन- वि० (अ०) बदबूदार, दुर्गंधित।

मुतअर्रिज़- वि० (अ०) एतराज या आपत्ति करने वाला।

मुतअल्लिक़- वि० (अ०) ताअल्लुक़ या सम्बन्ध रखने वाला, सम्बद्ध।

मुतअल्लिक़-ए-फेल- पुं० (अ०) क्रिया-विशेषण (व्या०)।

मुतअल्लिक़ात- पुं० बहु० दे० 'मुतअल्लिक़ीन'
मुतअल्लिक़ीन- पुं० (अ० बहु०) १ सम्बन्ध रखने वाले लोग। २ परिवार या नाते के लोग, रिश्तेदार, सम्बन्धी। ३ घर में रहने वाले आश्रित।
मुतअस्सिफ- वि० (अ०) जिसे दुःख या पश्चात्ताप हो।
मुतअस्सिब- वि० (अ०) १ जिसमें तास्सुब या पक्षपात हो। २ कट्टर।
मुतअस्सर- वि० (अ०) जिस पर असर या प्रभाव पड़ा हो, प्रभावित।
मुतअह- पुं० दे० 'मुताह'।
मुतअहिद- पुं० (अ०) ठेकेदार, इजारेदार।
मुतआई- वि० दे० 'मुताह्नी'।
मुतआखरीन- वि० बहु० (अ०) आजकल के, इस जमाने के, आधुनिक (व्यक्तिओं के लिए)।
मुतक़द्दिम- पुं० (अ०) (बहु० मुतक़द्दिमीन) क़दीम या पुराने जमाने का, प्राचीन काल का।
मुतकब्बिर- वि० (अ०) अभिमानी (क्रि० वि० मुतकब्बिराना) घमण्डी, शेखीबाज़।
मुतकल्लिम- पुं० (अ०) १ बोलने या कहने वाला, वक्ता। २ व्याकरण में प्रथम पुरुष या उत्तम पुरुष।
मुतक़ाज़ी- पुं० (अ०) माँग या तकाज़ा करने वाला।
मुतखल्लिस- पुं० (अ०) १ नामधारी, नाम या उपनाम से युक्त। २ विशुद्ध।
मुतखासिम- पुं० (अ०) विरोधी।
मुतखासिमीन- पुं० बहु० (अ०) वादी तथा प्रतिवादी।
मुतखैयलह- पुं० (अ०) १ विचारशक्ति। २ कल्पना।
मुतग़ैयर- वि० (अ०) जिसमें परिवर्तन हो गया हो, बदला हुआ।
मुतजक्किर- वि० (अ० मुतजक्किरः) जिसका ज़िक्र या उल्लेख किया गया हो, उक्त, उपर्युक्त।
मुतज़ब्ज़िब- वि० (अ०) दुविधाग्रस्त, असमंजस में पड़ा हुआ।
मुतज़म्मिन- वि० (अ०) मिला हुआ, संयुक्त, सम्मिलित।
मुतज़ाद- वि० (अ०) विरोधी (कथन आदि)।
मुतदैयन- वि० (अ०) १ दीन या धर्म पर विश्वास रखने वाला, धार्मिक, धर्मनिष्ठ। २ अच्छी नीयत वाला, ईमानदार।
मुतनफ्फिस- पुं० (अ०) व्यक्ति।
मुतनफ्फिर- वि० (अ०) जिसे देख कर नफरत हो, मन में घृणा उत्पन्न करने वाला, घृणित।
मुतनाक़िज़- वि० (अ०) विरोधी (कथन आदि)।
मुतनाक़िस- वि० (अ०) जिसमें कोई नुक्स या ऐब हो, दोषयुक्त, दूषित।
मुतनाज़ा- पुं० (अ० मुतनाज़अ) १ झगड़ा। २ जिसके विषय में झगड़ा हो, विवादास्पद।
मुतनाज़िआ- वि० (अ० मुतनाज़िअः) विवादास्पद।
मुतनासिब- वि० (अ०) अनुपात के विचार से ठीक या उपयुक्त।
मुतफक्किर- वि० (अ०) जिसके मन में फिक्र या चिन्ता हो।
मुतफन्नी- वि० (अ०) धूर्त, चालाक।
मुतफर्रक़ात- पुं० बहु० (अ०) १ तरह तरह की या फुटकर चीजें। २ व्यय आदि की फुटकर पद या विभाग। ३ किसी ज़मींदारी या गाँव की फुटकर और इधर उधर बिखरी हुई ज़मीनें।
मुतफर्रिक- वि० (अ०) (बहु० मुतफर्रिक़ात) १ भिन्न भिन्न, तरह तरह के, अनेक पप्रकार के। २ बिखरा हुआ, अस्त-व्यस्त।
मुतबखी- पुं० (अ०) रसोइया, बावर्ची।
मुतबन्ना- पुं० (अ० मुतबन्नः) गोद लिया हुआ लड़का, दत्तक।
मुतबन्नी- पुं० (अ०) दत्तकग्राही।
मुतबर्रक- वि० (अ०) १ मुबारक, शुभ। २

पवित्र, स्वर्ग या देवदूत-सम्बन्धी।
मुतबर्रिक- वि० दे० 'मुतबर्रक'।
मुतमैयन- वि० (अ०) १ तृप्त, सन्तुष्ट। २ शान्त। ३ निश्चिन्त।
मुतमौवल- वि० (अ० मुतमव्वल) धनवान्, सम्पन्न, अमीर।
मुतसावी- वि० (अ०) समान, बराबर, तुल्य
मुतर्जमा- वि० (अ० मुतर्जमः) अनुवादित।
मुतरज्जिम- वि० (अ० मुतर्जिम) लर्जुमा या अनुवाद करने वाला, अनुवादक, उल्थाकार।
मुतरद्दिद- वि० (अ०) जिसके मन में कोई तरद्दुद या फिक्रि हो।
मुतरादिफ- वि० (अ०) पर्य्यायवाची।
मुतरिब- पुं० (अ०) गायक।
मुतरिबी- स्त्री० (अ०) संगीत विद्या, गाना, बजाना।
मुतलक़- क्रि० वि० (अ०) जरा भी, तनिक भी, रत्ती भर भी। वि० बिलकुल, निरा, निपट।
मुतलक़-उलू-इनान- वि० (अ०) १ जिसकी बाग या लगाम छूटी हुई हो। २ परम स्वतंत्र, अबाध्य। क्रि० वि० मुतलकन्।
मुतलव्विन- वि० (अ०) जल्दी बदलने वाला, एक सा न रहने वाला, परिवर्तन-शील। ज़ैसे- मुतलव्विन मिजाज।
मुतलाशी- वि० (अ०) तलाश करने वाला, ढूँढ़ने वाला, अन्वेषक।
मुतल्ला- वि० (अ०) जिस पर सोने का मुलम्मा किया हो।
मुतवक्किल- वि० (अ०) ईश्वर या भाग्य पर तवक्कुल या भरोसा रखने वाला, सन्तोषी।
मुतवज्जह- वि० (अ० मुतवज्जेह) किसी ओर तवजह या ध्यान देने वाला।
मुतवत्तिन- वि० (अ०) निवासी।
मुतवफ्फी- वि० (अ०) स्वर्गवासी, परलोक-गत, मृत, स्वर्गीय।
मुतवल्ली- पुं० (अ०) किसी उत्सर्ग की हुई या धार्मिक संस्था की संपत्ति का रक्षक और व्यवस्थापक।
मुतवस्सित- वि० (अ०) १ बीच का, मध्य का। २ औसत दरजे का, साधारण, सामान्य, मामूली।
मुतव्वल- वि० (अ०) दीर्घ, लंबा, विस्तृत।
मुतवातिर- क्रि० वि० (अ०) एक के बाद एक, लगातार, निरन्तर।
मुतशाबह- वि० (अ०) शक्ल-सूरत में मिलता हुआ, समान आकृति वाला, मिलता-जुलता।
मुतसद्दी- पुं० (अ०) कार्यालय आदि में लिखने-पढ़ने का काम करने वाला, मुन्शी, लेखक।
मुतसद्दीगरी- स्त्री० ((अ०+फा०) मुत्सद्दी का कार्य या पद।
मुतसौवर- वि० (अ० मुत्सव्वर) जिसकी तसव्वर या कल्पना की गई हो, खयाल में लाया हुआ।
मुतहक्कक़- वि० (अ०) १ जिसकी तहक़ीक़ात या जाँच कर ली गई हो, जाँचा हुआ। २ जो परखने पर ठीक उतरा हो।
मुतहक्क़िक- पुं० (अ०) जाँचने या परखने वाला।
मुतहम्मिल- वि० (अ०) जिसमें कठिनाइयाँ आदि सहने की यथेष्ट शक्ति हो, बरदाश्त करने वाला।
मुतहर्रिक- वि० (अ०) गति देने वाला, चलाने वाला, चालक।
मुतहैयर- वि० (अ०) जिसे हैरत या आश्चर्य हुआ हो, अचरज में आया हुआ, चकित।
मुताअ- पुं० दे० 'मुताह'।
मुताई- वि० दे० 'मुताही'।
मुताखरीन- वि० दे० 'मुतआखरीना'।
मुताबिक़- वि० (अ०) अनुसार।
मुताबिक़त- स्त्री० (अ०) मुताबिक़ होने की क्रिया या भाव, अनुकूलता।
मुतालबा- पुं० (अ० मुतालबः) १ तलब करना, माँगना। २ वह रकम जो किसी के यहाँ बाक़ी हो, पावना।

मुताला- पुं० (अ० मुतालअ) पढ़ना, अध्ययन।

मुतास्सिर- वि० दे० 'मुतअस्सिर'।

मुताह- पुं० (अ० मुतआह) शीया मुसलमानों में होने वाला एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुताही- वि० (अ० मुतआही) जिसके साथ मुताह या कुछ समय के लिए अस्थायी विवाह हुआ हो।

मुतीअ- वि० (अ०) हुकुम मानने वाला, आज्ञाकारी।

मुत्तका- पुं० (अ०) सहारा, आश्रय।

मुत्तकी- पुं० (अ०) वह जो दुष्कर्मों से बच कर रहता हो, सदाचारी, परहेज़गार, संयमी।

मुत्तफ़िक़- वि० (अ०) १ जिनमें आपस में इत्तफाक़ या एका हो गया हो। २ एकमत, सहमत।

मुत्तला- वि० (अ०) जिसे सूचना दी गई हो, सूचित किया हुआ।

मुत्तसिल- वि० (अ०) १ साथ में मिला या जुड़ा हुआ, सम्बद्ध। २ पास या बग़ल में होने या रहने वाला।

मुत्तहद- वि० (अ०) मिलाकर एक किये हुए, एक में मिलाये हुए।

मुत्तहम- वि० (अ०) जिसपर तोहमत लगाई गई हो, अभियुक्त।

मुत्सद्दी- पुं० दे० 'मुतसद्दी'।

मुदखला- वि० (अ० मुदखलः) दाखिल किया हुआ।

मुदब्बिर- पुं० (अ०) १ वह जो तदबीर या उपाय बतलाता हो। २ परामर्शदाता। ३ मंत्री।

मुदम्मिग़- वि० (अ०) बहुत दिमाग़ रखने वाला, अभिमानी, घमंडी।

मुदरिक- वि० (अ०) बात को अच्छी तरह समझने वाला, समझदार।

मुदरिका- स्त्री० (अ० मुदरिकः) समझने की शक्ति, विचारशक्ति।

मुदर्रस- पुं० (अ०) विद्यार्थी।

मुदर्रिस- पुं० (अ०) बालकों को पढ़ाने वाला, शिक्षक।

मुदर्रिसी- स्त्री० (अ० मुदर्रिस) मुदर्रिस का काम या पद।

मुदल्लल- वि० (अ०) जो दलील से ठीक साबित हो, तर्कसिद्ध।

मुदल्लिल- वि० (अ०) दलील से कोई बात साबित करने वाला, तार्किक।

मुदव्वर- वि० (अ०) गोल।

मुदाखलत- स्त्री० (अ०) दखल, हस्तक्षेप।

मुदाफ़अत- स्त्री० (अ०) १ दफा या दूर करने की क्रिया या भाव। २ आत्मरक्षा।

मुदाम- क्रि० वि० (अ०) (वि० मुदामी) १ सदा, हमेशा, निरन्तर, लगातार, बराबर।

मुदौवर- वि० दे० 'मुदव्वर'।

मुद्दआ- पुं० (अ०) उद्देश्य, अभिप्राय।

मुद्दआ-अलैह- दे० 'मुद्दालेह'।

मुद्दई- पुं० (अ०) (स्त्री० मुद्दैया) वह जो किसी पर दावा करे, दावा करने वाला।

मुद्दत- स्त्री० (अ०) १ अवधि। २ बहुत दिन, अरसा।

मुद्दतउम्र- क्रि० वि० (अ०) आजीवन।

मुद्दालेह- पुं० (अ० मुद्दआ-अलैह) वह जिस पर कोई दावा किया गया हो, मुद्दई का विपक्षी।

मुद्दैया- स्त्री० (अ० मुद्दैयः) मुद्दई का स्त्रीलिंग रूप।

मुनअक़िद- वि० (अ०) १ बृद्ध। २ जिसकी बैठक या अधिवेशन हुआ हो, जो कार्य रूप में हुआ हो। जैसे- शादी या जलसा मुनअक़िद होना।

मुनअकिस- वि० (अ०) जिसका अक्स या छाया पड़ी हो।

मुनइम- वि० (अ०) उदार, दाता।

मुनक़ज़ी- वि० (अ०) गुज़रा या बीता हुआ, गत।

मुनक़्ता- वि० (अ० मुन्क़तS) १ काटा या अलग किया हुआ। २ समाप्त किया हुआ। ३ चुकाया हुआ, चुकता।

मुनकशिफ- वि० (अ०) खुला हुआ (रहस्य

आदि)।

मुनकसिम- वि० (अ०) बाँटा हुआ, विभक्त।

मुनकसिर- वि० (अ०) जिसमें इन्कसार हो, नम्र। यौ०- मुनकसिर-उल्-मिज़ाज = नम्र स्वभाव वाला।

मुनक़ार- दे० 'मिनक़ार'।

मुनकिर- वि० (अ०) इन्कार करने वाला, न मानने वाला। सं० पुं० नास्तिक।

मुनक़्क़श- वि०० (अ०) नक्क़ाशी किया हुआ।

मुनक्क़ा- पुं० (अ० मुनक्कः) एक प्रकार की बड़ी किशमिश।

मुनज्जिम- पुं० (अ०) ज्योतिषी।

मुनफ़अत- स्त्री० (अ०) नफा, फायदा, लाभ।

मुनफ़इल- वि० (अ०) लज्जित।

मुनफ़सला- वि० (अ० मुन्फसलः) जिसका फैसला हुआ हो।

मुनब्बत- वि० (अ०) जिसमें उभरे हुए बेल-बूटे आदि बने हों।

मुनब्बतकारी- स्त्री० (अ०+फा०) उभार दार बेल-बूटे आदि का काम, नक्क़ाशी।

मुनव्वर- वि० (अ०) १ प्रकाशमान्। २ प्रज्वलित।

मुनशी- पुं० (अ० मुन्शी) १ लेख या निबन्ध आदि लिखने वाला, लेखक। २ लिखा-पढ़ी करने वाला, मुहर्रिर। ३ वह जो फारसी के बहुत सुन्दर अक्षर लिखता हो।

मुनश्शी- वि० (अ०) (बहु० मुनश्शियात) नशा लाने वाला, मादक।

मुनसरिम- पुं० (अ० मुन्सरिम) १ इंसराम या व्यवस्था करने वाला, व्यवस्थापक, प्रबन्धकर्ता। २ अदालत का प्रधान मुन्शी। ३ प्रतिनिधि।

मुनसलिक- वि० (अ० मुन्सलिक) १ पिरोया या गूँथा हुआ, किसी के साथ तागे में बँधा हुआ। २ सम्मिलित।

मुनसिफ- पुं० (अ० मुन्सिफ) इन्साफ या न्याय करने वाला।

मुनसिफ़ी- स्त्री० (अ० मुन्सिफ) १ न्याय, इन्साफ। २ मुन्सिफ का पद या कार्य।

मुनहदिम- वि० (अ० मुन्हदिम) गिराया हुआ, ढाया हुआ (भवन आदि)।

मुनहनी- वि० (अ० मुनहनी) १ झुका हुआ, टेढ़ा। २ दुबला पतला।

मुनहरिफ- वि० (अ० मुन्हरिफ) १ टेढ़ा, वक्र। २ विरोधी।

मुनहसर- वि० (अ० मुन्हसिर) निर्भर, आश्रित।

मुनाज़रा- पुं० (अ० मुनाज़रः) वाद-विवाद, बहस।

मुनाजात- स्त्री० (अ०) १ ईश्वर-प्रार्थना। २ स्तोत्र।

मुनादी- स्त्री० (अ०) वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे शहर में हो, ढिंढोरा, डुग्गी।

मुनाफा- पुं० (अ० मुनाफः) लाभ, फायदा।

मुनाफ़िक़- पुं० (अ०) १ नफ़ाक़ या द्वेष रखने वाला। २ धर्मद्रोही।

मुनाफ़ी- वि० (अ०) १ नष्ट या व्यर्थ करने वाला। २ विरोधी।

मुनासिब- वि० (अ०) उचित, वाजिब, ठीक।

मुनासिबत- स्त्री० (अ० मनासबत) १ सम्बन्ध, लगाव। २ उपयुक्तता।

मुनीब- पुं० (अ०) १ ईश्वर की ओर अनुरक्त। २ स्वामी, मालिक। ३ बही-खाता लिखने वाला कर्मचारी।

मुनीबी- स्त्री० (अ० मुनीब) बही-खाता लिखने का काम या पद।

मुनीम- पुं० दे० 'मुनीब'।

मुन्क़ज़ी- वि० (अ०) समाप्त, बीता हुआ।

मुन्क़सिम- वि० (अ०) विभक्त।

मुन्जमिद- वि० (अ०) सरदी आदि से जमा हुआ।

मुन्तक़िल- वि० (अ०) एक जगह से हटा कर दूसरी जगह रखा या किया हुआ, हस्तान्तरित।

मुन्तखाब- वि० (अ०) (बहु० मुन्तखबात)

१ चुन कर पसंद किया हुआ, अच्छा समझ कर छाँटा हुआ। २ निर्वाचित।
मुन्तज़िम- वि० (अ०) इंतज़ाम करने वाला, प्रबन्धकर्ता।
मुन्तज़िर- वि० (अ०) इंतज़ार या प्रतीक्षा करने वाला।
मुन्तशिर- वि० (अ०) १ इधर उधर फैला या विखरा हुआ। २ दुर्दशाग्रस्त।
मुन्तही- वि० (अ०) १ इन्तहा या चरम सीमा तक पहुँचा हुआ। २ पूर्ण ज्ञाता, दक्ष।
मुन्तदरज़- वि० (अ०) १ दर्ज किया या लिखा हुआ। २ अन्तर्गत, सम्मिलित।
मुन्फक- वि० (अ०) मुक्त।
मुन्फरिद- वि० (अ०) अकेला।
मुन्फरिदन- क्रि० वि० (अ०) अकेले।
मुन्शी- पुं० दे० 'मुनशी'।
मुफरद- वि० (अ०) (बहु० मुफरदात) जो फर्द या अकेला हो, किसी के साथ न हो।
मुफर्रह- वि० (अ०) १ फरहत या आनन्द देने वाला। २ स्वादिष्ट, सुगन्धित और बलवर्धक (औषध आदि)।
मुफ़लिस- वि० (अ०) निर्धन।
मुफलिसी- स्त्री० (अ० मुफलिस) ग़रीबी, दरिद्रता।
मुफसदा- पुं० (अ० मुफ्सदः) १ फिसाद, बखेड़ा। २ दंगा।
मुफसिद- वि० (अ०) (क्रि० वि० मुफसिदान) फिसाद खड़ा करने वाला, झगड़ालू, उपद्रवी।
मुफस्सल- वि० (अ०) (बहु० मुफस्सलात) तफसीलवार, ब्योरेवार। सं० पुं० नगर के आसपास के स्थान, प्रान्त।
मुफस्सिर- वि० (अ०) (बहु० मुफस्सरीन) तफसीर या विवरण बतलाने वाला।
मुफाखरत- स्त्री० (अ०) फख्र या शेखी करना।
मुफाख़िर- वि० (अ०) (स्त्री० मुफाखिरा) फख्र या अभिमान करने वाला।
मुफाजात- वि० (अ०) अचानक, सहसा। यौ०- मर्ग-ए-मुफाजात = अचानक होने वाली मृत्यु।
मुफारक़त- स्त्री० (अ०) जुदाई, वियोग, बिछोह।
मुफ़ीज़- वि० (अ०) फैज़ पहुँचाने वाला, उपकार या गुण करने वाला।
मुफीद- वि० (अ०) फायदेमन्द।
मुफ्त- वि० (अ०) जिसमें कुछ मूल्य न लगे, बिना दाम का, सेंत का।
मुफ्तरी- वि० (अ०) इफ्तरा या झूठा अभियोग लगाने वाला। २ धूर्त्ता।
मुफ्ती- पुं० (अ०) १ फतवा या धार्मिक व्यवस्था देने वाला। २ एक प्रकार के न्यायकर्ता।
मुफ्तुल- वि० (अ०) बल दिया हुआ, बटा हुआ। (तार या डोरी)
मुबतला- वि० दे० 'मुब्तला'।
मुबद्दल- वि० (अ०) बदला हुआ, परिवर्तित।
मुबनी- वि० दे० 'मबनी'।
मुबर्रा- वि० (अ०) १ अपवित्र या अशुद्ध वस्तुओं से अलग रखा हुआ, पाक, बरी, साफ। २ निरपराध।
मुबलिग़- पुं० (अ०) (बहु० मुबालिग़) धन की संख्या, रकम। जैसे- मुबलिग़ पचास रुपए।
मुबश्शिर- पुं० (अ०) शुभ समाचार लाने वाला।
मुबस्सिर- पुं० (अ०) १ मर्मज्ञ। २ पारखी।
मुबहम- वि० (अ० मुब्हम) अस्पष्ट, संदिग्ध।
मुबादला- पुं० (अ० मुबादलः) एक चीज लेकर दूसरी चीज़ देना।
मुबादा- अव्य० (फा०) कहीं ऐसा न हो, यह न हो कि।
मुबादी- स्त्री० (अ०) आरम्भ, मूल। वि० प्रकट या प्रकाशित करने वाला।
मुबारक- वि० (अ०) १ जिसके कारण

बरकत हो। २ शुभ, मंगल प्रद।

मुबारकबाद- स्त्री० (अ०+फा०) कोई शुभ बात होने पर यह कहना कि "मुबारक हो"। बधाई, धन्यवाद।

मुबारकबादी- स्त्री० (अ०+फा०) १ "मुबारक" कहने की क्रिया, बधाई। २ शुभ अवसरो पर गाए जाने वाले बधाई के गीत।

मुबारकी- स्त्री० दे० "मुबारकबाद"।

मुबालग़ा- पुं० (अ० मुबालग़ः) बहुत बढ़ा चढ़ा कर कही हुई बात, अत्युक्ति।

मुबाशरत- स्त्री० (अ०) मैथुन, सम्भोग, प्रसंग।

मुबाह- वि० (अ०) विधि सम्मत, जिसके करने की आज्ञा हो।

मुबाहिसा- पुं० (अ० मुबाहिसः) बहस, बाद विवाद।

मुबाह- वि० (अ०) वैद्य।

मुबाहसा- पुं० (अ० मुबाहसः) बहस।

मुबाही- वि० (अ०) १ अभिमानी। २ प्रतिष्ठित।

मुबैयन- वि० (अ०) जिसका बयान किया हो, वर्णित।

मुबैयना- वि० (अ० मुबैयनः) कहा जाने वाला, कथित।

मुब्तदा- पुं० (अ०) व्याकरण में उद्देश्य या कर्त्ता।

मुब्तदी- पुं० (अ०) वह जो अभी कोई काम सीखाने लगा हो, नौसिखुआ।

मुब्तला- वि० (अ०) (विपत्ति आदि में) फँसा हुआ, ग्रस्त।

मुब्तसिम- वि० (अ०) मुस्कराता हुआ, मन्द मन्द हँसता हुआ।

मुमकिन- वि० (अ०) हो सकने के योग्य, जो हो सकें, संभव।

मुमकिनात- स्त्री० बहु० (अ०) १ सम्भावएँ। २ हो सकने योग्य बातें।

मुमताज़- वि० (अ०) माननीय प्रतिष्ठित।

मुमलूका- वि० (अ० मुमलूमः) अधिकार कब्जे में आया हुआ।

मुमसिक- वि० (अ०) १ मना करने या रोकने वाला। २ कृपण। ३ वीर्य का स्तम्भन करने वाला।

मुमानअत- स्त्री० (अ०) मनाही, तर्जन, निषेध।

मुमालिक- पुं० (अ० "ममलकत" का बहु०) अनेक देश।

मुमिद- वि० (अ०) जिसका इम्तहान या परीक्षा ली जाय।

मुम्तहिन- पुं० (अ०) इम्तहान लेने वाला, परीक्षक।

मुरक्कब- वि० (अ०) (बहु० मुरक्कबात) मिला हुआ, मिश्रित। पुं० १ लिखने की स्याही, मसी। २ वह चीज़ जो कई चीज़ों के मेल से बनी हो।

मुरक्क़ा- पुं० (अ० मुरक्क़ः) १ वह ग्रंथ जिसमें लेखने कला के नमूने या सुन्दर चित्र संगृहीत हों। २ फकीरों की गुदड़ी।

मुरग़ाबी- स्त्री० (फा०) (मुर्ग़+आबी) मुरगे की जाति का एक पक्षी, जल कुक्कुट।

मुरग़ी- स्त्री० (फा०) मुर्ग़ नामक प्रसिद्ध पक्षी की मादी।

मुरतद- पुं० (अ० मुर्त्तद) वह जो इस्लाम के विरुद्ध हो, काफिर।

मुरत्तब- वि० (अ०) जो तरतीब या क्रम लगाया गया हो, क्रमबद्ध, व्यतस्थित।

मुरत्तिब- पुं० (अ०) तरतीब या क्रम लगाने वाला।

मुरदन- पुं० (फा० मुर्दन) मृत्यु को प्राप्त होना, मरना।

मुरदनी- स्त्री० (फा० मुर्दन) १ मृत्यु के समय होने वाला आकृति का विकार। २ शव के साथ उसकी अन्त्येष्टि के लिये जाना।

मुरदा- पुं० (फा० मुर्दः) (बहु० मुर्दागान) वह जो मर गया हो, मरा हुआ, मृत। वि० १ मरा हुआ, मृत। २ जिसमें कुछ भी दम न हो। ३ मुरझाया हुआ।

मुरदार- वि० (फा०) १ मृत, मरा हुआ। २ अपवित्र, अस्पृश्य। पुं० १ मृत शरीर, शव। २ एक प्रकार की गाली (स्त्रियाँ)।

मुरदारसंग- पुं० (फा०) फूँके हुए सीसे और सिन्दूर से बना एक औपध, मुरदा संख।

मुरब्बा- पुं० (अ० मुरब्बः) चीनी या मिसरी आदि की चाशनी में रक्खा हुआ फलों या मेवों आदि का पाक। वि० (अ० मुरब्बऽ) चौकोर, चौखूँटा। पुं० चार चार चरणों की एक प्रकार की कविता।

मुरब्बी- पुं० (अ०) १ संरक्षक, सर परस्त। २ पालन पोपण करने वाला।

मुरव्वज- वि० (अ०) जिसका रवाज या प्रचार हो, प्रचलित।

मुरव्वत- स्त्री० (अ०) १ शील, संकोच, लिहाज। २ भलमनसी, आदमीयत।

मुरशिद- पुं० (अ०) १ उत्तम और शुभ बातें बतलाने वाला। २ अध्यात्म का उपदेश देने वाला। ३ शिक्षक, गुरु।

मुरसल- पुं० (अ०) १ दूत। २ पैगम्बर।

मुरसिल- वि० (अ०) भेजने वाला।

मुरसिला- पुं० (अ० मुर्सिलः) १ भेजा हुआ पत्र आदि। २ भेजने वाला, प्रेषक। वि० भेजा हुआ, प्रेषित।

मुरस्सा- वि० (अ० मुरस्सः) जिसमें नग आदि जड़े हों, जड़ाऊ।

मुरस्साकार- वि० (अ०+फा०) (मुरस्सा-कारी) नगीने जड़ने वाला।

मुराक़बा- पुं० (अ० मुराक़बः) १ आशा करना। २ रक्षा करना। ३ ईश्वर की ओर ध्यान करना।।

मुराक़बत- स्त्री० दे० "मुराक़बा"।

मुराजअत- स्त्री० (अ०) वापस होना, लौटना, प्रत्यावर्त्तन।

मुराद- स्त्री० (अ०) १ अभिलाषा, कामना। मुहा०- मुराद पाना = मनोरथ पूर्ण होना। मुराद माँगना = मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना। २ अभिप्राय, आशय, मतलब।

मुरादिफ- वि० (अ०) पर्यायवाची।

मुरादी- वि० (अ०) १ अनुकूल, अपनी इच्छा या मुराद के अनुसार। २ लाक्षणिक (अर्थ)।

मुराफा- पुं० (अ० मुराफअ) (बहु० मुराफआत) १ प्रार्थना पत्र। २ दावा। ३ अपील।

मुरासला- पुं० (अ० मुरासलः) (बहु० मुरासलात) पत्र, चिट्ठी।

मुरासलात- पुं० (अ०) पत्र व्यवहार।

मुरीद- पुं० (अ०) चेला, शिष्य।

मुरीदी- स्त्री० (अ० मुरीद) शागिर्दी, शिष्यता।

मुरौवत- स्त्री० दे० "मुरव्वत"।

मुर्ग़- पुं० (फा०) (बहु० मुर्ग़ान) एक प्रसिद्ध पक्षी जो कई रंगों का होता है इसके नर के सिर पर कलगी होती है।

मुर्तकिब- वि० (अ०) १ काम में लगाने वाला। २ दोषी। जैसे- जुर्म का मुर्तकिब।

मुर्तजा- वि० (अ०) चुना हुआख् बढ़िया। पुं० हजरत अली की एक उपाधि।

मुर्तहन- वि० (अ०) रेहन रखा हुआ।

मुर्तहिन- पुं० (अ०) वह जो दूसरों की चीजें अपने पास रेहन रखे महाजन, बंधकी।

मुर्दा- पुं० दे० "मुरदा"।

मुर्दन- पुं० (फा०) मृत्यु को प्राप्त होना, मरना।

मुर्सला- वि० (अ० मुर्सलः) प्रेषित।

मुल- स्त्री० (अ०) शराब।

मुलक्क़ब- वि० (अ०) जिसको कोई लक़ब या नाम दिया गया हो, नाम या उपाधि से युक्त।

मुलज़िम- वि० (अ० मुल्ज़म) (बहु० मुलजिमान) जिस पर इलज़ाम या अभियोग लगा हो, अभियुक्त।

मुलतवी- वि० दे० "मुल्तवी"।

मुलब्बस- वि० (अ०) १ मिला हुआ। २ जिसने लिबास या कपड़े पहने हों।

मुलम्मा- पुं० (अ० मुलम्मः) १ किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह, गिलट, कलई। २ ऊपरी और झूठी दिखावट।

मुलहक़- वि० (अ०) १ पहुँचने या पहुँचाने वाला। २ लगा हुआ।
मुलहिद- वि० काफिर, अधर्मी।
मुलाक़ात- स्त्री० (अ०) १ आपस में मिलना, भेंट, मिलन। २ मेल मिलाप।
मुलाक़ाती- वि० (अ०) १ जिससे मुलाक़ात हो। २ मित्र, परिचित। वि० मुलाक़ात सम्बन्धी।
मुलाज़िम- पुं० (अ०) (बहु० मुलाज़िमान) नौकर, सेवक।
मुलाज़िमत- स्त्री० (अ०) नौकरी, सेवा।
मुलाज़िमा- स्त्री० (अ०) सेविका, परिचारिका।
मुलातफ़त- स्त्री० (अ०) १ कृपा। २ सहृदयता।
मुलायम- वि० (अ०) १ "सख्त" का उलटा, जो कड़ा न हो। २ हलका, मन्द, धीमा। ३ नाजुक, सुकुमार। ४ जिसमें किसी प्रकार की कठोरता या खिंचाव न हो।
मुलायमत- स्त्री० (अ०) मुलायम का भाव, मुलायम पन।
मुलाहज़ा- पुं० (अ० मुलाहज़ः) १ निरीक्षण, देखभाल। २ संकोच, लिहाज। ३ रिआयत।
मुलूक- पुं० (अ०) "मलिक" (बादशाह) का बहु०।
मुलूल- वि० (अ० दुःखी, रंजीदा।
मुलैयन- वि० (अ०) पाखाना लाने वाला, दस्तावर, रेचक।
मुल्क- पुं० (अ०) १ राज्य। २ देश।
मुल्की- वि० (अ०) मुल्क या देश सम्बन्धी, देश का। पुं० नागरिक।
मुल्तजी- वि० (अ०) १ शरण चाहने वाला। २ इल्तजा या प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।
मुल्तवी- वि० (अ०) जो कुछ समय के लिये रोक या टाल दिया गया हो, स्थगित।
मुल्तमिस- वि० (अ०) इल्तमास या प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।
मुल्ला- पुं० (अ०) १ बहुत बड़ा विद्वान्। २ शिक्षक।
मुवक्कल- पुं० (अ० मुवक्किल) वह जो किसी को अपना वकील बनावे।
मुवज्जह- वि० (अ०) तवारीख या इतिहास लिखने वाला, इतिहास लेखक।
मुवर्रिखा- वि० (अ० मवर्रिखः) १ लिखा हुआ, लिखित। २ अमुक तिथि को लिखित। जैसे- मुवर्रिखा २६ जून १६३५।
मुवहिद- वि० (अ०) १ अस्तिक, ईश्वर वादी। २ एकेश्वर वादी।
मुवाखज़ा- पुं० (अ० मुआखजः) १ जवाब या कैफियत माँगना, कारण पूछना। २ क्षति पूर्ति, नुकसान।
मुख़ज़ादार- पुं० (अ० मुवाखज़ः+फा० दार) जवाब देह, उत्तर दायी।
मुवैयद- वि० (अ०) ताईद या समर्थन करने वाला।
मुशकिल- वि० दे० "मुश्किल"।
मुशख्खास- जाँचा हुआ, परीक्षित।
मुशद्दद- वि० (अ०) जिस पर तशदीद लगाई गई हो, द्वित्व किया हुआ।
मुशज्जर- वि० (अ०) जिस पर शज्र या बेल बूटे बने हों, बूटेदार।
मुशफिक़- वि० (अ०) (क्रि० वि० मुशफिक़ाना) १ दया करने वाला, मेहरबान। २ प्रिय मित्र।
मुशफिक़ाना- वि० (अ० मुशफिक़ानः) मुशफिक या मित्र का सा।
मुशब्बह- वि० (अ०) समान, तुल्य। पुं० जिसके साथ तशबीह या उपमा दी जाय, उपमान।
मुशरिक- वि० (अ०) १ शरीक करने वाला, सम्मिलित करने वाला। पुं० वह जो ईश्वर के अतिरिक्त और देवताओं को भी सृष्टि का कर्त्ता मानता हो, देव पूजक।
मुशरिफ- वि० (अ०) १ ऊँचा होने वाला, उच्च। पुं० प्रधान नेता।
मुशरिब- पुं० दे० "मिशरब"।
मुशार्रफ- वि० (अ०) १ जिसे ऊँचा स्थान

दिया गया हो, उच्च। २ प्रतिष्ठित, माननीय।
मुशर्रह- वि० (अ०) जिसकी शरह या व्याख्या की गई हो, टीका युक्त।
मुशर्रिह- वि० (अ०) शरह या टीका करने वाला।
मुशाफह- पुं० (अ०) सामने होकर बातें करना। यौ०- बिल्-मुशाफद = सामने होकर, दूब दू, प्रत्यक्ष।
मुशावह- वि० (अ०) मिलता जुलता, समान रुप या आकार वाला, समान, तुल्य।
मुशादहत- स्त्री० (अ०) मिलता जुलता होने का भाव, रुप आदि की समानता, तुल्यता, समरुपता।
मुशायखा- पुं० (अ० "शेख" का बहु०) शुख, मुल्ला आदि धार्मज्ञ लोग।
मुशायरा- पुं० (अ० मुशायरः) वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिल कर शेर या गजलें पढ़ें, कवि सम्मेलन।
मुशारिक- वि० दे० "शरीक"।
मुशारक़त- स्त्री० दे० "शराकत"।
मुशार- वि० (अ०) जिसकी ओर इशारा या सुंकेत कया गया हो।
मुशारुनइलैह- वि० (अ०) १ जिसकी ओर इशारा या संकेत कया गया हो। २ उल्लिखित, उक्त।
मुशावरत- स्त्री० दे० "मशवरत"।
मुशाहरा- पुं० (अ० मुशाहरः) वेतन, तनख्वाह, महीना।
मुशाहिद- वि० (अ०) देखने वाला।
मुशाहिदा- पुं० (अ० मुशाहिदः) दर्शन करने, देखना।
मुशीर- पुं० (अ०) १ इशारा या संकेत करने वाला। २ मशविरा या परामर्श देने वाला। ३ राजा का मंत्री या अमात्य।
मुश्क- पुं० (फा०) कस्तूरी।
मुश्कबू- वि० (फा०) जिसमें मुश्क या कस्तूरी की सुगन्ध हो।
मुश्कबेद- पुं० (अ०) एक प्रकार का बेद का पौधा जिसके फूल सुगन्धित होते हैं।
मुश्किल- वि० (अ०) कठिन, दुष्कर। स्त्री० (बहु० मुश्किलात) १ कठिनता, दिक्कत। २ मुसीबत, विपत्ति।
मुश्किलकुशा- पुं० (अ०+फा०) (भाव० मुश्कलं कुशाई) १ वह जो कठिनाईयाँ दूर करे। २ परमात्मा, परमेश्वर।
मुश्कीं- वि० दे० "मुश्की"।
मुश्की- वि० (फा०) १ जिसमें मुश्क या कस्तूरी मिली हो। २ मुश्क या कस्तूरी के रंग का, बहुत काला। पुं० ऐ प्रकार का घोड़ा।
मुश्कें- स्त्री० (दे०) कंधा और कोहनी के बीच का भाग, भुजा, बाँह। मुहा०- मुश्कें कसना या बाँधना = अपराधी आदि की भुजाएँ पीठ की ओर कस कर बाँधना।
मुश्त-. स्त्री० (फा०) हाथ की बँधी हुई मुट्ठी।
मुश्तइल- वि० (अ०) लपटें निकालने और भड़कने वाला, प्रव्जलित।
मुश्तक़- वि० (अ०) १ वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द से निकाला या बनाया गया हो। २ बहुत क्रुद्ध।
मुश्तवह- वि० (अ० मुश्तबेह) जिसमें कसी तरह का शुबहा या शक हो, संदिग्ध।
मुश्तमिल- वि० (अ०) जो शामिल हो, सम्मिलित, मिला हुआ।
मुश्तरक- वि० (अ०) जिसमें किसी की शराकत या साझा हो, कई आदमियों का सम्मिलित।
मुश्तरकन- क्रि० वि० (अ०) साझे में।
मुश्तरका- वि० (अ० मुश्तरकः) जिस पर कई आदमियों का समान अधिकार हो, साझे का।
मुश्तरिक- पुं० (अ०) हिस्सेदार।
मुश्तरी- पुं० (अ०) १ खरीदने वाला, माल लेने वाला, ग्राहक, बृहस्पति ग्रह।
मुश्तहर- वि० (अ०) १ जिसकी शोहरत या प्रसिद्धि की गई हो, प्रकाशित।
मुश्तहिर- वि० (अ०) १ शोहरत या प्रसिद्ध करने वाला। २ प्रकाशक।
मुश्तही- वि० (अ०) इश्तहा या कामना

मौक़ा- पुं० (अ० मौक़ः) (बहु० मवाक़ऽ) १ घटना स्थल, वारदात की जगह। २ देश, स्थान, जगह। ३ अवसर, समय।
मौकूफ- वि० (अ०) १ रोका हुआ, बन्द किया हुआ। २ नौकरी से अलग किया हुआ, बरखास्त। ३ रद किया हुआ। ४ अवलंबित।
मौकूफी- स्त्री० (अ० मौकुफ) १ मौकुफ होने क्रिया या भाव। २ बन्द किया जाना। ३ नौकरी से हटाया जाना।
मौज़- स्त्री० (अ०) (बहु० अमवाज) १ पानी की लहर। २ मन की उमंग, जोश।
मौज़ा- पुं० (अ० मौजः) (बहु० मवाजऽ) १ जगह। २ खेत। ३ गाँव।
मौजूँ- वि० (अ०) (भाव० मौजूनियत) ठीक, उचित।
मौजूद- वि० (अ०) १ उपस्थित, हाजिर। २ प्रस्तुत, तैयार।
मौजूदगी- स्त्री० (अ०) उपस्थिति, हाजिरी।
मौजूदा- वि० (अ० मौजूदः) इस समय का, वर्तमान काल का।
मौजूदात- स्त्री० (अ०) १ सृष्टि की सब वस्तुएँ और प्राणी। २ सेना आदि की हाजिरी।
मौत- स्त्री० (अ०) (बहु० अमवात) मृत्यु।
मौताद- स्त्री० (फा०) मात्रा, खुराक। (औपधा)
मौरुसी- वि० (अ०) बाप दादा से विरासत में मिला हुआ, पैतृक।
मौलवी- पुं० (अ०) मुसलमान धर्म का आचार्य जो अरबी, फारसी आदि का पंडित होता है।
मौला- पुं० (अ०) १ मित्र, सहायक। २ स्वामी। ३ ईश्वर।
मौलाना- पुं० (अ० मौला) बहुत बड़ा विद्वान्, मौलवी।
मौलिद- वि० (अ०) जनम स्थान।
मौलूद- पुं० (अ०) १ नवजात शिशु। २ मुहम्मद साहब के जन्म का उत्सव।
मौसिम- पुं० (अ०) १ उपयुक्त समय। २ ऋतु।
मौसिमी- वि० (अ०) मौसिम का ऋतु सम्बन्धी।
मौसूफ- वि० (अ०) १ जिसकी तारीफ या वर्णन किया गया हो। २ उल्लिखित, उक्त, कथित।
मौसूम- वि० (अ०) नामधारी, नामक।
मौसूल- वि० (अ०) १ मिला हुआ सम्बद्ध। २ प्रापत।
मौहिब- पुं० (अ०) दान।
मौहूबा- वि० (अ० मौहूबः) दान में दिया हुआ।
मौहूबलहू- पुं० (अ०) दान ग्रहण करन वाला।
मौहूम- वि० (अ०) कल्पित।

(य)

यंगा- स्त्री० (फा०) भाई की पत्नी, भाभी।
यक- वि० (फा० मि० सं० एक) एक।
यककूलम- वि० (फा०+अ०) एक सिरे से सब, पूरा। क्रि० वि० एक बारगी, एक ही दफा में।
यकज़बाँ- वि० (फा०) (यकजबानी) एक बात कहन वाला, बात का पक्का, सच्चा।
यकजहत- वि० (फा०) (यकजहती) एक मत, सहमत।
यकजा- क्रि० वि० (फा०) एक ही स्थान में इकट्ठा, एकत्र।
यकजाई- वि० (फा०) जो सब मिल कर एक ही स्थान में हों या रहते हों, एक स्थान में हों या रहते हों, एक स्थान पर मिले हुए।
यकतर्फा- वि० (फा० यकतर्फः) एक पक्षीय।
यकता- वि० (फा०) जिसके जोड़ का और कोई न हो, अनुपम।
यकताई- स्त्री० (फा०) १ यकता या एक होने का भाव। २ अनुपमता, अनोखापन।
यकदिगर- क्रि० वि० (फा०) एक दूसरे को, परस्पर।
यकनशुददोशुद- (फा०) एक नहीं बल्कि

बढ़ाने वाला। पुं० क्षुजा और शक्ति बढ़ाने वाली औषध।

मुश्ताक़- वि० (अ०) (क्रि० वि० मुश्ताक़ाना) जिसको किसी का इश्तियाक़ हो, बहुत अधिक इच्छा या कामना रखने वाला।

मुसक्क़ल- वि० (अ०) जिस पर सिकली की गई हो, जो साफ करके चमकाया गया हो। (प्रायः हथियारों के सम्बन्ध में प्रयुक्त।)

मुसक्खर- पुं० (अ०) जो तसखीर किया गया हो, वश में लाया हुआ, अधीन किया हुआ।

मुसजअ- वि० (अ०) १ एक सा और नपा तुला। २ जिसमें तुक या अनुप्रास हो। पुं० एक प्रकार का अनुप्रास गद्यकाव्य।

मुसत्तह- वि० (अ०) जिसकी सतह बराबर हो, समतल।

मुसद्दक- वि० (अ०) जिसकी तसदीक़ हो गई हो, जिसकी शुद्धता की परीक्षा हो चुकी हो, प्रामाणित।

मुसद्दरा- वि० (अ० मुसद्दरः) जारी किया हुआ, निर्गत।

मुसद्दी- पुं० दे० "मुतसद्दी"।

मुसद्दस- पुं० (अ०) १ जिसके छः पहलू या अंग हों, पट्कोण। २ एक प्रकार की छः चरण वाली कविता।

मुसन्नफ- वि० (अ०) (बहु० मुसन्नफात) बनाया या लिखा हुआ, रचित (ग्रन्थ)।

मुसन्ना- पुं० (अ०) लेख आदि की दूसरी नकल, प्रतिलिपि। वि० (अ० मुसन्नS) कृत्रिम, नकली।

मुसन्निफ- पुं० (अ०) लेखक।

मुसान्नफा- स्त्री० (अ० मुसन्निफः) लेखिका।

मुसफ्फा- वि० (अ०) साफ किया हुआ, शुद्ध।

मुसफ्फी- वि० (अ०) साफ करने वाला। जैसे- कुसफ्फी-ए-खून = खुन साफ करने वाली दवा।

मुसब्बर- पुं० (अ०) एलुआ नामक औषधि।

मुसब्बितह- वि० (अ०) मोहर किया हुआ।

मुसम्मत- स्त्री० (अ०) एक प्रकार की कविता जिसमें एक ही छंद और तुकान्त के अलग अलग कई बन्द होते हैं।

मुसम्मन- वि० (अ०) आठ कोष्ट वाला, अठकोनिया, आठ चरणो की कविता।

मुसम्मम- वि० (अ०) पक्का, दृढ़, निश्चित।

मुसम्मा- वि० (अ०) जिसका नाम रखा गया हो, नामी नामक।

मुसम्मात- स्त्री० (अ०) एक शब्द जो स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता है।

मुसम्मी- वि० (अ०) नाम वाला, नामक, नामधारी।

मुसरिफ- वि० (अ०) व्यर्थ और अधिक व्यय करने वाला।

मुसर्रत- स्त्री० (अ०) खुशी, प्रसन्नता, आनन्द।

मुसलमान- पुं० (अ०) वह जो मुहम्मद साहब के चलाये हुए मजहब या सम्प्रदाय में हो, मुहम्मदी।

मुसलमानी- वि० (अ०) मुसलमान सम्बन्धी, मुसलमान का। स्त्री० मुसलमानों की एक रसम जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है, सुन्नत।

मुसलमीन- पुं० (अ० मुसलिम का बहु०) मुसलमान लोग।

मुसलसल- वि० (अ०) सिलसिले वार, लगातार या क्रम से लगा हुआ।

मुसलिम- पुं० (अ०) मुसलमान,।

मुसलेह- वि० (अ०) १ इस्लाह या सुधार करने वाला, सुधारक। २ परामर्श देने वाला। ३ मारक।

मुसल्लम- वि० (अ०) १ तसलीम किया हुआ, माना हुआ। २ साबुत या पूरा रखा हुआ। ३ पूरा, कुल।

मुसल्लस- पुं० (अ०) १ वह जिसमें तीन

कोण या भुजाएँ हों, त्रिभुज। २ तीन तीन पंक्तियों या पदों की एक प्रकार की कविता।

मुसल्लसी- वि० (अ०) तिकोना।

मुसल्लह- वि० (अ०) जिसके पास हथियार हों, हथियार बन्द।

मुसल्ला- पुं० (अ०) १ वह छोटी दरी आदि जिस पर बैठ कर नमाज पढ़ते हैं। २ नमाज पढ़ने की जगह।

मुसल्सल- क्रि० वि० (अ०) निरंतर, लगातार।

मुसवद्दह- पुं० दे० "मसवदा"।

मुसव्वर- वि० (अ०) बनाया या अंकित किया हुआ। पुं० दे० "मुसव्विर"।

मुसव्विर- वि० (अ०) तसवीर बनाने वाला, चित्रकार।

मुसव्विरी- स्त्री० (अ०) तसवीरें बनाने का काम, चित्र कला।

मुसहफ- पुं० (अ० मुस्हफ) दस्त लाने वाली दवा, रेचक पदार्थ।

मुसाफत- स्त्री० (अ०) १ दूरी, अंतर। २ परिश्रम।

मुसाफहा- पुं० (अ० मुसाफहः) भेंट होने के समय मित्र से हाथ मिलाना।

मुसाफात- पुं० बहु० (अ०) मित्रता, दोस्ती।

मुसाफिर- पुं० (अ०) सफर करने वाला, यात्री।

मुसफिरखाना- पुं० (अ०+फा०) मुसाफिरों के ठहरने की जगह।

मुसफिरत- स्त्री० (अ०) १ सफर करना। २ विदेश, परदेश।

मुसाफिराना- वि० (अ० मुसाफिर से फा०) मुसाफिरों का, यात्री सम्बन्धी।

मुसाफिरी- स्त्री० दे० "मुसाफिरात्"।

मुसावात- स्त्री० (अ०) १ बराबरी, समानता। २ नित्य प्रति की सामान्य बातें या घटनायें। ३ लापरवाही, निश्चिन्तता। ४ गणित में समीकरण।

मुसावी- वि० (अ०) बरावर, तुल्यच।

मुसाहलत- स्त्री० (अ०) आलस्य, शिथिलता।

मुसाहिब- पुं० (अ०) धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्ती।

मुसाहिबत- स्त्री० (अ०) मुसाहिब का काम, पास बैठना।

मुसाहिबी- स्त्री० दे० "मुसाहिबत"।

मुसिन- वि० (अ०) जिसका सिन या उम्र ज्यादा हो, वृद्ध, बुड्ढा।

मुसीह- वि० (अ०) सही या ठीक करने वाला, भूल सुधारने वाला।

मुसीन- वि० (अ०) वृद्ध, वयोवृद्ध।

मुसीबत- स्त्री० (अ०) (बहु० मसायब) १ तकलीफ, कष्ट। २ विपत्ति, संकट।

मुसीबतज़दा- वि० (अ०+फा० जदः) विपत्ति ग्रस्त, संकट ग्रस्त।

मुस्किर- वि० (अ०) नशा पैदा करने वाला, मादक।

मुस्किरात- पुं० (अ० मुसकिर का बहु०) नशा पैदा करने वाली चीजें, मादक द्रव्य आदि।

मुस्तअद- वि० दे० "मुस्तैद"।

मुस्तअफी- वि० (अ०) इस्तीफा या त्याग पत्र देने वाला।

मुस्तअमल- वि० (अ०) १ जो अमल में लाया गया हो, प्रचलित। २ काम में लाया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ।

मुस्तआर- वि० (अ०) उधार या मँगनी लिया हुआ।

मुस्तक़बिल- पुं० (अ०) आने वाला समय, भविष्यतकाल।

मुस्तक़िल- वि० (अ०) १ दृढ़ता पूर्वक स्थापित किया हुआ। २ दृढ़ मजबूत। ३ स्थायी। यौ०- मुस्तक़िल मिज़ाज = दृढ़ निश्चयी।

मुस्तक़ीम- वि० (अ०) सीधा खड़ा हुआ।

मुस्तग़नी- वि० (अ०) १ स्वतंत्र, स्वच्छन्द, आजाद। २ बेपरवाह, मनमौजी। ३ धनवान्। ४ पूर्णकाम, सन्तुष्ट।

मुस्तग़फिर- वि० (अ०) इस्तग़फार या

दया की प्रार्थना करने वाला।
मुस्तग़रक़- वि० (अ०) १ जो गर्क हो, डूबा हुआ। २ लीन।
मुस्तग़ीस- पुं० (अ०) दावा करने वाला, दावेदार।
मुस्तज़ाद- वि० (अ०) बढ़ाया हुआ, अधिक किया हुआ। पुं० एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में कुछ और पद लगा रहता है।
मुस्तज़ाब- वि० (अ०) स्वीकृत, मानी हुई, कबूल (प्रार्थना आदि)।
मुस्तसील- पुं० (अ०) वह चौकोर क्षेत्र जो लम्बा ज्यादा और चौड़ा कम हो, समकोण आयत।
मुस्ददई- वि० (अ०) इस्तदुआ या प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।
मुस्तदीर- वि० (अ०) गोल, गोलाकार।
मुस्तनद- वि० (अ०) १ जो सनद या प्रमाण के रूप में माना जाय। २ जिसने कोई सनद या प्रमाण पत्र प्राप्त किया हो।
मुस्तफा- वि० (अ०) जो साफ किया गया हो। पुं० वह जिसमें मनुश्यों का कोई दुर्गण न हो। (प्रायः पैगम्बर के लिये प्रयुक्त)।
मुस्तफीज़- वि० (अ०) फैज चाहने वाला, लाभ या उपकार की आशा रखने वाला।
मुस्तफीद- वि० (अ०) फायदा चाहने वाला, लाभ का इच्छुक।
मुस्तरद- वि० (अ०) १ वापस या रद्द किया हुआ। २ दोहराया हुआ।
मुस्तवी- वि० (अ०) जिसकी सतह बराबर हो, समतल।
तुस्तस्ना- वि० (अ०) १ विशेप रुप से अलग किया हुआ, पृथक् किया हुआ। २ मुक्त।
मुस्तहक़- वि० (अ०) १ जिसको हक़ हासिल हो। २ अधिकारी, पात्र।
मुस्तहक़म- वि० (अ०) १ पक्का, दृढ़, मज़बूत। २ ठीक, वाजिब।
मुस्ताजिर- पुं० (अ०) १ इजारा या टेका लेने वाला, ठेकेदार। २ कृपक, खेतिहर।
मुसतैद- वि० (अ० मुस्तअद) (मुस्तैदी) १ तत्पर। २ चालाक।
मुस्तैफी- स्त्री० (अ०) वह जिसने इस्तीफा या त्याग पत्र दे दिया हो।
मुस्तौजिब- वि० (अ०) १ जिस पर सजा वाजिब हो, दण्ड योग्य। २ जिस पर कोई बात वाजिब हो, किसी बात का पात्र।
मुस्तौफी- पुं० (अ०) १ वह जो पूरा ऋण चुकता या वापस लेता हो। २ आय व्यय परीक्षक।
मुस्बत- वि० (अ०) १ लिखा हुआ, लिखित। २ प्रमाणित किया हुआ, सिद्ध। पुं० जोड़, धन (गणित)
मुहकम- वि० (अ०) दृढ़, मजबूत, पक्का, पुख्ता।
मुहकमा- पुं० दे० "महकमा"।
मुहक्कक़- वि० (अ०) १ जो जाँच करने पर ठीक निकला हो, परीक्षित, आज़माया हुआ। २ पूरी तरह से ठीक। पुं० एक प्रकार की सुन्द लिपि।
मुहक्कर- वि० दे० "हक़ीर"।
मुक्किक़- पुं० (अ०) (बहु० मुहक्क़क़ीन) वह जो सब बातों की हक़ीक़त या वास्तविकता की जाँच करता हो।
मुहज़्ज़ब- वि० (अ०) तहजीबदार, शिप्ट, सभ्य।
मुहतमल- वि० (अ० मुहृतमल) १ अस्पष्ट, संदिग्ध। २ हो सकने योग्य।
मुहतरम- वि० (अ० मुहृतरम) १ पूज्य, मान्य। २ हो सकने योग्य।
मुहतरमा- स्त्री० (अ० मुहृतरमः) श्रीमती।
मुहतशिम- पुं० (अ० मुहृतशिम) वह जिसके पास बहुत धन और नौकर चाकर हों।
मुहतसिब- पुं० (अ० मुहृतसिब) वह कर्मचारी जो लोगो के आचरण आदि के निरीक्षण के लिए नियुक्त हो।
मुहताज- वि० (अ०) १ जिसके पास कुछ न हो, दरिद्र, ग़रीब। २ जिस किसी बात की अपेक्षा या आवश्यकता हो।
मुहताजखाना- पुं० (अ०+फा० खानः) वह

स्थान जहाँ मुहताज और ग़रीब रहते हों, अनाथालय।

मुहताजी- स्त्री० (अ०) मुहताज होने का भाव, ग़रीबी।

मुहताजगी- दे० "मुहताजी"।

मुहद्दिस- पुं० १ वह जो हदीस (धर्मशास्त्र) का ज्ञाता हो। २ आविष्कारक। ३ व्याख्याता।

मुहन्दिस- पुं० (अ०) गणित और ज्यामिति का ज्ञाता।

मुहब्बत- स्त्री० (अ०) १ प्रेम, प्यार। २ मित्रता, दोस्ती।

मुहब्बतआमेज़- वि० (अ०+फा०) जिसमें मुहब्बत मिली हो, प्रेम पूर्ण। मुहा०- मुहब्बत का दम भरना = स्पष्टरुप से कहना कि मैं अमुक के साथ प्रेम करता हूँ।

मुहम्मद- वि० (अ०) जिसकी बहुत अधिक प्रशंसा हो। पुं० इस्लाम के प्रवर्त्तक अरब के प्रसिद्ध पेगम्बर।

मुहर्रफ- वि० (अ०) बदला और बिगाड़ा हुआ।

मुहर्रम- पुं० (अ०) १ मुसलमानी वर्ष का पहला महीना जिसमें हुसेन की मृत्यु हुई थी और जिमें मुसलमान लोग शोक मनाते हैं। २ शोक, मातम। मुहर्रम की पैदाइश = वह जो परिहास आदि से दूर रहे, रोनी सूरत वाला। यौ०- मुहर्रमी सूरत = हँसी मजाक से सदा दूर रहने वाला।

मुहर्रिक- वि० (अ०) १ हरकत करने या हिलने वाला। २ गति, उत्पन्न करने वाला, संचालक। ३ नेता, नायक, प्रधान।

मुहर्रिर- पुं० (अ०) १ वह जो तहरीर करता या लिखता हो। २ लिखने वाला, लेखक।

मुहर्रिरा- वि० (अ०) मुहर्रिर का काम का पद।

मुहल्ला- पुं० दे० "महल्ला"।

मुहसिन- वि० दे० "मोहसिन"।

मुहाजरत- स्त्री० (अ०) १ अलग होना, पृथक होना। २ एक स्थान छोड कर बसने के लिए दूसरी जगह जाना।

मुहाजिर- पुं० (अ०) (बहु० मुहाजिरीन) १ हिजरत करने वाला, अपना देश छोड़ कर दूसरे देश में जा बसने वाला। २ शरणार्थी।

मुहाजिर- स्त्री० (अ० मुहाजिरः) शरणार्थी स्त्री।

मुहाजिरात- स्त्री० (अ०) शरणार्थी स्त्रियाँ।

मुहाजिरीन- पुं० (अ०) मुहाजिर का बहु०, शरणार्थी लोग।

मुहाज़- पुं० (अ०) सामने वाला भाग, मुक़ाबले का हिस्सा।

मुहाफ़ज़त- स्त्री० (अ०) जिफाज़त, रक्षा।

मुहाफा- पुं० (अ० मुहाफ़ः) स्त्रियों की सवारी की एक प्रकार की पालकी या डोली।

मुहाफ़िज़- पुं० (अ०) १ हिफाज़त या रक्षा करने वाला, रक्षक।

मुहाफ़ज़खाना- पुं० (अ०+फा० खानः) वह स्थान जहाँ किसी कार्यालय या न्यायालय आदि के काग़ज़ पत्र रहते हों।

मुहाफ़िज़त- स्त्री० (अ०) रक्षा, सुरक्षा।

मुहाफ़ज़दफ्तर- पुं० (अ०) किसी कार्यालय या न्यायालय आदि के काग़ज़ पत्र क्रम से रखने वाला अधिकारी।

मुहाबा- पुं० (अ०) १ रिआयत। २ मुरव्वत। ३ मदद।

मुहार- स्त्री० दे० "महार"।

मुहारबा- पुं० (अ० मुहारबः) १ लड़ाई झगड़ा। २ युद्ध।

मुहाल- वि० (अ०) १ जो न हो सकता हो, असम्भव, नामुमकिन। २ कठिन, दुष्कर। पुं० "महाल"।

मुहावरा- पुं० (अ० मुहावरः) (बहु० मुहवरात) १ लक्षण या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो, रोजमर्रा, बोल चाल। २ अभ्यास, आदत।

मुहाश्शा- वि० (अ०) हाशिए पर लिखा हुआ।

मुहासबा- पुं० (अ० मुहास्बः) १ हिसाब, लेखा। २ पूछ ताछ।

मुहासरा- पुं० (अ० मुहासरः) किले या शत्रु की सेना को चारों ओर से घेरना, घेरा।

मुहासिब- पुं० (अ०) १ वह जो हिसाब किताब रखता हो, आय व्यय का लेखा रखने वाला। २ वह जो हिसाब जाँचता हो, आय व्यय परीक्षक।

मुहासिल- पुं० (अ०) कर या लगान आदि से वसूल होने वाली रक़म, राजस्व, लगान।

मुहिब- पुं० (अ०) १ वह जो प्रेम करता हो, प्रेमी। २ मित्र।

मुहिबुल्वतन- पुं० (अ०) देशभक्त।

मुहिबुल्वतनी- स्त्री० (अ०) देशभक्ति।

मुहिम- स्त्री० (अ०) १ कठिन या बड़ा काम। २ लड़ाई, युद्ध। ३ फौज की चढ़ाई, आक्रमण।

मुहिम्मात- स्त्री० (अ० मुहिम का बहु०) १ बड़े बड़े काम। २ युद्ध।

मुहीत- वि० (अ०) चारो ओर से घेरने वाला। पुं० १ घेरा। २ समुद्र जो पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए है।

मुहीब- वि० (अ० मुहीब) भयानक, डरावना।

मुहैया- वि० (अ०) तैयार, मौजूद।

मुह्र- स्त्री० दे० "मोहर"।

मू- पुं० (फा०) बाल, रोम। यौ०- मू-ब-मू = १ बाल बाल। २ बिलकुल ज्यों का त्यों।

मूए- पुं० (फा०) बाल, केश,।

मूजिद- वि० (अ०) इजाद करने वाला, आविष्कर्ता।

मूजिब- पुं० (अ०) (बहु० मूजिबात) कारण, हेतु।

मूज़ी- वि० (अ०) १ ईजा या कष्ट पहुँचाने वाला, पीड़क। २ दुष्ट।

मूनिस- पुं० (अ०) १ मित्र, दोस्त। २ सहायक, मददगार।

मूबमू- क्रि० वि० (अ०) १ हर बाल में, बाल बाल में। २ सब बालों में।

मूबाफ- पुं० (फा०) बालों में बाँधने का फीता या डोरा।

मूरिस- पुं० (अ०) १ वह जो कुछ सम्पत्ति और उसका वारिस या उत्तराधिकारी छोड़ जाय। २ पूर्वज, पुरखा।

मूश- पुं० (फा० मि० सं० मूषक) चूहा, मूसा।

मूशिगाफी- स्त्री० (अ०+फा०) बाल की खाल निकालना, बहुत तर्क करना।

मुसिया- स्त्री० (अ० मुसियः) वसीयतकर्त्री।

मूसी- वि० (अ०) (स्त्री० मूसिपः) वसीयत करने वाला।

मूसीक़ार- पुं० (फा०) १ एक कल्पित पक्षी जो बहुत अच्छा गाने वाला माना जाता है। २ गड़ेरियों की एक प्रकार की बाँसुरी।

मूसीक़ी- स्त्री० (अ०) संगीत शास्त्र।

मूसीलहु- पुं० (अ०) वसीयत भोगी।

मेअराज- पुं० (अ०) १ ऊपर चढ़ने की सीढ़ी, श्रेणी। २ मुहम्मद साहब का स्वर्ग में खुदा के पास जाना और वहाँ से लौट कर आना।

मेख- स्त्री० (फा०) कील, काँटा।

मेखचू- पुं० (फा०) हथौड़ा।

मेज़- स्त्री० (फा०)वह लम्बी, चौड़ी और ऊँची चौकी जिस पर काग़ज, किताब आदि रख कर लिखते पढ़ते हैं, टेबुल।

मेजबान- पुं० (फा०) (भाव० मेजबानी) वह जिसके यहाँ कोई मेहमान आवे, आतिथ्य करने वाला गृहस्थ।

मेदा- (अ० मेअदः) पेट, उदर।

मेमार- पुं० (अ० मेअमार) मकान बनाने वाला, राज, थवई।

मेमारी- स्त्री० (अ० मेअमार) मेमार का राज का काम।

मेराज- पुं० दे० "मेअराज"।

मेवा- पुं० (फा० मेवः) किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाये हुए बढ़िया फल।

मेवाफरोश- पुं० (फा०) मेवे या फल बेचने

वाला।
मेश– स्त्री० (फा० मि० सं० मेप) भेड़, गाड़र।
मेहतर– पुं० (फा०) १ बहुत बड़ा आदमी, महापुरुष। २ सरदार, नायक। ३ एक प्रकार के भंगी।
मेहन– स्त्री० (अ०) मेहनत का बहु०।
मेहनत– स्त्री० (अ० मिहनत) (बहु० मेहन) श्रम, प्रयास।
मेहनताना– पुं० (अ० मिह्नतानः) वह धन जो गेहनत या परिरम के बदले में दिया जाय।
मेहनती– वि० (अ० मेहनत) मेहनत या परिश्रम करने ताला, परिश्रमी।
मेहमान– पुं० (फा०) पाहुना१
मेहमानखाना– पुं० (फा०) मेहमानों के ठहरने की जगह।
मेहमानदार– पुं० (फा०) वह जिसके यहाँ मेहमान आवे।
मेहमानदारी– स्त्री० (फा०) मेहमान की खातिर, अतिथि सत्कार।
मेहमाननवाज़– पुं० (फा०) मेहमानों की खातिर करने वाला।
मेहमानी– स्त्री० (फा०) १ मेहमान होने की क्रिया या भाव। २ दावत, भोज।
मेहर– पुं० स्त्री० दे० "मेह"।
मेहरवान– पुं० (फा० मेहवान) १ दयालु, कृपालु। २ मित्र।
मेहरबानी– स्त्री० (फा० मेहबानी) कृपा, दया, अनुग्रह।
मेहराब– स्त्री० दे० "महराब"।
मेह– स्त्री० (फा०) १ दया, कृपा, मेहरबानी। २ सहानुभूति, हमदर्दी। ३ सुख और सम्पन्नता। पुं० १ सूर्य्य, सूरज। २ एक प्रकार का सौर मास जो कर्तिक के लगभग पड़ता है।
मै– स्त्री० (फा० मै-कदः) मैखाना, मधुशाला, कलवरिया।
मैकश– वि० (फा०) शाराब पीने वाला।
मैकशी– स्त्री० (फा०) शराब पीना, मद्यपान।
मैखाना– पुं० (फा० मैखानः) वह स्थान जहाँ शराब मिलती या बिकती हो।
मैखुश– वि० (फा०) खट मीठा।
मैख्वार– पुं० (फा०) शराब पीने वाला, मद्यप।
मैख्वारी– स्त्री० (फा०) शराब पीना, मद्य पान।
मैदा– पुं० (फा० मैदः)बहुत महीन आटा।
मैदान– पुं० (फा०) १ लम्बा चौड़ा समतल स्थान जिसमें पहाड़ी या घाटी आदि न हो, सपाट भूमि। २ वह लम्बी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३ किसी प्रकार का क्षेत्र।
मैनोशी– स्त्री० (फा०) शराब पीना, मद्य पान।
मैपरस्त– पुं० (फा०) मद्य का उपासक, मद्यप, शराबी।
मैपरस्ती– स्त्री० (फा०) मद्य की उपासना, मद्य पान।
मैफरोश– पुं० (फा०) शराब बेचने वाला।
मैमनत– स्त्री० (अ०) १ सम्पन्नता। २ सुख।
मैमूँ– पुं० (फा०) बन्दर, वानर। वि० १ भाग्यवान्। २ शुभ।
मैयित– स्त्री० (फा०) १ मृत्यु, मौत। २ मृत शरीर, शव।
मैल– पुं० (अ०) १ प्रवृत्ति, झुकाव। २ अनुराग, प्रेम, चाह। ३ सुरमा लगाने की सलाई।
मैलान– पुं० (अ०) १ प्रवृत्ति। २ अनुराग, चाह।
मैसाज़– वि० (फा०) शराब बनाने वाला।
मैसाज़ी– स्त्री० (फा०) शराब बनाने का काम।
मोअस्सर– वि० दे० "मुअस्सिर"।
मोआयना– पुं० दे० "मुआयना"।
मोजज़ा– पुं० (अ० मोअजिजः) अद्‌भुत कृत्य, करामात।
मोज़ा– पुं० (फा० मोजः) १ पैरों में पहनने

का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा, पायताबा, जुर्राब। २ पैर मे पिंडली के नीचे का भाग।

**मोतक़िद-** वि० (अ० मोअतक़िद) १ एतक़ाद या विश्वास करने वाला। २ किसी धर्म का अनुयायी।

**मोतमद-** वि० (अ० मुअतमद) एतमाद या विश्वास के लायक विश्वसनीय।

**मोतमिद-** वि० (अ० मुअतमिद) एतमाद या विश्वास करने वाला।

**मोतरिज़-** वि० (अ० मुअतरिज) एतराज या आपत्ति करने वाला।

**मोताद-** स्त्री० (अ० मअताद) औपधादि की निश्चित मात्रा।

**मोविद-** वि० (अ० मुअविद) इबादत या भजन करने वाला, पूजक।

**मोम-** पुं० (फा०) (वि० मोमी) वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।

**मोमिन-** पुं० (अ०) १ इस्लाम और खुदा पर ईमान लाने वाला। २ धर्मनिष्ठ मुसलमान। ३ मुसलमान जुलाहा।

**मोमिना-** स्त्री० (अ० मोमिनः) मुसलमान स्त्री।

**मोमियाई-** स्त्री० (फा०) नक़ली शिलाजीत।

**मोमी-** वि० (फा०) मोम का, मोम सम्बन्धी।

**मोर-** पुं० (फा०) च्यूँटी, पिपीलिका।

**मोरचा-** पुं० (फा० मोरचः) १ वह गड्ढा जो गढ़ के चारो ओर रक्षा के लिये खोदा जाता है। २ वह स्थान जहाँ से सेना गढ़ या नगर आदि की रक्षा करती है। मुहा०- मोरचा बंदी करना = गढ़ के चारों ओर यथास्थान सेना नियुक्त करना। मोरचा जीतना या मारना = शत्रु के मोरचे पर अधिकार करना। मोरचा बाँधना = दे० "मोरचा बन्दी करना"। मोरचा लेना = युद्ध करना।

**मोहकम-** वि० दे० "मुहकम"।

**मोहतमिम-** पुं० (अ० मुहतमिम) प्रबन्ध कर्त्ता, व्यवस्थापक।

**मोहतमिल-** वि० (अ० मुहतमिल) बरदाश्त करने वाला, सहन शील।

**मोहताज-** वि० दे० "मुहताज" (मुहा०- ताज के विकारी और यौगिक के लिए दे० "मुहताज" के विकारी और यौगिक)।

**मोहमिल-** वि० (अ० मुहमिल) १ जिसका कोई अर्थ न हो, निरर्थक। २ छोड़ा हुआ, तयक्त।

**मोहमिला-** स्त्री० (अ० मुहमिलः) एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें केवल बिना बिनदी या नुक़्ते वाले अक्षरों का व्यवहार होता है।

**मोहर-** स्त्री० (फा० मुह) १ अक्षर, चिह्न आदि दबा कर अंकित करने का ठप्पा, मुद्रा। २ काग़ज़ आदि पर ली हुई उपयुक्त वस्तु की छाप। ३ अशरफी, स्वर्ण मुद्रा।

**मोहरा-** पुं० (फा० मुहरः) १ किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २ किसी पदार्थ का ऊपरीं या अगला भाग। ३ सेना की अगली पंक्ति। ४ फौज कीं चढ़ाई का रुख। मुहा०- मोहरा लेना = १ सेना का मुक़ाबला करना। ५ हड्डी की गुरिया या दाना। ६ कौड़ी, घोंघा। ७ बड़ी कौड़ी जिससे रगड़ कर कोई चीज़ चमकाते हैं। ८ चमक, पालिश। ६ शतरंज खेलने की गोटी।

**मोहलत-** स्त्री० (अ० मुहलत) १ फुरसत, छुट्टी। २ अवधि।

**मोहलिक-** वि० (अ० मुहलिक) १ हलाक करने या मार डा़लने वाला। २ घातक (रोग)।

**मोह-** स्त्री० दे० "मोहर"।

**मोहसिन-** वि० (अ० मुहसिन) एहसान या उपकार करने वाला।

**मोहसिनकुश-** वि० (अ०+फा०) वह जो एहसान या उपकार न माने, कृतघ्न।

**मौइदत-** स्त्री० (अ०) वचन, वादा।

**मौऊद-** वि० (अ०) जिसके संबंध में वचन दिया गया हो।

दो, एक तो था ही, एक और भी हो गया।
यकबयक- क्रि० वि० दे० "यकबारगी"।
यकबारगी- क्रि० वि० (फा०) एक बारगी, अचानक, सहसा।
यकमुश्त- क्रि० वि० (फा०) एक ही बार में, एक साथ (रुपया आदि चुकाना)।
यकरंग- वि० (फा०) (यकरंगी) १ अन्दर और बाहर एक सा। २ निष्कपट।
यकलख्त- वि० दे० "यक़-क़लम"।
यकशंबा- पुं० (फा० यक-शंबः) रविवार, इतवार।
यकसर- क्रि० वि० (फा०) निपट, नितान्त, बिलकुल।
यकसाँ- वि० (फा०) एक सा, एक ही तरह का, समान।
यकसानियत- स्त्री० (अ०) समानता।
यकसू- वि० (फा०) (यकसूई) १ जो एक ही तरफ हो। २ ठहरा हुआ हुआ, स्थिर।
यकायक- क़्रि० वि० (फा०) अचानक, सहसा, एक बारगी।
यक़ीन- पुं० (अ०) विश्वास, एतबार। मुहा०- यक़ीन लाना = विश्वास करना, मानना।
यकीनन- क्रि० वि० (अ०) निश्चित रुप से, अवश्य।
यक़ीनी- वि० (अ०) बिलकुल निश्चित, अवश्यम्भावी, ध्रुव।
यक्का- वि० (फा० यक्कः) १ एक से संबंध रखने वाला। २ अकेला, एकाकी। ३ अनुपम, बेजोड़। पुं० एक प्रकार की एक घोड़े की सवारी, एक्का।
यक्काताज- वि० (फा०) जो अकेला ही शत्रुओं का सामना करने को तैय्यार हो।
यक्कुम- वि० (फा०) प्रथम, पहला।
यख- पुं० (फा०) जमा हुआ पाला या बरफ। वि० बरफ की तरह ठंढा, बहुत ठंढा।
यख़नी- स्त्री० (फा०) उबले हुए मांस का रसा, शोरबा।
यग़मा- पुं० (फा० यग़मः) १ लूट, डाका। २ तुर्किस्तान का एक नगर जहाँ के निवासी बहुत सुन्दर होतते हैं।
यग़माई- स्त्री० (फा०) डाकू, लुटेरा।
यग़मान- पुं० दे० "यग़मा"।
यगाँ- क्रि० वि० (फा०) अकेले।
यगानगत- स्त्री० (फा० यगाँ) १ रिश्तेदारी, आपसदारी, सम्बन्ध। २ अनोखापन, अनुपमता। ३ एक होने का भाव, एकता। ४ मेलजोल, एका।
यगानगी- दे० "यगानगत"।
यगाना- वि० (फा० यगानः) १ पास का रिश्तेदार, सम्बन्धी, अपना। २ अनुपम, बेजोड़। स्त्री० वह स्त्री जो किस स्त्री के साथ चपटी लड़ाना चाहती हो, दुगाना का उल्टा।
यज़दान- पुं० (फा० यज्दान) ईश्वर का एक नाम। यौ०- यज़दान-परस्ती = ईश्वर की उपासना। २ आस्तिकता।
यज़दानी- वि० (फा० यज्दानी) ईश्वर सम्बन्धी, ईश्वरीय। पुं० अग्नि पूजक, पारसी।
यज़ीद- पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो खलीफा बनना चाहता था और जिसने करबला में हजरत इमाम हुसैन की हत्या कराई थी।
यज्द- पुं० (फा०) १ ईरान का एक प्रसिद्ध नगर। २ ईश्वर।
यज्दान- पुं० दे० "यजदान"।
यतीम- पुं० (अ०) १ वह बालक जिसका पिता मर गया हो। २ अनाथ।
यमीमखाना- पुं० (अ०+फा० ख़ानः) यतीमों के रहने की जगह, अनाथालय।
यतीमी- स्त्री० (अ०) यतीम या अनाथ होने की दशा या भाव, अनाथयन।
यद- पुं० (अ०) हाथ, हस्त।
यदेतूबा- पुं० (अ०) १ बहुत लम्बा हाथ। ३ दक्षता, प्रवीणता।
यदेबैज़ा- पुं० (अ०) १ बहुत चमकता हुआ और गोरा चिट्टा हाथ। २ हजरत मूसा का वह हाथ जो आग में जल गया था और

जिसमें ईश्वरीय प्रकाश आ गया था।
यम- पुं० (फा०) नदी दरिया।
यमन- पुं० (अ०) अरब के एक प्रसिद्ध प्रान्त का नाम।
यमनी- वि० (अ०) यमन देश का, यमन सम्बन्धी।
यमान- वि० (अ०) यमन देश का, यमन सम्बन्धी।
यमानी- पुं० (अ०) यमन देश का निवासी। स्त्री० यमन देश की भापा। वि० यमन देश का।
यमीन- पुं० (अ०) १ दाहिना हाथ। २ शपथ, कसम, सौगन्ध। ३ बल, शक्ति, ताक़त। वि० दाहिना, दायाँ। यौ०- दाहिना और बायाँ।
यरकान- पुं० (अ०)कमला या पाण्डु नामक रोग, पीलिया।
यरग़माल- पुं० (फा० यर्ग़माल) १ किसी व्यक्ति या वस्तु को किसी दूसरे के पास उस समय तक जमानत में रखना जब तक उस व्यक्ति को कुछ रुपया न दिया जाय या उसकी कोई शर्त न पूरी कीर जाय, ओल, जमानत। २ वह व्यक्ति या वस्तु जो किसी के पास इस प्रकार रखी जाय।
यर्ग़माल- पुं० दे० "यरग़माना"।
यल्ग़ार- स्त्री० (तु०) आक्रमण, चढ़ाई, धावा।
यल्दा- स्त्री० (फा०) अँधेरी और लम्बी रात।
यशब- पुं० (फा०) एक प्रकार हरा पत्थर जिसकी नादली वनती है।
यशम- पुं० दे० "यशव"।
यसार- पुं० (अ०) १ बायाँ हाथ। २ सम्पन्नता, अमीरी। ३ अभागा।
यसिर- वि० (अ०) सुगम, सरल।
यहूद- पुं० "यहूदी" का बहु०। पुं० वह देश जहाँ हजरत ईसा पैदा हुए थे।
यहूदी- पुं० (इब्रा०) १ यहूद देश का निवासी। २ धनपिशाच।

रुप।
या- अव्य० (फा०) अथवा, वा। अव्य० (अ०) एक प्रकार का सम्बोधन, हे। या रब। याखुदा।
याकूत- पुं० (अ०) लाल नामक रत्न। (इसकी उपमा प्रायः प्रेमिका के होठों से दी जाती है।)
याकूती- वि० (अ०) याकूत या लाल सम्बन्धी। स्त्री० १ एक प्रकार की बहुत पौष्टिक औषध, नोश दारु। २ खीर की तरह का एक व्यंजन।
याग़ी- पुं० (तु०) देश द्रोही।
याजूज- पुं० (अ०) १ उपद्रवी, शरारती, फसादी। २ एक दुष्ट व्यक्ति जो याफिस का लड़का औरा नूह का पोता माना जाता है। इसका एक और भाई माजूज था और ये दानों बहुत बड़े उपद्रवी थे। ३ उत्तरी ध्रुव में रहने वाल एक्सिमो लोग।
याद- स्त्री० (फा०) १ स्मरण शक्ति, स्मृति। २ स्मरण करने की क्रिया।
यादआवरी- स्त्री० (फा०) १ याद आना, स्मरण होना। २ किसी को स्मरण करके उससे मिलना या कुशल मंगल पूछना। जैसे- मैं आपकी याद आवरी की बहुत शुक्रगुजार हूँ।
यादगार- स्त्री० (फा०) स्मृति चिह्न।
यादगारी- स्त्री० दे० "यादगार"।
यादगारेज़माना- स्त्री० (फा०) ऐसी चीज या व्यक्ति जो लोगों को बहुत दिनो तक याद रहे।
याददाश्त- स्त्री० (फा०) १ स्मरण शक्ति स्मृति। २ स्मरण रखने के लिये लिखी हुई कोई बात।
याददिहानी- स्त्री० (फा०) याद दिलाना, स्मरण कराना।
याददिही- स्त्री० (फा०) स्मरण रखना।
यादफरामोश- स्त्री० (फा०) एक प्रकार की बाजी जिसमें यह बदा जाता है कि एक व्यक्ति को जब कोई चीज दे, तो पाने वाला

जाय तो देने वाला कहता है--याद फरामोश।

यादशबखैर- ( फा0+अ0 ) एक पद जिसका व्यवहार किसी अनुपस्थित मित्र या सम्बन्धी का उल्लेख करते समय होता है और जिसका अर्थ है--जिनको याद करते हैं, वे सकुशल रहें।

याद्दाश्त- दे0 "याद-दाश्त"।

यानी- क्रि0 वि0 (अ0 यअनी) अर्थात्, मतलब यह कि।

याने- क्रि0 वि0 दे0 "यानी"।

याफ्त- स्त्री0 ( फा0 ) १ पाने की क्रिया, पाना। २ आय।

याफ्तनी- स्त्री0 ( फा0 ) किसी के जिम्मे बाक़ी रक़म, प्राप्य धन।

याब- प्रत्य0 ( फा0 ) पाने वाला ( यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- काम-याब, फतह-याब )।

याबिन्दा- वि0 ( फा0 याबिन्दः ) पाने वाला।

याबी- स्त्री0 ( फा0 ) पाने की क्रिया, पाना ( यौगिक शब्दों के अन्त में। जैसे- काम-याबी, फतह-याबी )।

याबू- पुं0 ( फा0 ) छोटा घोड़ा, टट्टू।

यार- पुं0 ( फा0 ) १ सहायक, साथी, मददगार। २ मित्र, दोस्त। ३ उप पति, जार। ४ प्रिय, प्रेमी या प्रेमिका।

यारबाज़- वि0 स्त्री0 ( फा0 ) ( यारबाज़ी ) दुश्चरित्रा, पुंश्चली। वि0 पुं0 यार दोस्तों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करने वाला।

यारबाश- वि0 ( फा0 ) ( यारबाशी ) १ यार दोस्तों में ही अधिकांश समय व्यतीत करने वाला मिलनसार। २ कामुक।

यारफरोश- वि0 ( फा0 ) ( यारफरोशी ) खुशामदी, चापलूस।

यारमन्द- वि0 ( फा0 ) दोस्ती निभाने वाला।

यारमार- वि0 ( फा0 यार+हिं0 मारना ) ( यारमारी ) मित्रो के साथ विश्वासघात करने वाला।

याराँ- पुं0 ( फा0 यार का बहु0 ) मित्र लोग, मित्र मंडली।

यारा- पुं0 ( फा0 ) सामर्थ्य।

यारान- पुं0 ( फा0 ) "यार" का बहु0।

याराना- क्रि0 वि0 ( फा0 यारानः ) यार या मित्र की तरह। वि0 मित्रों का सा। पुं0 १ मित्रता। २ स्नेह, प्रेम।

यारी- स्त्री0 ( फा0 ) १ मित्रता। २ स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम।

यारेग़ार- पुं0 ( फा0+अ0 ) १ पहले खलीफ अबूबक्र सिद्दीक जिन्होंने एक गार या गुफा तक मे मुहम्मद साहब का साथ दिया था। २ सब प्रकार की विपत्तियों में साथ देने वाला सच्चा मित्र।

यारेजानी- वि0 ( फा0 ) परम प्रिय, प्राण प्रिय, दिली दोस्त।

याल- स्त्री0 ( तु0 ) १ गरदन। २ घोड़े शेर आदि की गरदन पर के बाल, अयाल, केसर।

यावर- पुं0 ( फा0 ) सहायक।

यावरी- स्त्री0 ( फा0 ) सहायता।

यावा- वि0 ( फा0 यावः ) बेसिर पैर की या ऊट पटाँग ( बात )

यावागो- वि0 ( फा0 ) ( यावागोई ) व्यर्थ की और ऊट पटाँग बातें बकने वाला, बक्वादी।

यास- स्त्री0 ( अ0 ) निराशा।

यासमन- पुं0 ( फा0 ) चमेली।

यासमीन- दे0 "यसमन"।

यसीन- स्त्री0 ( अ0 ) कुरान की एक आयत या मन्त्र जो किसी मरणासन्न व्यक्ति को इसलिए पढ़ कर सुनाया जाता है कि उसका परलोक सुधर जाय। क्रि0 प्र0 पढ़ना।

याहू- ( अव्य0 ) ( अ0 ) हे ईश्वर। पुं0 एक प्रकार का कबूतर जिसका शब्द "याहू" के समान होता है।

यूमन- पुं0 ( अ0 ) १ सौभाग्य, खुश किस्मती। २ सफलता।

यूज़- पुं0 ( फा0 ) चीता नामक जंगली पशु।

वि० सौ, शत।

यूनस- पुं० (इब्रा०) १ स्तम्भ, खम्भा। २ एक पैगम्बर का नाम।

यूनुस- पुं० दे० "सूनस"।

यूरिश- स्त्री० (तु०) आक्रमण, चढ़ाई, धावा।

यूसुफ- पुं० (इब्रा०) हज़रत याकूब के पुत्र जो परम सुन्दर थे और जिन्हें भाइयों ने ईर्ष्या वश बेच डाला था, आगे चल कर इन पर मिस्र की जुलखा आसक्त हो गई थी, इन्होंने बहुत दिनों तक मिस्र पर राज्य किया था।

यूहा- पुं० (अ०) एक प्रकार का कल्पित साँप, कहते हैं कि जब यह हज़ार बरस का हो जाता है, तब इसमें ऐसी शक्ति आ जाती है कि यह जो रुप चाहे, वह धारण कर ले।

येलाक़- पुं० (तु० यीलाक) वह स्थान जहाँ गरमी के दिनों में भी ठंड़क रहती हो, ग्रीष्म निवास।

योम- पुं० दे० "यौम"।

यौम- पुं० (अ०) (बहु० ऐयाम) दिवस, दिन।

यौमउलहिसाब- पुं० (अ०) मुसलमानों आदि के अनुसार वह अन्तिम दिन जब प्रत्येक मनुष्य से उसके कामों का हिसाब माँगा जायगा।

यौमिया- पुं० (अ० यौमियः )एक दिन की मजदूरी। वि० प्रति दिन का, दैनिक।

रंग- पुं० (फा० मि० सं० रंग) १ आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखो से होता है, वर्ण, जैसे- लाल, काला। २ वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज को रंगने के लिये होता है। ३ बदन और चेहरे की रंगत, वर्ण। मुहा०- चेहरे का रंग उड़ना या उतरना= भय या लज्जा से चेहरे की रौनक का जाता रहना, कान्तिहीन हरेलर। रंग बिखरना= चेहरा साफ आर चमकदार होना। रंग बदलना= क्रुद्ध होना, नाराज होना। ४ जवानी, युवावस्था। मुहा०- रंग चूना या टपकरना= युवावस्था का पूर्ण विकास होना, यौवन उमड़ना। ५ शोभा, सौन्दर्य। ६ प्रभाव, असर। मुहा०- रंग जमना= प्रभाव या असर पड़ना। ७ गुण या महत्व का प्रभाव, धाक। मुहा०- रंग जमाना या बाँधना= प्रभाव या गुण दिखलाना। ८ क्रीड़ा, कौतुक, आनंद, उत्सव। यौ०- रंग रैलियाँ= आमोद प्रमोद, मौज। मुहा०- रंग रलना= आमोद प्रमोद करना। रंग में भंग पड़ना= आनन्द में विघ्न पड़ना। ९ मन की उमंग या तरंग, मौज। १० आनन्द, मज़ा। मुहा०- रंगजमना= आनन्द का पूर्णता पर आना, खूब मज़ा होना। ११ दशा, हालत। १२ अद्‌भुत व्यापार, कांड, दृश्य। १३ प्रेम, अनुराग। १४ ढंग, चाल, तर्ज। यौ०- रंग ढंग= १ दशा, हालत। २ चाल ढाल, तौर तरीका। ३ व्यवहार, बरताव। ४ लक्षणा। १५ चौपड़ की गोटियों के दो कृत्रिम विभागों में एक। मुहा०- रंग मारना= बाजी जीतना।

रंगत- स्त्री० (हिं० रंग+त प्रत्य०) १ रंग का भाव । २ मज़ा, आनन्द। ३ हालत, दशा।

रंगमहल- पुं० (फा०+अ०) भोग विलास करने का स्थान।

रंगरली- स्त्री० (फा० रंग+हि० रलना= मिलना) आमोद प्रमोद, आनन्द, क्रीड़ा, चैन।

रंगरेली- स्त्री० दे० "रंग-रली"।

रंगरेज़- पुं० (फा०) वह जो कपड़े रँगने का काम करता हो।

रंसाज़- वि० (फा०) (रंग साजी) १ वह जो चीजों पर रंग चढ़ाता हो। २ रंग बनाने वाला।

रंगीई- स्त्री० (हिं० रंग) रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रंगारंग- वि० (फा०) तरह तरह का, रंग बिरंगा।

रंगीन- वि० (फा०) (रंगीनी) १ रँगा

हुआ, रंगदार। २ विलास प्रिय, आमोद प्रिय। ३ चमत्कार पूर्ण, मजेदार।

रँगीला- वि० (हिं० रंग) १ आनन्दी, रसिया। २ सुन्दर, प्रेमी।

रंज- पुं० (फा०) १ दुःख, खेद। २ शोक।

रंजिश- स्त्री० (फा०) १ रंज होने का भाव। २ मन मुटाव। ३ शत्रुता।

रंजीदगी- स्त्री० दे० "रंजिश"।

रंजीदा- वि० (फा० रंजीदः) (रंजीदगी) १ जिसे रंज हो, दुःखित। २ नाराज।

रंजीदाखातिर- वि० (फा०+अ०) जिसका मन अप्रसन्न या दुःखी हो गया हो।

रंजोगम- पुं० (फा०) व्यथा और दुःख।

रअद- पुं० (अ०) मेघों का गर्जन, बादलों की गड़गडाट।

रअना- वि० (अ०) १ बनाव सिंगार करके रहने वाला। २ एक प्रकार का फूल जो अन्दर से लाल और बाहर से पीला होता है। वि० १ बहुत सुन्दर। २ दो रुखा, दो रंगा।

रअनाई- स्त्री० (अ०) १ बनाव सिंगार। २ सुन्दरता। ३ दो रुखापन।

रअय्यत- स्त्री० (अ०) रिआया, प्रजा।

रअशा- पुं० (अ० रअशः) १ काँपने या थर थराने की क्रिया, कम्प। २ एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ पैर काँपते रहते हैं।

रईस- पुं० (अ०) १ जिसके पास रियासत या इलाक़ा हो, तअल्लुकेदार। २ बड़ा आदमी, अमीर, धनी।

रईसी- स्त्री० (अ० रईस) रईस का भाव, रईसपन।

रऊनत- स्त्री० (अ०) अभिमान, घमंड।

रऊसा- स्त्री० (अ०) "रईस" का बहु०।

रकअत- स्त्री० (अ०) १ बक्रता, टेढ़ापन, झुकाव। २ नमाज़ का आधा, तिहाई या चौथाई भाग। २ प्रसिद्धि।

रक़बा- पुं० (अ० रकबः) भूमि आदि का क्षेत्रफल। यौ०- रकबए अराजी = भूमि का क्षेत्रफल।

रक़म- स्त्री० (अ०) १ लिखने की क्रिया या भाव। २ छाप मोहर। ३ धन, सम्पत्ति, दौलत। ४ गहना, ज़ेवर। ५ चालाक, धूर्त। ६ प्रकार।

रक़मवार- क्रि० वि० (अ०+फा०) विवरण युक्त, ब्योरेवार।

रक़मी- वि० (अ०) १ लिखा हुआ। २ निशान किया हुआ।

रकान- स्त्री० (देश०) १ युक्ति, तरीक़ा, ढंग। जैसे- वह इस काम की रकान खूब जानता है। २ किसी को वश में करने की युक्ति। जैसे- तुम्हारी रकान मेरे हाथ में है।

रक़ाब- स्त्री० (अ० रिकाब) घोड़ों की काठी का पावदान जिससे बैठने में सहारा लेते हैं। मुहा०- रक़ाब या में पैर रखना= चलने के लिये बिलकुल तैयार होना।

रक़ाबत- स्त्री० (अ०) रक़ीब या प्रतिद्वन्द्वी होने का भाव।

रकाबदार- (अ०+फा०) १ हलवाई। २ खानसामाँ। ३ साईस।

रकाबी- स्त्री० (फा० रिकाबी) एक प्रकार की छिछली छोटी थाली, तश्तरी।

रक़ाबीमज़हब- पुं० (फा०+अ०) वह जो उसी की प्रशंसा और समर्थन करे जो उसे खिलाता हो, बेपेंदी का लोटा।

रकीक- वि० (अ०) १ दुर्बल। २ तुच्छ।

रक़ीक़- वि० (अ०) १ पानी की तरह पतला। २ कोमल, नरम। ३ दयालु, दयाद्र।

रक़ीब- पुं० (अ०) प्रेमिका का दूसरा प्रेमी, प्रेम क्षेत्र का प्रतिद्वन्द्वी।

रक़ीमा- पुं० (अ० रक़ीमः) चिट्ठी, पत्र, पुरजा।

रक्कास- पुं० (अ०) (स्त्री० रक्कासा) नाचने वाला, नर्तक।

रक्स- पुं० (अ०) नृत्य। यौ०- रक्से तऊस= मोर की तरह का नाच।

रखता- पुं० (फा० रखनः) १ दीवार में का मोखा आदि, दरीचा, छोटी खिड़की। २ बाधा, खलल। ३ दोष ढूँढ़ना, छिद्रान्वेषण। ४ ऐब, त्रुटि।

प्रतिक्रियावादी। २ तलाक दी हुई स्त्रीको फिर ग्रहण करना।

रजब- पुं० (अ०)अरबी चान्द्र वर्षका सातवाँ महीना जो आश्विनके लगभग पड़ता है।

रजबी-वि०(अ०)इमाम मूसा अली रज़ासे सम्बन्ध रखने वाला या उनका अनुयायी।

रज़ा- स्त्री० (अ० रिज़ा) १ मरजी, इच्छा, २ रुखसत, छुट्टी, ३ आज्ञा। ४ स्वीकृति।

रज़ाअत- स्त्री० (अ०)बच्चों को स्तन-पान कराना।

रज़ाई- स्त्री० (सं० रजक= कपड़ा या अ० रज़ा) एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना। लिहाफ। वि (अ० रज़ाअत) जिसके साथ दूधका सम्बन्ध हो। जैसे-रज़ाई भाई=उन लड़कों का पारस्परिक सम्बन्ध जो एक ही दाईका दूध पीकर पले हों।

रज़ा-मन्द-वि० (अ०+फा०) (सं० रजा-मन्दी)जो प्रसन्न या राजी हो गया हो।

रज़ील- पुं०(अ०)१ नीच, कमीना। २ छोटी ज़ाति का।

रज्ज़ाक़- स्त्री० (अ०)१ रिज्क या रोजी देने वाला। २ ईश्वर।

रज्जाकी- स्त्री०(अ० रज्जाक) रिज्क या रोजी पहुँचाना, पालन-पोषण की क्रिया।

रज़्म-स्त्री०(फा०) युद्ध।

रज्म-गाह- स्त्री०=(फा०) युद्धक्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

रज्मिया-वि० (फा० रज्मियः) रज्म या युद्ध -सम्बन्धी।

रतल- स्त्री०(अ०) १ शराबका प्याला। २ एक तौल।

रतूबत- स्त्री० (अ० रुतूबत) नमी, तरी।

रत्ब-वि० (अ०) १ सूखा, खुश्क। २ बुरा, खराब। यौ०-रत्ब बयाबिस=भला-बुरा। अच्छा और खराब, सब।

रद-वि० दे० 'रद्‌द'।

रदीफ-स्त्री० (अ०) १ वह जो घोड़ेपर किसी सवार के पीछे बैठे। २ गज़ल आदिमें वह शब्द जो हर शेरके अन्तमें काफिए के बाद बार- बार आता है। जैसे -अच्छे बुरेका हाल खुले क्या नक़ाबमें मे 'नकाब' 'काफिया' और 'में' 'रदीफ' है।

रदीफवार-वि० (अ०+फा०)अक्षर-क्रमसे लगा हुआ।

रद्‌द- पुं० (अ०) १ जो काट, छाँट, तोड़ या बदल दिया गया हो। २ जो खराब या निकम्मा हो गया हो। स्त्री० क़ै। वमन।

रद्दोबदल-पुं (अ०) १ परिवर्तन। २ उलट-फेर।

रद्‌दी- वि० (अ० रदी) निकम्मा, निष्प्रयोजन, बेकार।

रन्दा- पुं० (फा० रन्दः मि० सं० रदन) एक औजार जिससे लकड़ी की सतह छीलकर चिकनी की जाती है।

रफ़रफ़- पुं० (अ०) वह सवारी जिसपर मुहम्मद साहब ईश्वरके पास गये और वहाँ से वापस आये थे।

रफा -वि (०रफऽ) दूर किया हुआ। २ निवृत्त, शान्त, निवारित। पुं० १ ऊंचाई। २ छोड़ना, अलग रहना।

रफाक़त- स्त्री० (अ० रिफाक़त) १ रफीक़ या साथी होने का भाव। २ संग-साथ, मेल-जोल। ३ निष्ठा।

रफा-दफा-वि० दे० 'रफा'।

रफाह- स्त्री० (अ० रिफाह) १ सुख, आराम। २ दूसरों को सुखी करनेवाला काम, परोपकार। यौ०- रफाहे आम=जन साधारणके उपकारका क़ाम।

रफाहियत- स्त्री० (अ० रिफाहियत) आराम, सुख।

रफी- स्त्री० (देश०) वे सफेद कण जो किसी चीजको झाड़ने से गिरते हैं।

रफीक- पुं० (अ०) (बहु०रुफक़ा) १ साथी, संगी। २ सहायक, मददगार। ३ मित्र। यौ०- रफीके जुर्म= सह-अपराधी।

रफीका- स्त्री० (अ० रफीकः) सखी, सहेली।

रफू- पुं० (अ०)फटे हुए कपड़े के छेदमें तागे भरकर उसे बराबर करना।

रफू-गर-वि० (अ०+फा०) (सं० रफूगरी) रफू करनेका व्यवसाय करनेवाला, रफू

बनानेवाला।

रफू-चक्कर-वि० (अ०+हिं०) चंपत, गायब।

रफ्त-वि (फा०) गया हुआ, गत । यौ० -रफ्त -व- गुजश्त=गया-बीता। जिसकी ओर कुछ ध्यान न दिया जाय।

रफ्तगी. स्त्री० (फा० रफ्तन=जाना) १ जाने की क्रिया, गमन। मुहा०- रफ्तगी निकालना= आगे जाने का सिलसिला शुरू करना।

रफ्तनी- स्त्री० (फा०), जाने की क्रिया या भाव। २ माल का बाहर जाना, निर्यात।

रफ्तार- स्त्री० (फा०) चलने की क्रिया या भाव, चाल। यौ०-रफ्तार व गुफ्तार=चाल-ढाल और बातचीत।

रफ्ता-रफ्ता-क्रि० वि०( फा०रफ्तः रफतः )धीरे- धीरे, क्रम- क्रम से।

रब- पुं० (अ०) १ वह जो पालन-पोषण करता हो। २ ईश्वर। यौ०-रब्बुल-आलमीन=सारे संसारका पालन -पोषण करनेवाला, ईश्वर।

रबाब- पुं० (अ०) सारंगीकी तरहका एक प्रकारका बाजा।

रबाबी- पुं०( अ० )वह जो रबाब बजाता हो।

रबी- स्त्री० (अ० रबीअ) १ वसंत ऋतु। २ वह फसल जो वसंत ऋतुमें काटी जाती है।

रबीअ-स्त्री० दे० 'रबी'।

रबी-उल्-अव्वल- पुं० (अ० )अरबी वर्षका तीसरा महीना जो जेठके लगभग पड़ता है।

रबी-उल्-आखिर-पु०( अ० )पुं० (अ०) अरबी। वर्षका चौथा महीना जो असाढ़के लगभग पड़ता है।

रबी-उम्मानी- पुं० दे० 'रबी उल्-आखिर'।

रबीब- पुं० (अ०) १ पाला-पोसा हुआ दूसरेका लड़का। २ स्त्रीके पहले पतिका लड़का।

रब्त- पुं०( अ० ) १ अभ्यास, मश्क, मुहावरा। २ सम्बन्ध, मेल। यौ०-रब्त-जब्त=मेल-जोल।

रब्ब- पुं० दे० रब।

रब्बानी-वि० ( अ० )ईश्वरीय या दैवी।

रम- पुं० (फा०) दूर रहने या बचनेकी प्रवृत्ति, भागना।

रमक़- स्त्री०( अ० ) १ बची-खुची थोड़ी-सी जान। २ अन्तिम श्वास। ३ हलका प्रभाव, पुट, वि०। थोड़ा-सा।

रमज़ान- पुं० (अ०रम्ज़ान )एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।

रमज़ानी-वि० (अ०रम्जन)१ रमजान-सम्बन्धी। २ रमज़ान में उत्पन्न । ३ अकालका मारा। ४ भुक्खड़। पेटू।

रमल- पुं०( अ० )एक प्रकारका फलित ज्योतिष जिसमें पाँसे फेंककर शुभाशुभ फ़ल जाना जाता है।

रमीदगी- स्त्री० (फा०). बचने और हटे रहने की प्रवृत्ति, घृणा।

रमीम-वि० ( अ० ) पुराना और सड़ा-गला।

रमूज़- स्त्री ० दे० 'रुमूज़'।

रम्ज़- स्त्री० (अ०) ( बहु० रुमूज़) १ आँखों आदिका संकेत, इशारा। २ ऐसी पेचीली बात जो जल्दी समझमें न आवे, सूक्ष्म बात। ३ रहस्य। ४ व्यंग्य। ५ आवाज़।

रम्माज़-वि० (अ०) १ रम्ज़ या संकेतसे बात करनेवाला। २ छायावादी।

रम्माल-पुं० (अ०) रमल फेंकने वाला।

रवाँ-व० (अ०)(स० रवानी) १ बहता हुआ। २ चलता हुआ, जारी। ३ जिसका अच्छा अभ्यास हो ४ प्रचलित । पुं० तेजीके साथ पढ़ने की क्रिया ।

रवा-वि० (फा०) उचित, वाजिब।

रवाज-स्त्री० (अ० रिवाज) परिपाटी, चाल, प्रथा, रस्म।

रवाजी-वि०( अ०रिवाजी )जिसकी रवाज हो, प्रचलित।

रवादार-वि०( फा० )(स० रवादारी) १ साथी, संगी। २ उदारचेता, शुभ-चिन्तक। ३ सम्बन्ध रखने वाला।

रवानगी- स्त्री (फा०) रवाना होने की क्रिया या भाव, प्रस्थान। यौ०- रवानगीए माल= माल का प्रेषण।

रवाना-वि० (फा० रवानः) १ जो कहीं से चल पड़ा हो। २ भेजा हुआ।

रवानी- स्त्री० (फा०) १ बहाव, प्रवाह । २ तेजी।

रवायत- स्त्री० (अ०)१ दूसरेकी कही हुई बात जो उद्धृत की जाय। २ कथानक। ३ मसल, कहावत।

रवा-रवी-स्त्री० (हिं० रौ) १ जल्दी। २ घबराहट। ३ हलचल।

रविश- स्त्री०(फा०)१ गति। २ रंग-ढंग, चाल-ढाल। ३ बागकी क्यारियों के बीचका छोटा मार्ग।

रवीया -पुं०(अ० रवीयः) १ नियम। २ आचार-व्यवहार।

रवैयत- स्त्री० (अ०) दिखाई देना, दर्शन।

रवैया- पुं० (फा० रवैयः)१ चाल-चलन, तौर-तरीका। २ रंग-ढंग।

रशीद-वि०(अ०)१ जो उपदेश देकर सीधे मार्गपर लगाया गया हो। २ शिक्षित और सभ्य।

रश्क- पुं०(स०)१ ईर्ष्या, डाह। २ शत्रुता । ३ प्रेमिकाके दूसरे प्रेमीसे होनेवाली ईर्ष्या।

रश्के-परी-वि०स्त्री०(फा+अ०)जिसका रूप देखकर परी भी ईर्ष्या करे। परम सुन्दरी।

रस-वि०(फा०) पहुंचनेवाला। यौ० के अन्तमें। जैसे-दादं-रस =न्यायकर्त्ता, फरियाद रस=फरियाद सुननेवाला।

रसद- स्त्री० (फा०)१ बाँट, बखरा। मुहा०-हिस्सा-रसद= बँटनेपर अपने अपने हिस्सेके अनुसार लाभ। २ कच्चा अनाज जो पकाया न गया हो। पुं० (अ०)नक्षत्रों की गति आदि देखने की क्रिया या यंत्र । यौं०-रसद-गाह =वेधशाला।

रसद-गाह- स्त्री० (अ०+फा०) नक्षत्रोंकी गति आदि देखने का स्थान।

रसद-रसानी- स्त्री०(फा०) सेना। आदिमें रसद पहुँचाना।

रसदी-वि०(अ०) हिस्से के अनुसार होनेवाला

रसम- स्त्री० दे० 'रस्म।'

रसाँ-वि०(फा० 'रसानीदन' से) पहुँचनेवाला। जैसे-चिट्ठी-रसाँ =डाकिया।

रसा-वि०(फा०)१ पहुँचनेवाला। २ ऊंचा होने या दूर जानेवाला।

रसाई- स्त्री० (फा०) पहुँचनेकी क्रिया या भाव, पहुँच ।

रसीद- स्त्री० (फा०) (भाव० रसीदगी)१ किसी चीजके पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया, पहुँच। २ किसी चीजके पहुंचनेके प्रमाण रूपमें लिखा हुआ पत्र।

रसीदा-वि०(फा०रसीदः)पहुँचा हुआ। जैसे-सिन रसीदा= बड़ी उम्र तक पहुँचा हुआ, वृद्ध।

रसीदी-वि० (फा० रसीदः) रसीद-सम्बन्धी। रसीदका। जैसे-रसीदी-टिकट।

रसूख- पुं० दे० 'रुसूख'।

रसूम- पुं० (अ० रुसूम)(रस्म का बहु०) १ नियम, क़ानून। २ वह धन जो किसी प्रचलित प्रथाके अनुसार दिया जाता हो, नेग, लाग।

रसूल- पुं०(अ०)१ किसी की ओर से कहीं भेजा हुआ व्यक्ति, दूत। २ ईश्वरकी ओरसे आया हुआ दूत, पैगम्बर। ३ मुहम्मद साहबकी उपाधि। ४ मार्ग-दर्शक।

रस्ता- पुं० फा० 'रास्ता' का संक्षिप्त रूप।

रस्म - स्त्री० (अ०)(बहु० रस्मियात, मरासिम) १ लेख आदिका चिन्ह। २ रीति, परिपाटी, परंपरा। यौं०= रस्म व रिवाज= रीति- रस्म। ३ मेल-जोल। स्त्री० (फा०) वेतन, तनख्वाह।

रस्मी-वि० (अ०)१ साधारण, मामूली। २ रस्म- सम्बन्धी।

रह-स्त्री० (फा०) 'राह' का संक्षिप्त रूपा। ('रह' के यौगिक शब्दों के लिए दे० 'राह' के यौगिन्दा)

रहगीर-पु० (फा०) पथिक। 'राह' का संक्षिप्त रूप।

रहन- पुं० दे० 'रेहन'।

रहनुमा-वि० (फा०)(सं० रहनुमाई) पथप्रदर्शक,मार्ग-दर्शक।

रह-बर-वि०(फा०)(सं० रहबरी) रास्ता दिखलानेवाला, पथप्रदर्शक।

रहबानियत- स्त्री० (अ०) रह्बानियत १

संयम। २ ब्रह्मचर्य।

रहम- पुं० (अ० रहम) १ दया, कृपा, अनुग्रह। २ क्षमा, माफी । ३ करुणा, अनुकम्पा। पुं० (अ० रिहम) स्त्रीका गर्भाशय, बच्चेदानी।

रहमत- स्त्री० (अ० रहमत) दया, मेहरबानी। २ वर्षा, वृष्टि।

रहम-दिल-वि० (अ० रहम+फा०) (सं० रहम-दिली) दयालु।

रहमान-वि० (अ० रहमान) दया करनेवाला। पुं० ईश्वरका एक नाम।

रहमानी- वि० (अ० रहमानी) ईश्वर सबंधी, ईश्वरीय।

रहल- स्त्री दे० 'रिहल'।

रहवार- पुं० (फा०) क़दम चलनेवाला अच्छा घोड़ा ।

रहाइश- स्त्री०( हिं० रहना) १ रहने-सहनेका ढंग। २ रहनेका स्थान।

रहीब- वि० (अ०)पेटू।

रहीम-वि० (अ०)रहम या दया करनेवाला, दयालु। पुं० ईश्वरका एक नाम।

रहे-रास्त- स्त्री० दे० 'राहेरास्त'।

राँदा-वि० (फा० राँदः)निकाला हुआ, त्यक्त। बहिष्कृत।

राइज-वि०(अ०) प्रचलित, चालू।

राए-स्त्री०(अ०)१ परामर्श। २ विचार, राय। ३ मत, वोट।

राए शुमारी-स्त्री० (अ०+फा०) मतगणना।

राक़िम-वि०(अ०) रकम करने या लिखने वाला, लेखक।

रागिब- वि० (अ०) रगबत करने या लिखने वाला, प्रवृत्ति रखने वाला।

राज़-सं० पुं०(फा०) रहस्य, भेद। यौ०-राज व नियाज=प्रेमी और प्रेमिकाके नखरे और चोचले।

राजदाँ- पुं० (फा०) राजदार (दे०)।

राजदार- पुं० (फा०) १ रहस्य या भेद की बात जानने वाला। २ साथी, संगी।

राज़दारी- स्त्री० (फा०)१ रहस्य या भेद जानना। २ रहस्य या भेद प्रकट न होने देना।

राज़िक- पुं०(अ०) १ रिज़्क़ या रोजी देनेवाला, जीविका लगानेवाला। २ ईश्वर।

राज़ी-वि०(अ०)१ कहीं हुई बात माननेको तैयार, सम्मत। २ नीरोग, चंगा। ३ खुश, प्रसन्न। ४ सुखी। यौ० - राजी-खुशी=सही-सलामत। स्त्री० रजामन्दी। अनुकूलता।

राज़ीनामा- पुं० (फा० राजीनामः)वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।

रातिब- पुं० (अ०) १ नित्यप्रतिका साधारण और बँधा हुआ भोजन। २ पशुओं का भोजन।

रातिबा- पुं० (अ०राबितः) वेतन या वृत्ति आदि।

रान- स्त्री०(फा०) जंघा, जाँघ ।

राना- पुं० दे० 'रअना'।

रानाई- स्त्री० दे० 'रअनाई'।

रानी- स्त्री०(फा०) चलानेका काम। जैसे -जहाज-रानी,हुक्म-रानी।

राफिज़ी- पुं०(अ०) १ वह सेना जो अपने सरदार को छोड़ दे। २ शीया मुसलमानोंका वह दल जिसने हजरत अलीके लड़के जैदका साथ छोड़ दिया था । ३ शीया मुसलमान। (इस अर्थसे सुन्नी लोग इस शब्दका व्यवहार उपेक्षापूर्वक करते हैं।)

राबता- पुं०(अ० राबित)१ मेल-जोल, रब्त-जब्त। २ रिश्तेदारी। संबंध।

राबित- पुं०(अ०) संयोजक।

राम -वि० (फा०)१ सेवक, अनुचर। २ आज्ञाकारी।

रामिश- पुं०(फा०) १ आनन्द। २ संगीत। ३ गवैया।

राय- स्त्री० (अ०) सम्मति, मत, सलाह।

रायगाँ-वि० (फा०)व्यर्थ, निकम्मा, बेकार।

रायज-वि०(अ०) जिसका रिवाज हो, प्रचलित, चलनसार। यौ०- रायज- उल्-वक्त = वर्तमान कालमें प्रचलित।

रावी-वि०(अ०)रवायत करने या कोई बात कह सुनानेवाला, कथा आदिका लेखक या वक्ता।

राशा- पुं० दे० 'रअशा'।

राशिद- पुं० (अ०) ठीक मार्गपर चलने वाला, धार्मिक।

राशी- वि० (अ०)१ रिश्वत देने वाला। २ रिश्वत लेने वाला, घूसखोर। (अशुद्ध)।

रास- पुं०(अ०)१ ऊपरी भाग, सिरा। २ पशुओंकी संख्याका सूचक शब्द । जैसे-दो रास बैल। ३ स्थलका वह कोना जो जलमें दूर तक चला गया हो। अन्तरीप जैसे-रास-कुमारी। स्त्री०(फा०) १ रास्ता। २ घोड़ेकी बाग। ३ राहु ग्रह।

रासिख- वि० (अ०) दृढ़, पक्का। पुं० नौसादर और गन्धक की सहायता से फूँका ऽआ ताँबा। संग-रासिख।

रास्त-वि०(फा०) १ दुरुस्त, सही, ठीक। २ सत्य, उचित। ३ दाहिना, दायाँ, अनुकूल। मुहा०-रास्त आना=अनुकूल रहना, विरोध छोड़ना

रास्त-गो-वि०(फा०) (सं० रास्तगोई) सच या वाजिब बात कहनेवाला, सत्यवादीं।

रास्तबाज़-वि०(फा०)(सं० रास्तबाजी) सच्चा, ईमानदार।

रास्तरवी-स्त्री० (फा०)१ सन्मार्ग। २ सदाचार।

रास्ता- स्त्री०(फा० रास्तः) १ मार्ग। २ उपाय, तरकीब।

रास्ती- स्त्री० (फा०) सच्चाई, सत्यता।

राह- स्त्री०(फा०) १ रास्ता, मार्ग । २ मेल-जोल, संग-साथ। ३ ढंग, तरीक़ा। ४ प्रथा, चाल। ५ नियम, क़ायदा।

राह-खर्च- पुं०(फा०)रास्ते मे होनेवाला खर्च, मार्ग-व्यय।

राह-गीर- पुं० (फा०)रास्त. चल्नेवाला। 'मुसाफिर' यात्री ।

राह-गुज़र- पुं०(फा०) रास्ता, मार्ग, सड़क।

राहज़न- पुं० (फा०) डाकू, लुटेरा, बटमार।

राह-ज़नी- स्त्री० (फा०) डाका, बटमारी।

राहत- स्त्री० (अ०) सुख, आराम। यौ०-राहते जान= मनको प्रसन्न करनेवाली वस्तु।

राहतकदा-पुं०(अ०+फा०)सुख का स्थान, सुखालय।

राह-दार-पुं०(फा०)वह जो किसी रास्तेकी रक्षा करता या आने-जानेवालों से महसूल वसूल करता हो।

राह-दारी स्त्री० (फा०)१ वह महसूल जो किसी रास्ते से होकर जानेके बदलेमें देना पड़ता है। यौ०-परवाना राहदारी= वह आज्ञा-पत्र जिसके अनुसार किसी मार्गसे होकर जाने या माल ले जानेका अधिकार प्राप्त होता है। २ चुंगी, महसूल। ३ मेल-मिलाप।

राह-नुमा-वि०(फा०)(सं० राहनुमाई)रास्ता दिखलानेवाला।

राह-बर-वि०(फा०) (सं० राहबरी) मार्गदर्शक।

राह-रविश- स्त्री० (फा०) रंग-ढंग, तौर-तरीका, चाल-चलन।

राह-रौं- पुं०(फा०) रास्ता चलनेवाला, यात्री, बटोही।

राह व रब्त्- पुं० (फा०+अ०)मेल-जोल, राह-रस्म।

राहिन- पुं०(अ०)रेहन या गिरवी रखनेवाला।

राहिब- पुं०(अ०) संसारको छोड़कर एकान्त में रहनेवाला।

राहिम-वि० (अ०)रहम करनेवाला।

राहिला- पुं० (अ० राहिलः) यात्रियोंका गिरोह, काफिला।

राही- पुं० (फा०)रास्ता चलनेवाला, मुसाफिर, यात्री।

राहेरब्त- स्त्री० (फा०+अ०) १ मेल-जोल। २ पारस्परिक व्यवहार।

रिआयत- स्त्री० (अ०) १ कोमल और दयापूर्ण व्यवहार, नरमी। २ न्यूनता, कमी। ३ खयाल, विचार।

रिआयती-वि०(अ०)रिआयत सम्बन्धी, जिसमें कुछ रिआयत हो।

रिआया- स्त्री०(अ०)प्रजा।

रिकाब- स्त्री० दे० 'रकाब'।

रिकाबी- स्त्री० दे० 'रकाबी'।
रिक्क़त- स्त्री०(अ०) १ कोमलता। मुलायमियत। २ रोना-धोना, रुदन। ३ दया, अनुकम्पा। ४ आनन्द या प्रेम आदिके कारण आवेशपूर्ण होना, दिल भर आना, हाल, वज्द।
रिज़क- पुं० दे० 'रिज़्क़'।
रिज़वाँ- पुं०(अ०) मुसलमानों के अनुसार एक देवदूत जो फ़िरदौस या स्वर्गका दरबान या दारोग़ा है।
रिज़ाला- पुं० (अ० रिज़ाल) १ कमीना, नीच, तुच्छ। २ दुष्ट, पाजी।
रिज़्क़- पुं०(अ०) १ नित्यका भोजन। २ रोज़ी, जीविका।
रिन्द- पुं० (फा०) १ धार्मिक बन्धनों को न माननेवाला पुरुष। २ मनमौजी आदमी, स्वच्छन्द पुरुष। वि०(फा०)मतवाला, मस्त।
रिन्दपेशा- वि० (फा०) शराबी।
रिन्दा- पुं० (फा० रिन्द) बेहूदा और बेढब आदमी, वाहियात और शरारती।
रिन्दाना-वि० (फा० रिन्दानः)रिन्दोंका-सा, रिन्दोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।
रिन्दी-स्त्री० (फा०) १ रिन्दका भाव, रिन्दपन। २ लुच्चापन, शोहदापन। ३ धूर्तता।
रिफअत- स्त्री०(अ०) १ ऊंचाई। २ उन्नत अवस्थाकी प्राप्ति। ३ महत्तव, बड़प्पन।
रिफाकत- स्त्री० दे० 'रफाक़त'।
रिफाह- स्त्री० दे० 'रफाह।'
रिफ्ज- पुं०(अ०)धर्मद्रोह, अधार्मिकता।
रियह- पुं० (अ०)फेफड़ा, फुफ्फुस।
रिया- स्त्री०(अ०)धोखा, छल, कपट।
रियाई-वि०(अ० रिया) धूर्त्त।
रिया-कार-वि० (अ०+फा०)(सं० रियाकारी) धोखा देनेवाला।
रियाज़- पुं०(अ०)१ रौजेका बहु०। २ वाटिकाए, बाग़। पुं० (अ० रियाज़तः) १ वह परिश्रम जो किसी प्रकारका अभ्यास या बारीक काम करने में होता है, मेहनत। २ तपस्या, तप। ३ अभ्यास, मश्क।
रियाज़त- स्त्री०(अ०) १ परिश्रम। २ कष्ट-सहन। ३ तपस्या। ४ अभ्यास।
रियाज़त-कश -वि० (अ०+फा०) परिश्रम करनेवाला, मेहनती।
रियाज़ती-वि० दे० 'रियाज़त-कश'।
रियाज़ी- स्त्री० (अ०)विज्ञान के तीन विभागों में से एक जिसमें सब प्रकारके गणित, ज्योतिष, संगीत आदि विद्याएँ सम्मिलित है।
रियाज़ी-दाँ-वि०(अ०+फा०)रियाजीका ज्ञाता।
रियासत- स्त्री०(अ०) १ राज्य, अमलदारी। २ अमीरी।
रियाह- स्त्री० (अ० 'रेह' का बहु०)शरीर के अन्दरकी वायु, बाई।
रिवाज- स्त्री० दे० 'रवाज'।
रिवायत- स्त्री० (अ०) पुनर्कथन।
रिश्ता- पुं० (फा० रिश्तः)नाता, सम्बन्ध।
रिश्तेदार- पुं० (फा० रिश्तःदार) संबंधी, रिश्तेदार।
रिश्तेदारी- स्त्री० (फा० रिश्तः+दारी) सम्बन्ध, नाता।
रिश्वत- स्त्री०(अ०+फा०) घूस, उत्कोच, लाँच।
रिश्वतखोर- वि० (अ० +फा०) (सं० रिश्वतखोरी) रिश्वत या घूस खानेवाला।
रिश्वतदिहिन्दा-वि०(अ०+फा० दिहिन्दः) रिश्वत देनेवाला।
रिश्वतदिही-स्त्री०(अ०+फा०) रिश्वत देने का काम।
रिश्वत-सतानी- स्त्री०(अ०+फा०) रिश्वत खाना, घूस लेना।
रिसालत- स्त्री०(अ०) १ रसूल होनेका भाव, पैगम्बरी।
यौ०-रिसालत-पनाह=मुहम्मद साहबका एक नाम। २ दूतत्व, एलचीगरी।
रिसालदार- पुं० (फा० रिसालःदार)घुड़सवार सेनाका एक अफसर।
रिसाला- पुं० (अ० रिसालः) १ पत्र, खत। २ छोटी पुस्तक, पुस्तिका। ३ घुड़सवारों की सेना, अश्वारोही सेना।

रिहल- स्त्री०( अ० रिहिल )काठकी वह चौकी जिसपर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।

रिहलत- स्त्री० (अ०) १ प्रस्थान, कूच, रवानगी २ मृत्यु, मौत, परलोक-गमन।

रिहा-वि०( फा० )( सं० रिहाई )बन्धन या बाधा आदिसे मुक्त।

रिहाई-स्त्री०( फा० ) छुटकारा, मुक्ति।

रिहाइश- स्त्री० दे० 'रहाइश'।

रीम- स्त्री०( फा० )मवाद, पीब।

रीश- स्त्री० (फा० )ठोढ़ी पर के बाल, दाढ़ी, डाढ़ी।

रीश-खन्द- पुं०( फा० )१ तीन प्रकारके हास्योंमें से एक, परिहास या मुस्कराहटके समयकी हँसी। २ परिहास, ठट्ठा, हँसी, मजाक़।

रीशे-काज़ी- स्त्री० (फा०+अ० )भंग या शराब आदि छाननेका कपड़ा ( व्यंग्य )।

रीह- स्त्री०( अ० )१ वायु, हवा। २ अपानवायु, पाद। ३ शरीरके अन्दरकी वायु, वात।

रूअनत-दे० 'रउनत'।

रुकूअ- पुं० ( अ० )१ नम्रतापूर्वक झुकना। २ नमाज़में घुटनोंपर हाथ रखकर झुकना। ३ कुरानका एक प्रकरण।

रुक्क़ा- पुं०( अ० रुक्अः )( बहु०रुक्क़अत ) छोटा पत्र या चिट्ठी, पुरज़ा, परचा।

रुक्न- पुं०( अ० )( बहु० अरकान )१ स्तम्भ, खम्भा। २ प्रधान कार्यकर्त्ता। जैसे-रुक्ने-सलतनत=साम्राज्यके प्रधान कार्यकर्त्ता या स्तम्भ।

रुख- पुं०( फा० ) १ कपोल, गाल। २ मुख। मुंह, ३ आकृति, चेष्टा। ४ मनकी इच्छा जो मुखकी आकृति प्रकट हो। ५ कृपादृष्टि, मेहरबानी की नजर। ६ सामने या आगेका भाग। ७ शतरंजका एक मोहरा। क्रि० वि० १ तरफ, ओर। २ सामने ।

रुखसत- स्त्री० (अ० रुख़्सत) १ आज्ञा। परवानगी। २ रवानगी, कूच, प्रस्थान। ३ कामसे छुट्टी। ४ अवकाश। वि० जो कहींसे चल पड़ा हो।

रुखसताना- पुं० (फा० रुख़्सतानः) वह धन जो किसी को रुखसत होने के समय दिया जाय। बिदाई।

रुखसती- स्त्री० (अ० रुख़्सत )बिदाई, विशेषतः दुलहिनकी।

रुखसार- पुं०( फा०रुख़्सार )कपोल।

रुखसारा- पुं० ( फा० रुख़्सारः ) १ कपोल या गालका उपरी भाग। २ कपोल, गाल।

रुखाम- पुं० ( फा० ) संगमरमर।

रुजू-वि० (अ० रुजूअ) जिसका मन किसी ओर लगा हो, प्रवृत्त। स्त्री० १ अनुरक्ति, प्रवृत्ति। २ लौटना, वापस आना। ३ ऊंची अदालतमें की दोबारा सुनवाई। पुनर्विचार।

रुजूआत-स्त्री०( अ० ) प्रवृत्ति।

रुजूलियत- स्त्री०( अ० ) विषय या सम्भोगकी शक्ति। पुंसत्व।

रुतबा- पुं०( अ० रुतबः ) १ ओहदा, पद। २ इज्जत।

रुब- पु०( अ० ) पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। जैसे-रुब्बेजागुन।

रुबा-वि०( अ० रुबअ) चौथाई, चतुर्थांश। वि०( अ० ) चुरानेवाला। जैसे-दिल-रुबा।

रुबाई- स्त्री० (अ०) चार चरणों का पद्य, चौबोला।

रुमूज़- स्त्री०( अ० ) 'रम्ज़' का बहु०।

रुसवा-वि०( फा० रुस्वा ) १ अपमानित। २ बदनाम।

रुसवाई- स्त्री० (फा० रुस्वाई) १ अप्रतिष्ठा। २ बदनामी, कलंक।

रुसूख- पुं०( अ० )( भाव०रुसूखियत )१ दृढ़ता, मजबूती। २ धैर्य, अध्यवसाय। ३ पहुँच, मेल-जोल। ४ विश्वास, एतबार।

रुसूखियत- पुं०दे० 'रुसूख'

रुसूम- पुं० दे० 'रसूम'।

रुस्तम- पुं०( फा० ) १ फारसका एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २ भारी वीर। मुहा० -छिपा रुस्तम=वह जो देखने में सीधा - सादा,पर वास्तव मे बहुत वीर हो।

रुस्तमी- स्त्री० (फा० रुस्तम )१ बहादुरी, वीरता। २ जबरदस्ती, बल-प्रयोग।

रू- पुं०( फा० )मुख, चेहरा, आकृति। स्त्री०

१ कारण, सबब। २ तल, सतह। ३ अगला भाग। ४ आशा।

रुईदगी- स्त्री० ( फा० ) वनस्पति।

रुए- स्त्री ( फा० ) १ रू, चेहरा, आकृति। २ कारण।

रुएदाद- स्त्री० दे० 'रुदाद'।

रू-कश-वि० ( फा० )( सं० रुकशी )१ सामने आनेवाला, सम्मुख होनेवाला। २ प्रतिद्वंद्वी। ३ लज्जित।

रुकशी-स्त्री०( फा० )१ सामना, सम्मुखता। २ प्रतिद्वंद्विता। ३ लज्जा।

रू-गरदाँ-वि० ( फा० ) पीछेकी तरफ मुड़ा या उलटा हुआ।

रुदबार- पुं०( फा० ) १ बड़ा और चौड़ा जल-डमरूमध्य। २ बड़ी झील। ३ जलपूर्ण देश।

रू-दाद- स्त्री० ( फा० रुएदाद )१ समाचार, वृत्तान्त। २ दशा। ३ विवरण, कैफियत। ४ अदालतकी कार्रवाई।

रू-नुमाई- स्त्री० ( फा० )१ मुँह दिखलाने की क्रिया। २ मुँह दिखलाने या देनेकी रसम, मुँहदिखाई।

रू- पोश-वि० ( फा० ) ( सं० रूपोशी ) १ जिसने अपना मुँह ढाँक या छिपा लिया हो। २ भागा हुआ।

रू-बकार- पुं०( फा० ) १ सामने उपस्थित करनेका भाव। २ अदालत का हुक्म, आज्ञापत्र।

रू-बकारी- स्त्री० ( फा० ) मुकद्दमेकी पेशी या सुनवाई।

रूबन्द- पुं० ( फा० ) मुँह ढकने का वस्त्र, घूँघट, बुर्का।

रू-बराह-वि०( फा० )१ प्रस्तुत, तैयार। २ दुरुस्त या ठीक किया हुआ।

रू-बरू- क्रि०वि० ( फा० )सम्मुख।

रू-बाह- स्त्री० ( फा० ) लोमड़ी।

रू-बाह-बाज़ी- स्त्री०( फा० ) धूर्त्तता, चालाकी।

रूम- पुं० ( फा० ) टर्की या तुर्की देशका एक नाम।

रूमाल- पुं०( फा० )१कपड़ेका वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ-मुँह पोंछते हैं। २ चौकोना शाल या दुपट्टा।

रूमी-वि०( फा० )१ रूम देश सम्बन्धी । २ रूम देशका निवासी।

रू-रिआयत- स्त्री०( फा०+अ० )पक्षपात, तरफदारी।

रू-शनास- वि० ( फा० ) ( सं० रू-शनासी ) जान-पहचान का।

रू-सफेद-वि० ( फा० )यशस्वी, कीर्तिशाली।

रू-सियाह-वि० ( फा० )( सं० ) रुसियाही, १ काले मुँह वाला। २ पापी। ३ अपराधी। ४ अपमानित, जलील।

रूह- स्त्री० ( अ० ) १ आत्मा, जीवात्मा। २ सत्त, सार। ३ इत्रका एक भेद।

रूह-अफज़ा-वि० ( अ० ) चित्तको प्रसन्न करने वाला।

रूहानियात- स्त्री० ( अ०+फा० ) अध्यात्मवाद।

रूहानी-वि०( अ० ) रूह या आत्मासम्बन्धी, आत्मिक, आध्यात्मिक।

रेख्ता-वि०( फा०रेख्तः )१ गिरा या टपका हुआ। २ बिना बनावटके आपसे आप जबान से निकला हुआ। ३ चूने का बना हुआ ( मकान,दीवार,छत आदि )। ४ इधर-उधर पड़ा या बिखरा हुआ। पुं० १ चूनेकी बनी हुई दीवार या इमारत। २ दिल्लीकी ठेठ उर्दू भाषा।

रेख्ती- स्त्री०( फा०रेख्तः )स्त्रियों की बोलीमें की हुई कविता।

रेग- स्त्री० ( फा० ) रेत

रेगज़ार-सं० पुं० दे० 'रेगिस्तान'।

रेग-माही- स्त्री० ( फा० ) साँडे या गोहकी तरहका एक छोटा जानवर जो प्रायः रेगिस्तानमें रहता है। शक्नकूर।

रेगिस्तान- पुं० ( फा० ) बालूका मैदान, मरु-देश।

रेगे-रवाँ-वि०( फा० )उड़नेवाला। पुं० बालू या रेत।

रेज़- स्त्री०( फा० ) १ पक्षियोंका चहचहाना, कल-रव। २ गिराना, बहाना। वि० गिराने या बहानेवाला। जैसे-अश्क-रेज़।

रेज़गारी- स्त्री० (फा०रेज़ा)

रेजगी- स्त्री० दे० 'रेजगारी'।

रेजा- पुं० (फा० रेज़ः) १ बहुत छोटा टुकड़ा, सूक्ष्म खंड। २ नग, थान, अदद।

रेज़िश- स्त्री० (फा०) सरदी, जुक़ाम, नजला, (रोग)।

रेब- पुं०(अ०) सन्देह, शक।

रेवन्द- पुं०(फा०) एक पहाड़ी पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी रेवन्दचीनी के नाम से बिकती और औषधके काममें आती है।

रेवन्द-चीनी- पुं० दे० 'रेवन्द'।

रेश- पुं०(फा०)जख्म,घाव।

रेशम- पुं०(फा० 'अबरेशम'-का संक्षिप्त रूप) एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ़ तन्तु जो कोशमें रहनेवाले एक प्रकारके कीड़े तैयार करते हैं।

रेशमी-वि० (फा०) रेशमका बना हुआ।

रेशा- पुं० (फा० रेशः) तन्तु या महीन सूत जो पौधोंकी छालों आदिसे निकलता है।

रेशादार-वि० (फा०) जिसमे छोटे-छोटे सूत या रेशे हों।

रेहन- पुं०(फा० रहन्) महाजनसे क़र्ज लेकर उसके पास अपनी जायदाद इस शर्तपर रखना कि जब रुपया अदा हो जायगा तब वह माल या जायदाद वापस कर देगा, बन्धक, गिरवी।

रेहनदार- पुं० (फा० रहन्दार)वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।

रेहन-नामा - पुं० (अ० रहन्+फा० नामः) वह काग़ज़ जिसपर रेहनकी शर्तें लिखी हों।

रेहान- पुं० (अ०) १ तुलसीकी तरहका एक सुगन्धित पौधा। २ बालंगू । ३ एक प्रकारकी सुगंधित घास। ४ एक प्रकारकी अरबी लेख-प्रणाली।

रो- वि०(फा०) उगनेवाला। जैसे-खुद-रों=आपसे आप उगनेवाला। जंगली।

रोग़न- पुं०(फा० रौग़न) १ तेल,चिकनाई। २ वह पतला लेप जिसे किसी वस्तुपर पोतनेसे चमक आवे,पालिश,वारनिश। ३ वह मसाला जिसे मिट्टी के बरतनों आदि पर चढ़ाते हैं।

रोग़नी-वि० (फा० रौग़नी) रोग़न किया हुआ।

रोग़ने-काज़- पुं०(फा०) राजहँसकी चरबी जो बहुत चिकनी और चमकीली होती है। मुहा०-रोग़ने काज मलना=१ चिकनी-चुपड़ी बातें या खुशामद करना। २ अपने अनुकूल बनाना।

रोग़ने-ज़र्द- पुं० (फा०) घी, घृत, घीव।

रोग़ने-तल्ख- पुं०(फा०) कड़ुआ तेल।

रोगने-सियाह-पुं(फा०) तेल।

रोज़- पुं०(फा०) १ दिन, दिवस। २ एक दिनकी मज़दूरी। ३ मृत्युकी तिथि। अव्य० नित्य।

रोज-अफज़ूँ-वि०(फा०) नित्य बढ़नेवाला।

रोज़गार- पुं०(फा०)१ जीविका या धन-संचयके लिये हाथ में लिया हुआ काम, व्यवसाय, धंधा , पेशा ,कारबार। २ व्यापार, तिजारत।

रोज़गारी- पुं० (फा०) १ उद्योग,व्यवसाय। २ व्यवसायी, व्यापारी।

रोज़-नामचा - पुं० (फा० रोजनामचः) वह किताब जिसपर रोजका किया हुआ काम लिखा जाता है।

रोज़-ब-रोज़-क्रि०वि० (फा०) नित्य, प्रतिदिन।

रोज़-मर्रा-अव्य० (फा० रोज़मर्रः) प्रतिदिन। नित्य। पुं० नित्यके व्यवहारमे आनेवाली भाषा, बोलचाल, चलती बोली।

रोज़ा- पुं० (फा० रोज़ः)१ व्रत, उपवास। २ वह उपवास जो मुसलमान रमज़ानके महीनेमें करते है। पुं० दे० 'रौज़ा'।

रोज़ा-कुशाई- स्त्री० (फा०) दिनभर रोजा रखने के बाद कुछ खाकर रोजा खोलना या तोड़ना।

रोज़ा-खोर- पुं०(फा०)वह जो रोजा न रखता हो।

रोज़ा-दार- पुं०(फा०) वह जो रोजा रखता हो, उपवास करनेवाला।

रोज़ाना-क्रि०वि० (फा० रोज़ानः) नित्य, प्रतिदिन।

रोज़ी- स्त्री०(फा०) १ नित्यका भोजन। २ जीवन-निर्वाहका अवलंब, जीविका।
रोज़ीना- पुं० (फा० रोज़ीनः) १ एक दिन की मज़दूरी। २ मासिक वेतन या वृत्ति आदि।
रोज़ीनादार-वि० (फा०) (सं० रोज़ीनादारी) रोजीना या वृत्ति आदि पानेवाला।
रोज़ी-रसाँ- पुं०(फा०) १ रोज़ी पहुँचानेवाला, जीविकाकी व्यवस्था करनेवाला। २ ईश्वर।
रोज़े-जज़ा- पुं० (फा+अ० )क़्यामतका दिन जब जीवोंको उनके शुभ और अशुभ कर्मों का फल मिलेगा।
रोज़े-दाद-पुं० दे० रोजे-जज़ा।
रोज़ें-रौशन- पुं०(फा०)१ प्रातःकाल, सवेरा। २ दिनका समय।
रोज़े-शुमार-दे० 'रोजे -जज़ा'।
रोज़े-सियह- पुं० (फा०) विपत्ति या दुर्भाग्यके दिन।
रोब- पुं० (अ० रुअब) बड़प्पनकी धाक, आतंक, दबदबा। मुहा०-रोब जमाना=आतंक उत्पन्न करना। रोबमें आना= १ आतंकके कारण कोई ऐसी बात कर डालना जो यों न की जाती हो। २ भय मानना।
रोबदाब-पुं० (अ०) धाक और त्रास।
रोबदार-वि० (अ०+फा०) रोबदाबवाला, प्रभावशाली।
रोया- पुं० (अ०) स्वप्न।
रोशन-वि० (फा०) १ जलता हुआ, प्रकाशित। २ प्रकाशमान, चमकदार। ३ प्रसिद्ध। ४ प्रकट, जाहिर।
रोशन-चौकी- स्त्री० (फा० रोशन+हिं० चौकी) शहनाईका बाजा, नफीरी।
रोशन-ज़मीर-वि०(फा०+अ०) बुद्धिमान्, समझदार।
रोशन-दान- पुं०(फा०) प्रकाश आनेका छिद्र, गवाक्ष, मोखा।
रोशन-दिमाग़- पुं० (फा०) १ वह जिसका दिमाग़ बहुत अच्छा और ऊंचा हो। २ सँघनी. नस्य।
रोशनाई- स्त्री० (फा०) १ लिखनेकी स्याही, मसि। २ प्रकाश , रोशनी।
रोशनी- स्त्री० (फा०) १ उजाला। २ दीपक, चिराग़। ३ दीपमालाका प्रकाश। ४ ज्ञानका प्रकाश।
रौ- स्त्री०(फा०) १ गति, चाल। २ प्रवाह, बहाव। ३ वेग, झोंका । ४ चाल, ढंग। ५ किसी बातकी धुन। वि०(फा०) चलनेवाला। जैसे-पेश-रौं=आगे चलनेवाला, नेता।
रौग़न- पुं० दे० 'रोग़न'।
रौज़न- पुं० (फा०) १ छिद्र,सूराख २ छोटी खिड़की, झरोखा।
रौज़ा- पुं० (अ० रौजः) १ वाटिका, बाग़। २ किसी महात्मा या बड़े आदमीकी क़ब्र, मक़बरा।
रौज़ा-ख्वाँ- पुं०(अ०+फा०) १ मरसिया पढ़नेवाला। २ किसी के मक़बरेपर नियमित रूपसे दुआ पढ़नेवाला।
रौज़े रिज़वाँ- पुं०(अ०) स्वर्ग की वाटिका।
रौनक- स्त्री० (अ०) १ वर्ण और आकृति। रूप, चमक-दमक, दीप्ति, कांति। ३ प्रफुल्लता, विकास। ४ शोभा, छटा, सुहावनापन।
रौनक़-अफज़ा-वि० (अ०+फा०)(सं० रौनक़-अफ्ज़ाई) रौनक़ या शोभा बढ़ानेवाला।
रौनक़-अफरोज़-वि०(अ०+फा०)किसी स्थानपर उपस्थित होकर वहाँकी शोभा बढ़ानेवाला।
रौनक़-दार-वि० (अ०+फा०)(सं० रौनक़दारी) रौनक़ या शोभावाला, सुन्दर और सजा हुआ।
रौशन-वि० दे० 'रोशन'।
लंग-वि० (फा०) जिसका पैर टूटा हो, लँगड़ा, लुज।
लंगर- पुं० (फा०) १ लोहे का एक प्रकारका बड़ा काँटा जिसकी सहायतासे जहाज या नावको जलमें एक स्थानपर स्थित रखते हैं। २ कोई लटकने और हिलनेवाली भारी चीज। ३ बड़ा रस्सा या लोहेकी भारी जंज़ीर। ४ पहलवानों का लँगोट। ५

कपड़ेकी कच्ची सिलाई या दूर- दूरपर पड़े हुए बड़े टाँके । ६ वह स्थान जहाँ दरिद्रोंको भोजन बँटता है, सदाव्रत।

लंगरगाह-स्त्री० (फा०) वह स्थान जहाँ जहाज लंगर डालकर खड़े किए जाते हैं।

लअन-तअन- स्त्री० (अ०) गालियाँ और ताने, अपशब्द और व्यंग्य।

लअब- पुं० (अ०) खेल यौ०-लहो-लअब=खेलवाड़ ।

लईन-वि०(अ०)जिसपर लानत भेजी जाय, जिसे शाप दिया या दुर्वचन कहा जाय, शापित।

लऊक- पुं० (अ०) चाटकर खाई जानेवाली औषधि, अवलेह, चटनी।

लकनत- स्त्री० दे० 'लुकनत' ।

लक़ब- पुं०(अ०) १ उपनाम। २ उपाधि, खिताब।

लक़्लक़- पुं० (अ०) सारस पक्षी, धनेस। वि० बहुत दुबला-पतला। क्षीण।

लक़्लका- पुं(अ० लक़्लकः) १ सारस की बोली। २ साँपों आदि के बार-बार जीभ हिलाने की क्रिया। ३ उच्चाकांक्षा। ४ प्रभाव, दबदबा, रोब।

लक़्वा- पुं०(अ० लक़्वः)एक प्रकारका वात-रोग । फालिज।

लक़ा- पुं०(अ०) १ चेहरा, आकृति, शक्ल। यौ०-माहे-लक़ा=जिसका मुख चन्द्रमाके समान हो (प्रिय या प्रेमिकाका वाचक)। २ एक प्रकारका कबूतर जिसकी दुम मोर की दुम की तरह होती है।

लक्क़ व दक्क़-वि० (अ०) १ उजाड़, सुनसान, (मैदान आदि)। २ जिसमे बहुत आडंबर और शान- शौक़त हों।

लक्क़ा- पुं०(अ०) एक प्रकारका कबूतर जिसकी पूँछ पंखेकी तरह होती है।

लक्वा- पुं० (अ०) पक्षाघात।

लखलखा- पुं० (फा० लखलखः)कोई सुगंधित द्रव्य जिसका व्यवहार मूर्च्छा दूर करनेके लिए होता हो।

लख्त- पुं०(फा०) टुकड़ा, खंड। यौ०-लख्ते जिगर या लख्ते दिल=दिल या कलेजेका टुकड़ा, सन्तान, औलाद। यकलख्त=एकदमसे, बिलकुल।

लग़ज़िश- स्त्री० (फा०) १ फिसलने या रपटनेकी क्रिया । २ भूल, ग़लती। ३ ज़बानका लड़खड़ाना।

लगन- पुं० (फा०) ताँबेकी एक प्रकारकी बड़ी थाली या परात।

लगाम- स्त्री०(फा०) १ लोहेका वह ढाँचा जो घोड़ेके मुँह में लगाया जाता है। २ इस ढाँचे के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सा या चमड़ेका तस्मा ज़िसकी सहायतासे घोड़ा चलाया, रोका और इधर-उधर मोड़ा जाता है, रास, बाग। ३ नियन्तत्रण में रखनेवाली चीज़। मुहा०-मुँहमे लगाम न होना= बद-ज़बान होना। जो मुँहमें आवे वह बकनेकी आदत होना।

लग़ायत-क्रि०वि० (अ०) १ साथ में लिये हुए, सहित। २ (अमुकके)अन्त तक, वहाँ तक, पर्यन्त।

लग़ो-वि० (अ० लग्व) व्यर्थकी या वाहियात बात।

लग्वियात-स्त्री० (अ०) व्यर्थकी या वाहियात या झूठी बातें।

लजाजत- स्त्री० (अ०) १ लड़ाई, झगड़ा । २ अत्युक्ति।

लज़ीज़-वि०(अ०) जिसमें लज्ज़त हो, बढ़िया स्वादवाला, स्वादिष्ट।

लज़ूम- पुं०(अ०)लाज़िम या आवश्यक होना।

लज़्ज़त- स्त्री०(अ०) १ स्वाद, ज़ायका। २ आनन्द।

लताफत-स्त्री० (अ०) (लतीफ का भाव) १ सूक्ष्मता, कोमलता। २ स्वाद, ज़ायका। ३ बढ़ियापन, उत्तमता।

लतीफ-वि०(अ०) १ मजेदार, स्वादिष्ट, ज़ायकेदार। २ अच्छा। ३ सूक्ष्म। ४ कोमल।

लतीफा- पुं० (अ० लतीफः) (बहु० लतायफ) छोटी चोज़भरी कहानी या बात, चुटकला।

लतीफा-गो- पुं० (अ० लतीफः+फा० गो) लतीफा या चुटकला कहनेवाला।

लतीफा-बाज़ दे० 'लतीफा-गो'।

लन्तरानी- स्त्री० (अ०) बहुत बढ़-बढ़कर की जानेवाली बातें, शेखी, डींग।

लफंग- पुं० (फा०) दुश्चरित्र, बदमाश, लुच्चा, लफंगा।

लफ्ज- पुं०(अ०) शब्द। मुहा०-लफ्ज ब लफ्ज=शब्दशः।

लफ्ज़ी-वि० (अ०) केवल लफ्ज या शब्दसे सम्बन्ध रखनेवाला। शाब्दिक। यौ०-लफ्जी-मानी=शब्दार्थ, शब्दका सामान्य अर्थ।

लफ्फाज़-वि० (अ० लफ्ज़से) बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला, शेखी या डींग हाँकनेवाला।

लफ्फाज़ी- स्त्री० (अ० लफ्फाज)बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना,डींग हाँकना।

लब- पुं०(फा०) १ होंठ,ओष्ठ। २ थूक, लाला। ३ किनारा, पार्श्व, तट। जैसे- लबे दरिया ,लबे सड़क।

लब-बंद-वि०(फा०) जिसके होंठ बंद हो, जो कुछ कह या बोल न सके।

लबरेज-वि० (फा०) ऊपर या मुँह तक भरा हुआ, लबालब।

लबलबा- पु० (फा० लब्लबः) पशुओं आदिके पेटके नीचेकी एक गाँठ जिसमें से लसदार स्राव निकलता है।

लब-व-लहजा- पुं० (फा०) बोलनेका ढंग या प्रकार ।

लबादा- पुं० (फा० लबादः)सबके ऊपर ओढ़ने या पहनने का एक प्रकार का वस्त्र।

लबालब- वि०(फा०) बिलकुल ऊपर या मुँहतक भरा हुआ । जैसे-गिलासमें पानी, लबालब भरा हुआ है।

लबे-गोर-वि०(फा०) गोर या कब्रके किनारे तक पहुँचा हुआ, मरनेके किनारे, जिसके मरनेमें अधिक विलंब न हो, मरणासन्न।

लबे-दरिया- पुं०(फा०) नदीका किनारा, नदीका तट।

लबे-शीरीं- -पुं० (फा०) मधुर होंठ।

लमहा- पुं० (अ० लमहः )बहुत थोड़ा समय, क्षण, पल।

लम्स- पुं० (अ०)स्पर्श, छूना।

लरज़ना-क्रि० अ० (फा० लरजः) काँपना। थरथराना।

लरज़ाँ-वि०(फा० लर्ज़ाँ) काँपता हुआ।

लरज़ा - पुं० (फा० लर्ज़ः) १ काँपने या थरथराने की क्रिया। कंप। यौ०-तपे लरजा = जाड़ा देकर आनेवाला बुखार, जूड़ी। २ भूकम्प, भूडोल, भूचाल।

लारजिश- स्त्री० दे० 'लरजा'।

लवाज़िम- पुं० (अ०) साथमें रहनेवाली आवश्यक सामग्री।

लवातत-स्त्री० (अ०) गुदामैथुन।

लवाहक़- पुं० (अ० लवाहिक़) १ सम्बन्धी, भाई-बन्द, रिश्तेदार। २ साथ रहनेवाले लोग या सामग्री। ३ वह प्रत्यय जो किसी शब्दके अन्तमें लगता है।

लश्कर- पुं०(फा०) १ सेना, फौज। यौ०-लश्कर-कशी= १ सेना एकत्र करना, सैन्य-संग्रह। २ चढ़ाई, आक्रमण, धावा। ३ सेनाका पड़ाव फौजके ठहरने या रहनेकी जगह।

लश्कर-गाह- स्त्री०(फा०)लश्कर या सेनाके ठहरने की जगह, छावनी।

लश्करी-वि० (फा०)लश्कर या सेनासे सम्बन्ध रखनेवाला, सैनिक। यौ०-लश्करी बोली= १ वह बोली जिसमें कई भाषाओंके शब्द मिले हों। २ उर्दू भाषा। ३ जहाज के खलासियोंकी बोली।

लस्सान-वि० (अ०)अच्छा वक्ता।

लहजा- पुं० (अ० लहजः) बोलनेमें स्वरोंका उतार-चढ़ाव या ढंग, स्वर। यौ०-लब-व-लहजा=बोलने का ढंग।

लहद- स्त्री० (अ०) क़ब्र जिसमें लाश गाड़ी जाती है।

लहन- स्त्री०(अ०) स्वर, आवाज।

लहीम-वि०(अ०) मोटा,स्थूल।

ला-अव्य०(अ०) एक अव्यय जो शब्दोंके आरम्भ में लगकर निषेध या अभाव सूचित करता है। जैसे- ला-चार= जिसका वश न चले, ला-जवाब= जिसका जवाब या जोड़ न हो।

ला-इलाज-वि० (अ०)१ जिसका कोई

इलाज या चिकित्सा न हो सके। २ जिसका कोई प्रतिकार या उपाय न रह गया हो।

ला-इल्म-वि० (अ०) १ जिसको इल्म या ज्ञान न हो, जिसको जानकारी न हो। २ अज्ञान।

ला-इल्मी- स्त्री०(अ०) अज्ञान या अनजान होने की अवस्था।

ला-उम्मती- पुं० (अ०) वह जो किसी धर्म कों न मानता हो।

ला-कलाम-वि० (अ०) १ जिसमें कुछ भी कहने-सुननेकी जगह बाकी न रह गई हो। २ बिलकुल ठीक, निश्चित, ध्रुव।

लाख- पुं० (फा०) स्थान, जगह। जैसे- संग-लाख, देव-लाख।

ला-खिराज-वि० (अ०)(ज़मीन)जिसपर खिराज या लगान न लगता हो, कररहित भूमि, माफी ज़मीन, धर्मोत्तर।

लाग़र-वि०(फा०) दुबला-पतला।

लाग़री- स्त्री० (फा०) दुबलापन, क्षीणता, कृशता।

लाग़ी-वि० (अ०) १ झूठा। २ शेखीबाज।

लाचार-वि०(अ०) १ जिसका कुछ वश न चले, असमर्थ, असहाय। २ दीन, दुःखी। ३ जिसके लिए और कोई उपाय न रह गया हो।

लाचारी- स्त्री० (अ०) १ लाचार होने की अवस्था या भाव। २ असमर्थता। ३ दीनावस्था। ४ विवशता।

ला-ज़बान-वि०(अ० ला+फा० जबान) जो कुछ बोल न सकता हो। स्त्री० गाली।

लाजवर्द- पुं० (फा०) एव प्रकार का प्रसिद्ध रत्न या क़ीमती पत्थर, राजवर्तक।

लाजवर्दी-वि० (फा०)१ लाजवर्दका बना हुआ । २ आसमानी।

ला-जवाब-वि० (अ०)१ जिसका जवाब या जोड़ न हो, अनुपम, बे-जोड़। २ जो उत्तर ने दे सके।

ला-ज़वाल-वि० (अ०) १ जिसका जवाल (नाश या व्हास ) न हो, सदा एक -सा बना रहनेवाला।

लाजिम-वि (अ०) आवश्यक। यौ०-लाज़िम व मलजूम=जो आपसमें इस प्रकार सम्बद्ध हों कि अलग न किये जा सकें।

लाजिमन-क्रि० वि० (अ०) निश्चित रूप से।

लाज़िमी-वि०(अ०)१ जिसका होना आवश्यक हो, अनिवार्य, जरुरी।

ला-दवा-वि०(अ०) जिसकी कोई दवा या इलाज न हो।

ला-दावा-वि० (अ०) जिसका कोई दावा, स्वत्व या अधिकार न रह गया हो। पुं० १ वह जिसने किसी पदार्थसे अपना दावा या स्वत्व हटा लिया हो। २ वह पत्र या लेख जिसके अनुसार किसी पदार्थ पर से अपना दावा या स्वत्व हटा लिया जाय।

लानत- स्त्री० (अ०) (वि० लानती) धिक्कार, फटकार।

लाफ- स्त्री० (फा०) बढ़-बढ़कर बातें करना, शेखी बघारना। यौ०- लाफ-गुज़ाफ।

लाफ- ज़नी- स्त्री०(फा०) शेखी हाँकना, अपने सम्बन्ध मे बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना।

लाफ-व-गिज़ाफ- पुं० (फा०) गाली-गलौज, दुर्वचन, अपशब्द।

लाफानी-वि०(अ०) अनश्वर,अमर, शाश्वत।

लाबुद-वि०(अ०) जरूरी, आवश्यक, निश्चित।

ला-मकान-वि० (अ०) जिसके कोई मकान या रहनेकी जगह न हो।

लाम-काफ- पुं० (फा० वर्णमालाके अक्षर लाम और काफ) गाली-गलौज, दुर्वचन।

ला-मज़हब-वि०(अ०) जो धर्मको न मानता हो, धर्म-भ्रष्ट।

लायक़-वि० (अ०) १ योग्य, क़ाबिल। २ उपयुक्त। जैसे- लायक़े-सज़ा=दंड पाने के योग्य।

लायक़-मन्द-वि० (अ०) योग्य, क़ाबिल, अच्छे गुणोंवाला।

ला-यज़ाल-वि०(अ०)शाश्वत, स्थायी।

ला-यमूत-वि० (अ०) जो कभी न मरे, अमर।

ला-रैब-क्रि० वि० (अ० ला+रैब) विना

शक्के, निस्सन्देह।

लाल- पुं० (फा० लअल) लाल रंगका सुप्रसिद्ध रत्न, माणिक। सुहा०-लाल उगलना= मुँहसे बहुत अच्छी बातें कहना, (व्यंग्य)यौ०-लाले-बेवहा=बहुमूल्य रत्न।

लाल-बेग- पुं०(फा०) भंगियों और चमारोंके एक पीरका नाम।

लाल-बेगिया-वि० लाल बेगका अनुयायी।

लाला- पुं० (फा० लालः) १ पोस्तका फूल जो लाल रंग का होता है। २ एक प्रकारके पौधेंका लाल फूल।

लाला-फाम-वि० (फा०) लाल रंगका, रक्त वर्णका।

लाला-रुख-वि० (फा०) १ जिसका मुख लाला फूलके रंगके समान लाल हो। २ बहुत सुंदर।

लाले- पुं० (सं० लालसा) लालच, अभिलापा। मुहा०-किसी चीजके लाले पड़ना= किसी चीजका बहुत अप्राप्य होना। जानके लाले पड़ना= प्राणों पर संकट आना, प्राण बचना कठिन होना।

ला-ववाली- स्त्री०(अ०) १ विचारशीलताका अभाव, अविचार। २ लापरवाही, उपेक्षा।

लाव-लश्कर- पुं० (फा०) सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।

ला-वल्द-वि० (अ०) जिसकी कोई औलाद न हो, निस्सन्तान।

ला-वारिस- वि०(अ०) जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो।

ला-वारिसी- स्त्री० (अ०) वह सम्पत्ति जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो।

लाश- स्त्री० (तु०) शव।

लाशा- प्रुं० दे० 'लाश'।

ला-सानी-वि०(अ०) जिसका सानी या जोड़ न हो, अनुपम।

लाह-पुं०=अल्लाह।

लाहक़- वि०(अ०) १ मिला हुआ। २ सम्बद्ध, आश्रित, निर्भर।

ला-हासिल-वि० (अ०)१ जिसमें कुछ हासिल न हो, जिसमें कुछ लाभ या प्राप्ति न हो। २ निरर्थक। ३ अनावश्यक, फजूल।

लाहिक़- पुं०(अ०) (बहु० लवाहिक़)१ रिश्तेदार। २ आश्रित।

लाही- वि० (अ०) अचेत, बेसुध।

ला-हौल-(अ०) 'लाहौल वला कूवत इल्ला व इल्लाह' का संक्षिप्त रूप जिसका अर्थ है- ईश्वरके सिवा और कोई शक्ति नहीं है। इसका प्रयोग प्रायः घृणा या तिरस्कार सूचित करने अथवा भूत-प्रेत आदि दुष्ट आत्माओंको भगाने के लिये किया जाता है। मुहा०-लाहौल पढ़ना या भेजना= घृणा आदि सूचित करने अथवा दुष्ट आत्माओं को भगानेके लिये उक्त पद का पाठ करना।

लिफाफा- पुं० (अ० लिफाफ़ः) १ काग़ज़का वह चौकोर आवरण या थैली जिसके अन्दर रखकर पत्र आदि भेजें जाते हैं। २ ऊपरी आडंबर, दिखावटी शोभा या साज-सामान। ३ जल्दी खराब होनेवाली चीज़।

लिफाफिया-वि(अ० लिफाफ़ः) केवल ऊपरी आडंबर रखने वाला।

लिबास- पुं० (अ०) १ पहनने के कपड़े, वस्त्र, भेस, वेश।

लिबास- पुं० (अ०)१ भीतरी रूप छिपानेके लिये जिस पर कोई आवरण पड़ा हो। २ नक़ली।

लियाक़त- स्त्री०(अ०) १ कार्य करनेकी योग्यता। २ लायक़ होनेका भाव। ३ किसी विपयका अच्छा ज्ञान। विज्ञता।

लिल्लाह-क्रि०वि० (अ०) अल्लाह या खुदा के नामपर, ईश्वरके लिये।

लिसान- स्त्री० (अ०) १ जबान, जिव्हान, जीभ। २ भापा, जबान, बोली। जैसे- लिसान-उल् गैब=आकाशवाणी।

लिहाज़- पुं० (अ०)१ व्यवहार या बरतावमे किसी बातका ध्यान। २ मेहरबानीका खयाल। कृपा-दृप्टि। ३ शील-संकोच। मुलाहज़ा। मुरव्वत। ४ सम्मान या मर्यादाका ध्यान। ५ पक्षपात। तरफ़दारी। ६ लज्जा। शर्म, हया। मुहा०- ब-लिहाज़ =

लिहाज या मुलाहजेके साथ।

लिहाज़ा-क्रि0वि0 दे0 'लेहाजा'।

लिहाफ- पुं0 (अ0) जाड़ेमें रातको ओढ़ने का रूईदार ओढना, रजाई।

लुंगी- स्त्री0(फा0) अंगोंछीकी तरहका एक कपड़ा जो प्रायः कमरमें धोती की जगह लपेटा जाता है। तहमत।

लुआब- पुं0(अ0)१ थूक, लार। २ लस, लसी, लेप।

लुआबदार-वि0(अ0लुआब+फा0 दार) जिसमें लुआब या लस हो, लसदार, चिपचिपा।

लुकनत- स्त्री0 (अ0) १ रुक-रुककर बोलना, हकलापन। २ रोग या नशे आदिके कारण रुक-रुककर बोलनेकी क्रिया।

लुक़्मा- पुं0 (अ0 लुक्मः)उतना भोजन जितना एक बार मुँहमें डाला जाय, ग्रास, कौर। मुहा0- लुक़्मा करना= खा जाना।

लुक़्मान- पुं0(अ0)एक प्रसिद्ध विद्वान् और दार्शनिक।

लुग़त- स्त्री0 (अ0) १ भाषा, जबान। २ ऐसा शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट या प्रसिद्ध न हो। ३ शब्द-कोश, अभिधान।

लुग़ात- स्त्री0 (अ0 लुग़तका बहु0) शब्दों और उनके अर्थोंका संग्रह, शब्द-कोश।

लुग़्ज़- पुं0 (अ0) १ पहेली। २ समस्या।

लुग़वी-वि0 (अ0) शाब्दिक, शब्दोंका। जैसे-लुग़वी मानी=शब्दोंका पहला या सामान्य अर्थ।

लुच-वि0(तु0) १ नंगा। २ लंपट।

लुत्फ- पुं0(अ0) १ मजा, आनन्द। २ रोचकता। ३ स्वाद, जायका। ४ कृपा, दया, अनुग्रह। ५ भलाई, खूबी, उत्तमता।

लुत्फी-वि0(अ0) दत्तक (पुत्र)।

लुब- पुं0 (अ0) १ सार, तत्व। २ गिरी, मग्ज। ३ आत्मा।

लुबूब- पुं0 (अ0)१ लुबका बहुवचन। सार, तत्व। २ एक प्रकारका अवलेह या माजून।

लुब्बे-लुबाब- पुं0 (अ0) सार, भाव, तत्व।

लुर-वि0(फा0) बेवकूफ, मूर्ख।

लूती- पुं0 (अ0)वह जो अस्वाभाविक रूपसे मैथुन करे, बालकों के साथ संभोग करनेवाला, लौंडेबाज।

लूलू- पुं0(फा0)१ बच्चोंको डराने के लिये एक कल्पित जीवका नाम, हौवा, जूजू। २ मूर्ख, बेवकूफ, गावदी। ३ पागल। पुं0 (अ0)मोती।

लेकिन-अव्य0 पुं0(अ0) परन्तु, पर।

लेज़म- स्त्री0 (फा0) एक प्रकारकी कमान जिसमे लोहे की जंजीर और झाँझे लगी रहती हैं और जिसका व्यवहार व्यायामके लिए होता है।

लेहज़ा लेहाज़ा-क्रि0वि0(अ0) इसलिए, इस वास्ते, इस कारण से, अतः।

लैत-व-लअल- पुं0(अ0) टाल-मटोल, बहाना, आज-कल करना।

लैमून-पुं0(अ0)नींबू।

लैमूनी-वि0(अ0)नींबू-संबंधी।

लैल- पुं0 (अ0) रात। यौ0-लैलो-विहार=रात-दिन।

लोबान- पुं0 (अ0)एक प्रकारका सुगन्धित गोंद जो प्रायः जलाने या औषध आदि के काम में आता है।

लोबिया- पुं0 (फा0) एक प्रकारकी फली जिसकी तरकारी बनती है।

लोल- वि0 (फा0) चंचल, चपल।

लौज़- पुं0 (अ0) १ बादाम। २ एक प्रकारकी मिठाई।

लौन- पुं0 (अ0) रंग, वर्ण।

लौस- पुं0 (अ0)१ मिलावट, मेल। २ सम्पर्क, सम्बन्ध।

लौह- स्त्री0 (अ0)१ लकड़ी का तख्ता। २ काठकी वह तख्ती जिसपर लिखते हैं। ३ पुस्तकका मुख्य पृष्ठ।

व-इल्ला-क्रि0 वि0 (अ0) नहीं तो, वरना।

वईद- स्त्री0 (अ0) १ बुरा-भला कहना। २ धमकी।

वकअत- (अ0)१ शक्ति, बल, ताक़त। २ ऊंचाई। ३ एतबार, साख। ४ महत्तव, मूल्य, इज्जत।

वक़फियत- स्त्री0 दे0 'वाक़फीयत'।

वक़र- पुं0 (अ0 वक्र) १ भार, बोझ २

उत्तम स्वभाव, शील। ३ बड़प्पन, महत्तव। ४ ठाठ-बाट, वैभव।

वक़ाया- पुं०( अ० वकीयऽका बहु० )घटनाएँ या उनके समाचार।

वक़ाया- निगार- वि०( अ०+फा० ) (सं०वक़ाया-निग़ारी) समाचार आदि लिखनेवाला। संवाददाता।

वक़ार- पुं०( अ० )१ उत्तम स्वभाव, शील। २ विचारों की स्थिरता, स्थिर-चित्तता। ३ शान-शौक़त। वैभव।

वकालत- स्त्री० (अ०) १ दूत-कर्म। २ दूसरेकी ओरसे उसके अनुकूल बात-चीत करना। ३ मुक़दमे में किसी फरीक़की तरफसे बहस करनेका पेशा, वकीलका काम।

वकालतन-क्रि०वि० ( अ० ) वकील के द्वारा। 'असालतन्' का उलटा।

वकालत-नामा- पुं० (अ०+फा० नामः ) वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई वकीलकों मुक़दमेंमें बहस करनेके लिए मुक़र्रर करता है।

वक़ाहत- स्त्री० (अ०) १ निर्लज्जता। २ बे-हऽयाई। २ उद्‌दण्डता।

वकीअ- वि० (अ०) मजबूत, पक्का।

वकील- पुं० (अ०) (बहु० वकला)१ दूत। २ राजदूत, एलची। ३ प्रतिनिधि। ४ दूसरेका पक्ष मंडन करनेवाला। ५ वह आदमी जिसने वकालतकी परीक्षा पास की हो और जो अदालतों मे मुद्‌दई या मुद्‌दालेहकी ओर से बहस करे।

वकूअ- पुं० (अ०) १ घटना। २ दुर्घटना।

वकूआ- पुं०( अ० वुकूअ) वाक़ा होना, घटित होना।

वकूफ- पुं०( अ० वुकूफ) १ ज्ञान, जानकारी। २ अक्ल, शऊर। यौ०-बे-वकूफ=निर्बुद्धि।

वकअत-स्त्री०( अ० ) प्रतिष्ठा, इज्जत।

वक्त- पुं० (अ०)( बहु० औक़ात )१ समय। २ अवसर। ३ अवकाश, फुरसत।

वक्तन-फवक्तन-क्रि० वि० (अ० वक्तसे ) कभी-कभी, बीच-बीचमें, समय-समयपर।

वक्त-ब-वक्त- क्रि० वि०=वक्तन-फवक्तन।

वक्तबेवक्त- क्रि० वि० (अ०) समय-असमय।

वक्फ- पुं०( अ० ) १ वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। २ किसी के लिए कोई चीज छोड़ देना।

वक्फ-नामा- पुं० (अ०+फा० नामः )वह पत्र जो कोई संपत्ति वक्फ करने के सम्बन्धमें लिख देता है।

वक्फा- पुं० (अ० वक्फः ) १ ठहराव, स्थिरता। २ थोड़ी-सी देर।

वक्फी-वि० (अ०) वक्फ या धर्मार्थ दान किया हुआ।

वक़- पुं० दे० 'वक़ार'।

वगर-अव्य दे० 'अगर'।

वगर-ना-अव्य० ( फा० ) नहीं तो।

वगैरह-अव्य० (अ०) इत्यादि।

वज़न- पुं० (अ०) (बहु० औज़ान) १ भार, बोझ, तौल। २ मान, मर्यादा, गौरव।

वजनकश- पुं० (अ० +फा० ) तौलने वाला।

वजनकशी- स्त्री० (अ०+फा०) तौलाई।

वज़नदार-वि० दे० 'वज़नी'।

वज़नी-वि० (अ० वज़नसे फा०) जिसका बहुत बोझ हो, भारी।

वजह- स्त्री० (अ० वज्ह )१ कारण, हेतु। २ सूरत। ३ तौर-तरीका। ४ आयका साधन या द्वार।

वजह-तस्मियह- स्त्री० (अ०) नामकरण का कारण।

वज़ा- पुं० (अ०वजऽ) पीड़ा, दर्द, टीस। जैसे-वजा-उलकलब=दिलका दर्द, वजा-मफासिल=गठिया रोग।

वज़ा- स्त्री० (अ० वजअ) १ बनावट, रचना। २ सज-धज। ३ दशा, अवस्था। ४ रीति, प्रणाली। ५ मुजरा, मिनहा। ६ प्रसव करना, जनना। यौ०-वज़ा-हमल=गर्भ-पात।

वज़ाएफ- पुं० दे० 'वजायफा'।

वज़ादार-वि० (अ०+फा०)( सं० वज़ादारी) १ जिसकी बनावट या सजावट अच्छी हो,

तरहदार। २ सिद्धान्तों और प्रतिज्ञाओंका पालन करनेवाला।
वज़ायफ- पुं० (अ०) 'वजीफा' का बहु०।
वज़ारत- स्त्री० (अ०विज़ारत) १ वज़ीरका भाव, पद या कार्य, मंत्रित्व। २ वज़ीरका कार्यालय।
वजाहत- स्त्री० (अ०) १ सुन्दरता, सौन्दर्य। २ चेहरे का रोब। ३ प्रतिष्ठा।
वजाहत- स्त्री० (फा०) १ स्पष्टता। २ सुन्दरता।
वज़ीअ - वि० (अ०) कमीना, नीच।
वज़ीफा- पुं० (अ० वज़ीफः) (बहु० वज़ायफ) १ वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वनों,छात्रों या त्यागियों आदि को दी जाती है। २ जप या पाठ, (मुसलमान)।
वज़ीफादार-वि० (अ०+फा० वज़ीफःदार) वृत्तिधारी।
वज़ीर- पु० (अ०) (बहु० वुज़रा) १ मंत्री, अमात्य। २ शतरंजकी एक गोटी।
वज़ीरी- स्त्री० (अ० वज़ीर) वज़ीरका काम या पद।. पुं० घोड़ेकी एक जाति।
वज़ीरे-आज़म- पुं० (अ०) राज्य का प्रधान मन्त्री, प्रधान अमात्य।
वजीह-वि० (अ०) सुन्दर।
वजू- पुं० (अ० वुजू) नमाज पढ़नेके पूर्व शुद्धिके लिये हाथ-पाँव आदि धोना।
वजूद- पुं० (अ० वुजूद) १ कार्यसिद्धि, मनोरथ सफल होना। २ शरीर, बदन। ३ अस्तित्व, मौजूदगी। ४ प्रकट होना, सामने आना। ५ ठहराव।
वजूह- स्त्री० दे० 'वजूहात'।
वजूहात- स्त्री० (अ० वुजूहात) वजहका बहु०। वजहें। कारण।
वज्द- पुं० (अ०) १ दुखित और चिन्तित होनेकी अवस्था। २ वह तल्लीनता और तन्मयता जो धार्मिक उपदेश आदि सुनकर उत्पन्न होती है, हाल, जज़बा, बेखुदी। क्रि०प्र० -आना, में आना।
वतन- पुं० (अ०) जन्म-भूमि।
वतनी-वि० (अ० वतनसे फा०) अपने वतन या जन्म-भूमिका रहनेवाला। देशभाई।
वतर- पुं० (अ०) १ कमानका चिल्ला। २ बाजेके तार।
वतीरा- पुं० (अ० वतीर) रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा।
वदीयत- स्त्री० (अ०) धरोहर, अमानत।
वन्द-प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्तमें लगकर 'वाला' या 'स्वामी' आदिका अर्थ देता है। जैसे- खुदा-वन्द।
वफा- स्त्री० (अ०) १ वादा पूरा करना, बात निबाहना। २ निर्वाह, पूर्णता। ३ मुरौवत, सुशीलता।
वफात- स्त्री० (अ०) मृत्यु।
वफादार-वि० (अ०+फा०) (सं० वफादारी) वचन या कर्त्तव्यका पालन करनेवाला।
वफा-परस्त-वि० (अ०+फा०) (सं० वफा-परस्ती) वफादार।
वफूर-वि० (अ० वुफूर) अधिकता, बहुतायत, ज्यादती।
वफ्द- पुं० (अ०) प्रतिनिधि-मंडल।
वबा- स्त्री० (अ०) फैलनेवाला भयंकर रोग। जैसे- हैजा, प्लेग आदि।
वबाल- पुं० (अ०) १ बोझ, भार। २ आपत्ति, कठिनाई।
वर-प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर 'वाला'-का अर्थ देता है। जैसे-हुनरवर, जानवर,बख्तवर, ताजवर। वि० श्रेष्ठ, बढ़कर।
वरअ- स्त्री० (अ० वरऽ) सदाचार, पवित्र आचरण।
वरक- पुं० (अ०) (बहु० औराक़) १ पत्र। २ पुस्तकों का पन्ना, पत्र। ३ सोने,चाँदी आदि के पतले पत्तर।
वरक़-साज़-वि० (अ०+फा०) (सं० वरक़-साजी) चाँदी,सोने आदि के वरक़ बनानेवाला, तबक़गर।
वरक़ा- पुं० (अ० वर्कः) १ कागज। २ पत्र, चिट्ठी। ३ पृष्ठ।
वरगलाना-क्रि० सं० (देश०) १ बहकाना, भ्रम में डालना। २ उत्तेजित करना, उकसाना।

वरग़लना-क्रि0 स0 दे0 'वरग़लाना'।

वरज़िश- स्त्री0 (फा0 वर्ज़िश) शारीरिक व्यायाम, कसरत।

वरज़िशी-वि0 (फा0 वर्जिशी) वर्ज़िश या व्यायाम सम्बन्धी।

वरदी-वि0 (अ0 वर्दी) गुलाबी। स्त्री0 (अ0 वर्दी) १ वह पहनावा जो किसी विभागके सब कर्मचारियों के लिए मुकर्रर होता है। २ वे बाजे जो राजाओं आदिके यहाँ निश्चित समयपर बजा करते हैं, नौबत।

वरना-क्रि0 वि0 (फा0 वर्नः) यदि ऐसा न हुआ तो, नहीं तो।

वरम- पुं0 (अ0) शरीरके किसी अंगका फूल या सूज जाना, सूजन, सोज़िश।

वरसा- पुं0 (अ0 वर्सः) उत्तराधिकारसे प्राप्त धन, मीरास, तरका। पुं0 (अ0 व्ररसः) 'वारिस' का बहु0। उत्तराधिकारी लोग।

वरासत- स्त्री0 (अ0 विरासत) १ वारिस या उत्तराधिकारी होने का भाव, उत्तराधिकार। २ उत्तराधिकारसे मिला हुआ धन या सम्पत्ति, तरका।

वरासतन-क्रि0 वि0 (अ0 विरासतन्) वरासत या उत्तराधिकारके रूप में।

वरासत-नामा- पुं0 (अ0+विरासत+ फा0 नामः) उत्तराधिकार-पत्र।

वरूद- पुं0 दे0 'वुरूद।'

वर्क़- स्त्री0 दे0 'वरक़।'

वर्जिश- स्त्री0 दे0 'वरजिश।'

वर्द- पुं0 (अ0) गुलाब का फूल।

वर्दी- वि0 स्त्री0 दे0 'वरदी।'

वर्ना- क्रि0 वि0 दे0 'वरना।'

वलद- पुं0 (अ0) पुत्र, बेटा, लड़का। जैसे-मोहन वलद सोहन= सोहनका लड़का मोहन।

वलद-उज़्ज़िना-वि0 (अ0) हरामका पैदा, हरामी, वर्ण-संकर, दोगला।

वलद-उलू-हराम-वि0 (अ0) हरा़मका पैदा, हरामी, दोग़ला।

वलद-उल्-हलाल-वि0 (अ0) विवाहिता स्त्रीसे उत्पन्न, औरस।

वलदीयत- स्त्री0 (अ0) पिताके नामका परिचय।

वलवला- पुं0 (अ0 वल्व.:ः) १ शोर-गुल। २ उमंग, आवेश, क्रि0 प्र0- उठना।

वलादत- स्त्री0 (अ0 विलादत) जन्म, उत्पत्ति।

वली- पुं0 (अ0) १ उत्तराधिकारी। २ शासक, हाकिम। ३ साधु।

वली-अल्लाह- पुं0 (अ0) ईश्वर तक पहुँचा हुआ साधु।

वली-अहद- पुं0 (अ0) राज्यका उत्तराधिकारी, युवराज।

वली-नेमत- पुं0 (अ0) मालिक।

वलीमा- पुं0 (अ0 वलीमः) विवाह-सम्बन्धी भोज।

वले-क्रि0 वि0 (फा0) लेकिन्, मगर।

वलेक-क्रि0 वि0 दे0 'व-लेकिन।'

व-लेकिन-अव्य0 (अ0) लेकिन, परन्तु, पर।

वल्लाह- अव्य (अ0) ईश्वर की शपथ है।

वल्लाह-आलम-(अ0) १ ईश्वर अच्छी तरह जानता हैं। २ ईश्वर जाने, मैं नहीं जानता। वल्लाह बिल्लाह दे0 'वल्लाह।'

वश- प्रत्य0 (फा0) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर समान वा तुल्यका अर्थ देता है। जैसे-परी-वश= परीके समान।

वसअ- स्त्री0 दे0 'वराअत।'

वसअत- स्त्री0 (अ0 व्रुसअत) १ विस्तार, लम्बाई-चौड़ाई,फैलाव, प्रसार। २ क्षेत्र-फल, रक़बा। ३ सामर्थ्य, शक्ति। ४ गुंजाइश।

वसमा- पुं0 दे0 'वस्म।'

वसली- स्त्री0 दे0 'वस्ली।'

वसवसा- पुं0 दे0 'वसवास।'

वसवास- पुं0 (अ0) १ संन्देह, शक। २ आशंका, डर, भय। ३ आगा-पीछा, आना-कानी।

वसवासी-वि0 (अ0) १ जो जल्दी कुछ निश्चय न कर सके। २ शक्की।

वसातत- स्त्री0 (अ0) मध्यस्थता, वसीला।

वसायल- पुं0(अ0) 'वसीला' का बहु0।

वसी- पुं0 (अ0) वह जिसके नाम कोई

वसीअत की गई हो।
वसीअ-वि० (अ०) लम्बा-चौड़ा, विस्तृत।
वसीअत- स्त्री० दे० 'वसीयत।'
वसीक़-वि० (अ०) दृढ़, पक्का।
वसीक़ा- पुं० (अ० वसीक़ः) १ वह धन जो इस उद्देश्यसे सरकारी खजानेमें जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के सम्बन्धियों को मिला करे। २ ऐसे धनसे आया हुआ सूद।
वसीक़ादार- पुं० (अ०+फा०) जिसे किसी तरहका वसीक़ा मिलता हो।
वसीम-वि० (अ०) सुन्दर, मनोहर।
वसीयत- स्त्री० (अ०) (बहु० वसाया) अपनी सम्पत्तिके विभाग और प्रबंध आदिके संबन्ध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरनेके समय कोई मनुष्य लिख जाता हैं।
वसीयत-नामा- पुं० (अ०+फा०) वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी सम्पत्तिका विभाग और प्रबन्ध मेरे मरनेके पीछे किस प्रकार हो।
वसीला- पुं० (अ० वसीलः) १ सम्बन्ध। २ आश्रय, सहायता। ३ जरिया, द्वार।
वसूक़- पुं० (अ० वुसूक़) १ दृढ़ता, मजबूती। २ विश्वास, भरोसा, एतवार। ३ अध्यवसाय।
वसूल- पुं० (अ० वुसूल) पहुँचना, प्राप्ति। वि० जो पहुँच या मिल गया हो। प्राप्त।
वसूल-बाक़ी- पुं० (अ०) प्राप्त और प्राप्य धन।
वसूली- स्त्री० (अ० वुसूलसे) १ वसूल होने या मिलनेकी क्रिया या भाव, प्राप्ति। २ वह धन जो वसूल होनेको हो।
वस्क़- पुं० (अ०) १ शक्ति, ताक़त। २ दृढ़ विश्वास।
वस्त- पुं० (अ०) बीचका भाग, मध्य।
वस्ती-वि० (अ०) बीचका, मध्यका।
वस्फ- पुं० (अ०) (बहु० औसाफ) गुण, विशेषता, खूबी।
वस्फी-वि० (अ०) जिसमे वस्फ या गुण बतलाये गये हों, विवरणात्मक।
वस्मा- पुं० (अ० वस्मः) १ नीलके पत्तोंका खिज़ाब जो प्रायः मुसलमान बालों में लगाते हैं। २ उबटन, बटना। ३ रुपहले या सुनहले वरक़ों सें छपा हुआ कपड़ा।
वस्ल- पुं० (अ०) १ दो चीजों का मेल, मिलन। २ संयोग, मिलाप। ३ मृत्यु।
वस्लचा- पुं० (अ० वस्ल+फा० चः प्रत्य०) कपड़े या काग़ज आदि का छोटा टुकड़ा।
वस्लत- स्त्री० दे० 'वस्ल।'
वस्ली- स्त्री० (अ०) वह दोहरा या मोटा काग़ज जिसपर सुन्दर अक्षर लिखनेका अभ्यास किया जाता है। क्रि० प्र० लिखना।
वस्साफ-वि० (अ०) बहुत अधिक वस्फ या गुण बतलानेवाला, प्रशंसक।
वहदत- स्त्री० (अ०) वाहिद या एक होनेका भाव, एकत्व। यौ०-वहदत-उल्-वजूद=यह सिद्धान्त कि संसारकी सब वस्तुओंका कर्ता एक ईश्वर ही है।
वहदानियत- स्त्री० (अ०) १ वाहिद या एक होनेका भाव, एकत्व। २ अनुपमता।
वहब- पुं० (अ० वहब) उदारता।
वहबी-वि० (अ० वहबी) १ प्रदत्त, दिया हुआ। २ ईश्वर-दत्त।
वहम- पुं० (अ० वह्म) १ मिथ्या धारणा, झूठा खयाल। २ भ्रम। ३ व्यर्थकी शंका।
वहमी-वि० (अ० वह्मी) वहम करनेवाला, जो व्यर्थ संदेहमें पड़े।
वहश- पुं० (अ० वह्श) (बहु० वहूश) जंगली जानवर।
वहशत- पुं० (अ०) १ वहशी होनेका भाव, जंगलीपन, पागलपन। २ भीषणता, डर।
वहशत-अंगेज- वि० (अ०+फा०) भयानक, भीषण, विकट।
वहशत-ज़दा-वि० (अ०+फा०) १ जिसपर वहशत सवार हो। २ बहुत घबराया हुआ। ३ पागल, सिड़ी।
वहशत-नाक-वि० (अ०+फा०) भीषण, भयानक।
वहशियाना-क्रि० वि० (अ० वहशियानः) वहशियोंकी तरह।
वहशी-वि० (अ० वह्शी) १ जंगली। २ बहुत घबराया हुआ और चंचल।

वह्हाब-वि० (अ० वह्हाब) बहुत क्षमा करनेवाला। पुं० ईश्वर।

वह्हाबी- पुं० (अ० वह्हाबी) १ अब्दुल वहाब नज्दीका चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय। २ इस संप्रदायका अनुयायी।

वही- स्त्री० (अ०) ईश्वरकी वह आज्ञा जो उसके किसी दूत या पैग़म्बरके पास पहुँचे।

वहीद-वि० (अ०) अनुपम, बेजोड़, निराला।

वा-वि० (फा०) खुला या फैला हुआ।

वाइज़- पुं० (अ०) १ वाज़ या धर्मोपदेश करनेवाला। २ अच्छी बातों की नसीहत या शिक्षा देनवाला।

वाइद-वि० (अ०) वादा करनेवाला।

वाक़ई-वि० (अ० वाक़िई) सच, वास्तव। क्रि० वि० सचमुच, यथार्थमें।

वाकफीयत- स्त्री० (अ० वाक़िफियत) १ जानकारी, ज्ञान। २ जान-पहचान।

वाक़ा-वि० (अ० वाक़िऽ) १ होने या घटनेवाला। २ स्थित, खड़ा।

वाक़िफ-वि० (अ०) जाननेवाला, सब बातोंसे परिचित। यौ०-वाक़िफ-उल्- हाल = सारा हाल जाननेवाला।

वाक़िफकार-वि० (अ० +फा०) (सं० वाक़िफकारी) सब कार्मोसे वाक़िफ, अनुभवी, तजरुबेकार।

वाक़िया- पुं० (अ० वाक़िअऽ) १ घटना। २ वृत्तांत, समाचार।

वाक़िया-नवीस- पुं० (अ०+फा०) वह जो घटनाओं आदिके समाचार लिखकर कहीं भेजता हो। संवाददाता।

वाक़ियात- स्त्री० (अ०) 'वाक़या' का बहु०।

वागुजाश्त- स्त्री० (फा०) १ पीछे छोड़ना। २ छोड़ने या छुड़ानेकी क्रिया।

वाज़- पुं० (अ० वअज) १ उपदेश, शिक्षा। २ धार्मिक उपदेश, कथा। क्रि०वि० (फा०) खुला हुआ।

वाज़ा-वि० (अ० वाजिइ) १ प्रकट, जाहिर। २ स्पष्ट, खुला हुआ। ३ विस्तृत। ब्योरेवार। वि० (अ० वाजिअ) वजअ करने या बनानेवाला। जैसे-वाज़ा-कानून=कानून बनानेवाला।

वाजिब-वि० (अ०) १ मुनासिब, उचित, ठीक। २ योग्य, पात्र। पुं० १ वह जो अपने अस्तित्वके लिए किसी दूसरेपर निर्भर न हो। २ प्रतिदिन या मासका वेतन या वृत्ति।

वाजिब-उत्तस्लीम-वि० (अ०) तस्लीम करने या माननेके योग्य।

वाजिब-उत्ताज़ीर-वि० (अ०) ताज़ीर या दण्डके योग्य।

वाजिब-उल्-अर्ज-वि० (अ०) अर्ज या निवेदन करनेके योग्य।

वाजिब-उल्-अदा-वि० (अ०) (धन आदि) जो अदा करना या देना वाजिब हो।

वाजिब-उल्-इज़हार-वि० (अ०) जाहिर या प्रकट करनेके योग्य।

वाजिब-उल्-रहम-वि० (अ०) रहम या दयाके योग्य।

वाजिब-उल्-वुजूद-वि०(अ०) जो अपने अस्तित्वके लिए किसी दूसरेपर निर्भर न हो, स्वंयभू।

वाज़िबात- स्त्री० बहु० (अ०) १ आवश्यक कार्यक्रम या कर्तव्य आदि। २ वे रकमें जो वसूल होनेको बाकी हों।

वाजिबी-वि० (अ०) १ उचित; मुनासिब, ठीक। २ आवश्यक, जरूरी। ३ योग्य। पुं० नित्य या प्रतिमास मिलनेवाला वेतन या वृत्ति आदि।

वाजेह- वि० (अ०) स्पष्ट, जाहिर।

वादा- पुं० (अ० वअदः) वचन, प्रतिज्ञा, इक़रार। मुहा०-वादा कराना=वचन लेना, प्रतिज्ञा कराना।

वादाखिलाफी-स्त्री० (अ० वअदः+फा० खिलाफी) वचनभंग।

वादाफरामोश-वि० (अ० वअदः+फा० फरामोश) वादा भूल जानेवाला।

वादाफरामोशी- स्त्री० (अ० वअदः+फा० फरामोशी) वादा भूल जाना।

वादाशिकन-वि० (अ० वअदः+फा०) वचनभंग करनेवाला।

वादी- स्त्री० (अ०) १ पहाड़की घाटी। २ पहाड़ोंके पासकी नीची भूमि। ३ वन।

जंगल। मुहा०-वादीपर आना=अपनी बात या हठपर आना।

वापस-क्रि० वि० (फा०) लौटा हुआ, फिरता।

वापसी-वि० (फा०) लौटा हुआ या फेरा हुआ, वापस होनेके सम्बन्धका । स्त्री० लौटनेकी क्रिया या भाव, प्रत्यावर्त्तन।

वापसीन-वि० (फा०) अन्तिम, आखिरी। जैसे-दमें-वापसीन=अंतिम साँस।

वाफिर-वि० (अ०) बहुत अधिक।

वाफी-वि० (अ०) १ यथेष्ट, पूरा। २ सच्चा, निष्ठ।

वाबस्ता-वि० (फा० वाबस्तः) (भाव० वाबस्तगी) बँधा या लगा हुआ, सम्बद्ध। पुं० रिश्तेदार, सम्बन्धी।

वाबस्तगान-पुं० (अ० वाबस्तः का बहु०) बँधे हुए लोग।

वावस्ता- वि० (फा० बावस्तः) (भाव० बावस्तगी) बाँधा या लगा हुआ, सम्बद्ध पुं० रिश्तेदार, सम्बन्धी।

वाम- पुं० (फा०) उधार।

वा-माँदगी- स्त्री० (फा०) १ पीछे रहने या बच जानेकी क्रिया या भाव। २ थकावट, शिथिलता।

वा-माँदा- वि० (फा० वामाँदः) (बहु० वामाँदगान) १ बाकी बचा हुआ। २ जो थककर पीछे रह गया हो। ३ जूठा, उच्छिष्ट।

वामिक़- पुं० (अ०) १ मित्र, दोस्त। २ चाहनेवाला, आशिक़।

वाय-अव्य० (फा०) दुःख,चिन्ता और कष्ट आदिका सूचक अव्यय। जैसे-वाय क़िस्मत।

वार-वि० (फा०) १ समान, तुल्य। (यौ० शब्दों के अन्तमें ) जैसे - मजनूँ-वार = मजनूँ की तरह। २ रखनेवाला। जैसे-उमेद-वार। प्रत्य० एक प्रत्यय जो शब्दोंके अंतमें लगकर' के अनुसार' का अर्थ देता है। जैसे-माह-वार। पुं० (अ०) आघात, प्रहार।

वारदात- स्त्री० (अ० वारिदात) १ कोई भीषण काडं, दुर्घटना। २ मारपीट, दंगाफसाद।

वारफ्तगी- स्त्री० (फा०) १ आपेसे बाहर होनेकी अवस्था। २ तल्लीनता। ३ रास्ता भूलना, भटकना। ४ मार्गसे भ्रष्ट होना।

वारफ्ता-वि० (फा० वारफ्तः) १ आपेसे बाहर। २ तल्लीन। ३ भटका हुआ। ४ बेसुध।

वारस्तगी- स्त्री० (फा०) १ मुक्ति, छुटकारा। २ स्वतंत्रता,स्वच्छन्दता, स्वेच्छाचारिता।

वारस्ता वि० (फा० वारस्तः) (बहु० वारस्तगान) स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, स्वतंत्र। जैसे-वारस्ता-मिज़ाज=स्वतंत्र विचारोंवाला।

वारिद-वि० (अ०) आनेवाला, आगन्तुक। पुं० १ अतिथि, मेहमान। २ पत्रवाहक, दूत।

वारिदात- दे० 'वारदात।'

वारिस- पुं० (अ०) (बहु०वारिसान्, वुरसा) वह पुरुष जो किसीके मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदिका स्वामी हो। उत्तराधिकारी।

वारिसी- स्त्री० दे० 'वरासत'।

वाला-वि० (फा०)१ उच्च, ऊंचा। २ श्रेष्ठ, महान्। जैसे-जनावे-वाला।

वाला-क़द्र- वि० (फा०) उच्च पदस्थ, माननीय।

वाला-जाह=वि० (फ़ा०) उच्च पद वाला।

वालिद- पुं० (अ०) पिता। यौ०-वालिदे माजिद= पूज्य पिताजी।

वालिदा- स्त्री० (अ० वालिदः) माता, माँ।

वालिदैन-पुं० बहु० (अ०) माता-पिता, माँ-बाप।

वाली- पुं० (अ०) १ मालिक, स्वामी। २ बादशाह, राजा। ३ सहायक, मददगार। ४ संरक्षक। यौ०-वाली-वारिस= स्वामी, रक्षक और सहायक।

वावेला- पुं० दे० 'वावैला।'

वावैला- पुं० (अ०) १ विलाप, रोना-पीटना। २ शोर-गुल।

वाशी-वि० (अ०) १ झूठा। २ निंदक।

वा-शुद- स्त्री० (फा०) प्रफुल्लता।

वासिक-वि० (अ०) पक्का, दृढ़।

वासित- पुं० (अ०) १ मध्य भाग। २ मध्यस्थ, बिचवई।
वासिफ-वि० (अ०) प्रशंसक।
वासिल-वि० (अ०) (बहु० वासिलात) १ मिलनेवाला। २ वसूल या प्राप्त होनेवाला। ३ पहुँचा हुआ। यौ०-वासिल-बाकी=वसूल और बाकी रकम। ४ जिसका वस्ल हुआ हो, संयोगी।
वासिल-बाकी-नवीस- पुं० (अ०+फा०) वह कर्मचारी जो वसूल और बाकी लगान आदि का हिसाब रखता हो।
वासिलात- स्त्री० (अ० वासिलका बहु०) रियासत या जमींदारी आदिकी वसूल हानेवाली रकमें।
वासोख्त- पुं० (फा०) १ जलना, ज्वाला। २ वह कविता जो प्रेमिकाके दुर्व्यवहारोंसे दुःखी होकर प्रेम आदि की निन्दा के सम्बन्ध में की जाय।
वासोख्तगी- स्त्री० (फा०) दिलकी जलन, कुढ़नं, मनस्ताप।
वासोज़- पुं० (फा०) १ जलन, ज्वाला। २ आवेश।
वास्ता- पुं० (अ० वासितः=मध्यस्थ या दूत) १ सम्बन्ध, लगाव, ताल्लुक़! २ सरोकार, पाला। जैसे-ईश्वर तुमसे वास्ता न डाले। ३ दोस्ती, आशनाई। ४ सम्भोग।
वास्ते-अव्य० (अ० वासितः) १ लिये, निर्मित्त। २ हेतु, सबब।
वाह-अव्य० (फा०) १ प्रशंसासूचक शब्द, धन्य। २ आश्चर्यसूचक शब्द। ३ घृणा-द्योतक शब्द।
वाहिद-वि० (अ०) १ एक। २ अकेला। पुं० ईश्वर । यौ०- वाहिद शाहिद=ईश्वर साक्षी है।
वाहिब-वि० (अ०) १ दाता, दानी। २ उदार।
वाहिबा-स्त्री० (अ०) दानकत्री।
वाहिमा- पुं० (अ० वाहिमः) १ वह शक्ति जिससे सूक्ष्म बातोंका ज्ञान होता है। २ कल्पना-शक्ति।
वाहियात-वि० (अ० वाही+फा० इयात प्रत्य०)१ व्यर्थ। २ बुरा।
वाही-वि० (अ०) १ सुस्त। २ निकम्मा। ३ मूर्ख। ४ आवारा।
वाही-तबाही-वि० (अ० वाही+तबाही) १ बेहूदा। २ आवारा। ३ अंडबंड, बेसिर, पैरका। स्त्री० अडबंड बातें। गाली-गलौज।
विक़ार- स्त्री० दे० 'वक़ार।'
विज़ारत- स्त्री० दे० 'वज़ारत।'
विदा- स्त्री० (अ० विदाऽ मि० सं० विदाय) १ प्रस्थान, रवाना होना। २ कहींसे चलनेकी अनुमति।
विदाई-वि० (अ०) विदा या प्रस्थान-सम्बन्धी।
विरासत- स्त्री० (अ०) उत्तराधिकार. दायाधिकार।
विरासतन-क्रि० वि० (अ०) अत्तराधिकार में।
विर्द- स्त्री० (अ०) (बहु० औराद) १ नित्यका कार्य, दैनिक कृत्य। मुहा०-विर्दे ज़बान होना= ज़बानपर बार- बार आना। २ कुरान आदिका पाठ।
विर्सा-पुं० (अ०) वारिस का बहु०।
विलादत- स्त्री दे० 'वलादत।'
विलायत- पुं० स्त्री० (अ०) १ पराया देश। २ दूरका देश।
विलायती-वि० (अ०) १ विलायतका, विदेशी। २ दूसरे देश में बना हुआ।
विसाल- पुं० (अ०) १ मिलाप, मिलना। २ प्रेमिका और प्रेमीका मिलाप, संयोग। ३ मृत्यु।
वीराँ-वि० (फा०) वीरान।
वीरान-वि० (फा०) १ उजड़ा हुआ, जिसमे आबादी न रह गई हो। २ श्री-हीन।
वीराना- स्त्री० (फा० वीरानः) १ उजाड़। बस्तीका उल्टा। २ जंगल।
वीरानी- स्त्री० (फा०) वीरानका भाव, उजाड़-पन।
वुज़रा- पुं० (अ०) 'वजीर'का बहु०।
वुजू- पुं० दे० 'वज़ू।'
वुजूद- पुं० दे० 'वजूद।'
वुरूद- पुं० (अ०) १ ऊपरसे नीचे आना। २

आना, पहुँचना।

वुसूल-वि० दे० 'वसूल।'

शंगरफ- पुं० दे० 'शंजरफ।'

शंजरफ- पुं० (फा०) (वि० शंजरफी) शिंगरफ, ईंगुर।

शअबान- पुं० दे० 'शाबान।'

शआर- पुं० (अ०) १ रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा। २ आदत, अभ्यास। जैसे-वफा शआर=वफाकी आदत रखनेवाला, वफादार।

शऊर- पुं० (अ०) १ काम करनेकी योग्यता, ढंग। २ बुद्धि।

शऊर-दार-वि० (अ०+फा०) (सं० शऊर-दारी) जिसे शऊर या अकल हो, दक्ष।

शक- पुं० (अ०) शंका।

शकर- स्त्री० दे० 'शक्कर।'

शकर-कंद- पुं० (फा० शकर+हिं० कंद) एक प्रकारका प्रसिद्ध कंद।

शकर-खोर पुं० (फा०) १ एक प्रकारका पक्षी। २ वह जो सदा अच्छी चीजें खाता हो।

शकर-खोरा-दे० 'शकरखोर।'

शकर-तरी- स्त्री० (फा० शकर) चीनी, शर्करा।

शकर-पारा- पुं० (फा० शकर+पारः) १ एक प्रकारका फल जो नीबूसे कुछ बड़ा होता है। २ चौकोर कटा हुआ एक प्रकारका प्रसिद्ध पकवान। ३ शकरपारे के आकारकी चौकोर सिलाई।

शकर-रंजी- स्त्री० (फा०) मित्रोंसे होनेवाला मन-मुटाव।

शकर-लब-वि० (फा०) मीठी बातें कहनेवाला, मिष्ट-भाषी।

शकराना- पुं० (फा० शकर) चीनी मिला हुआ भात।

शकरी- स्त्री० (फा०) एक प्रकार का मीठा फालसा (फल)।

शक्ल- स्त्री० (अ० शक्ल)१ मुखकी बनावट, आकृति, चेहरा, रूप। २ मुखका भाव, चेष्टा। ३ बनावट, गढ़न, ढाँचा। ४ आकृति, स्वरूप। ५ उपाय, तरकीब, ढब।

शकील-वि० (अ० 'शक्ल' से) (स्त्री० शकीला) अच्छी शक्लवाला, सुन्दर।

शकोह- पुं० (फा०) १ महत्तव, बड़प्पन। २ रोब-दाब, आतंक।

शक्क-वि० (अ०) बीचमें फटा हुआ। यौ०-शक्क-उल्-कमर=. चाँदका फटकर दो टुकड़े हो जाना। कहते हैं कि मुहम्मद साहबने अपनी करामात दिखाने के लिए चाँद के दो टुकड़े कर दिये थे।

शक्कर- स्त्री० (फा० मि० सं० शर्करा) १ चीनी। २ कच्ची चीनी।

शक्की-वि० (अ०) शक या सन्देह करनेवाला।

शक्ल- स्त्री० दे० 'शकल।'

शख्स- पु० (अ०) १ मनुष्यका शरीर, बदन। २ व्यक्ति, जन। यौ०-शख्से नादार= दिवालिया व्यक्ति।

शख्सियत- स्त्री० (अ०) व्यत्तित्व।

शख्सी-वि० (अ०) शख्स या व्यक्ति सम्बन्धी, व्यक्तिगत।

शग़ल- पुं० (अ० शग्ल) १ व्यापार, काम-धंधा। २ मनोविनोद।

शग़ाल- पुं० (अ० मि० सं० शृगाल) गीदड़, सियार।

शगुन- पुं० दे० 'शगून।'

शगुफ्तगी- स्त्री० (फा० शिगुफ्तगी) १ शगुफ्ता या खिले होनेका भाव। २ प्रफुल्लता।

शगुफ्ता-वि० (फा० शिगुफ्तः) १ खिला हुआ, विकसित। २ प्रफुल्लित, प्रसन्न। जैसे-शगुफ्ता-रू= हँसमुख।

शगून- पुं० (सं० 'शकुन' से फा०) १ किसी कामके समय दिखाई पड़नेवाले वे लक्षण जो उस कामके सम्बन्धमें शुभ या अशुभ माने जाते हैं। मुहा०- शगून-लेना= लक्षणोसे शुभाशुभ का विचार करना। २ शुभ मूहूर्त या उसमें होनेवाला कार्य।

शगूनिया- पुं० (फा० शगून) शकुनों का विचार करने वाला ज्योतिपी या रम्माल आदि।

शगूफा पु० (फा० शिगूफः) १ बिना खिला हुआ फूल, कली। २ पुष्प, फूल। ३ कोई नई और विलक्षण घटना।

शग्ल- पुं० दे० 'शग़ल।'

शजर- पुं० (अ०) वृक्ष।

शजरदार-वि० (फा०). जिसपर बेल-बूटे बने हो: विशेषतः नगीना आदि।

शजरा- पुं० (अ० शजरः) १ वृक्ष या पेड़। २ वंशवृक्ष। ३ पटवारीका खेतोंका नक़शा।

शजरा-व-कुल्ला- पुं० (फा०) पीरोंका शजरा और टोपी जो भक्तोंको प्रसाद रूपमें दी जाती है।

शतरंज- स्त्री० (अ० मि० सं० चतुरंग) एक प्रकारका प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।

शतरंज-बाज- वि० (अ०+फा०) (सं०शतरंज-बाँजी) शतरंज खेलने वाला।

शतरंजी- स्त्री०(फा०) १ वह दरी ज़ो कई प्रकार के रंगबिरंगे सूतोंसे बनी हो। २ शतरंज खेलनेकी बिसात। ३ शतरंजका अच्छा खिलाड़ी।

शत्ताह-वि० (अ०) निर्लज्ज और उद्दण्ड, शोख।

शदीद-वि० (अ०) १ कठिन, मुश्किल। २ दृढ़, पक्का। ३ कठोर, घोर। जैसे-जरब-शदीद= भारी चोट।

शद्द- पुं० स्त्री० (अ०) १ दृढ़ता, मजबूती। २ सख्ती, कठोरता। यौ०- शद्द व मद= धूम-धाम। ठाठ-बाट।

शद्दादाद- पुं० (अ० शद्दः) १ आक्रमण, चढ़ाई। २ वह झंड़ा जो मुहर्रममें ताजियों के साथ निकलता है।

शद्दाद- पुं० (अ०) मिस्रका एक काफिर बादशाह जो अपने आपको ईश्वर कहता था और जिसने बहिश्त या स्वर्ग के जोड़का अरमका बाग़ बनवाया था।

शनाख्त- स्त्री० (फा०) पहचान।

शनास-वि० (फा० शिनास) पहचाननेवाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें) जैसे-मर्दुम-शनास= मनुष्योंको पहचाननेवाला।

शनासा-वि० (फा०) १ परिचित। २ जानकार।

शनासाई-स्त्री० (फा०) १ परिचय। २ जानकारी।

शनीअ-वि (अ०) १ बुरा। २ दुष्ट।

शनीआ- पुं० (अ० शनीअऽ) खराब काम या बात।

शनीदा-वि० (अ० शनीदः) सुना हुआ, श्रुत।

शफक़- स्त्री० (अ०) प्रातःकाल अथवा सन्ध्याके समयकी –आकाशकी लाली। मुहा०-शफक़ खिलना या फूलना=लालिमाका प्रकट होना। वि० बहुत सुंदर।

शफक़त- स्त्री० (अ०) कृपा, दया, मेहरबानी।

शफतालू- पुं० दे० 'शफ्तालू।'

शफा- स्त्री० (अ० शफ़अः) आरोग्य, तन्दुरुस्ती।

शफाअत- स्त्री० (अ०) १ कामना, इच्छा। २ किसीके लिए की जानेवाली सिफारिश।

शफा-खाना- पुं० (अ०+शफअः+फा० खानः) चिकित्सालय, औषधालय।

शफी-वि० (अ० शफीअ) १ शफाअत या सिफारिश करनेवाला। २ बीच में पड़कर अपराध क्षमा करानेवाला।

शफीक़-वि० (अ०) शफक़त या मेहरबानी करनेवाला, दयालु।

शफूक़ा- पुं० दे० 'शगूफा।'

शफ्तल-वि० स्त्री० (अ०) दुष्ट, वाहियात, पाजी।

शफ्तालू- पुं० (फा०) एक प्रकारका बड़ा आड़ू, सतालू।

शफ्फाफ-वि० (अ०) (भाव० शफ्फाफी) स्वच्छ, पारदर्शी।

शब- स्त्री० (फा०) रात्रि।

शब-कोर-वि० (फा०) (सं० शब-कोरी) जिसे रातको दिखाई न दे, रतौंधीका रोगी।

शब-खेज़-वि० दे० 'शब-बेदार।'

शब-खूँ- पुं० (फा०) रातके समय शत्रुपर छापा मारना।

शब-ख्वाबी- स्त्री० (फा०)१ रातको सोना।

२ रातको सोनेके समय पहननेके वस्त्र।

शब-गीर- पुं० (फा०) १ रातके समय गानेवाला पक्षी। २ बुलबुल। ३ तड़का, प्रभात।

शब-गूँ- वि० (फा०) रातकी तरह अंधेरा या काला।

शब-चिराग- पुं० (फा०) एक प्रकारका लाल (रत्न)। कहते हैं कि रातके समय यह बहुत चमकता है।

शब-दीज़- पुं० (फा०) मुश्की रंगका या काला घोड़ा।

शब-देग- स्त्री० (फा०) वह मांस जो किसी विशिष्ट क्रियाओं से रात-भर पकाकर तैयार किया जाता है।

शबनम- स्त्री० (फा०) १ ओस। २ एक प्रकारका बहुत महीन कपड़ा।

शबनमी- स्त्री० ( फा० ) मसहरी।

शब-बरात- स्त्री० (फा०) मुसलमानोंका एक त्योहार जिसमें आतिशबाजी छोड़ी और मिठाई आदि बाँटी जाती है। कहते हैं कि इस रोज रात को देवदूत लोगों को जीविका और आयु देते हैं।

शब-बाश-वि० (फा०) (सं० शबबाशी) रातको ठहरकर विश्राम करनेवाला।

शब-बेदार-वि० (फा०) (सं० शबबेदारी) रातभर जागनेवाला।

शब-रंग द० 'शबदीज़।'

शबरौ-वि० (फा०) रात्रिचर।

शबाना-क्रि० वि० (फा० शबानः) रातके समय। यौ०-शबाना रोज़=दिन-रात।

शबाब- पुं० (अ०) १ यौवनकाल, युवावस्था, जवानी, २ सौन्दर्य, जोबन। ३ आरम्भ।

शबाहत- स्त्री० (अ०) आकृति, सूरत, शक्ल। यौ०-शक्ल व शबाहत।

शबिस्ताँ- पुं० (फा०) १ रातको रहनेका स्थान। २ शयनागार।

शबीना-वि० (फा० शबीनः) १ रातका, रात सम्बन्धी। २ रातका बचा हुआ, बासी। पुं० वह काम जो रातभर कराया जाय।

शबीह- स्त्री० (अ०) तस्वीर।

शबे-कद्र- स्त्री० (फा०+अ०) रमज़ान महीनेकी २७ वीं तारीखकी रात। कहते हैं कि इस रोज आसमानकी खिड़की खुलती है और अल्लाह मियाँ आकर देखते हैं कि कौन-कौन लोग मेरी उपासना करते हैं।

शबे-ज़फाफ- स्त्री० (फा०) वर और वधूके प्रथम मिलनकी रात, सुहाग-रात।

शबे-तार- स्त्री० (फा०) अंधेरी रात।

शबे-तारीक-दे० 'शबे-तार।'

शबेमाह- स्त्री० (फा०) चाँदनी रात।

शबे-माहताब- स्त्री० दे० 'शबेमाह।'

शबे-यल्दार- स्त्री० (फा०) अंधेरी और मनहूस रात।

शब्बीर-वि० (फा० या सुरयानी) १ भला, नेक। २ सुन्दर।

शब्बों- स्त्री० (फा०) रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल, गुलशब्बो।

शमला- पुं० (अ० शम्लः) १ पगड़ी या दुपट्टेका कामदार पल्ला। २ एक प्रकारकी पगड़ी।

शमशाद- पुं० (फा० शम्शाद) एक प्रकारका वृक्ष जिससे प्रेमिका या माशूक़के क़दकी उपमा दी जाती है।

शमशीर- स्त्री० (फा० शम्शीर) तलवार, खाँड़ा।

शमस- पुं० दे० 'शम्स।'

शमा- स्त्री० (अ० शमS) १ मोम। २ मोमबत्ती।

शमादान- पुं० (फा०) वह आधार जिसमे मोमबत्ती लगाकर जलाते हैं।

शमायल- पुं० (अ० 'शमाल'का बहु०) आदतें।

शमा-रू-वि० (अ०+फा०) जिसका चेहरा शमाकी तरह प्रकाशमान हो।

शमीम- स्त्री० (अ०) सुगंध।

शम्बा- पुं० (फा० शम्बः) शनिवार।

शम्मा- पुं० (अ० शम्मः) थोड़ी या हलकी सुगन्ध। वि० बहुत थोड़ा, तनिक।

शम्मास- पुं० (अ०) शम्स या सूर्यका उपासक। सूर्योपासक।

शम्स- पुं० (अ०) सूर्य।

शम्सा- पुं० (अ० शम्सः) कलाबत्तू

आदिका वह फुँदना जो माला या तसबीहमे बीच-बीच में लगा रहता है।

शम्सी-वि० (अ०) शम्स या सूर्य, सम्बन्धी, सौर।

शयातीन- पुं० (अ०) 'शैतान' का बहु०।

शर- पुं० स्त्री० (अ०) शरारत, दुष्टता।

शरअ- स्त्री० (अ०) (वि० शरई) १ कुरानमें दी हुई आज्ञा। २ दीन, मज़हब। ३ दस्तूर, तौर-तरीक़ा। ४ मुसलमानोंका धर्मशास्त्र।

शरअन्-क्रि० वि० (अ०) शरअ या इस्लामके कानूनों के अनुसार।

शरअ-मुहम्मदी- स्त्री० (अ०) इस्लामका नियम या कानून।

शरई - वि० (अ०) जो शरअ या इस्लाम के कानून के अनुसार हो। जैसे - शरई दाढ़ी = खूब लम्बी दाढ़ी। शरई पाजामा = टखनों तक का पाजामा।

शरक़ी - वि० दे० 'शर्क़ी'।

शरत - स्त्री० दे० 'शर्त'।

शरफ - पुं० (अ०) १ बड़प्पन, महत्तव, बुजुर्ग, २ उत्तमता, खूबी, मुहा० - शरफ ले जाना = गुण आदि में किसी से बढ़ जाना। ३ सौभाग्य। जैसे- मैं आपकी खिदमत का शरफ हासिल करना चाहता हूँ।

शरफ-याब - वि० (अ०+फा०) (सं० शरफ-याबी) १ प्रतिष्ठित, मान्य, २ शरफ (बड़प्पन या सौभाग्य) प्राप्त करनेवाला।

शरबत- पुं० (अ० शर्बत) १ पीने की मीठी वस्तु, रस, २ चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषध का अर्क़, ३ वह पानी जिसमें शक्कर या खाँड़ घुली हुई हो।

शरबती-वि० (अ० शर्बती) १ शरबत के रंग का हलका पीला, २ रसदार, रस भरा, पुं० (अ० शरबत) १ एक प्रकार का हल्का पीला रंग, २ एक प्रकार का नीबू, ३ मलमल की तरह का एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

शरम- स्त्री० (फा० शर्म) १ लज्जा, हया, मुहा०-शरम से गड़ना या पानी पानी होना=बहुत लज्जित होना, २ लिहाज, संकोच, ३ प्रतिष्ठा।

शरम-गाह- स्त्री० (फा० शर्म+गाह) स्त्री की जननेन्द्रिय, योनि।

शरमनाक - वि० (फा० शर्मनाक) १ लज्जाशील, २ लज्जाजनक।

शरम-सार - वि० (फा० शर्मसार) (सं० शरम-सारी) १ लज्जाशील, २ लज्जित, शरमिन्दा।

शरम-हुजूरी - स्त्री० (फा० शर्महुजूरी) किसी के सामने रहने पर उत्पन्न होनेवाली लज्जा। मुँह-देखे की लाज या शरम।

शरमाऊ - वि० दे० "शरमीला"।

शरमाना क्रि० वि० (फा० शर्म) शर्मिन्दा होना, लज्जित होना, क्रि० स० शर्मिन्दा करना, लज्जित करना।

शरमालू - वि० दे० "शरमीला"।

शरमा शरमी - क्रि० वि० (फा० शर्म)मारे शर्म के, लज्जावश।

शरमिन्दगी- स्त्री० (फा०) शरमिन्दा होने का भाव, नदामत।

शरमिन्दा - वि० (फा०) लज्जित।

शरमीला - वि० (फा० शर्म+हिं० प्रत्य० ईला) (स्त्री० शरमीली) जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे, लज्जालु, लज्जाशील।

शरमोहया - स्त्री० (फा० शर्म+अ० हया) लाज और शर्म।

शरर - पुं० (अ०) आग की चिनगारी।

शरह - स्त्री० (अ०) १ टीका, भाष्य, व्याख्या, २ दर, भाव।

शरह-बन्दी - स्त्री० (अ० शरह+फा० बन्दी) दर या भाव की सूची।

शराकत - स्त्री० (अं० शिरकत) १ शरीक होने का भाव, २ साझा, हिस्सेदारी।

शराकत-नामा - पुं० (अ० शिरकत+फा० नामः) वह पत्र जिसपर शराकत या साझे की शर्तें लिखी रहती हैं।

शराफत - स्त्री (अ०) शरीफ, होने का भाव, सज्जनता।

शराब - स्त्री० (अं०) मदिरा।

शराब-खाना - पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराब-ख्वार - वि० (अ०+फा०) (सं०

शराब-ख्वारी) शराब पीने वाला।

शराबी - पुं० (अ० शराब) वह जो शराब पीता हो। मद्यप।

शराबे-तहूर - स्त्री० (अ०) वह पवित्र शराब जो मरने पर लोगों को बहिश्त में मिलेगी। (मुसल०)।

शराबोर - वि० (देश०) जल आदि से बिल्कुल भींगा हुआ, लथ-पथ, तर-बतर।

शरायत - स्त्री० (अ०) 'शर्त' का बहु०।

शरार - पुं० (अ०) अग्नि-कण, चिनगारी।

शरारत - स्त्री० (अ०) पाजीपन, दुष्टता।

शरारतन् -क्रि० वि० (अ०) शरारत या पाजीपन से।

शरारा - पुं० (अ० शरारः) चिनगारी, स्फुलिंग।

शरीअत - स्त्री० (अ०) १ स्पष्ट और शुद्ध मार्ग, २ मनुष्यों के लिये बनाये हुए ईश्वरीय नियम, ३ मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरीक - वि० (अ०) शामिल, सम्मिलित, मिला हुआ, पुं० १ साथी, २ साझी, हिस्सेदार, ३ सहायक।

शरीफ - पुं० (अ०) (बहु० शुरफा) १ कुलीन मनुष्य, २ सभ्य पुरुष, भलामानुस।

शरीयत - दे० 'शरीअत'।

शरीर - वि (अ०) (सं० शरारत) दुष्ट, पाजी, नटखट।

शर्क़ - पुं० (अ०) १ सूर्योदय, २ पूरब, पूर्व दिशा, मुहा० -शर्क़ से ग़र्बतक = पूरब से पच्छिम तक।

शर्क़ी - वि० (अ०) पूरब का, पूरबी।

शर्त - स्त्री० (अ०) (बहु० शरायत) १ वह बाजी जिसमें हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो, दाँव, बदान। २ किसी कार्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित बात या कार्य। यौ० - बशर्ते कि = शर्त यह है कि।

शर्तिया - क्रि० वि० (अ० शर्तियः) शर्त बदकर, बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक। वि० बिल्कुल ठीक।

शर्ती - वि० (अ० शर्त) जिसमें कोई शर्त हो। शर्त सम्बन्धी।

शर्फ़- पुं० दे० 'शरफ'।

शर्बत - पुं० (अ०) शरबत।

शर्म - स्त्री० दे० 'शरम'।

शर्म-गाह - स्त्री० (फा०) योनि।

शर्मसार - वि० (फा०) (सं० शर्मसारी) १ लज्जाशील। २ लज्जित, शरमिन्दा।

शलग़म - पुं० दे० 'शलजम'।

शलजम - पुं० (फा० शल्जम) गाजर की तरह का एक कंद।

शलवार - पुं० (फा० शल्वार) १ पायजामे के नीचे पहनने की जाँघिया। २ एक प्रकार का पेशावरी पायजामा।

शलीता - पुं० (देश०) १ टाट का वह बड़ा थैला जिसमें खेमा आदि तह करके रखा जाता है। २ एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

शलूका - पुं० (फा० शलूकः) आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शल्ल - वि० (अ०) शिथिल या सुन्न (हाथ-पैर आदि)।

शल्लक - स्त्री० (तु०) १ बन्दूकों या तोपों की बाढ़। मुहा०-शल्लक उड़ाना = गप्प हाँकना।

शव्वाल - पुं० (अ०) अरबी वर्ष का दसवाँ महीना।

शश - वि० (फा० मि० सं० षष्ठ) छः। जैसे-शश-पहलू = छः पहलुओंवाला। षट्कोण।

शश-जहत - स्त्री० (फा०+अ०) १ उत्तर, दक्खिन, पूरब, पच्छिम ऊपर और नीचे की छः दिशाएँ। २ सारा संसार।

शश-दर - पुं० (फा०) १ उत्तर दक्खिन, पूरब, पश्चिम, ऊपर और नीचे की छः दिशाएँ। २ वह मकान जिसमें छः दरवाजे हों। ३ वह स्थान जहाँ से निकलना कठिन हो। ४ जूआ खेलने का पासा। वि० चकित, हक्का-बक्का।

शश-दाँग - वि० (फा०) कुल, समस्त, पूरा।

शश-माही -वि० (फा०) छमाही।

शश-व-पंज - पुं० (फा०) १ जूआ खेलने

का पासा। २ जूआ। ३ सोच-विचार, असमंजस।

शशसरी - पुं० (फा०) शुद्ध सोना, कुंदन।

शस्त - स्त्री० (फा०) १ अंगुष्ठ, अंगूठा। २ वह हड्डी या बालों का छल्ला जो तीर चलानेवाले अपने अंगूठे में रखते हैं। ३ मछली पकड़ने का काँटा। ४ सितार आदि बजाने की मिजराब। ५ दूरबीन की तरह का वह यंत्र जिससे जमीन की पैमाइश में सीध देखते हैं। ६ वह चीज जिस पर निशाना लगाया जाय, निशाना, लक्ष्य।

शह - पुं० (फा० 'शाह' का संक्षिप्त रूप) १ बादशाह। २ वर, दूल्हा। स्त्री० १ शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसी घात में पड़ता हो, क़िस्त। २ गुप्त रूपसे किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव, वि० चढ़ा-बढ़ा, श्रेष्ठतर।

शहजादा - दे० 'शाहज़ादा'।

शहज़ोर - वि० (फा०) बलवान्, शक्तिशाली।

शहज़ोरी - स्त्री० (फा०) शक्ति प्रदर्शन, बलप्रयोग।

शहतीर - पुं० (फा०) लकड़ी का बहुत बड़ा और लम्बा लट्ठा।

शहतूत - पुं० (फा०) १ एक प्रकार का वृक्ष जिसमें फलियों की तरह के मीठे फल लगते हैं। २ इस वृक्ष का फल।

शहद - पुं० (अ०) शीरे की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा, तरल पदार्थ, जो मधु-मक्खियाँ फूलों के मकरन्द से संग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं। मुहा०-शहद लगाकर चाटना = किसी निरर्थक पदार्थ को व्यर्थ लिये रखना (व्यंग्य)।

शहना - पुं० (अ० शिह्नः) १ शासक। २ कोतवाल। ३ चौकीदार। ४ कर-संग्रह करनेवाला चपरासी।

शहनशीं - स्त्री (फा०) बैठने के लिए बनी हुई पक्की ऊंची जगह।

शहनशाह - पुं० दे० 'शाहन्शाह'।

शहनाई - पुं० (फा०) १ नफीरी बाजा। २ दे० 'रोशनचौकी'।

शहबाज़ - पुं० (फा०) एक प्रकार का बड़ा बाज, (पक्षी)।

शह-बाला - पुं० (फा० शाह्+बाला) वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ जाता है।

शहम - स्त्री० (अ० शह्म) १ चरबी। २ मोटाई, स्थूलता। ३ फलका गूदा, मगज।

शह-मात - स्त्री० (फा०) शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

शहर - पुं० (फा० शह्र) मनुष्यों की बड़ी बस्ती, नगर, पुर।

शहर-पनाह - स्त्री० (फा० शह्रपनाह) शहर की चार-दीवारी। नगरकोट।

शहरयार - पुं० (फा० शह्रयार) १ अपने समय का बहुत बड़ा बादशाह। २ नगरवासियों की सहायता और रक्षा करने वाला।

शहरयारी - स्त्री० (फा० शह्रयारी) शासन।

शहरियत - स्त्री० (फा० शह्र) नागरिकता, शहरीपन।

शहरी- वि० (फा)१ शहर संबंधी, शहर का। २ शहर में रहने वाला।

शहरे-खामोशी - पुं० (फा० = मौन रहने वालों की बस्ती) क़ब्रिस्तान।

शहला - स्त्री० (अ० शह्ला) १ वह स्त्री जिसकी आँखें भेड़ की तरह काली या भूरी हों। २ एक प्रकार की नरगिस जिसके फूल से आँखों की उपमा दी जाती है।

शहवत - स्त्री० (अ० शह्वत) संभोग या प्रसंग की इच्छा। कामवासना।

शहवत-अंगेज़ - वि० (अ०+फा०) कामवासना बढ़ानेवाला।

शहवत-परस्त - वि० (अ० शह्वत+फा०) (सं० शहवत-परस्ती) कामुक।

शहसवार - पुं० (फा०) अच्छा घुड़सवार।

शहादत - स्त्री० (अ०) १ गवाही। २ प्रमाण। ३ शहीद होना।

शहाना - पुं० (फा० शाहानः) एक जाति का राग। वि० (फा०) १ शाही, राजसी। २

बहुत बढ़िया, उत्तम।

शहाब - पुं० (फा०) एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

शहामत - स्त्री० (अ०) १ बड़प्पन, महत्व। २ वीरता।

शहीद - वि० (अ०) १ ईश्वर या धर्म्म के लिए प्राण देनेवाला। २ निहत, मारा गया।

शाइर - पुं० (अ०) शायर।

शाइरा - स्त्री० (अ० शाइरः) कवयित्री।

शाइस्तगी - स्त्री० (फा०) १ शिष्टता, सभ्यता। २ भलमनसी।

शाइस्ता - वि० (फा० शाइस्तः) १ शिष्ट, सभ्य, तहज़ीब वाला। २ विनीत, नम्र।

शाए - वि० (अ० शाइअ) १ प्रकट, व्यक्त। २ प्रमाणित।

शाक़ - वि (अ०) १ मुश्किल, कठिन। २ असह्य, दूभर। ३ दुःखी या अप्रसन्न करनेवाला, अप्रिय। क्रि० प्र० - गुजरना, होना।

शाकिर - वि० (अ०) शुक्र करने या धन्यवाद देनेवाला, उपकार माननेवाला।

शाकी - वि० (अ०) १ शिकायत करनेवाला, अपना दुःख सुनानेवाला। २ चुगली खानेवाला, चुगल-खोर।

शाकूल - पुं० (फा०) मेमारों का साहुल नामक औज़ार जिससे दीवार की सीध नापी जाती है।

शाक्क़ा - वि० (अ० शाक्क़ः) कठिन, मुश्किल, कठोर। जैसे-मेहनत शाक्का।

शाख - स्त्री० (फा० मि० सं० शाखा) १ टहनी, डाल। शाखा, मुहा०-शाख निकालना = दोष या ऐब निकालना। २ कटा हुआ टुकड़ा। खंड। फाँक। ३ किसी मूल वस्तुसे निकले हुए उसके भेद, प्रकार। ४ सहायक नदी, शाखा। ५ सींग, शृंग। ६ हाथ पैर आदि अंग। ७ विलक्षण या अनोखी बात। ८ एक प्रकार का पकवान, सुहाल। ९ सन्तान।

शाखचा - पुं० (फा० शाखचः) छोटी शाखा, टहनी।

शाख-साना - पुं० (फा० शाख+शानः) १ लड़ाई, हुज्जत। २ कलंक। ३ अभियोग। ४ सन्देह, शक। ५ ढकोसला। छलने की बातें।

शाखसार - पुं० (फा०) १ वाटिका। २ शाखा, डाल।

शाखे-आहु - दे० शाखे ग़ज़ाल।

शाखे-ग़ज़ाल - स्त्री० (फा०) १ हिरनका सींग। २ धनुष, कमान। ३ द्वितीयाका चन्द्रमा।

शाखे-ज़ाफरान - वि० (फा०+अ०) विलक्षण, अद्भुत, अनोखा।

शागिर्द - पुं० (फा०) १ सेवक, टहलुआ। २ शिष्य, चेला।

शागिर्द-पेशा - पुं० (फा०+अ०) १ दफ्तर में काम करनेवाला, अहलकार। २ राजाओं आदि के आगे चलनेवाले नौकरचाकरों के रहनेका स्थान।

शागिर्दी - स्त्री० (फा०) १ शिष्यता, चेलापन। २ सेवा।

शागिल - वि० (अ०) जो किसी शग़ल या काममें लगा हो। २ सदा ईश्वर- चिन्तन करनेवाला।

शाज़ - वि० (अ०) १ अकेला, एकाकी। २ अनुपम, बेजोड़। ३ नियम-विरुद्ध। ४ असाधारण, अनोखा। क्रि० वि० कभी-कभी।

शाज़ोनादिर - क्रि० वि० (अ०) कभी-कभी।

शातिर - पुं० (अ०)१ शतरंजका खिलाड़ी २ धूर्त, चालाक। ३ पत्रवाहक, दूत।

शातिराना - वि० (अ०+फा० आनः) शातिरों के जैसा, धूर्ततापूर्ण।

शाद - वि० (फा०) १ प्रसन्न, सुखी। २ भरा हुआ, पूर्ण।

शाद-बाश - अव्य० (फा०) १ प्रसन्न रहो। २ शाबाश।

शादमान - वि० (फा०) प्रसन्न।

शादान - वि० (फा० 'शादमान' का संक्षिप्त रूप) १ उपयुक्त, योग्य, मुनासिब। २ वाजिब। ३ उत्तम।

शादाब - वि० (फा०) (सं० शादाबी) हरा-भरा।

शादियाना - वि० (फा०) ( शादियानः ) १

प्रसन्नता के समय बजनेवाले बाजे। मंगलवाद्य। २ बधाई, मुबारकबादी। ३ वह उपहार जो जमींदारके घर शादी-व्याह होनेके समय किसान लोग देते हैं।
शादी - स्त्री० (फा०) १ खुशी। २ आनन्दोत्सव। ३ विवाह।
शादी-मर्ग - वि० (फा० शादी+मर्ग) जो मारे आनन्दके भर गया हो। स्त्री० ऐसी मृत्यु जो आनन्दके आधिक्यके कारण हो।
शादीशुदा- वि० (फा० शादीशुदः) विवाहित।
शान-स्त्री० (अ०) १ तड़क- भड़क, ठाठ-बाट, सजावट। २ गर्वीली चेष्टा, ठसक। ३ भव्यत, विशालता। ४ शक्ति, करामात। विभूति। ५ प्रतिष्ठा, इज्जत। मुहा०-किसीकी शान में = किसी बड़ेके सम्बन्धमें।
शानदार - वि० (अ०+फा०) जिसमें शान या शोभा हो। शानवाला।
शाना - पुं० (फा० शानः) १ कंघी, कंघा। २ कन्धा, भुजमूल। मुहा०-शाने से शाना छिलना = इतनी भीड़ होना कि कन्धे से कन्धा छिले।
शाना-बीं - वि० (फा०) फाल देखने या शकुन बतलानेवाला।
शानोशौकत - स्त्री० (अ०) तड़क-भड़क, ठाठ-बाट, सजावट।
शाफई - पुं० (अ०) सुन्नी सम्प्रदाय के चार इमामों में से एक।
शाफा - पुं० (अ० शाफः) दवा की वह बत्ती जो जख्म या गुदा आदि में रखी जाती है।
शाफी- वि० (अ०) १ शफा या नीरोग करने वाला। २ सीधा, साफ, पूरा( उत्तर आदि)।
शाब- पुं० (अ०) २४ से ४० वर्ष तककी अवस्थाका पुरुष।
शाबान - पुं० (अ० शअबान) अरबी आठवाँ चांद्र मास जो रजब के बाद पड़ता है।
शाबाश - अव्य० (फा०) (सं० शाबाशी) एक प्रशंसासूचक शब्द, खुश रहो, वाह वाह।
शाबाशी - पुं० (फा० शाबाश) प्रशंसा, वाह-वाही, क्रि० प्र० देना, मिलना।
शाम - स्त्री० (फा०) १ सूर्यास्तका समय, सन्ध्या। मुहा०- शाम फूलना = सन्ध्याकी लाली प्रकट होना। २ अंतिम समय। पुं० अरबके उत्तरके एक प्रदेश का नाम।
शामत - स्त्री० (अ०) १ दुर्भाग्य। २ विपत्ति, आफत। ३ दुर्दशा, दुरवस्था। मुहा०-शामतका घेरा या मारा = जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो।शामत सवार होना या सिरपर खेलना = दुर्दशाका समय आना।
शामतज़दा - वि० (अ०+फा०) शामतका मारा, विपत्तिग्रस्त।
शामती - वि० दे० 'शामत-जदा'।
शामते-ऐमाल - स्त्री० (अ०) किये हुए कुकृत्यों का फल।
शामियाना - पुं० (फा० शाम) एक प्रकारका बड़ा तम्बू।
शामिल - वि० (अ०) जो साथमें हो, मिला हुआ, सम्मिलित।
शामिल-हाल - वि० (अ०) सब अवस्थाओंमें साथ रहनेवाला। क्रि० वि मिलकर, एक साथ।
शामिलात - स्त्री० (अ०) १ 'शामिल' का बहु०। २ हिस्सेदारी, साझा।
शामी - वि० (अ०) १ शाम देश सम्बन्धी। जैसे - शामी कबाब। पुं० शाम देश का निवासी। स्त्री० शाम देश की भाषा।
शामे-गरीबाँ - स्त्री० (फा०) यात्रियोंकी सन्ध्या जो प्रायः निर्जन और भीषण स्थानों में पड़ती है।
शामे-गरीबी - स्त्री० दे० 'शामे-गरीबाँ'।
शामोसहर - क्रि० वि० (फा०+अ०) दिन-रात, हर समय।
शाम्मा - पुं० (अ० शाम्मः) सूँघनेकी शक्ति, घ्राण-शक्ति।
शायक - वि० (अ०) (बहु० शायक़ीन) इश्तियाक़ या शौक़ रखनेवाला, शौकीन, प्रेमी।

शायद - क्रि० वि० (फा०) कदाचित्, संभव है।

शायर - पुं० (अ० शाइर) वह जो शेर या उर्दू-फारसीकी कविता लिखता हो। कवि।

शायरा - स्त्री० (अ० शाइरः) स्त्री-कवि। कवयित्री।

शायरी - स्त्री० (अ० शाइरी) कविताएँ तैयार करना, काव्य-रचना।

शायाँ - वि० (फा०) उपयुक्त, अभीष्ट।

शाया - वि० (अ० शाइS)१ प्रकट, जाहिर, प्रसिद्ध किया हुआ। २ छपा हुआ, प्रकाशित।

शारअ - पुं० (अ० शारिअ) १ बड़ी सड़क, राजमार्ग। यौ०- शारअ आम =आम सड़क। २ लोगोंको धर्मका मार्ग बतलानेवाला, धर्मज्ञ।

शारक - स्त्री० (फा० मि० सं० सारिका) मैना (पक्षी)।

शारह - पुं० (अ० शारिह) शरह या टीका लिखनेवाला।

शारिक - पुं० (अ०) सूर्य।

शाल - स्त्री० (फा०) बढ़िया ऊनी चादर, दुशाला।

शाल-दोज - वि० (फा०) (सं० शालदोजी) शाल या दुशालेपर बेल-बूटे बनानेवाला।

शाल- बाफ - वि० (फा०) (सं० शाल-बाफी) शाल या दुशाले बनानेवाला। पुं० एक प्रकारका लाल रेशमी कपड़ा।

शाली - वि० (फा०) शालका। जैसे-शाली रुमाल।

शाशा - पुं० (फा० शाशः) पेशाब, मूत्र।

शाह - पुं० (फा०) १ मूल, जड़। २ स्वामी, मालिक। ३ बादशाह। ४ मुसलमान फकीरोंकी उपाधि। ५ दूल्हा, वर, वि० बड़ा, महान।

शाहजादा - पुं० (फा० शाहजादः) (स्त्री० शाहजादी) बादशाहका लड़का, महाराज-कुमार।

शाहतरा - पुं० (फा०) एक प्रकारका साग जो दवाके काममें आता है।

शाह-दरिया - पुं० (फा०) स्त्रियों का एक कल्पित भूत या प्रेत।

शाह-नामा - पुं० (फा० शाहनामः) १ राजाओं का इतिहास। २ एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ जिसमें फारसके बादशाहोंका इतिहास है।

शाहन्शाह - पुं० (फा०) बादशाहोंका बादशाह, सम्राट।

शाहन्शाही - स्त्री० (फा०) शाहन्शाहका पद, भाव या कार्य।

शाह- बरहना- पुं० (फा) स्त्रियों का एक कल्पित भूत।

शाह-बलूत - पुं० (फा०+अ०) माजूफलकी तरहका एक बड़ा वृक्ष। सीता सुपारी।

शाह-बलूत - पुं० (फा०+अ०) भाजूफलकी तरहका एक बड़ा वृक्ष। सीता सुपारी।

शाह-बाज - पुं० (फा०) बड़ा बाज (पक्षी)।

शाह-वाला - दे० 'शहबाला'।

शाह-राह - स्त्री० (फा०) राजमार्ग, बड़ी सड़क।

शाहवार - वि० (फा०) बादशाहों या राजाओं के योग्य।

शाहसवार - वि० (फा०) घुड़सवार।

शाहाना - वि० (फा० शाहानः) १ बादशाही, राजकीय। २ राजाओंके योग्य। ३ बहुत बढ़िया। पुं० १ वे कपड़े जो वरको विवाहके समय पहनाते हैं। २ एक प्रकार का राग।

शाहिद - पुं० (अ०) (बहु० शाहिदान) साक्षी, गवाह। यौ०-शाहिदे हाल = प्रत्यक्ष साक्षी। वि० (फा०) बहुत सुन्दर।

शाहिद-बाज - वि० (अ०+फा०) (सं० शाहिद-बाजी) सौन्दर्यका प्रेमी या उपासक।

शाहिदी - स्त्री० (अ०) शहादत, गवाही।

शाही - वि० (फा०) १ बादशाहोंका-सा। शाह सम्बन्धी। २ राजकीय, सरकारी। स्त्री० शासन, राज्य। जैसे-निज़ामशाही, सिक्खशाही।

शाहीन - पुं० (फा०) १ एक प्रकार का शिकारी पक्षी। सफेद बाज़। २ तराजूका काँटा।

शिंगरफ - पुं० (फा०) ईंगुर।

शिआर - पुं० (अ०) १ वह कपड़ा जो अन्दर या नीचे पहना जाता है। २ पोशाक, कपड़ा, वस्त्र। ३ दे० शआर।

शिकंजा - पुं० (फा० शिकंजः) १ दबाने, कसने या निचोड़नेका यन्त्र। २ एक यन्त्र जिससे जिल्दबन्द किताबें दबाते और उसके पन्ने काटते हैं। ३ अपराधियोंको कठोर दंड देनेके लिये एक प्राचीन यन्त्र जिसमें उनकी टाँगे कस दी जाती थी। मुहा०-शिकंजे में खिचवाना = घोर यंत्रणा दिलाना। साँसत करना।

शिक - स्त्री (अ०) १ आधा भाग। २ ओर। तरफ।

शिकन - स्त्री० (फा०) सिकुड़नेसे पड़ी हुई धारी, सिलवट, बल। वि० तोड़नेवाला। जैसे - अहद-शिकन।

शिकनी - पुं० (फा०) तोड़ने या भंग करनेकी क्रिया।

शिकम - पुं० (फा०) पेट।

शिकम-परवर - वि० (फा०)। (सं० शिकम-परवरी) स्वार्थी, पेटू।

शिकम-बन्दा - वि० दे० 'शिकम-परवर'।

शिकम-सेर - वि० (फा०) जिसका पेट अच्छी तरह भर गया हो।

शिकमी - वि० (फा०) १ शिकम या पेटसम्बन्धी। २ जन्मसम्बन्धी, पैदाइशी। ३ भीतरी, अंतर्गत।

शिकमी-काश्तकार - पुं० (फा०) वह काश्तकार जिसे दूसरे काश्तकारसे जोतने के लिए खेत मिला हो।

शिकरा - पुं० (फा० शिकरः) एक प्रकारका बाज़ पक्षी।

शिकवा - पुं० (फा० शिकवः) शिकायत, गिला।

शिकवा-गुज़ार - वि० (फा०) (सं० शिकवा-गुजारी) शिकवा या शिकायत करनेवाला।

शिकस्त - स्त्री० (फा०) १ पराजय, हार। यौ०-शिकस्तफाश = बहुत बड़ी या ज़हरी हार। २ टूटने-फूटनेकी क्रिया या भाव।

शिकस्तगी - स्त्री० (फा०) टूटनेकी क्रिया या भाव।

शिकस्ता - वि० (फा० शिकस्तः) १ टूटा-फूटा। जैसे-शिकस्ताहालं = दुर्दशा-ग्रस्त। २ घसीट (लिखावट)।

शिकायत - स्त्री० (अ०) (वि० शिकायती) १ बुराई करना, गिला, चुग़ली। २ उपालंभ, उलाहना। ३ रोग, बीमारी।

शिकार - पुं० (फा०) १ जंगली पशुओंको मारनेका कार्य या क्रीड़ा। आखेट। मृगया। २ वह जानवर जो मारा गया हो। ३ गोश्त, मांस। ४ आहार, भक्ष्य। ५ कोई ऐसा आदमी जिसके फँसनेसे बहुत लाभ हो, असामी। मुहा०- शिकार खेलना = शिकार करना। किसी का शिकार होना = १ किसी के द्वारा मारा जाना। २ वश में आना, फँसना।

शिकार-गाह- स्त्री० (फा०) शिकार खेलने का स्थान।

शिकार-बन्द- पुं० (फा०) वह तस्मा जो घोड़ेकी पीठपर पीछेकी ओर इसलिए बँधा रहता है कि उसमें शिकार किया हुआ जानवर या इसी तरहकी और कोई चीज़ लटकाई जा सके।

शिकारी- पुं० (फा०) १ शिकार करनेवाला। २ शिकारमें काम आनेवाला।

शिकेब- पुं० (फा०)धैर्य, सहनशीलता।

शिकेबा - वि (फा०) सहनशील।

शिकेबाई- स्त्री० दे० 'शिकेब'।

शिकोह- पुं० दे० 'शकोह'।

शिगाफ- पुं० (फा०) १ चीरा, नश्तर। २ दरार, दर्ज। ३ छेद।

शिगाल- पुं० (फा० मि० सं०) गीदड़, सियार।

शिगुफ्ता- वि० दे० 'शगुफ्ता'।

शिगूफा- पुं० दे० 'शगूफा'।

शिताब- क्रि० वि० (फा०) जल्दी से।

शिताब-कार - वि० (फा०) (सं० शिताब-कारी) १ जल्दी काम करनेवाला। २ जल्दबाज़।
शिताबी- स्त्री० (फा०) शीघ्रता।
शिद्दत- स्त्री० (अं०) १ तेजी, कठोरता। २ सख्ती, उग्रता। ३ अधिकता। ४ बलप्रयोग।
शिनाख्त- स्त्री० दे० शनाख्त।
शिनास - वि० (फा०) पहचाननेवाला। (सं० शिनासी) जैसे - हक़शिनास।
शिनासा - वि० (फा० शनासः) पहचानने वाला।
शिनासाई- स्त्री० (फा० शनासाई) पहचान। परिचय।
शिफा- स्त्री० दे० 'शफा'।
शिफाअत - दे० 'शफाअत'।
शिमाल - दे० 'शुमाल'।
शिरकत- स्त्री० (अ० शिर्कत) १ साझा, शराकत। २ सहयोग।
शिरयान- स्त्री० (अ० मि० सं० शिरा) छोटी नस, नाड़ी, रग।
शिराकत - स्त्री० दे० 'शराकत'।
शिर्क- पुं० (अ०) किसी और (देवी-देवताओं) को भी ईश्वरके साथ सृष्टि आदिका कर्त्ता मानना जो इस्लामकी दृष्टि से कुफ्र (अर्धम) है।
शिर्यान- स्त्री० (अणु) भड़ी,सिरा।
शिलंग- पुं० (फा०) १ डग, कदम। २ उछलने या कूदनेकी क्रिया या भाव। छलाँग। क्रि० प्र० भरना। मारना।
शिलांग पुं० (देश०) दूर- दूर पर की जानेवाली मोटी सिलाई।
शिस्त- स्त्री० दे० 'शस्त'।
शिहना- पुं० दे० 'शहना'।
शिहाब - पुं० (अ०) १ आगकी लपट। २ आकाशसे टूटनेवाला तारा।
शीआ- पुं० (अ० शीअः) १ सहायक, मददगार। २ वह दल जिसने हजरत अली और उनके वंशजोंका बराबर साथ दिया था। ३ इस दलके अनुयायी जिनका मुसलमानों में एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय है, राफिज़ी।
शीन- पुं० (अ०) अरबी वर्णमालाका तेरहवाँ अक्षर और उर्दू लिपिका अठारहवाँ अक्षर। मुहा० शीन काफ दुरुस्त होना = बोलने में फारसी, अरबी आदिके शब्दोंका उच्चारण ठीक होना।
शीर- पुं० (फा० मि० सं० क्षीर) दूध, दुग्ध।
शीर-खिश्त - स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी दस्तावर दवा जो वृक्षों और पत्थरों पर दूध की तरह जमी हुई मिलती है।
शीर-गर्म - वि० (फा०) साधारण गरम, कुनकुना।
शीरदान - पुं० (फा०) दुग्धपात्र, दूध का बर्तन।
शीरनी- स्त्री० दे० 'शीरीनी'।
शीर- बिरंज-स्त्री० (फा०) दूधमें पके हुए चावल। खीर।
शीर-माल- स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी मैदेकी खमीरी रोटी।
शीर-व-शकर - वि० (फा०) दूध और चीनीकी तरह आपसमें बहुत मिले हुए।
शीरा-पुं० (फा० शीरः) १ रक्तकी छोटी नाड़ी। २ पानीका सोता या धारा। ३ चीनी आदिको पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी।
शीराज़- पुं० (फा०) फारसका एक प्रसिद्ध नगर।
शीराज़ा- पुं० (फा० शीराजः) १ पुस्तकों की सिलाईमें वह डोरा या फीता जो जिल्दके पुठ्ठों से सटाया रहता है। २ व्यवस्था।
शीराज़ी - वि० (फा०) शीराज नगरका। पुं० एक प्रकारका कबूतर।
शीरीं - वि० (फा०) १ मीठा, मधुर। २ प्रिय, प्यारा।
शीरीनी- स्त्री० (फा०) १ मिठास, मीठापन। २ मिठाई।
शीशए साइत- पुं० (फा+अ०) पुराने ढंगकी वह घड़ी जिसमें बालू भर दिया जाता था और कुछ निश्चित समयमें वह बालू नीचे के छेदसे गिरता जाता था।
शीशा- पुं० (फा० शीशः) १ एक पारदर्शी

मिश्र धातु, जो वालू या रेह या खारी मिट्टीको आगमें गलाने से बनती है,२ कँाच,दर्पण, ३ झाड़, फानूस आदि कँाच के बने हुए सामान।

शीशा-गर- पुं० (फा०) (भाव० शीशा-गरी) शीशा या उसकी चीजें बनानेवाला।

शीशाबाज - वि० (फा० शीशः बाज) धूर्त।

शीशाबाज़ी - स्त्री० (फा० शीशःबाजी) धूर्तता।

शीशी - स्त्री० (फा० शीशः) शीशेका छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं। मुहा०-शीशी-सुँघाना = दवा सुँघाकर बेहोश करना (अस्त्र-चिकित्सा आदि में)।

शुअबा- पुं० दे० शोबा।

शुआअ- स्त्री० (अ०) (वि० शुआई) सूर्यकी किरण। रश्मि।

शुआई- वि (अ०) किरणों का। किरण-सम्बन्धी।

शुआर- पुं० दे० शिआर।

शुअर - पुं० (अ०) शिष्टता, तमीज।

शुकराना- पुं० (फा० शुक्र) १ शुक्रिया। कृतज्ञता। २ वह धन जो कार्य हो जाने पर धन्यवादके रूपमें दिया जाय।

शुक्का- पुं० (अ० शुक्कः) वह पत्र जो बादशाह की ओरसे किसी अमीर या सरदारके नाम लिखा जाय।

शुक्र- पुं० (अ०) १ कृतज्ञता। २ धन्यवाद। मुहा०-शुक्र बजा लाना = कृतज्ञता प्रकट करना।

शुक्र- गुजार - वि० (अ०+फा०) (शुक्र-गुजारी)। एहसान माननेवाला। आभारी। कृतज्ञ।

शुग्ल- पुं० दे० शगल।

शुजाअ - वि० (अ०) वीर। बहादुर।

शुजाअत- स्त्री० (अ०) वीरता।

शुतरी - वि० (फा०) १ शुतुर या ऊंटके रंगका। २ ऊंट के बालों का बना हुआ। पुं० ऊंटकी पीठपर रखकर बजाया जानेवाला नक्कारा या धौंसा।

शुतुर- पुं० (फा० शुत्र मि० सं० उष्ट्र) ऊंट नामक पशु। यौ०-शुतुर-बे-महार = १ बिना नकेलका ऊंट। २ बिना सोंचे-समझे किसी तरफ चल पड़नेवाला।

शुतुर-कीना- पुं० (फा०) वह जिसके मनमें वैरका भाव सदा बना रहे।

शुतुर-ग़मजा- पुं० (फा०) १ छल। धोखा। चालाकी। २ नामुनासिब। नखरा।

शुतुर-गाव- पुं० (फा०) जुराफा नामक पशु।

शुतुरदिल- वि० (फा०)डरपोक। कायर।

शुतुर-नाल - स्त्री० (फा०) ऊंटपर रखकर चलाई जानेवाली तोप।

शुतुर-बान - वि० (फा०) ( शुतुरबानी) ऊंट हाँकनेवाला।

शुतुर-मुर्ग- पुं० (फा०) एक प्रकारका बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊंटकी तरह बहुत लंबी होती है।

शुद - वि० (फा०) गया-बीता। पुं० किसी कार्यका आरम्भ। यौ० - शुद-बुद = किसी विषयका बहुत सामान्य या अल्प ज्ञान।

शुदनी- स्त्री० (फा०) होनेवाली बात। भावी। होनहार। वि० होने या हो सकने योग्य। संभाव्य।

शुदामद - स्त्री० (अ०) परंपरा। प्रथा।

शुफा- पुं० (अ० शफअह) पड़ोस। पार्श्वर्त्ती। यौ०-हक्के शुफा = किसी मकान या ज़मीनको खरीदनेका वह हक़ जो उसके पड़ोसमें रहनेसे हासिल होता है।

शुबहा- पुं० (अ० शुब्हः) १ संदेह। शक। २ धोखा। वहम।

शुभा- पुं० दे० शुबहा।

शुमार- पुं० (फा०) १ संख्या। गिनती। २ लेखा। हिसाब।

शुमार-कुनिन्दा - वि० (फा०) शुमार या गिनती करनेवाला।

शुमारी- स्त्री० (फा०) गिननेकी क्रिया। गिनती। जैसे मर्दुम-शुमारी।

शुमाल- स्त्री० पुं० (अ०) उत्तर दिशा।

शुमाली - वि० (अ०) उत्तरका। उत्तरी।

शुमूल - वि० (अ०) पुरा। सब। कुल। यौ०- ब-शुमश्लियत= सहायता या सहयोग

से।

शुरका- पुं० (अ०)शरीक का बहु०। शरीफ लोग।

शुरफा- पुं० (अ०) शरीफ -का बहु०।

शुरूआत - स्त्री० (अ०) आरंभ, प्रारंभ।

शुरू- पुं० (अ० शुरुअ) १ आरंभ। २ वह स्थान जहाँसे किसी वस्तुका आरंभ हो। उत्थान।

शुर्ब- पुं० (अ०) पीना।

शुवात - पुं० (फा०) चकवान।

शुस्त-व-शू-संज्ञा - स्त्री० (फा०) । नहाना-धोना। २ धोकर पवित्र और शुद्ध करना।

शुस्ता - वि० (फा० शुस्तः) १ धोया हुआ। २ साफ। स्वच्छ। ३ शुद्ध। जैसे-शुस्ता जबान।

शहरा - पुं० (अ० शुहरः) प्रसिद्ध, ख्याति।

शुहुद - संज्ञा पुं० (अ०) मनकी वह अवस्था जिसमें संसारकी सब चीजों में ईश्वर ही ईश्वर दिखाई देता है।

शूम - वि० (फा०) (संज्ञा शूमी) (भाव० शूमियत) १ मनहूस। २ अभागा। ३ कंजुस।

शूमकदम - वि० (फा० +अ०) जिसकी आगमन अशुभ हो।

शूरा - पु० (अ०) परामर्श, विचार।

शेख - संज्ञा पुं० (अ० शैख) (बहु० मशायख) १ पैगम्बर मुहम्मदके वंशजों की उपाधि। २ मुसलमानोंके चार वर्गोंमें से सबसे पहला वर्ग। ३ इस्लाम धर्मका आचार्य।

शेख-उल्-इस्लाम - पुं० (अ०) अपने समयका इस्लामका सबसे बड़ा नेता और धर्माधिकारी।

शेख चिल्ली- पुं० (अ० शैख+फा) १ कल्पित मूर्ख व्यक्ति। २ बड़े-बड़े मंसूबे बाँधनेवाला।

शेखी - स्त्री० (अ० शेख) १ गर्व। अहंकार। घमंड। २ शान। ऐंठ। अकड़। ३ डींग। मुहा०-शेखी बघारना, हाँकना या मारना = बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

शेफ्तगी- स्त्री० (फा०) शेफ्ता या आशिक होने का भाव। आसत्ति।

शेफ्ता- वि० (फा० शेफ्त ) आसत्त।

शेर- पुं० (फा०) १ बिल्लीकी जातिका एक भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर। मुहा० - शेर होना = निर्भय और धृष्ट होना। २ अत्यन्त वीर और साहसी पुरुष। पुं० (अ० शेअर) उर्दू कविताके दो चरण। जैसे- शेरआबी। स्त्री० (फा०) घड़ियाल। मगर।

शेर-ख्वानी- स्त्री० (अ० शेअर+फा० ख्वानी) शेर या कविता पढ़ना।

शेर-गोई- स्त्री० दे० शेरख्वानी।

शेर-दहाँ - वि० (फा०) १ जिसका मुँह शेरका-सा हो। २ जिसके छोरोंपर शेरका मुँह बना हो। संज्ञा पुं० १ वह जिसकी घुंडी शेरके मुँहके आकार बनी हो। २ वह मकान जो आगे चौड़ा और पीछे सँकरा हो।

शेर-पंजा- पुं० (फा० शेर+पंजः) शेरके पंजेके आकारका एक अस्त्र। बघनहा।

शेर-बवर- पुं० (फा०) सिंह।

शेर-मर्द - वि० (फा० शेरमर्दी) बहुत बड़ा बहादुर।

शेवन- पुं० (फा०) १ रोना-चिल्लाना। २ रोकर दुःख प्रकट करना।

शेवा- वि० (फा० शेवः) वक्पटु, बोलने में पटु।

शै- स्त्री० (अ०) १ वस्तु। पदार्थ। चीज। २ भूत-प्रेत।

शैतनत- स्त्री० (अ०) १ शैतानी। शैतान-पन। २ दुष्टता।

शैतान- पुं० (अ०) (बहु० शयातीन) १ तमोगुण-मय देवता जो मनुष्यों को बहकाकर धर्मके मार्गसे भ्रष्ट करता है। मुहा० - शैतानकी आँत = बहुत लम्बी वस्तु। २ दुष्ट देव-योनि। भूत। प्रेत। ३ दुष्ट।

शैतानी- स्त्री० (अ० शैतान) १ दुष्टता। शरारत। पाजीपन। २ नटखटी। दुष्टतापूर्ण। वि० शैतान-सम्बन्धी। शैतानका।

शैदा - वि० (फा०) आशिक होनवाला।

आसक्त। आशिक।
शैदाई- पुं० (फा०) वह जो किसीपर शैदा या आशिक हो।
शोअरा - शायर का बहु०।
शोख - वि० (फा०) ( शोखी ) १ ढीठ। धृष्ट। २ शरीर। नटखट। ३ चंचल। चपल। ४ गहरा और चमकदार (रंग)।
शोख-चश्म - वि० (फा०) सं० शोख-चश्मी १ धृष्ट।२ निर्लज्ज। बेहया।
शोखी- स्त्री० (फा०) १ घृष्टता। ढिठाई। २ दुष्टता। शरारत। दूचंचलता।४ रंग आदि की चमक।
शोब- पुं० (फा०) धुलने की क्रिया या भाव धुलाई।
शोबदा- पुं० (अ० शुअषदः) १ जादू। इंद्रजाल। २ धोखा।
शोबदा-गर - पुं० दे० शोबदाबाज़।
शोबदा-बाज़ - पुं० (फा०) ( शोबदा-बाजी) १ जादूगर। २ धोखेबाजी।
शोबा- पुं० (अ० शुअबः) १ समूह। झुंड। २ शाखा विभाग। ३ नहर।
शोर- पुं० (फा०) १ क्षार। २ नमक। ३ रेह। ४ ऊसर। जमीन। वि० खारा। क्षार-युक्त। पुं० (फा०) १ जोरकी आवाज। गुल-गपाड़ा। कोलाहल। २ प्रसिद्धि।
शोर-पुश्त - वि० दे० शोरा-पुश्त।
शोर-बख्त - वि० (फा०) अभागा। कम्बख्त।
शोरबा- पुं० (फा० शोर्बः) किसी उबली हुई वस्तुका पानी। जूस। रसा।
शोरा- पुं० (फा० शोरः) एक प्रकारका क्षार जो मिट्टीसे निकलता है।
शोरा-पुश्त - वि० (फा० शोरपुश्त) ( शोरा-पुश्ती) १ उद्दंड। २ झगड़ालू।
शोरबा- पुं० (फा० शोराबः) खारा पानी।
शोरिश स्त्री० (फा०) १ शोरगुल। हुल्लड़। २ झगड़ा। फसाद। ३ खलबली। हलचल।
शोरीदगी - स्त्री० (फा०) व्याकुलता विकलता।
शोरीदा- वि० (फा० शोरीदः) व्याकुल। विकल।
शोरीदा-सर - वि० (फा०) शोरीदा-सरी) पागल। विक्षिप्त।
शोला- पुं० (अ० शुअलः) आगकी लपट।
शोला-खू - वि० (अ० शुअलः+फा०) उग्र स्वभाववाला।
शोलाजबाँ - वि० (अ० शुअलः+फा० जबाँ) आग उगलनेवाला।
शोला-रू - वि० (अ० शुअलः+फा०) बहुत ही सुन्दर। स्वरूपवान्।
शोशा - पुं० (फा० शोशः) १ निकली हुई नोक। २ अद्भुत या अनोखी बात।
शोहदा - पुं० (फा० शुहदा) शहीद का बहु०। १ व्यभिचारी। लम्पट। २ गुंडा।
शोहरत- स्त्री० (अ० शुहरत) प्रसिद्धि। ख्यात।
शोहरा- पुं० (अ० शुहरः) प्रसिद्ध। ख्यात। यौ०- शोहर-ए आफाक = जगत्-प्रसिद्धि।
शौक - पुं० (अ०) १ किसी वस्तुकी प्राप्ति या भोगके लिए होनेवाली तीव्र अभिलाषा। प्रबल लालसा। मुहा०-शौक करना = किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। शौकसे = प्रसन्नतापूर्वक। २ आकांक्षा। लालसा। हौसला। ३ व्यसन। चसका। ४ प्रवृत्ति। झुकाव।
शौकत- स्त्री० (अ०) १ बल। ताक़त। २ रोब। आतंक। ३ ठाठ। शान। यौ०-शान-शौकत= ठाठ-बाट।
शौका - पुं० (अ० शौकः) काँटा।
शाकिया - वि (अ० शौकियः) शौकसे भरा हुआ। शौकवाला। क्रि० वि० शौक से।
शौकीन- पुं० (अ० शौक़) १ वह जिसे किसी बात का बहुत शौक़ हो। शौक़ करनेवाला। २ सदा बना-ठना रहनेवाला।
शौक़ीनी- स्त्री० (अ० शौक) शौक़ीन होने का भाव या काम।
शौहर- पुं० (फा०) स्त्रीका पति। स्वामी। खाविद। मालिक।
शौहरकुश - वि० (फा०) पति का वध करनेवाली।
शौहरख्वाह - वि० (फा०) जिसे पति की

चाह हो।

शौहरपरस्त - स्त्री० (फा०) पतिव्रता। साध्वी।

शौहरा- पुं० (फा० शौहरः) वरके सिरपर बाँधा जानेवाला सेहरा।

संग- पुं० (फा०) १ पत्थर। प्रस्तर। २ भार। बोझ। वज़न।

संग-जाँ - वि० (फा०) (भाव० संगजानी) १ जिसकी जान बहुत कठिनतासे निकले। २ निर्दय।

संग-तराश- पुं० (फा०) वह जो पत्थरकी चीज़ काट-छाँटकर बनाता हो।

संग- तराशी- स्त्री० (फा०) संगतराश का काम। पत्थर को काट-छाँटकर चीजें बनाना।

संग-दाना- पुं० (फा०) पक्षीका पेट जिसमें से प्रायः कंकड़-पत्थर भी निकलते हैं।

संग-दिल - वि० (फा०) (संज्ञा संग-दिली) जिसका दिल पत्थरकी तरह हो। कठोर-हृदय।

संग-पारस- पुं० (फा०+हिं) पारस पत्थर। स्पर्श-मणि।

संग-पुश्त- पुं० (फा०) कछुआ।

संग-बसरी- पुं० (अ०+फा०) एक प्रकारका सफेद पत्थर जो दवा के काममें आता है।

संग-मरमर- पुं० (फा० संगेमर्मर) एक प्रकारका मुलायम बढ़िया पत्थर।

संग-मूसा- पुं० (फा०) एक प्रकारका काला मुलायम बढ़िया पत्थर।

संग-रेजा- पुं० (फा०) कंकड़। रोड़ा।

संग-लाख- पुं० (फा०) पथरीला या पहाड़ी स्थान। वि० कड़ा। कठोर।

संग-शोई- स्त्री० (फा०) चावल या दाल आदि में पानी डालकर नीचे बैठे हुए कंकड़ आदि चुनना।

संग-साज - वि० (फा०) ( संग-साजी) वह जो लीथो या पत्थर। छापें में पत्थरपर के अक्षर आदि बनाकर अशुद्धियाँ दूर करता है।

संग-सार - पुं० (फा०) इस्लामी धर्म्म-शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का दंड जिसमें व्यभिचारीको ज़मीनमें कमर तक गाड़ देते थें और उसके सिरपर पत्थरोंकी वर्षा करके उसके प्राण लेते थे।

संग-सारी - दे० साग-सार।

संगीन - पुं० (फा०) लोहेका एक नुकीला अस्त्र जो बन्दूक़के सिरे पर लगाया जाता है। वि० १ पत्थरका बना हुआ। २ मोटा। ३ टिकाऊ। ४ विकट।

संगीन-दिल - वि० (फा०) कठोर-हृदय। संग-दिल।

संगीनी- स्त्री० (फा०) १ मजबूती। २ गुरुता। भारीपन।

संगे-असवद- पुं० (फा०+अ० अस्वाद) काबेमें रखा हुआ वह काला पत्थर जिसे मुसलमान पवित्र समझते और हज करते समय चूमते हैं।

संगे-आस्ताँ- पुं० (फा०) देहलीजका पत्थर।

संगे-खारा- पुं० (फा०) एक प्रकार का नीला पत्थर।

संगे-मजार- पुं० (फा०+अ०) क़ब्रपर लगा हुआ वह पत्थर जिसपर मृतकका नाम और मृत्युकाल आदि लिखा होता है।

संगे-मसाना - पुं० (फा०+अ० मसानः) वह पत्थर जो पथरी नामक रोगमें मनुष्यके मूत्राशयमें होता है।

संगे-माही - पुं० (फा०) एक प्रकार का पत्थर। कहते है कि यह मछली के सिरमें से निकलता है।

संगे-मिक़्नातीस- पुं० (फ़ा०+अ०) चुम्बक पत्थर।

संगे-यशव - पुं० (फा०) हरे रंगका एक प्रकारका पत्थर जिसके टुकड़े गलेमें हृदयसम्बन्धी रोग दूर करने के लिए पहनते हैं। हौलं-दिली।

संगे-राह- पुं० (फा०) १ रास्तेमें पड़ा हुआ पत्थर जिससे ठोकर लगे। २ बाधा। विघन्न।

संगे-लरजाँ- पुं० (फा०) एक प्रकार लचीला पत्थर जो हिलाने से लचकता है।

संगे-लोह- पुं० (अ०+फा०) क़ब्रपर लगा

हुआ पत्थर जिसपर किसी मृतककी मरण-तिथि या नाम आदि लिखा होता है।

संगे-शजर- पुं० (फा०+अ०) नदियों या समुद्र में से निकलनेवाला एक प्रकार का सफेद पत्थर।

संगे-शजरी - दे० संगे-शजर।

संगे-सिमाक- पुं० (फा०+अ०) एक प्रकार का सफेद पत्थर।

संगे-सीना- पुं० (फा०) १ छाती पर का पत्थर। २ अप्रिय वस्तु या बात।

संगे-सुरमा- पुं० (फा०) सुरमे की डली।

संगे- सुर्ख- पुं० (फा०) लाल रंग का पत्थर।

संगे-सुलेमानी - पुं० (फा०+अ०) एक प्रकार का दोरंगा पत्थर जिसकी मुसलमान फकीर माला बनाकर गले में पहनते हैं।

संज - वि० (फा०) समझने या जाननेवाला। जैसे-नग्मा-संज =गवैया। संखुन-संज = वक्ता या कवि।

संजाफ - स्त्री० (फा०) (वि० संजाफी) गोट। किनारा। हाशिया।

संजीदगी - स्त्री० (फा०) गंभीरता।

संजीदा- वि० (फा० संजीदः) लाव० संजीदगी १ जयाँ या तुला हुआ। उपयुक्त। २ ठीक तरह से निशाना लगाने वाला।३ धीर। गम्भीर।

संजीदामिजाज - वि० (फा० संजीदः+अ०मिजाज) गंभीर प्रकृतिवाला।

सअद- पुं० (अ०) १ सौभाग्य। खुश-किस्मती। २ ग्रहों आदिका शुभ-प्रभाव। वि० शुभ। मुबारक।

सअब - विभ्र (अ०) १ कठिन। कठोर। २ अप्रिय।

सआदत- स्त्री० (अ०) १ सौभाग्य। खुश-किस्मती। २ नेकी। भलाई।

सआदत- मन्द - वि० (अ०+फा०) ( सआदत-मन्दी) १ भाग्यवान्। २ आज्ञाकारी और सुयोग्य (प्रायः पुत्रके लिए)।

सई- स्त्री० (अ०) १ दौड़-धूप। २ परिश्रम। प्रयत्न। कोशिश। ३ सिफारिश। यौ०- सईसिफारिश = प्रयत्न। कोशिश।

सईद - वि० (अ०) १ शुभ। मुबारक। २ भाग्यवान्।

सईस - पुं दे० साईस।

सऊबत- स्त्री० (अ०) १ कठिनता। दिक्कत। २ आफत।

सक्ता - पुं० (अ० सक्तः) १ एक प्रकार का मूर्च्छारोग। मिरगी। २ चकित या स्तम्भित होनेकी अवस्था। ३ कवितामें यति। ४ यति-भंगका दोष।

सक़नकूर- पुं० (तु०) १ गोह की तरह का एक जानवर। २ रेगमाही।

सकना - पुं० (अ० साकिन काबहु) निवासी।

सक़मूनिया - पुं० (यू०) एक प्रकार की यूनानी दवा।

सक़र- स्त्री० (अ०) जहन्नुम। दोजख। नरक।

सकालत- स्त्री० (अ०) १ भार। बोझा। २ गरिष्ठता। गुरु-पाकत्व।

सकीनत - स्त्री० (अ०) चैन, आराम।

सकीम- वि० (अ०) बीमार। रोगी। २ दूषित। ऐबदार।

सकील - वि० (अ०) भाव० (सिल्क, सकालत) १ भारी। वजनी। २ गरिष्ठ। गुरु-पाक। जल्दी न पचनेवाला।

सकूत - पुं० दे० सुकूत

सकून - पुं० (अ० सुकून) १ ठहरना। २ मनकी शान्ति।

सकूनत - स्त्री० (अ० सुकूनत) रहने की जगह। निवासस्थान।

सक्का- पुं० (अ०) मशक में पानी भरकर लानेवाला। भिश्ती।

सक्काई - स्त्री० (अ०) १ पानी पिलाने का काम। २ भिश्ती का काम।

सक्कावा- पुं० (अ० सक्का) पानी रखनेका हौज या टाँका।

सक्फ- पुं० (अ०) मकानकी छत या ऊपरी भाग। कोठा।

सखावत- स्त्री० (अ०) उदारता। दान-शीलता।

सखी - वि० (अ०) दानी। उदार।

सखुन - (फा० सुखन) १ कथन। उक्ति। २ वचन। कौल। वादा। ३ बात-चीत। ४ कविता। ५ कहावत।
सखुन-चीन - वि० (फा०) (संज्ञा सखुन-चीनी) चुगलखोर।
सखुन-तकिया - पुं० (फा०) वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगोंके मुँहसे प्रायः निकला करता है। तकियाकलाम।
सखुन-दाँ - वि० (फा०) ( सखुन-दानी ) १ उक्तियों का मर्म समझनेवाला। २ कवि। शायर।
सखुन-परवर - वि० (फा०) ( सखुन-परवरी) १ अपने वचनका पालन या निर्वाह करनेवाला। २ हठी।
सखुन-फहम - वि० (फा०) ( सखुन-फहमी) बातोंका मर्म समझनेवाला। चतुर।
सखुन- रस ५ दे० सखुन-फहम।
सखुन-वर- वि६ दे० सखुन-दाँ।
सखुन-शिनास - वि० (फा०) (सखुन-शिनासी) बातोंका तत्व या रहस्य समझनेवाला।
सखुग-संज वि० दे० सखुन- दाँ ।
सखुन- साज (फा०) ( सखुन-साजी) १ बातों को अच्छी तरह बनाकर या सुन्दर रूप में कहनेवाला। सु-वक्ता। २ झुठी बातें बनानेवाला।
सख्त - वि० (फा०) १ कठोर। कड़ा। मुलायम का उल्टा। २ भारी। संगीन। ३ मुश्किल। कठिन। ४ कठोर-हृदय। निर्दय। क्रि० वि० बहुत अधिक।
सख्त-जान - वि० (फा०) (सखती-जानी) १ कठोर-हृदय। निर्दय। २ जिसके प्राण बहुत कठिनतासे निकलें। ३ कष्ट-सहिष्णु।
सख्त-दिल - वि० (फा०) (सख्त-दिली) कठोर-हृदय। निर्दय।
सख्ती - स्त्री० (फा०) १ कठोरता। कड़ापन। "नरमी" का उल्टा। २ दृढ़ता। ३ कठोर व्यवहार। ४ तीव्रता। तेजी। ५ डाँट-डपट। ६ कष्ट।
सग- पुं० (फा०) कुत्ता।
सग़ीर - वि० (अ०) (बहु० सिग़ार) छोटा। जैसे - सग़ीर-सिन = कम उम्रका। अल्प-वयस्क। सग़ीर सिनी = अल्पवयस्कता। कमसिनी। नाबालिग़ी।
सग्र- पुं० (अ०) छोटापन।
सजा - पुं० (अ० सजड़) १ पक्षियों का मनोहर कलरव। २ ऐसा वाक्य या पद जिसका कुछ अर्थ भी हो और जिससे किसी व्यक्तिका नाम भी सूचित हो। ३ कविता। छन्द।
सज़ा- स्त्री० (फा०) १ दंड २ कारागार में रखने का दंड।
सज़ाए-कत्ल- स्त्री० (फा०+अ०) प्राण-दंड।
सज़ाए-मौत- स्त्री० दे० सज़ाए-कत्ल।
सजा-याफ्ता - वि० (फा० सजा-याफतः) वह जो सजा पा चुका हो। कारागार में रह चुका हो।
सज़ा-याब - वि० (फा०) १ सजा पाने के लायक। २ सज़ा-याफता।
सज़ावार - वि० (फा०) १ उचित। उपयुक्त। वाजिब। २ शुभ-फल देनेवाला।
सजावुल- पुं० (तु०) सरकारी रुपए वसूल करनेवाला। तहसीलदार।
सज्जाद - वि० (अ०) सिजदा करनेवाला। आराधक।
सज्जादा - पुं० (अ० सजादा) १ वह कपड़ा जिसपर बैठकर नमाज़ पढ़ते हैं। जा- नमाज। मुसल्ला। २ पीर या फकीर की गद्दी।
सज्जादा-नशीन- पुं० (अ०+फा०) वह जो किसी पीर या फकीरकी गद्दी पर बैठा हो।
सतर - स्त्री० (अ०) (बहु० सतूर) १ लकीर। रेखा। २ पंक्ति। अवली। कतार। वि० १ टेढ़ा। वक्र। २ कुपित। क्रुद्ध। स्त्री० (अ० सत्र) १ मनुष्य की गुह्य इंद्रिय। २ ओट। आढ़ परदा।
सतह- स्त्री० (अ०) १ किसी वस्तुका उपरीं भाग। तल। २ वह विस्तार जिसमें केवल लम्बाई-चौड़ाई हो।

सतह ज़मीन- स्त्री० (अ०+फा०) १ पृथ्वी-तो। २ मैदान।

सताइश- स्त्री० (फा० सिताइश) प्रशंसा। तारीफ।

सतून - पुं० (फा० सुतून) स्तम्भ। खम्भा।

सत्त- स्त्री० (अ०) १ मनुष्य की गुप्त इंद्रिय। २ ओट। परदा। स्त्री० दे० सतर।

सद- स्त्री० (अ०) १ परदा। आड़। ओट। २ दीवार। ३ बाधा। मुहा० - सद्दे राह होना = किसी के मार्ग में कंटक या बाधक होना। वि० (फा० मि० सं० शत) सौ। शत। यौ० - सदआफरीन या सद-रह-मत - बहुत बहुत शाबाशी। धन्य।

सदक़ा - पुं० (अ० सदकः) १ खैरात। २ निछावर। उतारा।

सदफ - स्त्री० (अ०) वह सीपी जिसमें से मोती निकलता है। शुक्ति। सीप।

सदमा- पुं० (अ० सद्मः) १ आघात। धक्का। चोट। २ रंज।

सदर - पुं० (अ० सद्र) १ छाती। कलेजा। २ सामने या आगे का भाग। ३ आँगन। सहन। ४ प्रधान। मुख्य। ५ प्रधान, मुख्य या सभापति आदि के बैठने या रहनेका स्थान। ६ छावनी। लश्कर। वि०- १ खास। विशिष्ट। २ बड़ा। श्रेष्ठ। ३ मुख्य जैसे- सदरमुकाम = मुख्यालय।

सदर-आजम - पुं० (अ० सद्रेआजम) प्रधानमंत्री या अमात्य।

सदर-आला - पुं० (अ० सद्रे आला) अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे का हो। छोटा जज।

सदर-जहान - पुं० (अ०+फा०) एक कल्पित जिन या प्रेत जिसे स्त्रियाँ पूजती हैं।

सदर-नशीन - पुं० (अ०+फा०) सभापति। प्रधान।

सदर-नशीनी - स्त्री० (अ०+फा०) सभापतित्व।

सदर-सदूर - पुं० (अ० सद्रे-सदूर) प्रधाना न्यायकर्ता।

सदरी - स्त्री० (अ०) बिना आस्तीनकी एक प्रकारकी कुरती।

सदहा - वि० (फा०) सैकड़ों। बहुत।

सदा - स्त्री० (अ०) १ गूँजनेकी आवाज। प्रतिध्वनि। २ आवाज। शब्द। ३ माँगने या पुकारनेकी आवाज।

सदाक़त - स्त्री० (अ०) १ सत्यता। सचाई। २ गवाही।

सदारत - स्त्री० (अ०) १ सद्र या प्रधानका भाव, पद या कार्य। २ सभापतित्व।

सदारती - वि० (अ०) सभापति-संबंधी।

सदी - स्त्री० (फा०) सौ वर्ष। शती, शताब्दी स्त्री० (अ०) स्तन।

सदीद - पुं० (अ०) मवाद।

सद्दे-याजूज - स्त्री० (अ०) दे० सद्दे-सिकन्दर।

सद्दे-सिकन्दर - स्त्री० (अ०+फा०) चीनकी प्रसिद्ध दीवार जो सिकन्दर बादशाहकी बनवाई हुई मानी जाती है।

सद्र - पुं० दे० सद्दर।

सन - पुं० (अ०) १ ताल। वर्ष। २ संवत्।

सनअत - स्त्री० (अ० सनअत) (वि० संनअती) कारीगरी। शिल्प-कौशल।

सनअतगर - वि० (अ० सनअत+फा०) शिल्पकार।

सनअतगरी - स्त्री० (अ० सनअत+फा०) शिल्प, शिल्पकारी।

सन-जुजूस - पुं० (अ०) राज्यारोहण का संवत।

सनद - स्त्री० (अ०) १ बड़ा तकिया। गाव-तकिया। २ वह जिसपर भरोसा या विश्वास किया जा सके। प्रामाणिक बात। ३ आदर्श। ४ प्रमाणपत्र। जैसं- सनदे मुआफी, सनदे लियाकत।

सनदन् - क्रि० वि (अ०) सनदके तौरपर। प्रमाण-रूपमें।

सनदयाफ्ता - वि० (अ०+फा० याफ्तः) उपाधिकारी।

सनम - पुं० (अ०) १ मूर्ति। प्रियतम। ३ प्रेयसी।

सनम-कदा - पुं० दे० सनम-खाना।

संनम का खेल - पुं० (अ०+हिं) एक प्रकारका खेल जिसमें अनेक प्रश्नों के उत्तर

किसी एक ही अक्षर (अ, क, म, ल आदि। से आरम्भ होनेवाले शब्दों में दिये जाते हैं।

सनम-खाना पुं० (अ०+फा०) १ मन्दिर। २ प्रिय या प्रेमिकाके रहनेका स्थान।

सनमपरस्त - वि० (अ०+फा०) मूर्तिपूजक।

सनमपरस्ती - स्त्री० (अ०+फा०) मूर्तिपूजा।

सना- स्त्री० (अ०) १ प्रशंसा। तारीफ। २ स्तुति। ३ एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं। सनाय।

सनाअत- स्त्री० (अ० सनाअत) कारीगरी।

सना-गर- पुं० (अ०+फा०) प्रशंसा या स्तुति करनेवाला।

सनाया - पुं० (अ० सनायङ) कला-कौशल। कारीगरी।

सनोवर - पुं० (अ०) एक झाड़। चीड़का वृक्ष।

सन्दल - पुं० (अ० मि० सं० चन्दन) चन्दन।

सन्दली - वि० (फा०) १ चन्दनका बना हुआ। २ चन्दन के रंगका लाली लिये हुए पीला। स्त्री० (फा०) छोटी चौकी।

सन्दूक - पुं० (अ०) (अल्पा० सन्दूकचा) लकड़ी आदिका बना हुआ चौकोर पिटारा। पेटी। बक्स।

सन्दूकची - दे० सन्दूकचा।

सन्दूकी - वि० (अ० सन्दूक) सन्दूककी तरह या आकार का।

सन्नाअ- पुं० (अ०) बहुत बड़ा कारीगर।

सन्नाई- स्त्री० (अ०) शिल्प। शिल्पकर्म।

सपिस्ताँ- पुं० दे० सिपिस्ताँ।

सपुर्द - स्त्री० (फा० सिपुर्द) किसी को रक्षापूर्वक रखने के लिये देना। सौपना।

सपुर्दगी- स्त्री० (फा० सिपुर्दगी) सौपे जाने की क्रिया। जैसे-सब चीजें उन्हींकी सपुर्दगी में हैं।

सपेद - वि० (फा० मि० सं० श्वेत) १ श्वेत। सफेद। उज्जवल। २ गोरा। ३ कोरा। सादा।

सपेदी - स्त्री (फा०) सफेदी।

सफ- स्त्री० (अ०) (बहु० सफूफ) १ पंक्ति। क़तार। २ लंबी सीतल-पाटी।

सफ-आरा - वि० (अ०+फा०) (सफ-आराई) युद्ध के लिए सेनाओंकी पक्तियाँ या स्थान निर्धारित करनेवाला।

सफ-जंग- स्त्री० (अ+फा०) युद्ध के लिए सैनिकोंकी स्थापना। व्यूह-रचना।

सफदर - पुं० (अ०+फा०) वीर योद्धा।

सफर- पुं० (अ०) १ स्थान। यात्रा। २ रास्ते में चलने का समय या दशा। ३ खाली होना। अवकाश। ४ एक प्रकार का उदररोग। ५ पुं० (अ०) अरबोंका दूसरा चान्द्र मास जो मुहर्रम के बाद पड़ता है।

सफर-नामा- पुं० (अ०+फा० नामः) यात्रा-विवरण।

सफरा- पुं० (अ० सफरः) पित्त।

सफरावी - वि० (अ०) पित्तसंबंधी।

सफरी - वि० (फा०) सफरमें का। सफर में काम आनेवाला। पुं० १ राह-खर्च। २ अमरूद।

सफवी- पुं० (अ०) फारस या ईरान का एक राजवंश जो शाह सफी नामक एक फकीर से चला था।

सफहा- पुं० (अ० सफहः) १ ऊपर या सामने पड़नेवाला अंश। जैसे - सफहए हस्ती = पृथ्वी तल। २ विस्तार। ३ पृष्ठं। पन्ना।

सफा - वि० (अ०) १ पवित्र। शुद्ध। २ साफ। स्वच्छ। ३ चमकीला। पुं० दे० सफहा।

सफाई- स्त्री० (अ० सफा) १ स्वच्छता। निर्मलता। २ मैल या कूड़ा-करकट आदि हटानेकी क्रिया। ३ मन में मैल न रहना। स्पष्टता। ४ कपट या कुटिलताका अभाव। ५ दोपोरोपका हटना। निर्दोषता। ६ मामलेका निपटारा। निर्णय।

सफा-चट - वि० (अ०+हिं०) एकदम स्वच्छ। बिल्कुल साफ।

सफाया - पुं० (अ० सफा) १ कुछ भी बाकी न रह जाना। पूरी सफाई। २ पूर्ण

विनाश।

सफी - वि० (अ०) १ शुद्ध। पवित्र। २ साफ। स्वच्छ। पुं० फारस के एक प्रसिद्ध फकीर का नाम जिससे वहाँका सफवी नामक राजवंश चला था।

सफीना - पुं० (अ० सफीनः) १ किश्ती। नाव। २ वह कागज जिसपर स्मरण रखने के लिए कोई बात लिखी जाय। ३ अदालती परवाना। इत्तिलानामा। समन।

सफीर - पुं० (अ०) एलची। राजदूत। स्त्री० (अ०) १ पक्षियों का कलरव। २ वह सीटी जो पक्षियोंको बुलाने आदिके लिए बजाई जाती है।

सफेद - वि० (फा०) १ चूनेके रंगका। धौला। श्वेत। चिट्ठा। २ जिसपर कुछ लिखा न हो। कोरा। सादा। मुहा० - स्याह-सफेद = भला-बुरा। इष्ट-अनिष्ट।

सफेद-पोश - वि० (फा०) (सफेद-पोशी) १ साफ कपड़े पहनने वाला। २ भला मानस। शिष्ट।

सफेदा - पुं० (फा० सफेदः) १ जस्तेका चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रंगाई के काम आता है। २ आमका एक भेद। खरबूजेका एक भेद।

सफेदी- स्त्री० (फा०) १ सफेद होनेका भाव। श्वेतता। धवलता। मुहा० - सफेदी आना = बुढ़ापा आना। २ दीवार आदिपर सफेद रंग या चूनेकी पोताई। चूनाकारी।

सफे-मातम - स्त्री० (अ०+फा०) वह चटाई या फर्श जिसपर मातम करनेके लिए बैठते हैं।

सफूफ- पुं० (अ० सुफूफ) पीसी या कूटी हुई सूखी चीज। चूर्ण।

सफ्फा - वि० (अ० सफा) १ साफ १ विनष्ट। बरबाद।

सफ्फाक - वि० (अ०) ( सफ्फाकी) १ कातिल। खूनी। २ निर्दय।

सबक्र - पुं० (अ०) १ किसी काममें किसी से आगे बढ़ जाना। २ ग्रंथका उतना अंश जितना एक बार पढ़ा जाय। पाठ। २ शिक्षा। उपदेश।

सबक्त- स्त्री० (अ०) किसी काममें किसी से आगे बढ़ जाना। क्रि० प्र० ले जाना।

सबद - स्त्री० (फा०) टोकरी, डलिया। यौ०- सबदे गुल = फूलों की डलियाँ।

सबब - पुं० (अ०) १ कारण। वजह। हेतु। २ द्वार। साधन।

सबल- पुं० (अ०) आँखोंका एक रोग।

सबहा - पुं० (अ० सबहः) माला के दाने या मनके।

सबा - वि० (अ०) सात। सप्त। यौ०- सबा सैयारा = सप्तर्षि। स्त्री० (अ०) प्रभातके समय चलनेवाली पूरब की हवा।

सबात- पुं० (अ०) १ स्थिरता। ठहराव। २ दृढ़ता। मजबूती।

सबाह - स्त्री० (अ०) १ प्रातःकाल। सबेरा। २ प्रभात। तड़का।

सबाहत- स्त्री० (अ०) १ गोरापन। गोराई। २ सौन्दर्य।

सबील- स्त्री० (अ०) १ मार्ग। सड़क। २ उपाय। ३ प्याऊ।

सबीह - वि० (अ०) १ गौर-वर्णका। गोरा। २ सुन्दर। खूबसूरत।

सबुक - वि० (फा०) फुर्तीला, चुस्त। यौ०- सबुकदस्त = हाथ का काम करने में कुशल।

सबू - पुं० (फा०) घड़ा। मटका।

सबूचा - पुं० (फा० सबूचः) सबूका अल्पार्थक रूप। छोटा घड़ा। मटकी।

सबूत - पुं० (अ०) १ स्थिरता। ठहराव। २ दृढ़ता। ३ प्रमाण।

सबूरा - पुं० (अ० सब) गुह्य इन्द्रिय के आकार का कपड़े का बनाया हुआ पदार्थ जिससे कुछ स्त्रियाँ अपनी कामवासना तृप्त करती हैं।

सबूरी - स्त्री० दे० सब्र।

सबूस - स्त्री० (फा०) १ चोकर। २ भूसी।

सबूह - स्त्री० (अ०) सबेरेके समय पीयी जानेवाली शराब।

सबुही- स्त्री० (अ०) सबेरेके समय शराब पीना।

सब्ज - वि० (फा०) १ कच्चा और ताजा

(फल फूल आदि)। मुहा0- सब्ज बाग़ दिखलाना = काम निकालने के लिए बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना। २ हरा। हरित (रंग)। ३ शुभ। उत्तम।

सब्ज-कदम - पुं0 (फा0+अ0) वह जिसका आगमन अशुभ समझा जाय। मनहूस।

सब्ज-पोश - वि0 (फा0) (सब्ज-पोशी) हरे रंगके कपड़े पहननेवाला (मुसलमानों में हरे रंग के कपड़े सोग या मातम के सूचक होते हैं)।

सब्ज-बख्त - वि0 (फा0) भाग्यवान्। किस्मतवर।

सब्जा - पुं0 (फा0 सब्ज़ः) १ हरियाली। २ भँग। भाँग। ३ पौसला। ४ पन्ना नाम्क रत्न। ५ घोड़े का रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन भी होता है।

सब्जी - स्त्री0 (फा0) १ वनस्पति आदि। हरियाली। २ हरी तरकारी। ३ भाँग।

सब्त- पुं0 (अ0) १ लिखावट। लेख। २ मोहर जो लेखों आदिपर लगाई जाती है। ३ खुले हुए बाल।

सब्बाग़- पुं0 (अ0) रँगरेज।

सब्र- पुं0 (अ0) १ सन्तोष। धैर्य्य। २ सहनशीलता। मुहा0- किसीका सब्र पड़ना = किसी के सहन किये हुए कष्ट का बुरा प्रतिफल होना।

सम - पुं0 (अ0 सम्म) विष।

समअ - पुं0 (अ0) कान।

समअ- खराशी- स्त्री0 (अ0+फा0) दिमाग चाटना। व्यर्थ की बातें करके सिर खाना।

समद - पुं0 (अ0) १ ईश्वर। वि0 स्थायी। शाश्वत।

समन - पुं0 (अ0) १ मूल्य। दाम। २ अदालतका वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाजिर होने के लिये बुलाया जाता है। (इस अर्थमें यह शब्द अंगरेजी से लिया गया है।) स्त्री0 (फा0) चमेली।

समन-अन्दाम - वि0 (फा0) जिसका शरीर चमेली के समान गोरा हो।

समन्द- पुं0 (फा0) १ बादामी रंग का घोड़ा। २ घोड़ा। अश्व।

समन्दर - पुं0 (फा0) १ एक प्रकारका कल्पित चूहा जिसकी उत्पत्ति आगसे मानी जाती है। २ दरिया। समुद्र।

समर - पुं0 (अ0) १ फल। नतीजा। २ लाभ। ३ धन-सम्पत्ति। ४ सन्तान। औलाद।

समरा - पुं0 (अ0 समरः) १ फल। २ लाभ। ३ परिणाम। ४ बदला।

समसाम - स्त्री0 (अ0 सम्साम) नंगी तलवार।

समाँ - पुं0 (अ0) दृश्य।

समा - पु0 (अ0) आकाश।

समाअ - पुं0 (अ0) १ सुनना। २ गीत आदि श्रवण करना।

समाअत - स्त्री0 (अ0) १ सुननेकी क्रिया। सुनवाई। २ सुनने की शक्ति, श्रवण शक्ति।

समाई - वि0 (अ0) सुना हुआ। दूसरों का कहा हुआ।

समाक़ - पुं0 (अ0) एक प्रकारका संग-मरमर (पत्थर)।

समाजत - स्त्री0 (अ0) १ शरमिन्दगी। लज्जा। २ विनय। ३ खुशामद। लल्लो-चप्पो।

समावी - वि0 (अ0) ऊपरसे आया हुआ। आकाशीय। दैवी। जैसे - समावी आफत।

समूम - स्त्री0 (अ0) १ जहरीली हवा। २ गरम हवा। लू।

समूर - पुं0 (अ0) लोमड़ी की तरह का एक पशु जिसकी खाल से पहनने के वस्त्र आदि भी बनाते हैं।

सम्त - स्त्री0 (अ0) १ सीधा। २ ओर। तरफ। ३ दिशा। यौ0 सम्त-उल्-रास = १ शीर्ष बिन्दु। २ उन्नतिकी चरम सीमा।

सम्बुल - पुं0 (अ0 सुम्बुल) एक प्रकार की सुगंधित वनस्पति। बाल छड़। जटामाँसी। उर्दू के कवि इसकी उपमा जुल्फ या बालोंकी लटसे देते हैं)।

सम्म - पुं0 (अ0) जहर। विष।

यौ0-सम्मे क़ातिल = घातक विष।

सर - पुं0 (फा0) १ सिर। शीर्ष। मुहा0- सर पर कफ़न बाँधना = मरने के लिये तैयार होना। सर हथेली पर लेना = मरने के लिये तैयार होना। २ ऊपरी या अगला भाग। ३ सरदार। नेता। ४ आरम्भ। शुरू। ५ शक्ति। बल। ६ ताशका पत्ता जो खेला जाय। वि0 १ दमन किया हुआ। २ जीता हुआ। क्रि0 वि0 १ सामने। २ ऊपर।

सर-अंजाम - पुं0 (फा0) १ कार्य की समाप्ति। २ सामग्री। सामान। ३ व्यवस्था। प्रबन्ध।

सर-आमद - वि0 (फा0) १ समाप्त करनेवाला। २ पूरा। पूर्ण। ३ श्रेष्ठ। बड़ा। अच्छा।

सर-कश - वि0 (फा0) ( सरकशी ) १ विद्रोही। बागी। २ उद्दंड। अवज्ञाकारी।

सरकशी - स्त्री0 (फा0) १ विद्रोह। २ अवज्ञा।

सरका - पुं0 (अ0 सारिकः या सर्कः ) चोरी। यौ0 - सरकए बिलज़ब = डाका।

सरकार- स्त्री0 (फा0) (वि0 सरकारी) १ मालिक। प्रभु। २ राज्यसंस्था। शासन-सत्ता। ३ रियासत।

सरकारी - वि0 (फा0) १ सरकार या मालिक का। २ राज्य का। राजकीय। यौ0 - सरकारी काग़ज = १ राज्य के दफ्तर का काग़ज। २ प्रामिसरी नोट।

सर-कोबी - स्त्री0 (फा0 सर+फा0 कोब) १ सिर कुचलना। २ दंड देना।

सर-खत - पुं0 (फा0+अ0) १ वह दस्तावेज जिसपर मकान आदि किराये पर दिये जानेकी शर्तें लिखी होती हैं। २ दिये और चुकाये ऋण आदि का व्योरा। ३ आज्ञापत्र। परवाना।

सर-खुश - वि0 (फा0) १ सब प्रकार की सुख-सामग्री से सम्पन्न। सुखी। २ मस्त।

सर-खेल - पुं0 (फा0) वंश या जाति का प्रधान। सरगना।

सर-गरदाँ - वि0 (फा0) १ घबराया हुआ और स्तंभित। २ निछावर।

सर-गरम - वि0 (फा0 सरगर्म) ( सरगरमी ) तत्पर। सन्नद्ध।

सर-गिरोह - पुं0 (फा0) जाति या समूह का प्रधान नेता। मुखिया।

सर-गश्ता - वि0 (फा0 सरगश्तः ) (सर-गश्तगी ) दुर्दशा-ग्रस्त और घबराया हुआ। विकल।

सर-गिराँ - वि0 (फा0) (सर-गिरानी) १ जिसका सिर नशे आदि के कारण भारी हो। २ अप्रसन्न। नाराज।

सर-गुज़श्त - स्त्री0 (फा0) १ सिरपर बीती हुई बात। २ हाल। वर्णन। ३ जीवन-चरित्र।

सर-गोशी - स्त्री0 (फा0) १ कान में कुछ बात कहना। २ पीठ पीछे शिकायत करना। ३ कानाफूशी। ४ चुगली। निन्दा।

सर-चश्मा - पुं0 (फा0 सरेचश्मः ) १ नदी आदि का उद्गम। २ जल-स्त्रोत। पानी का चश्मा।

सर-चोट - वि0 (फा0 सर+हिं0 चोट) जो सिरपर चोटके समान लगे। अप्रिय। नागवार।

सर-जद - वि0 (फा0 सर-जदन से) १ प्रकट। जाहिर। २ कृत।

सर-जनी - स्त्री0 (फा0 सरज़दन से) प्रयत्न। कोशिश।

सर-ज़निश - स्त्री0 (फा0) धिक्कार। लानत-मलामत।

सर-जमीन - स्त्री (फा0) १ देश। मुल्क। २ भूमि। जमीन।

सर-जोर - वि0 (फा0) (संज्ञा सर जोरी) १ बलवान्। ताकतवर। २ प्रबल। जबरदस्त। ३ दुष्ट। नटखट। उद्दंड। ४ विद्रोही।

सर-डूब - वि0 (फा0 सर+हिं0 डूबना) १ सिर से पैरतक डूबा हुआ। शराबोर। लथपथ। २ जल आदि इतना गहरा जिसमें सिर तक आदमी डूब जाय।

सरतराश - वि0 (फा0) नाई।

सर-ताज - पुं0 (फा0+अ0) १ बहुत श्रेष्ठ। २ परम माननीय या पूज्य।

सरतान - पुं० (अ०) १ केंकड़ा या कर्कट नामक जलजन्तु। २ कर्क राशि। ३ एक प्रकार का फोड़ा जो बहुत कड़ा होता और बहुत शीघ्रता से बढ़ता है।

सर-ता- पा - क्रि० वि० (फा०) सिर से पैर तक। आदि से अन्त तक।

सर-ताब - वि० दे० सरकश।

सर-ताबी - स्त्री० (फा०) १ विद्रोह। २ उद्दंडता। ३ नमकहरामी।

सरदर्द - पुं० (फा०) १ सिर का दर्द। २ परेशानी, झमेला।

सर-दवाल - स्त्री० (फा०) घोड़े के मुँह पर का वह साज जिसमें लगाम अटकी रहती है। मोहरी। नुकता।

सरदा - पुं० (फा० सर्दः) एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा।

सर-दाबा - पुं० (फा० सर्दआबः) १ ठंडे जलका स्नान। २ पानी ठंडा रखने का स्थान। ३ जमीन के नीचे बना हुआ कमरा। तहखाना।

सरदार - पुं० (फा०) १ नायक। अगुआ। श्रेष्ठ व्यक्ति। २ शासक। ३ अमीर। रईस।

सरदारी - स्त्री० (फा०) सरदारका पद या भाव।

सरदी - स्त्री० दे० सर्दी।

सर-नविश्त - स्त्री० (फा०) १ भाग्यका लेख। २ भाग्य।

सरनाम - वि० (फा०) प्रसिद्ध।

सर-नामा- पुं० (फा० सरनामः) लिफाफे या पत्र के ऊपर लिखा हुआ पता।

सर-निगूँ - वि० (फा०) १ जिसका मुँह नीचे की ओर हो। औंधा। २ लज्जित। शरमिन्दा।

सर-पंच- पुं० (फा०+अ०) (सर-परस्ती) संरक्षक।

सर-पेच - पुं० (फा०) पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

सर-पोश - पुं० (फा०) ढकना।

सर-फराज़ - वि० (फा०) (सर-फराजी) १ प्रतिष्ठित। माननीय। २ (वेश्या) जिसके साथ प्रथम समागम हो।

सरफा - पुं० दे० सर्फा।

सर-ब- मुहर - वि० (फा०) १ जिस पर मोहर लगी हो। बन्द। २ पूरा पूरा। कुल।

सर-बराह - पुं० (फा०) १ प्रबन्धकर्ता। कारिन्दा। २ मजदूरों आदि का सरदार।

सर-बराह-कार - पुं० (फा०) (सरबराह+कार) किसी कार्यका प्रबन्ध करनेवाला। कारिंदा।

सर-बराही - स्त्री० (फा०) १ सरबराहका कार्य या पद। २ प्रबन्ध। व्यवस्था। बन्दोबस्त।

सर-ब-सर - क्रि० वि० (फा०) एक सिरे से बिल्कुल। सरासर।

सर-बस्ता - वि० (फा० सर-बस्तः) छिपा हुआ। गुप्त।

सर-बाज - वि० (फा०) (सर-बुलन्दी) १ प्रतिष्ठित। माननीय। २ भाग्यवान्।

सर-मग्जन - पुं० स्त्री० (फा० सर+मग़ज़) १ कठिन परिश्रम। २ माथा-पच्ची। सिर-खपाई। ३ चिन्ता। फिक्र।

सरमद- वि० (अ०) १ मिला हुआ। सम्बद्ध। २ शाश्वत और अनन्त। ३ ईश्वरके प्रेम में मग्न। ४ मस्त। मत्त।

सर-मस्त - वि० (फा०) (सर-मस्तीं) मदोन्मत्त, मतवाला। मत।

सरमा - पुं० (फा०) जाड़ेके दिन। शीत-काल।

सरमाई - स्त्री० (फा०) जाड़े में पहनने के कपड़े। जड़ावरं। वि० जाड़ेकां। शीत-कालसम्बन्धी।

सरमाया - पुं० (फा० सरमायः) १ मूल-धन। पूँजी। २ धन-दौलत। सम्पत्ति। ३ कारण।

सरमायादार - पुं० (फा० सरमायःदार) पूँजीपति।

समरमायादारी - स्त्री० (फा० सरमायःदारी) पूँजीवाद।

सर-मुख - वि० (फा० सर+हिं० मुख या सं० सन्मुख) सामने।

सररिश्ता - पुं० (फा० सररिश्तः) विभाग, महकमा।

सरवत - स्त्री० (अ०) सम्पन्नता। वैभव।

सरवर - पुं० (फा०) नेता। नायक। स्त्री० बराबरी।

सरवरे-कायनात - पुं० (फा०+अ०) १ सारी सृष्टि का प्रधान या नेता। २ मुहम्मद साहब की एक उपाधि।

सर-शार - वि० (फा०) (संज्ञा सर-सब्जी) १ हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २ सफल-मनोरथ। ३ प्रसन्न और सन्तुष्ट।

सर-सर - स्त्री० (अ०) आँधी। तेज हवा।

सरसरी - क्रि० वि० (फा०) १ जमकर या अच्छी तरह नहीं। जल्दी में। २ स्थूल रूपमें। मोटे तौरपर।

सरसाम - पुं० (फा०) सन्निपात नामक रोग।

सरहंग - पुं० (फा०) १ सेना-नायक। २ पहलवान। मल्ल। ३ चोबदार। ४ कोतवाल। ५ सिपाही।

सरहतन् - क्रि० वि०० (अ०) स्पष्ट रूपसे। खुल्लम-खुल्ला।

सर-हद- स्त्री० (फा० सर+अ० हद) १ सीमा। २ किसी भूमिकी चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा।

सरहदी - वि० (फा०+अ०) सीमान्त।

सरा - पुं० (अ०) जमीन के नीचेकी मिट्टी। यौ०-तहत-उस्सरा = पाताल लोक। स्त्री० दे० सराय।

सराई- स्त्री० (फा०) गानेकी क्रिया। गान। यौगिक के अन्तमें। जैसे - मदह-सराई = गुण-गान।

सराचा - पुं० (फा० सराचः) १ बड़ा खेमा। २ खाँचा।

सरात - स्त्री० दे० सिरात।

सरा-परदा- पुं० (फा० सरापर्दः) १ शाही दरबार या खेमा। २ वह ऊंची कनात जो खेमे के चारों तरफ परदे के लिये लगाई जाती है। ३ खेमा। डेरा।

सरापा - क्रि० वि० (फा०) सिरसे पैर तक। आदि से अन्त तक। पुं० वह कविता जिसमें किसी के सिर से पैर तक के अंगों का वर्णन हो। नख-शिख।

सराफ - पुं० (अ० सर्राफ) १ सोने-चाँदी का व्यापारी। २ बदले के लिये रुपये-पैसा रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

सराफा - पुं० (अ० सर्राफः) १ सराफी काम। रुपये-पैसे या सोने-चाँदी के लेन-देन का काम। २ सराफों का बाजार कोठी बैंक।

सराफी- स्त्री० (अ० सर्राफी) १ चाँदी सोने या रुपये-पैसे के लेन देन का रोजगार। २ महाजनी लिपि गुंडा।

सराब - (अ०) १ मरीचिका। मृग-तृष्णा। २ धोखा। छल।

सरामत - स्त्री० (अ०) १ श्रेष्ठता। २ वीरता। ३ फुर्ती।

सराय - स्त्री० (अ०) १ घर। मकान। २ यात्रियों के ठहरनेका स्थान। मुसाफिर-खाना।

सरायत - स्त्री० (देश०). १ प्रवेश करना। घुसना। २ प्रभाव। असर।

सरासर - अव्य० (फा०) १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २ बिलकुल। ३ साक्षात्। प्रत्यक्ष।

सरासरी - स्त्री० (फा०) १ तेजी। फुरती। २ शीघ्रता। जल्दी। ३ मोटा अंदाज। क्रि० वि० १ जल्दीमें। हड़बड़ीमें। २ मोटे तौरपर।

सरासीमा - वि० (फा० सरासीमः) (सरासीमगी) १ चकित। भौंचक्का। २ परेशान। विकल।

सराहत - स्त्री० (अ०) १ व्याख्या। टीका। २ स्पष्टता। ३ विशुद्धता।

सरिश्त - (फा०) १ प्रकृति। स्वभाव। २ गुण। वि० मिला हुआ। मिश्रित।

सरिश्ता - पुं० (फा० सररिश्तः) १ रस्सी। डोरी। २ अदालत। कचहरी। ३ कार्यालयका विभाग। महकमा। दफ्तर। ४ नौकर-चाकर। अहलदार। ५ सम्बन्ध। ताल्लुक। ६ मेल-जोल।

सरिश्तेदार - पुं० (फा० सर-रिश्तःदार) १ किसी विभाग का कर्मचारी। २ अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमें की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी - स्त्री० (फा० सरिश्तःदारी) सरिश्तेदार का काम, पद या कार्यालय।

सरीअ - वि० (अ०) जल्दी या शीघ्रता करनेवाला। पुं० एक प्रकार का छन्द।

सरीअ-उत्तरासीर - वि० (अ०) जल्दी तासीर दिखानेवाला। शीघ्र प्रभाव दिखलानेवाला।

सरीर - पुं० (अ०) राज-सिंहासन। स्त्री० (अ०) वह शब्द जो लिखते समय कलम से या खोलते-बन्द करते समय किवाड़ोंसे निकलता है।

सरीर-आरा - वि० (अ०+फा०) राजसिंहासन की शोभा बढ़ानेवाला।

सरीह- वि० (अ०) प्रकट। स्पष्ट।

सरीह - वि० (अ०) स्पष्ट रूप से। साफ-साफ। जाहिरा।

सरूर - पुं० दे० सुरूर।

सरे-दस्त - क्रि० वि० (फा०) १ इस समय। २ तुरन्त।

सरे-नौ - क्रि० वि० (फा०) नये सिरे से। बिलकुल आरम्भ से।

सरे-भू - वि० (फा०) बालकी नोक के बराबर। जरा-सा। बहुत थोड़ा।

सरे-रिश्ता - पुं० दे० सरिश्ता।

सरेश - पुं० दे० सरेस।

सरे-शाम - स्त्री० (फा०) सन्ध्या। क्रि० वि० सन्ध्या होते ही।

सरेस - पुं० (फा० सरेश) एक लसदार वस्तु जो ऊंट भैंस आदि के चमड़े या मछली के पोटे को पकाकर निकालते है। सहरेस।

सरो - पुं० (फा०) एक सीधा पेड़ जो बग़ीचों में शोभाके लिये लगाया जाता है। बनझाऊ।

सरो-आज़ाद - पुं० (फा०) एक प्रकार का सरो जिसकी शाखाएँ बिलकुल सीधी होती हैं और जो कभी फलता नहीं।

सरो-कद - वि० (फा०+अ०) जिसका कद या आकार सरोके समान सुन्दर हो (प्रायः प्रेमिका के लिये प्रयुक्त)।

सरो-कामत - वि० दे० सरो-कद।

सरोकार - पुं० (फा०) १ प्रयोजन। २ लगाव।

सरो-चिरागाँ - पुं० (फा०) शीशे का एक प्रकार का झाड़ जिसमें बहुत-सी बत्तियाँ जलती हैं।

सरोद - पुं० (फा० सुरोद मि० सं० त्वरोदय) १ गीत। राग। २ कथन। ३ गाना-बजाना। ४ एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे रहते हैं।

सरोश - पुं० दे० सरेश।

सरो-सामान - पुं० (फा० सर व सामान) आवश्यक सामग्री। जरूरी चीज़े या असबाब।

सर्द - वि० (फा०) १ ठंढा। २ सुस्त। काहिल। ढीला। ३ मंद। धीमा। ४ नपुंसक। नामर्द।

सर्द-मिज़ाज - वि० (फा०) (सर्द-मिजाजी) १ जिसका मन मुरझाया हुआ हो। २ कठोर-हृदय।

सर्द-मेहर - वि० (फा०) (सर्द-मेहरी) निर्दय। कठोर-हृदय।

सर्दाबा - स्त्री० (फा०) १ सर्द होने का भाव। ठंढक। शीतलता। २ जाड़ा। शीत। ३ जुकाम। नजला।

सर्फ - पुं० (अ०) १ व्यय। खर्च। २ वह शास्त्र जिसमें वाक्योंकी शुद्धता का विवेचन रहता है। ३ व्याकरण। ४ व्यर्थ का और अधिक व्यय। अपव्यय। ५ व्यय। खर्च।

सर्फा - पुं० (अ० सर्फः) १ वृद्धि। अधिकता। २ मितव्यय। कम-खर्ची। ३ खर्च। व्यय।

सर्राफ - पुं० दे० सराफ।

सलतनत - स्त्री० (अ० सल्तनत) १ राज्य। बादशाहत। २ साम्राज्य। ३ इंतजाम। प्रबन्ध। ४ सुभीता। आराम।

सलफ - वि० (अ०) (बहु० असलाफ) गुजरा हुआ। बीता हुआ। पुं० पुराने जमाने के लोग।

सलम - स्त्री० (अ०) १ गल्ले आदि के तैयार होने से पहले ही उसका मूल्य दे देना जिसमें तैयार होनेपर उसका मिलना निश्चित हो जाय। २ शान्ति। ३ सलाम।

सलावात - स्त्री० (अ०) १ शुभकामनाएँ। शुभाकांक्षाएँ। २ सलाम। ३ दुर्वचन। गालियाँ।

सलसल-बोल - पुं० (अ०) मधुमेह नामक रोग।

सला - स्त्री० (अ०) निमंत्रण। आवाहन।

सलातीन - पुं० (अ०) सुलतान का बहु०।

सलावत - स्त्री० (अ०) १ दृढ़ता। मजबूती। २ आतंक।

सलाम - पुं० (अ०) प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब। मुहा०- दूर से सलाम करना = किसी बुरी वस्तुके पास न जाना। सलाम लेना = सलाम का जवाब देना। सलाम देना = सलाम करना।

सलाम-अलैकुम - स्त्री० (अ०) सलाम। बन्दगी।

सलामत - वि० (अ०) १ सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित। २ जीवित और स्वस्थ। तन्दुरुस्त और जिन्दा। ३ कायम। बर-करार। क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियतसे।

सलामत- रबी -स्त्री० (अ०+फा०) १ मध्यम मार्ग से चलना। २ कम खर्च करना। मितव्यय।

सलामन-रौ- वि (अ०+फा०) १ मध्यम मार्गपर चलनेवाला। २ कम खर्च करनेवाला। मितव्ययी।

सलमती - स्त्री० (अ० सलामत) १ रक्षा। बचाव। २ कुशल-क्षेम। ३ अस्तित्व। अवस्थिति। ४ एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

सलामी - स्त्री० (अ० सलाम+ई प्रत्य०) १ प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। २ सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली। ३ तोपों या बन्दूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है। मुहा० सलामी उतारना = किसी के स्वागतार्थ बन्दूकों या तोपों की बाढ़ दागना।

सलासत - स्त्री० (अ०) १ सलीस होने का भाव। २ समतल होने का भाव। ३ कोमलता। नरमी। ४ सुगमता। सहूलियत।

सलासिल - स्त्री० (अ०) १ सिलसिला का बहु०। २ बेड़ियाँ। ३ शृंखलाएँ।

सलासी - वि० (अ०) तिकोन।

सलाह - स्त्री० (अ०) १ नेकी। भलाई। अच्छापन। २ धर्म और नीतिपूर्ण आचरण। ३ सम्मति। परामर्श। राय। मशवरा। ४ विचार। मन्सूबा।

सलाहकार - पुं० (अ०+फा०) १ धर्म और नीतिपूर्ण आचरण करनेवाला। २ परामर्श देनेवाला।

सलाहियत - स्त्री० (अ०) १ भलाई। अच्छापन। २ समाचार। ३ समझदारी। ४ मुलामियत।

सलीका - पुं० (अ० सलीकः) १ काम करने का अच्छा ढंग। शऊर। तमीज। २ हुनर। लियाक़त। ३ चाल-चलन। बरताव। ४ तहज़ीब। सभ्यता।

सलीका- मन्द - वि० (अ० सलीक़+फा० मंद प्रत्य०) १ शऊरदार। तमीजदार। २ हुनरमंद। ३ सभ्य।

सलीब - स्त्री० (अ०) १ सूली। २ उस सूली का चिन्ह जिसपर चढाकर ईसा के प्राण लिए गये थे।

सलीम - वि० (अ०) १ ठीक। दुरुस्त। २ साफ दिलका। शुद्ध-हृदय। ३ तन्दुरुस्त। ४ गम्भीर शांत। ५ सहनशील।

सलीम-बत्तवा - वि० (अ० सलीम-उत्तबड़ा) १ कोमल-हृदय। २ धीर और गम्भीर। ३ बुद्धिमान।

सलीस - वि० (अ०) १ सहज। सुगम। २ मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक - पुं० (अ० सुलूक) १ सीधा मार्ग। २ बरताव। व्यवहार। आचरण। ३ मिलाम। मेल। ४ भलाई। नेकी। उपकार।

सल्ख - स्त्री० (अ०) १ खाल खींचने की क्रिया। २ शुक्ल पक्षकी द्वितीया।

सल्तनत - स्त्री० (अ०) १ राज्य, साम्राज्य। २ प्रबंध।

सल्ब - वि० (अ०) नष्ट। बरबाद।

सल्ले-अला - स्त्री० (अ०) एक दुरूद या मंत्रका आरंभिक शब्द, जिसका प्रयोग किसी

उत्तम वस्तुको देखकर किया जाता है और जियका अर्थ है – हम अपने पैग़म्बर साहब की प्रशंसा करते हैं। क्योंकि संसार की सारी उत्तमताएँ उन्हीं की दया से प्राप्त होती हैं।

सवाद – पुं० (अ०) १ कालिमा। स्याही। २ नगर के आसपास के स्थान। ३ समझदारी। ज़हन।

सवानह – पुं० (अ०) सानहा का बहु०। घटनाएँ।

सवानह – पुं० (अ०) जीवन-चरित्र। जीवनी।

सवानह- निगार – वि० (अ०+फा०) (सवानह-निगारा) घटनाएँ या विवरण आदि लिखकर किसी बड़े के पास भेजनेवाला। संवाददाता।

सवाब – पुं० (अ०) १ सत्यता। उत्तमता। २ शुभ कृत्यका फल जो स्वर्ग में मिलेगा। पुण्य। ३ भलाई। वि० ठीक। दुरुस्त। उत्तम।

सवाब-अन्देश – वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सवाब-अन्देशी) १ ठीक और वाजिब बात सोचनेवाला। २ परोपकारी।

सवाबिक़ – पुं० (अ०) उपसर्ग जो किसी शब्द के पहले लगता है। जैसे – सपूत में से।

सवाबित- पुं० बहु० (अ०) आकाश के वे पिंड जो सदा एक ही स्थान पर स्थित रहते हैं। स्थिर तारे।

सवार – पुं० (फा०) १ वह जो घोड़े पर चढ़ा हो। अश्वारोही। २ अश्वारोही सैनिक। ३ वह जो किसी चीज पर चढ़ा हो। वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारी – स्त्री० (फा०) १ किसी चीज पर विशेषतः चलने के लिए चढ़ने की क्रिया। २ सवार होने की वस्तु। चढ़ने की चीज। ३ वह व्यक्ति जो सवार हो। ४ जलूस।

सवाल – पुं० (अ० सुआल) १ पूछने की क्रिया। २ वह जो कुछ पूछा जाय। प्रश्न। ३ दरखास्त। माँग। ४ निवेदन। प्रार्थना। ५ गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिए दिया जाता है।

सवालात – पुं० (अ० सुआलात) सवाल का बहु०।

सवाली – वि० (अ०) माँगनेवाला। भिक्षुक।

सहन – पुं० (अ० सहन) १ मकान के बीच या सामने का मैदान। आँगन। २ एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

सहनक – स्त्री० (अ० सहनक) १ छोटा सहन। २ छोटी रकाबी। ३ मुहम्मद साहब की कन्या बीबी फातिमा के नाम की नियाज़ या फातिहा जिसमें सच्चरित्रा सुहागिनों को भोजन कराया जाता है।

सहनची – स्त्री० (अ० सहन से फा०) दालाना के इधर-उधर वाली छोटी कोठरी।

सहन-दार – वि० (अ०+फा०) (मकान) जिसमें सहन या आँगन हो।

सहबा – स्त्री० (अ०) एक प्रकार की अंगूरी शराब।

सहम – पुं० (फा० सह्म) भय। डर। ख़ौफ। पुं० (अ०) १ तीर। २ भाग। अंश।

सहर – स्त्री० (अ० सह्र (वि० सहरी) १ प्रातःकाल। २ तड़का।

सहर-खेज़ – वि० (अ० सह्र+फा०) तड़के उठकर लोगों की चीजें उठा ले जानेवाला। चोर। उचक्का।

सहर-गही – स्त्री० (अ० सह्र+फा० गह) वह भोजन जो निर्जल व्रत करने के दिन बहुत तड़के किया जाता है। सहरी।

सहरा – पुं० (अ० सह्रा) १ खाली मैदान। २ जंगल। वन।

सहराई – वि० (अ० सहाई) सबेरेका। स्त्री० दे० सहर गही।

सहल – वि० (अ० सह्ल) सहज। आसान।

सहल-अंगार – वि० (अ० सह्ल+फा०) (सह्ल-अंगारी) १ आलसी। २ आराम-तलब।

सहाब – पुं० (अ०) मेघ। बादल।

सहाबत – स्त्री० (अ०) मित्रता। मैत्री।

सहाबा – पुं० (अ०सहाबः) १ मित्र।

दोस्त। २ मुहम्मद साहब के घनिष्ठ मित्र। यौ० - मदहे-सहाबा = दे० मदह।

सहाबी - पुं० (अ०) मुहम्मद साहब के घनिष्ठ मित्र और उनके वंशज।

सहाम - पुं० (अ०) १ भाग। खंड। टुकड़ा। २ तीर।

सहायक - पुं० (अ० सहीफः का बहु०) ग्रन्थ आदि या उनके पृष्ठ।

सहारा - पुं० (अ० सहरा का बहु०) बड़े-बड़े जंगल।

सही - वि० (अ० सहीह) १ सत्य। सच। २ प्रामाणिक। यथार्थ। ३ शुद्ध। ठीक। मुहा० - सही भरना = मान लेना। ४ हस्ताक्षर। दस्तखत। वि० (फा०) सीधा।

सहीफा - पुं० (अ० सहीफः) १ पुस्तक। २ पुष्ठ। पेज।

सही-सलामत - वि० (अ०) १ आरोग्य। भला चंगा। तन्दुरुस्त। २ जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

सही-सालिम- वि० (अ०) ठीक और पूरा। ज्यों का त्यों।

सहूलत - वि० (अ०) १ आसानी। २ अदब-कायदा।

सहूलियत - स्त्री० दे० सहूलत।

सहो- पुं० (अ० सह) भूल-चूक। गलती।

सहो-कलम - पुं० (अ० सह-कलम) भूल से और का और लिखा जाना।

सहो-कातिब - पुं० (अ० सह्व-कातिब) लेखक की वह भूल जो प्रतिलिपि करनेवाले से हो जाय।

सहूव - पुं० दे० सहो।

सहून क्रि० वि० (अ०) भूलसे।

साआत - स्त्री० (अ० साअत का बहु०) मुहूर्त।

साइक़ा - स्त्री० (अ० साइकः) विद्युत्। बिजली।

साइत - स्त्री० (अ० साअत) १ एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २ पल। लहमा। ३ मुहूर्त। शुभ लग्न।

साइद - स्त्री० पुं० (अ०) १ बाहु। बाँह। २ कलाई।

साइब - वि० (अ०) १ पहुँचनेवाला। २ दुरुस्त। ठीक।

साइल - पुं० (अ०) प्रार्थी।

साइला- स्त्री० (अ०,साइलः) प्रार्थिनी।

साई - पुं० (अ०) प्रयत्न करनेवाला। उद्योग करनेवाला। स्त्री० (अ० साअत) वह धन जो पेशकारोंको, किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

साईस - पुं० (फा० सईस) घोड़ोंकी खबरदारी करनेवाला नौकर।

साक़ - स्त्री० (अ०) घुटने के नीचे का भाग। पिंडली।

साक़न - स्त्री० दे० साकिन।

साकित - वि० (अ०) १ चुप। मौन। २ चुपचाप एक स्थान पर ठहरा हुआ। गति-रहित।

साक़ित - वि० (अ०) १ गिरने या नष्ट होनेवाला। २ गिरा हुआ। पतित। ३ त्यक्त। निरर्थक।

साकिन - वि० (अ०) १ एक स्थान पर चुपचाप ठहरा हुआ। २ रहनेवाला। निवासी। ३ (अक्षर) जिसके आगे स्वर न हो। हलन्त।

साक़िन - स्त्री० (अ० साकी) वह दुश्चरित्रा स्त्री जो लोगों को भंग और हुक्का आदि पिलाकर जीविका चलाती हो।

साकिनान - पुं० (अ० साकिन् का बहु०) निवासीगण।

साकिब - वि० (अ०) प्रकाशमान्। चमकता हुआ।

साक़ी - पुं० (अ०) १ वह जो दूसरों को शराब पिलाता हो।२ वह जो हुक्का पिलाता हो। ३ प्रेमिका या प्रिय के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द।

साकूल - पुं० (तु० शाकूल) दीवार की सीध नापने का साहुल नामक यंत्र।

साख्त - स्त्री० (फा०) १ गढ़ने या बनाने की क्रिया या भाव। बनावट। २ मन-गढ़न्त बात।

साख्ता - वि० (फा० साख्तः) १ बनाया या

गढ़ा हुआ। २ किया हुआ। यौ०- साख्ता - परदाख्ता= किया धरा।
सागर - पुं० (अ०) १ प्याला। कटोरा। २ शराब पीनेका कटोरा या पात्र। मुहा० - सागर चलना = मद्य-पान होना।
सागरी- स्त्री० (अ०) गुदा।
साचक - स्त्री० (तु०) मुसलमानों में विवाह की एक रस्म जिसमें विवाह के एक दिन पहले वधू के यहाँ मेंहदी, फूल और सुगंधित द्रव्य भेजे जाते हैं।
साचिक- स्त्री० दे० साचक़।
साज़ - पुं० (फा० मि० सं० सज्जा) १ सजावट का काम। २ ठाठ-बाट या सजावटका सामान। उपकरण। सामग्री। जैसे - घोड़े का साज़। ३ वाद्य। बाजा। ४ लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। ५ मेल-जोल। वि० मरम्मत करने या तैयार करनेवाला। बनानेवाला। (यौगिक शब्दों के अंत में। जैसे - घड़ीसाज़, जिल्दसाज।)
साज़गार - वि० (फा०) (सं० साजगारी) १ शुभ। २ ठीक।
साज-बाज - पुं० (फा० साज+बाज) (अनु०) १ तैयारी। २ मेल-जोल
साज़-सामान - पुं० (फा० साजोसामान) १ सामग्री। अस्सबाब। २ ठाट-बाट।
साजिद - वि० (अ०) सिजदा या प्रणाम करनेवाला।
साजिन्दा - पुं० (फा० साजिन्दः) १ साज या बाजा बजानेवाला। सपरदाई। २ समाजी।
साजिन्दगी - स्त्री (फा०) साज बजाने का काम।
साजिश - स्त्री० (फा०) १ मेल-मिलाप। २ किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायक होना। षड्यंत्र।
साजिशी - वि० (फा०) षड्यंत्री, कुचक्री।
साद - पुं० स्त्री० (अ०) १ अरबी लिपिका चौदहवाँ और उर्दूका उन्नीसवाँ अक्षर। २ ठीक या स्वीकृत होने का चिन्ह। ३ आँख। नेत्र।
सादगी - स्त्री० (फा०) १ सादापन। सरलता। २ निष्कपटता।
सादा - वि० (फा० सादः) १ जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। २ जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। ३ बिना मिलावटका खालिस। ४ जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। ५ जो कुछ छल-कपट न जानता हो। सरल-हृदय। सीधा। ६ मूर्ख।
सादा-कार - वि० (फा०+अ०) (संज्ञा सादाकारी) हलका, सादा और बढ़िया काम बनानेवाला।
सादात - स्त्री० (अ०) १ सैयद का बहु०। २ सैयद जाति जिसकी उत्पत्ति हज़रत अली और बीबी फातिमा से हुई थी।
सादा-दिल - वि० (फा०) (सादा-दिली) शुद्ध हृदयका।
सादापन - पुं० (फा०+हिं) सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।
सादा-मिजाज - वि० (फा०) (सदा-मिजाजी) शुद्ध और सादे स्वभाववाला।
सादा-रू - वि० (फा०) जिसके चेहरे पर दाढ़ी मूछें न हों।
सादा-लौह - वि० (फा०+अ०) (सादा-लौही) १ सीधा-सादा। भाला। २ मूर्ख।
सादिक़ - वि० (अ०) (भाव० सादिकी) १ सच्चा। २ सत्यनिष्ठ। ३ उपयुक्त। ठीक।
सादिक-उल-एतकाद - वि० (अ०) धर्म आदिपर सच्चा और पूरा विश्वास रखनेवाला।
सादिर - वि० (अ०) १ निकलनेवाला। २ जारी होनेवाला। जैसं - हुक्म सादिर होना।
सान - वि० (फा०) समान। तुल्य। पु० धुरी पर धार लगाने का पत्थर।
साना - पुं० दे० सानिअ।
सानिअ - पुं० (अ०) १ बनानेवाला। रचयिता। २ कारीगर। यौ० - सानिअ कुदरत या सानिअ मुतलक़ = सृष्टिकर्त्ता। ईश्वर।
सानिया - पुं० (अ० सानियः) पल। क्षण।
सानिहा - पुं० (अ० सानिहः) दुर्घटना।

सानी - वि० (अ०) १ दूसरा। २ जोड़का। मुकाबलेका। यौ०- अपीले सानी = दूसरी अपील।

साफ - वि० (अ०) १ जिसमें किसी प्रकार का मल आदि न हो। स्वच्छ। निर्मल। २ शुद्ध। खालिस। ३ निर्दोष। बे-एब। ४ स्पष्ट। ५ उज्जवल। ६ जिसमें कोई बखेड़ा या झझट न हो। ७ स्वच्छ। चमकीला। ८ जिसमें छल-कपट न हो। निष्कपट। ६ समतल। हमवार। १० सादा। कोरा। ११ जिसमें से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। १२ जिसमें कुछ तत्व न रह गया हो। मुहा० - साफ करना = १ मार डालना। हत्या करना।२ नष्ट करना। बरबाद करना। ३ लेन-देलन आदिका निपटना। चुकती। क्रि० वि० १ बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद आदि के। २ बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाये हुए। ३ इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। बिलकुल।

साफा - पुं० (अ० साफः) १ पगड़ी। मुरेठा। मुँड़ासा। २ नित्य पहनने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ करना। कपड़े धोना।

साफी - स्त्री० (अ०) १ रूमाल। दस्ती। २ वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। ३ भाँग छानने का कपड़ा। छनना।

साविक - वि० (अ०) पूर्वका। पहले का। यौ० - साबिक़-दस्तूर = जैसा पहले था वैसा ही।

साविका - पुं० (अ० साबिकः) १ मुलाकात। भेंट। २ संबंध। वि० (अ०) पहले का। साबिक़।

सावित - वि० (अ०) १ साबूत। पूरा। कुल। २ दुरुस्त। ठीक। ३ दृढ़। मजबूत। जैसे - सावित कदम। ४ जिसका सबूत मिल चुका हो। प्रमाणिक। ५ एक ही स्थान पर रहनेवाला। स्थिर।

साविर - वि० (अ०) सब्र करनेवाला। संतोषी। धीरजवाला। सहनशील।

साबुन - पुं० (अ० साबून) रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किये जाते हैं।

साबून - पुं० दे० साबुन।

सामा - पुं० (अ० सामिड़) सुननेवाला। श्रोता।

सामान - पुं० (फा०) १ किसी कार्य के साधन की आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २ माल। असबाब। ३ बंदोबस्त।

सामिरी - पुं० (अ०) सामरा नगरका एक प्रसिद्ध जादूगर।

सामी - वि० (फा०) १ ऊंचा। २ श्रेष्ठ।

सायवान - पुं० (फा० साय:बान) मकान के आगे की वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।

सायर - वि० (अ० साइर) १ पूरा। सब। २ बाकी बचा हुआ। पुं० १ वह जो खूब सैर करता हो। २ व्यर्थ मारा मारा फिरनेवाला। आवारा। ३ बाहर से आनेवाले माल का नगर में लिया जानेवाला महसूल। चुंगी।

सायल - पुं० (अ० साइल) १ सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २ माँगनेवाला। ३ भिखारी। फकीर। ४ प्रार्थना करनेवाला। उम्मीदवार। आकांक्षी।

साया - पुं० (फा० साय: मि० सं० छाया) १ छाया। मुहा० - साये में रहना = शरण में आना। २ परछाई। ३ जिन, भूत, प्रेत परी आदि। असर। प्रभाव। पुं० (अ० सेमीज) घाँघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।

सायादार - वि० (फा०) जिसकी छायादार। जैसे - सायादार पेड़।

सार - पुं० (फा०) ऊंट। प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर वाला, समान, पूर्ण और सथान आदि का अर्थ देता है। जैसे - शर्मसार, खाकसार, शाखसार और कोहासार।

सार-बान - पुं० (फा०) १ ऊंट हाँकनेवाला। २ ऊंट पर सवारी करने वाला।

सारिक- पुं० (अ०) चोर। तस्कर।

सारिक - पुं० (अ०) वर्ष। बरस। यौ० -

साल-व-साल = हर साल।

साल-खुर्दा - वि० (फा० सालखर्दः) १ बहुत दिनोंका। २ बुड्ढा।

साल-गिरह - स्त्री० (फा०) जन्म-दिवस। बरस-गाँठ।

साल-तमाम - पुं० (फा०) वर्ष का अन्तिम भाग। वर्ष की समाप्ति।

सालनामा- पुं० (फा० सालनामः) वार्षिक अंक।

सालब- मिसरी - स्त्री० (अ० सअलब मिस्री) एक प्रकार के पौधे का कन्द जो पौष्टिक होता और दवा के काम में आता है। सुधा-मूली। वीरकन्दा।

सालम-मिसरी - स्त्री दे० सालब-मिस्री।

सालहा-साल - क्रि० वि (फा०) बहुत वर्षोतक। बहुत दिनों तक।

साला - वि० (फा० सालः) साल या वर्ष का वर्षीय। जैसे - दो-साला = दो वर्षका।

सालाना - विऋ (फा० सालानः) साल का। वार्षिक।

सालार - पुं० (फा०) १ मार्ग- दर्शक। प्रधान नेता। २ सेनापति।

सालार-जंग - पुं० (फा०) १ सेनापति। २ स्त्री का भाई। साला (परिहास)।

सालिक - पुं० (अ०) १ यात्री। बटोही। २ धर्म और नीतिपूर्वक आचरण करनेवाला।

सालिम - वि० (अ०) १ सम्पूर्ण। पूरा। सब। २ नीरोग। तन्दुरुस्त।

सालिमन - क्रि० वि० (अ०) पूरी तरह, सुरक्षापूर्वक।

सालियाना - वि० दे० सालाना।

सालिस - वि० (अ०) (भाव० सालिसी) तीसरा। तृतीय। संज्ञा पुं० दो पक्षों में समझौता आदि कराने- वाला तीसरा व्यक्ति। पंच।

सालिस-नामा - पुं० (अ०+फा०) पंच-नामा।

सालिसी - स्त्री० (अ०) दो पक्षोंमें समझौता कराने का काम। पंचायत।

साले-कबीसा - पुं० (फा० साले-कबीसः) वह वर्ष जिसमें अधिक मास पड़े। लौदका साल।

साले-पैवस्ता - पुं० दे० साले-हाल।

साले-रवाँ- पुं० दे० साले-हाल।

सालेह - वि० (अ० सालिह) (स्त्री० सालेहा) १ नेक। भला। अच्छा। २ सदाचारी। ३ भाग्यवान।

साले-हाल - पुं० (फा०+अ०) प्रचलित वर्ष।

साहब - वि० (अ० साहिब) (बहु० साहबान) १ वाला। रखनेवाला। जैसे - साहबे-इकबाल, साहबे-इकबाल, साहबे-जमाल, साहबे-हैसियत। २ स्वामी। मालिक। जैसे - साहबे-तख्त। पुं० (अ० साहिब) (स्त्री० साहिबा) १ मित्र। दोस्त। २ मालिक। स्वामी। ३ परमेश्वर। ४ एक सम्मानसूचक शब्द। महाशय। ५ गोरी जातिका कोई व्यक्ति।

साहब-जादा - पुं० (अ० साहिब+फा० जादः) (स्त्री० साहब- जादी) १ भले आदमी का लड़का। २ पुत्र। बेटा।

साहब-सलामत - स्त्रीऋ (अ०) परस्पर अभिवादन। बंदगी।

साहबा - स्त्री० (अ० साहिबः) महोदया।

साहबान - पुं० (अ०) साहब का फा० बहु०।

साहबाना - वि० (अ० साहिबी) साहबों का सा। साहबों की तरह का।

साहबी - वि० (अ० साहिबी) साहब का। स्त्री० १ साहब होने का भाव। २ प्रभुता। ३ बड़ाई। बड़प्पन।

साहबे-आलम - पुं० (अ०) दिल्ली के मुग़ल शाहजादों की उपाधि।

साहबे-किरान - पुं० (अ०) १ वह व्यक्ति जिसके जन्मके समय बृहस्पति और शुक्र एक ही राशि में हों। कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा बादशाह होता है। २ तैमूरलंगका और शाहजहाँ का एक नाम।

साहबे-सा - पुं० (अ०+फा०) घर का मालिक। गृहस्वामी।

साहिब - पुं० दे० साहेब।

साहिबा - स्त्री (अ०) महोदया।

साहिबी - पुं० (अ० साहिब) १ साहब का भाव। २ स्वामित्व।

साहिर - पुं० (अ०) (स्त्री० साहिरा) (भाव० साहिरी) जादूगर।

साहिल - पुं० (अ०) समुद्र या नदी आदि का तट। किनारा।

सिंजाफ - पुं० (फा० सिंजाफ) १ कपड़ों पर का हाशिया। गोट। किनारा। २ वह घोड़ा जो आधा सब्जा और आधा सफेद हो।

सिंजाब - पुं० (फा०) एक प्रकार का पशु जिसकी खाल की पोस्तीन बनती है।

सिकंजबीन - स्त्री० (फा०) सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकन्दरी - वि० (फा०) सिकन्दर का।

सिक्रा पुं० (अ० सिकः) विश्वसनीय व्यक्ति। मातबर आदमी।

सिक्कए-कल्ब - पुं० (अ०) जाली या नकली सिक्का।

सिक्का - पुं० (अ० सिक्कः) १ मुहर। छाप। ठप्पा। २ रुपये- पैसे आदि पर की राजकीय छाप। मुद्रित। चिन्ह। ३ टकसाल में ढला हुआ धातुका वह टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा आदि। मुद्रा। मुहा०- सिक्का बैठना या रोब जमना = अधिकार स्थापित होना। २ आतंक जमना। ३ रोब जमना। ४ पदक। मुहरपर अंक बनाने का ठप्पा।

सिक्का-रायज-उल्-वक्त - पुं० (अ०) वह सिक्का जो इस समय प्रचलित हो। प्रचलित सिक्का।

सिक्ल - पुं० (अ०) १ भार। बोझ। २ गरिष्ठता।

सिग़र - पुं० (अ०) छोटाई। छोटापन। यौ० - सिग़र-सिन = छोटी उम्रका। ना-बालिग़।

सिजदा - पुं० (अ० सिज्दः) प्रणाम। दंडवत। नमस्कार। यौ० - सिजदए शुक्र - ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए उसे नमस्कार करना।

सिजदा-गाह - स्त्री० (अ०+फा०) १ सिजदा या दण्डवत करने का स्थान। लकड़ी या मिट्टी आदि की वह गोल टिकिया जिसपर शीया लोग नमाज पढ़ते समय सिजदा करते हैं।

सितम - पुं० (फा०) १ गजब। अनर्थ। २ जुल्म। अत्याचार।

सितमगर - वि० (फा०) अत्याचारी। पु० (फा०) जालिम। अन्यायी।

सितम-जदा - वि० (फा० सितमजदः) जिस पर सितम हुआ हो। अत्याचार-पीड़ित।

सितम-जरीफ - वि० (फा०+अ०) (सितम-जरीफी) हँसी- हँसी में ही भारी अत्याचार करनेवाला।

सितमगर- वि० दे० सितम- गर।

सितम-शिआर - वि० (फा०+अ०) बराबर सितम करनेवाला। अत्याचारी।

सितम-रसीदा - दे० सितम-जदा।

सितार - पुं० (फा० सेह+तार सं० सप्त+तार) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो तारों का उंगली से झनकारने से बजता है।

सितारा - पुं० (फा० सितारः) १ तारा। नक्षत्र। २ भाग्य। प्रारब्ध। नसीब। मुहा० - सितारा चमकना था बलन्द होना = भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना। ३ चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिए चीजों पर लगाई जाती है। चमकी। पुं० दे० सितार।

सितारा-शनास - पुं० (फा०) तारे पहचाननेवाला। ज्योतिषी।

सितारे-हिन्द - पुं० (फा० सितारए-हिन्द) एक उपाधि जो सरकार की ओर से दी जाती है।

सिद्क - पुं० (अ०) सत्यता।

सिद्दीक - वि० (अ०) बहुत ही सच्चा। परम सत्यनिष्ठ।

सिन - पुं० (अ०) उमर। अवस्था। वयस।

सिन-बलूग़त - पुं० (अ०) १ वयस्क होनेकी अवस्था। बालिग़ होने की उम्र। २ यौवन। जवानी।

सिन-रसीदा - वि० (अ०+फा०) बुड्ढा। वृद्ध। बुजुर्ग।

सिन-शऊर - दे० सिन-बुलगत।
सिनान - स्त्री० (फा०) तीर या बरछी आदि की नोक।
सिन्दान - पुं० (फा०) निहाई। धन।
सिपन्द - पुं० दे० अस्पन्द।
सिपर - स्त्री० (फा०) १ ढाल। २ रक्षा करनेवाली वस्तु। आड़।
सिपस्ताँ - पुं० (फा०) लिसोड़ा या लसूड़ा नामक फल।
सिपह - स्त्री० (फा० सिपाह का अल्पा० रूप) सेना।
सिपह-गरी - स्त्री० (फा०) सैनिक का काम।
सिपहर - पुं० (फा०) १ गोला। गोल। २ आकाश।
सिपह-सालार - पुं० (फा०) सेनापति।
सिपारा - पुं० (फा० सीपारः) कुरान के तीस विभागों या अध्यायों में से कोई एक विभाग या अध्याय।
सिपारी - स्त्री० (फा०) सुपारी।
सिपास- स्त्री० (फा०) १ कृतज्ञता। धन्यवाद। २ प्रशंसा।
सिपास - गुजारी स्त्री० (फा०) १ कृतज्ञता प्रकट करना। धन्यवाद देना।
सिपास-नामा - पुं० (फा०) अभिनन्दन-पत्र।
सिपाह - स्त्री० (फा०) सेना।
सिपाह-गरी - स्त्री० (फा०) सिपाही का काम या पेशा।
सिपाहियाना - वि० (फा० सिपाहियानः) सिपाहियों की तरह का।
सिपाही - पुं० (फा०) १ सैनिक। शूर। २ कान्स्टेबिल। तिलंगा।
सिपुर्द - स्त्री० दे० सपुर्द।
सिफत - स्त्री० (अ०) (बहु० सिफात) १ विशेषता। गुण। २ लक्षण। ३ स्वभाव।
सिफर - पुं० (अ०) १ खाली होने का भाव। अवकाश। २ शून्य। सुन्ना। बिन्दी।
सिफलगी- स्त्री० (अ० सिफलः) सिफला होने का भाव। पाजीपन। कमीनापन।
सिफला - वि० (अ० सिफलः) नीच। कमीना। पाजी।
सिफली - वि० (अ०) घटिया। छोटे दरजे का।
सिफात - स्त्री० (अ०) सिफत या बहु०।
सिफाती- वि० (फा०) सिफत या गुण संबंधी।
सिफारत - स्त्री० (फा०) सफीर या दूत का पद, भाव या कार्य। २ वे राजदूत आदि जो सन्धि अथवा किसी विपय को निर्णय करने के लिए एक राज्य की ओर से दूसरे राज्य में भेजे जायँ।
सिफारिश - स्त्री० (फा० सुफारिश) किसी के दोष क्षमा करने के लिये या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना।
सिफारिशी - वि० (फा०) १ जिसमें सिफारिश हो। २ जिसकी सिफारिश की गई हो।
सिफाह - स्त्री० (अ०) व्यभिचार।
सिफ्ल - वि० (फा०) मोटा। गफ।
सिब्त - पुं० (अ०) वंशज। सन्तान। औलाद।
सिम्त - स्त्री० दे० सम्त।
सियह - वि० (फा०) १ सियाह का संक्षिप्त रूप। काला। कृष्ण। २ अशुभ। बुरा। खराब। (सियह) के यौगिक शब्दों के लिये दे० सियाह के यौगिक।
सियाक - पुं० (अ०) १ गणित। हिसाब। २ लिखने या बोलने आदि का ढंग।
सियादत - स्त्री (अ०) १ नेतृत्व। सरदारी। २ शासन। हुकूमत। ३ बीबी फातिमा के वंशज। सैयदों की जाति।
सियासत - स्त्री० (अ०) १ देश की रक्षा और शासन। २ शासन। प्रबन्ध। ३ धमकी आदि देकर सचेत करना। तंबीह। ४ आतंक। ५ राजनीति।
सियासतदाँ - पुं० (अ०+फा०) (भाव० सियासतदानी) राजनीतिज्ञ।
सियाह - वि० (फा०) १ काला। कृष्ण। २ अशुभ।
सियाह-कार - वि० (फा०) (सियाह-कारी) पाप या दुष्कर्म करनेवाला।

सियाह-गोश - पुं० (फा०) चीते की तरह का एक छोटा जानवर जिसकी सहायता से शिकार करते हैं। बन-विलाव।
सियाह-ज़बाँ - पुं० (फा०) वह जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बात शीघ्र फलीभूत हो। कलजीभा।
सियाहत- स्त्री० (अ०) यामा।
सियाहत-ताब - पुं० (फा०) सफेदी या चूने में पीसकर मिलाया हुआ कोयला जो दीवारोंपर से धूएँ का रंग दूर करने के लिये पोता जाता है।
सियाहदिल - वि० (फा०) पापी।
सियाह-पोश - वि० (फा०) जो सोग या मातम के काले या नीले कपड़े पहने हो।
सियाह-बख्त - वि० (फा०) (सियाह-बख्ती) अभागा। कम्बख्त।
सियाहबख्ती - स्त्री० (फा०) अभागापन। दुर्भाग्य।
सियाहफाम - वि० (फा०) साँवला। कृष्णवर्ण।
सियाह-बातिन - वि० (फा०+अ०) जिसका दिल साफ न हो। कलुषित-हृदय।
सियाह-भस्त - वि० (फा०) (सियाह-मस्ती) बहुत अधिक मत। बहुत मतवाला। नशे में चूर।
सियाहा - पुं० (फा० सियाहः) १ आय-व्यय की बही। रोजनामचा। २ सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें ज़मींदारों से प्राप्त माल गुज़ारी लिखी जाती है।
सियाही - स्त्री० (फा०) १ कालिमा। कालिख। २ लिखनेकी रोशनाई। मसि। स्याही। ३ अन्धकार। अंधेरा। ४ काजल। ५ कलंक। बदनामी।
सिरकंगवीन - स्त्री० (फा०) सिरके का बनाया हुआ शरबत। सिकंजबीन।
हवालात- स्त्री० (अ० हवालः) १ पहरे के अन्दर रखे जाने की क्रिया या भाव, नजर-बन्दी। २ अभियुक्त की वह साधारण कैद जो मुकदमें के फैसले के पहले उसे भागने से रोकने के लिये दी जाती है हाजत। ३ वह मकान जिसमें ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।
हवालाती - वि० (अ० हवालः) १ हवालात-सम्बन्धी। २ जो हवालात में रखा गया हो।
हवालदार - पुं० (अ०+फा०) सैनिकों का वह छोटा अफसर जिसकी अधीनता में कुछ सैनिकं हों, हवलदार।
हवाली - स्त्री० (अ०) १ आसपास के स्थान। २ उपनगर।
हवास - पुं० (अ०) १ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कमेन्द्रियाँ। २ होश ज्ञान। यौ०- होश-हवास=रीन। होश और अक्ल।
हवास-बीख्ता- वि० (अ०+फा०) घबराहट के कारण जिसका होश-हवास ठिकाने न हो, हक्का-बक्का।
हवासिल- स्त्री० (अ०) १ हौसला का बहु०। २ एक प्रकार सफेद जल-पक्षी।
हवेली - स्त्री० (अ० हवाली) १ पक्का बड़ा मकान। २ पत्नी।
हवैदा - वि० दे० हुवैदा।
हव्वा - स्त्री० (अ०) हजरत आदम की पत्नी का नाम जो मनुष्य जाति की माता मानी जाती है। पुं० भीषण आकार का एक कल्पित व्यक्ति जिसका नाम बच्चों को डराने के लिये लिया जाता है हौआ।
हशमत - स्त्री० (अ०) १ सेवकों का समूह नौकर-चाकर। २ सम्पत्ति। ३ शान-शौकत।
हशर - पुं० दे० हश्र।
हशरात - पुं० (अ० हश्रात) छोट-छोटे कीड़े-मकोड़े। यौ० - हशरात-उल्-अर्ज = पृथ्वी पर रहनेवाले कीड़े-मकोड़े। पुं० (अ० हश्र) शोर हल्ला-गुल्ला।
हश्त - वि० (फा० मि० सं० अष्ट) आठ। सात और एक।
हश्त-पहलू - वि० (फा०+अ०) अठकोना।
हश्त-बहिश्त- पुं० (फा०) मुसलमानों के अनुसार आठों बहिश्त।
हश्तुम - वि० (फा० मि० सं० अष्टम)

गिनती में आठ के स्थान पर पड़ने वाला आठवाँ।

हश्मत - स्त्री० दे० हशमत।

हश्र - पुं० (अ०) १ कयामत जब कि सब मुरदे उठकर खड़े होंगे और उनके शुभ तथा अशुभ कामों का हिसाब होगा। २ शोक विलाय। ३ बहुत बड़ा शोर। मुहा० - हश्र बरपा करना = बहुत शोर करके आफत मचाना। हश्र-टूटना = १ आफत मचाना। २ कोप होना।

हश्रात - पुं० दे० हशरात।

हश्शाश - वि० (अ०) बहुत ही प्रसन्न और हँसता हुआ। यौ० - हश्शाश बश्शाश = परम प्रसन्न।

हसद - पुं० (अ०) ईर्ष्या डाह रश्क।

हसन - वि० (अ०) अच्छा भला उत्तम। पुं० १ उत्तमता भलाई खूबी। २ सौन्दर्य खूबसूरती। ३ मुसलमानों के दूसरे इमाम का नाम जिनकी हत्या जहर मिला हुआ पानी देकर की गई थी।

हसब - क्रि० वि० दे० हस्ब। पुं० (अ०) माता की ओर का वंश ननिहाल। नसब का उलटा। यौ० - हसब-नसब = माता और पिता का वंशानुक्रम। नाना और दादा का खान्दान।

हसरत - स्त्री० (अ० हश्रत) १ किसी वस्तु के न मिलने पर होने वाला दुःख। २ कामना।

हसीन - वि० (अ०) सुन्दर। खूबसूरत।

हसीना - स्त्री० (अ०) खूबसूरत स्त्री।

हसीर - पुं० (अ०) चटाई।

हसूल - पु० दे० हुसूल।

हस्त - स्त्री० (फा० मि० सं० अस्ति) १ वर्तमान होने की अवस्था। अस्तित्व २ जीवन जिन्दगी। यौ० - हस्त-ब-ममात = जीवन और मृत्यु।

हस्ती - स्त्री० (फा०) १ अस्तित्व। २ जीवन। ३ सम्पत्ति।

हस्तोनेस्त - पुं० (फा०) उत्पत्ति और विनाश।

हस्ब - क्रि० वि० (अ०) अनुसार मुताबिक। जैसे - हस्ब-ख्वाह = इच्छानुसार। हस्बे इत्तिफाक = संयोग से। हस्बे-तौफीक = श्रद्धा या सामर्थ्य के अनुसार हस्बे-हाल - अवस्था या समय के अनुसार उपयुक्त।

हसत - स्त्री० दे० हसरत।

हस्सान - वि० (अ०) अत्यन्त सुन्दर।

हा - प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर बहुवचन का सूचक होता है। जैसे-मुर्ग से मुर्गहा। दरख्त से दरख्तहा। अव्य- कष्ट या दुःख-सूचक अव्यय।

हाकिम - पुं० (अ०) (बहु० हुक्काम) १ हुकूमत करनेवाला शासक। २ बड़ा अफसर।

हाकिमी - स्त्री० (अ० हाकिम) हाकिम का काम हुकूमत।

हाजत - स्त्री० (अ०) (बहु० हाजात) १ इच्छा ख्वाहिश। २ आवश्यकता। मुहा०- हाजत रफा करना = १ आवश्यकता पूरी करना। २ मल त्याग करना। ३ पुलिस या जेल की हवालात।

हाजत-मन्द - वि० (अ०+फा०) १ हाजत या इच्छा रखनेवाला ख्वाहिश- मन्द। २ दरिद्र गरीब।

हाजती - स्त्री० (अ० हाजत) वह बर्तन जिसमें रोगी चारपाई पर पड़ा पड़ा मल-मूत्र आदि का त्याग करता है। वि० दे० हाजत- मन्द।

हाज़मा - पुं० (अ० हाजिमः) पाचन-शक्ति पचाने की ताक़त।

हाजरा - स्त्री० (अ० हाजरः) ठीक दोपहर का समय जब चील अंडे देती है।

हाज़ा - सर्व० (अ०) यह। जैसे - खते-हाजा = यह खत।

हाजात - स्त्री० (अ०) हाजत का बहु०।

हाजिक - वि० (अ०) प्रवीण विचक्षण दक्ष (प्रायः हकीम के लिये प्रयुक्त होता है।)

हाजिम - वि० (अ०) हज़म करने या पचानेवाला। पाचक।

हाजिमा - पुं० दे० हाजमा।

हाजिर - वि० (अ०) १ हिजरत करने

वाला। अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जा बसनेवाला। मक्के में ज़ाकर निवास करनेवाला।

हाज़िर - वि० (अ०) (बहु० हाज़िरन) १ सम्मुख उपस्थित। २ मौजूद विद्यमान।

हाज़िर-जवाब - वि० (अ़०) (स. हाज़िर-जवाबी) बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार प्रत्युत्पन्न- मति।

हाज़िर-बाश - वि० (अ०+फा०) (सं. हाज़िर- बाशी) किसी बड़े आदमी के पास उठने- बैठने या उपस्थित रहने वाला।

हाज़िरात - स्त्री० (अ०) वह क्रिया जिससे भूत- प्रेत या जिन आदि कुछ प्रश्नों के उत्तर देने के लिये बुलाये जाते हैं।

हाज़िरी - स्त्री० (अ०) १ हाजिर रहने की क्रिया या भाव उपस्थिति। २ अंगरेजों का दोपहर के समय का भोजन।

हाजिरीन - पुं० (अ०) हाजिर का बहु०।

हाजी - पुं० (अ०) १ हिजो या निन्दा करनेवाला निन्दक। २ दूसरों की नकल उतारकर उन्हें हास्यास्पद बनानेवाला। नक्काल भाँड़ पुं० (अ०) वह जो हज कर आया हो।

हातिफ - पुं० (अ०) १ आवाज देने या पुकारनेवाला। २ आकाशवाणी। ३ फरिश्ता, देवदूत।

हातिम - पुं० (अ०) अरबका एक बहुत प्रसिद्ध दाता और परोपकारी। मुहा०-ए हातिमकी कब्र पर लात मारना = बहुत बड़ी उदारता या परोपकार का काम करना। १ (व्यंग) वि० दाता। उदार।

हादसा - पुं० (अ० हादिसः) १ नई बात। २ घटना। ३ दुर्घटना।

हादिम - वि० (अ०) गिराने, तोड़ने या नष्ट करनेवाला। नाशक।

हादिस - वि० (अ०) १ नया नवीन। २ नश्वर।

हादिसा - पुं० दे० हादसा।

हादी - पुं० (अ०) १ हिदायत करनेवाला। मार्गदर्शक। २ मुखिया नेता।

हाफिज - पं० (अ०) वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठ हो।

हाफिज़ा - पुं० (अ० हाफिज़ः) स्मरण-शक्ति।

हाबील - पुं० (अ०) हजरत आदम के पुत्र का नाम जिसे काबीलने मार डाला था।

हामान् - पुं० (अ०) फरऊन के प्रधान मंत्री या वजीर का नाम।

हामिद - वि० (अ०) हम्द या प्रशंसा करनेवाला।

हामिल - वि० (अ०) १ भार या बोझ ढोनेवाला। २ कोई चीज ले जानेवाला।

हामिला - वि० स्त्री० (अ० हामिलः) जिसे हमल या गर्भ हो गर्भवती।

हामी - वि० (अ०) हिमायत करने वाला। सहायक। स्त्री० हाँ करने की क्रिया स्वीकारोक्ति। मुहा० - हामी भरना = कोई काम करना मंजूर करना।

हामी-कार - वि० (अ०+फा०) हिमायती मददगार।

सं. हामूँ - पुं० (अ०) उजाड़ मैदान।

हामूँ-नवर्द - वि (अ०+फा०) (हामूँ-नवर्दी) जंगलों और उजाड़ जगहों में मारा मारा फिरनेवाला।

हायल- वि० (अ०) १ भयानक भीपण २ कठोर कठिन ३ बाधा उत्पन्न करने वाला। बाधक। ४ बीच में आड़ करने वाला

हार - वि० (आ०) हरारत या गरमी रखनेवाला।

हारिज - वि० (अ०) हर्ज करनेवाला।

हारूँ - पुं० (अ०) १ दुष्ट और उद्दण्ड घोड़ा। २ किसी फिरके का सरदार या नेता। ३ एक पैगम्बर जो हजरत मूसाके बड़े भाई थे। ४ बगदाद के एक खलीफा जो हाँरु- रशीद के नाम से प्रसिद्ध हैं। ५ दूत हरकारा। ६ रक्षक पासवान।

हारूँ- रशीद - पुं० दे० हारूँ।

हारूत - पुं० (अ०) जोहरा के प्रेमी उन दो फरिश्तों में से एक जो बाबुल के कूएँ में कोपके कारण अब तक औंधे लटके हुए माने जाते हैं। इसके दूसरे साथी का नाम मारूत है।

हारूँत-फन - पुं० (अ०) जादूगर इंद्रजालिया।
हारूँती - स्त्री० (अ०) जादू इंद्रजाल।
हारून - पुं० दे० हारूँ।
हारूनी - स्त्री० (अ० हारूँ से फा०) निगहबानी पासबानी। वि० दुष्ट और उद्दंड।
हाल - पुं० (अ०) (बहु० हालात) १ दशा अवस्था। २ परिस्थिति। ३ माजरा संवाद समाचार वृत्तान्त। ४ व्योरा विवरण। कैफियत। ५ कथा आख्यान चरित्र। ६ ईश्वरमें तन्मयता। लीनता (मुसल०)। वि० वर्तमान चलता उपस्थित। मुहा०- हालमें = थोड़े ही दिन हुए। हालका = नया ताजा। अव्य० इस समय अभी। स्त्री० (हिं० हिलना)१ हिलाने की क्रिया या भाव कंप। २ लोहे का वह बंद जो पहियेके चारों ओर घेरे में चढ़ाया जाता है।
हालत - स्त्री० (अ०) १ दशा अवस्था। यौ०- हालते मौजूदा = वर्तमान स्थिति। २ आर्थिक दशा। ३ संयोग परिस्थिति।
हालते- नजा - स्त्री० (अ०) मरने के समय दम तोड़ने की अवस्था।
हालाँकि - [illegible] वि० (अ० हाल+फा० आँकि) यद्यपि अगरचे।
हाला - पुं० (अ० हालः) १ कुंडल मडल। २ चन्द्रमा के चारों ओर दिखाई पड़नेवाला मंडल।
हालात - पुं० (अ०) हाल का बहु०।
हावन - स्त्री० (फा०) हाँडी या ऊखली की तरह का लोहे का वह पात्र जिसमें दवा आदि कूटते हैं। यौ०- हावन- दस्ता = हावन या ऊखली और उसमें कूटने का दस्ता या लोढ़ा।
हाविया - पुं० (अ० हाविय:) दोजख का सबसे नीचे का और सातवाँ प्रांत।
हावी - वि० (अ०) १ चारों ओरसे घेरने या वशमें रखनेवाला। २ प्रवीण कुशल दक्ष।
हाशा - अव्य० (अ०) १ कदापि हरगिज मगर। २ सिवा। यौ०- हाशा- लिल्लाह या हाशा रहमान = १ ईश्वर न करे। २ मैं कुछ नहीं जानता। हाशा व कल्ला । न ऐसा कुछ है ही और न होगा कदापि नहीं।
हाशिया - पुं० (अ० हाशियः) १ किनारा। पाढ़। २ गोट मगजी ३ हाशिए या किनारे पर का लेख नोट। मुहा० - हाशिएका गवाह = वह गवाह जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। हाशिया चढ़ाना = किसी बात में मनोरंजन आदि के लिए कुछ और बात जोड़ना।
हासिद - वि० (अ०) १ हसद या डाह करनेवाला ईर्ष्यालु २ अशुभचिन्तक शत्रु।
हासिल - पुं० (अ०) १ गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। २ उपज पैदार। ३ लाभ नफा। ४ गणित की क्रिया का फल जम। ५ लगान।
हासिल-कलाम - क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि सारांश यह कि।
हासिल-जर्ब - पुं० (अ०) वह संख्या जो जर्ब देने या गुणा करने से निकले। गुणन-फल।
हासिल-जमा - पुं० (अ०) जोड़ योग मीजान कुल।
हासिलात - स्त्री० (अ०) प्राप्ति।
हिकमत - स्त्री० (अ०) १ विद्या तत्वज्ञान। २ कला-कौशल निर्माण की बुद्धि। ३ युक्ति तदबीर। ४ चतुराई का ढंग चाल। ५ हकीम का काम या पेशा हकीमी वैद्यक।
हिकमत-अमली- स्त्री० (अ०) १ चालाकी होशियारी। २ कूट-नीति।
हिकमती - वि० (अ० हिकमत) १ दार्शनिक २ चतुर चालाक।
हिकायत - स्त्री० (अ०) बहु० हिकायत) कहानी,किस्सा।
हिक़ारत - दे० हक़ारत।
हिजरत - स्त्री० (अ०) अपना देश छोड़कर दूसरे देशमें जा बसना।
हिजराँ- पुं० (अ० हिज्र से फा०) वियोग जुदाई।
हिजराँ-नसीब - वि० (फा+अ०) जिसके

भाग्य में सदा अपने प्रियसे अलग रहना लिखा हो।

हिजरी – स्त्री (अ०) १ हजरत मुहम्मद का मक्का छोड़कर मदीने जाना। २ वह सन् जो हजरत मुहम्मद के मक्का छोड़ने की तिथि से चला था।

हिजाब – पुं० (अ०) १ परदा ओट। २ लज्जा शरम लिहाज।

हिज्जे – पुं० (अ०) किसी शब्द के संयोजक अक्षरों को अलग-अलग उनका सम्बन्ध बतलाते हुए कहना।

हिज्र – पुं० (अ०) वियोग विछोह जुदाई।

हिज्रत – स्त्री० दे० हिजरत।

हिदायत – स्त्री० (अ०) १ सीधा रास्ता बतलाना मार्ग-दर्शन। २ यह बतलाना कि आगेसे यह काम इस तरह होना चाहिए अथवा ऐसा काम न होना चाहिए।

हिदायत-नामा – पुं० (अ०+फा०) वह पत्र या पुस्तिका जिसमें किसी काम के बारे में हिदायतें लिखी हों।

हिना – स्त्री (अ०) मेंहदी।

हिनाई – वि० (अ० हिना) १ मेंहदी का-सा लाल रंग। २ जिसमें मेंहदी लगी हो।

हिना-बन्दी – स्त्री० (अ०+फा०) मुसलमानों में ब्याह से पहलेकी एक रसम। मेंहदी।

हिन्द – पुं० (फा०) भारतवर्ष।

हिन्दसा – पुं० (फा० 'हिन्द' से अ०) १ गणित। २ रेखा-गणित। ३ अंक।

हिन्दसा-दाँ- वि० (फा०) गणितज्ञ।

हिन्दी – वि० (फा०) हिन्द का भारतीय। स्त्री० (फा०) हिन्दुस्तान की भाषा।

हिन्दोस्तान – पुं० (फा०) भारतवर्ष।

हिफाजत – स्त्री० (अ०) १ किसी वस्तुको इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे रक्षा। २ देख-रेख खबरदारी।

हिफाजतीं – वि० (अ०) हिफाजत या रक्षा करनेवाला।

हिफ्ज – वि० (अ०) १ कण्ठस्थ मुखाग्र। पुं. १ हिफाजत। २ अदब लिहाज।

हिफ्जे-मरातिब- पुं० (अ०) बड़े की मर्यादा का ध्यान।

हिफ्जे-माताक़द्दुम – पुं० (अ०) आपत्ति आदि से बचने के लिए पहले से किया जानेवाला बचाव।

हिफ्जे-सेहत – पुं० (अ०) सेहत या स्वास्थ्य की रक्षा।

हिब्बा – पुं० (अ० हिब्बः) १ पुरस्कार इनाम। २ दान।

हिब्बा-नामा – पुं० (अ०+फा० नामः) वह पत्र जिसमें किसी वस्तु के किसी को प्रदान किये जाने का उल्लेख हो। दान-पत्र।

हिमयानी – स्त्री० (अ० हिमयान) एक प्रकार की पतली थैली जो रुपये आदि भरकर कमर में बाँधी जाती है बसनी।

हिमाक़त – स्त्री० (अ०) मूर्खता बे-वकूफी।

हिमायत – स्त्री० (अ०) १ पक्षपात मदद २ शरण रक्षा।

हिमायतगर – वि० (अ०+फा०) १ हिमायत करनेवाला। २ पक्षपाती।

हिमायती – स्त्री० (अ०) १ हिमायत या तरफदारी करनेवाला पक्षपाती। २ रक्षक निगहबान।

हिम्मत – स्त्री० (अ०) १ कठिन या कष्ट-साध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता साहस। २ बहादुरी पराक्रम। मुहा० – हिम्मत हारना = साहस छोड़ना।

हिम्मतवर – वि० (अ०+फा०) साहसी, वीर।

हिरफत-स्त्री० (अ०) १ हस्त- कौशल्य कारीगरी गुण। २ विद्या हुनर। ३ धूर्तता।

हिरफा- पुं० (अ० हरफः) कारीगरी हस्त-कौशल शिल्प।

हिरमिजी – स्त्री० (अ०) १ एक प्रकार की लाल मिट्टी। २ इस मिट्टी की तरहका। लाल- सा रंग।

हिरास – स्त्री० (फा०) १ भय डर। २ निराशा ना- उम्मेदी।

हिरासत – स्त्री० (अ०) १ पहरा चौकी २ क़ैद नजरबंदी।

हिरासाँ – वि० (फा०) १ भयभीत डरा

हुआ। २ निराश।

हिर्ज़ - पुं० (अ०) १ शरण लेने का स्थान। २ यंत्र तावीज।

हिर्फत - स्त्री (अ०) व्यवसाय, उद्यम।

हिर्स - स्त्री० (अ०) १ लालच तृष्णा लोभ। २ इच्छा का वेग।

हिलाल - पुं० (अ०) द्वितीया का चन्द्रमा। (इसकी उपमा नायिका के नाखूनों और भौंहों से दी जाती है।)

हिलाली - वि० (अ०) हिलाल या द्वितीया के चन्द्रमा से सम्बन्ध रखनेवाला। पुं० एक प्रकार का तीर।

हिल्म - पुं० (अ०) १ सहनशीलता बरदाश्त। २ स्वभाव की कोमलता।

हिस - स्त्री० (अ०) १ इन्द्रिय के द्वारा अनुभव करना। २ गति।

हिसाब - पुं० (अ०) १ गिनती गणित लेखा। २ लेन- देन या आमदनी- खर्च आदि का लिखा हुआ व्योरा लेखा उचापत।मुहा० - हिसाब चुकाना या चुकता करना = जो कुछ जिम्मे निकलता हो, वह दे देना। हिसाब देना = जमा- खर्च का व्योरा बताना। बेहिसाब = बहुत अधिक। अत्यंत। हिसाब बैठना = १ ठीक- ठीक जैसा चाहिए, वैसा प्रबन्ध होना। २ सुभीता होना। सुपास होना हिसाब से = १ संयम से परिमित। २ लिखे हुए व्योरे के मुताबिक। टेढ़ा हिसाब = १ कठिन कार्य मुश्किल काम। २ अव्यवस्था। गड़बड़। ३ वह विद्या जिसके द्वारा संख्या, मान आदि निर्धारित हों। गणित विद्या का प्रश्न। ४ भाव। दर। मुहा०=हिसाब से = १ परिमाण, क्रम या गति के अनुसार। २ विचार से ध्यानसे। ३ नियम कायदा व्यवस्था ४ धारणा समझ मत विचार। ५ हाल दशा अवस्था। ६ चाल व्यवहार रहन- सहन। ७ ढंग तरीका।

हिसाबी - वि० (अ० हिसाब) हिसाब जाननेवाला गणितज्ञ। २ जो नियम के अनुसार हो कायदे का ठीक।

हिसाबोकिताब - पुं० (अ०) लेन- देन का हिसाब, लिखा- पढ़ी।

हिसार - पुं० (अ०) १ नगर का पर- कोटा शहर- पनाह २ किला कोट गढ़।

हिस्सा - पुं० (अ० हिस्सः) १ भाग अंश। २ टुकड़ा खंड। ३ उतना अंश जितना प्रत्येक को विभाग करने पर मिले बखरा। ४ विभाग तक़सीम ५ अंग अवयव अंतर्भूत वस्तु। ६ साझा।

हिस्सा-रसद - क्रि० वि० (अ०+फा०) हिस्से के मुताबिक अंश या भाग के अनुसार।

हिस्सा-रसदी - स्त्री० दे० हिस्सा-रसद।

हिस्सेदार - वि० (अ०+फा०) किसी हिस्से का मालिक, जो अंश या भाग पाने का अधिकारी हो।

हिस्से-मुश्तरक - स्त्री० (अ०) वह भीतरी शक्ति जो इंद्रियों के अनुभव का ज्ञान करती है।

हीन - पुं० (अ०) समय काल। यौ० - हीन- हयात = आजन्म सारी उमर उम्र- भर।

हीलतन् - क्रि० वि० (अ०) हीले से छलपूर्वक।

हीला - पुं० (अ० हीलः) १ बहाना। मिस। यौ० - हीला- हवाला = बहाना। २ निर्मित द्वार वसीला।

हीला-गर - वि० दे० हीला- बाज।

हीला-बाज़ - वि० (अ०+फा०) (सं.हीला-बाजी) हीला करनेवाला चालाक फरेबिया।

हीला-साज़ - वि० दे० हीला- बाज।

हुक़्ना - पुं० (अ० हक़्नः) दस्त लाने के लिए गुदा के मार्गसे पिचकारी आदि के द्वारा कोई दवा चढ़ाना बस्ति-कर्म।

हुकुम - पुं० दे० हुक्म।

हुकूक़ - पुं० (अ०) हक का बहु०।

हुकूमत - स्त्री० (अ०) १ प्रभुत्व। २ शासन। ३ राज्य-शासन राजनीतिक आधिपत्य।

हुक्का - पुं० (अ० हुक्कः) तम्बाकू का धुआँ खींचने या तम्बाकू पीने के लिए विशेष

रूपसे बना हुआ एक प्रकारका नल-यन्त्र गड़गड़ा फरशी।

सं.हुक्का- बरदार - वि० (अ०+फा०) (हुक्का-बरदारी) हुक्का भरने या हुक्का साथ लेकर चलनेवाला (सेवक)।

हुक्काम - पुं० (अ०) हाकिम का बहु०।

हुक्म - पुं० (अ०) बड़े का वचन जिसका पालन कर्तव्य हो आज्ञा आदेश। मुहा० - हुक्मकी तामील = आज्ञा का पालन। हुक्म चलाना या जारी करना = आज्ञा देना। हुक्म तोड़ना = आज्ञा भंग करना। हुक्म मानना = १ आज्ञा पालन करना। २ स्वीकृति। अनुमति। इजाजत। ३ अधिकार। ४ विधि। नियम। शिक्षा। ५ ताशका एकारंग।

सं.हुक्म-अन्दाज - वि० (अ०+फा०) (हुक्म- अन्दाजी) अचूक निशाना लगानेवाला।

हुक्मनामा- पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसमें कोई हुक्म या आज्ञा लिखी हो।

हुक्म-बरदार - वि० (अ०+फा०) (सं.हुक्म- बरदारी) हुक्म माननेवाला आज्ञाकारी।

हुक्म-राँ - वि० (अ०+फा०) १ हुक्म देनेवाला। २ शासक राजा।

हुक्म-रानी - स्त्री० (अ०+फा०) शासन हुकूमत।

हुक्मी - वि० (अ०) १ जो अपने निशाने पर लगकर ठीक काम करे अचूक। जैसे - हुक्मी दवा। २ हुक्म माननेवाला आज्ञाकारी। जैसे- हुक्मी बन्दा। क्रि० वि० सदा हमेशा।

हुज़्न - पुं० (अ०) रंज। दुःख।

हुजरा - पुं० (अ० हुजरः) १ कोठरी छोटा कमरा। २ मसजिद की वह कोठरी जिसमें लोग एकान्त में बैठकर ईश्वरा- साधना करने हैं।

हुजूम - पुं० (अ०) जन- समूह भीड़- भाड़।

हुजूर - पुं० (अ०) १ किसी बड़े का सामीप्य। समक्षता। २ बादशाह या हाकिम का दरबार कचहरी। ३ बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।

हुजूर-वाला- पुं० (अ०) जनाबआली श्रीमान्।

हुजूरी - स्त्री० (अ०) १ सामीप्य निकटता नजदीकी। २ बादशाही दरबार।

हुज्जत - स्त्री० (अ०) १ व्यर्थ का तर्क। २ विवाद झगड़ा।

हुज्जती - वि० (अ०) हुज्जत या झगड़ा करनेवाला।

हुदहुद - पुं० (अ०) कठफोड़वा नाम का पक्षी। खुट-बढ़ई।

हुदा - पुं० (अ०) १ सीधा रास्ता। २ मोक्ष का मार्ग।

हुदूद - स्त्री० (अ०) हद का बहु०। सीमाएँ।

हुदूद-अरबा - स्त्री० (अ० हुदूद- अर्बअ) चारों ओर की हदें।

हुनर - पुं० (फा०) १ कला कारीगरी। २ गुण करत। ३ कौशल। युक्ति। चतुराई।

हुनर-मन्द - वि० (फा०) (सं.हुनर- मन्दी) हुनर जाननेवाला।

हुनूद - पुं० (अ०) हिन्दू का बहु०।

हुब - स्त्री० (अ०) १ प्रेम प्रीति मुहब्बत। २ दोस्ती मित्रता। ३ इच्छा चाह। ४ मरजी। यौ० - हुबका अमल = वह क्रिया या यंत्र-मंत्र जिसकी सहायता से किसी के मन में अपने प्रति प्रेम उत्पन्न किया जाय।

हुबल - पुं० (अ०) मक्के की एक प्राचीन मूर्ति जो वहाँ इस्लाम का प्रचार होने के पहले पूजी जाती थी।

हुबाद - पुं० (अ०) १ पानी का बुलबुला बुदबुदा। २ हाथ में पहनने का एक प्रकार का गहना। ३ शीशे का वह गोला जो सजावट के लिये छत में लटकाया जाता है गोला।

हुब्ब - पुं० (अ०) १ प्रेम। मुहब्बत। २ आकांक्षा। ३ मित्रता।

हुब्ब-उल्-वतन - स्त्री० (अ०) देश-प्रेम।

हुमक़ - पुं० (अ०) मूर्खता।

हुमा - पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध कल्पित पक्षी। कहते हैं कि यह केवल हड्डियाँ खाता है और जिसके सिरपर इसकी छाया पड़ जाती है, वह राजा हो जाता है।

हुमायूं - वि० ( फा० ) १ शुभ मुबारक। २ सफल-मनोरथ। पुं० एक प्रसिद्ध मुगल सम्राट जो बाबर का पुत्र और अकबर का पिता था।

हुम्मा - पुं० ( अ० ) ज्वर, ताप।

हुरमत - स्त्री० ( अ० हुर्मत ) प्रतिष्ठा इज्जत आबरू।

हुरमुज़ - पुं० ( फा० ) सौर मासका प्रथम दिन। इस दिन यात्रा करना और नये वस्त्र पहनना शुभ समझा जाता है।

हुरूफ - पुं० ( दे० ) हरूफ।

हुलिया - पुं० ( अ० हुलियः ) १ आभूषण गहना। २ वह बढ़िया वस्त्र जो राजाओं आदि के दरबार में लोगों को पहनने के लिये मिलते हैं खिलअत। ३ रूपरेखा चेहरे की बनावट। मुहा० - हुलिया होना = सेनामें नाम लिखा जाना। हुलिया लिखना = भागे हुए अपराधी या खोये हुए व्यक्तिकी रूप-रेखा पुलिस में लिखाना।

हुवैदा - वि० ( फा० ) प्रकट स्पष्ट।

हुशियार - वि० ( दे० ) होशियार।

हुशियारी - ( दे० ) होशियारी।

हुसूल - पुं० ( अ० ) हासिल फायदा लाभ।

हुसेन - पुं० ( दे० ) हुसैन।

हुसैन - पुं० ( अ० ) मुसलमानों के तीसरे इमाम का नाम जो यजीद की आज्ञा से करबला नामक स्थान के युद्ध में मारे गये थे। मुहर्रम इन्हीं मृत्यु के शोक में मनाया जाता है।

हुसैन-बन्द - पुं० ( अ०+फा० ) चाँदी की बिना नगीने की दो अंगूठियाँ जो शीया लोग अपने बच्चों के हाथों में पहनाते हैं।

हुस्न - पुं० ( अ० ) १ उत्तमता भलाई खूबी। २ सौन्दर्य खूबसूरती। जैसे - हुस्ने इन्तजाम, हुस्ने तदबीर।

हुस्न-तलब - पुं० ( अ० ) उत्तम या अच्छे संकेत से कोई सुन्दर वस्तु पाने की इच्छा प्रकट करना। जैसे - किसी की कोई सुन्दर वस्तु देखकर कहना - वाह, यह कैसी बढ़िया है।

हुस्न-दान - पुं० ( अ०+फा० ) एक प्रकार का छोटा पान-दान।

सं.हुस्न-परस्त - वि० ( अ०+फा० ) ( सं.हुस्न-परस्ती ) हुस्न या सौन्दर्य की उपासना करनेवाला।

हुस्नफरोश - स्त्री० ( अ०+फा० ) वेश्या।

हुस्ना - स्त्री० ( अ० ) अत्यंत सुन्दर स्त्री।

हुस्नियात - स्त्री० ( अ० ( हुस्ना ) का बहु० ) सुन्दर स्त्रियाँ।

हुस्ने-मतला - पुं० ( अ० ) १ हुस्ने मतलड ) १ ग़जल में मतले या पहले शेर के बाद दूसरा हो ऐसा शेर जो मतले की तरह ही और जिसके दोनों चरणों में अनुप्रास हो।

हुस्ने-महफिल - पुं० ( अ० ) एक प्रकार का हुक्का।

हू - पुं० ( अ० ) १ अल्लाहहू का संक्षिप्त रूप। ईश्वर का एक नाम जो प्रायः ग्रन्थों या पृष्ठों के ऊपर शुभ समझकर लिखा जाता है। २ डर, भय। यौ० हूका आलम = ऐसा उजाड़ जहाँ कहीं कुछ भी न दिखाई दे।

हूत - स्त्री० ( अ० ) १ मत्स्य मछली। २ मीन राशि।

हूदा - वि० ( फा० हूदः ) ठीक दुरुस्त। यौ० - बे-हूदा = १ जो ठीक न हो। २ वाहियात उजड्ड।

हूर - स्त्री० ( अ० ) १ गौरवर्ण की वह स्त्री जिसकी आँखों की पुतलियाँ और सिर के बाल बहुत काले हों। २ स्वर्ग में रहनेवाली सुन्दरियाँ अप्सराएँ। वि० बहुत अधिक सुन्दर।

हू-हक - पुं० ( अ० ) ईश्वर का भजन या स्मरण। मुहा० - हू-हक हो जाना = नष्ट हो जाना। जाना।

हेच - वि० ( फा० ) १ तुच्छ हीन। २ बहुत थोड़ा। ३ निरर्थक निकम्मा। ४ घृणित। अव्य- कोई कुछ।

हेच-कस - वि० ( फा० ) निकम्मा निरर्थक अयोग्य तुच्छ।

हेचकारा - वि० दे० हेचकस।

हेच-मदाँ - वि० ( फा० ) ( हेचमदानी ) जो कुछ न जानता हो अनभिज्ञ अज्ञान।

हेमा - स्त्री० ( फा० हेमः ) जलाने की

लकड़ी ईंधन।

हैकल - स्त्री० (अ०) १ वह मूर्ति जो किसी ग्रहके नाम पर बनाई जाय। २ मन्दिर। ३ शोभा। ४ यन्त्र ताबीज। ५ गले में पहनने का एक गहना हुमायल हुमेल हमेल। ६ डील-डौल। ७ चिन्ह लक्षण।

हैज़ - पुं० (अ०) स्त्रियों का मासिकधर्म।

हैजा - स्त्री० (अ० हैजः) युद्ध।

हैज़ा - पुं० (अ० हैजः) दस्त और कै की बीमारी। विसूचिका।

हैज़ान - पुं० (अ०) १ आवेश जोश। २ तेजी वेग।

हैज़ी - वि० (अ० हैज) १ हरामी दोगला वर्णसंकर। २ दुष्ट।

हैजुम - स्त्री० (फा०) जलाने की सूखी लकड़ी। ईंधन।

हैफ - पुं० (अ०) १ अफसोस दुःख। २ अत्याचार जुल्म।

हैबत - स्त्री० (अ०) १ डर भय। २ आतंक रोब धाक।

हैबत-जदा - वि० (अ०+फा०) भयभीत डरा हुआ।

हैबत-नाक - वि० (अ०+फा०) भयानक भीषण डरावना।

हैयत - स्त्री० दे० हइयत।

हैरत - स्त्री० (अ०) आश्चर्य।

हैरतजदा - वि० (अ०+फा० जदः) चकित, विस्मित।

सं. हैरान - वि० (अ०) (सं. हेरानी) १ आश्चर्य से स्तब्ध चकित भौंचक्का। २ परेशान व्यग्र।

हैरानी - स्त्री० (अ० हैरान) हैरान होने की क्रिया या भाव।

हैवान - पुं० (अ०) १ प्राणी जीव। २ पशु जानवर। ३ मूर्ख।

हैवान-नातिक - पुं० (अ०) बोलनेवाला पशु अर्थात् मनुष्य।

हैवान-मुतलक - पुं० (अ०) १ पूरा पशु निरा जानवर। २ बहुत बड़ा मूर्ख।

हैवानात - पुं० (अ० हैवान का बहु०) चौपाए पशु।

हैवानियत - स्त्री० (अ०) १ पशुता पशुत्व जानवरपन। २ मूर्खता बेवकूफी।

हैवानी - वि० (अ०) हैवानोंका-सा पशुओं जैसा।

हैस-बैस - स्त्री० (अ०) लड़ाई झगड़ा तकरार।

हैसियत - स्त्री० (अ०) १ योग्यता सामर्थ्य शक्ति। २ वित्त बिसात आर्थिक दशा। ३ श्रेणी दरजा। ४ धन-दौलत।

हैसियत-उरफी - स्त्री० (अ०) बाहरी ओर बनी हुई प्रतिष्ठा।

हैहात - अव्य (अ०) १ दूर हो। २ हाय अफसोस।

होश - पुं० (फा०) बोध या ज्ञानकी वृत्ति चेतना चेत। यौ० - होश व हवास = चेतना और बुद्धि। मुहा० - होश उड़ना या जाता रहना = भय या आशंका से चित्त व्याकुल होना सुध-बुध भूल जाना। होश करना = सचेत होना बुद्धि ठीक करना। होश दंग होना = चित्त चकित होना आश्चर्य से स्तब्ध होना होश सँभालना = अवस्था बढ़ने पर सब बातें समझने बूझने लगना सयाना होना। होश में आना = चेतना प्राप्त करना बोध या ज्ञान की वृत्ति फिर लाभ करना। होश की दवा करो = बुद्धि ठीक करो समझ-बूझकर बोलो। होश ठिकाने होना = १ बुद्धि ठीक होना भ्रांति या मोह दूर होना। २ चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। ३ दंड पाकर भूलका पछतावा होना। ४ स्मरण सुध याद। मुहा० - होश-दिलाना = याद दिलाना। ५ बुद्धि समझ।

होशियार - वि० (फा०) १ चतुर समझदार बुद्धिमान। २ दक्ष निपुण। ३ सचेत सावधान। ४ जिसने होश सँभाला सयाना। ५ चालाक धूर्त।

होशियारी - स्त्री० (फा०) १ समझदारी। चतुराई। २ निपुणता। कौशल। ३ सावधानी।

होशोहवास - पुं० (फा०) चेतना, सुधि।

हौआ - स्त्री० दे० हव्वा।

हौज- पुं० (अ०) पानी जमा रहने का चह-

बच्चा। कुंड।

हौंदज - पुं० (अ०) १ हाथी की पीठ पर रखी जानेवाली अम्भारी। हौदा। २ ऊंट की पीठ पर रखा जानेवाला कजावा।

हौल - पुं० (अ०) १ डर भय। २ विकलता घबराहट।

हौल-ज़दा - वि० (अ०+फा०) १ डरा हुआ। २ घबराया हुआ।

हौल-दिल - पुं० (अ+फा०) कलेजे की धड़कन का रोग।

हौल-दिला - वि० (अ० हौल+फा० दिल) डरपोक कायर।

हौल नाक - वि० (अ०+फा०) भयानक भीषण डरावना।

हौवा - स्त्री० पुं० दे० हव्वा।

हौसला - पुं० (अ० हौसलः) पक्षी का पेट। २ साहस हिम्मत। ३ समाई सामर्थ्य। ४ कामना आकांक्षा अरमान।

हौसलामन्द - वि० (अ०हौसलः+फा०) १ साहसी। २ धैर्यवान।

—: समाप्त :—
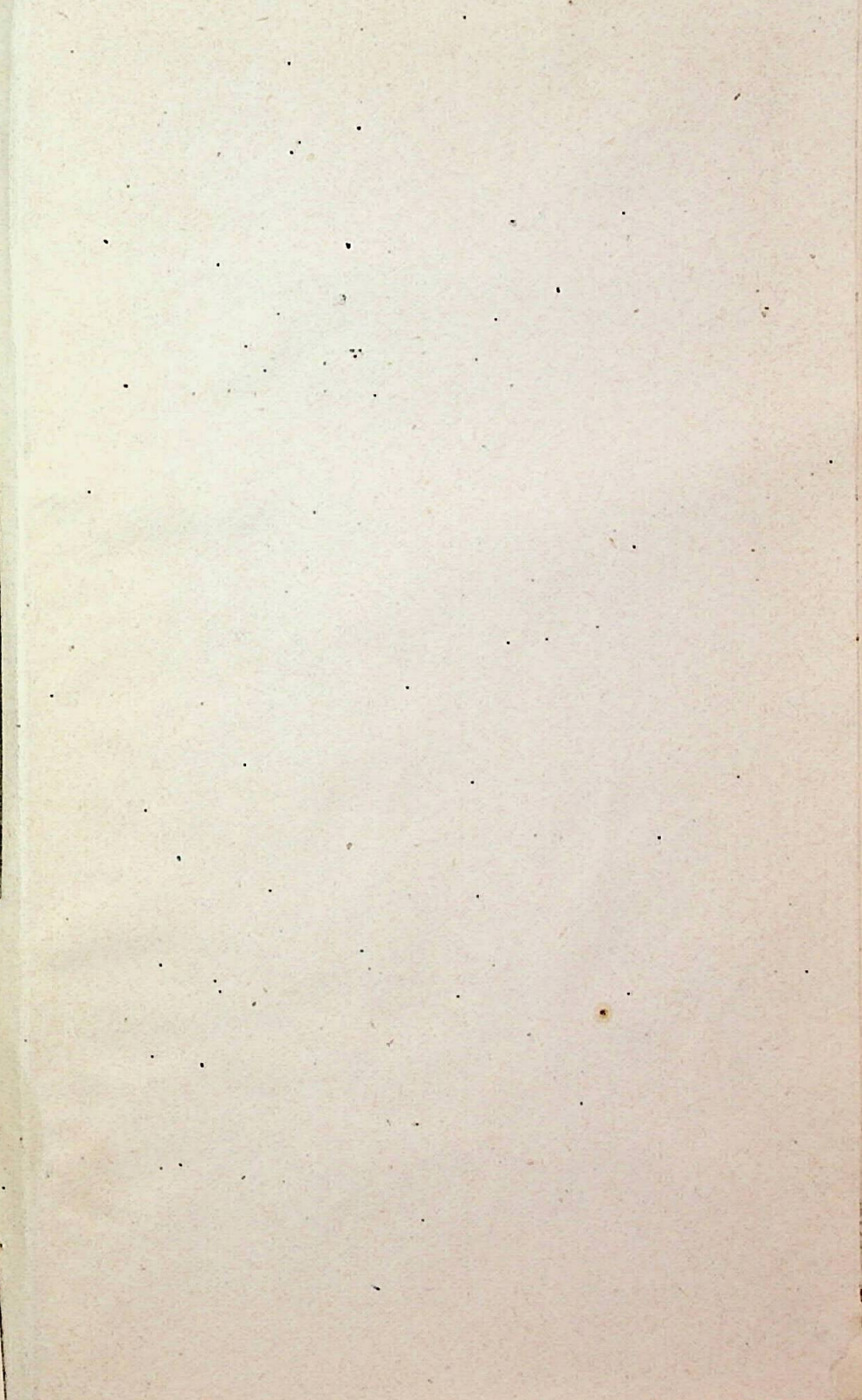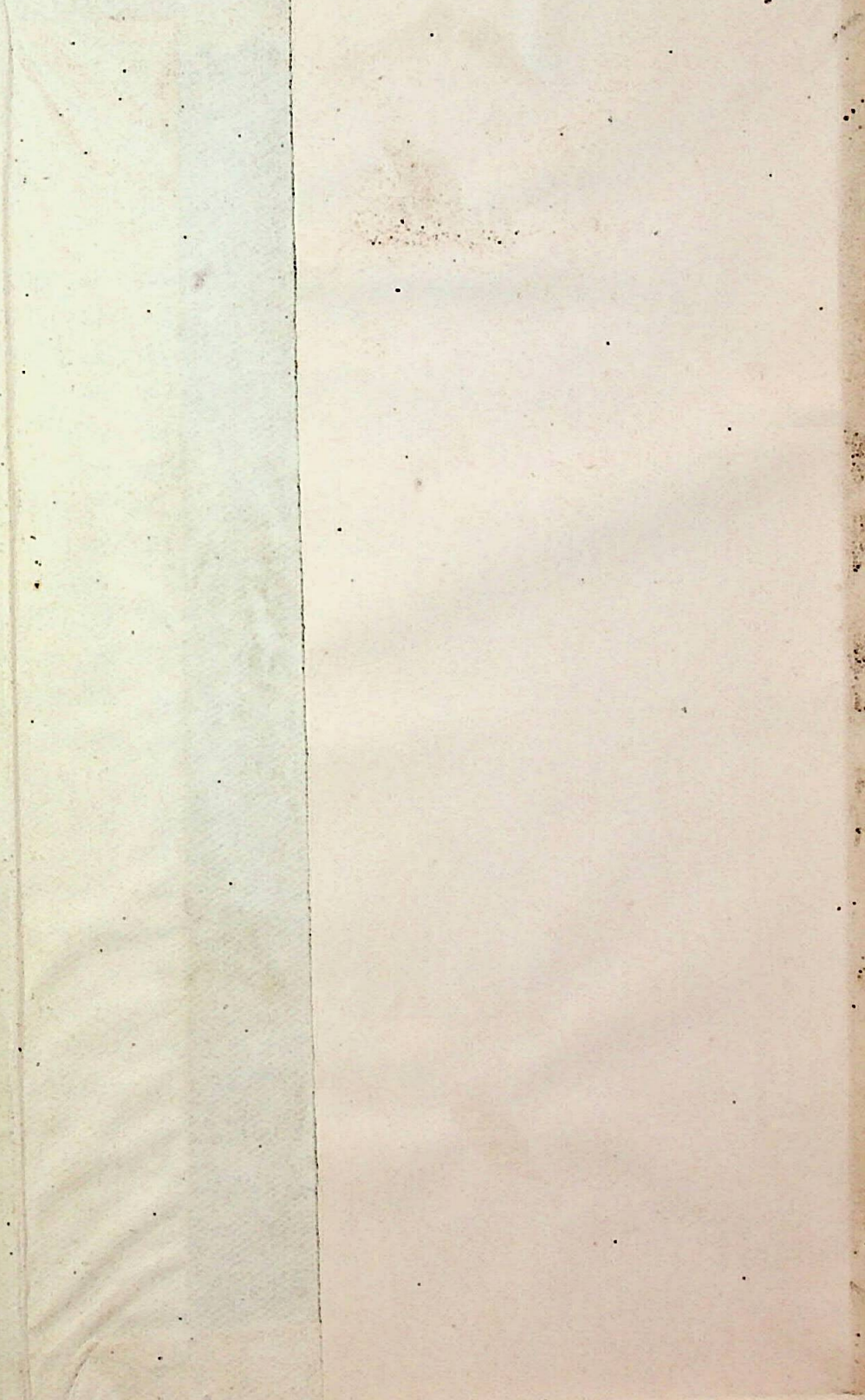
# उर्दू-हिन्दी कोश

संजय बुक सेन्टर, वाराणसी